بسم الله الرحمن الرحيم

धार्मिक मामलों के सभापतित्व के प्रकाशन

**DİYANET İŞLERİ BAŞKANLIĞI YAYINLARI : 2298**
प्रसंग/उद्धरित / **KAYNAK ESERLER** : 282

सामान्य सहयोजक / **GENEL KOORDİNATÖR**
प्रो0 डॉ0 हूरिये मार्ती / PROF. DR. HURİYE MARTI

प्रकाशन निदेशक / **YAYIN YÖNETMENİ**
अ0 प्रो0 डॉ0 फ़ातिह कुर्त / DOÇ DR. FATİH KURT

प्रकाशन सहयोजक / **YAYIN KOORDİNATÖRÜ**
यूनुस युकसेल / YUNUS YÜKSEL

कुरआन करीम की पाठ समीक्षा / **KUR'AN-I KERİM METİN İNCELEME**
पवित्र कुरआन समीक्षा और सस्वर पाठ बोर्ड /
**MUSHAFLARI İNCELEME VE KIRAAT KURULU**

अनुवादक / **HAZIRLAYAN**
मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी / MUFTI MOHAMMAD SARWAR FAROOQUI NADWI

संस्करण पर्यवेक्षक / **BASKI TAKİP**
बिलाल ओजतुर्क / BİLAL ÖZTÜRK

ISBN: 978-625-435-376-5
2022-06-Y-0003-2298
प्रमाण पत्र संख्या / **SERTİFİKA NUMARASI: 12930**

संपादकीय बोर्ड का निर्णय / YAYIN KURULU KARARI: 09.09.2022/139
प्रथम संस्करण / **1. BASKI**
अंकारा / **ANKARA 2022**
ग्राफ़िक डिज़ाइन / **GRAFİK TASARIM**
मेहमेत अली किरजा / MEHMET ALİ KIRCA
ओउर आलूतुनतोप / UĞUR ALTUNTOP

संस्करण / **BASKI**
TDV
YAYIN MATBAACILIK TİC. İŞLETMESİ
(+90 312) 354 91 31

© धार्मिक मामलों का सभापतित्व / **DİYANET İŞLERİ BAŞKANLIĞI**

सम्पर्क / **İLETİŞİM**
धार्मिक प्रकाशन महानिदेशालय / DİNİ YAYINLAR GENEL MÜDÜRLÜĞÜ
विदेशी भाषाओं और बोलियों का प्रकाशन विभाग
YABANCI DİL VE LEHÇELERDE YAYINLAR DAİRE BAŞKANLIĞI
TEL: (+90 312) 295 72 81 • FAKS: (+90 312) 284 72 88
E-MAIL: YABANCIDILLER@DIYANET.GOV.TR

पवित्र कुरआन का हिन्दी अनुवाद / KUR'AN-I KERİM VE HİNTÇE MEALİ

القرآن الكريم

# पवित्र कुरआन का हिन्दी अनुवाद

धार्मिक मामलों का सभापतित्व

## सूर-ए-फ़ातिहा

यह सूरः मक्की है, इसमें अ़रबी के 123 अक्षर, 25 शब्द, 7 आयतें और 1 रूकूअ़ है

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

1 सब तरह की तअ़रीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं जो तमाम आ़लमों (सृष्टियों) का रब (पालन कर्ता) है,

2 बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म वाला है;

3 बदला दिए जाने वाले दिन का मालिक है,

4 हम तेरी ही इबादत करते हैं और 'तुझ' ही से मदद माँगते हैं,

5 हमें सीधे रास्ते पर चला;

6 उन लोगों का रास्ता जिन पर तूने इनआ़म फ़रमाया,

7 उन लोगों का रास्ता नहीं, जिन पर तेरा गज़ब (प्रकोप) हुआ, और न भटके हुओं का।

## सूर-ए-बक़रः

यह सूरः मदनी है, इसमें अ़रबी के 20000 अक्षर, 6021 शब्द 286 आयतें और 40 रूकूअ़ हैं

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

1 अलिफ-लाम-मीम

2 इस किताब (कुर्आन) में कोई सन्देह नहीं,रहनुमा है परहेज़गारों के लिए।

3 जो ग़ैब (परोक्ष) पर ईमान (आस्था) लाते, और नमाज़ क़ायम करते, और जो कुछ 'हमने' उनको दे रखा है उसमें से ख़र्च करते हैं;

4 और जो लोग ईमान लाते हैं उस पर, जो आप की ओर (कुर्आन) उतारा गया है, और जो आप से पहले उतारा गया, और आख़िरत (परलोक) पर भी यक़ीन रखते हैं;

5 यही लोग अपने रब(पालनहार) की ओर से हिदायत(सीधी राह) पर हैं और यही नजात (कामियाबी) पाने वाले हैं।

6 जिन लोगों ने कुफ़्र किया उनके लिए बराबर है, चाहे आप उन्हें ख़बरदार करें या न करें, वे ईमान लाने वाले नहीं;

7 अल्लाह ने उनके दिलों और उनके कानों पर मुहर लगा रखी है, और उनकी
आँखों पर पर्दा है, और उनके लिए बड़ा अ़ज़ाब तैयार है।
8 और कुछ लोग ऐसे हैं जो कहते हैं कि हम अल्लाह पर और आख़िरत के
दिन पर ईमान रखते है, हालाँकि वे ईमान नहीं रखते;
9 वे अल्लाह को और ईमान वालों को धोखा देते हैं, हालांकि वे अपने आप को
धोखा दे रहे हैं, और वे इससे बेख़बर हैं।''
10 उनके दिलों में (इन्कार का) रोग था, तो अल्लाह ने उनके रोग को और बढ़ा
दिया, और उनके झूठ बोलने की वजह से उन्हें दुःख देने वाला अ़ज़ाब होगा;
11 और जब उनसे कहा जाता है कि ''ज़मीन (मुल्क) में फ़साद न मचाओ,'' तो
कहते हैं, ''हम तो सुधार करने वाले हैं;
12 जान लो, वही लोग फ़साद करने वाले हैं, लेकिन उन्हें एह़सास नहीं होता।
13 और जब उनसे कहा जाता है कि जिस तरह और लोग ईमान ले आए तुम
भी ईमान ले आओ, तो कहते हैं, ''क्या हम ऐसा ईमान लाएँ जैसे वे मूर्ख
लोग ईमान ले आए हैं?'' जान लो! यही मूर्ख हैं, लेकिन जानते नहीं।
14 और ये लोग जब ईमान लाने वालों से मिलते हैं तो कहते हैं, ''हम ईमान
ले आए हैं; और जब एकांत में अपने शैतानों (दुष्ट मुखियों) से मिलते हैं तो
कहते हैं, हम तुम्हारे साथ हैं, हम तो केवल हंसी मज़ाक़ के लिए ऐसा करते
हैं;''
15 अल्लाह उनका मज़ाक़ उड़ा रहा है, और उन्हें ढ़ील दे रहा हैं, कि वे इस
सरकशी में भटक रहे हैं;
16 यही वे लोग हैं जिन्होंने हिदायत (सन्मार्ग) के बदले गुमराही मोल ली, तो
उनकी इस तिजारत ने न कोई लाभ पहुँचाया और न ही वे सीधी राह पा
सके;
17 उनकी मिसाल उस व्यक्ति की सी है जिसने आग जलाई, फिर जब उसके
आस-पास ख़ूब रोशनी हो गई, तो अल्लाह ने (अचानक) उनकी (आँखों की)
रोशनी छीन ली, और उन्हें अंधेरों में छोड़ दिया कि उन्हें कुछ सुझाई नहीं दे
रहा है;
18 वे बहरे हैं,गूँगे हैं, अन्धे हैं, कि लौटने वाले नहीं;
19 या (उनकी मिसाल ऐसी है) जैसे आसमान से वर्षा हो रही हो, जिसके साथ
अंधेरियाँ हों और गरज और चमक भी हो, वह बिजली की कड़क की वजह
से मरने के डर से अपने कानों में उँगलियाँ दे ले रहे हों, और अल्लाह ने
तो काफ़िरों (इन्कारियों) को घेर रखा है;
20 क़रीब है कि बिजली उनकी आँखों की रोशनी उचक ले जाए; जब उनके आगे
बिजली चमकती है, तो उसमें चलते हैं और जब उन पर अंधेरा छा जाता है
तो खड़े रह जाते हैं, और अगर अल्लाह चाहता तो उनकी सुनने और देखने
की ताक़तें छीन लेता, बेशक अल्लाह को हर चीज़ पर क़ुद्‌रत (सामर्थ्य) है।
21 ऐ लोगो! अपने 'रब' की इबादत करो, जिसने तुमको और उन लोगों को जो
तुमसे पहले गुज़रे हैं पैदा किया, ताकि तुम परहेज़गार(संयमी) बन जाओ;

22 (वही है) 'जिसने' तुम्हारे लिए ज़मीन को फ़र्श, और आसमान को छत बनाया,
और आसमान से पानी बरसा कर उससे तुम्हारे खाने की चीज़ें और फल पैदा
किये; तो न बनाओ अल्लाह के बराबर किसी दूसरे को, और 'तुम तो जानते
हो।'
23 और जो 'हमने' अपने बन्दे (मुहम्मद) पर (कुर्आन) उतारा है; अगर तुमको
इसमें शक हो तो इस जैसी तुम एक (ही) सूरः बना कर ले आओ, और
अल्लाह के सिवा जो तुम्हारा मददगार हो, उन सब को बुला लाओ, अगर तुम
सच्चे हो;
24 फिर अगर तुम ऐसा न कर सको, और तुम हरगिज़ नहीं कर सकते,तो डरो
उस आग से जिसका ईंधन इन्सान और पत्थर हैं, जो काफ़िरों (इन्कारियों) के
लिए तैयार की गई है।
25 और ख़ुशख़बरी सुना दीजिए उनको जो ईमान लाए और नेक काम करते रहे,
उनको ऐसे बाग़ मिलेंगे कि बहती होंगी उनके नीचे नहरें, जब उनको वहाँ का
कोई फल खाने को मिलेगा तो कहेंगे, ''यह तो वही है जो हम को इससे पहले
मिला था, और उन्हें इससे मिलता जुलता ही (फल) मिलेगा।'' उनके लिए वहाँ
पाक-साफ़ पत्नियाँ होंगी,और वे वहाँ हमेशा-हमेश रहेंगे।
26 अल्लाह इस बात से नहीं शर्माता; चाहे किसी मच्छर ही की मिसाल क्यों न
हो, या उससे भी घटिया किसी और चीज़ की, फिर जो ईमान ला चुके हैं वे
तो जानते हैं कि वह उनके रब की ओर से सत्य है! और जो इन्कार करने
वाले हैं तो वे कहते हैं, "इस मिसाल से अल्लाह का इरादा क्या है?'' इससे
बहुतों को भटकने देता है और बहुतों को सीधी राह दिखा देता है, और
भटकते तो केवल वही हैं, जो नाफ़रमान (अवज्ञाकारी) हैं।
27 जो अल्लाह से अ़हद (प्रतिज्ञा) करने के बाद अपना वचन तोड़ देते हैं, और
जिसे अल्लाह ने जोड़े रखने का हुक्म दिया है उसे काट डालते हैं, और ज़मीन
पर फ़साद करते हैं,वही लोग नुक़्सान उठाने वाले हैं।
28 अल्लाह का इन्कार तुम कैसे कर सकते हो! जबकि तुम निर्जीव थे तो उसने
तुमको जीवित किया, और तुम को वही मौत देता है, फिर तुमको ज़िन्दा करेगा,
फिर तुम उसी की ओर लौट कर जाओगे।
29 वह(अल्लाह) जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन की तमाम चीज़ों को पैदा किया, फिर
आसमान की ओर ध्यान दिया, तो सात आसमान बना दिये और 'वह' तो
हर चीज़ की जानकारी रखता है।
30 और जब तुम्हारे रब ने फ़रिश्तों से कहा, ''मैं ज़मीन में अपना नायब (प्रतिनिधि
ा) बनाने वाला हूँ।'' (तो फ़रिश्ते) बोले, ''क्या! आप ज़मीन में ऐसे व्यक्ति को
(नायब) बनाएँगे, जो फ़साद करें, और ख़ून ख़राबा करें, और हम तो आपका
ज़िक्र और पवित्रता बयान करते ही रहते हैं।'' (रब ने) कहा, ''बेशक जो मैं
जानता हूँ, तुम नहीं जानते।''
31 और (अल्लाह ने) आदम को तमाम नाम सिखाए, फिर उन्हें फ़रिश्तों के सामने
पेश किया और कहा, ''अगर सच्चे हो! तो मुझे इन चीज़ों के नाम बताओ।''

32 उन सबने कहा, (ऐ अल्लाह!) "तू पाक है, 'तूने' जो कुछ हमें बताया उसके
सिवा हमें कोई इल्म नहीं, बेशक तू इल्म वाला, हिक्मत वाला है ।"
33 (तब अल्लाह ने) हुक्म दिया,"ऐ आदम! इन (फ़रिश्तों) को उनके नाम बता
दो, जब उन्होंने उनको उनके नाम बता दिये तो फ़रमाया, "क्या मैंने तुम से
(पहले ही) नहीं कहा था, कि ज़मीन और आसमानों की छिपी बातों को मैं
ही जानता हूँ, और मैं जानता हूँ, जो कुछ तुम ज़ाहिर करते हो और जो कुछ
छिपाते हो।"
34 और जब 'हमने' फ़रिश्तों से कहा, "आदम को सज्दः करो," तो इब्लीस
(शैतान) के सिवा सब ने सज्दः किया, उसने इन्कार किया और घमंड में आ
गया और वह काफ़िर (अवज्ञाकारी) हो गया।
35 और 'हमने' कहा, "ऐ आदम! तुम और तुम्हारी पत्नी जन्नत में रहो, और
जहाँ से चाहो तुम दोनों जी भर के खाओ और इस पेड़ के पास मत फटकना!
अन्यथा ज़ालिमों में हो जाओगे।"
36 फिर शैतान ने उन्हें वहाँ से फिसला दिया, फिर उन दोनों को वहाँ से निकलवा
दिया जहाँ वे थे, और 'हमने' हुक्म दिया कि, तुम सब उतरो यहाँ से, तुम
एक-दूसरे के दुश्मन रहोगे और ज़मीन में तुम्हारे लिए एक वक़्त तक ठिकाना
और (जीवन काटने का) सामान है।"
37 फिर आदम ने अपने 'रब' से कुछ शब्द प्राप्त किये, तो (अल्लाह ने) उनकी
तौबः कुबूल कर ली, बेशक वही तौबः कुबूल करने वाला,रहम वाला है।
38 'हमने' कहा, "तुम सब यहाँ से उतर जाओ, फिर अगर मेरी ओर से तुम
लोगों के पास कोई हिदायत (पथ-प्रदर्शन) पहुँचे तो जिन्होंने मेरी हिदायत की
पैरवी की उन को न तो डर होगा और न वे दुखी होंगे,"
39 और जिन्होंने इन्कार किया, और हमारी आयतों को झुठलाया, वही दोज़ख़ी हैं,
वे हमेशा उसी में रहेंगे।"
40 ऐ बनी इस्राईल! (याकूब की संतान) मेरे एहसान को याद करो, जो 'मैं' तुम
पर कर चुका हूँ, और तुम मेरे अहद (प्रतिज्ञा) को पूरा करो तो मैं तुम्हारे
अहद को पूरा करूँगा, और मुझ ही से डरते रहो;
41 और ईमान लाओ उस चीज़ (कुर्आन) पर जो मैंने उतारा है जो तुम्हारी किताब
(तौरात) की तस्दीक़ करती है; और सबसे पहले (तुम ही) इसके इन्कार करने
वाले न बनो, और मेरी आयतों को थोड़ी सी क़ीमत के बदले मत बेचो और
मुझ ही से डरते रहो;
42 और तुम हक़ को झूठ के साथ मत मिलाओ, और हक़ को मत छिपाओ जान
बूझ कर;
43 और नमाज़ क़ायम करो, और ज़कात दिया करो, और झुकने (रूकूअ़ करने)
वालों के साथ तुम भी झुका (रूकूअ़) करो;
44 क्या! तुम लोगों को भलाइयों का हुक्म करते हो, और अपने आप को भूल
जाते हो, हालाँकि तुम किताब (तौरात) भी पढ़ते रहते हो! क्या तुम (इतना
भी) नहीं समझते!!

45 और सब्र और नमाज़ के ज़रिये (अल्लाह से) मदद चाहो, और बेशक यह
(नमाज़) कठिन काम है मगर उन लोगों के लिए नहीं, जो (अल्लाह का) डर
रखने वाले हैं।
46 जो समझते हैं कि उन्हें अपने रब से मिलना है, और उसी की ओर उन्हें
पलटकर जाना है।
47 ऐ बनी इस्राईल (याकूब की सन्तान) मेरे एहसान को याद करो, जो मैं तुम
पर कर चुका हूँ, और उस बात को भी (याद करो) कि मैंने तुम्हें सारे संसार
पर फ़ज़ीलत (प्रधानता) दी थी;
48 और उस दिन से डरो, जब कोई किसी के काम न आएगा, न उसकी ओर
से (किसी की) सिफ़ारिश कुबूल की जाएगी और न उससे कुछ बदले में लिया
जाएगा और न लोगों को (कहीं से) मदद पहुँचेगी।
49 और (याद करो) जब 'हमने' तुमको फ़िरऔन के लोगों से छुट्कारा दिया, वे
तुम को सख़्त सज़ा दिया करते थे, (यानी) तुम्हारे बेटों को क़त्ल कर देते थे,
और तुम्हारी बेटियों को ज़िन्दा छोड़ देते थे, और इसमें तुम्हारे रब की ओर
से तुम्हारे लिए एक बड़ी आज़माइश थी;
50 और (वह वक़्त भी याद करो) जब 'हमने' तुम्हारी वजह से समुद्र को फाड़
कर तुम को बचा लिया, और फ़िरऔन वालों को डुबो दिया, और तुम देख
रहे थे;
51 और जब 'हमने' मूसा से चालीस रातों का वादा किया, (तूर पहाड़ पर) फिर
इसके बाद तुम बछड़े (की इबादत) में लग गये, और तुम ज़ालिम थे
52 फिर 'हमने' तुमको माफ़ कर दिया,उस अपराध के बाद भी, ताकि तुम शुक्र
करो;
53 और (याद करो) जब 'हमने' मूसा को किताब (तौरात) और कसौटी (सच
और झूठ में अन्तर करने वाले मोजिज़े) अ़ता की ताकि तुम सीधी राह पर
चल सको;
54 और जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा, "भाइयो तुमने बछड़े को (मअ़बूद)
ठहराने में अपने ऊपर बहुत जुल्म किया, तो तुम अपने पैदा करने वाले के
सामने तौबः करो और अपनो को (जिन्होंने बछड़े की पूजा में हिस्सा लिया
उन्हें) अपने हाथों से क़त्ल करो, तुम्हारे पैदा करने वाले के नज़दीक तुम्हारे
हक़ में यही बेहतर है," तो 'उसने' तुम्हारी तौबः कुबूल कर ली, बेशक 'वही'
तौबः कुबूल करने वाला, रहम वाला है।
55 और जब तुमने कहा, "ऐ मूसा! हम तुम्हारे कहने पर ईमान नहीं लाएँगे जब
तक कि अल्लाह को सामने न देख लें," फिर तुम पर (बिजली का) कड़ाका
टूट पड़ा और तुम देख रहे थे।
56 फिर तुम्हारे मरने के बाद 'हमने' तुमको ज़िन्दा कर दिया ताकि तुम शुक्र अदा
करो।
57 और 'हमने' तुम पर बादलों की छाया की, और तुम पर 'मन्न' और 'सल्वा'
उतारते रहे; और 'हमने' जो तुम को पाकीज़ा चीज़ें दी हैं उनमें से खाओ,

और उन्होंने 'हमारा' तो कुछ भी नहीं बिगाड़ा, बल्कि अपने ही ऊपर ज़ुल्म
करते थे।
58 और जब 'हमने' कहा था, ''दाख़िल हो जाओ इस बस्ती में, जितना और जहाँ
से चाहो, जी भर के खाते रहो, और सज्दे करते हुए शहर में दाख़िल होना
और मुँह से "हित्ततुन" (तौबः-तौबः) कहते जाना तो 'हम' तुम्हारी ग़ल्तियाँ
माफ़ कर देंगे, और भलाई पर क़ायम रहने वालों को और भी ज़्यादा देंगे।''
59 तो जो ज़ालिम थे, उन्होंने बदल डाली वह बात जो उनसे कही गई थी तो
ऐसे ज़ालिमों पर 'हमने' आसमान से भयंकर अज़ाब उतारा, यह सब उनकी
नाफ़रमानी की वजह से हुआ।
60 और जब मूसा ने अपनी क़ौम के लिए पानी की दुआ की, तो 'हमने' कहा,
"चट्टान पर अपनी लाठी मारो," तो उस से बारह स्रोत फूट निकले, और
हर गिरोह ने अपना-अपना घाट जान (कर पानी पी) लिया, खाओ और पियो
अल्लाह के दिये हुए (रिज़्क़) से और ज़मीन पर फ़साद करते न फिरो।
61 और जब तुमने कहा, ''ऐ मूसा! हम को सब्र न होगा एक ही तरह के खाने
पर, तो अपने 'रब' से हमारे लिए दुआ करो कि हम को ज़मीन में उगने
वाली सब्ज़ी, ककड़ी, गेहूँ, मसूर और प्याज़ निकाल कर दे।'' (मूसा) बोले,
''क्या किसी अच्छी चीज़ को छोड़ कर, बदले में घटिया चीज़ को लेना चाहते
हो? तब तो किसी शहरी आबादी में जाओ, जो तुम माँगते हो वहाँ मिलेगा।''
और (आख़िरकार) उन पर ज़िल्लत थोप दी गई, और उन्होंने अल्लाह का
ग़ज़ब अपने सर ले लिया; यह इसलिए कि वे अल्लाह की आयतों से इन्कार
करते थे, और नबियों को बिला वजह मार डाला करते थे, यह इसलिए हुआ
कि हुक्म को न मानते और हद(सीमा) का उल्लंघन करते थे।
62 जो लोग ईमान लाए और जो भी यहूदी और ईसाई और साबिई, अल्लाह और
आख़िरत के दिन पर ईमान लाए और नेक काम करे तो उनका बदला उनके
रब के यहाँ मौजूद है, और न तो उनको डर होगा और न वह दुखी होंगे।
63 और जब 'हमने' तुमसे अहद (वचन) लिया, और "तूर" पहाड़ को तुम्हारे
ऊपर उठा खड़ा किया, (और कहा,) जो चीज़ (किताब) 'हमने' तुम्हें दी है
उसे मज़बूती के साथ पकड़ो, और जो कुछ उसमें है उसे याद रखो ताकि तुम
परहेज़गार (संयमी) बन जाओ।
64 फिर इसके बाद भी तुम फिर गये, तो अगर अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी
रहमत तुम पर न होती, तो तुम घाटे में पड़ गये होते।
65 और तुम उन लोगों को खूब जानते हो, जो हफ़्ते (शनिवार) को (मछली का
शिकार करने में) हद से आगे बढ़ गये थे, तो 'हमने' उनसे कहा, धिक्कारे,
फिट्कारे हुए बन्दर बन जाओ;
66 फिर 'हमने' इस घटना को उन लोगों के लिए जो उस वक़्त मौजूद थे और
उन लोगों के लिए भी जो बाद में आने वाले थे चेतावनी और (अल्लाह से)
डरने वालों के लिए नसीहत बना दिया।
67 और जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा, ''अल्लाह तुमको हुक्म देता है कि एक

गाय (या बैल) ज़ब्ह करो।'' वे कहने लगे, ''क्या आप हमसे हंसी करते हैं?''
(मूसा ने) कहा, ''अल्लाह की पनाह माँगता हूँ इससे कि मैं नादान बनूँ।''
68 कहने लगे, ''अपने रब को पुकारो! वह हमें साफ़-साफ़ बताएं कि वह गाय
(या बैल) कैसी हो।'' (मूसा) बोले, 'वह' (अल्लाह) फ़रमाता है कि वह गाय
न बूढ़ी हो न बच्चा, बल्कि दोनों के बीच की हो, बस तुम को जो हुक्म दिया
गया है उसको पूरा करो,''
69 उन्होंने कहा, ''अपने 'रब' से हमारे लिए दुआ कीजिए, 'वह' हमको अच्छी
तरह समझा दे कि उसका रंग कैसा हो।'' (मूसा ने) कहा, ''अल्लाह फ़रमाता
है, कि उस गाय का रंग खूब गहरा ज़र्द हो कि देखने वालों को भला लगे;''
70 उन्होंने कहा, ''अपने रब से हमारे लिए पूछिए, कि हमको अच्छी तरह समझा
दे कि वह क्या (गुण रखती) हो, हमको तो (इस रंग की बहुत सी) गाय एक
ही तरह की मालूम होती हैं, और अल्लाह ने चाहा तो हम ज़रूर ठीक-ठीक
पता लगा लेंगे;''

71 (मूसा ने) कहा, ''वह अल्लाह फ़रमाता है, कि वह न किसी काम काज में ली
गई हो, न ज़मीन जोतने में, और न खेती के सिंचाई में हो, हर तरह बे
ऐब हो, उसमें किसी तरह का दाग़ न हो।'' वे बोले, ''अब तुम ठीक (पहचान)
लाए हो फिर उस को (बड़ी मुश्किल से) ज़ब्ह किया और लगता न था कि वे
ऐसा करेंगे?

72 और जब तुमने एक व्यक्ति को मार डाला, फिर उसके बारे में (आपस में)
झगड़ने लगे, लेकिन जो बात तुम छिपा रहे थे; और अल्लाह उसको खोलने
वाला था।

73 फिर 'हमने' कहा, (गाय का) ''कोई टुकड़ा मुर्दे पर मार दो (वह ज़िन्दा हो
जाएगा)।'' इसी तरह (क़ियामत में) अल्लाह मुर्दों को ज़िन्दा करेगा और 'वह'
तुमको अपनी निशानियाँ (चमत्कार) दिखाता है, ताकि तुमको समझ आ जाए;
74 फिर इस (चमत्कार) के बाद भी तुम्हारे दिल कठोर ही रहे, जैसे वे पत्थर
(दिल) हो गये बल्कि उससे भी अधिक कठोर; और पत्थरों में कुछ ऐसे भी
होते हैं कि उनमें से नहरें फूट निकलती हैं, और कुछ ऐसे भी होते हैं जो फट
जाते हैं और उनमें से पानी निकलने लगता है, और कुछ ऐसे भी होते हैं जो
अल्लाह के डर से लुढ़क पड़ते हैं; और जो कुछ तुम कर रहे हो अल्लाह
उससे बेख़बर नहीं।

75 क्या तुमको उम्मीद है कि (यहूदी) तुम्हारी बात मानकर ईमान ले आएंगे?
(जबकि) उनका हाल यह है कि उनमें कुछ लोग ऐसे भी हैं, जो अल्लाह का

कलाम (तौरात) सुनते हैं फिर उसको सुन लेने के बाद भी बदल देते हैं, और वे इसे (ख़ूब) जानते हैं।

76 और जब ये लोग उनसे मिलते हैं जो ईमान ला चुके हैं, तो कहते हैं, ''हम भी ईमान ले आए हैं,'' और जब एक-दूसरे से अकेले में मिलते हैं, तो कहते हैं; ''क्या तुम उन्हें वे बातें, जो अल्लाह ने तुम पर खोलीं, बता देते हो कि वे उनके ज़रिये तुम्हारे रब के यहाँ तुमको इल्ज़ाम दें सो क्या तुम समझते नहीं!''

77 क्या यह लोग (इतना भी) नहीं जानते! कि अल्लाह को इसकी भी ख़बर है, जिसको यह छिपाते हैं, और जिसे यह ज़ाहिर करते हैं।

78 और कुछ उनमें अनूपढ़ (भी) हैं, जो किताब (इलाही) का कोई इल्म नहीं रखते सिवाय झूठी तमन्नाओं (कामनाओं) के, और वह तो बस अट्कल से काम लेते हैं।

79 तो बड़ी ख़राबी है उन लोगों के लिए जो (अल्लाह की) किताब को अपने हाथ से लिखते हैं, फिर कह देते हैं, ''यह अल्लाह की ओर से है,'' ताकि उसके ज़रिये थोड़े से दाम हासिल कर लें, तो तबाही है उनके लिए जो वह अपने हाथों से लिखते हैं और तबाही है उनके लिए जो वह कमा रहे हैं।

80 और कहते हैं, ''हमको तो दोज़ख़ की आग छुएगी भी नहीं, सिवाय कुछ गिने-चुने दिनों के।'' कह दीजिए, ''तुम ने अल्लाह के यहाँ से कोई वचन ले रखा है, जो अब अल्लाह अपने वादे के ख़िलाफ़ न करेगा? या (यूँही) अल्लाह के ज़िम्मे ऐसी बात लगाते हो जो तुम नहीं जानते;

81 जो बुरे काम करता हो और हर ओर से गुनाहों में घिरा हो, तो ऐसे ही लोग दोज़ख़ी हैं कि वे हमेशा (जहन्नम की) आग ही में रहेंगे;

82 और जो लोग ईमान लाए और नेक काम करते रहे ऐसे ही लोग जन्नती हैं कि वे हमेशा उसी में रहेंगे;

83 और (याद करो) जब 'हमने' बनी इस्राईल (याक़ूब के बेटों) से अ़हद (प्रतिज्ञा) लिया, ''तुम इबादत न करना किसी की सिवाय अल्लाह के, और अच्छे व्यवहार से पेश आना; (अपने) माँ बाप से, रिश्तेदारों और यतीमों और मुहताजों से, और लोगों से भली बात कहना और नमाज़ क़ायम रखना, और ज़कात देते रहना।'' फिर तुम सब इन हुक्मों से फिर गये, सिवाय तुम में से कुछ लोगों के, और तुम (अहद से) मुँह फेर कर बैठ गये।

84 और (याद करो) जब 'हमने' तुम से अ़हद (बचन) लिया, ''अपनों के ख़ून न बहाओगे और न अपने लोगों को अपनी बस्तियों से निकालोगे, फिर तुमने इक़रार किया, और तुम (खुद ही) गवाह हो;''

85 फिर तुम वही हो कि अपनों को क़त्ल करते हो, और अपने में से कुछ लोगों को गुनाह और ज़ुल्म से चढ़ाई करके उन्हें वतन से निकाल भी देते हो और अगर वे तुम तक बन्दी बनकर पहुँच जाते हैं, तो तुम फ़िदिया (अर्थदण्ड) देकर छुड़ा भी लेते हो, हालाँकि उनका (वतन से) निकालना ही तुम पर ह़राम था; तो क्या तुम किताब के कुछ हुक्मों को तो मानते हो और कुछ को इन्कार

करते हो? बस तुममें से जो ऐसा करे, उसकी सज़ा क्या है! सिवाय दुनियावी
ज़िन्दगी में रूसवाई के? और क़ियामत के दिन यह सख़्त अ़ज़ाब में डाले
जाएँगे, और अल्लाह उससे बेख़बर नहीं, जो कुछ तुम करते हो।
86 यही वे लोग हैं जिन्होंने दुनिया की ज़िन्दगी ख़रीद ली है, आख़िरत के बदले में,
सो उन पर से न अ़ज़ाब हल्का किया जाएगा और न उन्हें मदद ही पहुँचेगी।
87 और 'हमने' मूसा को किताब प्रदान की, और उनके पीछे 'हमने' एक के बाद
एक, कई नबी भेजे; और मरयम के बेटे ईसा को 'हमने' खुली हुई निशानियाँ
(चमत्कार) प्रदान कीं, और रूहुल क़ुदुस(जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम) के ज़रिये
उनकी पुष्टि (मदद) की; तो जब कभी तुम्हारे पास कोई रसूल (ईशदूत) ऐसी
बातें लेकर आते जो तुम्हारी इच्छाओं के ख़िलाफ़ होतीं, तो तुम अकड़ने लगते?
फिर एक गिरोह को तो तुम ने झुठला दिया था और एक गिरोह को क़त्ल
करते रहे।
88 और (यहूदी) कहते, "हमारे दिल पर्दे में (सुरक्षित) हैं," (नहीं) बल्कि अल्लाह
ने उन पर लानत कर रखी है; उनके कुफ़्र की वजह से; तो वह बहुत कम
ईमान लाते हैं।
89 और जब उनके पास एक किताब अल्लाह की ओर से आयी तस्दीक़ करने
वाली, उसकी जो उनके पास (पहले से) मौजूद है; और इसके पहले वे (ख़ुद
ही इस किताब द्वारा) काफ़िरों पर फ़त्ह़ (विजय) माँगा करते थे; फिर जब उनके
पास वह आ गया, जिसको वे ख़ूब पहचानते थे, तो उसी से इन्कार कर बैठे;
सो अल्लाह की लानत हो काफ़िरों (इन्कारियों) पर;
90 बुरी है, वह चीज़ जिसके बदले में उन्होंने अपनी जानों को बेच डाला है; इस
जलन से कि अल्लाह अपने बन्दों में से जिसपर चाहता है अपनी मेहरबानी
में से नाज़िल करता है (अल्लाह की नाज़िल की हुई किताब से) कुफ़्र करने
लगे तो वे (उसके) ग़ज़ब पर ग़ज़ब में मुब्तिला हो गये, और काफ़िरों के लिए
ज़िल्लत वाला अ़ज़ाब है;
91 और जब उनसे कहा जाता है, "ईमान लाओ, उस कलाम पर जो अल्लाह
ने उतारा है," तो कहते हैं, हम उस पर ईमान रखते हैं जो (किताब) हमारे
ऊपर उतारी गई है; और जो कुछ उसके अ़लावा है, उससे इन्कार करते हैं;"
हालाँकि वह (ख़ुद भी) ह़क़ है और उसकी भी तस्दीक़ करने वाली है जो उनके
पास है, कह दीजिए, "अच्छा तुम इससे पहले नबियों को क्यों क़त्ल करते
रहे, अगर तुम ईमान वाले हो?"
92 और तुम्हारे पास मूसा खुली-खुली निशानियाँ लेकर आए इस पर भी तुमने
बछड़े को अपना (उपास्य बना) लिया, और तुम तो हो ही ज़ालिम;
93 और जब 'हमने' तुमसे पक्का अ़हद (वचन) लिया, और तुम्हारे ऊपर तूर
(पहाड़) को बुलन्द किया, "जो कुछ 'हमने' तुम्हें दिया है, उसे मज़बूती के
साथ पकड़ो, और सुनो;" वे बोले, "हमने सुना, लेकिन हम मानते नहीं और
उनके कुफ़्र की वजह से बछड़ा उनके दिल में समाया हुआ था, कह दीजिए,
"अगर तुम ईमान वाले (बनते) हो तो तुम्हारा ईमान तुमको कैसी बुरी बात
सिखाता है;"

94 कह दीजिए, “अगर अल्लाह के यहाँ आख़िरत का घर (परलोक का सुख)
ख़ास कर तुम्हारे ही लिए है, दूसरे लोगों के लिए नहीं; तो अगर तुम्हारा यह
ख़याल सच्चा है तो मौत की तमन्ना करो;”
95 लेकिन वे इसकी इच्छा कभी न करेंगे, उन बुरे कामों की वजह से जो वे अपने
हाथों आगे भेज चुके हैं; और अल्लाह तो ज़ालिमों को खूब जानता है;
96 और आप उन्हें जीवन का हरीस (लालची) सब लोगों से बढ़कर पाएँगे, और
(यहाँ तक कि) मुश्रिकों से भी बढ़कर; उनमें से हर-एक यह चाहता है
कि हज़ार वर्ष की उम्र पाए, और अगर इतनी उम्र पा भी जाएँ तो वह उन्हें
(आख़िरत के) अ़ज़ाब से बचा न सकेगी, और जो कुछ वे कर रहे हैं अल्लाह
उसे खूब देख रहा है।
97 कह दीजिए, “जो कोई जिब्रईल का दुश्मन हो, उसने तो इस (क़ुर्आन) को
आप के दिल पर अल्लाह के हुक्म से उतारा है, वह तस्दीक़ (सत्यापन) करने
वाला है उस (किताब) की जो उसके पहले से है; और ईमान वालों के लिए
हिदायत और ख़ुशख़बरी है।
98 जो व्यक्ति अल्लाह का दुश्मन हो, और उसके फ़रिश्तों का, और उसके रसूलों
का, और जिब्रईल,और मीकाईल (फ़रिश्तों) का, तो अल्लाह भी ऐसे काफ़िरों
(इन्कारियों) का दुश्मन है।
99 और (ऐ पैग़म्बर!) ‘हमने’ तुम्हारे पास स्पष्ट निशानियाँ भेजी हैं और
बद्‌किरदारों (दुष्कर्मियों) के सिवा, और कोई उनसे इन्कार न करेगा।
100 क्या यह (उनकी नीति) है, कि उन्होंने जब कभी कोई अ़हद (प्रतिज्ञा) किया
तो उन्हीं में से किसी (न किसी) गिरोह ने उसे तोड़ डाला, बल्कि अक्सर तो
ईमान ही नहीं रखते;
101 और जब उनके पास अल्लाह की ओर से रसूल आए, और (वह) उस किताब
(तौरात) की, जो इन (यहूदियों) के पास है तस्दीक़ (पुष्टि) करते हैं, तो जिन
लोगों को किताब दी गई थी उनमें से एक गिरोह ने, अल्लाह की किताब को
अपनी पीठ के पीछे फेक दिया, जैसे कि वे जानते ही नहीं।
102 और उन (ढकोसलों) के पीछे लग गये, जिसे शैतान सुलेमान की हुकूमत में
पढ़ते थे, (जादू का) और सुलेमान ने तो कभी कुफ़्र नहीं किया, बल्कि शैतान
(ही) कुफ़्र किया करते थे; कि लोगों को जादू सिखाते थे और उन बातों के
भी पीछे हो लिए जो बाबुल (शहर) में ‘हारूत’ और ‘मारूत’ दो फ़रिश्तों पर
उतरा था; और वे (दोनों) किसी को कुछ नहीं सिखाते थे जब तक यह कह
न देते थे कि “हम तो आज़माइश के लिए हैं, तो तुम (इसे सीखकर) कुफ़्र में
न पड़ो।” लोग उनसे ऐसा (जादू) सीखते जिसके ज़रिये पति-पत्नी में जुदाई
डाल दें, हालाँकि अल्लाह के हुक्म के बिना वह अपनी इन बातों से किसी को
नुक़सान नहीं पहुँचा सकते थे, मगर यह कुछ ऐसे (मन्त्र) सीखते जिनसे इन्हें
ही नुक़सान पहुँचता और फ़ायदा कुछ न होता, और वह इतना ज़रूर जानते
थे; कि जो व्यक्ति इन बातों (जादू) का ख़रीदार होगा उसके लिए आख़िरत
(परलोक) में कोई हिस्सा, नहीं, वह बहुत बुरा था जिसके बदले में उन्होंने
अपने आप को बेच डाला, काश! वे जानते।

103 और अगर वे ईमान ले आते और तक़्वा (परहेज़गारी) अपनाते तो उसका
सवाब अल्लाह के यहाँ कहीं बेहतर होता; काश! वे (इतना) जानते।
104 ऐ ईमान वालो! (पैग़म्बर के साथ) 'राअ़िना' न कहा करो बल्कि 'उन्ज़ुर्ना'
कहा करो; और ध्यान से सुनो और काफ़िरों के लिए दुखदाई अ़ज़ाब है;
105 जो लोग काफ़िर हैं (चाहे) अह्ले किताब (किताब वाले) में से हों या मुश्रिकों में
से, वे इसे ज़रा भी पसंद नहीं करते कि तुम्हारे ऊपर कोई भी भलाई तुम्हारे
रब की ओर से उतरे; हालाँकि अल्लाह अपनी रह़मत में जिसे चाहता है खास
(नियुक्त) कर लेता है और अल्लाह बड़ा ही फ़ज़्ल (मेहरबानी) वाला है।
106 (ऐ पैग़म्बर!) 'हम' कोई आयत मन्सूख़ (स्थगित) कर देते हैं या उसे भुला
देते हैं तो उससे अच्छी या वैसी ही (दूसरी आयत) भेज देते हैं, क्या तुमको
मालूम नहीं, कि अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर (सामर्थ्य) है?
107 क्या तुमको मालूम नहीं कि आसमानों और ज़मीन का राज्य 'उसी' अल्लाह
का है, और अल्लाह के सिवा तुम्हारा कोई दोस्त और मदद्गार नहीं।
108 क्या तुम यह चाहते हो कि अपने रसूल से उसी तरह के सवाल करो जिस
तरह के सवाल पहले मूसा से किये गये थे? और जो ईमान के बदले कुफ़्र
अपनाए, तो वह सीधे रास्ते से भटक गया।
109 बहुत से अह्ले किताब ह़क़् के ज़ाहिर हो जाने के बावजूद, अपने दिली ह़सद
(ईर्ष्या) की वजह से चाहते हैं कि तुम्हारे ईमान लाने के बाद फिर तुमको
काफ़िर बना दें, तो तुम माफ़ करो, और उन पर ध्यान न दो, यहाँ तक
कि अल्लाह अपना हुक्म जारी कर दे, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ुद्रत
(सामर्थ्य) रखता है;
110 और नमाज़ की पाबन्दी रखो, और ज़कात देते रहो; और जो कुछ भलाई तुम
अपने लिए आगे भेज दोगे,उसे अल्लाह के पास पा लोगे, बेशक तुम जो कुछ
कर रहे हो, अल्लाह उसका ख़ूब देखने वाला है।
111 और (यहूदी और ईसाई) कहते हैं कि यहूदियों और ईसाइयों के सिवा कोई
जन्नत में जा नहीं पाएगा,'' यह उन लोगों की बातिल इच्छाएँ हैं, कह दीजिए,
''अपनी सनद (प्रमाण) लाओ, अगर तुम सच्चे हो।''
112 हाँ सच बात तो यह है कि जिसने अपने आप को (भक्ति पूर्वक) अल्लाह के
हवाले कर दिया और भले काम करने वाला (सत्कर्मी) हो गया, तो उसको
इसका बदला उसके रब से मिलेगा; और ऐसे लोगों को (क़ियामत में) न डर
होगा और न वे दुखी होंगे।
113 और यहूदी कहते हैं, ''ईसाई (का मज़हब) कुछ नहीं,'' और ईसाई कहते हैं,
''यहूद (का मज़हब) कुछ नहीं,'' हालाँकि वे (दोनों ही) किताब (तौरात व
इंजील) के पढ़ने वाले हैं, इसी तरह उन्हीं जैसी बातें ये(मुश्रिक भी) करते हैं,
जो (कुछ भी) नहीं जानते, तो जिस बात में ये लोग झगड़ रहे हैं, क़ियामत
के दिन अल्लाह इनमें उसका फ़ैसला कर देगा।
114 और उससे बढ़कर ज़ालिम कौन होगा!! जो अल्लाह की मस्जिदों को इससे
रोक दे, कि उनमें उसका नाम लिया जाए, और उसकी बरबादी का प्रयास

करे? यह लोग इस योग्य ही नहीं कि उसमें दाखिल हों, मगर हाँ यह कि डरते
हुए; उनके लिए दुनिया में रूस्वाई है और आख़िरत में (भी) बड़ा अ़ज़ाब है।
115 और (यहूद व नसारा अपने-अपने क़िब्लों के लिए झगड़ते हैं हालाँकि) अल्लाह
ही का है पूरब (भी) और पश्चिम (भी), तो जिस ओर भी तुम मुँह करो, उध
ार ही अल्लाह की ज़ात है। बेशक अल्लाह बेह़द वुस्अ़त वाला (सर्वव्यापी),
जानने वाला है।
116 और ये लोग कहते हैं, ‘‘अल्लाह औलाद रखता है (हालाँकि) ‘वह’ इन बातों
से पाक है, बल्कि जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है, सब ‘उसी’ का है
और सब उसी के फ़रमांबरदार (आज्ञाकारी) हैं;
117 (वह) बनाने वाला है आसमानों और ज़मीन का; और जब (वह) किसी काम
को करना चाहता है, तो बस इतना ही उससे कहता है, ‘‘हो जा’’ तो वह हो
जाता है ।
118 और जिन्हें इल्म (जानकारी) नहीं है, वे कहते हैं, ‘‘अल्लाह हमसे बात क्यों
नहीं करता? या हमारे पास कोई निशानी (बड़ी) क्यों नहीं आ जाती?’’ इसी
तरह वे लोग कह चुके हैं, जो इनसे पहले हो चुके हैं वे भी इन्हीं की सी बातें
किया करते थे, इन लोगों के दिल आपस में मिलते-जुलते हैं। हमने अपनी
निशानियां बयान कर दी हैं उन लोगों के लिए जो यक़ीन रखते हैं।
119 (ऐ मुह़म्मद) हमने आपको ह़क़ के साथ भेजा है ख़ुशख़बरी सुनाने वाला, और
डराने वाला बनाकर, और आपसे दोज़ख़ वालों के विषय में कुछ भी पूछ न
होगी;
120 और आपसे हरगिज़ न यहूदी ख़ुश होंगे और न ईसाई जब तक कि आप
उनके मज़हब पर न चलने लग जाएँ। कह दीजिए, ‘‘अल्लाह की (बतलाई
हुई) हिदायत ही हिदायत है और अगर बाद उस इल्म के, जो आप को पहुँच
चुका है, उनकी इच्छाओं की पैरवी करने लगेंगे! तो आपके लिए अल्लाह (की
पकड़) के सामने न कोई दोस्त होगा न कोई मदद्गार।
121 जिन लोगों को ‘हमने’ किताब दी, वे उसे उसी तरह पढ़ते हैं, जिस तरह
उसके पढ़ने का ह़क़ है, वे लोग उस पर ईमान रखने वाले हैं, और जो लोग
इससे इन्कार करते हैं तो वही लोग घाटे में रहेंगे।
122 ऐ बनी इस्राईल! मेरी वह नेअ़मतें याद करो, जो ‘मैंने’ तुम को दीं, और यह
कि मैंने तुमको सारे संसार के लोगों पर फ़ज़ीलत (प्रधानता) दी;
123 और उस दिन से डरो, कि कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति का बोझ न बाँट सकेगा,
और न उसकी ओर से कोई बदला स्वीकार किया जाएगा, और न सिफ़ारिश
उसको फ़ायदा देगी, और न लोगों को कोई मदद पहुँचेगी।
124 और (याद करो) जब इब्राहीम को उनके रब ने कुछ बातों में आज़माया, तो
उन्होंने उन बातों को पूरा कर दिखाया, (तो अल्लाह ने) कहा, ‘‘मैं ज़रूर
तुमको, लोगों का इमाम (पथ प्रदर्शक) बनाऊँगा।’’ उन्होंने कहा, ‘‘मेरी नस्ल
में भी,’’ कहा, ‘‘मेरा वादा ज़ालिमों (अत्याचारियों) को नहीं पहुँचता।’’
125 और (याद करो) जब ‘हमने’ कअ़बः को लोगों के जमा होने और अमन पाने

की जगह बनाया; और (लोगों को हुक्म दिया कि) इब्राहीम के खड़े होने की
जगह को नमाज़ की जगह बना लो; और 'हमने' इब्राहीम और इस्माईल को
हुक्म दिया कि ''मेरे घर का तवाफ़ (परिक्रमा) करने वालों, और एतिकाफ़
करने वालों, और रूकूअ़ व सज्दः करने वालों के लिए पाक-साफ़ रखा
करें।
126 और जब इब्राहीम ने दुआ़ की, ''ऐ मेरे रब! इस शहर को अमन वाला बना
दे और इसमें रहने बसने वालों में से जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर
ईमान लाएँ।'' उनके खाने को मेवे अता कर (अल्लाह ने फ़रमाया), ''जो कुफ़्र
करेगा, 'मैं' उसे भी कुछ दिन मज़े उड़ाने दूँगा, फिर उसे घसीटते हुए जहन्नम
के अ़ज़ाब तक पहुँचा दूँगा और वह कैसा बुरा ठिकाना है!''
127 और (वह वक़्त भी याद रखना चाहिए) जब इब्राहीम और इस्माईल कअ़बे की
बुनियादें ऊँची कर रहे थे। (और दुआ़ कर रहे थे) ''ऐ हमारे रब! हमसे
(यह खिदमत) कुबूल कर; बेशक 'तू' सुनने वाला, जानने वाला है;
128 ऐ हमारे रब! हम (दोनों) को अपना फ़रमाँबरदार बनाए रख और हमारी
औलाद में और हमको हमारी इबादत (हज्ज) के तरीके़ बता और हमारी तौबः
कुबूल कर; बेशक 'तू' बड़ा तौबः कुबूल करने वाला, रह़म वाला है।
129 ऐ हमारे रब! उनमें एक रसूल उन्हीं में से भेज, जो उन्हें तेरी आयतें पढ़कर
सुनाए, और उन्हें अल्लाह की किताब और हिक्मत की तालीम (शिक्षा) दे,
और उन्हें पाक (संय्यमी) करे, बेशक तू ज़बर्दस्त, हिक्मत वाला है।''
130 और इब्राहीम के मज़हब से कौन फिरेगा? मगर वही जिसने अपने को मूर्ख
बना लिया हो, और 'हमने' उनको दुनिया में भी चुन लिया, और आख़िरत
(परलोक) में (भी) वह नेकों (सदाचारियों) में से होंगे।
131 जब उनसे उनके रब ने फ़रमाया, ''इस्लाम ले आओ तो वह बोले,''मैं तो
सारे जहान के रब की फ़रमाँबरदारी के लिए सर झुकाता हूँ।''
132 और इब्राहीम इसी की वसीयत कर गये अपने बेटों को, और इसी तरह याकू़ब
ने भी की, ''ऐ मेरे बेटो! अल्लाह ने इस दीन को तुम्हारे लिए पसंद फ़रमाया
है, तो तुम न मरना मगर मुसलमान हो कर (अर्थात आज्ञाकारी हो कर)।
133 (ऐ यहूद) क्या तुम मौजूद थे, जब याकू़ब के सामने मौत आ खड़ी हुई? जब
उन्होंने अपने बेटों से पूछा, ''मेरे बाद तुम किसकी इबादत करोगे?'' तो
उन्होंने जवाब दिया, ''हम आपके मअ़बूद (उपास्य) और आपके बाप-दादा
यानी इब्राहीम, और इस्माईल और इस्हाक़ के मअ़बूद, की इबादत करेंगे जो
अकेला मअ़बूद (उपास्य) है और हम तो उसी के फ़रमाँबरदार (आज्ञाकारी)
हैं,''
134 यह एक गिरोह था जो गुज़र गया; जो कुछ उस गिरोह ने कमाया वह उसके
लिए है, और जो कुछ तुमने कमाया है, वह तुम्हारे लिए है; और वे जो कुछ
करते रहे थे, उसके बारे में तुम से नहीं पूछा जाएगा।
135 और कहते हैं, ''यहूदी या ईसाई हो जाओ, तो सच्चे रास्ते पर आ जाओगे।''

उनसे कह दीजिए, “(नहीं) बल्कि हम इब्राहीम के दीन की पैरवी करते हैं, जो
‘एक’ (अल्लाह) के हो रहे थे और मुश्रिकों में से न थे।”
136 कह दो, हम तो ईमान लाए अल्लाह पर और उस पर जो हम पर (किताब)
उतारी गई है, और उस पर जो कि इब्राहीम, और इस्माईल, और इस्हाक़,
और याक़ूब, और उनकी औलाद पर उतारी गई; और मूसा और ईसा को
जो (किताब) मिली (उस पर भी); और जो (दूसरे) नबियों को ‘उनके’ रब से
मिला (उस पर भी); हम इनमें से किसी एक में भी फ़र्क़ (विभेद) नहीं करते,
और हम उसी (एक अल्लाह) के फ़रमाँबरदार (आज्ञाकारी) हैं।”
137 तो अगर यह लोग भी उसी तरह ईमान ले आएँ, जिस तरह तुम ईमान लाए
हो, तो वे हिदायत (राह) पा जाएँ, और अगर वह मुँह मोड़े रहें, तो वह बड़ी
मुख़ालिफ़त में पड़े हैं; तो अल्लाह तुम्हारी ओर से उनके मुक़ाबिले में काफ़ी
है और ‘वह’ खूब सुनता, जानता है ।
138 (कह दो कि हमारे ऊपर) “अल्लाह का रंग है, और अल्लाह से बेहतर रंग
किस का हो सकता है?” और हम तो ‘उसी’ की इबादत करने वाले हैं।
139 कह दीजिए, “क्या तुम हमसे अल्लाह के बारे में हुज्जत (कुतर्क) करते हो?
हालाँकि ‘वही’ हमारा रब है, और तुम्हारा भी रब है; और हमारे काम हमारे
लिए हैं, और तुम्हारे काम तुम्हारे लिए, और हम तो ख़ास उसी की इबादत
करने वाले हैं।
140 क्या तुम्हारा (यह) दावा है कि इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक़ और याक़ूब
और उनकी औलाद यहूदी थे, या ईसाई थे?” (ऐ पैग़म्बर! इनसे) कह दीजिए,
“क्या तुम ज़्यादा जानने वाले हो, या अल्लाह? और उससे बढ़कर ज़ालिम
कौन होगा? जो उस गवाही को छिपाए जो उसके पास अल्लाह की ओर से
है; और तुम्हारे करतूतों से अल्लाह बेख़बर नहीं।”
141 वह एक गिरोह था जो गुज़र गया उन लोगों ने जो कुछ कमाया वह उनके
लिए है, और तुमने जो कुछ कमाया वह तुम्हारे लिए है, उन के आ़माल के
बारे में तुम से नहीं पूछा जाएगा।
142 मूर्ख लोग कहेंगे,“यह (मुसलमान) जिस क़िब्ले पर (पहले) थे (यानी
बैतुलमुक़द्दस) उससे (कअ़बे की ओर को) मुड़ जाने की क्या वजह है?” कह
दीजिए, “पूरब और पश्चिम (सब) अल्लाह ही का है, ‘वह’ जिसको चाहता
है सीधी राह दिखाता है।”
143 और इसी तरह ‘हमने’ तुमको एक दर्मियानी उम्मत बनाया, ताकि लोगों पर
तुम गवाह बनो, और रसूल तुम पर गवाह बनें, और (ऐ रसूल!) जिस क़िब्ले
पर तुम थे ‘हमने’ उसको इसी मक़्सद से ठहराया था ताकि ‘हमको’ मालूम हो
जाए, कि कौन रसूल के अधीन रहेगा और कौन उल्टे पाँव फिरेगा; और यह
बात भले ही भारी हो लेकिन उन पर नहीं, जिनको अल्लाह ने हिदायत (राह)
दी है, और अल्लाह ऐसा नहीं, कि तुम्हारा ईमान अकारथ कर दे, अल्लाह
तो लोगों पर बड़ा रह़म करने वाला, मेहरबान है।
144 ‘हमने’ देख लिया आपके चेहरे का बार-बार आसमान की ओर उठना, सो
ज़रूर ‘हम’ आप को फेर देंगे उस क़िब्ले की ओर, जिसे आप पसंद करते हैं;

अच्छा अब कर लीजिए अपना चेहरा मस्जिदे-ह़राम की ओर; और तुम लोग
जहाँ कहीं भी हो, अपना मुँह उसी तरफ़ फेर लिया करो और जिन लोगों को
किताब दी जा चुकी है वह ख़ूब जानते हैं कि उनके 'रब' की ओर से ह़क़्
है, और अल्लाह बेख़बर नहीं उन लोगों के कर्तूतों से।
145 और अगर आप उन लोगों के सामने, जिन्हें किताब दी जा चुकी है, तमाम
दलीलें ले आएँ तब भी वे आपके क़िब्ले की पैरवी न करेंगे, और न आप
उनके क़िब्ले की पैरवी करने वाले हैं, और न वे आपस में एक-दूसरे के
क़िब्ले को मानने वाले हैं, और अगर (कहीं) आप उन के इच्छा की पैरवी
करने लगे, बाद इसके कि आपके पास इल्म आ चुका है, तो आप ज़ालिमों
में हो जाएँगे।
146 जिन लोगों को 'हम' किताब दे चुके हैं, वे उसे (मुह़म्मद को) ऐसे पहचानते
हैं, जिस तरह कोई अपनी औलादों को पहचानता हो (कि मुह़म्मद अल्लाह
के रसूल हैं) और उनमें से एक गिरोह जानते बूझते ह़क़् को छिपाता है।
147 यह आप के रब की ओर से ह़क़् है, आप हरगिज़ सन्देह करने वालों में से
न होइएगा।
148 और हर एक के लिए एक दिशा है जिधर (इबादत में) वह अपना मुँह करते
हैं तो तुम नेकियों में बाज़ी ले जाओ भलाइयों की ओर लपको, तुम जहाँ
भी होगे अल्लाह तुम सबको ले आएगा, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर
(सामर्थ्यवान) है।
149 और आप जिस जगह से भी (बाहर) निकलें, अपना मुँह मस्जिदे-ह़राम कअ़बः
की ओर कर लिया करें; और यह आपके रब की ओर से ह़क़् बात है; और
अल्लाह उससे बेख़बर नहीं, जो कुछ तुम कर रहे हो।
150 और आप जिस जगह से भी (बाहर) निकलें, अपना मुँह मस्जिदे-ह़राम की
ओर कर लिया करें; और तुम लोग जहाँ कहीं (भी) हो अपना मुँह 'उसी की'
ओर कर लिया करो, ताकि लोगों को तुम्हारे मुक़ाबिले में हुज्जत न रह जाए
सिवाय उन लोगों के, जो ज़ालिम हैं, सो तुम उनसे न डरो बल्कि (केवल)
'मुझ' ही से डरो, ताकि 'मैं' अपना इनआ़म तुम पर पूरा करूँ और ताकि
तुम सीधी राह पर क़ायम रहो।
151 जिस तरह 'हमने' तुम्हारे दर्मियान तुम्हीं में से एक रसूल भेजा जो तुमको
हमारी आयतें पढ़ कर सुनाते, और तुम्हें पाक करते, और तुम्हें किताब और
ह़िकमत की तअ़लीम देते, और तुम्हें उसकी तअ़लीम देते जो तुम नहीं जानते
थे।
152 सो तुम मुझे याद करते रहो, मैं तुम्हें याद करता रहूँगा, और मेरी शुक्रगुज़ारी
करते रहो, और नाशुक्री न करो।
153 ऐ ईमान वालो! सब्र और नमाज़ से मदद लिया करो, बेशक अल्लाह सब्र करने
वालों के साथ है।
154 और जो लोग अल्लाह की राह में क़त्ल किये जाएँ, उनको मुर्दा न कहो, बल्कि
वे ज़िन्दा हैं, लेकिन तुम्हें शोऊ़र (एह़सास) नहीं।

155 और 'हम' तुम्हारी आज़्माइश (परीक्षा) करके रहेंगे कुछ डर और भूख से,
और माल व जान से, और फलों के नुक़्सान से; और (आप) सब्र करने
वालों को ख़ुशख़बरी सुना दीजिए।
156 जब उन लोगों पर कोई मुसीबत आ पड़ती है तो कहते हैं, ''हम अल्लाह ही
के लिए हैं, और हमें अल्लाह ही की ओर लौट कर जाना है।''
157 यही लोग हैं जिन पर उनके रब की ओर से फ़ज़्ल (कृपा) और रह़मतें होंगी
और यही सीधी राह (पाने) वाले हैं।
158 बेशक सफ़ा और मरवा (नामी पहाड़) अल्लाह की निशानियों में से हैं तो जो
व्यक्ति कअ़बः का ह़ज या उ़मरः करे, उस पर इन दोनों के बीच फेरे (सई)
करने में कुछ गुनाह नहीं; और जो ख़ुशदिली से नेक काम करे, तो अल्लाह
बड़ी क़द्र करने वाला, जानने वाला है।
159 जो लोग छिपाते हैं उस चीज़ को, जो 'हम' खुली हुई निशानियों और हिदायतों
(निर्देशों) में से उतार चुके हैं, बाद इसके कि 'हम' उसे लोगों के लिए अल्लाह
की किताब में खोल चुके हैं, यही लोग हैं कि अल्लाह उन पर लानत करता
है और तमाम लोग लानत करते हैं;
160 सिवाय उनके जिन्होंने तौबः कर ली, और सुधार कर लिया, और साफ़-साफ़
बयान कर दिया तो उनकी तौबः क़ुबूल कर लेता हूँ, और 'मैं' बड़ा तौबः
क़ुबूल करने वाला, रह़म वाला हूँ;
161 जिन लोगों ने कुफ़्र (इन्कार) किया, और कुफ़्र ही की ह़ालत में मर गये; उन
पर अल्लाह की, फ़रिश्तों की, और तमाम इन्सानों की लानत है;
162 वे इस (लानत) में हमेशा-हमेश रहेंगे, न उनके अ़ज़ाब में कमी होगी और न
उनको मोहलत ही मिलेगी।
163 और तुम्हारा इलाह, (उपास्य) एक ही इलाह है, 'उस' रह़मान और रह़ीम
(करूणामय और दयावान) के सिवा कोई इलाह(उपास्य) नहीं।
164 बेशक आसमानों और ज़मीन को पैदा करने में, और रात-दिन के आने-जाने
में, और किश्तियों में, जो लोगों के फ़ायदे की चीज़ें समुद्र में लेकर चलती हैं,
और बारिश में जिसको अल्लाह ने आसमान से बरसाया; फिर उसके ज़रिये
ज़मीन को, उसके मर जाने के बाद ज़िन्दा किया, और उसमें हर क़िस्म
के जानदार (जीवधारी) फैलाए; और हवाओं के फेरने में, और बादल में
जो(अल्लाह के हुक्म से) आसमान और धरती के बीच काम में लगे हैं,
(इन सब में) अक्लमन्दों (बुद्धिमानों) के लिए निशानियाँ हैं।
165 और लोगों में कुछ ऐसे भी हैं जो अल्लाह के सिवा और को भी बराबर
(समवर्ती पूज्य) ठहराते हैं; कि जैसी मुह़ब्बत अल्लाह से रखनी चाहिए, वैसी
मुह़ब्बत उनसे रखते हैं; और ईमान वाले जो हैं, उनको तो सबसे बढ़कर
अल्लाह ही से मुह़ब्बत होती है; और क्या ही अच्छा होता कि इन ज़ालिमों को
सुझाई दे जाता जो उस समय सुझाई देगा, जब अ़ज़ाब उनके सामने होगा;
कि सारी ताक़त अल्लाह ही के अधीन है, और यह कि अल्लाह सख़्त अ़ज़ाब
देने वाला है;

166 उस वक़्त (कुफ्र के) अगुवाकार अपने पीछे चलने वालों से अलग हो जाएँगे
और (अपनी आँखों से) अ़ज़ाब देख लेंगे, और उनके आपसी सम्बन्ध टूट
जाएँगे;
167 और पीछे चलने वाले कह उठेंगे, ''क्या ही अच्छा होता! कि हमको फिर एक
बार लौटकर दुनिया में जाने को मिल जाता,तो जैसे यह हमसे बेज़ार (विरक्त)
हो गये, इसी तरह़ हम भी इनसे बेज़ार हो जाते।'' यूँ तो अल्लाह उनके
कारनामे सामने लाएगा, कि उनको ह़सरत होगी और वे आग से कभी निकल
न सकेंगे।
168 ऐ इन्सानो! ज़मीन में जो चीज़ें ह़लाल और शुद्ध हैं उनमें से खाओ; और
शैतान के पदचिन्हों पर मत चलो, वह तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है;
169 वह तो तुम्हें बुराई और बेशर्मी ही का हुक्म देगा, और इसका कि तुम अल्लाह
पर ऐसी बातें गढ़ लो जिसका तुम इल्म भी नहीं रखते।
170 और जब उनसे कहा जाता है, ''जो अल्लाह ने उतारा है उस पर चलो,''
तो जवाब में कहते हैं, ''नहीं, हम तो उसी पर चलेंगे जिस पर हमने अपने
बाप-दादा को पाया है।'' भला अगर उनके बाप-दादा कुछ समझ न रखते रहे
हों! और न सच्चे मार्ग पर चलते रहे हों (तब भी यह उन्हीं की पैरवी करेंगे।)
171 और इन इन्कार करने वालों (काफ़िरों) की मिसाल ऐसी है जैसे कोई उस बात
को चीखे, जो उसे स्वयं भी एक पुकार और आवाज़ के सिवा कुछ और सुनाई
न दे; (ये लोग) बहरे हैं, गूँगे हैं, अन्धे हैं, सो (कुछ) नहीं समझते।
172 ऐ ईमान वालो! पाक चीज़ों में से जो कुछ 'हमने' तुम्हें दिया है खाओ (पियो)
और अल्लाह का शुक्र अदा करते रहो, अगर तुम 'उसकी' इबादत करते हो;
173 'उसने' तो तुम पर केवल मुर्दार(मरा हुआ जानवर) और ख़ून, और सुअ़र का
गोश्त, और जिस (जानवर) पर अल्लाह के सिवा किसी और का नाम लिया
गया हो (अर्थात भेंट चढ़ाया गया हो तो) ह़राम ठहराया है, फिर जो बहुत
मजबूर और विवश हो, (परन्तु) नाफ़रमानी (अवज्ञा) करने वाला और ह़द से
बढ़ जाने वाला न हो, तो उस पर कोई गुनाह नहीं; बेशक अल्लाह माफ़
करने वाला, रह़म वाला है।
174 जो लोग उन आदेशों को, जो अल्लाह ने अपनी किताब (तौरात) में उतारे;
छिपाते हैं, और उसके बदले थोड़ी सी क़ीमत का सौदा करते हैं, वे इसके
सिवा कुछ नहीं! कि अपने पेटों में अंगारे भरते हैं, और क़ियामत के दिन
अल्लाह उनसे बात भी नहीं करेगा और न उनको (गुनाहों से) पाक करेगा,
और उनको बड़ा ही दुःख देने वाला अ़ज़ाब होगा;
175 यही लोग हैं जिन्होंने हिदायत (मार्गदर्शन) के बदले गुमराही मोल ली, और
मग़्फ़िरत (मुक्ति) के बदले अ़ज़ाब मोल लिया, यह आग को कैसे बर्दाश्त करने
वाले हैं।
176 यह (अ़ज़ाब) इसलिए होगा कि अल्लाह ने तो ह़क़ के साथ किताब उतारी,
और जिन लोगों ने किताब के मामले में इख़्तिलाफ़ (मतभेद) किया, वह हठध
र्मी और विरोध में बहुत दूर निकल गये।

177 भलाई केवल यही नहीं कि तुम अपना चेहरा पूरब या पश्चिम की ओर कर
लो; बल्कि भलाई तो यह है कि जो अल्लाह पर, और आख़िरत के दिन पर,
और फ़रिश्तों पर, और (अल्लाह की) किताब पर, और नबियों पर ईमान
लाए; और अल्लाह की मुहब्बत में अपना माल नातेदारों और यतीमों (अनाथों)
और मुहताजों और मुसाफ़िरों और माँगने वालों को और (ग़ुलामी आदि की
क़ैद से लोगों की) गर्दनों के छुड़ाने में ख़र्च करें, और नमाज़ क़ायम करें, और
ज़कात दें, और जब (किसी) बात का इक़रार या अ़हद (वचन) करें तो अपना
अ़हद पूरा करे, और तंगी में, और मुसीबत और लड़ाई के समय सब्र करे;
यही लोग सच्चे हैं और यही लोग परहेज़गार (संयमी) हैं।
178 ऐ ईमान वालो! फ़र्ज़ किया गया तुम पर, कि क़त्ल किये गये लोगों के ख़ून
का क़िसास (बदला) दिलाओ, आज़ाद, (मक़्तूल हो तो उस) के बदले आज़ाद
और ग़ुलाम (मक़्तूल) के बदले ग़ुलाम, और औ़रत (मक़्तूल) के बदले औ़रत
से क़िसास (ख़ून का बदला) लिया जाए, अगर क़ातिल को भाई चारे के ख़याल
से कुछ माफ़ी दी जाए, तो भले तरीक़े से एह़सान मानकर, "ख़ूँ बहा" की
रक़म अच्छे तरीक़े से अदा करे; यह तुम्हारे रब की ओर से एक छूट और
मेहरबानी है, फिर इसके बाद भी जो ज़्यादती करे तो उसके लिए दर्दनाक
(दुखद) अ़ज़ाब है;
179 और इसी तरह़ क़िसास (के हुक्म) में तुम्हारी ज़िन्दगी (सुरक्षित) है, ऐ अक़्ल
वालों! ताकि तुम(ख़ून ख़राबे से) बचो।
180 तुम पर फ़र्ज़ (अनिवार्य) किया गया है कि जब तुम में से कोई मरने लगे और
(वह अपने पीछे) माल छोड़ रहा हो, तो अपने माँ-बाप और अपने क़रीबी
रिश्तेदारों के लिए अच्छे तरीक़े से (नियमानुसार) वसीयत कर जाए, परहेज़गारों
पर यह एक ह़क़ है।
181 तो जो व्यक्ति (वसीयत को) सुनने के बाद बदल डाले, तो उस (के बदलने)
का गुनाह बदलने वाले पर होगा, बेशक अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है;
182 फिर जिस वसीयत करने वाले को न्याय से किसी तरह़ के हटने, या ह़क़
मारने का डर हो, तो उनके (वारिसों के) बीच सुधार की व्यवस्था कर दे,
तो उस पर कोई गुनाह नहीं; बेशक अल्लाह तआ़ला माफ़ करने वाला, रह़म
वाला है।
183 ऐ ईमान वालो! तुम पर रोज़े फ़र्ज़ (अनिवार्य) किये गये, जिस तरह तुम से
पहले लोगों पर फ़र्ज़ किये गये थे, ताकि तुम मुत्तक़ी (परहेज़गार) बन जाओ;
184 (यह रोज़े) गिनती के कुछ दिन हैं, तो जो आदमी तुम में से बीमार हो, या
सफ़र में हो, तो दूसरे दिनों में रोज़ों की गिन्ती पूरी कर ले; और जो (खिलाने
का) क़ुद्रत (सामर्थ्य) रखते हों, उनके ज़िम्मे बदले में, एक मुहताज का खाना
है; तो जो अपनी ख़ुशी से कुछ और नेकी करे, तो यह उसके लिए बेहतर
है; और यह कि तुम रोज़ः रखो तो तुम्हारे लिए बहुत बेहतर है, अगर तुम
समझो।
185 रमज़ान का महीना वह है, जिसमें क़ुर्आन उतारा गया, जो इन्सानों के लिए
हिदायत (रहनुमा) है; और जिसमें हिदायत (रहनुमाई) और ह़क़ व बातिल

(सत्य-असत्य) में अन्तर करने के प्रमाण हैं, तो तुम में से जो कोई इस महीना को पाए उसे चाहिए कि (पूरे महीने का) रोज़ः रखे, और जो बीमार हो या सफ़र में हो तो दूसरे दिनों में उसकी गिनती पूरी कर ले, अल्लाह तुम्हारे साथ आसानी चाहता है, और सख़्ती नहीं चाहता; और (यह आसानी का हुक्म) इसलिए (दिया गया है) कि तुम रोज़ों की गिन्ती पूरी कर लो; और इस एहसान के बदले, कि अल्लाह ने तुमको हिदायत (रहनुमाई) दी; तो अल्लाह की बड़ाई बयान करो, और ताकि तुम शुक्रगुज़ार बन जाओ।

186 और (ऐ मुहम्मद)! जब तुमसे मेरे बन्दे 'मेरे' सम्बन्ध में पूछें, तो (कह दो कि) 'मैं' तो (तुम्हारे) क़रीब ही हूँ; पुकारने वाले की पुकार का जवाब देता हूँ, जब वह मुझे पुकारता है; तो उनको चाहिए कि 'मेरे' हुक्मों को मानें, और 'मुझ' पर ईमान लाएँ ताकि हिदायत(सत्य मार्ग) पा लें।

187 रोज़ों की रातों में तुम्हारे लिए अपनी औरतों के पास जाना जायज़ कर दिया गया है, वह तुम्हारी लिबास (परिधान) हैं, और तुम उनके लिबास हो, अल्लाह को मालूम है, कि तुम (उनके पास जाने से) अपने हक़ में ख़ियानत (कपट) कर रहे थे तो 'उसने' तुम पर मेहरबानी की और तुम्हारी हरकतों को दरगुज़र किया; तो अब तुम उनसे मिलो-जुलो (अर्थात रोज़ा के अलावा हर समय में सम्भोग कर सकते हो) और अल्लाह ने जो कुछ तुम्हारे लिए लिख दिया है, उसे तलाश करो; और खाओ पियो, यहाँ तक कि सुबह की सफ़ेद धारी (उषाकाल, रात की) काली धारी से स्पष्ट नज़र आने लगे; फिर रोज़ः (रखकर) रात तक पूरा करो; और जब तुम मस्जिदों में 'एतिकाफ़' की हालत में हो, तो तुम उनसे न मिलो (अर्थात सम्भोग न करो), यह अल्लाह की बाँधी हुई सीमाएँ हैं, तो उनके क़रीब भी न जाओ, इसी तरह अल्लाह अपनी निशानियाँ लोगों के लिए खोल-खोलकर बयान करता है, ताकि वह परहेज़गार (डर रखने वाले) बन जाएँ।

188 और एक-दूसरे का माल आपस में नाहक़ (अवैध रूप से) न खाओ, और न उन्हें हाकिमों के पास ले जाओ कि हक़ मारकर (रिश्वत लेकर) लोगों के कुछ माल जानते बूझते हड़प लो।

189 लोग आप से नये चाँद (के घटने बढ़ने) के बारे में पूछते हैं, कह दीजिए, "यह लोगों के (वक़्त बताने के) लिए और हज का समय जानने का ज़रिया हैं।" और नेकी यह नहीं, कि तुम घरों में उनके पिछवाड़े से आओ, और नेकी तो उसकी है जो डर रखे; और तुम घरों में उनके दरवाज़ों से आओ और अल्लाह से डरते रहो,ताकि तुम कामियाब हो सको।

190 और तुम अल्लाह की राह में लड़ो उन लोगों से जो तुम से लड़ते हैं, मगर ज़्यादती (अत्याचार) न करना कि अल्लाह ज़्यादती करने वालों को पसंद नहीं करता;

191 और (ऐसे काफ़िरों को जो जुल्म कर रहे हैं) उनको जहाँ कहीं पाओ क़त्ल करो, और उनको निकाल दो, जहाँ से उन्होंने तुम्हें निकाला; और (इसलिए कि) फ़ित्ना (उत्पीड़न) पैदा करना क़त्ल से भी बढ़कर है, और उनसे मस्जिदे हराम (कअ़बः) के पास न लड़ना, जब तक कि वे उस जगह तुमसे न लड़ें;

फिर अगर वे ख़ुद ही तुम से लड़ें, तो उन्हें क़त्ल करो, यही काफ़िरों (सच्चाई का इन्कार करने वालों) की सज़ा है; (मगर जो न लड़ें उन्हें केवल काफ़िर होने की वजह से मारा या परेशान न किया जाए)

192 फिर अगर वह (ज़ुल्म से) रूक जाएँ, तो अल्लाह माफ़ करने वाला, मेहरबान है;

193 और उनसे लड़ो (जिन काफ़िरों ने ज़ुल्म किया) यहाँ तक कि फ़ित्ना (ज़ुल्म) बाक़ी न रहे और दीन अल्लाह के लिए हो जाए, फिर अगर वे (ज़ुल्म से)बाज़ आ जाएँ तो ज़ालिमों के सिवा किसी पर ज़्यादती न करो।

194 बड़ाई वाला (प्रतिष्ठित) महीना बराबर है, बड़ाई वाले महीने के, और सम्मान रखने में बदला है; फिर अगर जिसने तुम पर ज़्यादती की, तो (केवल उसी को) तुम भी उसके ज़्यादती की सज़ा दो, जैसा उसने तुम पर ज़्यादती की है; और अल्लाह से डरते रहो, और जान लो! कि अल्लाह डरने वालों (परहेज़गारों) के साथ है।

195 और अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करो और अपने आपको तबाही में न डालो, और अच्छे से अच्छा तरीक़ा अपनाओ; बेशक अल्लाह नेकी करने वालों को पसंद करता है।

196 और ह़ज और उ़मरः अल्लाह के लिए पूरा करो फिर अगर तुम रोक दिये जाओ, (या घिर जाओ) तो तुम पर क़ुर्बानी का जानवर ज़ब्ह़ करना है; जो आसानी से मिले; और अपने सरों को न मुंडाओ जब तक कि क़ुर्बानी का जानवर अपने ठिकाने न पहुँच जाए; फिर अगर जो तुम में बीमार हो या उसके सर में कुछ तकलीफ़ हो, (सर मुंड़ा ले) तो उसके बदले रोज़े रखे या सदक़ः दे या क़ुर्बानी के रूप में फ़िद्या (दान) दे, फिर जब तुम अम्न की ह़ालत में हो जाओ तो जो ह़ज तक उमरे का फ़ायदा उठाना चाहे- तो जो क़ुर्बानी का जानवर आसानी से मिले पेश करे- फिर जिसको क़ुर्बानी का जानवर न मिले, तो वह तीन रोज़े ह़ज के दिनों में रखे, और सात रोज़े जब वापस हो, यह पूरे दस हुए; यह ह़ुक्म उस व्यक्ति के लिए है जिसके बाल-बच्चे मस्जिदे ह़राम के पास न रहते हों, और अल्लाह से डरते रहो और जान लो! कि अल्लाह की सज़ा (दण्ड) बहुत सख़्त है।

197 ह़ज के (कुछ) महीने मालूम (निश्चित) हैं तो जो व्यक्ति अपने ऊपर ह़ज को लाज़िम (नियत) कर ले, तो फिर ह़ज में न कोई बुरी बात (कामवासना की) होने पाए और न कोई बेहुक्मी की, और न कोई झगड़े की; और भलाई का तुम जो भी काम करोगे, वह अल्लाह को मालूम हो जाएगा; और (ह़ज पर जाने से पहले) सफ़र का सामान साथ में ले लिया करो, और सबसे अच्छा सामान तो 'परहेज़गारी है, और ऐ अक़्ल वालो! 'मुझसे' ही डरा करो।

198 तुम्हारे लिए इसमें कोई गुनाह नहीं कि तुम अपने रब का फ़ज़्ल (रोज़ी) तलाश करो; फिर जब अ़रफ़ात से लौटो तो 'मशअ़रिल ह़राम' (मुज़्दलिफ़ा) के पास ठहर कर अल्लाह को याद करो, और उसे याद करो जैसा कि उसने तुम्हें बताया है; और इससे पहले तुम लोग (इन तरीक़ों से) अंजान थे;

199 फिर जहाँ से और लोग वापस हों, वहीं से तुम भी वापस हो, और अल्लाह
से माफ़ी चाहो, बेशक अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला, रहम वाला है;
200 फिर जब हज के कामों को पूरा कर चुको, तो अल्लाह को याद करो, जिस
तरह तुम अपने बाप-दादा को याद किया करते थे, बल्कि उससे भी ज़्यादा
याद करो; फिर कुछ लोग ऐसे हैं, जो कहते हैं, ''ऐ हमारे रब! हमको (जो
देना हो) दुनिया में दे,'' और ऐसे लोगों का आख़िरत (परलोक) में कोई हिस्सा
नहीं;
201 और उन में कुछ ऐसे हैं, जो दुआएँ माँगते हैं, ''कि ऐ हमारे रब! हमें दुनिया
में भी भलाई दे,'' और आख़िरत में भी भलाई दे, और हमें आग के अ़ज़ाब
से बचाए रखना।
202 यही लोग हैं जिन्हें हिस्सा (अच्छा बदला) मिल कर रहेगा, उसके बदले में जो
इन्होंने अ़मल कर रखा है, और अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है।
203 और गिन्ती के (मिना में ठहरने के) दिनों में अल्लाह को याद करते रहो, फिर
जो कोई जल्दी करके दो ही दिन में कूच करे, तो इस में भी उस पर कोई
गुनाह नहीं, और जो बाद में ठहरा रहे, उस पर भी कोई गुनाह नहीं यह उस
के लिए है जो डरता रहता है; और तुम लोग अल्लाह से डरते रहो, और
जाने रहो! कि तुम (सब) उसी के पास इकट्ठा किये जाओगे।
204 और लोगों में कुछ तो ऐसे हैं कि उनकी बातें तुमको दुनिया में भली मालूम
होती हैं, इस (खोट) के बावजूद जो उसके दिल में होती हैं; वह अल्लाह को
गवाह बनाता है, हालाँकि वह सख़्त झगड़ालू (दुश्मन) है;
205 और जब लौटता है, तो इस दौड़ धूप में रहता है कि धरती पर फसाद पैदा
करे, और खेती और जानवरों को तबाह करे, जबकि अल्लाह फ़साद को पसंद
नहीं करता;
206 और जब उससे कहा जाता है, ''अल्लाह से डरो,'' तो उसका घमण्ड उसे
और गुनाह पर आमादा करता है;फिर ऐसे को दोज़ख काफ़ी है और वह बहुत
बुरा ठिकाना है;
207 और इन्सानों में कुछ ऐसे भी होते हैं, जो अल्लाह को राज़ी करने के लिए
अपनी जान खपा देता है, और अल्लाह भी अपने (ऐसे) बन्दों के प्रति बड़ी
शफ़्क़त (ममता) रखता है।
208 ऐ ईमान वालो! इस्लाम में पूरे-पूरे दाख़िल हो जाओ, और शैतान के क़दमों
पर न चलो; वह तुम्हारा खुला दुश्मन है;
209 फिर अगर तुम इन स्पष्ट दलीलों के बाद भी, जो तुम्हारे पास आ चुकी हैं,
फिसल जाओ, तो जान लो कि अल्लाह ज़बरदस्त (प्रभुत्वशाली) हिक्मत वाला
है।
210 क्या यह लोग इन्तिज़ार कर रहे हैं कि इनके पास अल्लाह बादलों की छायों
में सामने आ जाएं, और फ़रिश्ते भी और (उसका) क़िस्सा ही ख़त्म हो जाए;
और सारे मामले तो अल्लाह ही की ओर लौटते हैं।
211 बनी इस्राईल से पूछो! ''हमने'' उन्हें कितनी खुली हुई निशानियाँ दीं और जो

व्यक्ति अल्लाह की नेअ़मत को इसके बाद कि वह उसे पहुँच चुकी हों, बदल डाले, तो अल्लाह भी सज़ा देने में बड़ा सख़्त है।''

212 जो लोग काफ़िर (इन्कार करने वाले) हैं दुनिया की ज़िन्दगी उनकी नज़र में भली कर दी गई है; और वे ईमान वालों की हँसी उड़ाते हैं; हालाँकि जो लोग परहेज़गार (संयमी) हैं उनके दर्जे क़ियामत के दिन उनसे बढ़ कर होंगे, और अल्लाह जिसे चाहता है, बेहिसाब रोज़ी देता है।

213 सारे इन्सान एक ही उम्मत (अर्थात एक ही दीन पर) थे (उन्होंने मत-मतान्तर पैदा किये), तो अल्लाह ने नबियों (सन्देशवाहकों) को भेजा, जो ख़ुशख़बरी देते थे, और सचेत करते थे; और उनके साथ सच्ची किताबें भेजीं, ताकि जिन बातों में लोग मतभेद करते थे उन बातों का (वह किताब) फ़ैसला कर दे; और उन्हीं लोगों ने, जिनको वह (किताब) मिली थी, आपस की ज़िद से किताब में मतभेद किया, बावजूद इसके कि उनको खुले हुए हुक्म पहुँच चुके थे; फिर वह सच्चा रास्ता, जिसमें लोग मतभेद कर रहे थे, अल्लाह ने अपनी मेहरबानी से ईमान वालों को दिखला दिया, और अल्लाह जिसको चाहता है सच्ची राह पर चला देता है।

214 क्या तुम यह समझते हो कि जन्नत में (यूँही) दाख़िल हो जाओगे, हालाँकि (अभी) तुम पर उन लोगों जैसी ह़ालत नहीं पेश आई जैसी तुमसे पहले के लोगों पर पेश आई थी, कि उन पर तंगियाँ और तकलीफ़ें आईं, और उन्हें हिला (झिंझोड़) दिया गया, यहाँ तक कि रसूल (सन्देष्टा) बोल उठे, और ईमान वाले भी जो उनके साथ थे, (आख़िर) ''अल्लाह की मदद कब आएगी?'' (ढारस बाँधते हुए कहा गया) ''जान लो कि, अल्लाह की मदद बहुत क़रीब है।''

215 (ऐ रसूल) लोग आपसे पूछते हैं ''क्या ख़र्च करें?'' कह दीजिए, (जो चाहे ख़र्च करें मगर) ''जो माल खर्च करना चाहो तो वह (दर्जा-ब-दर्जा ह़क़ वालों जैसे) माँ बाप पर, और क़रीबी रिश्तदारों पर, और यतीमों पर, और मुह़ताजों पर, और मुसाफ़िरों पर, और जो भलाई तुम करोगे अल्लाह उसको जानता है।''

216 तुम पर क़िताल (धर्म युद्ध) फ़र्ज़ (अनिवार्य) किया गया है, और वह तुम्हें नापसंद तो होगा, मगर हो सकता है कि कोई चीज़ तुम्हें नापसंद हो, और वह तुम्हारे लिए भली हो; और हो सकता है कि कोई चीज़ तुम्हें पसंद हो और वह तुम्हारे लिए बुरी हो; और अल्लाह ही जानता है तुम नहीं जानते।

217 लोग आपसे अदब वाले (प्रतिष्ठित) महीने में युद्ध के विषय में पूछते हैं, कह दीजिए, ''उसमें लड़ना बड़ी (गंभीर) बात है; और अल्लाह के रास्ते से रोकना, और उसके साथ कुफ़्र (अविश्वास) करना है, मस्जिदे ह़राम (कअ़बः) से रोकना और उसके रहने वालों को वहाँ से निकाल देना; अल्लाह के नज़दीक उससे भी बड़ा (गुनाह) है, और फ़ित्ना पैदा करना क़त्ल से भी बढ़कर (बुरा) है,'' और यह लोग (काफ़िर) तो हमेशा तुमसे लड़ते ही रहेंगे, और इनका बस चले तो वे तुम को तुम्हारे दीन से फेर ही दें; और जो तुममें से अपने दीन से फिर जाए, और उसी ह़ालते कुफ़्र (इन्कारी की ह़ालत) पर मर जाए, तो यही

लोग हैं कि उनके आमाल (कर्म) दुनिया व आख़िरत में बर्बाद हो जाएँगे, और
यही लोग दोज़ख़ी हैं जिसमें वे हमेशा रहेंगे।
218 जो लोग ईमान लाए और अल्लाह की राह में हिजरत की (घर-बार छोड़ा)
और जिहाद किया; तो वही लोग अल्लाह की रहमत (दयालुता) के उम्मीदवार
हैं, और अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला (क्षमाशील), मेहरबान है।
219 लोग आप से शराब और जुएँ के बारे में पूछते हैं, कह दीजिए ''इनमें बड़ा
गुनाह है, अगर्चे लोगों के लिए कुछ फ़ायदे भी हैं, लेकिन उनका गुनाह उनके
फ़ायदे से कहीं ज़्यादा है'' और आप से पूछते हैं, (अल्लाह की राह में) ''क्या
ख़र्च करें? बता दीजिए, ''जितना आसान हो।'' इसी तरह़ अल्लाह तुम लोगों
से खोल-खोलकर अपनी आयतें बयान करता है ताकि तुम सोचो;
220 दुनिया और आख़िरत की बातों में; और (लोग) आप से यतीमों के बारे में
पूछते हैं, कह दीजिए, ''उनके सुधार के लिए (जो भी तरीक़ा अपनाया जाए)
अच्छा है, और अगर तुम उन्हें अपने साथ (नाते और ख़र्च में) सम्मिलित कर
लो तो वे तुम्हारे भाई हैं,'' और अल्लाह बिगाड़ने वालों और संवारने वालों
को (ख़ूब) जानता है; और अगर अल्लाह चाहता तो तुम को तक्लीफ़ में डाल
देता, बेशक अल्लाह ज़बर्दस्त (प्रभुत्वशाली), ह़िक्मत वाला है।
221 और मुश्रिक (बहुदेववादी) औ़रतें जब तक ईमान न लाएँ उनसे निकाह न करो,
एक ईमान वाली बांदी(दासी) मुश्रिक औ़रत से कहीं बेहतर है, चाहे वह तुम्हें
कितनी ही अच्छी क्यों न लगे; और (ईमान वाली औ़रतों का) मुश्रिक मर्दों
से निकाह न करो, जब तक कि वे ईमान न लाएँ, एक ईमान वाला गुलाम
आज़ाद मुश्रिक से कहीं बेहतर है, चाहे वह तुम्हें कितना ही अच्छा क्यों न
लगे; ये (शिर्क वाले) आग की ओर बुलाते हैं, और अल्लाह अपने हुक्म से
जन्नत और माफ़ी (क्षमा) की ओर बुलाता है, और वह अपनी आयतें लोगों
के सामने खोल-खोलकर बयान करता है, ताकि नसीह़त ह़ासिल करें।
222 और लोग आप से हैज़ (मासिक धर्म) के हुक्म के बारे में पूछते हैं, कह दीजिए,
''वह एक गन्दगी (पीड़ाजनक ह़ालत) है, अतः इन (हैज के) दिनों में औ़रतों
से अलग रहो, और जब तक पाक-साफ़ न हो जाएँ, उनके पास (सम्भोग के
इरादे से) न जाओ; फिर जब वह पाक हो जाएँ, जिस तरह़ अल्लाह ने तुम्हें
बताया है उनके पास जाओ।'' अल्लाह मुह़ब्बत रखता है तौबः करने वालों से
और मुह़ब्बत रखता है पाक व साफ़ रहने वालों से।
223 तुम्हारी बीवियाँ (पत्नियाँ) तुम्हारी खेती हैं तो तुम अपने खेत में आओ, जिस
तरह़ चाहो; और अपने बारे में आइन्दा के लिए कुछ भेजते रहो, और अल्लाह
से डरते रहो, और अच्छी तरह़ जान लो कि तुम्हें उससे मिलना है, और
ईमान लाने वालों को ख़ुशख़बरी सुना दीजिए।
224 और अल्लाह (के नाम) को अपनी क़समों के ज़रिये से, अपनी नेकी के और
परहेज़गारी के,और लोगों के बीच मेल-मिलाप (सुधार) कराने के सिलसिले में
आड़ न बनाओ; और अल्लाह सब कुछ सुनता, जानता है;
225 अल्लाह तुम्हारी बेकार क़समों पर तुम्हारी पकड़ नहीं करेगा, लेकिन उन क़समों

पर ‘वह’ तुम्हें ज़रूर पकड़ेगा जो तुम्हारे दिलों ने इरादा किया है, और अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला (क्षमाशील) बर्दाश्त करने वाला (सहनशील) है।

226 जो लोग अपनी बीवियों (पत्नियों) से (सम्भोग न करने की) क़सम खा बैठें, उनको चार महीने तक की मुहलत है; फिर अगर (इस मुद्दत में) मेल कर लें, तो अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।

227 और अगर तलाक़ (ही) की ठान लें, तो भी अल्लाह (सब कुछ) सुनता-जानता है;

228 और तलाक़ वाली औरतें तीन हैज़ (मासिक धर्म) गुज़रने तक अपने आप को रोके रखें; और अगर वे अल्लाह और आख़िरत (परलोक) पर यक़ीन रखती हों तो उनके लिए यह जायज़ न होगा कि, अल्लाह ने उनके रहिम (गर्भाशय) में जो कुछ पैदा किया हो, उसे छिपाएँ; इस बीच उनके पति उनको वापस लेने के ज़्यादा हक़दार हैं; अगर उनका इरादा सुधार का हो और औरत का हक़ (मर्दों पर) वैसा ही है जैसे नियमानुसार (मर्दों का) हक़ है, हाँ मर्दों को औरतों पर फ़ज़ीलत (प्रधानता); है और अल्लाह बड़ा ज़बरदस्त, हिकमत वाला है।

229 तलाक़ तो दो ही बार की है उसके बाद (या तो) नियम के अनुसार रख लेना है या अच्छे बर्ताव के साथ छोड़ देना है; और जो तुम उनको (महर) दे चुके हो, उसमें से तुमको कुछ भी वापस लेना जायज़ नहीं, सिवाय यह कि दोनों को डर हो कि वे अल्लाह की (निर्धारित) सीमाओं (हदों) पर क़ायम न रह सकेंगे तो अगर तुम को यह डर हो कि वे अल्लाह की सीमाओं (हदों) पर क़ायम न रहेंगे तो औरत जो कुछ (महर से माल) देकर छुटकारा हासिल करना चाहे, उसमें उन दोनों के लिए कोई गुनाह नहीं; ये अल्लाह की निध ारित की हुई सीमाएँ (क़ानून) हैं, अतः इनसे आगे न बढ़ो, और जो अल्लाह की सीमाओं(क़ानून) का उल्लंघन करे, तो ऐसे ही लोग ज़ालिम हैं;

230 (दो तलाक़ों के बाद) फिर अगर वह उसे तलाक़ दे दे, तो इसके बाद वह उसके लिए जायज़ न होगी, जब तक कि वह उसके अलावा किसी दूसरे से निकाह न कर ले; हाँ अगर वह (दूसरा पति भी) उसको तलाक़ दे दे, तो दोनों पर कोई गुनाह नहीं, कि फिर मिल जाएँ, बशर्ते कि दोनों को उम्मीद हो कि अल्लाह की निर्धारित सीमाओं (क़ानून) को क़ायम रखेंगे, और यह अल्लाह की सीमाएँ (क़ानून) हैं, जिन्हें ‘वह’ उन लोगों के लिए बयान फ़रमाता है जो जानना चाहते हों;

231 और जब तुम औरतों को (दो बार) तलाक़ दे चुको और वह अपनी निश्चित अवधि (इद्दत) को पहुँच जाएँ, तो (अब या तो) उन्हें इज़्ज़त के साथ रोक लो, या इज़्ज़त के साथ रिहाई (विदा कर दो) दे दो, और उनको ज़्यादती पहुँचाने के इरादे से न रोके रखो, और जो कोई ऐसा करेगा, वह ख़ुद अपने ही ऊपर ज़ुल्म करेगा। और अल्लाह के हुक्मों को हंसी (मज़ाक़) न समझो, और अल्लाह की नेअ़मतें जो तुम पर हुई हैं, उसे याद करो और (उस) किताब व हिक्मत (तत्वदर्शिता) को भी जो ‘उसने’ तुम पर उतारी हैं, कि उससे ‘वह’ तुम्हें नसीहत करता रहता है; और अल्लाह से डरते रहो और जाने रहो, कि अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है;

232 और जब तुम (अपनी) औरतों को (तीन बार) तलाक़ दे दो और वे अपनी निर्धारित अवधि (इद्दत) पूरी कर लें, तो उन्हें इस से मत रोको कि वह अपने (होने वाले दूसरे) पतियों से निकाह न करें, जबकि वह आपस में रज़ामन्दी के साथ अच्छी तरह मामला तय करें; यह नसीहत तुममें से उसको की जा रही है, जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता हो, यही तुम्हारे लिए पाकीज़ा(पवित्र) और साफ़ सुथरा तरीक़ा है, और अल्लाह(सब कुछ) जानता है तुम नहीं जानते।

233 और माएँ अपनी औलाद को पूरे दो साल तक दूध पिलाएँ, यह उस व्यक्ति के लिए है जो (तलाक़ देने के बाद अपने बच्चे को) दूध पिलाने की अवधि को पूरा करना चाहे; और (उस सूरत में) जिसका वह बच्चा है, (अर्थात बाप), उस पर नियम के अनुसार माओं को खाना,कपड़ा देना लाज़िम है; किसी व्यक्ति को तकलीफ़ नहीं दी जाती, मगर जहाँ तक उस का सामर्थ्य (अपनी समाई भर की ज़िम्मेदारी) हो; न तो माँ को उसके बच्चे की वजह से तक्लीफ़ पहुँचाई जाए, और न उस (के बाप) को जिसका बच्चा है, (यानी उस के बाप को) उसके बच्चे की वजह से (तक्लीफ़ दी जाए); और (दूध पिलाने और खाना कपड़ा देने की जैसी बाप पर ज़िम्मे दारी है) वैसे ही (उसके न होने पर उसके) वारिस पर भी है; फिर अगर (माता-पिता) दोनों अपनी मर्ज़ी और सलाह से (दूध) छुड़ाना चाहें, तो उन पर कुछ गुनाह नहीं; और अगर तुम अपनी औलाद को किसी (दूसरी औरत) से दूध पिलवाना चाहो, तो तुम पर कुछ गुनाह नहीं, बशर्ते कि जो तुमको, नियम के अनुसार, देना था (उसके) हवाले कर दो, और अल्लाह से डरते रहो, और जाने रहो कि जो कुछ भी तुम करते हो, अल्लाह उसको देख रहा है।

234 और तुममें से जो लोग मर जाएं, और अपने पीछे पत्नियाँ छोड़ जाएँ, तो वे पत्नियाँ अपने आप को, चार महीने और दस दिन तक रोके रखें; फिर जब वे अपनी निर्धारित अवधि (इद्दत) को पहुँच जाएँ, तो नियम के अनुसार, वे अपने लिए जो पसंद (निकाह) करें, उसमें तुम पर कोई गुनाह नहीं; जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसकी खूब ख़बर रखता है।

235 और तुम पर कोई गुनाह नहीं, कि तुम उन (इद्दत वाली) औरतों के निकाह का पैग़ाम देने के बारे में कोई बात इशारों से कहो, या (यह इरादा) अपने दिलों ही में छिपा कर रखो, अल्लाह को तो मालूम है, कि तुम उन औरतों को याद करोगे, परन्तु छिपकर उनसे कोई वादा न करो, मगर हाँ कोई बात जायज़ तौर पर अच्छे तरीक़े से (कहना चाहो तो संकेत से) कह दो और जब तक इद्दत की निर्धारित अवधि न पूरी हो जाए, निकाह की बात पक्की न करो, और जाने रहो कि जो कुछ तुम्हारे दिलों में है अल्लाह उसे (खूब) जानता है, तो उसी से डरते रहो, और जाने रहो कि अल्लाह बख़्शने वाला (अत्यन्त क्षमाशील) सहनशील है।

236 तुम पर कोई गुनाह नहीं कि तुम उन पत्नियों को जिन्हें तुमने न हाथ लगाया, और न उनके लिए 'महर' निश्चित किया, तलाक़ दे दो, तो नियम के अनुसार उन्हें कुछ ख़र्च दे दो, सामर्थ्य वाले अपनी हैसियत के अनुसार और बेसामर्थ्य

वाले अपनी हैसियत के अनुसार उनको ख़र्च दें; जैसा कि दस्तूर है, यह नेक लोगों पर एक तरह़ का ह़क़ है।

237 और अगर हमबिस्तरी (सम्भोग) करने से पहले और महर निश्चित करने के बाद औरतों को तलाक़ दो, तो जो कुछ तुमने निश्चित किया था उसका आधा देना होगा, सिवाय उस सूरत में कि पत्नियां आधा महर खुद ही छोड़ दें; या (मर्द) जिसके हाथ में निकाह के सम्बन्ध की बातें हैं, वह (अपना हक़) छोड़ दे, और अगर अपना हक़ छोड़ दो, तो यह परहेज़गारी के ज़्यादा क़रीब है, और अपने बीच इस भलाई के विचार को मत भूलो, जो (कुछ तुम) करते हो, बेशक अल्लाह तुम्हारे सब कामों को देख रहा है।

238 (सभी) नमाज़ों की पाबन्दी रखो और (विशेष रूप से) दर्मियानी नमाज़ (अ़स्र) की, और अल्लाह के आगे आजिज़ी (भक्तभाव) से खड़े रहा करो;

239 फिर अगर तुमको (दुश्मन का) डर हो तो पैदल हो या सवार (हर हाल में नमाज़ पढ़ लो) फिर जब तुम निश्चिन्त हो जाओ, तो जिस तरह अल्लाह ने तुम को (नमाज़) सिखाया है, जिसको तुम पहले नहीं जानते थे, (उसी तरह) अल्लाह को याद करो।

240 और जो लोग तुम में से मर जाएँ और पत्नियाँ छोड़ जाएँ, तो (उन के लिए ज़रूरी है कि) अपनी पत्नियों के ह़क़ में वे वसीयत कर जाएँ; कि घर से निकाले बिना एक साल तक खर्चा (खाना पीना आदि) दिया जाए, लेकिन अगर वे खुद ही निकल जाएँ तो जायज़ तौर पर जो कुछ भी अपने ह़क़ में करें उनका तुम पर कुछ गुनाह नहीं, और अल्लाह ज़बरदस्त (प्रभुत्वशाली), ह़िक्मत वाला है।

241 और तलाक़ पाई हुई औ़रतों को नियमानुसार (इद्दत की अवधि में), खर्च भी मिलना चाहिए, यह डर रखने वालों पर एक हक़ है;

242 अल्लाह इसी तरह तुम्हारे लिए खोल- खोल कर अपनी आयतें (हुक्मों को) बयान करता है, ताकि तुम समझ से काम लो।

243 क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा! जो हज़ारों की संख्या में होने पर भी, मौत के डर से अपने घर बार छोड़ कर निकल गये थे, तो अल्लाह ने उनसे कहा,'' मर जाओ,'' फिर 'उसने' उन्हें जिला दिया, कि अल्लाह लोगों पर बड़ा फ़ज़्ल (कृपा) करने वाला है, लेकिन अक्सर लोग शुक्रगुज़ार नहीं होते।

244 और अल्लाह की राह में युद्ध (क़िताल) करो, और जान लो कि अल्लाह बड़ा सुनने वाला, जानने वाला है।

245 कौन है जो अल्लाह को खुशदिली से (क़र्ज़ हसना) क़र्ज़ दे? फिर अल्लाह उसे बढ़ाकर उसके लिए कई गुना कर दे? और अल्लाह तंगी और कुशादगी (ग़रीबी अमीरी) भी देता है, और उसी की ओर तुम सबको लौट कर जाना है।

246 क्या तुमने मूसा के बाद बनी इस्राईल के सरदारों को नहीं देखा? जबकि उन्होंने अपने नबी से कहा, ''हमारे लिए एक बादशाह नियुक्त कर दीजिए ताकि हम अल्लाह की राह में युद्ध करें।'' (नबी ने) कहा, ''कहीं ऐसा तो नहीं कि अगर तुम पर क़िताल (युद्ध) अनिवार्य कर दिया जाए, तो तुम युद्ध न करो, वह

कहने लगे, ''हमारे लिए कौन सा ऐसा उज़्र (रूकावट) हो सकता है! कि हम अल्लाह की राह में न लड़ें, जबकि हम अपने घरों से तो निकाले और बाल बच्चों से अलग किये ही जा चुके हैं।'' लेकिन जब उन पर युद्ध अनिवार्य कर दिया गया, तो उनमें से थोड़े लोगों के सिवा, (सब) फिर गये और अल्लाह ज़ालिमों को भली भांति जानता है;

247 और नबी ने उनसे कहा, ''अल्लाह ने तुम्हारे लिए तालूत को बादशाह (सम्राट) नियुक्त किया है,'' वे बोले, ''उसकी बादशाही हम पर कैसे हो सकती है, जबकि हम उसके मुक़ाबले में बादशाही के ज़्यादा ह़क़दार हैं और जबकि उसे तो माल से भी ऐसी अमीरी नसीब नहीं,'' (नबी ने) कहा, ''अल्लाह ने तुम्हारे मुक़ाबले में उसी को चुना है, और 'उसने' उसे इल्म और शारीरिक क्षमता में कुशादगी दी है; और अल्लाह अपना मुल्क (राज्य) जिसे चाहता है देता है, और अल्लाह बड़ी वुस्अ़त वाला (समाई वाला), जानने वाला है;

248 और उनसे उनके नबी ने कहा, ''उस (तालूत) के बादशाहत की निशानी यह है, कि तुम्हारे पास एक सन्दूक़ आएगा जिसको फ़रिश्ते उठाए हुए होंगे, उसमें तुम्हारे रब की ओर से तसल्ली की चीज़ होगी और कुछ और चीज़ें भी होंगी जिसे मूसा और हारून छोड़ गये थे, बेशक इस में तुम्हारे लिए बड़ी निशानियां हैं, अगर तुम ईमान वाले हो।''

249 फिर जब तालूत सेनाएँ लेकर चला तो उसने कहा ''अल्लाह निश्चित रूप से एक दरिया (नदी) के ज़रिये तुम्हारा इम्तिहान लेने वाला है; तो जो व्यक्ति उसमें से पानी पी लेगा वह मेरा नहीं है; और जो न पिएगा वह मेरा है, हाँ अगर कोई हाथ से चुल्लू भर पानी ले ले'' फिर उनमें से थोड़े लोगों के सिवा सभी ने उसका पानी पी लिया; फिर जब तालूत और ईमान वाले, जो उसके साथ थे नदी पार कर गये तो कहने लगे, ''आज हममें जालूत और उसकी सेनाओं का मुक़ाबला करने की शक्ति नहीं है,'' इस पर उन लोगों ने जो समझते थे, कि उन्हें अल्लाह से मिलना है, कहा, ''कितनी बार एक छोटी सी टुकड़ी ने अल्लाह के हुक्म से एक बड़े गिरोह पर विजय पाई है, और अल्लाह तो सब्र करने (जमने) वालों के साथ है,''

250 और जब वे लोग जालूत और उसकी सेनाओं के मुकाबले पर आए तो कहा, ''ऐ हमारे रब! हम को सब्र दे और हमारे क़दम जमा दे और काफ़िरों पर हमारी मदद फ़रमा,

251 तो अल्लाह के हुक्म से, उन्होंने पराजित कर दिया; और दाऊद ने जालूत को क़त्ल कर दिया; और अल्लाह ने उसे (दाऊद को) बादशाहत और ह़िक्मत प्रदान की, और जो कुछ चाहा उन्हें सिखाया; और अगर अल्लाह लोगों को एक दूसरे से हटाता न रहता तो धरती फ़साद से भर जाती, लेकिन अल्लाह तो दुनिया वालों पर बड़ा मेहरबान है।

252 ये अल्लाह की आयतें हैं, हम आप को (ह़क़) सच्चाई के साथ पढ़ कर सुनाते हैं, और (ऐ मुहम्मद!) बेशक आप रसूलों में से हैं।

253 इन रसूलों में से 'हमने' कुछ को कुछ पर फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) दी है, कुछ ऐसे हैं जिनसे अल्लाह ने कलाम (बातचीत) किया है और उनमें से कुछ के दर्जे

बुलन्द किये; और मरयम के बेटे ईसा को हमने खुले हुए चमत्कार दिये, और 'हमने' उनको रूहुल क़ुदुस (जिब्रईल) के ज़रिये ताईद (समर्थन) किया; और अगर अल्लाह चाहता तो उनके बाद के लोग आपस में खून न बहाते; इसके बाद कि उनके पास खुली निशानियां आ चुकी थीं लेकिन (लोगों ने) आपस में विरोध किया, फिर कुछ तो उनमें से ईमान लाए और कुछ कुफ्र (इन्कार) ही करते रहे; और अगर अल्लाह चाहता तो ये लोग आपस में खून न बहाते, लेकिन अल्लाह जो चाहता है, करता है।

254 ऐ ईमान वालो! जो कुछ (रोज़ी) हम ने तुम्हें दे रखा है उसमें से ख़र्च करो, इससे पहले कि वह दिन आ जाए जिस दिन न कोई तिजारत (क्रय-विक्रय) काम आएगी और न दोस्ती, और न सिफ़ारिश और काफ़िर लोग (सच्चाई के इन्कारी) तो ज़ालिम हैं।

255 अल्लाह (वह है कि) उसके सिवा कोई इबादत (उपासना) के योग्य नहीं वह ज़िन्दा और हमेशा रहने वाला (चिरन्तर) है, 'उसे' न ऊंघ आती है न नींद, 'उसी' का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ धरती में है, कौन ऐसा है जो 'उसके' सामने बिना 'उसकी' इजाज़त के सिफ़ारिश कर सके, जो कुछ लोगों के सामने है और जो कुछ उनके पीछे हो चुका (दृश्य और अदृश्य) 'उसको' मालूम है, और लोग उस इल्म में से कुछ भी क़ाबू नहीं पा सकते (हावी नहीं हो सकते) सिवाय उसके कि जितना 'वह' चाहे, 'उसकी' कुर्सी (प्रभुत्व) आसमानों और ज़मीन को व्याप्त है, और उनकी हिफ़ाज़त 'उसके' लिए कुछ भी मुश्किल नहीं; और 'वह' बड़ा अज़्मत वाला (महा महिमावान) है;

256 धर्म के विषय में कोई ज़बर्दस्ती नहीं, हिदायत तो गुमराही से साफ़-साफ़ खुल चुकी है तो अब जो सरकश (शैतान) को ठुकरा दे और अल्लाह पर ईमान लाए, तो उसने ऐसा मज़बूत सहारा थाम लिया जो कभी टूटने वाला नहीं, और अल्लाह खूब सुनने वाला, जानने वाला है।

257 अल्लाह उन लोगों का दोस्त (संरक्षक) है जो ईमान लाए कि उनको अंधेरे से निकाल कर रोशनी की ओर लाता है, और जो काफ़िर (इन्कारी) हैं, उनके दोस्त शैतान हैं, कि जो उनको रोशनी से निकाल कर अंधेरे की ओर ले जाते हैं, यही लोग जहन्नमी हैं उसमें वे हमेशा रहेंगे।

258 क्या तुम ने उस व्यक्ति को देखा नहीं? जिसने इब्राहीम से उसके 'रब' के सिलूसिले में हुज्जत (बहस) किया था इस वजह से कि अल्लाह ने उसको बादशाहत दे रखी थी, जबकि इब्राहीम ने उससे कहा, "मेरा रब तो 'वही' है जो जिलाता और मारता है", उसने कहा, "मैं भी तो जिलाता और मारता हूँ" इब्राहीम ने कहा, "अच्छा तो अल्लाह सूर्य को पूरब से लाता है, तो तू उसे पश्चिम से ले आ, इस पर वह काफ़िर (इन्कारी) चकित रह गया, और अल्लाह ज़ालिमों को सीधी राह नहीं दिखाता।

259 या उस जैसे व्यक्ति को (नहीं देखा,) जिसका एक ऐसी बस्ती पर से गुज़र हुआ, जो अपनी छतों के बल गिरी हुई थी, उसने कहा, "अल्लाह इसको मरने के बाद कैसे जिलाएगा" तो अल्लाह ने उसे सौ वर्ष तक मुर्दा रखा

फिर उसे उठा खड़ा किया, कहा, ''तू कितनी अवधि तक इस हालत में रहा, उसने कहा, मैं एक दिन या दिन का कुछ हिस्सा रहा, कहा, (नहीं) बल्कि तू सौ वर्ष रहा है, अब अपने खाने और पीने की चीज़ों को देख ले, उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा, और अपने गधे को भी देख और यह इसलिए कह रहे हैं ताकि हम तुझे लोगों के लिए निशानी बना दें, और हड्डियों को देख, कि किस प्रकार हम जोड़ देते हैं फिर उन पर माँस चढ़ाते हैं तो जब यह हक़ीक़त उस पर खुल गई तो वह पुकार उठा मैं जानता हूँ कि अल्लाह को हर चीज़ पर क़ुद्रत (सामर्थ्य) है।''

260 और (याद करो) जब इब्राहीम ने कहा, ''ऐ मेरे रब! मुझे दिखा दे कि 'तू' मुर्दो को किस तरह जिलाएगा?'' कहा, ''क्या आपको यक़ीन नहीं है?'' (उन्होंने) कहा, ''क्यों नहीं, लेकिन (मैं देखना चाहता हूँ) ताकि दिल को इत्मिनान हो जाए,'' कहा, ''अच्छा चार परिन्दे लें, फिर उन्हें अपने साथ हिला-मिला लें, फिर उनका एक-एक टुकड़ा हर एक पहाड़ पर रखवा दें, फिर उनको बुलाएँ तो वे आप के पास दौड़ते चले आएँगे और जान लें कि अल्लाह बड़ी ताक़त वाला (प्रभुत्वशाली), हिक्मत वाला है।''

261 जो लोग अपना माल अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं, उन (के माल) की मिसाल उन दानें की तरह है जिससे सात बालें उगें और हर एक बाली में सौ-सौ दानें हों और अल्लाह जिस (के माल) में चाहता है ज़्यादा करता है 'वह' बड़ी वुसअ़त (समाई) वाला, (सब कुछ) जानने वाला है।

262 जो लोग अपना माल अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करते हैं उसके बाद न उस ख़र्च का (किसी पर) एहसान रखते हैं, और न (किसी को) तक्लीफ़ देते हैं, उनका बदला उनके 'रब' के पास है, और (क़ियामत के दिन) न उनको कुछ डर होगा, और न वे ग़मगीन होंगे।

263 एक भली बात कहना और माफ़ी से काम लेना, उस सदक़े से बेहतर है जिसके देने के बाद तकलीफ़ दी जाए, और अल्लाह बड़ा ग़नी (निस्पृह) सहनशील है।

264 ऐ ईमान वालो! अपने सद्क़े को एहसान जताकर और तकलीफ़ दे कर, उस व्यक्ति की तरह बर्बाद न कर दो, जो लोगों को दिखाने के लिए अपना माल ख़र्च करता, और अल्लाह और अन्तिम दिन पर ईमान नहीं रखता, तो उस की हालत उस चट्टान जैसी है जिस पर कुछ मिट्टी पड़ी हो फिर उस पर ज़ोर की बारिश हो, तो वह उसे बिल्कुल साफ़ कर दे, इसी तरह ये लोग अपने आ़माल का कुछ भी बदला हासिल नहीं कर सकेंगे, और अल्लाह ऐसे नाशुक्रों को हिदायत नहीं दिया करता।

265 और उन लोगों की मिसाल जो अपना माल अल्लाह को राज़ी करने, और अपने आप में मज़बूती पैदा करने की इच्छा से खर्च करते रहते हैं, (उनकी हालत) एक बाग़ की तरह है, जो किसी अच्छी उपजाऊ भूमि पर हो, और उस पर घंघोर बारिश हो, तो उसमें दो गुना फल आएँ, और अगर ज़ोरदार बारिश उस पर न भी हो तो हल्की फुहार ही सही, और तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उसे ख़ूब देख रहा है।

266 क्या तुम में से कोई यह पसंद करता है कि उसका एक बाग़ खजूरों और

अंगूरों का हो, जिसके नीचे नहरें बह रही हों, उसमें हर तरह के फल हों, उसे बुढ़ापा आ पकड़े, और उसके नन्हें-नन्हें बच्चे भी हों तो (यकायक) उस बाग़ पर आग का भरा हुआ बगोला (बवंडर) चले और वह जल जाए, इस तरह अल्लाह अपनी निशानियों को खोल-खोल कर बयान करता है ताकि तुम सोच-विचार से काम लो।

267 ऐ ईमान वालो! अपनी पाक कमाई में से और उन चीज़ों में से भी, जो हमने ज़मीन से तुम्हारे लिए निकाली हैं, ख़र्च करो और उन में से ख़राब चीज़ों के देने का इरादा भी न करना, और तुम ख़ुद भी (दिये जाने पर) उनको न लोगे, मगर यह कि आँखें ही बन्द कर लो, और जान लो कि, अल्लाह बेपरवाह (निस्पृह) ह़म्द के लायक़ (प्रशंसनीय) है।

268 शैतान तुम्हें मुहताजी से डराता है, और बेशर्मी के कामों में उभारता है, जबकि अल्लाह अपनी ओर से माफ़ी और रह़म (कृपा) का, तुम से वादा करता है और अल्लाह बड़ी वुसअ़त (समाई) वाला, ख़ूब जानने वाला है।

269 'वह' जिसे चाहता है ह़िक्मत अता करता है, और जिसे ह़िक्मत अता हो गई, बेशक उसको बड़ी नेअ़मत मिल गई, और नसीह़त तो वही लोग क़ुबूल करते हैं, जो अक़्लमंद हैं।

270 और तुम जो कुछ ख़र्च करते हो, या जो भी नज़र (मन्नत) मानते हो अल्लाह उसे जानता है, और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं।

271 अगर तुम खुले रूप में सदक़े दो तो यह अच्छा है, और अगर छिपाकर मुहताजों को दो, तो यह तुम्हारे लिए और बेहतर है, और (वह) तुम्हारे गुनाहों को भी दूर कर देगा, और अल्लाह को तुम्हारे कामों की ख़ूब ख़बर है।

272 (ऐ मुहम्मद!) उन लोगों की हिदायत (सत्य मार्ग) के आप ज़िम्मेदार नहीं हैं बल्कि अल्लाह ही जिसको चाहता है हिदायत देता है, और तुम जो कुछ माल में से ख़र्च करोगे, तो अपने ही लिए, और तुम अल्लाह ही को राज़ी करने के लिए ख़र्च करते हो, और तुम माल में से जो कुछ ख़र्च करते हो (सब) तुम को पूरा-पूरा लौटा दिया जाएगा, और तुम पर कोई ज़ुल्म न होगा।

273 यह उन मुहताजों के लिए है, जो अल्लाह के रास्ते में घिर गये हैं, मुल्क में कहीं चल फिर नहीं सकते, और माँगने में शर्म करते हैं, यहाँ तक कि न माँगने की वजह से अन्जान आदमी उनको मालदार ख़याल करता है, और तुम उन्हें उनके लक्षण से पहचान सकते हो, वे लिपट कर लोगों से नहीं माँगते, और जो माल भी तुम ख़र्च करोगे, अल्लाह उस को ख़ूब जानने वाला है।

274 जो लोग अपना माल रात और दिन छिपे और खुले ख़र्च करते रहते हैं, तो उन का बदला उनके रब के पास है, और न उनके लिए कोई डर है, और न वह ग़मगीन होंगे।

275 जो लोग ब्याज खाते रहते हैं वे लोग (क़ब्रों से) खड़े न हो सकेंगे मगर जिस तरह़ वह व्यक्ति उठता है, जिसे शैतान ने छूकर बावला कर दिया हो। यह (सज़ा) इसलिए होगी, कि वे कहते हैं कि व्यापार भी तो वैसा ही है जैसे ब्याज (लेना), जबकि अल्लाह ने व्यापार को ह़लाल और ब्याज को हराम किया है,

अतः जिस व्यक्ति को उसके रब की ओर से नसीहत पहुँची और वह बाज़ आ गया, तो जो कुछ पहले हो चुका वह उस का हो चुका, और उसका मामला अल्लाह के हवाले रहा, और जिसने फिर यही काम किया, तो यही लोग दोज़ख़ वाले हैं, उसमें वे हमेशा पड़े रहेंगे।

276 अल्लाह ब्याज को मिटाता है, और सद्क़े को बढ़ाता है, और अल्लाह किसी नाशुक्रे गुनहगार को पसंद नहीं करता।

277 जो लोग ईमान लाए और नेक अ़मल करते रहे, और नमाज़ की पाबन्दी की और ज़कात देते रहे, उनका बदला उनके रब के पास है न उन पर कोई डर होगा, और न वह ग़मगीन होंगे।

278 ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और जो कुछ ब्याज बाक़ी रह गया है उसे छोड़ दो, अगर तुम ईमान वाले हो।

279 फिर अगर तुम ने ऐसा न किया तो ख़बरदार हो जाओ, जंग के लिए अल्लाह और उसके रसूल की ओर से, और अगर तुम तौबः कर लो तो मूल-धन तुम्हारा ही है, न तुम (किसी पर) ज़ुल्म करो, और न तुम पर ज़ुल्म किया जाए।

280 और अगर (क़र्ज़ लेने वाला) तंगी में हो तो (उसे फ़राख़ी या) हाथ खुलने तक मुहलत दो; और अगर सदक़ा कर दो (अर्थात मूलधन भी न लो) तो यह तुम्हारे लिए बेहतर है, बशर्ते कि समझो।

281 और उस दिन से डरते रहो, जबकि तुम अल्लाह की ओर लौटाए जाओगे, फिर हर व्यक्ति को जो कुछ उसने कमाया था, पूरा-पूरा बदला मिल जाएगा, और उन पर ज़ुल्म (अन्याय) न होगा।

282 ऐ ईमान वालो! जब क़र्ज़ (ऋण) का मामला किसी निश्चित अवधि के लिए करो तो उसे लिख लिया करो, और लिखने वाला तुम्हारे बीच इंसाफ़ से लिखे, और लिखने वाला लिखने से इन्कार न करे, जिस तरह अल्लाह ने उसे सिखाया है, (उसी तरह वह दूसरों के लिए लिखने के काम आए,) और बोल कर वह व्यक्ति लिखाए जिसके ज़िम्मे हक़ की अदायगी हो, और चाहिए कि वह अपने रब, अल्लाह से डरता रहे, और उसमें से कुछ भी कम न करे फिर अगर वह व्यक्ति जिसके ज़िम्में हक़ की अदायगी हो, वह कमसमझ या कमज़ोर हो, या वह बोल कर न लिख सकता हो तो उसके संरक्षक को चाहिए कि वह इंसाफ के साथ बोल कर लिखवा दे, और अपने में से दो मर्दों (पुरूषों) को गवाह बना लिया करो, और अगर दो मर्द न हों, तो एक मर्द और दो औरतें, जिन्हें तुम गवाही के लिए पसंद करो, कि अगर एक भूल जाए तो दूसरी उसे याद दिला दे, और गवाहों को जब बुलाया जाए, तो आने से इन्कार न करें, और क़र्ज़ चाहे थोड़ा हो या बहुत एक निश्चित (अवधि तक) के लिए हो, तो उसे लिखने में सुस्ती न करो, यह बात अल्लाह के नज़दीक बहुत ही मुन्सिफ़ाना (न्यायोचित) है, और गवाही के लिए भी यही तरीक़ा बेहतर है, और इससे बहुत उम्मीद है कि तुम किसी संदेह में न पड़ोगे, हाँ अगर कोई सौदा नक़्द हो जिसका लेन-देन तुम आपस में कर रहे हो, तो उसके न लिखने में, तुम पर कोई दोष नहीं, और जब आपस में ख़रीद-फ़रोख़्त का मामला करो तो,

उस समय भी गवाह कर लिया करो, और न किसी लिखने वाले को नुक़्सान पहुँचाया जाए, और न किसी गवाह को, और अगर ऐसा करोगे तो यह तुम्हारे लिए गुनाह की बात होगी, और अल्लाह से डरते रहो अल्लाह तुम्हें सिखाता है, और अल्लाह हर चीज़ का खूब जानने वाला है।

283 और अगर तुम सफ़र में हो, और किसी लिखने वाले को न पा सको, तो रेहन (गिरवी) रखने की चीज़ें ही क़ब्ज़े में दे दिया करो, फिर अगर तुम एक-दूसरे पर भरोसा करो, तो जिस पर भरोसा किया जाए, उसे चाहिए कि वह यह सच कर दिखाए, कि वह भरोसेमन्द है; और अल्लाह से, जो उस का रब है, डरता रहे, और गवाही को न छिपाओ जो छिपायेगा उसका दिल गुनाहगार है, और तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उसे खूब जानता है।

284 अल्लाह ही का है, जो कुछ आसमानों में है, और जो कुछ ज़मीन में है और जो कुछ तुम्हारे मन में है, अगर तुम उसे ज़ाहिर कर दो, या छिपाये रखो, तो अल्लाह तुम से उसका हिसाब (ज़रूर) लेगा, फिर 'वह' जिसे चाहे माफ़ कर दे और जिसे चाहे अ़ज़ाब़ दे, और अल्लाह हर चीज़ पर क़ुद्रत (सामर्थ्य) रखने वाला है।

285 रसूल (मुहम्मद) उस (किताब) पर ईमान लाए जो उनके रब की ओर से उन पर उतारा गया और ईमान वाले भी, सब अल्लाह पर, और उसके फ़रिश्तों पर, और उसकी किताबों पर, और उसके रसूलों पर ईमान लाये। (और कहते हैं) 'हम' उसके रसूलों में से किसी में कुछ अन्तर नहीं करते,'' और उनका कहना है ''हमने सुना और माना, ऐ 'हमारे' रब! हम 'तुझ' ही से माफ़ी चाहते हैं और तेरी ही ओर (हम सब को) लौटकर जाना है।''

286 अल्लाह किसी व्यक्ति पर उसकी शक्ति से ज़्यादा बोझ नहीं डालता, उसे वही मिलेगा जो उसने कमाया है, और वह भुगतेगा (भी) वही जो उसने किया है- ''ऐ हमारे रब! अगर हमसे भूल चूक हो जाए तो हमारी पकड़ न कर, ऐ हमारे रब! हम पर ऐसा बोझ न डाल जैसा कि 'तूने' हमसे पहले के लोगों पर डाला था, ऐ हमारे रब! हमसे वह बोझ न उठवा जिस की हममें ताक़त नहीं, और हमें माफ़ कर, और हम को बख़्श दे, और हम पर रह़म कर, 'तूही' हमारा संरक्षक (काम बनाने वाला) है, अतः काफ़िरों (इन्कारियों) पर हमारी मदद (विजय) फरमा।''

## सूर-ए-आलि इ़मरान

यह सूरः मदनी है, इसमें अ़रबी के 15326 अक्षर, 3542 शब्द, 200 आयतें, और 20 रूकूअ़ हैं।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने

वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।
1 अलिफ़्- लाम- मीम-।
2 अल्लाह (वह है कि) उसके सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, 'वह' ज़िन्दा, हमेशा रहने वाला है;
3 'उसने' आप पर सच्ची किताब उतारी, जो अपने से पहले की (किताबों की) तस्दीक़ (पुष्टि) करती है, और उसी ने तौरात और इंजील उतारी;
4 इससे पहले लोगों की हिदायत (मार्ग दर्शन) के लिए फ़ुर्क़ान (ह़क़ व बातिल को अलग-अलग करने वाला) उतारा, जिन लोगों ने अल्लाह की आयतों का इन्कार किया, उनके लिए सख़्त अ़ज़ाब है; और अल्लाह ज़बरदस्त, बदला लेने वाला है।
5 अल्लाह से कोई चीज़, न ज़मीन में छिपी है, और न आसमान में।
6 'वही' तो है जो रह़म (गर्भाशय) में जैसा चाहता है तुम्हारी सूरतें बनाता है,'उस' ताक़त वाले (प्रभुत्वशाली) ह़िक्मत वाले के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं।
7 'वही' है जिसने तुम पर किताब उतारी, जिसकी कुछ आयतें मुह़्कम (सुदृढ़) हैं, वही किताब तो असल (मूल) है- और दूसरी मुतशाबेह (मिलती-जुलती) हैं, तो वह लोग जिनके दिलों में टेढ़ है, वे मुतशाबेह (संदिग्ध) की पैरवी करते हैं, ताकि फ़ितने फैलाएँ, (ग़लत) मतलब बयान कर के, जबकि असली मतलब अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता, और जो लोग इल्म में पक्के होते हैं, वे कहते हैं, ''हम तो इस पर ईमान लाए ये सभी हमारे रब की ओर से है, और नसीह़त तो अक़्लमंद ही क़ुबूल करते हैं।''
8 (ऐ) हमारे रब! जब 'तू' हमें सीधे रास्ते पर लगा चुका है तो इसके बाद हमारे दिलों में टेढ़ न पैदा कर, और हमें अपने पास से रह़मत (दयालुता) अ़ता कर, बेशक 'तू' ही' बड़ा दाता है।
9 (ऐ) हमारे रब! 'तू' लोगों को एक दिन इकट्ठा करने वाला है, जिसमें कोई संदेह नहीं, बेशक अल्लाह अपने वादा के खिलाफ़ नहीं करता।
10 जिन लोगों ने कुफ्र (इन्कार) किया न उनके माल अल्लाह (के अ़ज़ाब) से उनको बचा सकेंगे और न उनकी औलाद कुछ काम आएगी और यही लोग आग के ईंधन होंगे।
11 इनका ह़ाल भी फ़िरऔन के लोगों और उनसे पहले के लोगों का सा होगा जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया था, तो अल्लाह ने उन्हें उनके गुनाहों की वजह से पकड़ लिया था, और अल्लाह सख़्त सज़ा देने वाला है।
12 (ऐ मुह़म्मद) काफ़िरों (इन्कारियों) से कह दीजिए, ''जल्द ही तुम पराजित किये जाओगे, और जहन्नम की ओर इकट्ठे किये जाओगे, और वह बुरा ठिकाना है,।''
13 तुम्हारे लिए एक निशानी (उन) दो गिरोहों में है, जो (बद्र की लड़ाई में) एक दूसरे से भिड़ गये, एक गिरोह (उसमें मुसलमानों का था जो) अल्लाह की राह में लड़ रहा था, और दूसरा गिरोह (काफ़िरों का था वह) उनको अपनी आखों

से देख रहा था कि वे उनसे दुगने हैं, और अल्लाह अपनी मदद से जिसे चाहता है शक्ति प्रदान करता है, जो बसारत (खुली आँखों) वाले हैं उनके लिए इसमें बड़ा सबक़ है।

14 लोगों के लिए ज़ीनत (शोभायमान) कर दी गई है, उनके ख़्वाहिशों की मुहब्बत, औरतों से हो या बेटों से, या ढ़ेर लगे हुए सोने और चाँदी से या निशान लगे हुए घोड़ों से, या मवेशियों से, (यह सब भली मालूम होती है) या खेती बाड़ी से, यह सब दुनियावी ज़िन्दगी के सामान हैं, और अच्छा ठिकाना तो अल्लाह ही के पास है।

15 कह दीजिए, ''क्या मैं तुम्हें ऐसी चीज़ की ख़बर दूँ, जो इनसे बेहतर हो, उन लोगों के लिए जो परहेज़गार हैं, उनके लिए रब के पास बाग़ हैं, जिनके नीचे नहरें बह रही हैं, उसमें वे हमेशा रहेंगे, और पाक-साफ बीवियाँ (पत्नियाँ) होंगी, और अल्लाह की रज़ामन्दी (प्राप्त) होगी, और अल्लाह अपने बन्दों को देखने वाला है।''

16 (यह वह लोग हैं) जो कहते रहते हैं कि (ऐ) हमारे रब! हम ईमान ले आए, सो हमारे गुनाह माफ़ कर दे, और हमें दोज़ख की आग से बचा;

17 यह लोग सब्र (धैर्य) से काम लेते हैं, और सच बोलते हैं, और इबादत में लगे रहते हैं, और (अल्लाह की राह में) खर्च करते हैं, और सहर (भोर) में गुनाहों की माफ़ी माँगा करते हैं।

18 अल्लाह तो इसकी गवाही देता है कि उसके सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, और फ़रिश्ते और इल्म वाले लोग जो इन्साफ़ पर क़ायम हैं, वह भी (गवाही देते हैं कि) उस प्रभुत्वशाली हिक्मत वाले के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं।

19 दीन (धर्म) तो अल्लाह के नज़दीक़ इस्लाम ही है, जिन्हें किताब दी गई थी,(अह्ले किताब) उन्होंने जो (उस दीन से) इख़्तिलाफ़ (विभेद) किया, तो इल्म हासिल होने के बाद आपस की ज़िद से किया, और जो व्यक्ति अल्लाह की आयतों का इन्कार करेगा, तो अल्लाह भी जल्द हिसाब लेने वाला है;

20 फिर अगर यह लोग आप से हुज्जत (झगड़ा) करें, तो कह दीजिए, ''मैंने और मेरे जो पैरू (अनुयायी) हैं, अपने आपको अल्लाह के हवाले कर दिया है।'' और अह्ले किताब (जिन्हें किताब मिली थी) और उम्मीयों (जिनके पास किताब नहीं) से कह दीजिए ''क्या तुम भी इस्लाम क़ुबूल करते हो?'' तो अगर यह इस्लाम क़ुबूल कर लें तो बेशक सीधा मार्ग पा लें, और अगर मुँह मोड़े रहें, तो आप के ज़िम्मे केवल (संदेश) पहुँचा देना है, और अल्लाह (अपने) बन्दों को ख़ूब देख रहा है।

21 बेशक जो लोग अल्लाह की आयतों का इन्कार करते हैं, और नबियों को नाहक़ क़त्ल करते हैं, और उन लोगों को भी क़त्ल कर देते हैं, जो न्याय का हुक्म देते हैं, तो उन्हें दुःख देने वाले अ़ज़ाब की ख़ुशख़बरी सुना दीजिए।

22 ये ऐसे लोग हैं जिनके आ़माल दुनिया और आख़िरत दोनों में बर्बाद हुए और उन का कोई मदद्गार न होगा।

23 क्या आपने उन लोगों को नहीं देखा! जिन्हें किताब (तौरेत) दी गई थी; उन्हें

अल्लाह की किताब की ओर बुलाया जाता है, ताकि वह उनके बीच फ़ैसला करें; फिर भी उनका एक गिरोह बेरूख़ी करता हुआ मुँह फेर लेता है;
24 यह इसलिए कि वे कहते हैं: ''आग हमें नहीं छू सकती, हाँ, कुछ गिने-चुने दिनों की बात और है।'' और उनकी मन गढ़त बातों ने, जो वे गढ़ते रहे हैं, उन्हें धोखे में डाल रखा है;
25 फिर क्या हाल होगा, जब 'हम' उन्हें उस दिन इकट्ठा करेंगे, जिसके आने में कोई संदेह नहीं और हर नफ़्स (इन्सान) को, जो कुछ उसने कमाया होगा, पूरा-पूरा बदला मिल जाएगा, और उन पर कुछ भी ज़ुल्म न किया जाएगा।
26 कह दीजिए, ''(ऐ अल्लाह) तमाम मुल्कों के मालिक! 'तू' जिसे चाहे हुकूमत दे, और 'तू' जिससे चाहे हुकूमत छीन ले, और 'तू' जिसे चाहे इज़्ज़त दे, और 'तू' जिसे चाहे ज़िल्लत दे, 'तेरे' ही हाथ में भलाई है, बेशक 'तू' ही हर चीज़ पर क़ादिर (सामर्थ्यवान) है।''
27 'तू' रात को दिन में पिरोता है, और दिन को रात में पिरोता है, और 'तू' बेजान से जानदार को निकालता है, और 'तू' जानदार से बेजान को निकालता है, और 'तू' जिसे चाहता है बेहिसाब रोज़ी देता है।
28 ईमान वालों को चाहिए, कि वे ईमान वालों के सिवा काफ़िरों (इन्कार करने वालों) को दोस्त (राज़दार) न बनाएँ; और जो ऐसा करेगा, उससे अल्लाह का कोई सम्बन्ध नहीं, हाँ, अगर इस तरीक़े से तुम उन (की बुराई) से बचाव की शक्ल निकालो, (तो हरज नहीं) और अल्लाह तुम को अपने से डराता है, और अल्लाह ही की ओर (तुम को) लौट कर जाना है।
29 कह दीजिए, ''जो कुछ तुम्हारे सीनों में है, तुम उसे छिपाओ या ज़ाहिर करो, अल्लाह उसे जानता है; और अल्लाह उसे भी जानता है, जो कुछ आसमानों में है, और जो कुछ ज़मीन में है, और अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत (सामर्थ्य) रखता है।''
30 जिस दिन हर व्यक्ति अपनी की हुई भलाई, और अपनी की हुई बुराई को सामने पाएगा, तो वह तमन्ना करेगा कि काश! उसके और इस दिन के बीच बहुत दूर का फ़ासला होता, और अल्लाह तुम को अपने (ग़ज़ब) से डराता है, और अल्लाह अपने बन्दों पर बड़ा शफ़क़त करने वाला (अर्थात करूणामय) है।
31 कह दीजिए, ''अगर तुम अल्लाह से मुहब्बत रखते हो, तो तुम मेरी पैरवी (अनुसरण) करो, अल्लाह भी तुम को चाहने लगेगा, और तुम्हारे गुनाह माफ़ कर देगा, और अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, रहम वाला है''
32 कह दीजिए, ''अल्लाह और उसके रसूल का हुक्म मानो,'' इस पर भी अगर वह मुँह मोड़ें, तो अल्लाह भी काफ़िरों (इन्कारियों) से मुहब्बत नहीं करता।
33 अल्लाह ने आदम और नूह और इब्राहीम की औलाद, और इमरान की औलाद को, पूरे आ़लम (संसार) के लोगों में चुन लिया था;
34 इनमें एक दूसरे की औलाद थे, और अल्लाह खूब सुनने वाला, जानने वाला है।

35 (और वह वक़्त याद करो) जब इमरान की बीवी (पत्नी) ने कहा, ‘‘ऐ मेरे
रब! जो (बच्चा) मेरे रहृम (गर्भ) में है, मैं उसको ‘तेरे’ लिए नज़र (भेंट) देती
हूँ, उसे दुनिया के कामों से आज़ाद रखूँगी, ‘तू’ उसे मेरी ओर से कुबूल कर,
‘तू’ तो खूब सुनने, जानने वाला है;’’
36 फिर जब उनके यहाँ (बच्ची) पैदा हुई तो बोलीं, ‘‘ऐ मेरे रब! मेरे तो लड़की
पैदा हुई है।’’ और अल्लाह तो खूब जानता था कि उसके क्या पैदा हुई है?
और लड़का (उस) लड़की जैसा नहीं हो सकता ‘‘और मैने उस लड़की का
नाम मरयम रखा है, और मैं उसे और उसकी औलाद को शैतान मर्दूद से
(सुरक्षित रखने के लिए) तेरी हिफ़ाज़त में देती हूँ।’’
37 फिर उनके रब ने उनको पसंदीदगी के साथ कुबूल किया, और उन्हें अच्छी
तरह परवरिश किया, और उनका सरपरस्त (संरक्षक) ज़करिया को बना दिया,
जब कभी ज़करिया उनके पास मेहराब (इबादतगाह) में जाते, तो उनके पास
कुछ खाने (पीने) की चीज़ पाते, (एक बार) बोले मरयम यह (चीज़ें) कहाँ से
तुझे मिल जाती हैं, वह बोलीं यह अल्लाह की ओर से आ जाती हैं, बेशक
अल्लाह जिसको चाहता है बेहिसाब रिज़्क़ देता है।
38 वहीं ज़करिया अपने रब से दुआ़ करने लगे, (और) कहा, ‘‘ऐ मेरे रब! मुझे
अपने पास से कोई नेक औलाद अ़ता कर, बेशक ‘तू’ दुआ़ का सुनने वाला
है,’’
39 तो फ़रिश्तों ने उन्हें आवाज़ दी, जबकि वह मेहराब में खड़े हुए नमाज़ पढ़
रहे थे, कि अल्लाह आप को यहृया की खुशख़बरी देता है, जो अल्लाह के
कलिमे (ईसा) की तस्दीक़ (पुष्टि) करेंगे; और सरदार होंगे; और बड़े मुत्तक़ी
(संयमी), और अच्छे लोगों में से एक नबी होंगे;’’
40 (ज़करिया) बोले, ‘‘ मेरे रब! मेरे बेटा किस तरहृ होगा जबकि मुझे बुढ़ापा आ
गया है, और मेरी बीवी बाँझ है? फ़रमाया, इसी तरहृ अल्लाह जो चाहता है
करता है!
41 (ज़करिया) बोले, ‘‘मेरे रब! मेरे लिए कोई निशानी दे दीजिए, फ़रमाया, आप
के लिए निशानी यह है कि आप लोगों से तीन दिन तक इशारों के सिवा कोई
बात चीत न कर सकेगें, तो (उन दिनों में) अपने रब की ज़्यादा से ज़्यादा
याद और सुबहृ व शाम उसकी तस्बीहृ (महिमा) करते रहिएगा।’’
42 और जब फ़रिश्तों ने कहा, ‘‘ऐ मरयम! अल्लाह ने तुम को चुना है और पाक
बनाया है, और पूरी दुनिया की औ़रतों में से चुन लिया है;’’
43 ऐ मरयम! अपने रब की फरमाँबरदारी करती रहिए, और सज्दः करती रहिए,
और रूकूअ़ करने वालों के साथ रूकूअ़ करती रहिए;
44 ये बातें ग़ैब (परोक्ष) की ख़बरों में से हैं जो हम आप के पास वहृय (द्वारा) भेज
रहे हैं। और आप न तो उस समय उनके पास थे, जब वे अपनी क़लमों को
(कुरआ़, गुटिया के तौर पर) फेंक रहे थे, कि उनमें कौन मरयम का संरक्षक
बने, और न उस समय आप उनके पास थे जब कि वे आपस में झगड़ रहे
थे।

45 (याद करो) जब फ़रिश्तों ने कहा, ''ऐ मरयम! अल्लाह आप को खुशख़बरी
दे रहा है, अपनी ओर से एक कलिमा (बात) की जिसका नाम मसीह़,
ईसा बिन मरयम होगा, दुनिया और आख़िरत में इज़्ज़त वालों और मुक़र्रबों
(निकटवर्ती) लोगों में से होंगे।''
46 और वह लोगों से पालने (बचपने) में भी बात करेंगे, और बड़ी उम्र को पहुँच
कर भी, और वह नेक लोगों में से होंगे।
47 वह बोलीं, ''ऐ मेरे रब! मेरे लड़का किस तरह होगा जबकि मुझे किसी आदमी
ने छुआ तक नहीं, कहा, ''ऐसा ही होगा अल्लाह जो चाहता है पैदा करता
है, जब 'वह' किसी बात को पूरा करना चाहता है, तो बस उससे कहता है,
हो जा, तो वह हो जाता है;''
48 और (अल्लाह) उसे किताब और ह़िक्मत, और तौरेत, और इंजील सिखा देगा,
49 और उसे बनी इस्राईल (इस्राईल की संतान) की ओर रसूल बना कर भेजेगा
(वह कहेगा), ''मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से एक निशानी लेकर आया
हूँ, मैं तुम्हारे लिए मिट्टी से परिन्दे की शक्ल बनाता हूँ, फिर उसमें फूँक
मारता हूँ, तो वह अल्लाह के हुक्म से परिन्दा बन जाता है; और मैं अल्लाह
के हुक्म से अन्धा और अब्रस (सफ़ेद दाग वाले) को अच्छा कर देता हूँ, और
मैं अल्लाह के हुक्म से मुर्दों को ज़िन्दा कर देता हूँ, और तुम जो कुछ खाते
हो, और जो कुछ अपने घरों में इकट्ठा कर के रखते हो, वह तुम्हें बतला
देता है; बेशक इसमें तुम्हारे लिए निशानी है, अगर तुम ईमान वाले हो।
50 और मैं तस्दीक़ (पुष्टि) करने वाला हूँ, अपने से आगे (अर्थात पहले) आने
वाली तौरेत की, और इसलिए भी कि तुम्हारे लिए कुछ उन चीज़ों को ह़लाल
कर दूँ, जो तुम्हारे लिए ह़राम थीं, और मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर
से एक निशानी लेकर आया हूँ, तो तुम अल्लाह से डरो और मेरी इताअ़त
(आज्ञा पालन) करो;
51 बेशक अल्लाह मेरा भी रब है, और तुम्हारा भी रब है, तो 'उसी' की इबादत
करो, यही सीधी राह है।''
52 फिर जब ईसा को उनकी ओर से इन्कार का एह़सास हुआ तो उन्होंने कहा,
''कौन अल्लाह की ओर (बढ़ने में) मेरा मददगार होगा,'' हवारी बोले, ''हम
हैं अल्लाह के मददगार, हम अल्लाह पर ईमान लाए और गवाह रहिए कि हम
मुस्लिम (आज्ञाकारी) हैं,
53 (ऐ) हमारे रब! हम ईमान ले आए उस पर जो कुछ 'तू' ने नाज़िल किया है,
और हमने पैरवी (अनुसरण) कर ली रसूल की, तो हमें भी गवाहों के साथ
लिख ले।
54 और उन्होंने खुफ़िया तद्बीर (गुप्त योजना) की, तो अल्लाह ने भी खुफ़िया
तद्बीर (गुप्त योजना) की; और अल्लाह सब खुफ़िया तद्बीर करने वालों से
बेहतर (तद्बीर करने वाला) है।
55 (वह वक्त याद करो) जब अल्लाह ने फ़रमाया, ''ऐ ईसा! मैं तुम को वफ़ात
देने वाला हूँ, और तुम को अपनी ओर उठा लेने वाला हूँ, और उन लोगों से

जो काफ़िर हैं, तुम्हें पाक करने वाला हूँ, और जो तुम्हारे पैरू (अनुयाई) हैं उन्हें क़ियामत के दिन तक उन लोगों के ऊपर रखूँगा जिन्होंने इन्कार किया; फिर मेरी ओर तुम्हें लौटना है, फिर मैं तुम्हारे बीच उन चीज़ों का फ़ैसला कर दूँगा जिनके विषय में तुम विभेद करते रहते थे।''
56 तो जिन लोगों ने इन्कार किया, उन्हें दुनिया और आख़िरत में सख़्त अ़ज़ाब दूँगा, और उनका कोई मददगार न होगा।
57 और जो लोग ईमान लाए, और उन्होंने नेक काम किये, तो अल्लाह उन्हें पूरा-पूरा बदला देगा, और अल्लाह ज़ालिमों को पसंद नहीं करता।
58 (ऐ मुह़म्मद) यह आयतें, हम आप को ह़िकमत भरी नसीहतें पढ़-पढ़ कर सुनाते हैं।
59 ईसा का ह़ाल अल्लाह के नज़दीक आदम जैसा है, कि उसने उनको मिट्टी से बनाया, फिर उनसे कहा (इन्सान), ''हो जाओ,'' तो वह (इन्सान) हो गये;
60 यह ह़क़ तुम्हारे रब की ओर से है, सो तुम सन्देह करने वालों में से न होना।
61 फिर जो कोई आप से इस(ईसा के) बारे में हुज्जत करे, इस के बाद कि 'आप' के पास (हक़ीक़त का) इल्म आ चुका है, तो कह दीजिए, अच्छा हम अपने बेटों को भी बुला लाएँ और तुम्हारे बेटों को भी, और अपनी औ़रतों को भी, और तुम्हारी औरतों को भी और हम भी आएँ और तुम खुद भी आओ, फिर हम सब मिल कर दुआ़ करें, और झूठों पर अल्लाह की लानत भेजें,
62 यही सच्चा बयान है और अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, और बेशक अल्लाह ज़बरदस्त (प्रभुत्वशाली), ह़िकमत वाला है;
63 तो अगर ये लोग मुँह मोड़ें तो अल्लाह फ़सादियों को खूब जानता है।
64 कह दीजिए, ''ऐ अह्ले किताब! ऐसी बात की ओर आ जाओ, जो बात हमारे और तुम्हारे बीच एक समान है वह यह कि हम सिवाय अल्लाह के और किसी की इबादत न करें और न उसका किसी को साझीदार ठहराएँ और न हममें से कोई किसी को अल्लाह के सिवा रब बनाए,'' फिर अगर यह लोग मुँह मोड़ें तो कह दीजिए ''तो गवाह रहो, हम तो मुस्लिम (आज्ञाकारी) हैं।''
65 ''ऐ किताब वालो!, तुम इब्राहीम के विषय में क्यों झगड़ रहे हो, जबकि तौरेत और इन्जील तो उनके बाद उतारी गई हैं, तो क्या तुम अक़्ल से काम नहीं लेते?
66 हाँ, तुम लोग वही तो हो, जो इस विषय में झगड़ चुके हो, जिसका तुम्हें कुछ तो इल्म था; तो अब ऐसी बात में क्यों झगड़ते हो, जिसका तुम्हें इल्म ही नहीं? और अल्लाह जानता है, और तुम नहीं जानते।''
67 इब्राहीम न तो यहूदी थे और न नसरानी (ईसाई), बल्कि वे तो एक ओर के होकर रहने वाले मुस्लिम (आज्ञाकारी) थे, और वह मुश्रिकों में से न थे।
68 इब्राहीम के सब से ज़्यादा क़रीबी लोग तो वे हैं जिन्होंने उनकी पैरवी (अनुसरण) की, और यह नबी हैं और (वे ऐसे लोग हैं) जो (उनपर) ईमान लाए, और अल्लाह ईमान लाने वालों का मददगार है।
69 अह्ले किताब में से एक गिरोह तो यही चाहता है कि तुम्हें गुमराह कर दे

जबकि ये अपने सिवा किसी को भी गुमराह नहीं करते, और उन्हें (इसका
भी) एहसास नहीं।
70 ऐ किताब वालो! तुम अल्लाह की आयतों का इन्कार क्यों करते हो! और (उस
पर) तुम खुद गवाह हो?
71 ऐ किताब वालो! हक़ को बातिल (सत्य को असत्य) के साथ क्यों गड्ड-मड्ड
करते हो, और जानते बूझते हक़ को छिपाते हो?
72 और किताब वालों में से एक गिरोह कहता हैं, ''ईमान वालों पर जो कुछ उतरा
है, उस पर सुबह को ईमान लाओ, और दिन के आख़िर में उससे इन्कार
कर बैठो ताकि वे (इस्लाम से) फिर जाएँ।''
73 और आप अपने दीन के मानने वालों (अनुयाइयों) के अ़लावा किसी पर
यक़ीन न कीजिए, कह दीजिए, "हिदायत (मार्गदर्शन) तो अल्लाह की हिदायत
(मार्गदर्शन) हैं (और न यह मानो) कि दिया जाए किसी को वैसा ही जो तुम
को दिया गया था या यह कि उनको मज़बूत हुज्जत मिल जाए तुम्हारे रब के
पास"। कह दीजिए, फ़ज़्ल अल्लाह ही के हाथ में हैं, 'वह' जिसे जो चाहे अता
करता है, और अल्लाह बड़ी वुसअत (समाई) वाला, सब कुछ जानने वाला
है।
74 'वह' जिसे चाहता है अपनी रह़मत से ख़ास कर लेता है और अल्लाह बड़ा
फ़ज़्ल (उदारता) वाला है।''
75 और किताब वालों में कुछ तो ऐसे हैं, कि अगर तुम उनके पास एक ढ़ेर
अमानत रख दो, तो वह तुम्हें उसे लौटा देंगे, और उनमें कुछ ऐसे हैं कि
अगर तुम एक दीनार भी उनकी अमानत में रखो, तो जब तक कि हर समय
तुम उनके सिर पर सवार न रहो, वह उसे तुम्हें अदा नहीं करेंगे, यह इसलिए
कि वे कहते हैं, '' उन उम्मियों के बारे में (जो किताब वाले नहीं हैं,) हमारी
कोई पकड़ नहीं,'' और ये जानते बूझते अल्लाह पर झूठ गढ़ते हैं,''
76 जो व्यक्ति भी अपने अ़हद (प्रतिज्ञा) को पूरा करे और (अल्लाह से) डरे, तो
अल्लाह डरने वालों को दोस्त रखता है।
77 जो लोग अल्लाह के अ़हद और अपनी क़समों को थोड़ी सी क़ीमत पर बेच
डालते हैं, यह वही लोग हैं जिनके लिए आख़िरत में कोई हि़स्सा नहीं; और
अल्लाह क़ियामत के दिन न उन से बात करेगा, और न उनकी ओर देखेगा
और न उन्हें पाक करेगा, और उनके लिए तो दर्दनाक अ़ज़ाब है;
78 और उन्हीं में कुछ लोग ऐसे भी हैं जो किताब (तौरेत) पढ़ते हुए अपनी ज़बानों
को इस तरह उलट फेर करते हैं, ताकि तुम समझो कि वह किताब ही में से
है, जबकि वह किताब में से नहीं होता, और वे कहते हैं, '' यह अल्लाह की
ओर से है, जबकि वह अल्लाह की ओर से नहीं होता, और वे जानते बूझते
झूठ गढ़कर अल्लाह पर थोपते हैं।''
79 किसी आदमी से यह नहीं हो सकता कि अल्लाह तो उसे किताब और हि़कमत
और नबूव्वत अ़ता करे और वह लोगों से यह कहने लगे, ''तुम अल्लाह को

छोड़कर मेरे बन्दे बन जाओ,'' बल्कि वह तो यही कहेगा, ''तुम रब वाले बन
जाओ, इसलिए कि तुम किताब पढ़ाते हो, और ख़ुद भी उसे पढ़ते हो,''
80 और न वह तुम्हें इस बात का हुक्म देगा कि तुम फ़रिश्तों और नबियों को
अपना रब बना लो, क्या वह तुम्हें कुफ्र (अधर्म) का हुक्म देगा, जबकि तुम
इस्लाम ला चुके हो?
81 और (याद करो) जब अल्लाह ने नबियों से अ़हद (वचन) लिया, ''जब मैं
तुमको किताब और हिकमत अ़ता करूँ उसके बाद तुम्हारे पास कोई रसूल उस
की तस्दीक़ करता हुआ आए, जो तुम्हारे पास मौजूद है, तो तुम ज़रूर उस
पर ईमान लाओगे और ज़रूर उसकी मदद करोगे,'' (फिर) फ़रमाया, ''क्या
तुमने इक़रार किया? और इस पर मेरी ओर से डाली हुई जिम्मेंदारी का बोझ
उठाया?'' उन्होंने कहा, ''हमने इक़रार किया,'' फ़रमाया, ''तो गवाह रहना,
और मैं भी तुम्हारे साथ गवाह हूँ;''
82 फिर जो कोई इसके बाद भी फिरेगा तो ऐसे ही लोग नाफ़रमान होंगे।''
83 क्या यह लोग अल्लाह के दीन के सिवा (किसी और तरीके को) तलाश रहे
हैं, हाँलाकि आसमान व ज़मीन में जो कुछ भी है, इच्छा से हो या मजबूरी से
'उसी' के फ़रमाँबरदार हैं, और 'उसी' की ओर सबको लौटना है।
84 कह दीजिए, ''हम अल्लाह पर ईमान रखते हैं, और उस पर जो हमारे ऊपर
उतारा गया है; और उस पर जो इब्राहीम (अलै0), और इस्माईल (अलै0),
और इस्हाक़ (अलै0) और याक़ूब (अलै0), और (उनकी) औलाद पर उतारा
गया है; और उस पर जो मूसा(अलै0), और ईसा (अलै0), और (दूसरे) नबियों
को दिया गया; उनके रब की ओर से; हम उनमें से किसी में कुछ फर्क़ नहीं
करते, और हम तो उसी (अल्लाह) के फ़रमाँबरदार (अनुयाई) हैं।''
85 और जो व्यक्ति इस्लाम के सिवा किसी और दीन को तलाश करेगा, तो वह
उससे हरगिज़ क़ुबूल नहीं किया जाएगा, और वह व्यक्ति आख़िरत में बड़ा
घाटा उठाने वालों में से होगा।
86 अल्लाह कैसे ऐसे लोगों को हिदायत देगा, जिन्होंने ईमान के बाद कुफ्र किया,
और (जबकि) शहादत दे चुके थे कि रसूल हक़ पर हैं, और (इसके बाद)
उनके पास खुली हुई निशानियाँ भी आ चुकी थीं, और अल्लाह (ऐसे) ज़ालिम
क़ौम को हिदायत नहीं देता;
87 उन लोगों की सज़ा यह है, कि उन पर अल्लाह की, और फ़रिश्तों की, और
तमाम इन्सानों की लानत हो;
88 वह इसमें हमेशा पड़े रहने वाले हैं, न उन पर से अ़ज़ाब हल्का किया जाएगा,
और न उन्हें मुहलत दी जाएगी;
89 हाँ, जो लोग उसके बाद तौबः कर लें, और (अपने को) ठीक कर लें, तो
अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, रहम वाला है।
90 बेशक जिन्होंने ईमान लाने के बाद कुफ़्र (इन्कार) किया, फिर कुफ़्र में बढ़ते
रहे, उनकी तौबः हरगिज़ क़ुबूल न की जाएगी, और यही लोग गुमराह हैं।
91 जिन लोगों ने कुफ़्र किया और उसी कुफ़्र की हालत में मर गये तो उनमें से

किसी से ज़मीन भरकर भी सोना (जान छुड़ाने के लिए) बदले में कुबूल नहीं किया जाएगा, यही लोग हैं जिनके लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है, और जिनका कोई भी मददगार न होगा।

92 तुम नेकी के दर्जे को नहीं पहुँच सकते, जब तक कि उन चीज़ों को (अल्लाह के रास्ते में) खर्च न करो, जो तुम्हें महबूब हैं, और जो चीज़ भी तुम खर्च करते हो, अल्लाह उसको खूब जानता है।

93 खाने की तमाम चीज़ें बनी इस्राईल के लिए ह़लाल थीं, सिवाय उन चीज़ों के जिन्हें तौरात के उतरने से पहले इस्राईल ने खुद अपने लिए ह़राम कर लिया था, कह दीजिए, "तो तौरात लाओ फिर उसे पढ़ो अगर तुम सच्चे हो।"

94 तो जो व्यक्ति इसके बाद भी झूठी बात अल्लाह से जोड़े, तो ऐसे ही लोग ज़ालिम हैं।

95 कह दीजिए, "अल्लाह ने सच बात फ़रमा दी है, तो तुम सीधी राह वाले इब्राहीम के दीन की पैरवी (अनुसरण)करो, और वह मुश्रिकों में से न थे।"

96 पहला घर (कअ़बः) जो लोगों (की इबादत) के लिए बनाया गया था वही है जो मक्का में है, बरकत वाला और सारी दुनिया के लिए हिदायत (रहनुमा) है;

97 इसमें खुली हुई निशानियां हैं, मक़ामे इब्राहीम (इब्राहीम के खड़े होने की जगह), और जो व्यक्ति इसमें दाख़िल हुआ, वह अम्न में हो गया, और लोगों पर अल्लाह का ह़क़ (फ़र्ज़) है कि जो इस घर तक जाने की कुद्रत रखे, वह इसका ह़ज करे, और जो कोई इन्कार करे, तो अल्लाह सारे संसार वालों से बेनियाज़ (निस्पृह) है।

98 कह दीजिए, "ऐ अह्ले किताब! तुम क्यों अल्लाह की आयतों का इन्कार करते हो? और जो कुछ तुम कर रहे हो अल्लाह गवाह है।"

99 कह दीजिए, "ऐ अह्ले किताब! जो ईमान ला चुके, उन्हें तुम क्यों अल्लाह की राह से हटा रहे हो? इस राह में ऐब निकाल कर, ऐसी ह़ालत में कि तुम खुद गवाह हो, और अल्लाह तुम्हारे करतूतों से बेख़बर नहीं!"

100 ऐ ईमान वालो ! अगर तुम ने इन में से किसी गिरोह का कहना माना जिन्हें किताब दी जा चुकी है, तो वह तुम्हारे ईमान लाने के बाद तुम्हें काफ़िर बना देंगे।

101 और तुम किस तरह कुफ्र कर सकते हो ऐसी ह़ालत में कि तुम्हें अल्लाह की आयतें पढ़ कर सुनायी जाती हैं, और तुम्हारे बीच उसके रसूल मौजूद हैं और जो कोई अल्लाह को मज़बूत पकड़ता है, वह ज़रूर सीधी राह की ओर हिदायत किया जाता है।

102 ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो, जैसा कि उससे डरने का ह़क़ है, और न मरना सिवाय इस ह़ाल में कि तुम मुस्लिम हो।

103 और अल्लाह की रस्सी (कुर्आन) को सब मिलकर मज़बूत थामे रहो, और आपसी विभेद में न पड़ो, और अल्लाह का यह इन्आ़म अपने ऊपर याद करो, 'कि जब तुम आपस में दुश्मन थे, तो 'उसने' तुम्हारे दिलों में मुह़ब्बत

डाल दी; तो तुम उसकी मेहरबानी से (आपस में) भाई-भाई बन गये; और तुम आग के गढ़े के किनारे तक पहुँच चुके थे, तो 'उसने' तुम्हें उससे बचा लिया, इसी तरह अल्लाह अपने हुक्मों को खोल-खोल कर सुनाता रहता है, ताकि तुम राह पा सको।

104 और तुममें एक ऐसी जमाअ़त (समूह) रहे, जो लोगों को नेकी की ओर बुलाए और भलाई का हुक्म दे, और बुराई से रोके और यही लोग कामियाब होने वाले हैं।

105 और उन लोगों की तरह मत हो जाना जिन्होंने बाद इसके कि उनके पास खुली हुई निशानियाँ आ चुकी थीं, आपस में ही विभेद कर लिया, और अलग-अलग हो गये, और यह वह लोग हैं जिनको बड़ा अ़ज़ाब होगा।

106 उस दिन कुछ चेहरे सफेद होंगे, और कुछ चेहरे स्याह होंगे, फिर जिनके चेहरे स्याह होंगे, (उनसे कहा जाएगा) क्या तुम ही काफ़िर हो गये थे, ईमान लाने के बाद? तो अ़ज़ाब चखो, अपने कुफ़्र के बदले में;

107 और जिनके चेहरे सफेद होंगे, वे अल्लाह की रह़मत में होंगे और उसी में हमेशा रहेंगे।

108 यह अल्लाह की आयतें है, जो हम तुमको ठीक-ठीक पढ़कर सुनाते हैं, और अल्लाह संसार वालों पर किसी तरह का ज़ुल्म नहीं करना चाहता।

109 और अल्लाह ही का है जो कुछ ज़मीन व आसमान में है, और सारे मामले अल्लाह ही की ओर लौटाए जाते हैं।

110 तुम बेहतरीन उम्मत (समुदाय) हो जो लोगों के लिए पैदा की गयी हो कि तुम भलाई का हुक्म देते हो और बुराई से रोकते हो, और अल्लाह पर ईमान रखते हो; और अह्‌ले किताब भी, अगर ईमान ले आते, तो उनके लिए बहुत अच्छा होता, उनमें से कुछ तो ईमान वाले हैं, और अक्सर उनमें से नाफ़रमान (अवज्ञाकारी) हैं;

111 वह आप को थोड़ी तक्लीफ़ के अ़लावा कोई नुक़सान न पहुँचा सकेंगे, और अगर वह आपसे मुक़ाबला करेंगे तो पीठ दिखा कर भाग जाएँगे, फिर उन्हें कोई मदद भी न मिलेगी।

112 उन पर थोप दी गई है ज़िल्लत (अपमान) जहाँ भी वे पाये जाएँ, सिवाय इसके कि वे अल्लाह और (मुसलमान) लोगों की पनाह में आ जाएँ। और अल्लाह के ग़ज़ब के ह़क़दार हो गये हैं, और उन पर मस्किनत (भुखमरी या नादारी) थोप दी गयी है, यह सब इस वजह से हुआ है, कि वह अल्लाह की आयतों का इन्कार करते थे, और नबियों को नाहक़ क़त्ल कर डालते थे, और यह इसलिए कि वह नाफ़रमानी करते, और सीमा से बाहर निकल जाते थे;

113 यह भी सब एक जैसे नहीं हैं, किताब वालों में कुछ ऐसे लोग भी हैं जो सीधी राह पर हैं और रात के वक़्त अल्लाह की आयतें पढ़ते हैं और सज्दे करते हैं;

114 यह अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते और भलाई का हुक्म देते

हैं और बुराई से रोकते और अच्छी बातों की ओर दौड़ते हैं, और यही भले लोगों में से है;

115 और जो भी नेक काम यह करेंगे, उससे हरगिज़ मह़रूम न किये जाएँगे, और अल्लाह परहेज़गारों को ख़ूब जानता है।

116 रहे वे लोग जिन्होंने इन्कार किया,तो अल्लाह के मुक़ाबले में न उनके माल उनके कुछ काम आ सकेंगे, और न उनकी औलाद ही, और ये तो आग में जाने वाले लोग हैं उसी में वे हमेशा रहेंगे;

117 यह जो कुछ इस दुनियावी ज़िन्दगी में खर्च करते हैं उसकी मिसाल तो ऐसी है, जैसे एक हवा है, जिसमें सख़्त सर्दी हो, (और) वह ऐसे लोगों की खेती को लग जाए जिन्होंने अपनी जानों पर ज़ुल्म कर रखा है, फिर वह (हवा) उस (खेती) को बरबाद कर दे, और अल्लाह ने उस पर ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि वे ख़ुद अपनी जानों पर ज़ुल्म कर रहे हैं।

118 ऐ ईमान वालो! अपनों के सिवा (किसी को) राज़दार (दोस्त) न बनाना! ये लोग तुम्हें नुक़्सान पहुँचाने में कोई कमी नहीं करते; और चाहते हैं कि तुम्हें तक्लीफ़ पहुँचे, उनकी ज़बानों से तो दुश्मनी ज़ाहिर हो ही चुकी, और जो कुछ वे अपने सीनों में छिपाए हुए हैं वह तो इससे भी बढ़कर है, हम तो तुम्हारे लिए निशानियाँ खोलकर ज़ाहिर कर चुके हैं, अगर तुम अक़्ल (से काम लेने) वाले हो;

119 देखो, तुम ऐसे लोग हो, कि उन लोगों से मुहब्बत रखते हो; हालाँकि वे तुमसे ज़रा भी मुह़ब्बत नहीं रखते, और तुम (आसमानी) किताबों पर ईमान रखते हो, और जब तुमसे मिलते हैं तो कह देते हैं, ‘‘हम ईमान ले आए,’’ और जब वे अलग होते हैं, तो तुमपर ग़ुस्से में दाँतों से उँगलियाँ काट-काट खाते हैं, कह दीजिए, ‘‘तुम अपने ग़ुस्से में मर जाओ, बेशक अल्लाह सीने की बातों को ख़ूब जानता है,’’

120 अगर तुम्हें कोई अच्छी ह़ालत पेश आ जाती है, तो ये उन लोगों को बुरी लगती है; और अगर तुम पर कोई बुरी हालत आ पड़ती है, तो ये उससे ख़ुश होते हैं; और अगर तुम सब्र से काम लेते रहो, तो तुमको इनकी चालें ज़रा भी नुक्सान न पहुँचा सकेंगी। बेशक जो कुछ वे कर रहे हैं, अल्लाह ने उसे अपने घेरे में ले रखा है।

121 और (याद कीजिए) जब आप सुब्ह़ को अपने घर वालों (के पास) से निकलकर, ईमान वालों को युद्ध के लिए मोर्चे पर लगा रहे थे- और अल्लाह बड़ा सुनने वाला, जानने वाला है।

122 जब तुम्हारे दो गिरोहों ने हिम्मत छोड़ देनी चाही, जबकि अल्लाह उनका वली (संरक्षक) मौजूद था, और ईमान वालों को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए।

123 और बद्र में अल्लाह ने तुम्हारी मदद की थी, और उस वक़्त तुम बहुत कमज़ोर हालत में थे, तो अल्लाह से डरते रहो, ताकि तुम शुक्र करो।

124 जब तुम ईमान वालों से कह रहे थे, ‘‘क्या यह तुम्हारे लिए काफ़ी नहीं है, कि तुम्हारा रब तीन हज़ार फ़रिश्ते उतार कर तुम्हारी मदद करे।’’

125 हाँ, क्यों नहीं, अगर तुम सब्र से काम लो और डर रखो, और दुश्मन तुम
पर अचानक चढ़ आएँ, तो तुम्हारा रब तुम्हारी उसी वक्त पाँच हज़ार निशान
किये हुए फ़रिश्तों से मदद करेगा;
126 और अल्लाह ने तो इसे तुम्हारे लिए खुशख़बरी बताया और इसलिए कि
तुम्हारे दिल मुतमइन (सन्तुष्ट) हो जाएं, वरना मदद तो अल्लाह ही के यहां
से आती है, जो ज़बर्दस्त, हिकमत वाला है;
127 ताकि कुफ़्र करने वालों के एक हिस्से को काट डाले, या उन्हें बुरी तरह नाकाम
और बेइज़्ज़त कर दे, कि वे नाकाम हो कर लौट जाएँ।
128 आप को इस मामले में कोई हक़ नहीं, चाहे 'वह' उनकी तौबः कुबूल करे या
उन्हें अ़ज़ाब दे, इसलिए कि यह ज़ालिम लोग हैं;
129 और जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है सब अल्लाह ही का
है, 'वह' जिसे चाहे माफ़ करे और जिसे चाहे अ़ज़ाब दे, और अल्लाह बड़ा
माफ़ करने वाला, रहम वाला है।
130 ऐ ईमान वालो! सूद (ब्याज) कई गुना (दोगुना चौगुना) बढ़ा कर न खाओ,
और अल्लाह से डरते रहो ताकि तुम कामियाब हो जाओ।
131 और उस आग से बचो, जो काफ़िरों के लिए तैयार की गई है।
132 और अल्लाह और उसके रसूल के हुक्म को मानो, ताकि तुम पर रहम (दया)
किया जाए।
133 और अपने रब की माफ़ी और उस जन्नत की ओर दौड़ो, जिसका फैलाव सारे
आसमान और ज़मीन जैसा है, जो डरने वालों के लिए तैयार की गई है,
134 जो खुशहाली और तंगी हर हाल में खर्च करते हैं, और गुस्से को रोकते हैं,
और लोगों को माफ़ करते हैं, और अल्लाह नेक लोगों को पसंद करता है।
135 और यह कि जब वे कोई खुला गुनाह या अपने आप पर ज़ुल्म कर लेते हैं
तो अल्लाह को याद करते हैं और वे अपने गुनाहों की माफ़ी माँगते हैं, और
अल्लाह के अ़लावा कौन है जो गुनाहों को माफ़ कर सके, और जानते बूझते
वे अपने किये पर अड़े नहीं रहते;
136 उनका बदला उनके रब की ओर से मग़्फ़िरत (क्षमादान) है, और ऐसे बाग़
हैं जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, उनमें वे हमेशा रहेंगे, और क्या ही अच्छा
बदला है (अच्छे) अ़मल करने वालों का!
137 तुम लोगों से पहले बहुत से किस्से गुज़र चुके हैं, तो तुम धरती पर चल फिर
कर देखो, कि झुठलाने वालों का कैसा अंजाम हुआ!
138 यह लोगों के लिए (खुला) बयान, और डरने वालों के लिए हिदायत और
नसीहत है।
139 और न हिम्मत हारो और न दुखी हो, तुम ही ग़ालिब (प्रभावी) रहोगे, अगर
तुम ईमान वाले होगे।
140 अगर तुम्हें कोई ज़ख़्म पहुँचा है, तो उन लोगों को भी ऐसा ज़ख़्म पहुँच चुका
है, और यह (युद्ध के) दिन हैं, कि हम लोगों में उलट फेर करते रहते हैं,

ताकि ईमान वालों को जान लें! और तुम में से कुछ को गवाह बनाएँ और अल्लाह ज़ालिमों को पसंद नहीं करता;
141 और ताकि अल्लाह ईमान वालों को निखार दे, और काफ़िरों (इन्कार करने वालों) को मिटा दे।
142 क्या तुम यह समझते हो कि जन्नत में यूं ही जा दाख़िल होगे, हालाँकि अभी अल्लाह ने तुम में से जिहाद करने वालों को तो अच्छी तरह मालूम किया ही, नहीं और (यह कि) वह साबित क़दम रहने वालों को मालूम करे।
143 और तुम मौत (शहादत) के आने से पहले उसकी तमन्ना किया करते थे, उसको तो अब तुमने खुली आँखों से देख लिया।
144 और मुहम्मद तो बस एक रसूल हैं, इनसे पहले भी रसूल गुज़र चुके हैं; तो क्या अगर यह वफ़ात (मृत्यु) पा जाएँ, या क़त्ल कर दिये जाएँ, तो (क्या) तुम उल्टे पाँव वापस फिर जाओगे? और जो उल्टे पाँव फिर जाएगा, तो वह अल्लाह का कुछ भी नुक़्सान नहीं कर सकेगा, और अल्लाह शुक्रगुज़ारों को जल्द बदला देगा।
145 और मुम्किन (सम्भव) नहीं किसी जानदार के लिए कि वह एक निश्चित समय पर अल्लाह के हुक्म के बिना मर जाए; और जो व्यक्ति दुनिया का फ़ायदा चाहता हो 'हम' उसको यहीं बदला दे देंगे, और जो आख़िरत का फ़ायदा चाहता हो तो उसे वहाँ हिस्सा देंगे, और 'हम' शुक्र करने वालों को बहुत जल्द बदला देंगे।
146 और कितने ही नबी ऐसे गुज़रे हैं, जिनके साथ मिलकर बहुत से अल्लाह वाले लड़े हैं, तो जो कुछ उन्हें अल्लाह की राह में पेश आया, उससे न तो उन्होंने हिम्मत हारी, और न वह कमज़ोर पड़े, और न वह दबे; और अल्लाह सब्र करने वालों से मुहब्बत करता है।
147 और उनका कहना तो बस इतना ही था, "ऐ हमारे रब! हमारे गुनाहों को, और हमारे अपने मामले में जो ज़्यादती हमसे हुई हो, उसे माफ़ कर दे और हमारे क़दम जमाए रख, और काफ़िरों (इन्कारियों) के मुक़ाबले में हमारी मदद कर,"
148 तो अल्लाह ने उन्हें दुनिया में भी बदला दिया, और आख़िरत में भी अच्छा बदला, और अल्लाह भलाई करने वालों से मुहब्बत रखता है।
149 ऐ ईमान वालो! अगर तुम उन लोगों का कहना मानोगे जो काफ़िर (इन्कार वाले) हैं, तो वे तुम्हें उल्टे पाँव वापस कर देंगे, और तुम घाटे में पड़ जाओगे;
150 बल्कि तुम्हारा दोस्त तो अल्लाह ही है और वही सबसे अच्छा मददगार है।
151 हम बहुत जल्द काफ़िरों (इन्कारियों) के दिलों में रोअ़ब (धाक) डाल देंगे, इसलिए कि उन्होंने अल्लाह का शरीक ऐसी चीज़ को ठहराया, जिसके लिए 'उसने' कोई दलील (प्रमाण) नहीं उतारी; और उनका ठिकाना जहन्नम है, और वह कैसी बुरी जगह है ज़ालिमों के लिए।
152 और अल्लाह ने तो तुम्हें अपना वादा सच्चा कर दिखाया, उस समय जबकि तुम 'उसकी' इजाज़त से उन्हें क़त्ल कर रहे थे, यहाँ तक कि जब तुम

हिम्मत हार गये और आपस में झगड़ने लगे, हक़ (रसूल) के मामले में, और नाफ़रमानी की, बाद उसके कि अल्लाह ने तुम्हें दिखा दिया था जो तुम चाहते थे; तुममें कुछ लोग वह थे, जो दुनिया चाहते थे; और तुम में कुछ ऐसे थे जो आख़िरत चाहते थे; फिर अल्लाह ने तुम्हें उनके मुकाबले से हटा दिया, ताकि वह तुम्हारी आज़्माइश करे; और अल्लाह ने तुम्हें माफ़ कर दिया, और अल्लाह ईमान वालों पर बड़ा फ़ज़्ल करने वाला है।

153 जब तुम लोग दूर भागे जा रहे थे और मुड़कर भी किसी को न देखते थे, और रसूल तुम को पुकार रहे थे तुम्हारे पीछे से, तो (अल्लाह ने) तुम्हें ग़म पर ग़म पहुँचाया, ताकि तुम रंजीदा न हो उस चीज़ पर जो तुम्हारे हाथ से निकल जाए, और न उस मुसीबत से जो तुम पर पड़े, और जो कुछ भी तुम करते हो अल्लाह उसको खूब जानता है।

154 फिर 'उसने' उस ग़म के बाद तुम्हारे ऊपर राहत उतारी (अर्थात) नींद की जिसका तुम में से एक जमाअ़त पर क़ाबू हो रहा था, और एक जमाअ़त वह थी, कि उसे अपनी जानों की पड़ी हुई थी, यह अल्लाह के बारे में हक़ के ख़िलाफ़ जाहिलियत के ख़याल में पड़ रहे थे, कहते थे; "इन मामलों में क्या हमारा भी कुछ अख़्तियार (अधिकार) है?" कह दीजिए, "बेशक मामले तो सब के सब अल्लाह के (हाथ में) हैं," ये लोग जो कुछ अपने दिलों में छिपाये रखते हैं, जो आप पर ज़ाहिर नहीं करते, कहते हैं, "अगर इस मामले में हमारा भी कुछ अख़्तियार होता तो हम यहाँ मारे ही न जाते।" कह दीजिए, "अगर तुम अपने घरों में भी होते तो भी जिन लोगों का क़त्ल होना तय था, वह अपनी क़त्लगाहों की ओर निकल ही आते," और यह इसलिए भी था, कि जो कुछ तुम्हारे सीनों में है अल्लाह उसे परख ले, और जो कुछ तुम्हारे दिलों में है उसे साफ़ कर दे, और अल्लाह दिलों का ह़ाल खूब जानता है।

155 तुममें से जो लोग उस दिन फिर गये थे, जिस दिन कि दोनों गिरोह आपस में आमने-सामने थे (तो यह तो बस इस वजह से हुआ) कि शैतान ने उन्हें उनके कुछ करतूतों की वजह से फ़िसला (विचलित कर) दिया था, और अल्लाह तो उन्हें माफ़ कर चुका है, बेशक अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, बर्दाश्त करने वाला (सहनशील) है।

156 ऐ ईमान वालो! उन लोगों की तरह न हो जाना, जिन्होंने इन्कार किया और अपने भाइयों के बारे में कहते हैं जबकि वह ज़मीन पर सफ़र करते हैं या कहीं जंग करने जाते हैं (तो कहते हैं) "अगर वे हमारे पास रहते तो न मरते, और न मारे जाते," इसकी वजह यह थी कि अल्लाह तआ़ला उनके दिलों में अफ़सोस पैदा कर दे, और अल्लाह ही जिलाता और मारता है, और जो कुछ तुम कर रहे हो अल्लाह उसे खूब देख रहा है।

157 और अगर तुम अल्लाह की राह में क़त्ल किये जाओ या मर जाओ तो अल्लाह की मग़्फ़िरत (क्षमा) और उसकी रह़मत, उस से कहीं बेहतर है, जिसे यह लोग जमा कर रहे हैं;

158 और अगर तुम मर जाओ या मारे जाओ तो हर हाल में तुम अल्लाह ही के पास इकट्ठा किये जाओगे।

159 फिर यह अल्लाह की रह़मत से है कि आप उनके साथ नर्म हो रहे हैं, और
अगर आप तेज़ मिज़ाज (क्रूर स्वभाव) सख़्त दिल होते, तो यह आपके पास
से हट गये होते, तो आप उनको माफ़ कर दीजिए और उनके लिए इस्तिग़फ़ार
करिए और अपने मामलों में सलाह लिया कीजिए, फिर जब आप पक्का इरादा
कर लें, तो अल्लाह पर भरोसा रखिए, बेशक अल्लाह पसंद करता है (उस
पर) भरोसा रखने वालों को।
160 अगर अल्लाह तुम्हारी मदद करे तो कोई तुम पर ग़ालिब (प्रभावी) नहीं हो
सकता, और अगर 'वह' तम्हें छोड़ दे, तो फिर कौन है जो उसके बाद तुम्हारी
मदद करे? और ईमान वालों को तो अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए।
161 और किसी नबी की यह शान नहीं कि वह दिल में कीना-कपट रखे, और
जो कोई कीना कपट रखेगा, तो वह क़ियामत के दिन अपने कीना-कपट के
साथ हाज़िर होगा, फिर हर व्यक्ति को उसके किये हुए का पूरा -पूरा बदला
मिलेगा, और उन पर बिल्कुल ज़ुल्म न होगा।
162 क्या जो व्यक्ति अल्लाह की इच्छा पर चले, वह उस व्यक्ति जैसा हो सकता है
जो अल्लाह के ग़ज़ब (प्रकोप) का भागीदार हो चुका हो, और उसका ठिकाना
जहन्नम है? और वह क्या ही बुरा ठिकाना है?
163 अल्लाह के यहाँ उन लोगों के (अलग- अलग) दर्जे हैं, और जो कुछ वे कर
रहे हैं अल्लाह खूब जानता है।
164 (बेशक) अल्लाह ने ईमान वालों पर बड़ा एहसान किया, जबकि उन्हीं में से
एक रसूल उनमें भेजा, जो उनको 'उसकी' आयतें पढ़कर सुनाता, और उन्हें
पाक करता है, और उन्हें किताब और ह़िक्मत की तालीम देता है; और पहले
तो यह लोग खुली हुई गुमराही में थे।
165 क्या जब तुम्हें ऐसी मुसीबत उठानी पड़ी हाँलाकि इससे दोगुनी मुसीबत तुम
(अपने विरोधी पर) डाल चुके थे, तो तुम कहने लगे, "यह आफ़त कहाँ से
आ गई?" कह दीजिए, "यह तो तुम्हारी अपनी ओर से है," बेशक अल्लाह
को तो हर चीज़ पर क़ुद्रत (सामर्थ्य) है।
166 और जो मुसीबत तुम पर उस रोज़ पड़ी,जबकि दोनों गिरोह आपस में
आमने-सामने थे, तो वह अल्लाह के हुक्म से था, ताकि 'वह' जान लें कि
ईमान वाले कौन हैं?
167 और उनको भी जान ले जिन्होंने मुनाफ़िक़त (कप्टाचारी) अख्तियार की, जिनसे
कहा गया, "आओ अल्लाह की राह में लड़ो या दुश्मनों को हटाओ" उन्होंने
कहा, "अगर हम जानते कि लड़ाई होगी, तो हम ज़रूर तुम्हारे साथ हो लेते।"
यह लोग उस रोज़ ईमान से ज़्यादा कुफ्र के क़रीब थे, यह अपने मुँह से ऐसी
बात कहते हैं, जो उनके दिलों में नहीं, और जो कुछ ये छिपाते हैं अल्लाह
उसे खूब जानता है;
168 ये खुद तो बैठे रहे, और अपने भाइयों के विषय में कहने लगे, "अगर वह
हमारी बात मान लेते, तो मारे न जाते," कह दीजिए, "अगर तुम सच्चे हो
तो अपने आप को मौत से बचा लेना।"

169 और जो लोग अल्लाह की राह में मारे गये उन्हें मुर्दा न समझो, बल्कि वे
अपने रब के पास ज़िन्दा हैं, और रिज़्क़ पाते रहते हैं;
170 उन नेअमतों से खुश हैं, जो अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से अता की हैं,
और जो लोग उनके बाद वालों से अभी नहीं मिल सके हैं उनकी इस हालत
से खुश हैं कि उनको न कुछ डर होगा और न वे दुखी होंगे।
171 वे (लोग) खुश हो रहे हैं अल्लाह के इन्आ़म और मेहरबानी पर, और इस
पर कि अल्लाह ईमान वालों का बदला बर्बाद नहीं करता।
172 जिन्होंने अल्लाह और रसूल के कहने को मान लिया, बाद इसके कि उन्हें
ज़ख्म लग चुका था, जो लोग इनमें से नेक और परहेज़गार हैं, उनके लिए
भारी बदला है
173 (ये 'वही' लोग हैं) जिनसे लोगों ने कहा, ''तुम्हारे ख़िलाफ़ लोग इकट्ठा हो
गये हैं, तो तुम उनसे डरो।'' तो (इस बात ने) उनके ईमान का जोश और
बढ़ गया, और यह बोले, ''हमारे लिए तो बस अल्लाह काफ़ी है और वही
बेहतरीन कारसाज़ (कार्य करने वाला) है,''
174 फिर वे अल्लाह के इन्आ़म व मेहरबानी (कृपा) के साथ वापस आए, कि उन्हें
कोई तकलीफ़ नहीं हुई, और वे लोग अल्लाह की इच्छा पर चले, और अल्लाह
बड़े फ़ज़्ल वाला (उद्धार कृपालु) है।
175 फिर यह तो शैतान ही है जो तुम्हें अपने दोस्तों के ज़रिये डराता है, सो तुम
उनसे न डरो, बल्कि मुझ ही से डरो; अगर ईमान वाले हो।
176 और आप दुखी न हों (उनकी वजह से कि) जो लोग कुफ्र में जल्दी करते हैं,
ये लोग अल्लाह को कुछ भी नुक़्सान नहीं पहुँचा सकते, अल्लाह चाहता है कि
उनके लिए आख़िरत में कोई हिस्सा न रखे, और उनके लिए तो बड़ा अ़ज़ाब
है
177 जिन लोगों ने ईमान की क़ीमत पर कुफ़्र को खरीद लिया, वे अल्लाह को कुछ
भी नुक़्सान नहीं पहुँचा सकते, और उन्हीं को दर्दनाक अ़ज़ाब होगा।
178 और जो लोग इन्कार कर रहे हैं, यह न ख़याल करें कि 'हम' जो उन्हें
मुहलत दे रहे हैं, तो यह उनके हक़ में बेहतर है, 'हम' तो उन्हें बस इसलिए
मुहलत दे रहे हैं, कि वह बुराई में और बढ़ जाएँ, और उन्हीं के लिए रूस्वा
करने वाला (अपमान जनक) अ़ज़ाब है।
179 (लोगो) जब तक अल्लाह नापाक को पाक से अलग न कर देगा; मोमिनों को
इस हाल में, जिसमें तुम हो हरगिज़ नहीं रहने देगा, और अल्लाह तुम को
ग़ैब (परोक्ष) की बातों की भी ख़बर नहीं करेगा; हाँ, अल्लाह अपने रसूलों में
से जिसे चाहता है चुन लेता है; तो तुम अल्लाह पर और उसके रसूलों पर
ईमान लाओ, और अगर ईमान लाओगे और परहेज़गारी करोगे, तो तुम को
बड़ा बदला मिलेगा।
180 और जो लोग उस माल में कंजूसी करते हैं, जिसे अल्लाह ने उन्हें अपने
फ़ज़्ल (कृपा) से दे रखा है; वह हरगिज़ यह न समझें कि यह उनके लिए
अच्छा है, बल्कि यह उनके लिए बुरा है जल्दी उनको क़ियामत के दिन तौंक

(हँस्ली) पहनाया जाएगा उस माल का, जिसमें उन्होंने कंजूसी की, और अल्लाह
ही वारिस है आसमानों और ज़मीन का और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह
उसकी खूब ख़बर रखता है।
181 अल्लाह ने उन लोगों की बात सुन ली है, जिन्होंने कहा, ''अल्लाह फक़ीर है,
और हम ग़नी (धनवान) हैं।'' 'हम' लिख रहे हैं उनकी इस बात को, और
नबियों को जो यह नाहक़ क़त्ल करते रहे हैं, और (क़ियामत के दिन) हम
कहेंगे, आग के अ़ज़ाब का मज़ा चखो,''
182 यह उस (करतूत) की वजह से हुआ, जो तुम आगे भेज चुके हो, और अल्लाह
अपने बन्दों पर ज़रा भी ज़ुल्म नहीं करता है।
183 (यह वही लोग हैं) जो लोग कहते हैं, ''अल्लाह ने हमें हुक्म दिया है, कि हम
किसी पर ईमान न लाएँगे; जब तक कि वह हमारे सामने ऐसी कुर्बानी न पेश
करें जिसे आग खा जाए।'' कह दीजिए, ''तुम्हारे पास पहले कितने ही रसूल
खुली निशानियाँ लेकर आ चुके हैं, और वे (रसूल) वह (मोजज़ा) भी लाए थे
जिसके लिए तुम कह रहे हो, फिर अगर तुम सच्चे हो तो तुमने उन्हें क़त्ल
क्यों किया?''
184 फिर अगर यह लोग तुम को झुठलाते ही रहें, तो तुम से पहले भी कितने ही
रसूल झुठलाए जा चुके हैं, जो खुली निशानियां, ज़बूर और रोशन (प्रकाशमान)
किताब लेकर आए थे।
185 हर जानदार को मौत का मज़ा चखना है, और तुमको तुम्हारी पूरी मज़दूरी
तो क़ियामत ही के दिन मिलेगी; तो जो व्यक्ति दोज़ख़ से बचा लिया गया,
और जन्नत में दाख़िल कर दिया गया; तो वह कामियाब हुआ; और दुनिया
की ज़िन्दगी तो धोखे के सिवा कुछ नहीं।
186 तुम्हारे माल और जान से तुम्हारी आज़माइश की जाएगी, और तुम बहुत सी
तक्लीफ़दे बातें उनसे सुनोगे जिन्हें तुमसे पहले किताब मिल चुकी है; और
उनसे भी जो मुश्रिक हैं, और अगर तुम सब्र करो और परहेज़गारी (संयम)
अपनाओ तो यह अज़्म (हिम्मत व हौसला) के कामों में से है।
187 और (याद करो) जब अल्लाह ने उन लोगों से, जिनको किताब दी गई वादा
लिया ''किताब को (जो कुछ लिखा है) साफ़-साफ़ बयान करते रहना, और
उसे छिपाना नहीं,'' सो उन्होंने उस वादे को पीठ पीछे डाल दिया, और उसको
एक मामूली क़ीमत के बदले बेच डाला; सो कैसी बुरी चीज़ है जिसे वे खरीद
रहे हैं।
188 आप उन्हें हरगिज़ यह न समझाइएगा, कि जो लोग अपने करतूतों पर खुश
होते हैं, और चाहते हैं, जो काम नहीं किये हैं, उन पर भी उनकी तअ़रीफ़
की जाए; तो ऐसे लोगों के लिए कभी भी ख़याल न करो, कि वह अ़ज़ाब से
बचे रहेंगे, और उनके लिए तो दर्दनाक अ़ज़ाब है।
189 और अल्लाह की हुकूमत है, आसमानों और ज़मीन में, और अल्लाह हर चीज़
पर क़ादिर (सामर्थ्यवान) है।

190 बेशक आसमानों और ज़मीन की पैदाइश में और रात-दिन के अदल-बदल में;
अक़्ल वालों के लिए (बड़ी) निशानियाँ हैं;
191 जो खड़े, बैठे, और अपने पहलुओं पर लेटे (हर हाल में) अल्लाह को याद
करते हैं, और आसमानों, और धरती की पैदाइश पर ग़ौर करते हैं, ऐ हमारे
रब! 'तू' ने यह सब बेकार नहीं पैदा किया है, 'तू' पाक है; सो बचाए रखिए
हमको दोज़ख़ के अज़ाब से।
192 ऐ हमारे रब! 'तूने' जिसे आग (जहन्नम) में डाला उसे रूस्वा किया, और ऐसे
ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं।
193 ऐ हमारे रब! हमने एक पुकारने वाले को ईमान की ओर पुकारते हुए सुना
है, "अपने रब पर ईमान लाओ; तो हम ईमान ले आए; हमारे रब! अब
तू हमारे गुनाहों को माफ़ कर दे, और हमारी बुराइयों को हमसे दूर कर दे,
और हमें नेक लोगों के साथ (अर्थात नेकों के तरीक़े पर) मौत दे।
194 ऐ हमारे रब! जिस चीज़ का वादा 'तूने' अपने रसूलों के ज़रिये किया, वह
हमें अता कर, और क़ियामत के दिन हमें रूस्वा न करना, बेशक 'तू' अपने
वादे के ख़िलाफ़ नहीं करता।
195 तो उनके रब ने उनकी पुकार सुन ली, 'मैं' तुम में से किसी अ़मल करने
वाले के अ़मल को बेकार नहीं करूँगा, चाहे वह मर्द हो या औ़रत, तुम सब
आपस में एक दूसरे (की जिन्स या अंश) में से हो; तो जिन लोगों ने हिज्रत
की और अपने घरों से निकाले गये, और मेरे रास्ते में सताए गये, और लड़े,
और मारे गये; 'मैं' उनसे उनकी बुराइयाँ दूर कर दूगाँ, और उन्हें ऐसे बाग़ों
में दाख़िल करूँगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, यह अल्लाह के पास से
उनका बदला होगा, और सबसे अच्छा बदला अल्लाह ही के पास है।
196 काफ़िरों का शहरों में चलना-फिरना, कहीं तुम्हें धोखे में न डाल दे;
197 यह तो बहुत ही थोड़ा (फ़ायदा) है, फिर तो उनका ठिकाना जहन्नम है, और
वह बहुत ही बुरा ठिकाना है।
198 लेकिन जो लोग अपने रब से डरते रहे, उनके लिए ऐसे बाग़ होंगे, जिनके
नीचे नहरें बह रही होंगी, वे उसमें हमेशा रहेंगे; यह अल्लाह की ओर से
(पहली) मेहमानी होगी, और जो कुछ अल्लाह के पास है, वह नेक लोगों के
लिए बहुत ही बेहतर है।
199 और किताब वालों में से कुछ ऐसे भी हैं, जो अल्लाह पर और तुम पर जो
कुछ उतारा गया है, और जो कुछ उन पर उतारा गया है उस पर ईमान रखते
हैं, अल्लाह से डरने वाले हैं, अल्लाह की आयतों का मामूली क़ीमत पर सौदा
नहीं करते, यही लोग हैं कि उनका बदला उनके रब के पास ज़रूर मिलेगा,
कि अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है।
200 ऐ ईमान वालो! सब्र करो और (मुक़ाबले में) बढ़-चढ़ कर सब्र दिखाओ और
अल्लाह से डरते रहो, ताकि तुम कामियाब हो जाओ।

यह सूरः मदनी है, इसमें अ़रबी के 16667 अक्षर, 3720 शब्द, 176 आयतें, और 24 रूकूअ़ है

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

1 ऐ लोगो! अपने रब से डरो, जिसने तुम को एक जान से पैदा किया और उसी से उसका जोड़ा पैदा किया, और उन दोनों से कसरत से (भारी संख्या में) मर्द और औ़रत फैला दिये; और अल्लाह से जिसका वास्ता देकर तुम एक-दूसरे के सामने अपनी माँगे रखते हो 'डरो', और नाते-रिश्ते (काटने) से, बेशक अल्लाह तुम्हारी निगरानी कर रहा है।

2 और यतीमों को उनका माल पहुँचा दो और बुरी चीज़ को अच्छी चीज़ से न बदलो, और न उनके माल को अपने माल के साथ मिला कर खा जाओ; यह बहुत बड़ा गुनाह है।

3 और अगर तुमको अन्देशा हो कि तुम यतीमों (लड़कियों) के मामले में इन्साफ़ न कर सकोगे, तो जो औ़रतें तुम्हें पसंद हों, उनमें से दो-दो या तीन-तीन या चार-चार से निकाह कर सकते हो, और अगर तुमको अन्देशा हो कि तुम (सब औरतों से) एक जैसा व्यवहार न कर सकोगे, तो एक (औ़रत) या लौंडी (बाँदी) जिसके तुम मालिक हो (काफ़ी है), इसमें तुम्हारे लिए इन्साफ़ से न हटने की ज़्यादा उम्मीद है।

4 और तुम औ़रतों को उनके महर खुशी से अदा कर दिया करो; हाँ, अगर वे अपनी खुशी से उसमें से कुछ तुम्हारे लिए छोड़ दें, तो उसे तुम अच्छा और पाक समझ कर खालो।

5 और बेअ़क़्लों (मूर्खो) को अपना माल न दो जिसे अल्लाह ने तुम्हारे लिए ज़िन्दगी गुज़ारने का ज़रिया बनाया है। उन्हें उसमें से खिलाते और पहनाते रहो और उनसे भली बात कहो।

6 और यतीमों की जांच करते रहो, यहाँ तक कि वह निकाह की उम्र को पहुँच जाएँ; फिर अगर तुम देखो कि उनमें सूझ-बूझ आ गयी है, तो उनके माल उन्हें सौंप दो, और इस डर से कि वे कहीं बड़े न हो जाएँ; तुम उनके माल फ़ुज़ूलख़र्ची करके जल्दी-जल्दी मत खा डालो; और जो व्यक्ति मालदार हो उसे तो बचना ही चाहिए, हाँ, जो ग़रीब हो, वह उचित तरीक़े से कुछ खा सकता है; फिर जब उनके माल उन्हें सौंपने लगो, तो उनकी मौजूदगी में गवाह बना लिया करो, और ह़िसाब लेने के लिए तो अल्लाह काफ़ी है।

7 मर्दों के लिए भी उस चीज़ में हिस्सा है, जो माँ-बाप और नातेदारों ने छोड़ा हो; और औ़रतों का भी उस माल में हिस्सा है जो माल, माँ-बाप और नातेदारों

ने छोड़ा हो, चाहे वह थोड़ा हो या बहुत मुक़र्रर (निश्चित) किया हुआ हिस्सा है।

8 और जब मीरास बाँटने के वक़्त, नातेदार और यतीम और मुहताज मौजूद
हों, तो उन्हें भी उसमें से कुछ दे दिया करो, और उनसे भली बात करो।

9 और ऐसे लोगों को डरना चाहिए, कि अगर वे ख़ुद अपने पीछे छोटे बच्चे
छोड़ जाएँ, तो उन्हें उन बच्चों के बारे में कितनी चिन्ता होती; तो चाहिए कि
अल्लाह से डरें और बात पक्की कहें।

10 जो लोग यतीमों का माल नाजायज़ तरीक़े से खाते हैं हक़ीक़त में वे अपने पेट
में आग भरते हैं, और वह जल्द ही (भड़कती हुई) आग में जा पड़ेंगे।

11 अल्लाह तुम्हें तुम्हारी औलाद के बारे में हुक्म देता है, मर्द (बेटा) का हिस्सा,
दो ओ़रतों (बेटियों) के बराबर है, और अगर दो से ज़्यादा ओ़रतें (बेटियाँ) हों
तो, उनके लिए दो तिहाई (हिस्सा) उस (माल) का है जो मूरिस (मरने वाला)
छोड़ गया हो; और अगर एक ही लड़की हो तो उसके लिए आधा हिस्सा है;
और मूरिस के माँ-बाप हों तो उन दोनों में से हर एक के लिए उस माल का
छठवाँ हिस्सा है जो वह छोड़ गया हो बशर्त कि मूरिस के कोई औलाद हो;
और अगर मूरिस के कोई औलाद न हो, और उसके माँ-बाप ही उसके वारिस
हों, तो उसकी माँ का एक तिहाई हिस्सा है; लेकिन अगर मूरिस के भाई भी
हों, तो उसकी माँ के लिए छठवाँ हिस्सा है, (लेकिन यह हिस्से) वसीयत के
निकालने के बाद जो उसने किया हो, या क़र्ज़ अदा करने के बाद; तुम को
मालूम नहीं कि तुम्हारे बाप-दादों, और बेटों-पोतों में से फ़ायदे के लिहाज़
से कौन तुम से ज़्यादा क़रीब है यह सब अल्लाह का फ़र्ज (तय) किया हुआ
हिस्सा है, बेशक अल्लाह सब कुछ जानने वाला, ह़िक्मत वाला है।

12 और तुम्हारे लिए (माल का) आधा हिस्सा है, जो तुम्हारी बीवियाँ छोड़ जाएँ,
अगर उनके कोई औलाद न हो; और अगर उनके औलाद हो तो तुम्हारे लिए
बीवियों के तरके़ (छोड़ा हुआ माल) का चौथाई है, वसीयत के बाद जिसकी
वसीयत कर जाएँ, या क़र्ज़ अदा करने के बाद, और उन बीवियों के लिए
तुम्हारे तर्के में चौथाई  हिस्सा है, बशर्ते कि तुम्हारे कोई औलाद न हो;  लेकिन
अगर तुम्हारे कुछ औलाद हो, तो उन (बीबियों) को तुम्हारे तर्के का आठवाँ
हिस्सा मिलेगा वसीयत (निकालने) के बाद,जिसको तुम वसीयत कर जाओ, या
क़र्ज़ अदाइगी के बाद,अगर कोई मूरिस मर्द हो या ओ़रत, जिसके न कोई
औलाद हो, और न उसके माँ-बाप ही ज़िन्दा हों और उसके एक भाई या
बहन हो, तो हर एक का छठवाँ हिस्सा होगा; लेकिन अगर वे इससे ज़्यादा
हों तो फिर एक तिहाई में सब हिस्सेदार होंगे; इसके बाद जो वसीयत उसने
की हो वह पूरी की जाए या जो क़र्ज़ हो वह चुका दिया जाए, बशर्त कि वह
नुक़्सानदे न हो, यह सब अल्लाह के हुक्म हैं, और अल्लाह सब कुछ जानने
वाला, बड़ा ह़लीम (सहनशील) है;

13 यह अल्लाह की तय की हुई ह़दें (सीमाएं) हैं, और जो आदमी अल्लाह और
उसके रसूल के हुक्मों को पूरा करेगा, उसे अल्लाह ऐसी जन्नतों में दाख़िल

करेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, उनमें वे हमेशा रहेंगे और यही सबसे बड़ी कामियाबी है।
14 और जो अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़रमानी करेगा और उसकी ह़दों को पार कर जाएगा, उसे 'वह' आग में दाख़िल करेगा, जिसमें वह हमेशा पड़ा रहेगा, और उसे ज़िल्लत का अज़ाब होगा।
15 और तुम्हारी औ़रतों में से जो बेह़याई (व्यभिचार) कर बैठें, उन पर अपने में से चार आदमियों को गवाह कर लो, सो अगर वे गवाही दें तो उन (औ़रतों) को घरों में बन्द रखो, यहाँ तक कि मौत उनका खात्मा कर दे, या अल्लाह उनके लिए कोई रास्ता निकाल दे।
16 और तुममें से जो दो मर्द यह काम (बद्कारी) करें, उन्हें दंडित करो; फिर अगर वे तौबः कर लें, और अपने को सुधार लें, तो उन्हें छोड़ दो, बेशक अल्लाह तौबः क़ुबूल करने वाला, बड़ा मेहरबान है।
17 उन्हीं लोगों की तौबः क़ुबूल करना अल्लाह के ज़िम्मे है, जो बुरी हरकत नादानी में कर बैठते हैं, और जल्द तौबः कर लेते हैं, ऐसे ही लोग हैं, जिनकी तौबः अल्लाह क़ुबूल करता है, अल्लाह जानने वाला, ह़िक्मत वाला है
18 और ऐसे लोगों की तौबः क़ुबूल नहीं होती जो बुरे काम किये चले जाते हैं, यहाँ तक कि जब उनमें से किसी के मौत का वक़्त आ जाता है, तो उस समय कहने लगता है, ''अब मैं तौबः करता हूँ,'' और न उनकी (तौबः क़ुबूल होती है) जो कुफ़्र की ह़ालत में मरें, ऐसे लोगों के लिए 'हमने' दर्दनाक अ़ज़ाब तैयार कर रखा है।
19 ऐ ईमान वालो! तुम्हारे लिए जायज़ नहीं कि तुम औ़रतों के माल के ज़बर्दस्ती वारिस बन जाओ, और न यह जायज़ है कि उन्हें इसलिए रोको और तंग करो कि जो कुछ तुमने उन्हें दिया है, उसमें से कुछ ले लो; हाँ अगर वे खुले तौर पर बदचलनी का काम करें! तो दूसरी बात है; और औ़रतों के साथ राज़ी खुशी के साथ गुज़र बसर करो; फिर अगर वे तुम्हें पसंद न हों, तो सम्भव है कि एक चीज़ तुम्हें पसंद न हो और अल्लाह उसमें बहुत कुछ भलाई पैदा कर दे।
20 और अगर तुम एक औ़रत (पत्नी) को छोड़कर दूसरी औ़रत (पत्नी) करना चाहो तो, चाहे तुमने उनमें से किसी (पहली औरत) को ढ़ेरों माल दे दिया हो, तो उसमें से कुछ मत लेना! क्या तुम उस पर आरोप लगाकर और खुला हुआ गुनाह कर के उसे (वापस) लोगे?-
21 और तुम उसे कैसे वापस ले सकते हो, ऐसी ह़ालत में कि तुम एक-दूसरे से सम्भोग (सुह़बत) कर चुके हो, और वे तुमसे एक मज़बूत वादा भी ले चुकी हैं?
22 और उन औ़रतों से निकाह न करो, जिनसे तुम्हारे बाप निकाह कर चुके हों लेकिन जो पहले हो चुका; यह बड़ी बेशर्मी और घृणा की बात थी, और बहुत बुरी रीति थी।
23 तुम्हारे लिए हराम हैं तुम्हारी माएं, और बेटियाँ, बहनें, और फूफियाँ, और

ख़ालाएं, और भतीजियाँ, और भांजियाँ, और तुम्हारी वे माएँ जिन्होंने तुम्हें दूध पिलाया हो, और दूध के रिश्ते से तुम्हारी बहनें, और तुम्हारी सासें, और तुम्हारी बीवियों की बेटियाँ, (जो दूसरे पति से हों,) और जो तुम्हारे गोद में पलीं, तुम्हारी उन बीवियों की बेटियां जिनसे तुम सोह़बत (सम्भोग) कर चुके हो, लेकिन अगर अभी तुमने (सम्भोग) नहीं किया है तो इसमें तुम पर कोई गुनाह नहीं- और तुम्हारे उन बेटों की पत्नियां जो तुम से पैदा हों, और यह भी कि तुम दो बहनों को इकट्ठा करो, लेकिन पहले जो हो चुका सो हो चुका, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला बड़ा रह़ीम है।

24 और वह शादी शुदा औ़रतें भी ह़राम हैं, सिवाय उनके जो तुम्हरी लौंडी हों, यह अल्लाह ने तुम्हारे लिए ज़रूरी कर दिया है; और जो इनके अ़लावा हैं वह तुम्हारे लिए ह़लाल कर दी गयी हैं कि तुम अपने माल के ज़रिये उन्हें ह़ासिल करो, बशर्ते कि (निकाह़ का) मक़्सद पाकदामनी हो, न कि शहवत पूरी करना हो, तो जिन औ़रतों से तुम फ़ायदा ह़सिल करो, उनका मह्र जो मुक़र्रर (निश्चित) किया हुआ हो अदा कर दो, और अगर मुक़र्रर करने के बाद आपस की रज़ामन्दी से मह्र में कमी ज़्यादती कर लो, तो तुम पर कुछ गुनाह नहीं, बेशक अल्लाह सब कुछ जानने वाला, ह़िक्मत वाला है।

25 और जो व्यक्ति तुम में से मोमिन आज़ाद औ़रतों से निकाह करने की कुद्रत न रखे, तो मोमिन लौंडियों में ही जो तुम्हारे क़ब्ज़े में आ गयी हों (निकाह कर लो), और अल्लाह तुम्हारे ईमान को अच्छी तरह जानता है; तुम आपस में एक ही हो, तो उन लौंडियों के साथ उनके मालिकों से इजाज़त लेकर निकाह कर लो, और कानून के मुताबिक़ उनका मह्र भी अदा कर दो, बशर्ते कि पाक दामन हों, न ऐसी कि खुल्लम-खुल्ला बद्कारी करें, और न पर्दे की आड़ में दोस्ती करें, फिर अगर निकाह में आकर बद्कारी कर बैठें, तो जो सज़ा आज़ाद औ़रतों के लिए है, उनकी आधी उसको दी जाए; यह (लौंडी के साथ निकाह करने की) इजाज़त उस व्यक्ति को है, जिसे गुनाह कर बैठने का डर हो, और अगर सब्र करो, तो यह तुम्हारे लिए बहुत अच्छा है; और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।

26 अल्लाह चाहता है कि तुम पर (अपनी आयतें) खोल-खोल कर बयान फरमाए, और तुम्हें उन लोगों के तरीक़े पर चलाए जो तुमसे पहले हुए हैं और तुम पर मेहरबानी करे, और अल्लाह तो जानने वाला, ह़िक्मत वाला है।

27 और अल्लाह तो चाहता है कि तौबः क़ुबूल करे तुम्हारी; और जो लोग अपनी इच्छाओं के पीछे चलते हैं, वे चाहते हैं कि तुम सीधे रास्ते से भटक कर दूर जा पड़ो।

28 अल्लाह चाहता है कि तुम पर से बोझ हल्का करे, क्योंकि इन्सान कमज़ोर पैदा हुआ है।

29 ऐ ईमान वालो! (आपस में) एक-दूसरे का माल ग़लत तरीक़े से न खाओ; यह और बात है कि तुम आपस की रज़ामन्दी से कोई सौदा कर लो, और अपने आप को क़त्ल मत करो, कि अल्लाह तुम पर बड़ा मेहरबान है;

30 और जो कोई ज़ुल्म और ज़्यादती से ऐसा करेगा, तो उसे 'हम' जल्द ही आग में झोंक देंगे, और यह अल्लाह के लिए आसान है।

31 अगर तुम उन बड़े गुनाहों से बचते रहे जिनसे तुम्हें रोका जा रहा है, तो 'हम' तुम्हारी बुराइयों को तुमसे दूर कर देंगे और तुम्हें इज़्ज़त की जगह दाख़िल करेंगे।

32 और उसकी आरज़ू (कामना) न करो, जिसमें अल्लाह ने तुममें बाज़ को बाज़ पर फ़ज़ीलत दी है, मर्दों ने जो कुछ कमाया है, उसके अनुसार उनका हिस्सा है; और औ़रतों ने जो कुछ कमाया है, उसके अनुसार उनका हिस्सा है और अल्लाह से उसकी रह़मत (दया) माँगते रहो, कि अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है।

33 और हर माल के लिए, जो माँ-बाप और नातेदार छोड़ जाएँ, तो हमने हर एक के ह़क़दार निश्चित कर दिये हैं, और जिन लोगों से अपनी क़समों के ज़रिये तुम्हारा पक्का मामला हुआ हो, तो उन्हें भी उनका हिस्सा दो, बेशक हर चीज़ पर अल्लाह गवाह (सामने) है।

34 मर्द औ़रतों (पति, पत्नियों) के निगरां हैं क्योंकि अल्लाह ने कुछ को कुछ के मुकाबले में आगे रखा है, और इसलिए भी कि मर्दों ने अपने माल खर्च किये हैं; तो जो नेक औ़रतें फ़रमाँबरदारी करने वाली होती हैं और उनके पीठ पीछे अल्लाह के साये में (माल व आबरू की) हिफाज़त करती हैं; और तुमको जिन बीवियों से सरकशी का खटका हो तो उनको समझा दो फिर उनके साथ सोना छोड़ दो, फिर उन्हें मारो, (इस पर भी न मानें तो) अगर वह तुम्हारी बात मानने लगें, तो उन पर तोहमत न लगाओ, बेशक अल्लाह सबसे ऊंचा, सबसे बड़ा (सम्मान वाला) है।

35 और अगर तुम दोनों के बीच बिगाड़ का डर हो तो एक फ़ैसला करने वाला मर्द की ओर से और एक फ़ैसला करने वाली औ़रत की ओर से चुन लो, अगर वे दोनों सुधार करना चाहेंगे, तो अल्लाह उनके बीच मिलाप करा देगा, बेशक अल्लाह सब कुछ जानने वाला, ख़बर रखने वाला है।

36 और अल्लाह ही की इबादत करो और उसके साथ किसी और को साझीदार न बनाओ, और अच्छा व्यवहार करो माँ-बाप के साथ, नातेदारों, यतीमों और मोहताजों के साथ, नातेदार पड़ोसियों के साथ, और दूर वाले पड़ोसियों के साथ, और साथ रहने वाले व्यक्तियों, और मुसाफ़िर के साथ, और उनके साथ भी जो तुम्हारे क़ब्ज़े में हों अल्लाह ऐसों को पसंद नहीं करता, जो इतराता और बड़ाई जताते फिरता हो।

37 जो खुद भी कंजूसी करते हैं, और लोगों को भी कंजूसी पर उभारते हैं, और अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल (कृपा) से जो कुछ उन्हें दे रखा है उसे छिपाते हैं तो 'हमने' (ऐसे) काफ़िरों के लिए ज़िल्लत का अ़ज़ाब तैयार कर रखा है।

38 और जो लोगों को दिखाने के लिए माल खर्च करते हैं, और अल्लाह पर ईमान नहीं रखते, न आख़िरत के दिन पर, और जिस किसी का साथी शैतान हो, तो वह बहुत ही बुरा साथी है।

39 और उनका क्या बिगड़ जाता, अगर वे अल्लाह और आख़िरत पर ईमान ले

आते और जो कुछ अल्लाह ने उन्हें दिया था, उसमें से खर्च करते,? और अल्लाह तो उन्हें खूब जानता है।
40 बेशक अल्लाह ज़रा भी ज़ुल्म नहीं करता और अगर कोई एक नेकी हो तो वह उसे दो गुना बढ़ा देगा, और अपनी ओर से बड़ा बदला देगा।
41 फिर क्या हाल होगा जब 'हम' हर उम्मत (समुदाय) में से एक गवाह लाएँगे और खुद तुम्हें उन लोगों के मुक़ाबले में गवाह बना कर पेश करेंगे?-
42 उस दिन जिन्होंने इन्कार किया होगा और रसूल की नाफ़रमानी की होगी, वह (यही) चाहेंगे कि किसी तरह ज़मीन में समा जाते, और वह अल्लाह से कोई बात न छिपा सकेंगे।
43 ऐ ईमान वालो! नशे की ह़ालत में नमाज़ के क़रीब मत जाओ, जब तक कि तुम यह न समझने लगो कि तुम क्या कर रहे हो? और इसी तरह नापाकी की ह़ालत में भी, (नमाज़ के क़रीब न जाओ) जब तक कि तुम गुस्ल (स्नान) न कर लो, सिवाय इसके कि तुम सफ़र में हो, और अगर तुम सफ़र में हो, या तुममें से कोई इस्तिन्जा (शौच) करके आया हो, या तुमने औ़रतों को हाथ लगाया (सम्भोग किया) हो, और तुम्हें पानी न मिले, तो पाक मिट्टी से काम लो, और उस पर हाथ मार कर अपने चेहरे और हाथों पर मलो, बेशक अल्लाह माफ़ करने वाला, बख़्शने वाला है।
44 क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा! जिन्हें किताब का कुछ हिस्सा दिया गया था? कि वे गुमराही को खरीदते रहे और चाहते हैं कि तुम भी राह से भटक जाओ।
45 और अल्लाह तुम्हारे दुश्मनों को खूब जानता है और अल्लाह का दोस्त (संरक्षक) होना, और अल्लाह का मददगार होना काफ़ी है।
46 (और) ये जो यहूदी हैं, उनमें कुछ ऐसे भी हैं जो शब्दों को उनकी जगह से दूसरी ओर फेर देते हैं और कहते हैं, ''समिअ़ना व अ़सैना ''(हमने सुना, लेकिन हम मानते नहीं); और इसमअ़ ग़ैरि मुस्मअ़िन' (सुनो हलाँकि तुम सुनने के लायक़ नहीं हो) और ''राअ़िना'' (हमारी ओर ध्यान दो) इसे वे अपनी ज़बानों को तोड़-मरोड़ कर और दीन पर चोटें करते हुए कहते हैं; और अगर वे कहते, ''समिअ़ना वअ़तअ़ना'' (हमने सुना और माना) और 'इसमअ़' (सुनो) और 'उन्ज़ुरना' (हमारी ओर निगाह करो) तो यह उनके लिए अच्छा और ज़्यादा बेहतर होता! लेकिन उन पर तो उनके इन्कार की वजह से अल्लाह की लानत है, तो उनमे से कुछ थोड़े ही ईमान लाते।
47 ऐ लोगो! जिन्हें किताब दी गयी उस चीज़ को मानो जो 'हमने' उतारी है, जो उस की भी तस्दीक़ करती है, जो खुद तुम्हारे पास है, इससे पहले कि 'हम' लोगों के चेहरों को बिगाड़ डालें और उन्हें उनके पीछे की ओर फेर दें या उन पर लानत करें, जिस तरह 'हमने' सब्त वालों पर लानत की थी, और अल्लाह का हुक्म तो लागू होकर रहता है।
48 अल्लाह उसको माफ़ नहीं करेगा कि किसी को उसका साझी ठहराया जाए, लेकिन उससे नीचे के दर्जे के गुनाहों को जिसे चाहेगा माफ़ कर देगा, और जिसने अल्लाह का साझीदार बनाया, तो उसने एक बहुत बड़ा झूठ गढ़ लिया।

49 क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा! जो बड़े पाक-साफ़ बनते हैं? हालाँकि
अल्लाह ही जिसको चाहता है पाक करता है, और ज़ुल्म तो किसी पर धागे
बराबर भी न किया जाएगा।
50 देखो! (यह लोग) अल्लाह पर कैसा झूठ बाँध रहे हैं,और यही खुला गुनाह
काफ़ी है।
51 क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा! जिन्हें किताब का एक हिस्सा दिया गया?
और वह ज़िब्त (जादू- टोना, शगून, आदि बातें) और तागूत (शैतान) को
मानते हैं। और काफ़िरों के बारे में कहते हैं, ''यह लोग ईमान वालों से बढ़
कर (सही) रास्ते पर हैं।''
52 यही लोग हैं जिन पर अल्लाह ने लानत की है और जिस पर अल्लाह लानत
कर दे, तो तुम उसका कोई मदद्गार न पाओगे।
53 क्या बादशाही में इनका कोई हिस्सा है? (अगर ऐसा होता) तो फिर यह लोगों
को फूटी कौड़ी भी न देंगे।
54 या इसलिए ह़सद (जलन) करते हैं कि अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से नेअ़मत
दी है, 'हमने' तो इब्राहीम की औलाद को किताब और ह़िक्मत दी और उन्हें
बड़ा भारी राज्य दिया;
55 फिर उनमें से कुछ उन पर ईमान लाए और कुछ ने उससे मुँह मोड़ा, और(ऐसे
लोगों के लिए) जहन्नम की भड़कती आग ही काफ़ी है।
56 जिन लोगों ने 'हमारी' आयतों का इन्कार किया उन्हें 'हम' जल्द ही आग में
झोंक देंगे, जब उनकी खालें पक जाएँगी, तो 'हम' उन्हें दूसरी खालों से बदल
दिया करेंगे, ताकि (हमेशा-हमेश) अ़ज़ाब का मज़ा चखते ही रहें! बेशक अल्लाह
ज़बर्दस्त (प्रभुत्वशाली), ह़िकमत वाला है।
57 और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किये, उन्हें 'हम' ऐसे बाग़ों
में दाख़िल करेंगे, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, जहाँ वे हमेशा रहेंगे, उनके
लिए वहाँ पाक बीवियाँ होंगी और 'हम' उन्हें घने (बाग़ के) साए में दाख़िल
करेंगे।
58 अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है कि अमानतों को उनके ह़क़्दारों तक पहुँचा दिया
करो, और जब लोगों के बीच फ़ैसला करो, तो अ़द्ल (न्याय) से किया करो,
अल्लाह तुम्हें कितनी अच्छी नसीह़त करता है, बेशक अल्लाह सब कुछ सुनता,
देखता है।
59 ऐ ईमान वालो! अल्लाह का हुक्म मानो और रसूल का हुक्म मानो, और
उनका भी कहना मानो जो तुममें से हाकिम (अधिकारी) हैं, फिर अगर किसी
मामला में तुम्हारे बीच झगड़ा हो जाए, तो उसे तुम अल्लाह व रसूल की ओर
लौटाओ, (अर्थात ले जाओ) अगर तुम अल्लाह और आख़िरत पर ईमान रखते
हो, और यही बेहतर है और अंजाम भी अच्छा है।
60 क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा, जो दावा तो करते हैं कि वे उस चीज़
पर ईमान रखते हैं, जो तुम्हारी ओर उतारी गयी है, और जो तुमसे पहले
उतारी गयी, और चाहते हैं कि अपना मामला तागूत (सरकश) के पास ले

जाकर फ़ैसला कराएँ, जबकि उन्हें हुक्म दिया गया था कि वे उसका इन्कार करें? लेकिन शैतान तो उन्हें भट्का कर बहुत दूर डाल देना चाहता है।
61 और जब उनसे कहा जाता है कि आओ उस चीज़ की ओर जिसे अल्लाह ने उतारा है, और आओ रसूल की ओर, तो तुम मुनाफ़िक़ों (कप्टाचारियों) को देखते हो कि तुम से कतूरा कर अलग हो जाते हैं;
62 फिर कैसी गुज़रती है जब उन पर कोई मुसीबत आ पड़ती है अपने ही करतूतों की वजह से, तो वे तुम्हारे पास अल्लाह की क़समें खाते हुए आते हैं कि हम तो केवल भलाई और बनाव चाहते थे।
63 उन लोगों के दिलों की बात अल्लाह खूब जानता है, तो आप उनकी ओर से एराज़ कर (रूख मोड़) लिया करें, और उन्हें नसीहत करते रहिए और उन्हें उनके बारे में प्रभावकारी (मुअस्सिर) बात कहते रहिए।
64 और 'हमने' जो भी रसूल भेजे, वह इसलिए, ताकि उसकी इताअ़त (आज्ञापालन) अल्लाह के हुक्म से की जाए; और अगर यह उस वक़्त जबकि इन लोगों ने खुद अपने ऊपर ज़ुल्म किया था, तुम्हारे पास आ जाते और अल्लाह से माफ़ी चाहते, और रसूल भी इनके लिए माफ़ी की दुआ करते, तो ज़रूर यह अल्लाह को माफ़ करने वाला, रह़म वाला पाते।
65 तो आप के रब की क़सम! यह ईमान वाले नहीं हो सकते, जब तक कि यह लोग अपने आपस के झगड़ों में आप से फ़ैसला न कराएँ, फिर जो फ़ैसला आप कर दें, उस पर यह अपने दिल में कोई तंगी न पाएँ, और पूरी तरह मान लें।
66 और अगर कहीं हमने उन्हें हुक्म दिया होता, "कि अपनों को क़त्ल करो या अपने घरों से निकल जाओ," तो उनमें से थोड़े ही लोग ऐसा करते; हालाँकि जो नसीहत उन्हें की जाती है, अगर वे उसे अ़मल में लाते तो यह बात उनके लिए अच्छी होती, और ज़्यादा साबित क़दम (पायेदार) होती;
67 और (उस वक़्त) 'हम' उन्हें अपनी ओर से ज़रूर बड़ा बदला देते,
68 और सीधे रास्ते पर भी लगा देते।
69 और जो लोग अल्लाह और उसके रसूल की इताअ़त (आज्ञा पालन) करते हैं, तो ऐसे ही लोग उन लोगों के साथ हैं, जिन पर अल्लाह का इनूआ़म हुआ जैसे नबी और सिद्दीक़ (औलिया) और शहीद और अच्छे लोग हैं, और यह लोग कितने अच्छे साथी हैं।
70 यह फ़ज़्ल है अल्लाह की ओर से, और अल्लाह ही जानने वाला काफ़ी है,
71 ऐ ईमान वालो! अपने बचाव का सामान (हथियार) संभालो, फिर या तो अलग-अलग टुकड़ियों में निकलो, या इकट्ठे हो कर निकलो।
72 और तुममें से कुछ ऐसे भी हैं जो ढ़ीले पड़ जाते हैं, फिर अगर तुम पर कोई मुसीबत आए तो कहते हैं, "अल्लाह ने मुझ पर फ़ज़्ल किया, कि मैं उन के साथ न था"
73 और अगर अल्लाह की ओर से तुम पर कोई फ़ज़्ल हो तो वह इस तरह से कि जैसे तुम्हारे और उसके बीच मुह़ब्बत का कोई सम्बन्ध ही नहीं, कहता है,

‘‘क्या ही अच्छा होता कि मैं भी उनके साथ होता, तो बड़ी कामियाबी हासिल करता’’
74 तो जो लोग आख़िरत के बदले दुनियावी ज़िन्दगी का सौदा करना चाहते हैं; उन्हें चाहिए कि अल्लाह के रास्ते में लड़ें, और जो व्यक्ति अल्लाह की राह में लड़ेगा, चाहे वह मारा जाए या ग़ालिब हो (जीत) जाए, उसे ‘हम’ जल्द ही बड़ा बदला देंगे।
75 और तुम्हें क्या हुआ है कि अल्लाह की राह में उन कमज़ोर मर्दों, और औरतों, और बच्चों के लिए जंग नहीं करते, जो दुआएँ किया करते हैं, ‘‘ऐ हमारे रब! ‘तू’ हमें इस बस्ती से निकाल, जिसके रहने वाले ज़ालिम हैं, और हमारे लिए अपनी कुद्रत से कोई दोस्त (समर्थक) पैदा कर दे, और हमारे लिए अपनी ओर से ‘तू’ कोई मदद्गार खड़ा कर दे।’’
76 जो ईमान वाले हैं वे तो अल्लाह की राह में लड़ते हैं, और जो काफ़िर हैं वे तागूत (शैतान) की राह में लड़ते हैं; तो तुम लड़ो शैतान के साथियों से, क्योंकि शैतान की चाल तो बहुत कमज़ोर होती है।
77 क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा, जिनसे कहा गया था, कि अपने हाथ रोके रखो, और नमाज़ क़ायम करो, और ज़कात देते रहो; फिर जब उन पर क़िताल (लड़ाई) फर्ज़ कर दिया गया, तो कुछ लोग उनमें लोगों से ऐसा डरने लगे जैसे अल्लाह से डरना होता है, बल्कि उससे भी बढ़ कर, और कहने लगे, ‘‘ऐ हमारे रब! ‘तूने’ हम पर जंग (जिहाद) क्यों फर्ज़ कर दिया? क्यों न थोड़ी मोहलत हमें और दी? कह दीजिए, ‘‘दुनिया की पूँजी थोड़ी है, जब कि आख़िरत उसके लिए कहीं बेहतर है जो अल्लाह का डर रखता हो, और तुम्हारे साथ धागे के बराबर भी जुल्म न किया जाएगा;
78 तुम जहाँ कहीं भी होगे, मौत तो तुम्हें आकर रहेगी, चाहे तुम मज़बूत बुर्जों (क़िलों) में ही हो।’’ और उन्हें कोई सुख पहुँच जाता है तो कहते हैं, ‘‘यह अल्लाह की ओर से है,’’ और अगर उन्हें कोई दुःख पहुँचता है तो कहते हैं, ‘‘यह आप की वजह से हुआ।’’ कह दीजिए, ‘‘हर चीज़ अल्लाह ही की ओर से है।’’ तो उन लोगों को क्या हुआ है कि गोया यह बात ही नहीं समझते?
79 तुम्हें जो भलाई पहुँचती है वह अल्लाह की ओर से है, और जो बुरी हालत तुम्हें पेश आ जाती है वह तुम्हारे अपने नफ़्स की वजह से होती है, और ‘हमने’ तुम्हें लोगों के लिए रसूल बना कर भेजा है और (इस पर) अल्लाह की गवाही काफ़ी है।
80 जिसने रसूल की इताअ़त (आज्ञा पालन) की, तो बेशक उसने अल्लाह की इताअ़त की, और जिसने मुँह मोड़ा, तो ‘हमने’ आप को उन पर रखवाला (संरक्षक) बना कर नहीं भेजा है।
81 और ये लोग कहते हैं,(हम) फरमांबरदारी करते हैं,’’ लेकिन जब आप के पास से हटते हैं, तो उनमें से एक गिरोह रात के वक़्त उसका उल्टा मश्विरा (षडयंत्र) करता है, और जो कुछ ये षडयंत्र करते हैं, अल्लाह उसे लिख रहा है, तो तुम उनसे रूख फेर लो और अल्लाह पर भरोसा रखो, और अल्लाह ही काफ़ी कारसाज़ (कार्य कारी) है।

82 क्या ये लोग क़ुर्आन में सोच-विचार नहीं करते? अगर यह अल्लाह के अ़लावा
किसी और की ओर से होता, तो उसमें (बहुत) इख़्तिलाफ़ (विरोधाभास) पाते।
83 और जब उनके पास कोई बात अम्न की या ख़ौफ़ की पहुँचती है, तो उसे
फैला देते हैं, और अगर यह उसे रसूल या अपने में के सरदारों (अधिकारी)
के पास पहुँचते हैं, तो उनमें से जो लोग जाँचने की योग्यता रखते हैं उसकी
अस्लियत जान लेते हैं; और अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी
मेहरबानी न होती, तो कुछ लोगों के सिवा सब शैतान की ही पैरवी करने वाले
होते।
84 तो अल्लाह की राह में जंग कीजिए, आप पर ज़िम्मेदारी नहीं डाली जाती,
सिवाय आप की अपनी ज़ात के; और ईमान वालों को (जंग के लिए) उभारते
रहिए; और उम्मीद है कि अल्लाह काफ़िरों का ज़ोर रोक ले, और अल्लाह
बड़ा ज़ोर वाला, सख़्त सज़ा देने वाला है।
85 जो व्यक्ति अच्छी सिफ़ारिश करेगा, उसको उसमें से हिस्सा मिलेगा, और जो
कोई बुरी सिफ़ारिश करेगा, तो उसकी वजह से उसका बोझ उस पर पड़ कर
रहेगा,और अल्लाह को तो हर चीज़ पर क़ुद्रत है।
86 और जब तुम्हें सलाम किया जाए, तो तुम उससे बेहतर तरीक़े से सलाम करो,
या उसी को लौटा दो, बेशक अल्लाह हर चीज़ का हिसाब लेने वाला है।
87 अल्लाह वह है कि कोई मअ़बूद (उपास्य) नहीं सिवाय उसके, 'वह' ज़रूर तुम
सब को क़ियामत के दिन इकट्ठा करेगा, जिसके आने में कोई शक नहीं, और
अल्लाह से बढ़ कर सच्ची बात किसकी हो सकती है!
88 फिर तुम्हें क्या हो गया है कि मुनाफ़िक़ों (कप्टाचारियों) के बारे में तुम दो
गिरोह हो गये, ऐसी हालत में कि अल्लाह ने उनके करतूतों की वजह से उन्हें
उल्टा फेर दिया? क्या तुम चाहते हो कि उन्हें राह दिखाओ, जिसे अल्लाह
ने गुमराह कर रखा है? और जिसे अल्लाह गुमराह कर दे, उसके लिए तुम
हरगिज़ रास्ता नहीं पा सकते;
89 ये लोग तो चाहते हैं, कि जिस तरह वे ख़ुद काफ़िर (इन्कारी) हैं, तुम भी
काफ़िर हो कर बराबर हो जाओ, तो जब तक वे अल्लाह की राह में घर बार
(वतन) न छोड़ें, उनमें से किसी को दोस्त (राज़दार) न बनाना; फिर अगर वह
(सच्चाई से) मुँह मोड़ें और ज़ुल्म करते रहें तो उन्हें पकड़ो, और जहाँ कहीं
उन्हें पाओ (अर्थात चाहे कअ़बः के पास ही क्यों न हों) क़त्ल कर दो, और
उनमें से तुम किसी को साथी और मदद्गार न बनाओ;
90 सिवाय उन लोगों के जो ऐसे लोगों से जा मिले हों, जिनसे तुम्हारे और उनके
बीच कोई समझौता हो, या वह तुम्हारे पास इस हालत में आएँ कि उनके दिल
तुम्हारे साथ या अपनी क़ौम के साथ लड़ने से रूक गये हों और अगर अल्लाह
चाहता तो उन्हें तुम पर क़ाबू दे देता, तो वे तुम से ज़रूर लड़ते; फिर अगर
वे तुमसे अलग रहें और तुमसे न लड़ें और सुलह़ के लिए तुम्हारी ओर हाथ
बढ़ाएँ तो उनके ख़िलाफ़ अल्लाह ने तुम्हारे लिए कोई (ज़बर्दस्ती का) रास्ता
नहीं रखा है।
91 तुम कुछ और ऐसे लोग भी पाओगे, जो यह चाहते हैं कि तुमसे भी अम्न

में रहें और अपनी क़ौम से भी अम्न में रहें, लेकिन जब फ़ितना फ़साद पैदा करने को बुलाए जाएँ तो उसमें औंधे मुँह गिर जाएँ, तो ऐसे लोग अगर तुमसे (लड़ने से) न किनारा पकड़ें और न तुम्हारी ओर सुलह (का पैग़ाम) भेजें, और न अपने हाथों को रोकें, तो उनको पकड़ लो, और जहां पाओ क़त्ल कर दो, उन लोगों के ख़िलाफ़ 'हमने' तुम्हें खुला अधिकार दे रखा है।

92 और यह किसी ईमान वाले का काम नहीं कि वह किसी ईमान वाले को क़त्ल कर दे, मगर भूल- चूक की बात और है; और कोई व्यक्ति अगर ग़लती से किसी ईमान वाले को क़त्ल कर दे, तो एक ईमान वाले ग़ुलाम को आज़ाद करना होगा और ख़ूँ–बहा (अर्थदण्ड) उस (मारे गये व्यक्ति) के घर वालों को सौंपना होगा। हाँ अगर वे अपनी ख़ुशी से छोड़ दें; और अगर वह उन लोगों में से हो, जो तुम्हारा दुश्मन हो, और वह (मारा जाने वाला) खुद मोमिन रहा हो, तो एक मोमिन को ग़ुलामी से आज़ाद करना होगा; और अगर वह (मरने वाला) उन लोगों में से हो कि तुम्हारे और उनके बीच कोई लिखित समझौता हो, तो ख़ूँ-बहा (अर्थदण्ड) उसके घर वालों को सौंपना होगा, और एक मोमिन गुलाम  आज़ाद करना होगा, लेकिन जो (गुलाम) न पाए तो वह लगातार दो महीने के रोज़े रखे, यह (तौबः) अल्लाह की ओर से है, और अल्लाह बड़ा जानने वाला, हिकमत (तत्वदर्शी) वाला है;

93 और जो व्यक्ति जान बूझ कर किसी ईमान वाले को क़त्ल करे, तो उसका बदला जहन्नम है, जिसमें वह हमेशा रहेगा; और उस पर अल्लाह का ग़ज़ब और उसकी लानत है, और उसके लिए अल्लाह ने बड़ा अज़ाब तैयार कर रखा है।

94 ऐ ईमान वालो! जब तुम अल्लाह की राह में निकलो तो खूब जाँच लिया करो, और जो व्यक्ति तुम्हें सलाम करे, उससे यह न कहो कि तुम मोमिन नहीं; तुम दुनियावी ज़िन्दगी का सामान तालाश करते हो, तो अल्लाह के पास तो बहुत मालेग़नीमत है, ऐसे ही तुम भी तो पहले थे, फिर अल्लाह ने तुम पर इन्आ़म किया; तो ख़ूब जाँच लिया करो, बेशक तुम जो कुछ करते हो, अल्लाह उसकी खूब ख़बर रखता है।

95 ईमान वालों में से वे लोग जो बिना किसी वजह के बैठे रहते हैं (और लड़ने से जी चुराते हैं), और जो अल्लाह की राह में अपनी जान और माल से जिहाद (जान तोड़ कोशिश) करते हैं, दोनों बराबर नहीं हो सकते, अल्लाह ने (घरों में) बैठे रहने वालों के मुक़ाबले में अपनी जान और माल से जिहाद (जान तोड़  कोशिश) करने वालों का दर्जा बढ़ा रखा है, और भलाई का वादा तो अल्लाह ने सभी से कर रखा है; (लेकिन) अल्लाह ने बैठे रहने वालों के मुकाबले में जिहाद करने वालों का बड़ा बदला रखा है।

96 अल्लाह की ओर से दर्जे हैं, मग़्फ़िरत व रह़मत (दयालुता) है, और अल्लाह माफ़ करने वाला, रह़म वाला है।

97 जो लोग अपने आप पर ज़ुल्म करते हैं, जब फ़रिश्ते उनकी जान निकालते हैं, तो कहते हैं, ''तुम किस ह़ालत में पड़े रहे?'' वे कहते हैं, ''हम धरती में कमज़ोर और बेबस थे।'' फ़रिश्ते कहते हैं, ''क्या अल्लाह की धरती वसीअ़

(विस्तृत) न थी कि तुम हिजूरत करके (घर बार छोड़कर) कहीं चले जाते?" तो ये वही लोग हैं जिनका ठिकाना जहन्नम है, और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है;

98 सिवाय उन कमज़ोर मर्दों, औरतों और बच्चों के, जिनके बस में न कोई उपाय है और न कोई राह पाते हैं;

99 तो यह लोग ऐसे हैं जिन्हें उम्मीद है कि अल्लाह माफ़ कर देगा, और अल्लाह है ही बड़ा माफ़ करने वाला, बड़ा बख्शने वाला (क्षमाशील)।

100 और जो व्यक्ति अल्लाह की राह में हिजरत करेगा, वह ज़मीन पर बहुत जगह और गुन्जाइश पाएगा, और जो व्यक्ति अपने घर से अल्लाह और उसके रसूल के लिए हिजूरत करता हुआ निकले, उसे फिर मौत आ जाए, तो उसका बदला अल्लाह के ज़िम्मे हो गया, और अल्लाह तो है ही बड़ा बख्शने वाला, मेहरबान ।

101 और जब तुम धरती पर सफ़र करो, तो तुम पर कुछ गुनाह नहीं, कि नमाज़ को कम करके पढ़ो; अगर तुम्हें डर हो कि काफ़िर लोग तुम्हें सताएँगे, बेशक काफ़िर तुम्हारे खुले हुए दुश्मन हैं।

102 और जब आप उनके बीच में हों और उसी (लड़ाई की) हालत में नमाज़ पढ़ने के लिए खड़े हों, तो चाहिए कि उनमें से एक गिरोह के लोग आप के साथ खड़े हो जाएँ और अपने हथियार से लैस रहें, फिर जब वे सज्दः कर लें, तो उन्हें चाहिए कि वे हटकर तुम्हारे पीछे हो जाएँ; और दूसरे गिरोह के लोग, जिन्होंने अभी नमाज़ नहीं पढ़ी, आएँ और तुम्हारे साथ नमाज़ पढ़ें, और उन्हें भी चाहिए कि वे भी अपने बचाव के सामान और हथियार लिए रहें; काफ़िर चाहते हैं कि तुम अपने हथियारों और सामान से ग़ाफ़िल (असावधान) हो जाओ, तो यह लोग तुम्हारे ऊपर एक साथ टूट पड़ें; अगर बारिश की वजह से तुम्हें तक्लीफ़ होती हो या तुम बीमार हो, तो तुम्हारे लिए कोई गुनाह नहीं कि अपने हथियार रख दो, फिर भी अपने बचाव का सामान लिए रहो, अल्लाह ने काफ़िरों (इन्कारियों) के लिए रूस्वा करने वाला अज़ाब तैयार कर रखा है।

103 फिर जब तुम नमाज़ अदा कर चुको, तो खड़े, बैठे और लेटे अल्लाह को याद करते रहो, फिर जब तुम्हें इत्मिनान हो जाए तो नमाज़ को क़ायम करो, बेशक नमाज़ तो ईमान वालों पर वक़्त की पाबंदी के साथ फर्ज़ (अनिवार्य) है।

104 और उन लोगों का पीछा करने में सुस्ती न दिखाओ, अगर तुम्हें दुःख पहुँचता है; तो उन्हें भी तो दुःख पहुँचता है जिस तरह तुमको दुःख पहुँचता है; और अल्लाह से तुम उस चीज़ की उम्मीद करते हो, जिस चीज़ की वह उम्मीद नहीं करते; अल्लाह तो सब कुछ जानने वाला, हिक्मत वाला है।

105 'हमने' आप पर किताब हक़ के साथ उतारी, ताकि आप लोगों के बीच फ़ैसला उसके अनुसार करें; और आप ख़ियानत करने वालों (विश्वास घातों) की हिमायत में कभी बातें न करें।

106 और अल्लाह से माफ़ी की दुआ करें, बेशक अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला, मेहरबान है।

107 और आप उन लोगों की ओर से बहस न कीजिए जो लोग ख़ुद अपनों के
साथ ख़ियानत करते हैं, और अल्लाह ख़ियानत करने वालें मुज्रिमों को पसंद
नहीं करता;
108 ये लोगों से तो छिपते हैं और अल्लाह से नहीं छिपते हालांकि 'वह' उनके साथ
होता है; जब वे रातों को ऐसी बातों के मश्विरे किया करते हैं जिसको 'वह'
पसंद नहीं करता, और अल्लाह उनके तमाम कामों (ज्ञान के) को घेरे में लिए
हुए है।
109 भला तुम लोग दुनिया की ज़िन्दगी में तो उनकी ओर से बहस कर लेते हो,
क़ियामत के दिन उनकी ओर से अल्लाह के साथ कौन बहस करेगा, और
कौन उनका वकील होगा।
110 और जो व्यक्ति बुरा काम कर बैठे? या अपने आप पर ज़ुल्म कर ले, फिर
अल्लाह से माफ़ी की दुआ करे, तो अल्लाह को बड़ा माफ़ करने वाला, रह़म
वाला पाएगा।
111 और जो व्यक्ति गुनाह करता है, तो वह उसका वबाल उसी पर है, और
अल्लाह तो ख़ूब जानने वाला, ह़िक्मत वाला है।
112 और जो व्यक्ति कोई ग़लती या गुनाह करे, फिर उसे किसी बेगुनाह पर थोप
दे, तो उसने बोहतान(आरोप) और खुले गुनाह का बोझ अपने ऊपर ले लिया।
113 और अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़्ल और मेहरबानी न होती, तो उनमें से
एक गिरोह ने तुम को तो बहकाने का इरादा कर ही लिया था, और ये अपने
सिवा किसी को बहका नहीं सकते, और न तुम्हारा कुछ बिगाड़ सकते हैं; और
अल्लाह ने तुम पर किताब और हिक्मत (दानाई) उतारी और उसने तुम्हें वे
बातें सिखाई हैं जो तुम जानते न थे, और अल्लाह का तुम पर बहुत बड़ा
फ़ज़्ल है।
114 उन लोगों की बहुत सी काना फूसियाँ अच्छी नहीं होतीं, हाँ, जो व्यक्ति सद्क़ा
देने या भलाई करने या लोगों के बीच सुधार करने के लिए कुछ कहे, तो
उसकी बात और है; और जो कोई यह काम अल्लाह की ख़ुशी के लिए करेगा,
उसे हम ज़रूर बड़ा बदला अ़ता करेंगे।
115 और जो व्यक्ति इसके बाद भी,कि सीधा रास्ता खुलकर उसके सामने आ
गया है रसूल की मुख़ालिफत (विरोध) करेगा और ईमान वालों के रास्ते
के सिवा और रास्ते पर चलेगा तो 'हम' उसे उसी पर चलने देंगे, जिसको
उसने अपनाया होगा और उसे जहन्नम में झोंक देंगे, और वह बहुत ही
बुरा ठिकाना है।
116 अल्लाह उस चीज़ को माफ़ नहीं करेगा कि उसके साथ किसी को साझीदार
बनाया जाए, हाँ इससे कम दर्जे के गुनाह को, जिसके लिए चाहेगा, माफ़ कर
देगा; और जिसने अल्लाह के साथ किसी को साझीदार ठहराया, तो वह भटक
कर बहुत दूर जा पड़ा।
117 यह जो अल्लाह के सिवा पुकारते हैं तो बस औ़रतों (देवियों) को, और वे
तो बस सरकश शैतान को ही पुकारते हैं;

118 जिस पर अल्लाह की लानत है, उसने कहा था, ‘‘मैं तेरे बन्दों से एक मुक़र्रर (निश्चित) हिस्सा ले कर रहूँगा,
119 और मैं उन्हें गुमराह करके रहूँगा और उनको तमन्नाओं में उलझाऊँगा, और उन्हें हुक्म दूँगा तो वे चौपायों के कान फाड़ेंगे, और उन्हें हुक्म दूँगा, तो वे अल्लाह की बनावट में तब्दीली (परिवर्तन) करेंगे,’’ और जिसने अल्लाह को छोड़ कर शैतान को दोस्त बनाया, वह खुले हुए घाटे में पड़ गया।
120 वह उनसे वादा करता है और उन्हें तमन्नाओं में उलझाए रखता है, और शैतान उनसे जो कुछ वादा करता है वह एक धोखे के सिवा कुछ भी नहीं होता।
121 यही वे लोग हैं जिनका ठिकाना जहन्नम है और उससे बचने का कोई ठिकाना न पा सकेंगे।
122 और जो लोग ईमान लाए और नेक काम करते रहे, उन्हें ‘हम’ जल्द ही जन्नत (बाग़ों) में दाख़िल करेंगे, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, उनमें वे हमेशा-हमेश रहेंगे, अल्लाह का वादा सच्चा है, और अल्लाह से बढ़ कर कौन बात का सच्चा हो सकता है?
123 बात न तुम्हारे इच्छाओं की है न अह्ले किताब के तमन्नाओं की है, जो व्यक्ति बुरे अ़मल करेगा उसे उसका बदला दिया जाएगा, और वह अल्लाह के सिवा न कोई हिमायती पाएगा और न मदद्गार।
124 और जो कोई नेक काम करेगा, मर्द हो या औ़रत, और वह ईमान वाला भी हो तो ऐसे लोग जन्नत में दाख़िल होंगे, और उन को रत्ती बराबर भी ज़ुल्म न होगा।
125 और दीन में उससे बेहतर कौन हो सकता है! जो अपने आप को अल्लाह के सामने झुका दे और वह मोह्सिन (निःस्वार्थ) भी हो और इब्राहीम के दीन की पैरवी करने वाला भी हो जो सब से कट कर ‘सीधे रास्ते’ पर हो गया था? और अल्लाह ने तो इब्राहीम को अपना दोस्त बना लिया था।
126 और जो कुछ आसमानों में और ज़मीन में है, सब अल्लाह ही का है और अल्लाह हर चीज़ को घेरे हुए है।
127 लोग आप से औ़रतों के बारे में फ़त्वा माँगते हैं, कह दीजिए, ‘‘अल्लाह तुम्हें उनके बारे में (निकाह का) फ़त्वा देता है, और जो आयतें पढ़ कर सुनाई जाती हैं यह उन यतीम औ़रतों के बारे में है, जिनके ह़क़ तुम अदा नहीं करते, और चाहते हो कि तुम उनके साथ निकाह कर लो; और कमज़ोर यतीम बच्चों के बारे में (भी यही हुक्म है,) और यह भी, कि तुम यतीमों के बारे में भी इन्साफ़ पर क़ायम रहो, जो भलाई भी तुम करोगे, तो अल्लाह उसे खूब जानता है।’’
128 और अगर किसी औ़रत को अपने पति की ओर से ज़्यादती या बेरूख़ी का डर हो, तो इसमें उसके लिए कोई हर्ज नहीं कि वे दोनों आपस में मेल-मिलाप की कोई राह निकाल लें, और मेल -मिलाप अच्छी चीज़ है; और तबीअ़तों

(स्वभाव) में कंजूसी तो होती है, और अगर तुम अच्छा व्यवहार रखो और डरते रहो, तो जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसकी पूरी ख़बर रखता है;

129 और तुमसे तो यह हो ही नहीं सकता कि औ़रतों के बीच (पूरी तरह) इन्साफ़ करो, चाहे तुम उसकी जितनी इच्छा रखते हो; तो ऐसा भी न करो, कि एक ही ओर लुढ़क जाओ और दूसरी को छोड़ दो कि गोया अधर में लटक रही हो (जैसे कि उसका पति खो गया हो,) लेकिन अगर तुम अपना व्यवहार ठीक रखो और (अल्लाह से) डरते रहो, तो बेशक अल्लाह माफ़ करने वाला, रह़म वाला है;

130 और अगर दोनों अलग हो जाएँ, तो अल्लाह हर एक को अपने फ़ज़्ल से बेपरवाह कर देगा, और अल्लाह बड़े फैलाव वाला, हि़क्मत वाला है।

131 और जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, सब अल्लाह ही का है; और तुम से पहले जिन्हें किताब दी गयी थी, उन्हें और तुम्हें भी, ‘हम’ ने ताकीद की है कि “अल्लाह का डर रखो,” अगर तुम इन्कार करते हो, तो उससे क्या होगा? आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है, सब अल्लाह ही का रहेगा, अल्लाह तो बेपरवाह तअ़रीफ़ के लायक़ है।

132 और आसमानों में जो कुछ है और ज़मीन में जो कुछ है, सब अल्लाह ही का है और काम बनाने के लिए अल्लाह काफ़ी है।

133 ऐ लोगो! अगर ‘वह’ चाहे तो तुम्हें हटा दे, और (तुम्हारी जगह) दूसरे लोगों को ले आए, और अल्लाह को इस पर पूरी क़ुद्रत है।

134 जो व्यक्ति दुनिया (में अ़मलों) का बदला चाहता है, तो अल्लाह के पास दुनिया, और आख़िरत (दोनों) के लिए बदला है और अल्लाह बड़ा सुनने वाला, देखने वाला है।

135 ऐ ईमान वालो! अल्लाह के लिए गवाही देते हुए इन्साफ़ पर मज़बूती से जमे रहो, चाहे वह खुद तुम्हारे अपने, या माँ-बाप और नातेदारों के ख़िलाफ़ क्यों न हो; अगर कोई ग़नी हो, या फ़क़ीर, अल्लाह (हर हाल में) दोनों से ज़्यादा ह़क़दार है, तो तुम अपनी इच्छा पूरी करने के लिए इन्साफ़ से न हटना, क्योंकि अगर तुम ग़लत चलोगे या जी चुराओगे, तो जो कुछ तुम कर रहे हो अल्लाह उसकी खूब ख़बर रखता है।

136 ऐ ईमान वालो! अल्लाह और उसके रसूल और किताब पर ईमान लाओ जो उसने अपने रसूल पर उतारी है, और उस किताब पर भी, जो वह इससे पहले उतार चुका है; और जो अल्लाह और उसके फ़रिश्ते और उसकी किताबों, और उसके रसूलों, और क़ियामत के दिन का इन्कार करता है, वह गुमराही में बहुत दूर जा पड़ा।

137 जो लोग ईमान लाए, फिर इन्कार किया, फिर ईमान लाए, फिर इन्कार किया, फिर कुफ़्र में बढ़ते चले गये; तो अल्लाह उन्हें हरगिज़ माफ़ न करेगा और न उन्हें सीधी राह दिखाएगा।

138 मुनाफ़िक़ों (कप्टाचारियों) को खुशख़बरी सुना दीजिए “कि उनके लिए दुःख देने वाला अ़ज़ाब है”

139 जो ईमान वालों को छोड़ कर काफ़िरों को अपना दोस्त (राज़दार) बनाते हैं,
क्या यह उनके पास इज़्ज़त तलाश रहे हैं? इज़्ज़त तो सारी की सारी अल्लाह
ही के लिए है।
140 और 'वह' तो तुम्हारे ऊपर इस किताब में हुक्म उतार ही चुका है कि जब
तुम सुनो कि अल्लाह की आयतों का इन्कार किया जा रहा है और उनका
मज़ाक़ उड़ाया जा रहा है, तो जब तक वे किसी दूसरी बात में न लग जाएँ,
उनके पास न बैठो, वरना तुम उन्हीं जैसे हो जाओगे; बेशक अल्लाह मुनाफ़िक़ों
(कप्टाचारियों) और काफ़िरों को जहन्नम में इकट्ठा करने वाला है;
141 (यह वे लोग हैं) जो तुम्हारे लिए मुसीबत के पड़ने का इन्तिज़ार करते रहते
हैं, तो अगर तुम्हें अल्लाह की ओर से फ़त्ह (विजय) हुई, तो कहते हैं, "क्या
हम तुम्हारे साथ न थे? और अगर काफ़िरों को हिस्सा मिल जाए तो कहने
लगते हैं, "क्या हमने तुम्हें घेर नहीं लिया था?" और हमने तुम्हें ईमान वालों
से बचा नहीं लिया था, तो अल्लाह ही तुम लोगों के बीच क़ियामत के दिन
फ़ैसला करेगा, और अल्लाह काफ़िरों को हरगिज़ मोमिनों पर क़ाबू न पाने
देगा।
142 मुनाफ़िक़ (कप्टाचारी) अल्लाह के साथ धोखेबाज़ी कर रहे हैं, हालांकि
अल्लाह उन की चालों को उन्हीं पर उलट रहा है; और ये लोग जब नमाज़
के लिए खड़े होते हैं, तो बहुत ही काहिली से खड़े होते हैं, लोगों को दिखाते
हैं, और अल्लाह को बहुत कम याद करते हैं;
143 बीच में ही अट्के हुए हैं, न इधर (ईमान वालों) के हैं, न उधर (इन्कारियों)
के, और जिसे अल्लाह गुमराह रखे, उसके लिए तो तुम कोई राह नहीं पा
सकते।
144 ऐ ईमान वालो! मोमिनों को छोड़ कर काफ़िरों (इन्कारियों) को दोस्त मत
बनाओ; क्या तुम चाहते हो कि अपने ऊपर अल्लाह की खुली दलील (स्पष्ट
तर्क) जुटाओ?
145 बेशक मुनाफिक़ आग (जहन्नम) के सबसे निचले दर्जे में होंगे और तुम उनका
कोई मददगार न पाओगे;
146 सिवाय उन लोगों के जो तौबः कर लें, और अपने आप को सुधार लें, और
अल्लाह को मज़बूती से पकड़ लें, और अपने दीन को अल्लाह के लिए ख़ालिस
(शुद्ध) कर लें, तो ऐसे लोग मोमिनों के साथ होंगे और अल्लाह मोमिनों को
जल्द ही बड़ा बदला देगा।
147 अल्लाह को तुम्हें अज़ाब देकर क्या होगा, अगर तुम शुक्र गुज़ारी करो और
ईमान ले आओ तो अल्लाह बड़ा क़दरदान, इल्म वाला है।
148 अल्लाह पसंद नहीं करता खुल्लम-खुल्ला बुरी बात (किसी को) कहने को, मगर
वह जो मज़लूम हो और अल्लाह खूब सुनता, जानता है।
149 अगर तुम लोग भलाई खुल्लम-खुल्ला या छिपा कर करोगे, या किसी बुराई को
माफ़ कर दोगे तो अल्लाह भी माफ़ करने वाला, कुदरत वाला है।
150 जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों का इन्कार करते हैं, और अल्लाह और
उसके रसूलों में फर्क़ (विभेद) करना चाहते हैं और कहते हैं, "हम कुछ को

मानते हैं और कुछ को नहीं मानते'' और ईमान और कुफ़्र के बीच एक राह निकालना चाहते हैं;
151 वे पक्के काफ़िर हैं और 'हमने' काफ़िरों के लिए ज़िल्लत का अ़ज़ाब तैयार कर रखा है।
152 और जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाए और उनमें से किसी में फर्क़ (विभेद) न किया(यानी सब को माना), ऐसे लोगों को अल्लाह बहुत जल्द बदला अ़ता करेगा; और अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, मेहरबान है।
153 अह्ले किताब तुमसे माँग करते हैं, कि तुम उन पर एक किताब आसमान से उतार लाओ, तो यह मूसा से इससे भी बड़ी माँग कर चुके हैं। उन्होंने कहा था, ''हमें अल्लाह को खुले तौर पर दिखा दो,'' तो उनके इस गुनाह की वजह से बिजली की कड़क ने उन्हें आ दबोचा; फिर वे बछड़े को अपना मअ़बूद बना बैठे, हालाँकि उनके पास खुली हुई निशानियाँ आ चुकी थीं, फिर 'हमने' उसे भी माफ़ कर दिया और मूसा को खुला हुआ ग़लबा (विजय) दिया।
154 और उनसे वादा (अ़हद) लेने के बाद तूर (पहाड़) को उन पर उठा दिया और उनसे कहा, ''दरवाज़े से सज्दः करते हुए दाख़िल हो,'' और उनसे कहा, ''सब्त (हफ़्ते के दिन) के बारे में ज़्यादती न करना,'' और 'हमने' उनसे बहुत मज़बूत अ़हद (प्रतिज्ञा) लिया;
155 फिर उनके अ़हद (प्रतिज्ञा) तोड़ देने और अल्लाह की आयतों का इन्कार करने, और नबियों को नाहक़ क़त्ल करने, और उनके यह कहने की वजह से कि ''हमारे दिलों पर पर्दे पड़े हैं'' बल्कि उनके कुफ़्र (इन्कार) की वजह से अल्लाह ने उन पर मुहर लगा दी, तो यह बहुत ही कम ईमान लाते हैं,
156 और उनके इन्कार की वजह से और मरयम के ख़िलाफ़ एक बड़ा बोहतान (आरोप) लगाने की वहज से-
157 और उनके इस कहने की वजह से कि ''हमने मरयम के बेटे ईसा मसीह, (जो) अल्लाह के रसूल (हैं), को क़त्ल कर डाला,'' हालाँकि न तो उन्होंने क़त्ल किया, और न उन्हें सूली पर चढ़ाया, बल्कि उनको उनकी सी सूरत मालूम हुई; और जो लोग उनकी मुख़ालिफ़त करते हैं वे उनके बारे में शक में पड़े हैं, और अट्कल पर चलने के अ़लावा उनके पास कोई इल्म न था, और निश्चय ही उन्होंने उन (ईसा) को क़त्ल नहीं किया;
158 बल्कि अल्लाह ने उनको अपनी ओर उठा लिया, और अल्लाह ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) हिक्मत वाला है;
159 और अह्ले किताब में से कोई ऐसा न होगा, मगर उनकी मौत से पहले उन पर ईमान न लाया हो, और वह क़ियामत के दिन उन पर गवाह होगा।
160 तो 'हमने' यहूदियों के ज़ुल्म की वजह से (बहुत-सी) अच्छी पाक चीज़ों को उन पर ह़राम कर दिया, जो उनके लिए ह़लाल थीं और इस वजह से भी कि वह अल्लाह के रास्ते से रोकते थे;
161 और इस वजह से भी कि मना करने के बाद भी सूद (ब्याज) लेते थे, और

इस वजह से भी कि लोगों के माल नाहक़ खाते थे, और उनमें से जो काफ़िर हैं, उनके लिए 'हमने' दु:ख देने वाला अ़ज़ाब तैयार कर रखा है;

162 मगर जो लोग उनमें से इल्म में पक्के हैं और ईमान वाले हैं, वे उस पर ईमान रखते हैं जो तुम्हारी ओर उतारा गया, और जो तुमसे पहले उतारा गया था; और नमाज़ क़ायम करते हैं, ज़कात देते है, और अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं; यही लोग हैं जिन्हें 'हम' बहुत जल्द बड़ा बदला देंगे।

163 'हमने' आपकी ओर उसी तरह वह्य की है जिस तरह नूह और उसके बाद के नबियों की ओर वह्य की थी और 'हमने' इब्राहीम, और इस्माईल, और इस्हाक़, और याक़ूब, और उसकी औलाद; और ईसा, और अय्यूब, और यूनुस, और हारून, और सुलेमान की ओर वह्य की और हमने दाऊद को ज़बूर भी अ़ता किया।

164 और बहुत से रसूल हुए जिनके ह़ालात 'हम' आप से पहले बयान कर चुके हैं, और कितने ही रसूल हैं जिनके ह़ालात आपसे बयान नहीं किये; और मूसा से तो अल्लाह ने बातें कीं, जिस तरह बात-चीत की जाती है।

165 रसूल ख़ुशख़बरी देने वाले और डराने वाले (बना कर भेजे गये हैं,) ताकि रसूलों के आने के बाद लोगों को अल्लाह पर इल्ज़ाम का मौक़ा न रहे, और अल्लाह ग़ालिब (प्रभुत्वशाली), ह़िक्मत वाला है;

166 लेकिन अल्लाह गवाही देता है कि उसके ज़रिये जो तुम्हारी ओर नाज़िल किया है कि उसे 'उसने' अपने इल्म के साथ उतारा है और फ़रिश्ते भी गवाही देते हैं, और अल्लाह का गवाह होना ही काफ़ी है।

167 जिन लोगों ने इन्कार किया और अल्लाह की राह से रोका, वे भटक कर बहुत दूर जा पड़े।

168 जिन लोगों ने इन्कार किया और ज़ुल्म करते रहे, उन्हें अल्लाह हरगिज़ माफ़ नहीं करेगा और न उन्हें राह ही दिखाएगा;

169 सिवाय जहन्नम के रास्ते के, जिसमें वे हमेशा पड़े रहेंगे, और यह अल्लाह के लिए बहुत ही आसान है।

170 ऐ लोगो! अल्लाह के रसूल तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से ह़क़ बात लेकर आए हैं, तो तुम ईमान लाओ (यही) तुम्हारे लिए बेहतर है; और अगर इन्कार करोगे तो (जान लो कि) जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है, सब अल्लाह ही का है, और अल्लाह सब कुछ जानने वाला, ह़िक्मत वाला है।

171 ऐ अह्ले किताब! अपने दीन में ह़द से न बढ़ो और अल्लाह के बारे में ह़क़ के सिवा कुछ न कहो; मसीह़ मरयम के बेटे, अल्लाह के रसूल और उसका 'कलिमा' थे, जो उसने मरयम की ओर भेजा था; और उसकी ओर से एक रूह थे, तो अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाओ, और न कहो (कि अल्लाह) "तीन" है- (इस से) बाज़ आ जाओ! यह तुम्हारे लिए ही बेहतर है- अल्लाह ही अकेला मअ़बूद है, और इससे पाक है कि उसके कोई औलाद हो, जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, सब 'उसी' का है; और अल्लाह ही काम बनाने वाला काफ़ी है।

172 मसीह़ कभी अपने लिए बुरा नहीं समझते थे कि वे अल्लाह के बन्दे हों और
न मुक़र्रब फ़रिश्ते, (बुरा समझते है) और जो व्यक्ति अल्लाह की बन्दगी को
अपने लिए बुरा समझेगा और घमंड करेगा, तो अल्लाह उन सबको अपने
पास इकट्ठा करके रहेगा।
173 तो जो लोग ईमान लाए, और उन्होंने अच्छे काम किये, तो अल्लाह उन्हें
उनका पूरा-पूरा बदला देगा और अपने फ़ज़्ल से कुछ ज़्यादा ही देगा और
जिन लोगों ने बन्दगी को बुरा समझा, और घमण्ड किया, उनको वह दुःख
देने वाला अ़ज़ाब देगा, और वे अल्लाह से बच पाने के लिए न कोई हामी
(समर्थक) पाएँगे और न मदद्गार।
174 ऐ लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से खुली दलील आ चुकी है और
'हमने' तुम्हारी ओर खुला हुआ नूर भेज दिया है।
175 तो जो लोग अल्लाह पर ईमान लाएं और उसको मज़बूत पकड़े रहें, उनको
वह अपनी रह़मत और फ़ज़्ल में दाख़िल करेगा और अपनी ओर का सीधा
रास्ता दिखा देगा।
176 लोग आप से (कलाला के बारे में ) फ़तूवा पूछते हैं, कह दीजिए, "अल्लाह
कलाला (जिसका कोई वारिस न हो) के बारे में यह हुक्म देता है, "कि अगर
कोई ऐसा मर्द मर जाए जिसके औलाद न हो, और उसकी एक बहन हो, तो
जो कुछ उसने छोड़ा है उसका आधा ह़िस्सा उस बहन का होगा, और भाई
बहन का वारिस होगा, अगर उस (बहन) की कोई औलाद न हो; और अगर
(वारिस) दो बहनें हों, तो जो कुछ उसने छोड़ा है, उसमें से उनके लिए दो
तिहाई हिस्सा होगा, और अगर कई भाई बहन (वारिस) हों तो एक मर्द का
हिस्सा दो औ़रतों के बराबर होगा।" अल्लाह तुम्हारे लिए हुक्मों को बयान
करता है, ताकि तुम भटकते न फिरो, और अल्लाह हर चीज़ को जानता है।

## सूर-ए-माइदः

यह सूरः मदनी है, इसमें अ़रबी के 13464 अक्षर,2842 शब्द 120 आयतें और 16 रूकूअ़ हैं।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

1 ऐ ईमान वालो! अपने इक़रारों (प्रतिज्ञाओं) को पूरा करो, तुम्हारे लिए चौपायों
की जाति के जानवर ह़लाल कर दिये गये हैं सिवाय उनके, जो तुम्हें पढ़ कर
सुनाये जाते हैं; मगर जब तुम एह़राम की ह़ालत में हो तो शिकार को ह़लाल
न समझना, अल्लाह जो चाहता है हुक्म देता है।
2 ऐ ईमान वालो! अल्लाह की निशानियों की बेहुर्मती (अनादर) न करना; न
अदब वाले महीने (अर्थात रजब, ज़ीक़अ़दः, ज़िल्ह़िज्जः, और मुह़र्रम) की न

क़ुर्बानी के जानवरों की, और न उन जानवरों की जिनकी गर्दनों में पट्टे पड़े हों, और न उन लोगों की जो अपने रब के फ़ज़्ल और उसकी ख़ुशनूदी की चाह में इज़्ज़त वाले घर (कअ़बः) को जा रहे हों, और जब एह़राम की ह़ालत से बाहर हो जाओ तो शिकार करो, और ऐसा न हो कि एक गिरोह की दुश्मनी, जिसने तुम्हारे लिए इज़्ज़त वाले घर का रास्ता बन्द कर दिया था, तुम्हें इस बात पर उभार दे कि तुम उन पर ज़्यादती करने लगो; और नेकी और परहेज़गारी के कामों में एक-दूसरे की मदद किया करो; और गुनाह और ज़ुल्म की बातों में मदद न किया करो, और अल्लाह से डरते रहो, कुछ शक नहीं कि अल्लाह का अ़ज़ाब बहुत सख़्त है।

3 तुम्हारे लिए ह़राम किया गया मुर्दार, (मरे हुए जानवर) और (बहता हुआ) ख़ून, और सुअर का गोश्त, और वह जानवर जिस पर अल्लाह के सिवा किसी और का नाम लिया गया हो, और वह जानवर जो गला घुंट कर मर जाए, और जो चोट खाकर मर जाए, और जो गिर कर मर जाए, और जो सींग लगने से मरा हो या जिसे किसी दरिन्दे (हिन्सक पशु) ने फाड़ खाया हो- सिवाय उसके जिसे तुमने (मरने से पहले) ज़ब्ह़ कर लिया हो- और वह जो किसी थान (स्थाने) पर ज़ब्ह़ किया गया हो; और यह भी (ह़राम है) कि तीरों के ज़रिये क़िस्मत मालूम करो, यह सब गुनाह हैं। आज काफ़िर तुम्हारे दीन से नाउम्मीद हो गये हैं, तो तुम उनसे मत डरो, बल्कि मुझ ही से डरते रहो। आज ‘हमने’ तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन मुकम्मल कर दिया और तुम पर अपनी नेअ़मत पूरी कर दीं, और तुम्हारे लिए ‘हमने’ धर्म के रूप में इस्लाम को पसंद किया- तो जो व्यक्ति भूख से लाचार हो जाए- लेकिन गुनाह की ओर उसका झुकाव न हो, तो अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला, रह़म वाला है।

4 आप से पूछते हैं, “उनके लिए कौन-कौन सी चीज़ें ह़लाल हैं?” कह दीजिए, “सब पाकीज़ा (स्वच्छ) चीज़ें ह़लाल हैं, और जिन शिकारी जानवरों को तुमने सधे हुए शिकारी जानवरों के रूप में साध रखा हो- और जिस तरह अल्लाह ने तुम्हें (शिकार करना) सिखाया है (उस तरीक़े से) तुमने उनको सिखाया हो- तो जो शिकार तुम्हारे लिए पकड़ लाएं उसको खाओ और उस पर अल्लाह का नाम लो, और अल्लाह से डरते रहो, बेशक अल्लाह जल्द ह़िसाब लेने वाला है।”

5 आज तुम्हारे लिए सब पाक चीज़ें ह़लाल कर दी गयीं और अह्ले किताब का खाना भी तुमको ह़लाल है, और तुम्हारा खाना उनको ह़लाल है, और पाक दामन आज़ाद मोमिन औ़रतें, और वे शरीफ़ आज़ाद औ़रतें भी, जो तुमसे पहले अह्ले किताब वालों में से हों, जबकि तुम उनका ह़क़ (महर) देकर उन्हें निकाह में ले आओ, न तो यह काम खुली बद्कारी के लिए हों और न चोरी-छिपे दोस्ती करने को, और जिस व्यक्ति ने ईमान से इन्कार किया, उसका सारा किया-धरा बेकार हो गया और वह आख़िरत में भी घाटे में रहेगा।

6 ऐ ईमान वालो! जब तुम नमाज़ के लिए उठो, (इरादा करो) तो अपने चेहरों को, और हाथों को कोहनियों तक धो लिया करो, और अपने सरों पर हाथ फेर लिया करो, और अपने पैरों को भी टख़नों तक धो लिया करो; और अगर

नहाने की ज़रूरत हो तो पाक हो जाया करो- और अगर बीमार हो, या सफ़र में हो, या तुम में से कोई बैतुलूख़ला (शौच) करके आया हो, या तुमने औ़रतों को हाथ लगाया (सम्भोग) हो, फिर पानी न मिले तो पाक मिट्टी से काम लो, (उस पर हाथ मार कर) अपने मुँह और हाथों पर फेर लिया करो- अल्लाह तुम्हें किसी तंगी में नहीं डालना चाहता, बल्कि 'वह' चाहता है कि तुम्हें पाक करे और अपनी नेअ़मतें तुम पर पूरी कर दे, ताकि तुम शुक्रगुज़ार बनो।

7 और अल्लाह ने तुम पर जो एह़सान किये हैं उसको याद करो और उस अ़हद (प्रतिज्ञा) को भी जो 'उसने' तुमसे किया था, जबकि तुमने कहा था हमने सुना और माना,'' और अल्लाह का डर रखो, बेशक अल्लाह सीनों की बातों को जानता है।

8 ऐ ईमान वालो! अल्लाह के लिए इन्साफ़ की गवाही देने के लिए खड़े हो जाया करो और लोगों की दुश्मनी तुमको इस बात पर तैयार न करे कि इन्साफ़ छोड़ दो; इन्साफ़ किया करो, यही परहेज़गारी की बात है; और अल्लाह से डरते रहो, बेशक जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह उसकी ख़ूब ख़बर रखता है।

9 और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किये, उनसे अल्लाह का वादा है, 'कि उनके लिए मग्फ़िरत (माफ़ी) और बड़ा अज्र (बदला) है।

10 और जिन्होंने इन्कार किया और हमारी आयतों को झुठलाया, वे भड़कती हुई आग में पड़ने वाले हैं।

11 ऐ ईमान वालो! अल्लाह के इनआ़म को याद करो जो उसने तुम पर किया है, जब कि एक जमाअ़त ने इरादा किया था कि तुम पर हाथ उठाएँ, तो उसने उनके हाथ तुमसे रोक दिये; और अल्लाह से डरते रहो, और ईमान वालों को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए।

12 और अल्लाह ने बनीइस्राईल से वादा लिया था, और 'हमने' उनमें बारह सरदार मुक़र्रर किये थे; फिर अल्लाह ने कहा था, मैं तुम्हारे साथ हूँ, अगर तुमने नमाज़ क़ायम रखी, और ज़कात देते रहे, और मेरे रसूलों पर ईमान लाए, और उनकी मदद की और अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ दिया, तो 'मैं' ज़रूर तुम्हारी बुराइयाँ तुमसे दूर कर दूँगा, और ज़रूर तुम्हें ऐसे बाग़ों में दाख़िल करूँगा, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी; फिर इसके बाद तुम में से जिसने इन्कार किया हो, तो वह सह़ी रास्ते से भटक गया।

13 फिर उन लोगों के अ़हद (प्रतिज्ञा) तोड़ने की वजह से 'हमने' उन पर लानत की, और उनके दिल सख़्त कर दिये; यह लोग शब्दों को उसकी जगह से फेर कर कुछ का कुछ कर देते हैं; और जिन बातों की उनको नसीह़त की गयी थी, उसका भी एक हिस्सा भुला बैठे, और थोड़े लोगों के सिवा हमेशा उनकी खियानत की खबर पाते रहते हो। तो तुम उन्हें माफ़ कर दो और उन्हें छोड़ दो, अल्लाह एह़सान करने वालों को पसंद करता है।

14 और जो लोग कहते हैं कि हम नसारा हैं 'हमने' उन लोगों से भी अहद लिया था, लेकिन उन्होंने भी उस नसीह़त का, जो उनको की गयी थी एक हिस्सा भुला दिया; तो 'हमने' उनके आपस में क़ियामत तक के लिए दुश्मनी और

कीना (ईर्ष्या) डाल दिया, और जो कुछ वे करते रहे, अल्लाह  बहुत जल्द उन्हें बता देगा।

15 ऐ अह्ले किताब! तुम्हारे पास हमारा रसूल आ गया है, जो कुछ तुम किताब में छिपाते थे, उसमें से बहुत सी बातें वह खोल-खोल कर बता देता है और बहुत-सी बातों को माफ़ कर देता है, बेशक तुम्हारे पास अल्लाह की ओर से नूर और खुली किताब आ चुकी है,

16 जिसके ज़रिये अल्लाह उस व्यक्ति को जो 'उसकी' रज़ा ह़ासिल करना चाहता हो, सलामती की राहें दिखाता है, और 'अपने' हुक्म से लोगों को अन्धेरों से निकाल कर उजाले की ओर ले आता है और उन्हें   सीधे रास्ते पर चलाता है।

17 बेशक उन लोगों ने इन्कार किया, जिन्होंने कहा, "अल्लाह तो वही मरयम का बेटा 'मसीह़' है।" कह दीजिए "कि अगर अल्लाह मरयम के बेटे, मसीह़ को और उनकी माँ (मरयम) को और जितने लोग ज़मीन में हैं सब को हलाक (विनष्ट) करना चाहे तो उसके आगे किस का बस चल सकता है? और अल्लाह ही के लिए है बादशाही आसमानों और ज़मीन की, और जो कुछ इन दोनों में है उसकी भी, 'वह' जो चाहता है पैदा करता है, और अल्लाह हर चीज़ पर कुद्रत रखता है।"

18 और यहूदी और ईसाई कहते हैं, "हम तो अल्लाह के बेटे और उसके चहीते हैं।" कह दीजिए, "फिर 'वह' तुम्हारे गुनाहों पर अ़ज़ाब क्यों देता है? (बात यह नहीं) बल्कि तुम भी उसकी मख़्लूक़ात में से (दूसरों की तरह) इन्सान हो; 'वह' जिसे चाहे माफ़ करे जिसे चाहे अ़ज़ाब दे और अल्लाह ही के लिए है बादशाही आसमानों और ज़मीन की और जो कुछ उनके बीच है, और (सब को) 'उसी' की ओर लौट कर जाना है।

19 ऐ अह्ले किताब! अब तुम्हारे पास 'हमारे' रसूल आ गये हैं जो तुमसे ('हमारे' हुक्म) बयान करते हैं, (जबकि) रसूलों का सिल्सिला (बड़ी मुद्दत से) बन्द था, ताकि तुम यह न कह सको कि "हमारे पास कोई ख़ुशख़बरी देने वाला, या सचेत करने वाला नहीं आया।" तो देखो! अब तुम्हारे पास ख़ुशख़बरी देने वाले, और सचेत करने वाले आ गये हैं, और अल्लाह तो हर चीज़ पर क़ादिर है।

20 और (याद करो) जब मूसा ने अपनी क़ौम  से कहा, "ऐ मेरी क़ौम के लोगो! अल्लाह की उस नेअ़मत को याद करो जो उसने तुम पर की हैं, 'उसने' तुममें नबी पैदा किये और तुम्हें बादशाह बनाया और तुमको इतना कुछ दिया कि दुनिया वालों में से किसी को नहीं दिया;

21 ऐ मेरी क़ौम के लोगो! तुम इस पाक ज़मीन में दाख़िल हो, जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए लिख दी है, और पीछे न हटो, वरना नुक़सान में पड़ जाओगे।"

22 वे कहने लगे, ऐ मूसा! वहाँ तो बड़े ज़बर्दस्त लोग (रहते) हैं, और हम वहाँ हरगिज़ दाख़िल नहीं हो सकते, जब तक कि वह वहाँ से निकल न जाएँ; हाँ, अगर वे (ज़ालिम) वहाँ से निकल जाएँ, तो हम जा दाख़िल होंगे।"

23 उन डरने वालों में दो व्यक्ति ऐसे भी थे जिन पर अल्लाह की ओर से इनूआ़म

था, उन्होंने कहा, ‘‘उन लोगों के मुक़ाबले में दरवाज़े से दाख़िल हो जाओ, जब तुम उसमें दाख़िल हो जाओगे, तो तुम ही ग़ालिब (विजयी) होगे;, अल्लाह पर भरोसा रखो अगर तुम ईमान वाले हो,’’
24 (उन्होंने) कहा, ‘‘मूसा! जब तक वे लोग वहाँ हैं, हम तो वहाँ कभी नहीं जा सकते, तो जाओ तुम और तुम्हारा रब दोनों लड़ो, हम तो यहीं बैठे रहेंगे,’’
25 (मूसा ने) कहा, ‘‘मेरे रब! मैं ख़ुद अपने, और अपने भाई के अ़लावा किसी पर अख़्तियार (भरोसा) नहीं रखता, तो हममें और इन नाफ़रमान लोगों के बीच जुदाई कर दे,’’
26 फ़रमाया, ‘‘अच्छा तो अब यह (भूमि) चालीस साल तक इनके लिए ह़राम है; ये ज़मीन में मारे-मारे फिरते रहेंगे, तो तुम इन नाफ़रमान लोगों के ह़ाल पर अफ़सोस न करो।’’
27 और इन्हें आदम के दो बेटों (हाबील और क़ाबील) के ह़ालात पढ़ कर सुना दीजिए, कि जब उन दोनों ने क़ुर्बानी की, तो उन में से एक की क़ुर्बानी क़ुबूल हुई और दूसरे की क़ुबूल न हुई, उसने कहा, ‘‘मैं तुझे ज़रूर क़त्ल कर डालूँगा,’’ कहा, ‘‘अल्लाह तो उन्हीं की (क़ुर्बानी) क़ुबूल करता है, जो परहेज़गार हैं।
28 अगर तू मुझे क़त्ल करने के लिए हाथ बढ़ाएगा, तो मैं तुझको क़त्ल करने के लिए हाथ नहीं बढ़ाऊँगा, मैं तो अल्लाह से डरता हूँ, जो सारे संसार का रब है;
29 मैं तो चाहता हूँ कि मेरा गुनाह  और अपना गुनाह, तू ही अपने सर ले ले, फिर आग (जहन्नम) में पड़ने वालों में से हो जाए, और यही ज़ालिमों का बदला है।’’
30 मगर उसके जी ने उसे उसके भाई के क़त्ल पर उभारा, तो उसने उसे क़त्ल कर दिया और घाटे में पड़ गया;
31 फिर अल्लाह ने एक कौआ भेजा जो ज़मीन कुरेदने लगा; ताकि उसको दिखा दे कि वह अपने भाई की लाश को कैसे छिपाये, कहने लगा, अफ़सोस मुझ पर! क्या मैं कौए जैसा भी न हो सका कि अपने भाई की लाश छिपा देता? वह शर्मिन्दा हुआ;
32 इसी वजह से हमने बनी इस्राईल के लिए लिख दिया था कि जिसने किसी व्यक्ति को, किसी के ख़ून का बदला लेने या धरती में फ़साद फैलाने के अ़लावा किसी और वजह से क़त्ल कर डाला, तो मानों उसने सारे ही इन्सानों को क़त्ल कर दिया और जिसने उसे ज़िन्दगी दिया, ‘उसने मानो सारे इन्सानों को ही ज़िन्दगी दिया, और उन लोगों के पास ‘हमारे’ रसूल ख़ुली दलीलें ला चुके हैं, फिर भी उनमें बहुत से लोग ज़मीन में ज़्यादती करने वाले ही हैं।
33 जो लोग अल्लाह और उसके रसूल से लड़ते हैं और धरती में बिगाड़ पैदा करने के लिए दौड़-धूप करते हैं, उनकी सज़ा तो बस यही है कि बुरी तरह क़त्ल किये जाएँ, या सूली पर चढ़ा दिये जाएँ, या उनके एक ओर के हाथ और दूसरी ओर के पाँव काट दिये जाएँ, या उन्हें देश से निकाल दिया जाए,

यह तो दुनिया में उनकी रूस्वाई है और आख़िरत में उनके लिए बड़ा अ़ज़ाब है;
34 हाँ जो लोग, इससे पहले कि तुम्हें उन पर अधिकार मिले, तौबः कर लें तो जान लो कि अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, मेहरबान है।
35 ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरते रहो और उसका कुर्ब (निकट्ता) ह़ासिल करते रहो, और उसके रास्ते में जिहाद करते रहो, ताकि तुम कामियाब हो जाओ।
36 जिन लोगों ने इन्कार किया अगर उन के पास वह सब कुछ हो जो सारी ध
ारती में है और उतना ही उनके साथ और भी हो, कि वह उसे देकर क़ियामत के दिन के अ़ज़ाब से बच जाएँ, तो उसे कुबूल नहीं किया जाएगा, और उनके लिए तो दर्द देने वाला अ़ज़ाब होगा;
37 वे चाहेंगे कि आग से निकल जाएँ, मगर उससे नहीं निकल सकेंगे, और उनके लिए हमेशा का अ़ज़ाब है।
38 और जो चोरी करे, मर्द हो या औ़रत, उनके हाथ काट दो, यह उनके करतूतों का बदला है और अल्लाह की ओर से सीख है; और अल्लाह ज़बर्दस्त, ह़िकमत वाला है।
39 फिर जो व्यक्ति गुनाह के बाद तौबः करे और भला बन जाए, तो अल्लाह उसको माफ़ कर देगा, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, मेहरबान है।
40 क्या तुम नहीं जानते कि आसमानों और ज़मीन में अल्लाह ही की बादशाही है, 'वह' जिसे चाहे अ़ज़ाब दे और जिसे चाहे माफ़ कर दे, और अल्लाह हर चीज़ पर कुद्रत रखता है।
41 ऐ रसूल! जो लोग कुफ़्र में जल्दी करते हैं, उनकी वजह से आप दुखी न हों; वे जो अपने मुँह से कहते हैं कि "हम ईमान ले आए" लेकिन उनके दिल ईमान नहीं लाए; और वे जो यहूदी हैं, वे झूठ के लिए कान लगाते हैं, वह दूसरे लोगों की सुनते हैं, जो अभी आपके पास नहीं आए, बातों को उनकी जगहों के बाद बदल देते हैं, और कहते हैं, "अगर तुमको यही (हुक्म) मिले, तो इसे कुबूल कर लेना अगर यह न मिले तो उससे बचना" और अगर किसी को अल्लाह गुमराह करना ही चाहे तो उसके लिए आप कुछ भी अल्लाह से अख़्तियार नहीं रखते, ये वे लोग हैं जिनके दिलों को अल्लाह ने पाक करना नहीं चाहा, उनके लिए दुनिया में भी ज़िल्लत है और आख़िरत में भी बड़ा अ़ज़ाब है;
42 वे झूठी बातें बनाने के लिए कान लगाने वाले और ह़राम माल खाने वाले हैं, तो अगर वे आप के पास आएँ, तो आप उनके बीच फ़ैसला कर दीजिए या उन्हें टाल जाइए, अगर आप उन्हें टाल दें तो वे आप का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते, लेकिन अगर फ़ैसला कीजिए तो उनके बीच इन्साफ़ के साथ फ़ैसला कीजिए, अल्लाह इन्साफ़ करने वालों को पसंद करता है।
43 और कैसे वे आप से फ़ैसला कराएँगे  जबकि खुद उनके पास तौरात है, जिसमें अल्लाह का हुक्म मौजूद है! फिर उसके बाद भी वे मुँह मोड़ते हैं, और यह लोग ईमान ही नहीं रखते।

44 बेशक ‘हमने’ तौरात उतारी, जिसमें हिदायत (मार्ग-दर्शन) और रोशनी थी
उसी के मुताबिक़ नबी, जो (अल्लाह के) फ़रमाँबरदार थे, यहूदियों को हुक्म
देते रहे हैं, और अल्लाह वाले और उलमा भी, क्योंकि वे अल्लाह की किताब
के निगहबान (संरक्षक) मुक़र्रर किये गये थे, और इस पर गवाह थे; तो आप
लोगों से न डरिए, बल्कि ‘मुझ’ ही से डरिए, और मेरी आयतों के बदले थोड़ी
सी भी क़ीमत न लीजिएगा! और जो अल्लाह के नाज़िल किये हुए हुक्मों के
मुताबिक़ हुक्म न दे, तो ऐसे ही लोग काफ़िर हैं।
45 और ‘हमने’ उन लोगों के लिए तौरात में यह हुक्म लिख दिया था कि जान
के बदले जान, और आँख के बदले आँख और नाक के बदले नाक, और
कान के बदले कान, और दाँत के बदले दाँत और हर (क़िस्म के सब) ज़ख्मों
का इसी तरह का बदला है, लेकिन जो व्यक्ति बदला माफ़ कर दे वह उसके
लिए कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) होगा; और जो लोग अल्लाह के नाज़िल किये हुए
हुक्मों के मुताबिक़ हुक्म न दे, तो ऐसे ही लोग ज़ालिम हैं।
46 और उनके पीछे उन्हीं के क़दमों (पदचिन्हों) पर ‘हमने’ मरयम के बेटे, ईसा,
को भेजा, जो पहले से उनके सामने मौजूद किताब, ‘तौरात’ की तस्दीक़ करने
वाले थे; और ‘हमने’ उन्हें इन्जील दी, जिसमें हिदायत (मार्ग-दर्शन) और
नूर है, और तौरात की, जो इससे पहले की है, तस्दीक़ करने वाली, और
परहेज़गारों को राह बताने वाली और नसीहत करने वाली है।
47 और इन्जील वालों को चाहिए कि जो हुक्म अल्लाह ने उसमें नाज़िल किये हैं
उसके मुताबिक़ हुक्म दिया करें और जो अल्लाह के नाज़िल किये हुए हुक्मों
के मुताबिक़ हुक्म न देंगे, तो ऐसे ही लोग नाफ़रमान हैं।
48 और ‘हमने’ आप की ओर यह किताब हक़ के साथ उतारी है, जो उस किताब
की तस्दीक़ करती है जो इसके पहले से मौजूद है और जो उसकी मुहाफ़िज़
(संरक्षक) है; और उनके बीच मामलों में आप वही फ़ैसला कीजिए जो अल्लाह
ने उतारा है; और जो हक़ तुम्हारे पास आ चुका है उसे छोड़ कर उनकी
इच्छाओं के पीछे न चलिएगा, ‘हमने’ तुममें से हर एक के लिए एक दस्तूर
और एक तरीक़ा मुक़र्रर किया है, और अगर अल्लाह चाहता तो तुम सब
को एक ही उम्मत (समुदाय) बना देता; लेकिन जो कुछ ‘उसने’ तुम्हें (हुक्म)
दिया है उसमें वह तुम्हारा इम्तिहान लेना चाहता है, तो तुम भलाई के कामों
में एक-दूसरे से आगे बढ़ो; तुम सब को अल्लाह ही की ओर लौट कर जाना
है, फिर ‘वह’ तुम्हें बता देगा, जिसमें तुम इख़्तिलाफ़ करते थे;
49 और यह कि तुम उनके बीच वही फ़ैसला करो जो अल्लाह ने उतारा है, और
उनकी इच्छाओं के पीछे न चलो और उनसे बचते रहो कि ‘कहीं ऐसा न हो
कि वह तुम्हें धोखे में डाल कर, जो कुछ अल्लाह ने तुम्हारी ओर उतारा है,
उसके किसी हिस्से से तुम्हें हटा दे; फिर अगर वे मुँह मोड़ें तो जान लो कि
अल्लाह उनके कुछ गुनाहों की वजह से उन पर मुसीबत डालना चाहता है;
और अकसर लोग तो नाफ़रमान हैं;
50 क्या वे जाहिलियत (अज्ञानता) का फ़ैसला चाहते हैं? और यक़ीन करने वाले
लोगों के लिए, अल्लाह से अच्छा फ़ैसला करने वाला कौन हो सकता है?

51 ऐ ईमान वालो! तुम यहूद और नसारा (ईसाइयों) को अपना दोस्त न बनाओ,
ये आपस में एक-दूसरे के दोस्त हैं, और जो व्यक्ति उन्हें अपना दोस्त
बनाएगा, वह उन्हीं लोगों में से होगा, बेशक अल्लाह ज़ालिमों को हिदायत नहीं
देता;
52 तो तुम देखते हो कि जिन लोगों के दिलों में रोग है, वह उनमें दौड़-दौड़ कर
मिल जाते हैं; कहते हैं, ''हमें डर  है कि हम कहीं किसी मुसीबत में न पड़
जाएँ,'' तो उम्मीद है कि अल्लाह जल्द ही फ़त्ह् (विजय) दे या अपनी ओर
से कोई हुक्म दे, तो यह लोग जो कुछ अपने जी में छिपाये हुए हैं, उस पर
शर्मिन्दा होंगे;
53 और ईमान वाले कहेंगे, क्या ये वही लोग हैं जो अल्लाह की बड़ी-बड़ी क़समें
खाकर यक़ीन दिलाते थे, कि 'हम' तुम्हारे साथ हैं?'' इनका किया धरा सब
बेकार हुआ और यह सब घाटे में पड़ गये।
54 ऐ ईमान वालो! तुममें से जो कोई अपने दीन से फिरेगा, तो अल्लाह जल्द
ही ऐसे लोगों को लाएगा, जिनसे उसे मुहब्बत होगी और जो उससे मुहब्बत
करेंगे, वे ईमान वालों के लिए नर्म और काफ़िरों के लिए सख़्त होंगे, अल्लाह
की राह में जिहाद (जी तोड़ कोशिश) करेंगे और किसी मलामत करने वाले
की मलामत से न डरेंगे; यह अल्लाह का फ़ज़्ल है, 'वह' जिसे चाहता है देता
है, और अल्लाह बड़ा वसीअ़ (व्यापक) जानने वाला है।
55 तुम्हारे दोस्त तो अल्लाह और उसके रसूल और ईमान वाले ही हैं; जो नमाज़
क़ायम करते हैं और ज़कात देते। और (अल्लाह के आगे) झुकते हैं।
56 और जो व्यक्ति अल्लाह और उसके रसूल और ईमान वालों से दोस्ती करेगा,
तो (वह अल्लाह की जमाअ़त में शामिल होगा और) अल्लह का गिरोह ही
ग़ालिब (प्रभावी) होने वाला है।
57 ऐ ईमान वालो! तुमसे पहले जिन लोगों को किताबें दी गयी थीं, और जिन्हों ने
तुम्हारे दीन को हँसी खेल बना लिया है उन्हें, और काफ़िरों को अपना दोस्त
न बनाओ; और अल्लाह का डर रखो, अगर तुम ईमान वाले हो।
58 और जब तुम लोग नमाज़ के लिए पुकारते (अज़ान देते) हो, तो  यह उसे
भी  हँसी और खेल बना लेते हैं, यह इस वजह से है कि ना समझ हैं।
59 कह दीजिए, ''ऐ अह्ले किताब क्या इसके सिवा, हमारी कोई और बात तुम्हें
बुरी लगती है, कि हम अल्लाह और उस चीज़ पर ईमान लाएं, जो हमारी
ओर उतारी गयी; और जो पहले उतारी जा चुकी है? और यह कि तुम में
अक्सर लोग नाफ़रमान हैं।''
60 कह दीजिए, ''क्या मैं तुम्हें बताऊँ कि अल्लाह के यहां इससे भी बुरा बदला
पाने वाले कौन हैं? वे लोग हैं जिन पर अल्लाह ने लानत की और जिन पर
'उसका' ग़ज़ब हुआ और जिसमें से 'उसने' बन्दर और सुअर बनाए और
जिसने शैतान की बन्दगी की, ऐसे लोगों का बुरा ठिकाना है और वे सीधे
रास्ते से भटके हुए हैं।''
61 और जब यह लोग तुम्हारे पास आते हैं तो कहते हैं, ''हम ईमान ले आए''

हालांकि  इन्कार के साथ आए थे और उसी के साथ चले जाते हैं और अल्लाह
अच्छी तरह जानता है जो कुछ वे छिपाते हैं।
62 और तुम देखते हो कि उनमें से बहुत से लोग हक़ मारने, ज़्यादती करने, और
हरामख़ोरी में बड़ी तेज़ी दिखाते हैं; बेशक ये जो कुछ करते हैं, बुरा करते हैं।
63 भला उनके अल्लाह वाले और उलमा, उन्हें गुनाह की बातों और ह़राम खाने
से मना क्यों नहीं करते? क्या ही बुरा काम है, जो वे कर रहे हैं।
64 और यहूद कहते हैं, ''अल्लाह का हाथ बंधा हुआ है,'' उन्हीं के हाथ बंधे हैं,
और लानत हो उन पर, जो वे कहते हैं, बल्कि 'उसके' दोनों हाथ खुले हुए
हैं; वह जिस तरह चाहता है ख़र्च करता है, जो कुछ 'तुम्हारे' रब की ओर
से 'तुम्हारी' ओर उतारा गया है, इससे उनमें अक्सर की शरारत और इन्कार
बढ़ेगा; और 'हमने' उनकी आपसी दुश्मनी और कपट को क़ियामत तक के
लिए डाल दिया है; यह जब भी जंग की आग भड़काते हैं, अल्लाह उसे बुझा
देता है; और यह मुल्क (संसार) में फ़साद फैलाने की कोशिश करते हैं, और
अल्लाह फ़साद करने वालों को पसंद नहीं करता।
65 और अगर अह्ले किताब, ईमान लाते और परहेज़गारी करते तो 'हम'  उनसे
उनके गुनाह मिटा देते, और उनको नेअ़मत के बाग़ों में दाख़िल कर देते;
66 और अगर वे तौरात और इन्जील को, और जो कुछ उनके रब की ओर से
उतारा गया है, उसे क़ायम रखते, तो उन्हें अपने ऊपर से भी मिलता और
अपने पाँवों के नीचे से भी; इनमें से कुछ लोग दर्मियानी रास्ता अपनाने वाले
भी हैं; और बहुत से ऐसे हैं जिनके अ़मल बुरे हैं।
67 ऐ रसूल! आपके रब की ओर से आप पर जो कुछ उतारा गया है, उसे पहुँचा
दीजिए, और अगर ऐसा न किया तो आपने उसका पैग़ाम नहीं पहुंचाया, और
अल्लाह आप को लोगों (की बुराइयों) से बचाए रखेगा, बेशक अल्लाह इन्कार
करने वालों को राह नहीं दिखाता।
68 कह दीजिए, ''ऐ किताब वालो! जब तक तुम तौरात और इन्जील को और
जो तुम्हारे रब की ओर से उतारा गया है, उसे क़ायम न रखोगे कुछ भी राह
नहीं पा सकते, और जो तुम्हारे रब की ओर से तुम पर उतारा गया है, इससे
उनमें अक्सर की सरकशी और इन्कार में बढ़ौतरी होगी, तो आप इन्कार करने
वाली क़ौम पर अफ़सोस न कीजिए।
69 जो लोग ईमान लाए और जो यहूदी और साबई और ईसाई हैं, उनमें से जो
कोई भी अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान लाए, और अच्छा काम
करता रहे, तो ऐसे लोगों को न (क़ियामत के दिन) कोई डर होगा और न वे
ग़मगीन होंगे।
70 'हमने' बनी इस्राईल से अ़हद लिया और उनकी ओर रसूल भेजे; उनके पास
जब भी कोई रसूल वह कुछ लेकर आता जो उन्हें पसंद न होता तो, कितनों
को उन्होंने झुठला दिया और कितनों को तो क़त्ल ही कर डाला;
71 और उन्होंने समझा कि कोई आफ़त न आएगी, तो वे अन्धे और बहरे बन गये;

फिर अल्लाह ने उन पर मेहरबानी की, फिर उनमें बहुत से लोग अन्धे और
बहरे हो गये, और अल्लाह देख रहा है, जो कुछ वे करते हैं।
72 वे लोग काफ़िर हैं जो कहते हैं, ''अल्लाह मरयम का बेटा, मसीह ही है जबकि
मसीह ने कहा था, ''ऐ बनी इस्राईल अल्लाह की इबादत करो, जो तुम्हारा भी
रब है और मेरा भी रब है, जो व्यक्ति अल्लाह के साथ साझी ठहराएगा, उस
पर अल्लाह ने जन्नत हराम कर दी है और उसका ठिकाना आग (जहन्नम)
है, और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं।''
73 वे लोग काफ़िर हैं, जो यह कहते हैं, ''अल्लाह तीन में का एक है,'' हालाँकि
उस एक मअ़बूद के अ़लावा कोई इबादत के लायक़ नहीं, अगर यह लोग ऐसी
बात से बाज़ नहीं आएँगे तो उनमें से जिन्होंने इन्कार किया है, वे दुःख देने
वाला अ़ज़ाब पाएँगे।
74 तो क्या यह लोग अल्लाह के आगे तौबः नहीं करते और 'उससे' गुनाहों की
माफ़ी नहीं माँगते, और अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, रह़म वाला है।
75 मरयम का बेटा मसीह़ एक रसूल के अ़लावा कुछ भी नहीं; उससे पहले भी
बहुत से रसूल गुज़र चुके हैं, और उसकी माँ सच्ची फ़रमाँबरदार थी, दोनों
ही खाना खाते थे, देखो! ''हम इन लोगों के लिए किस तरह निशानियाँ बयान
करते हैं; फिर देखो! यह किधर उल्टे जा रहे हैं।''
76 कह दीजिए, ''क्या तुम अल्लाह को छोड़ कर ऐसी चीज़ की इबादत करते हो
जो न तुम्हें फायदा पहुँचाने की मालिक है और न नुक़्सान? और अल्लाह ही
खूब सुनने, जानने वाला है।
77 कह दीजिए,''ऐ अह्ले-किताब! अपने दीन में नाहक़ ह़द से आगे न बढ़ो,
और उन लोगों की इच्छाओं के पीछे न चलो जो इससे पहले ख़ुद भट्के, और
बहुतों को भट्काया; और सीधे रास्ते से भटक गये।''
78 बनी इस्राईल से जिन लोगों ने इन्कार किया, उन पर दाऊद और मरयम के
बेटे ईसा की ज़बान से लानत की गयी, क्योंकि वह नाफ़रमानी करते थे और
ह़द से आगे बढ़ जाते थे;
79 जो बुरा काम वे करते थे, उससे वे एक-दूसरे को रोकते न थे, यह बहुत ही
बुरा था, जो वे कर रहे थे;
80 तुम उनमें से बहुतों को देखोगे कि काफ़िरों (इन्कारियों) से दोस्ती रखते हैं,
उन्होंने जो कुछ अपने आगे भेजा है बहुत ही बुरा है अल्लाह का उन पर
ग़ज़ब हुआ, और वे हमेशा अ़ज़ाब में रहेंगे;
81 और अगर वे अल्लाह और नबी पर और उस चीज़ पर ईमान लाते, जो
उनकी ओर नाज़िल हुई, तो वे उनको दोस्त न बनाते, लेकिन उनमें अक्सर
लोग नाफ़रमान हैं।
82 तुम ईमान वालों का दुश्मन तमाम लोगों से बढ़कर यहूदियों और मुश्रिकों
(बहुदेववादियों) को पाओगे; और ईमान वालों के लिए दोस्ती में सबसे क़रीब
उन लोगों को पाओगे, जो कहते हैं ''हम नसारा हैं।'' यह इस वजह से कि

उनमें आ़लिम (धर्म ज्ञाता) भी हैं और अल्लाह वाले (संन्यासी) भी, और इस
वजह से कि वे तकब्बुर (घमंड) नहीं करते;
83 और जब वे इस (किताब) को सुनते हैं जो रसूल पर नाज़िल हुआ, तो तुम
देखते हो कि उनकी आँखें आँसुओं से छलकने लगती हैं, इसलिए कि उन्होंने
हक़ बात पहचान ली, और वे कहते हैं, ‘‘ऐ रब! हम ईमान लाए, तो हम को
गवाही देने वालों में लिख ले;
84 और हमें क्या हुआ कि अल्लाह पर और ह़क़ बात पर, जो हमारे पास आयी,
ईमान न लाएँ; और हम उम्मीद रखते हैं कि हमारा रब हमें अच्छे लोगों के
साथ (जन्नत में) दाख़िल करेगा-’’
85 तो अल्लाह ने उनके इस कहने की वजह से उन्हें ऐसे बाग़ अता फरमाए,
जिनके नीचे नहरें बहती हैं, जिनमें वे हमेशा रहेंगे, और यही भले लोगों का
बदला है।
86 और जिन्होंने इन्कार किया और ‘हमारी’ आयतों को झुठलाया, वे जहन्नमी
हैं।
87 ऐ ईमान वालो! जो अच्छी पाक चीज़ें अल्लाह ने तुम्हारे लिए ह़लाल की हैं,
उन्हें ह़राम न कर लो और ह़द से आगे न बढ़ो, अल्लाह नहीं पसंद करता
ह़द (सीमा) से बढ़ने वालों को।
88 और जो कुछ अल्लाह ने ह़लाल और पाक रोज़ी तुम्हें दी है, उसे खाओ और
अल्लाह से डरते रहो, जिस पर तुम ईमान लाए हो।
89 अल्लाह नहीं पकड़ करेगा तुम्हारी बे इरादा क़समों पर जो यूँ ही ज़बान से
निकल जाती हैं, लेकिन जो तुमने पक्की क़समें खाई हों, उन पर ‘वह’ तुम्हें
पकड़ेगा, तो उसका कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित या बदला) दस मोहताजों को औसत
दर्जे का खाना खिलाना है जो तुम अपने बाल बच्चों को खिलाते हो, या फिर
उन्हें कपड़े पहनाना, या एक ग़ुलाम आज़ाद करना होगा, और जिसको यह
न मिले, वह तीन रोज़े रखे; यह तुम्हारी क़समों का कफ़्फ़ारा है जबकि तुम
क़सम खा बैठो, तुम अपनी क़समों की हिफ़ाज़त किया करो, इस तरह अल्लाह
तुम्हारे लिए अपनी आयतें खोल-खोल कर बयान करता है, ताकि तुम शुक्र
करो।
90 ऐ ईमान वालो! शराब और जुआॅ, और देवस्थान (बुत), और पाँसे गन्दे शैतानी
काम हैं, तो तुम इनसे बचते रहो, ताकि तुम कामियाब हो;
91 शैतान तो यही चाहता है कि शराब और जुएँ के ज़रिये तुम्हारे बीच आपस
में दुश्मनी और बुग्ज़ (ईर्ष्या) पैदा कर दे और तुम्हें अल्लाह की याद से और
नमाज़ से रोक दे, तो क्या तुम बाज़ न आओगे?
92 और अल्लाह की फ़रमाँबरदारी और रसूल की पैरवी करते रहो और डरते
रहो, फिर अगर तुमने मुँह मोड़ा तो जान लो ‘हमारे’ रसूल के ज़िम्मे तो केवल
पैग़ाम को खोल कर पहुँचा देना है।
93 जो लोग ईमान लाए और अच्छे अ़मल किये, उन पर उन चीज़ों का कोई
गुनाह नहीं, जो वे खा चुके; जबकि उन्होंने परहेज़ किया और ईमान पर

क़ायम रहे, और अच्छे काम किये फिर परहेज़ किया और ईमान लाए; फिर परहेज़ किया और अच्छे से अच्छा काम किया, और अल्लाह भले काम करने वालों को पसंद करता है।

94 ऐ ईमान वालो! अल्लाह उस शिकार के ज़रिये तुम्हारी ज़रूर आज़्माइश करेगा जहाँ तक तुम्हारे हाथ और नेज़े पहुँचें, ताकि अल्लाह यह जान ले कि 'उससे' बिन देखे कौन डरता है? तो जो उसके बाद ज़्यादती करे, उसके लिए दुःख देने वाला अ़ज़ाब होगा।

95 ऐ ईमान वालो! एह़राम की ह़ालत में तुम शिकार न करो और तुममें जो कोई जान-बूझ कर उसे मारे- तो उसने जो (जानवर) मारा हो- चौपायों में से उसी जैसा एक (जानवर) जिसका फ़ैसला तुम्हारे दो इन्साफ़ वाले आदमी तय कर दें, कअ़बः पहुँचा कर क़ुर्बान किया जाए, या कफ़्फ़ारे के रूप में मोहताजों को खाना खिलाया जाए, या उसके बराबर रोज़े रखे जाएँ, ताकि वह अपने किये का मज़ा चख ले, जो पहले हो चुका उसे अल्लाह ने माफ़ कर दिया; लेकिन किसी ने फिर किया तो उससे अल्लाह बदला लेगा, अल्लाह ग़ालिब (प्रभुत्वशाली), बदला लेने वाला है।

96 तुम्हारे लिए समुद्र का शिकार और उसका खाना ह़लाल है कि तुम उससे फ़ायदा उठाओ और मुसाफ़िर भी, और ह़राम है तुम पर ख़ुश्की (थलीय) के शिकार जबकि तुम एह़राम की ह़ालत में हो; और अल्लाह से डरते रहो, जिसके पास तुम इकट्ठा किये जाओगे।

97 अल्लाह ने इ़ज़्ज़त वाले घर, कअ़बः को लोगों के लिए क़ायम रहने का ज़रिया बनाया और इ़ज़्ज़त वाले महीने को, और क़ुर्बानी को और उन जानवरों को जिनके गले में पट्टे बंधे हों; यह इसलिए कि तुम जान लो कि अल्लाह जानता है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, और यह कि अल्लाह हर चीज़ का इ़ल्म रखता है।

98 जान लो! कि अल्लाह सख़्त सज़ा देने वाला है और यह कि अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, रह़म वाला है।

99 रसूल के ज़िम्मे तो केवल (संदेश) पहुँचा देना है, और जो कुछ तुम ज़ाहिर करते हो और जो कुछ छिपाते हो, अल्लाह को सब मालूम है।

100 कह दीजिए, "बुरी चीज़ और अच्छी चीज़ बराबर नहीं होती, चाहे बुरी चीज़ों की ज़्यादती तुम्हें कितनी ही अच्छी क्यों न लगे?" तो अ़क़्ल वालो! अल्लाह से डरते रहो, ताकि तुम कामियाब हो सको।

101 ऐ ईमान वालो! ऐसी चीज़ों के बारे में सवाल न करो कि अगर (उनकी ह़क़ीक़त) तुम पर ज़ाहिर कर दी जाए तो तुम्हें बुरी लगे; और अगर क़ुर्आन के नाज़िल होने के वक़्त ऐसी बातें पूछोगे, तो तुम पर ज़ाहिर कर दी जाएँगी, अल्लाह ने ऐसी बातों को माफ़ कर दिया है। और अल्लाह बख़्शने वाला 'ह़लीम' (सहनशील) है;

102 तुमसे पहले कुछ लोग इस तरह के सवाल कर चुके हैं, फिर वे उससे इन्कार करने वाले हो गये।

103 अल्लाह ने न कोई बहीरा ठहराया है, और न 'साइबा' और न 'वसीलः' और
न 'ह़ाम', लेकिन काफ़िर अल्लाह पर झूठ का आरोप लगाते हैं, और उनमें
अक्सर लोग अक़्ल नहीं रखते;
104 और जब उनसे कहा जाता है, ''उस चीज़ की ओर आओ, जो अल्लाह ने
नाज़िल की है और रसूल की ओर,'' तो वे कहते हैं, ''हमारे लिए तो वही
काफ़ी है, जिस पर हमने अपने बाप-दादा को पाया है,'' क्या अगर उनके
बाप-दादा न कुछ जानते रहे हों और न सीधी राह पर रहे हों?
105 ऐ ईमान वालो! अपनी जानों की हिफ़ाज़त करो, जब तुम हिदायत पर हो, तो
कोई गुमराह करने वाला तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता; तुम सब को अल्लाह
की ओर लौट कर जाना है फिर 'वह' तुम्हें बता देगा, जो कुछ तुम करते रहे
होगे।
106 ऐ ईमान वालो! जब तुममें से किसी की मौत का वक़्त आ जाए तो वसीयत
के वक़्त इन्साफ़ करने वाले दो व्यक्ति गवाह हों, या अगर तुम सफ़र कर
रहे हो और मौत आ जाए तो किसी दूसरे (मज़हब) में के (दो व्यक्तियों को)
गवाह (कर लो,) अगर तुमको उन गवाहों के बारे में कुछ शक हो तो नमाज़
के बाद उन दोनों को रोक लो, फिर वे दोनों अल्लाह की क़समें खाएँ कि
''हम इसके बदले में कोई क़ीमत कुबूल करने वाले नहीं; चाहे कोई नातेदार
ही क्यों न हो? और न हम अल्लाह की गवाही छिपाएंगे, अगर ऐसा करेंगे तो
गुनहगार होंगे;''
107 फिर अगर मालूम हो जाए कि इन दोनों ने ह़क़ मार कर अपने को गुनाह में
डाल लिया है, तो उनकी जगह दूसरे दो व्यक्ति उन लोगों में से खड़े हो जाएँ,
जिनका ह़क़ पिछले दोनों ने मारना चाहा था, फिर वे दोनों अल्लाह की क़सम
खाएँ कि 'हम दोनों की गवाही ज़्यादा सच्ची है और हमने कोई ज़्यादती नहीं
की, हमने ऐसा किया हो तो हम ज़ालिमों में से होंगे;''
108 इसमें इसकी ज़्यादा उम्मीद है कि यह लोग सह़ी-सह़ी गवाही दें, या इस बात
से डरें कि क़समें उनकी क़समों के बाद रद्द कर दी जाएँगी, और अल्लाह से
डरो और (सुनो!) अल्लाह नाफ़रमान लोगों को हिदायत नहीं देता।
109 जिस दिन अल्लाह रसूलों को इकट्ठा करेगा, फिर कहेगा, ''आप लोगों को
क्या जवाब मिला था?'' वे कहेंगे, ''हमें कुछ नहीं मालूम, बेशक 'तू' ही छिपी
बातों को जानता है।''
110 जब अल्लाह कहेगा, ''ऐ मरयम के बेटे, ईसा! 'मेरी' उन नेअ़मतों को
याद कीजिए जो 'मैने' आप पर और आप की माँ पर की थीं, जब 'मैंने'
रूहुल-कुदुस (जिब्राईल) से आपकी मदद की; आप झूले में भी लोगों से बात
करते थे और बड़ी उम्र को पहुँच कर भी; और (याद करो)! जबकि मैंने'
आपको किताब और ह़िक्मत और तौरात और इन्जील की तालीम दी थी; और
जब आप मेरे हुक्म से मिट्टी का परिन्दा बनाकर उसमें फूँक मार देते थे;
तो वह 'मेरे' हुक्म से उड़ने लगता था; और आप मेरे हुक्म से पैदाइशी अन्ध
ो और सफ़ेद दाग़ वालों को अच्छा कर देते थे, और जबकि आप 'मेरे' हुक्म
से मुर्दों को ज़िन्दा निकाल कर खड़ा कर देते थे; और जबकि 'मैंने' आप में

से बनी-इस्राईल को रोके रखा, जबकि आप उनके पास खुली निशानियाँ लेकर
पहुँचे थे; तो उनमें से जो इन्कार करने वाले थे उन्होंने कहा, ''यह तो बस
खुला हुआ जादू है।
111 और जब 'मैंने' 'ह़वारियों' (साथियों) की ओर हुक्म भेजा कि मुझ पर और
'मेरे' रसूल पर ईमान लाओ,'' वे कहने लगे, ''हम ईमान लाए और तुम गवाह
रहना कि हम फ़रमाँबरदार (मुस्लिम) हैं।
112 (याद करो) जब ह़वारियों ने कहा, ''मरयम के बेटे ईसा! क्या तुम्हारा रब
आसमान से खाने से भरा दस्तरख़्वान (थाल) उतार सकता है? उन्होंने कहा,
''अल्लाह से डरो, अगर तुम ईमान वाले हो;''
113 वे बोले, ''हम चाहते हैं कि उसमें से खाएं और हमारे दिल को इत्मिनान
(सन्तुष्टि) हो, और हम जान लें कि तुमने हमसे सच कहा है और हम उस
पर गवाह रहें।''
114 मरयम के बेटे ईसा ने कहा, ''ऐ हमारे रब! हम पर आसमान से खाने से
भरा दस्तरख़्वान उतार, जो हमारे लिए और हमारे अगलों और हमारे पिछलों
के लिए खुशी का ज़रिया बने और तेरी ओर से एक निशानी हो, और हमें
रिज़्क़ (आहार) दे, तू सबसे अच्छा रिज़्क़ देने वाला है,''
115 अल्लाह ने कहा, 'मैं' तुम पर ज़रूर उसको उतारूँगा, फिर इसके बाद तुममें
से जो कोई इन्कार करेगा तो 'मैं' ज़रूर उसे ऐसी सज़ा दूँगा जैसी कि पूरी
दुनियाँ में किसी को न दूँगा।''
116 और जब अल्लाह कहेगा, ''ऐ मरयम के बेटे ईसा! क्या आपने लोगों से कहा
था कि 'अल्लाह के अ़लावा दो और मअ़बूद, (उपास्य) मुझे और मेरी माँ को
बना लो?'' वह कहेंगे, 'तू' पाक (महिमावान) है! मुझ से यह नहीं हो सकता
कि मैं वह बात कहूँ, जिसका मुझे कोई ह़क़ नहीं; अगर मैंने ऐसा कहा होता
तो तुझे मालूम ही होता, 'तू' जानता है, जो कुछ मेरे मन में है, और मैं नहीं
जानता जो कुछ तेरे मन में है, बेशक 'तू' छिपी बातों का ख़ूब जानने वाला
है;
117 मैंने उनसे इसके सिवा कुछ नहीं कहा, जिसका तूने मुझे हुक्म दिया था, वह
यह कि अल्लाह की इबादत करें, जो मेरा भी रब है और तुम्हारा भी; और
जब तक मैं उनमें रहा उनकी ख़बर रखता था, फिर जब 'तूने' मुझे उठा
लिया, तो 'तू' ही उनका निगहबान (निरीक्षक) था, और 'तू' हर चीज़ पर
गवाह (साक्षी) है।
118 अगर 'तू' उनको अ़ज़ाब दे, तो वे तेरे बन्दे हैं, और अगर 'तू' उन्हें माफ़
कर दे, तो बेशक 'तू' ग़ालिब (प्रभुत्वशाली), ह़िक्मत वाला है।''
119 (उस दिन) अल्लाह कहेगा, 'आज वह दिन है कि सच्चों को उनकी सच्चाई
का फ़ायदा मिलेगा, उनके लिए ऐसे बाग़ हैं, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी,
उनमें वे हमेशा रहेंगे, अल्लाह उनसे राज़ी हुआ और वे उससे राज़ी हुए; यही
सबसे बड़ी कामियाबी है।''

120 आसमानों और ज़मीन में और जो कुछ उनके बीच है, सब पर अल्लाह ही की बादशाही है और 'वह' हर चीज़ पर कुदरत रखता है।

## सूर-ए-अनआम

यह सूरः मक्की है, इसमें अ़रबी के 12935 अक्षर, 3100 शब्द, 165 आयतें और 20 रूकूअ़ हैं

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

1 हर तरह की तअ़रीफ़ अल्लाह ही के लिए हैं, जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया, और अन्धेरा और रोशनी बनायी; फिर भी काफ़िर दूसरों को अपने रब के बराबर ठहराते हैं;

2 'वही है' जिसने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर (मरने का) एक वक़्त निश्चित कर दिया और उसके यहाँ एक मुद्दत और है; फिर भी तुम सन्देह करते हो!

3 और 'वही' अल्लाह आसमानों और ज़मीन में है, (जो) तुम्हारी छिपी और खुली सब बातों को जानता है, और जो कुछ तुम करते हो, (वह सब) उसके इल्म में है।

4 और अल्लाह की निशानियों में से कोई निशानी भी ऐसी नहीं है जो उनके पास न आई हो, मगर ये उससे मुंह फेर लेते हैं;

5 जब उनके पास हक़ आया, तो उसको भी झुठला दिया, तो उन चीज़ों का जिनका यह मज़ाक़ उड़ाते हैं, बहुत जल्द अंजाम मालूम हो जाएगा।

6 क्या उन्होंने नहीं देखा! कि 'हमने' उनसे पहले कितने गिरोहों (उम्मतों) को हलाक (विनष्ट) कर दिया, जिनके पैर धरती पर ऐसे जमा दिये थे कि तुम्हारे पैर भी ऐसे नहीं जमाए और उन पर आसमान से लगातार बारिश बरसायी और नहरें बना दीं, जो उनके नीचे बह रही थीं; फिर 'हमने' उन्हें उनके गुनाहों की वजह से हलाक कर दिया और उनके बाद दूसरे गिरोहों को उठाया।

7 और अगर 'हम' आप के ऊपर काग़ज़ में लिखी-लिखाई किताब भी उतार देते और यह उसे अपने हाथों से छू भी लेते, तब भी, जिन्होंने इन्कार किया, वे यही कहते, "यह तो बस एक खुला जादू है।"

8 और कहते हैं, "इस (नबी) पर फ़रिश्ता क्यों नहीं उतारा गया?" हालाँकि अगर 'हम' फ़रिश्ता उतारते तो फ़ैसला हो चुका होता, फिर उन्हें मोहलत न दी जाती।

9 और अगर 'हम' उस (नबी) को फ़रिश्ता बनाते, तो उसे आदमी ही (के रूप का) बनाते, इस तरह 'हम' उन्हें उसी सन्देह में डाल देते, जिस तरह सन्देह में वे पड़े हुए हैं।

10 और आप से पहले कितने ही रसूलों का मज़ाक़ उड़ाया जा चुका है, तो जिन
लोगों ने उनका मज़ाक़ उड़ाया था, उन्हें उसी ने आ घेरा जिस बात पर वे
हँसी उड़ाते थे।
11 कह दीजिए, ''धरती में चल फिर कर देखो कि झुठलाने वालों का कैसा अंजाम
हुआ!''
12 कह दीजिए, ''आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है किसका है?'' (फिर) कह
दीजिए, ''अल्लाह ही का है, उसी ने अपने ऊपर रहमत को लाज़िम कर लिया
है, 'वही' तुम सब को क़ियामत के दिन जिसमें कुछ भी शक नहीं, ज़रूर जमा
करेगा।'' जिन लोगों ने अपने आप को नुक़्सान में डाल रखा है, तो वे ईमान
नहीं लाते।
13 और 'उसी' का है जो कुछ रात में ठहरता है और दिन में, और 'वह' सब
कुछ सुनता, जानता है।
14 कह दीजिए, ''क्या मैं आसमानों और ज़मीन को पैदा करने वाले अल्लाह के
सिवा किसी और को वली (संरक्षक) बना लूँ? और 'वही' खिलाता है और
खुद नहीं खाता।'' कह दीजिए, ''मुझे'' हुक्म हुआ है कि सबसे पहले मैं उसके
आगे झुक जाऊँ (यानी इस्लाम लाऊँ), और यह कि तुम मुश्रिकों (अल्लाह के
साथ साझीदारों) में हरगिज़ शामिल न होना।''
15 कह दीजिए, ''अगर मैं अपने 'रब' की नाफ़रमानी करूँ, तो (उस हालत में)
मुझे एक बड़े दिन के अज़ाब का डर है।''
16 जिस व्यक्ति से उस दिन अज़ाब टाल दिया गया, उस पर अल्लाह ने मेहरबानी
फ़रमायी, और यह खुली हुई कामियाबी है।
17 और अगर अल्लाह तुम्हें कोई तक्लीफ़ पहुँचाए, तो उसके सिवा कोई दूर करने
वाला नहीं; और अगर 'वह' तुम्हें कोई भलाई पहुँचाए तो उसे हर चीज़ पर
क़ुदरत (सामर्थ्य) है।
18 और उसे अपने बन्दों पर पूरा अधिकार है, और 'वह' हिक्मत वाला, ख़बर
रखने वाला है।
19 कह दीजिए, ''किस चीज़ की गवाही सबसे बड़ी है?'' कह दीजिए, ''मेरे और
तुम्हारे बीच अल्लाह गवाह है, और यह क़ुर्आन मेरी ओर उतारा गया है,
ताकि मैं इसके ज़रिये तुम्हें सचेत कर दूँ; और जिस व्यक्ति को यह पहुँचे वह
भी ऐसा ही करे; क्या तुम हक़ीक़त में गवाही देते हो कि अल्लाह के साथ
कोई दूसरा भी मअ़बूद है?'' कह दीजिए,''मैं तो इसकी गवाही नहीं देता। कह
दीजिए, 'वह' तो केवल अकेला ही मअ़बूद है, और जिसको तुम लोग साझी
ठहराते हो, उससे मेरा कोई सम्बन्ध नहीं।''
20 जिन लोगों को 'हमने' किताब दी है, वे उसे इस तरह पहचानते हैं, जिस
तरह अपने बेटों को पहचानते हैं; जिन्होंने अपने आप को घाटे में डाला है,
वे ईमान नहीं लाते।
21 और उस व्यक्ति से बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा? जो अल्लाह पर झूठ गढ़े

या उसकी आयतों को झुठलाए, बेशक ज़ालिम लोग कभी कामियाब नहीं हो
सकते।
22 और जिस दिन 'हम' सब लोगों को जमा करेंगे, फिर मुश्रिकों से पूछेंगे, कि
वे तुम्हारे साझीदार कहाँ हैं जिनका तुम दावा किया करते थे?''
23 फिर उनका कोई फ़ित्ना (बहाना) बाक़ी न रहेगा, सिवाय इसके, कि वे कहेंगे,
''अल्लाह की क़सम! हमारे रब हम मुश्रिक (बहुदेववादी) नहीं थे।''
24 देखो! कैसा वे अपने बारे में झूठ बोले, और वह सब गुम हो कर रह गया,
जो कुछ वे गढ़ा करते थे;
25 और उनमें कुछ ऐसे हैं जो तुम्हारी ओर कान लगाए रखते हैं, और 'हमने'
तो उनके दिलों पर पर्दे डाल रखे हैं, कि वे उसको समझ न सकें, और उनके
कानों में बोझ पैदा कर दिया, और वे चाहे हर तरह की निशानियाँ देख लें,
मानेंगे नहीं; यहाँ तक कि जब वे तुम्हारे पास आकर तुमसे झगड़ते हैं, तो जो
काफ़िर हैं, कहते हैं, ''यह तो बस पहले के लोगों की कहानियाँ हैं।''
26 और वे उससे रोकते हैं और ख़ुद भी उससे दूर रहते हैं, और वे तो बस
अपने आप को ही हलाक करते हैं, और उन्हें एहसास भी नहीं।
27 और अगर तुम उस वक़्त देख सकते, जब यह आग के पास खड़े किये जाएँगे
और कहेंगे, ''क्या ही अच्छा होता! कि हम फिर लौटा दिये जाएँ, ताकि अपने
रब की आयतों को न झुठलाएँ, और मानने वालों में हो जाएँ।''
28 हाँ! बल्कि यह जो कुछ पहले छिपाया करते थे, वह उनके सामने आ गया,
और अगर यह (दुनिया में) लौटा भी दिये जाएँ, तो फिर वही कुछ करने लगेंगे,
जिससे उनको मना किया गया था, बेशक यह झूठे हैं।
29 और कहते हैं, ''जो कुछ है बस यही हमारी दुनिया की ज़िन्दगी है और हम
फिर ज़िन्दा नहीं किये जाएँगे।''
30 और अगर तुम देख सकते! जब यह अपने रब के सामने खड़े किये जाएँगे,
'वह' (अल्लाह) कहेगा, ''क्या यह (दोबारा ज़िन्दा होना) हक़ नहीं?'' तो वे
कहेंगे, ''क्यों नहीं, हमारे रब की क़सम!'' 'वह' कहेगा, ''अच्छा तो उस इन्कार
के बदले अज़ाब का मज़ा चखो।''
31 वे घाटे में पड़े, जिन लोगों ने अल्लाह से मिलने को झुठलाया, यहाँ तक कि
जब अचानक उन पर वह घड़ी आ जाएगी, तो वे कहेंगे, ''हाय! अफ़सोस,
उस कोताही पर जो इस (क़ियामत) के बारे में हमसे हुई'' और हाल यह होगा
कि अपने बोझ अपनी पीठों पर उठाए हुए होंगे, देखो! कितना बुरा बोझ है
जो यह उठाए हुए हैं।
32 और दुनिया की ज़िन्दगी एक खेल और तमाशों के अलावा कुछ भी नहीं है,
और आख़िरत का घर उनके लिए बहुत अच्छा है, जो डर रखते हैं; तो क्या
तुम अक़्ल से काम नहीं लेते!
33 'हमें' मालूम है, जो कुछ वे कहते हैं उससे आप को दुःख पहुँचता है; तो यह

हक़ीक़त में आप को नहीं झुठलाते, बल्कि, वे ज़ालिम  अल्लाह की आयतों
का इन्कार करते हैं;
34 और आप से पहले भी बहुत-से रसूल झुठलाए जा चुके हैं, तो वे अपने
झुठलाए जाने और तक्लीफ़ दिये जाने पर सब्र करते रहे, यहाँ तक कि उनके
पास हमारी मदद पहुँच गयी, और कोई नहीं, जो अल्लाह की बातों को बदल
सके, और आप के पास तो कुछ रसूलों की भी ख़बरें पहुँच चुकी हैं;
35 और अगर उनका मुँह मोड़ना तुम पर बोझ होता है, तो अगर तुमसे हो सके!
तो ज़मीन में कोई सुरंग या आसमानों में कोई सीढ़ी ढूँढ़ निकालो, और उनके
पास कोई निशानी ले आओ; और अगर अल्लाह चाहता तो तुम सबको सीधे
रास्ते पर इकट्ठा कर देता, इसलिए तुम जाहिलों में (या नादान) न होना।
36 बात यह है, कि क़ुबूल वही करते हैं जो सुनते भी हैं; रहे मुर्दे, तो अल्लाह
उन्हें (क़ियामत के दिन) उठा खड़ा करेगा, फिर उसी की ओर पलटेंगे;
37 और वे कहते हैं, ''उस (नबी) पर उसके रब की ओर से कोई निशानी क्यों
नहीं उतारी  गई?'' कह दीजिए, ''अल्लाह तो इस पर क़ादिर है कि कोई
निशानी उतारे, लेकिन उनमें से अक्सर लोग नहीं जानते।''
38 धरती पर चलने वाला, या दो परों से उड़ने वाला, कोई परिन्दा हो; यह सब
तुम्हारी ही तरह के गिरोह हैं; 'हमने' किताब में कोई भी चीज़ नहीं छोड़ी है;
फिर (जान लो कि) वे अपने रब की ओर इकट्ठा किये जाएँगे।
39 और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया; वे बहरे और गूँगे हैं, अन्धेरों
में पड़े हुए हैं; अल्लाह जिसे चाहे भटका दे और जिसे चाहे सीधी राह पर
लगा दे।
40 कह दीजिए, ''क्या तुमने यह भी सोचा कि अगर तुम पर अल्लाह का अ़ज़ाब
आ जाए, या वह घड़ी  तुम्हारे सामने आ जाए, तो क्या तुम अल्लाह के सिवा
किसी और को पुकारोगे? अगर तुम सच्चे हो (तो बताओ),
41 (नहीं) बल्कि तुम 'उसी' को पुकारते हो, तो जिस (दुःख) के लिए तुम 'उसे'
पुकारते हो, 'वह' अगर चाहता है तो उसको दूर कर देता है, और जिनको
तुम शरीक बनाते हो, (उस वक़्त) उन्हें भूल जाते हो।''
42 और 'हमने' तुमसे पहले कितनी उम्मतों(समुदायों) की ओर रसूल भेजे, फिर
'हमने' उन्हें तंगियों और मुसीबतों में डाला, ताकि वे अजिज़ी (विनम्रता) करें;
43 जब 'हमारी' ओर से उन पर सख़्ती आयी तो फिर क्यों नहीं आजिज़ी
(विनम्रता) करते? लेकिन उनके दिल तो कठोर हो गये थे और जो कुछ वे
करते थे, शैतान ने उसे उनके लिए मुज़य्यन (मनमोहक़) बना दिया था;
44 फिर जब उसे उन्होंने भुला दिया जो उन्हें नसीह़त की गयी थी, तो 'हमने'
उन पर हर चीज़ के दरवाज़े खोल दिये; यहाँ तक कि जो कुछ उन्हें मिला था,
जब वे उसमें मग्न हो गये तो अचानक 'हमने' उन्हें पकड़ लिया, तो वे उस
वक़्त नाउम्मीद हो कर रह गये;
45 इस तरह ज़ालिम लोगों की जड़ काट दी गयी, और तमाम तअ़रीफ़ें अल्लाह
ही के लिए हैं, जो सारे संसार का रब है।

46 कह दीजिए, ‘‘क्या तुमने यह भी सोचा, कि अगर अल्लाह तुम्हारे सुनने की, देखने की ताक़त छीन ले और तुम्हारे दिलों पर मुहर लगा दे, तो अल्लाह के सिवा मअ़बूद (उपास्य) कौन है, जो तुम्हें यह लाकर दे?’’ देखो! किस तरह ‘हम’ तरह-तरह की निशानियाँ बयान करते हैं, फिर भी यह लोग मुँह फेरे रहते हैं।

47 कह दीजिए, ‘‘क्या तुमने यह भी सोचा! कि तुम पर अचानक बेख़बरी में या ख़बर आने के बाद अल्लाह का अ़ज़ाब आ जाए, तो क्या ज़ालिम लोगों के अ़लावा कोई और भी हलाक होगा?’’

48 और हमने रसूलों को ख़ुशख़बरी सुनाने वाला और सचेत करने वाला बना कर भेजा’’ तो जो व्यक्ति ईमान लाए और सुधर जाए, तो ऐसे लोगों के लिए न कुछ ख़ौफ़ होगा और न वे ग़मगीन होंगे।

49 और जिन्होंने ‘हमारी’ आयतों को झुठलाया, उन्हें तो अ़ज़ाब होकर ही रहेगा, क्योंकि वे नाफ़रमानी किया करते थे।

50 कह दीजिए,‘‘मैं तुमसे यह नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं, और न मैं ग़ैब (परोक्ष) का इल्म रखता हूँ; और न मैं तुमसे यह कहता हूँ कि ‘मैं कोई फ़रिश्ता हूँ, मैं तो बस उसी के हुक्म पर चलता हूँ जो मेरी ओर वह्य की जाती है,’’ कह दीजिए, ‘‘क्या अन्धा और आँखों वाला दोनों बराबर होते हैं? तो फिर तुम सोच-विचार क्यों नहीं करते?’’

51 और उनको इस (क़ुर्आन) के ज़रिये सचेत कर दीजिए! जिन्हें इस बात का डर है कि उनको अपने रब के पास इस हाल में इकट्ठा किया जाएगा, कि ‘उसके’ सिवा न तो उनका कोई हमदर्द होगा और न कोई सिफ़ारिशी,’’ ताकि वे परहेज़गार बनें।

52 और जो लोग अपने ‘रब’ को राज़ी करने के लिए सुबह और शाम पुकारते रहते हैं, ऐसे लोगों को (अपने से) दूर न करना, उनके हिसाब की तुम पर कोई ज़िम्मेदारी नहीं, और न तुम्हारे हिसाब की उन पर कोई ज़िम्मेदारी है, कि ‘तुम उन्हें दूर कर दो तो ज़ालिमों में से हो जाओगे,

53 और इसी तरह ‘हमने’ कुछ लोगों को दूसरे के ज़रिये आज़माइश में डाला, ताकि वे कहें, ‘‘क्या यह वही लोग हैं, जिन पर अल्लाह ने हममें से इनूआ़म किया?’’-क्या अल्लाह शुक्र करने वालों को नहीं जानता?!

54 और जब आप के पास ऐसे लोग आएँ, जो हमारी आयतों पर ईमान रखते हैं, तो कह दीजिए, ‘‘सलाम हो तुम पर! तुम्हारे रब ने रह़मत को अपने ऊपर ज़रूरी कर लिया है कि तुममें से जो कोई नासमझी से कोई बुराई कर बैठे, फिर उसके बाद तौबः कर ले और अपनी इस्लाह़ (सुधार) कर ले, तो वह बख़्शने वाला, मेहरबान है;

55 और इसी तरह ‘हम’ अपनी आयतें खोल-खोल कर बयान करते हैं और इस लिए कि गुनहगारों का रास्ता ज़ाहिर हो जाए।

56 कह दीजिए, ‘‘तुम लोग अल्लाह के सिवा जिन्हें पुकारते हो उनकी इबादत करने से मुझे रोका गया है, कह दीजिए ‘‘मैं तुम्हारी इच्छाओं की पैरवी नहीं

करूँगा, क्योंकि तब तो मैं भी गुमराह हो जाऊँगा और तब तो मैं हिदायत
पाने वाले लोगों में न रहूँगा।''
57 कह दीजिए, ''मैं अपने 'रब' की ओर से खुली हुई दलील पर क़ायम हूँ, और
तुमने उसे झुठला दिया है; और जिस चीज़ के लिए तुम जल्दी मचा रहे हो,
वह मेरे पास तो है नहीं, हुक्म तो अल्लाह ही का है, 'वही' सच्ची बात बयान
करता है, और 'वही' सब से अच्छा फ़ैसला करने वाला है।''
58 कह दीजिए, ''जिस चीज़ की तुम्हें जल्दी पड़ी हुई है, अगर कहीं वह चीज़ मेरे
पास होती, तो मेरे और तुम्हारे बीच अब तक फ़ैसला हो चुका होता; और
अल्लाह ज़ालिमों को खूब जानता है।''
59 और 'उसी' के पास ग़ैब (परोक्ष) की कुन्जियां हैं, जिन्हें 'उसके' सिवा कोई
नहीं जानता; जल और थल में जो कुछ है, उसे 'वह' जानता है, और जो
पत्ता भी गिरता है, उसे 'वह' ज़रूर जानता है; और ज़मीन के अन्धेरों में कोई
दाना हो, और कोई हरी, या सूखी चीज़ हो, मगर वह सब रौशन किताब में
मौजूद है;
60 और 'वही' है जो रात को तुम्हें मौत देता है; और जो कुछ तुम दिन में करते
हो, उसकी ख़बर रखता है; फिर 'वह' तुम्हें दिन में इसलिए उठा देता है,
ताकि तय की हुई मुद्दत पूरी हो जाए। फिर 'उसी' की ओर तुम्हें लौटना है,
फिर 'वह' तुम्हें बता देगा, जो कुछ तुम करते रहे हो;
61 और 'वह' अपने बन्दों पर पूरा क़ाबू रखने वाला है; और 'वह' तुम पर
निगरानी करने वाले को मुक़र्रर किये रखता है, यहाँ तक कि तुममें से जब
किसी की मौत आती है तो हमारे भेजे हुए (फ़रिश्ते) उसे कब्ज़े में कर लेते
हैं, और वे किसी तरह की कोताही नहीं करते।
62 फिर लोग अपने मालिक अल्लाह के पास बुलाए जाएँगे, जान लो! हुक्म 'उसी'
का है और 'वह' बहुत जल्द हिसाब लेने वाला है।
63 कह दीजिए, ''कौन है? जो ख़ुश्की और तरी (जल, थल) के अन्धेरों से तुम्हें
छुट्कारा देता है, 'जिसे' तुम गिड़गिड़ाते हुए और चुपके- चुपके पुकारने लगते
हो कि हमें अगर इससे बचा लिया तो हम उसके ज़रूर शुक्रगुज़ार हो जाएँगे।''
64 कह दीजिए, ''अल्लाह तुम्हें इस (तंगी) से, और हर बेचैनी से नजात देता है?
फिर भी तुम उसका साझीदार ठहराने लगते हो!''
65 कह दीजिए, ''वह'' इसकी कुद्रत रखता है कि तुम पर, तुम्हारे ऊपर से या
तुम्हारे पैरों के नीचे से, कोई अज़ाब भेज दे; या तुम्हें टोलियों में बाँट कर
आपस में भिड़ा दे और एक को दूसरे से लड़ाई का मज़ा चखाए।'' देखो!
'हम' कैसे आयतों को तरह-तरह से बयान करते हैं, ताकि ये समझें;
66 और इस (क़ुर्आन) को आप की क़ौम ने झुठला दिया, हालाँकि वह हक़ है,
कह दीजिए, ''मैं तुम पर कोई निगराँ (संरक्षक) नहीं हूँ,
67 हर ख़बर के लिए एक वक़्त मुक़र्रर है, और जल्द ही तुम्हें मालूम हो जाएगा।''
68 और जब आप ऐसे लोगों को देखें जो हमारी आयतों पर नुक्ता-चीनी करने
में लगे हैं, तो उनसे मुँह फेर लें यहाँ तक कि वे दूसरी बातों में लग जाएँ;

और अगर शैतान आप को भुला दे, तो याद आने पर उन ज़ालिमों के पास न बैठें

69 और उनके हिसाब के बारे में तो उन लोगों पर कुछ भी ज़िम्मेदारी नहीं, जो डर रखते हैं; और अगर है तो बस नसीहत ताकि वे डरें।

70 और जिन लोगों ने अपने दीन को खेल और तमाशा बना रखा है, और दुनिया की ज़िन्दगी ने उन्हें धोखे में डाल रखा है, छोड़ो उन लोगों को; हाँ, इसके ज़रिये से नसीहत करते रहिए, ताकि कोई अपने आ़माल की वजह से हलाकत में न डाला जाए; अल्लाह के सिवा न तो कोई उसका दोस्त होगा, और न कोई सिफ़ारिश करने वाला; और अगर वह छुट्कारा पाने के लिए बदले में कोई चीज़ भी देना चाहे तो भी, वह उससे न लिया जाएगा; यही लोग हैं, जो अपने आ़माल के वबाल में तबाही में पड़ गये, उनके पीने के लिए खौलता हुआ पानी है और दुःख देने वाला अ़ज़ाब भी, इसलिए कि वे इन्कार करते थे।

71 कह दीजिए, ''क्या हम अल्लाह को छोड़ कर उसे पुकारने लग जाएँ जो हमें न फ़ायदा पहुँचा सकें, और न नुक़्सान; और हम उल्टे पाँव फिर जाएँ बाद इसके कि अल्लाह ने हमें राह दिखा दिया हो, उस व्यक्ति की तरह जिसे शैतानों ने ज़मीन में भटका दिया हो, और वह हैरान होकर रह गया हो; उसके कुछ साथी हों जो सीधी राह की ओर बुला रहे हों, कि 'हमारे पास चले आओ,'' कह दीजिए, ''रास्ता तो वही है जो अल्लाह ने बताया है, और हमें तो यह हुक्म मिला है कि हम अल्लाह रब्बुलआ़लमीन के फ़रमांबरदार हों।

72 और यह कि नमाज़ क़ायम करो और उसका डर रखो, और 'वही' तो है, जिसके पास तुम इकट्ठे किये जाओगे;

73 और 'वही' तो है जिसने आसमानों और ज़मीन को ह़क़ के साथ पैदा किया और जिस दिन वह किसी चीज़ को कहता है 'हो जा,' तो उसी वक़्त वह हो जाती है; उसका इर्शाद ह़क़ है; और जिस दिन 'सूर' (नरसिंघा) फूँका जाएगा, (उस दिन) उसी की बादशाहत होगी, 'वही' छिपे और ज़ाहिर का जानने वाला है, और 'वही' ह़िक्मत वाला, ख़बर रखने वाला है।

74 और (याद करो,) जब इब्राहीम ने अपने बाप 'आज़र' से कहा, ''क्या मूर्तियों को मअ़बूद बनाते हो?, मैं तो तुम्हें और तुम्हारी क़ौम को खुली गुमराही में पड़ा देख रहा हूँ,''

75 और इस तरह 'हम' इब्राहीम को आसमानों और ज़मीन के अ़जाइबात (विचित्र चीज़ें) दिखाने लगे, ताकि वह ख़ूब यक़ीन करने वालों में हो जाएँ;

76 जब रात ने उनको ढांप लिया, तो (उन्होंने) एक सितारा देखा; कहने लगे, ''यह मेरा रब है!'' जब वह ग़ायब हो गया तो कहने लगे, ''मुझे ग़ायब हो जाने वाले पसंद नहीं।

77 फिर जब उन्होंने चाँद को चमकता हुआ देखा तो कहा, यह मेरा रब है,'' फिर जब वह भी छिप गया तो कहा, ''अगर मेरा रब मुझे राह न दिखाता तो मैं उन लोगों में हो जाता जो भटक रहे हैं।''

78 फिर जब सूरज को देखा चमकता हुआ, तो कहने लगे, “मेरा रब यह है! यह
बहुत बड़ा है, “फिर जब वह भी डूब गया, तो कहने लगे, ‘ऐ मेरी क़ौम के
लोगो! जिन चीज़ों को तुम साझीदार बनाते हो मैं उनसे बेज़ार (विरक्त) हूँ,
79 मैंने सबसे यक्सू (एकाग्र) होकर अपना चेहरा उसकी ओर कर लिया है,
जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया, और मैं साझी ठहराने वालों में
से नहीं।”
80 और उनकी क़ौम उनसे झगड़ने लगी, तो उन्होंने कहा, “क्या तुम मुझसे
अल्लाह के बारे में झगड़ते हो? जबकि उसने मुझको सीधा रास्ता दिखा
दिया; मैं उनसे नहीं डरता, और जिन चीज़ों को तुम उसका साझीदार ठहराते
हो, बल्कि मेरा रब जो कुछ चाहता है वह पूरा हो कर रहता है, और हर
चीज़ पर मेरे रब के इल्म का अहाता (ज्ञान परिधि) है, फिर क्या तुम याद
नहीं करते;
81 और मैं तुम्हारे ठहराए हुए साझीदार से कैसे डरूँ! जबकि तुम इस बात से
नहीं डरते कि तुमने अल्लाह का साझीदार उस चीज़ को बनाया है, जिसकी
उसने कोई सनद (प्रमाण) नाज़िल नहीं की? अब दोनों फ़रीक़ों में से कौन सा
फ़रीक़ अम्न का हक़दार है? अगर तुम जानते हो (तो बाताओ)।”
82 जो लोग ईमान लाए और अपने ईमान में किसी ज़ुल्म की मिलावट नहीं की,
उनके लिए अम्न है और वही हिदायत पाने वाले हैं।
83 और यह हमारी वह दलील है जिसे ‘हमने’ इब्राहीम को उनकी अपनी क़ौम
के मुक़ाबले में दिया था; हम जिसे चाहते हैं दर्जे में ऊँचा कर देते हैं, बेशक
तुम्हारा रब हिक्मत वाला, इल्म वाला है।
84 और ‘हमने’ उन्हें (इब्राहीम को) इस्हाक़ और याक़ूब दिये, हर एक को राह
दिखाई; और नूह को ‘हमने’ इससे पहले राह दिखाई थी और उसकी औलाद
में दाऊद, और सुलेमान, और अय्यूब, यूसुफ़, और मूसा, और हारून को भी;
और इसी तरह ‘हम’ नेक लोगों को बदला दिया करते हैं।
85 और ज़करिया और यह्या और ईसा और इल्यास को भी (राह दिखायी), यह
सब नेक लोग थे।
86 और इस्माईल, अल्-यसअ़, और यूनुस और लूत को भी, और इन सबको
तमाम दुनिया के लोगों पर फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) दी थी।
87 और उनके बाप-दादा और औलाद, और उनके भाइयों में से कितने लोगों को
(राह दिखाई) और ‘हमने’ उन्हें चुन लिया था और उन्हें सीधे राह की ओर
चलाया था।
88 यह अल्लाह की हिदायत है, जिसके ज़रिये ‘वह’ अपने बन्दों में से जिसको
चाहता है राह दिखाता है, और अगर उन लोगों ने कहीं अल्लाह का साझीदार
ठहराया होता! तो उनका सब किया धरा बरबाद हो जाता।
89 ये ऐसे लोग थे जिनको ‘हमने’ किताब और हुक्म (शरीअ़त), और नुबूवत दी
थी; फिर अगर ये लोग इसे मानने से इन्कार करें, तो ‘हमने’ इन पर ऐसे
लोगों को मुक़र्रर कर दिये हैं कि वे उनसे कभी इन्कार करने वाले नहीं।

90 ये ऐसे लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने राह दिखाई थी, तो तुम उन्हीं की पैरवी करो; कह दीजिए,"मैं तुमसे इसका कोई बदला नहीं माँगता, यह (क़ुर्आन) तो सारी दुनिया के लोगों के लिए एक नसीहत है।"

91 और उन लोगों ने अल्लाह की क़द्र जैसी करनी चाहिए थी न की, जबकि उन्होंने कहा, "अल्लाह ने किसी इन्सान पर कुछ भी नाज़िल नहीं किया।" कह दीजिए, "फिर वह किताब किसने नाज़िल की थी जो किताब मूसा लोगों के लिए नूर और हिदायत लेकर आए थे, और जिसे तुम ने अलग-अलग पन्नों पर लिख रखा है, उनको तो दिखाते हो, लेकिन बहुत-सा छिपा ले जाते हो; और तुम्हें वह इल्म दिया गया है जिसे न तुम जानते थे, और न तुम्हारे बाप-दादा।" कह दीजिए, "अल्लाह ही ने," (इस किताब को नाज़िल किया) फिर उन्हें छोड़ दीजिए कि वे अपनी बेहूदा बक्वास में खेलते रहें।

92 और यह किताब, जिसे 'हमने' नाज़िल किया है, बरकत वाली है जो अपने से पहले की तस्दीक़ करती है, और इसलिए कि आप उम्मुल क़ुरा (केन्द्रीय बस्ती, मक्का) और उसके आस-पास के लोगों को आगाह कर दें; और जो लोग आख़िरत पर ईमान रखते हैं, वे उस (किताब) पर भी ईमान रखते हैं, और वे अपनी नमाज़ों की हिफ़ाज़त (रक्षा) करते हैं।

93 और उससे बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा! जो अल्लाह पर झूठ गढ़े, और यह कहे "मुझ पर वह्य (प्रकाशना) आती है," जबकि उस पर कोई वह्य न आई हो, और जो यह कहे, "जिस तरह की किताब अल्लाह ने नाज़िल की है, उस तरह की तो मैं भी बना लेता हूँ," और अगर तुम उन ज़ालिम लोगों को उस वक़्त देखो! जब वह मौत की सख़्तियों में हों; और फ़रिश्ते हाथ बढ़ा रहे हों कि निकालो अपनी जानें! आज तुमको ज़िल्लत वाला अ़ज़ाब दिया जाएगा, इसलिए कि तुम अल्लाह पर झूठ बोला करते थे और उसकी आयतों के मुक़ाबले में अकड़ते थे।

94 और तुम उसी तरह एक-एक करके 'हमारे' पास आ गये हो, जिस तरह 'हमने' तुम को पहली बार पैदा किया था; और जो कुछ 'हमने' तुमको दे रखा था उसे अपने पीछे छोड़ आए, और 'हम' तुम्हारे साथ, तुम्हारे उन सिफ़ारिशियों को भी नहीं देख रहे, जिनके बारे में तुम दावे से कहते थे, "वे तुम्हारे मामले में (अल्लाह के) शरीक हैं," तुम्हारे आपसी सम्बन्ध टूट चुके हैं, और जो दावे तुम किया करते थे वे सब जाते रहे।

95 बेशक अल्लाह ही दाने और गुठली को फाड़ (कर) उगाता है, 'वही' जानदार को बेजान से निकालता है; और वही बेजान से जानदार को निकालने वाला है'यही' तो अल्लाह है, फिर तुम कहाँ बहके जा रहे हो?-

96 'वही' सुबह की रोशनी फाड़ निकालता है, और 'उसी' ने रात को आराम के लिए बनाया, और सूरज और चाँद को हिसाब (का ज़रिया बनाया) यह बड़े ताक़त वाले, जानने वाले का ठहराया हुआ अन्दाज़ा है;

97 और 'वही' तो है जिसने तुम्हारे लिए तारे बनाए, ताकि तुम उनके ज़रिये ख़ुश्की (थल) और समुद्र के अंधेरों में राह पा सको; जो लोग जानना चाहें उनके लिए हमने निशानियाँ खोल-खोल कर बयान कर दी हैं;

98 और 'वही' तो है जिसने तुम्हें अकेली जान से पैदा किया, फिर एक ठहरने
की जगह है, और एक (अल्लाह के) सुपुर्द होने की; उन लोगों के लिए जो
समझें, 'हमने' निशानियाँ खोल-खोल कर बयान कर दीं हैं;
99 और 'वही' तो है जिसने आसमान से पानी बरसाया, फिर 'हमने' उसके ज़रिये
हर तरह की हरियाली (वनस्पति) उगाई; फिर उससे हमने हरी-भरी कोंपलें
निकालीं, और तने बढ़ाए जिससे 'हम' नीचे ऊपर चढ़े हुए दाने निकालते हैं,
और ख़जूर के गाभे से झुके हुए गुच्छे भी, और अंगूर, ज़ैतून और अनार
के बाग़ लगाए, जो एक-दूसरे से मेल खाते हैं, और नहीं भी, यह चीज़ें जब
फलती हैं, तो उनके फलों पर और उनके पकने पर नज़र करो! इनमें उन
लोगों के लिए जो ईमान लाते हैं, बड़ी निशानियाँ हैं।
100 और उन लोगों ने जिन्नों को अल्लाह का साझी ठहरा रखा है, हालाँकि उनको
'उसी' ने पैदा किया; और बे समझे-बूझे 'उसके' लिए बेटे और बेटियाँ गढ़
लीं, 'वह' इन बातों से, जो वे उसके बारे में बयान करते हैं, पाक है, और
उसकी शान उनसे ऊँची है।
101 (वही) आसमान और ज़मीन को पैदा करने वाला है, 'उसके' कोई औलाद
कैसे हो सकती है, जबकि उसके पत्नी ही नहीं,! और 'उसी' ने हर चीज़ को
पैदा किया है और 'वही' हर चीज़ का जानने वाला है;
102 'वही' अल्लाह, तुम्हारा रब है; उसके सिवा कोई मअ़बूद (उयास्य) नहीं; हर
चीज़ का पैदा करने वाला है; तो तुम उसी की इबादत करो, और 'वही' हर
चीज़ का निगराँ (संरक्षक) है;
103 निगाहें उसे नहीं पा सकतीं, और 'वह' निगाहों को पा लेता है, और 'वह'
बड़ा बारीक (गूढ़) ख़बर रखने वाला है।
104 (ऐ मुहम्मद) आप के रब की ओर से (आँख खोल देने वाले) प्रमाण (दलीलें)
आ चुके हैं; तो जिसने देखा, उसने अपना भला ही किया; और जो अन्धा
बना रहा, उसने अपने हक़ में बुरा किया; और मैं तुम्हारा निगहबान नहीं हूँ।
105 और इसी तरह 'हम' अपनी आयतें फेर-फेर कर बयान करते हैं, ताकि काफ़िर
यह न कहें, "तुम" (यह बातें अह्ले किताब से) सीखे हुए हो," और ताकि
समझने वाले लोगों के लिए बयान कर दें।
106 और जो हुक्म आप के 'रब' की ओर से आप के पास आता है, उसी की
पैरवी कीजिए; 'उसके' सिवा कोई मअ़बूद नहीं, और मुश्रिकों पर ध्यान न
दीजिए;
107 और अगर अल्लाह चाहता, तो यह लोग शिर्क न करते; और 'हमने' आपको
उन पर निगहबान (संरक्षक) मुक़र्रर नहीं किया और न आप उनके कोई
ज़िम्मेदार ही हैं;
108 और जिन लोगों को यह मुश्रिक अल्लाह के सिवा पुकारते हैं, उनको बुरा न
कहना! यह भी कहीं अल्लाह को बेअदबी से बिना समझे-बूझे बुरा न कह
बैठें; इस तरह 'हमने' हर फ़िर्क़े (गिरोह) के आ़माल (उनकी नज़रों में) अच्छे

कर दिखाए हैं, फिर उनको अपने रब की ओर लौट कर जाना है, तब 'वह' उनको बताएगा कि वे क्या-क्या किया करते थे?

109 और यह लोग तो अल्लाह की सख़्त-सख़्त क़समें खाते हैं कि अगर उनके पास कोई निशानी आ जाए, तो उस पर वे ज़रूर ईमान लाएँ; कह दीजिए, "निशानियाँ तो अल्लाह ही के पास हैं।" और तुम्हें क्या पता! जब वे आ जाएँगी; तब भी वे ईमान नहीं लाएँगे;

110 और 'हम' उनके दिलों को और उनकी निगाहों को फेर देंगे, जिस तरह वे पहली बार ईमान नहीं लाए थे; और 'हम' उन्हें छोड़ देंगे कि वे अपनी सरकशी में भटकते रहें;

111 और अगर 'हम' उनकी ओर फ़रिश्ते भी उतार देते, और मुर्दे भी उनसे बातें करने लगते, और 'हम' हर चीज़ उनके सामने लाकर इकट्ठा कर देते, तो भी वे ईमान न लाते; सिवाय इसके कि अल्लाह ही की मर्ज़ी हो, लेकिन उनमें अक्सर लोग समझ नहीं रखते;

112 और इसी तरह 'हमने' इन्सानों और जिन्नों में से शैतानों को हर नबी का दुश्मन बनाया, जो चिकनी-चुपड़ी बात एक-दूसरे के मन में डाल कर धोखा देते थे और अगर तुम्हारा रब चाहता तो वह ऐसा काम न करते, तो अब उनको छोड़ दो, जो कुछ वे गढ़ते हैं।

113 और ताकि जो लोग आख़िरत को नहीं मानते, उनके दिल उसकी ओर झुकें, और ताकि वह उसे पसंद कर लें, और ताकि जो कमाई उन्हें करनी है कर लें।

114 क्या मैं अल्लाह के सिवा किसी और को फ़ैसला करने वाला बनाऊँ हांलाकि 'वही' है जिसने तुम्हारी ओर किताब नाज़िल की है, जिसमें (हर तरह की) बातें खोल-खोल कर बता दी गई हैं; और जिन लोगों को 'हमने' किताब दी थी, वह भी जानते हैं कि यह तुम्हारे 'रब' की ओर से ह़क़ के साथ नाज़िल हुई है, तो तुम हरगिज़ शक में न पड़ना।

115 और तुम्हारे 'रब' की बात बिल्कुल सच्ची और इन्साफ़ की है, कोई 'उसके' कलाम को बदल नहीं सकता, और 'वह' सुनता, जानता है।

116 और ज़मीन में अक्सर लोग ऐसे हैं कि अगर तुम उनके कहने पर चलो, तो वह तुमको अल्लाह के रास्ते से भटका दें; वे तो केवल अट्कल ही के पीछे चलते हैं और बस अटकलें ही लगाते रहते हैं।

117 आप का 'रब' उन्हें अच्छी तरह जानता है जो उसके रास्ते से भटकता है और वह उन्हें भी जानता है जो सीधी राह पर हैं।

118 तो जिस चीज़ पर अल्लाह का नाम लिया गया हो, उसको खाओ; अगर तुम उसकी आयतों को मानते हो।

119 और क्या बात है! कि तुम उसमें से न खाओ, जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया हो; और जो चीज़ें अल्लाह ने तुम पर ह़राम की हैं, वह पूरी तरह तुम से बयान कर दी हैं; यह और बात है कि उसके लिए कभी तुम्हें मजबूर

होना पड़े; और बहुत से लोग तो बिना इल्म के, मनमाने तरीक़े पर (लोगों को) बहकाते रहते हैं, बेशक तुम्हारा 'रब' हद से बाहर जाने वालों को खूब जानता है।

120 और छोड़ दो खुले गुनाह और छिपे गुनाह को भी, बेशक गुनाह करने वालों को उसका बदला दिया जाएगा, जिस कमाई में वे लगे रहे।

121 और उसे न खाओ जिस पर अल्लाह का नाम न लिया गया हो, और उसमें से खाना गुनाह है; और शैतान तो अपने दोस्तों के दिलों में यह बात डालता है, कि तुमसे झगड़ें; और अगर तुम लोगों ने उसकी बात मान ली तो बेशक तुम भी मुश्रिक हो जाओगे।

122 क्या वह व्यकित जो पहले मुर्दा था, फिर 'हमने' उसमें जान डाली, और उसके लिए रोशनी कर दी, जिसको लिए हुए वह लोगों के बीच चलता-फिरता है; कहीं उस व्यक्ति की तरह हो सकता है जो अन्धेरों में पड़ा हुआ हो, वहाँ से निकल नहीं सकता? इसी तरह काफ़िरों को जो भी वह कर रहे हैं भला दिखाई देता है;

123 और इसी तरह 'हमने' हर बस्ती में उसके बड़े-बड़े अपराधियों को लगा दिया है ताकि वह चालें (षड़यंत्र) चलें; और जो चालें वे चलते हैं, अपनी ही जानों के लिए चलते हैं, और (जबकि) उन्हें इसका भी एहसास नहीं होता;

124 और जब उनके पास कोई आयत आती है, तो कहते हैं, ''हम हरग़िज़ नहीं मानेंगे, जब तक कि वैसी ही चीज़ हमें न दी जाए जो अल्लाह के रसूलों को दी गईं,'' अल्लाह खूब जानता है, जिस पर अपना पैग़ाम भेजता है; जो लोग गुनाहगार हैं, उनको अल्लाह के यहाँ ज़िल्लत होगी और बड़ा अज़ाब होगा, इसलिए कि चालें चलते थे।

125 तो जिस व्यक्ति को अल्लाह सीधी राह दिखाना चाहता है, उसका सीना इस्लाम के लिए खोल देता है; और जिसे गुमराह करना चाहता है, उसके सीने को तंग (संकुचित) कर देता है, और (इस्लाम के ख़्याल से) दम घुट्ने लगता है, मानो (उनकी रूह) आसमान पर चढ़ रहा हो, इस तरह अल्लाह उन लोगों को गंदगी में डाले रखता है, जो ईमान नहीं लाते।

126 और यह तुम्हारे 'रब' का सीधा रास्ता है, 'हमने' निशानियाँ ध्यान देने वालों के लिए, खोल-खोल कर बयान कर दी हैं।

127 उनके लिए उनके 'रब' के पास सलामती का घर है, और 'वही' उनका वली (संरक्षक) है, उन कामों की वजह से जो वे करते हैं।

128 और जिस दिन 'वह' सबको जमा करेगा, (और कहेगा), ''ऐ जिन्नों के गिरोह! तुम ने तो इन्सानों से खूब फ़ायदा उठाया,'' और इन्सानों में से जो उनके साथी होंगे, वे कहेंगे, ''ऐ हमारे रब! हम आपस में एक- दूसरे से फ़ायदा उठाते रहे और इस वक़्त को पहुँच गये जो 'आप' ने हमारे लिए निश्चित किया था।'' 'वह' कहेगा, ''आग (जहन्नम) तुम्हारा ठिकाना है,'' उसमें तुम्हें हमेशा रहना है,'' मगर अल्लाह जितना चाहे, बेशक तुम्हारा रब हिक्मत वाला, जानने वाला है;

129 और इसी तरह 'हम' ज़ालिमों को, एक-दूसरे (को जहन्नम) का साथी बना
देंगे, उस कमाई की वजह से जो वे करते थे;
130 "ऐ जिन्नों और इन्सानों के गिरोह! क्या तुम्हारे पास तुम्हीं में से रसूल नहीं
आए थे, जो तुम्हें 'मेरी' आयतें सुनाते और इस दिन के पेश आने से तुम्हें
डराते?" वे कहेंगे, "क्यों नहीं!! (रसूल तो आए थे) हम खुद ही अपने
ख़िलाफ़ गवाह हैं।" इन लोगों को दुनियावी ज़िन्दगी ने धोखे में डाल रखा था,
मगर अब वे खुद अपने ही ख़िलाफ़ गवाही देने लगे कि वे इन्कार करने वाले
थे;
131 यह जान लो कि तुम्हारा 'रब' ऐसा नहीं कि बस्तियों को ज़ुल्म से हलाक कर
दे और वहाँ के रहने वालों को ख़बर न हो।
132 और सभी के दर्जे उनके आ़माल के हिसाब से हैं, और जो काम यह लोग
करते हैं, उससे तुम्हारा 'रब' बेख़बर नहीं;
133 और आप का 'रब' बेनियाज़ (निस्पृह) रहमत वाला है, अगर 'वह' चाहे तो
तुम्हें ख़त्म कर दे और तुम्हारे बाद जिन लोगों को चाहे ले आए, जिस तरह
उसने तुम्हें भी दूसरे लोगों की नस्ल से पैदा किया है;
134 बेशक जिस चीज़ का तुमसे वादा किया जाता है, उसे ज़रूर आना है; और
तुम में उसे मात देने (हराने) की कुदरत नहीं है;
135 कह दीजिए, "ऐ मेरी क़ौम के लोगो! तुम अपनी जगह काम करते रहो,
मैं अपनी जगह काम कर रहा हूँ; बहुत जल्द तुमको मालूम हो जाएगा कि
आख़िरत (जन्नत) में किसका घर होगा," बेशक ज़ालिम लोग कामियाब होने
वाले नहीं!
136 और अल्लाह ही की पैदा की हुई खेती और चौपायों में से अल्लाह का भी
एक हिस्सा मुक़र्रर कर लेते हैं, और अपने ख़याल से कहते हैं, "यह तो
अल्लाह का है और यह हमारे ठहराए हुए साझीदारों का है," फिर जो उनके
साझीदारों का (हिस्सा) है, वह अल्लाह को नहीं पहुँचता; और जो अल्लाह
का है, वह उनके साझीदारों को पहुँच जाता है, कितना बुरा है! जो वे फ़ैसला
करते हैं;
137 इसी तरह बहुत-से मुश्रिकों को उनके साझीदारों ने उनकी औलादों को जान
से मार डालना अच्छा कर दिखाया, ताकि उन्हें हलाकत में डाल दें और उनके
लिए उनके दीन में संदेह पैदा कर दें, और अगर अल्लाह चाहता तो वे ऐसा
न करते; तो उनको छोड़ दीजिए कि वह जानें! और उनका झूठ।
138 और वे कहते हैं, "यह चौपाए और खेती मना है, इसे तो केवल वही खा
सकता है; जिसे हम चाहें।" ऐसा वे खुद अपने ख़याल से कहते हैं और कुछ
चौपाए ऐसे हैं, जिनके पीठ पर चढ़ना हराम कर लिया है, और कुछ जानवर
ऐसे हैं जिन पर अल्लाह का नाम नहीं लेते; यह सब उन्होंने अल्लाह पर
झूठ गढ़ा है, जल्द ही वह उनके झूठ गढ़ने का बदला देगा;
139 और वे कहते हैं, "जो कुछ इन जानवरों के पेट में है वह ख़ास हमारे मर्दों
के लिए है और वह हमारी औरतों के लिए हराम है। लेकिन अगर वह मुर्दा

हो तो वे सब उसमें शरीक हैं।" बहुत जल्द ही 'वह' उन्हें उनके ऐसा कहने का बदला देगा, बेशक 'वह' बड़ा हिक्मत वाला, ख़ूब जानने वाला है।

140 वे लोग घाटे में रहे जिन्होंने जानबूझ कर अपनी औलाद को क़त्ल किया, और अल्लाह पर झूठ गढ़ कर, उसकी दी हुई रोज़ी को हराम ठहराया, हक़ीक़त में वे भटक गये, और वे सीधी राह पाने वाले नहीं।

141 और 'वही' है जिसने बाग़ पैदा किये (उसमें से), कुछ सहारे से चढ़ाए जाते हैं और कुछ नहीं चढ़ाए जाते और खजूर और खेती भी, जिनकी पैदावार तरह-तरह की होती है, और ज़ैतून और अनार, जो एक- दूसरे से मिलते जुलते हैं और नहीं भी; जब यह फलें तो उनका फल खाओ, और जब उनको काटो तो अल्लाह का हक़ भी अदा करो जो उसकी कटाई के दिन (वाजिब) होता है; और हद से आगे न बढ़ो, क्योंकि 'वह' हद से आगे बढ़ने वालों को पसंद नहीं करता।

142 और चौपायों में से कुछ बोझ उठाने वाले और कुछ धरती से लगे हुए जानवर पैदा किये, अल्लाह ने जो कुछ तुम्हें दिया है उसमें से खाओ और शैतान के क़दमों पर न चलो, वही तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है।

143 आठ नर-मादा पैदा किये- दो भेड़ की जाति से और दो बकरी की जाति से- कह दीजिए, "क्या 'उसने' दोनों नर हराम किये हैं या दोनों मादा या उसको जो इन दोनों मादा के पेट में लिपट रहा हो? अगर सच्चे हो तो मुझे इल्म (ज्ञान) के आधार पर बताओ,"

144 और दो ऊँटों की (जाति से) और दो गायों की (जाति से) कह दीजिए, "क्या उसने दोनों नर हराम किये हैं या दोनों मादा को, या उसको, जो इन दोनों मादा के पेट में हो? या तुम मौजूद थे जब अल्लाह ने तुम्हें इसका हुक्म दिया था? फिर उस व्यक्ति से बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा! जो लोगों को बहकाने के लिए, बिना इल्म के अल्लाह पर झूठ गढ़े? बेशक अल्लाह ज़ालिमों को राह नहीं दिखाता।"

145 कह दीजिए, "जो हुक्म मुझ पर नाज़िल हुआ है, मैं उनमें कोई चीज़ नहीं पाता कि किसी खाने वाले पर उसका कोई खाना हराम किया गया हो, सिवाय इसके कि वह मुर्दार हो, या बहता हुआ ख़ून हो, या सुअर का गोश्त हो, कि यह सब नापाक हैं; या कोई गुनाह की चीज़ हो या उस पर अल्लाह के सिवा किसी और का नाम लिया गया हो; और अगर कोई मजबूर हो जाए, लेकिन न तो नाफ़रमानी करे और न हद से बाहर निकल जाए, तो तुम्हारा रब माफ़ करने वाला, रहम वाला है।"

146 और यहूदियों पर 'हमने' सब नाखून वाले जानवर हराम कर दिये थे, और गायों और बकरियों में से उनकी चरबी हराम कर दी थी, सिवाय उस (चर्बी) के जो उनकी पीठ पर लगी हो, या ओझड़ी में हो या हड्डी में मिली हो; यह सज़ा 'हमने' उनको उनकी शरारत की वजह से दी थी, और 'हम' तो सच कहने वाले हैं।

147 और अगर यह लोग आप को झुठलाएँ तो कह दीजिए कि तुम्हारा रब

वसीअ़(व्यापक) रह़मत वाला है, मगर उसका अ़ज़ाब गुनहगार लोगों से नहीं टलेगा।''
148 मुश्रिक (बहुदेववादी) कहेंगे, ''अगर अल्लाह चाहता तो न हम साझीदार ठहराते और न हमारे बाप-दादा ही; और न हम किसी चीज़ को ह़राम ठहराते,'' ऐसे ही उनसे पहले के लोगों ने झुठलाया था, यहाँ तक कि हमारे अ़ज़ाब का मज़ा चख रहे हैं; कह दीजिए, ''क्या तुम्हारे पास कोई इल्म (सनद) है कि उसे हमारे सामने पेश करो?''तुम लोग गुमान पर चलते हो और अट्कल से काम लेते हो;
149 कह दीजिए, ''पूरी हुज्जत (तर्क) तो अल्लाह ही की है, अगर 'वह' चाहता तो तुम सब को सीधा रास्ता दिखा देता।''
150 कह दीजिए, ''अपने उन गवाहों को लाओ, जो इसकी गवाही दें कि अल्लाह ने इसे ह़राम किया है।'' फिर अगर वे गवाही दें तो तुम उनके साथ गवाही न देना, और उन लोगों की इच्छाओं के पीछे न चलना जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया और जो आख़िरत को नहीं मानते और (वे दूसरों को) अपने रब के बराबर ठहराते हैं।
151 कह दीजिए, ''आओ, हम तुम्हें वह बातें पढ़ कर सुनाएँ जो चीज़ तुम्हारे रब ने तुम पर ह़राम कर दी हैं यह कि किसी चीज़ को अल्लाह का साझीदार न बनाना और माँ-बाप से (अच्छा) सुलूक करते रहना, और भुखमरी के डर से अपनी औलाद को क़त्ल न करना क्योंकि तुमको और उनको 'हम' ही रोज़ी देते हैं, और बेह़याई के कामों के पास भी न जाना चाहे वह खुली हुई हों या छिपी हुई हो, और किसी जानदार को जिसके क़त्ल को अल्लाह ने ह़राम कर दिया हो, क़त्ल न करना, मगर ह़क़ के लिए जिसे शरीअ़त हुक्म दे; इन बातों की 'वह' तुम्हें ताकीद करता है, ताकि तुम समझो;
152 और यतीम के माल के पास भी न जाना! मगर ऐसे तरीक़े से जो बेहतर हो, यहाँ तक कि वह जवानी को पहुँच जाए; और नाप और तौल इन्साफ़ के साथ पूरा-पूरा किया करो; 'हम' किसी को तक्लीफ़ नहीं देते मगर उसकी ताक़त के मुताबिक़; और जब बात कहो तो इन्साफ़ की कहो चाहे मामला अपने नातेदार का ही क्यों न हो; और अल्लाह के अ़हद (प्रतिज्ञा) को पूरा करो; यह बातें हैं, (जिसकी उसने) तुम्हें ताकीद की, ताकि तुम ध्यान रखो;
153 और यह कि मेरा सीधा रास्ता यही है, तो तुम इसी पर चलो और दूसरे रास्तों पर न चलो कि वे तुम्हें 'उसकी' राह से हटा कर इधर-उधर कर देंगे; यह वही बात है जिसकी उसने तुम्हें ताकीद की! ताकि तुम परहेज़गार बनो।''
154 फिर 'हमने' मूसा को किताब दी थी, ताकि उन लोगों पर जो भले हैं नेअ़मत पूरी कर दें, और हर चीज़ का बयान और हिदायत और रह़मत है, ताकि वे लोग अपने रब से मिलने पर ईमान लाएँ।
155 और यह किताब 'हमने' ही उतारी है, जो बरकत वाली है; तो तुम उसकी पैरवी करो और डरो, ताकि तुम पर मेहरबानी की जाए;
156 कि ऐसा न हो! कि तुम कहने लगो, ''किताब तो केवल हमसे पहले दो गिरोहों पर उतारी गयी थी, और हम उनके पढ़ने-पढ़ाने से ग़ाफ़िल थे,''

157 या यह कहने लगो, “अगर हम पर किताब उतारी गयी होती! तो हम उन
लोगों से बढ़ कर सीधी राह पर होते!” तो अब तुम्हारे पास तुम्हारे रब की
ओर से दलील और रहमत आ गई है; तो उससे बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा!
जो अल्लाह की आयतों को झुठलाए और उनसे (लोगों को) फेरे?-जो लोग
हमारी आयतों से रोकते हैं, उन्हें ‘हम’ इस रोकने की वजह से जल्द ही बुरी
सज़ा देंगे।
158 क्या यह लोग इसी का इन्तिज़ार कर रहे हैं कि इनके पास फ़रिश्ते आ जाएँ
या खुद तुम्हारा रब आ जाए, या तुम्हारे रब की कोई निशानी आ जाए?
जिस दिन तुम्हारे रब की कोई निशानी आ जाएगी, फिर किसी व्यक्ति को
उसका ईमान कुछ फ़ायदा न पहुँचाएगा जो व्यक्ति पहले ईमान न लाया हो
या जिसने अपने ईमान में कोई भलाई न कमाई हो, कह दीजिए, “तुम भी
इन्तिज़ार करो, हम भी इन्तिज़ार करते हैं।”
159 जिन लोगों ने अपने धर्म के टुकड़े-टुकड़े कर दिये और खुद गिरोहों में बँट
गये, आपका उनसे कोई सम्बन्ध नहीं; उनका मामला तो बस अल्लाह के हवाले
है, फिर ‘वह’ उन्हें बता देगा जो कुछ वे किया करते थे।
160 जो कोई नेकी के साथ आएगा उसे उसका दस गुना बदला मिलेगा, और जो
बुराई के साथ आएगा उसे वैसी ही सज़ा मिलेगी, और उन पर ज़ुल्म नहीं
किया जाएगा।
161 कह दीजिए, “मेरे ‘रब’ ने मुझे सीधा रास्ता दिखा दिया, बिल्कुल ठीक धर्म
इब्राहीम की मिल्लत का, जो सबसे कट कर एक (अल्लाह) का हो गया था
और वह मुश्रिकों में से न था।”
162 कह दीजिए, “मेरी नमाज़ और मेरी कुर्बानी, मेरा जीना और मरना सब
अल्लाह के लिए है, जो सारी दुनिया का रब है;
163 जिसका कोई साझीदार नहीं, और मुझे तो इसी का हुक्म मिला है, और मैं
सबसे पहला मुस्लिम (आज्ञाकारी) हूँ।”
164 कह दीजिए, “क्या मैं अल्लाह के सिवा कोई और रब ढूँढू, जबकि हर चीज़
का रब ‘वही’ है” और यह कि हर एक व्यक्ति जो कुछ (बुराई) कमाता है,
उसका फल वही भोगेगा; और कोई व्यक्ति किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा,
फिर तुम लोगों को अपने रब की ओर लौट कर जाना है, उस समय ‘वह’
तुम्हें बता देगा, जिसमें तुम्हारा आपस में इख़्तिलाफ़ था।
165 और ‘वही’ तो है जिसने ज़मीन में तुमको अपना ख़लीफ़ा (उत्तराधिकारी)
बनाया और एक-दूसरे पर दर्जे बुलन्द किये ताकि जो कुछ उसने तुमको दिया
है उसमें ‘वह’ तुम्हारा इम्तिहान ले, बेशक तुम्हारा रब जल्द ही सज़ा देने वाला
और ‘वह’ बड़ा माफ़ करने वाला, रहम वाला है।

यह सूरः मक्की है, इस में अ़रबी के 14635 अक्षर, 3387शब्द, 206 आयतें, और 25 रूकूअ़ हैं।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

1 अलिफ्- लाम्- मीम्- साद्,

2 (ऐ मुह़म्मद) किताब जो आप की ओर उतारी गयी, इससे आपके सीने में कोई तंगी न हो, ताकि आप इसके ज़रिये सचेत करें, और यह ईमान वालों के लिए नसीह़त है;

3 जो (किताब) आप के रब की ओर से आपकी ओर नाज़िल हुई है, उसकी पैरवी करें और उसे छोड़ कर दूसरे साथियों की पैरवी न करें, (मगर) तुम लोग कम ही नसीह़त कुबूल करते हो।

4 और कितनी ही बस्तियाँ थीं, जिन्हें 'हमने' हलाक कर दिया, उन पर 'हमारा' अ़ज़ाब रात को आता था, जबकि वे सो रहे होते, या (दिन को) वे क़ैलूला (दोपहर को आराम) कर रहे होते;

5 तो जिस वक्त उन पर अ़ज़ाब आता था तो उनके मुहँ से यही निकलता था, "हक़ीक़त में हम ही ज़ालिम थे"

6 तो 'हम' उन लोगों से ज़रूर पूछेंगे, जिनके पास रसूल भेजे गये थे, और 'हम' रसूलों से भी ज़रूर पूछेंगे।

7 फिर 'हम' पूरे इल्म के साथ उनके सामने सब बयान कर देंगे, कि 'हम' कहीं ग़ायब तो नहीं थे।

8 और उस दिन बिल्कुल पक्का सच्चा वज़न होगा, तो जिनके अ़मल वज़न में भारी होंगे, वही कामियाब होंगे।

9 और वे लोग जिनके अ़मल वज़न में हल्के होंगे, तो वही वे लोग होंगे, जिन्होंने अपने आप को घाटे में डाला, क्योंकि वह 'हमारी' आयतों का इन्कार और अपने ऊपर जुल्म करते रहे।

10 और 'हम' ही ने ज़मीन में तुम्हारा ठिकाना बनाया और उसमें तुम्हारे लिए रोज़ी के सामान पैदा किये, (मगर) तुम बहुत कम शुक्र करते हो।

11 और 'हम' ही ने तुमको पैदा किया, फिर तुम्हारी सूरत व शक्ल बनाई, फिर फ़रिश्तों को हुक्म दिया, "आदम को सज्दः करो" तो उन्होंने सज्दः किया सिवाय इब्लीस के, वह सज्दः करने वालों में से न हुआ;

12 फ़रमाया, "तुझे किसने सज्दः करने से रोका, जबकि 'मैंने तुझे हुक्म दिया?" 'बोला; "मैं इससे अच्छा हूँ 'तूने' मुझे आग से पैदा किया और इसे मिट्टी से पैदा किया।"

13 फ़रमाया, ''उतर जा यहाँ से! तुझे कोई हक़ नहीं है कि यहाँ घमंड करे, बस
निकल जा; बेशक तू ज़लील है।''
14 (उसने) कहा, ''मुझे उस दिन तक मोहलत दीजिए, जिस दिन लोग उठाए
जाएँगे।'
15 फ़रमाया,''तुझे मोहलत है।''
16 कहा, ''अच्छा, इस वजह से कि 'तूने' मुझे गुमराही में डाला है, मैं भी 'तेरी'
सीधी राह पर उनके लिए घात लगा कर ज़रूर बैठूँगा;
17 फिर उनके आगे, और उनके पीछे, और उनके दाएँ, और उनके बाएँ से, उनके
पास आऊँगा; और 'तू' उनमें से अक्सर लोगों को शुक्रगुज़ार न पाएगा।''
18 फ़रमाया, ''निकल जा यहाँ से! ज़लील व ख़्वार होकर, उनमें से जो तेरी पैरवी
करेंगे, 'मैं' ज़रूर तुम सबसे जहन्नम को भर दूँगा।''
19 और ''ऐ आदम! तुम और तुम्हारी बीवी दोनों जन्नत में रहो बसो, फिर जहाँ
से चाहो खाओ, और इस पेड़ के पास न जाना' वरना ज़ालिमों में से हो
जाओगे।''
20 तो शैतान ने दोनों को बहकाया, ताकि उनकी शर्मगाहों को, जो उन दोनों से
छिपी थीं, उन दोनों के सामने खोल दे; और उस (इब्लीस) ने कहा, ''तुम्हारे
'रब' ने तुम दोनों को जो इस पेड़ से रोका है, तो केवल इसलिए कि कहीं
ऐसा न हो कि तुम फ़रिश्ते हो जाओ, या कहीं ऐसा न हो कि तुम हमेशा
अमर (जीते) रहो''
21 और उसने उन दोनों के आगे क़समें खाईं, ''मैं ही तुम दोनों का भला चाहने
वाला हूँ;''
22 इस तरह धोखा देकर उसने उन दोनों को झुका लिया, जब उन्होंने उस पेड़
(के फल) को चखा, तो उनकी शर्मगाहें एक-दूसरे के सामने खुल गयीं और
वह अपने ऊपर बाग़ के पत्ते जोड़-जोड़ कर रखने लगे, तब उनके रब ने
उनको पुकारा, ''क्या 'मैंने' तुम दोनों को इस पेड़ से रोका न था और तुमसे
कहा न था कि शैतान तुम्हारा खुला दुश्मन है?''
23 दोनों बोले, ''हमारे रब! 'हमने' अपने आप पर ज़ुल्म किया, अब अगर 'तूने'
हमें माफ़ न किया और हम पर रहम न किया, तो फिर हम घाटा उठाने वालों
में से होंगे।''
24 फ़रमाया, ''उतर जाओ! तुम आपस में एक-दूसरे के दुश्मन हो और तुम्हारे
लिए एक वक़्त तक ज़मीन पर ठिकाना और (ज़िन्दगी का) सामान है।''
25 फ़रमाया, ''उसी में तुम्हें जीना और उसी में तुम्हें मरना है और उसी में से
तुमको निकाला जाएगा।''
26 ऐ आदम की औलाद! 'हमने' तुम्हारे लिए पोशाक (वस्त्र) उतारा है कि तुम्हारी
शर्मगाहों को छिपाये और हिफ़ाज़त व ज़ीनत का ज़रिया हो; और परहेज़गारी
का लिबास, वह सबसे अच्छा है, यह अल्लाह की निशानियों में से है, ताकि
वे ध्यान दें।
27 ऐ आदम की औलाद! (कहीं) शैतान तुम्हें बहकावे में न डाल दे, जिस तरह

'उसने' तुम्हारे माँ-बाप को जन्नत से निकलवा दिया; उनके कपड़े उन पर से उतरवा दिये, ताकि उनकी शर्मगाहें एक-दूसरे के सामने खोल दे, वह और उनका गिरोह वहाँ से तुम्हें देखता है, जहाँ से तुम उनको नहीं देख सकते 'हमने' तो शैतानों को उन लोगों का दोस्त बना दिया है, जो ईमान नहीं रखते।

28 और जब कोई बेहयाई का काम करते हैं तो कहते हैं, 'हमने' अपने बाप-दादा (पूर्वजों) को इसी तरीक़े पर पाया है, और अल्लाह ही ने हमें इसका हुक्म दिया है कह दीजिए, ''अल्लाह कभी बेहयाई की बातों का हुक्म नहीं दिया करता; भला तुम अल्लाह के बारे में ऐसी बात क्यों कहते हो, जिसका तुम्हें इल्म नहीं?''

29 कह दीजिए, ''मेरे 'रब' ने तो न्याय का हुक्म दिया है और यह कि इबादत के हर मौक़े (अवसर) पर अपना रूख ठीक रखो और केवल 'उसी' के बन्दे एवं फ़रमाँबरदार बनकर 'उसे' पुकारो; जैसे 'उसने' तुम्हें पहली बार पैदा किया था वैसे ही तुम फिर पैदा होगे।''

30 एक गिरोह को 'उसने' राह दिखाई; परन्तु दूसरा गिरोह ऐसा है, जिसके ऊपर गुमराही चिपक कर रह गई; इन लोगों ने अल्लाह को छोड़कर शैतानों को अपना दोस्त बना लिया, और समझते हैं कि सीधी राह पर हैं।

31 ऐ आदम की औलाद! इबादत के हर मौक़े (अवसर) पर अपनी ज़ीनत (शोभा धारण) करो; और खाओ और पियो, परन्तु ह़द से आगे न बढ़ो; 'वह' ह़द से आगे बढ़ने वालों को पसंद नहीं करता।

32 कह दीजिए, ''किसने ह़राम कर रखा है अल्लाह की उस ज़ीनत (शोभा) को, जिन्हें उसने अपने बन्दों के लिए पैदा किया और पाक चीज़ों को? कह दीजिए, ''यह दुनिया की ज़िन्दगी में भी ईमान वालों के लिए है; (और) क़ियामत के दिन तो यह केवल उन्हीं के लिए होगी, इसी प्रकार 'हम' आयतों को उन लोगों के लिए विस्तार से बयान करते हैं, जो जानना चाहें।''

33 कह दीजिए,''मेरे 'रब' ने केवल फ़ुह़्श (बेहयाई के) कामों को ह़राम किया है जो उनमें से ज़ाहिर हों उन्हें भी और जो छिपे हों और गुनाह को और नाह़क़ ज़्यादती से ह़क़ मारने को, और इस बात को कि तुम अल्लाह का साझीदार ठहराओ, जिसके लिए उसने कोई प्रमाण नहीं उतारा और इस बात को भी कि तुम अल्लाह पर थोपकर ऐसी बात कहो जिसका तुम्हें इल्म न हो।''

34 और हर उम्मत (समुदाय) के लिए एक निश्चित मुद्दत है, फिर जब उनका निश्चित समय आ जाता है, तो एक घड़ी भर न पीछे हट सकते हैं और न आगे बढ़ सकते हैं।

35 ऐ आदम की औलाद! अगर तुम्हारे पास तुम्हीं में से रसूल आएँ; तुम्हें 'मेरी' आयतें सुनाएँ, तो जिस व्यक्ति ने डर रखा और सुधार कर लिया, तो ऐसे लोगों के लिए न कोई डर होगा और न वे ग़मगीन होंगे।

36 और जिन्होंने 'हमारी' आयतों को झुठलाया और उनके मुक़ाबले में अकड़ दिखाई; वही आग (जहन्नम) वाले हैं, जिसमें वे हमेशा (जलते) रहेंगे।

37 तो उससे बढ़कर ज़ालिम कौन है, जिसने अल्लाह पर झूठ गढ़ा (मिथ्यारोपण

किया) या उसकी आयतों को झुठलाया? ऐसे लोगों को उनके लिए लिखा हुआ हिस्सा पहुँचता रहेगा, यहाँ तक कि जब 'हमारे' भेजे हुए (फ़रिश्ते) उनकी जान (प्राण) निकालने के लिए उनके पास आएँगे तो कहेंगेः "कहाँ हैं, वे जिन्हें तुम अल्लाह को छोड़कर पुकारते थे?" वे कहेंगे,"वे तो हमसे ग़ायब हो गये," और वे खुद अपने ख़िलाफ़ गवाही देंगे, कि वास्तव में हम इन्कार करने वाले थे।

38 'वह' कहेगा, "जिन्नों और इन्सानों के जो गिरोह तुमसे पहले गुज़रे हैं,उन्हीं के साथ तुम भी आग में दाख़िल हो जाओ।" जब भी कोई गिरोह दाख़िल होगा, तो वह अपनी बहन (अर्थात अपने जैसा दूसरे गिरोह) पर लानत करेगी, यहाँ तक कि जब सब उसमें जमा हो जाएँगे तो उनमें से बाद में आने वाले अपने से पहले वालों के बारे में कहेंगे, "ऐ हमारे रब! हमें इन्हीं लोगों ने गुमराह किया था; तो 'तू' इन्हें आग का दोगुना अ़ज़ाब दे।" वह कहेगा, "हर एक के लिए दोगुना ही है, लेकिन तुम नहीं जानते,"

39 और उनमें से पहले आने वाले अपने से बाद में आने वालों से कहेंगे, "फिर हमारे मुक़ाबले में तुम्हें कोई फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) नहीं, तो जो (अ़मल) तुम करते रहे हो, उसके बदले में तुम अ़ज़ाब का मज़ा चखो!"

40 जिन लोगों ने 'हमारी' आयतों को झुठलाया, और उनके मुक़ाबले में अकड़ दिखाई, उनके लिए आसमान के दरवाज़े नहीं खोले जाएँगे और न वे जन्नत में दाख़िल होंगे, यहां तक कि ऊँट सूई के नाके में से न गुज़र जाए, और हम मुजरिमों को ऐसा ही बदला देते हैं;

41 उनके लिए बिछौना जहन्नम का होगा और ओढ़ना भी उसी का, और ज़ालिमों को 'हम' ऐसा ही बदला देते हैं।

42 और (इसके विपरीत) जो लोग ईमान लाए, और उन्होंने अच्छे काम किये- 'हम' किसी पर उसकी ताक़त (सामर्थ्य) से ज़्यादा तक्लीफ़ देते ही नहीं, ऐसे ही लोग जन्नत वाले हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे-

43 और उनके सीनों में एक-दूसरे के प्रति जो रंजिश होगी, उसे 'हम' दूर कर देंगे- उनके नीचे नहरें बह रही होंगी और वे कहेंगे, "सभी तअ़रीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, 'जिसने' इसकी ओर हमें राह दिखाई, और अगर अल्लाह हमें राह न दिखाता तो हम हरगिज़ राह न पा सकते थे, बेशक 'हमारे' रब के रसूल हक़ (सत्य) लेकर आए थे।" और उन्हें आवाज़ दी जाएगी, "यह जन्नत है जिसके तुम वारिस बनाए गये उन कामों के बदले में जो तुम (दुनिया में) किया करते थे।"

44 और जन्नतवाले आग वालों को पुकारेंगे, "हमसे हमारे रब ने जो वादा किया था, उसे हमने सच पा लिया, तो क्या तुमसे तुम्हारे रब ने जो वादा कर रखा था, तुमने भी उसे सच पाया?" वे कहेंगे, " हाँ" इतने में एक पुकारने वाला उनके बीच पुकारेगा, "अल्लाह की फिट्कार हो ज़ालिमों पर-"

45 जो अल्लाह की राह से रोकते और उस में टेढ़ (कमी) निकालना चाहते और आख़िरत का इन्कार करते थे,

46 और इन दोनों (जन्नत व जहन्नम) के बीच एक ओट (दीवार) होगी, और

अअ़राफ़ (दीवार) पर कुछ लोग होंगे जो हर एक को उनके मस्तक (लक्षणों) से पहचान लेंगे, और वे जन्नत वालों से पुकार कर कहेंगे, ''तुम पर सलाम हो'' यह लोग (अभी) जन्नत में दाख़िल न हुए होंगे, और वे आस लगाए होंगे;
47 और जब उनकी निगाहें आगवालों की ओर फिरेंगी तो कहेंगे, ''ऐ हमारे रब हमें ज़ालिम लोगों में शामिल न कीजिए।''
48 और ये अअ़राफ़ (एक दीवार) वाले कुछ ऐसे लोगों से- जिन्हें ये उनके लक्षणों से पहचानते होंगे, कहेंगे, ''तुम्हारे जत्थे तो तुम्हारे कुछ काम न आए और न तुम्हारा अकड़ते रहना ही,''
49 क्या ये वही लोग हैं, जिनके वि-ाय में तुम क़समें खाते थे कि अल्लाह उन पर अपनी रह़मत न करेगा, ''तुम जन्नत में दाख़िल हो जाओ, तुम्हारे लिए न कोई डर है और न तुम्हें कोई ग़म होगा।''
50 और आग वाले जन्नत वालों को (रोते हुए) पुकारेंगे कि ''थोड़ा पानी हम पर बहा दो, या उन चीज़ों में से कुछ दे दो जो अल्लाह ने तुम्हें दी है, वे कहेंगे, अल्लाह ने तो यह दोनों चीज़ें इन्कार करने वालों के लिए ह़राम कर दी हैं-''
51 जिन्होंने अपना दीन खेल-तमाशा बना रखा था और जिन्हें दुनिया की ज़िन्दगी ने धोखे में डाल रखा था; तो आज 'हम' भी उन्हें भुला देंगे, जिस तरह यह लोग अपने इस दिन की मुलाक़ात को भूले रहे और 'हमारी' आयतों का इन्कार करते रहे;
52 और 'हम' उनके पास एक ऐसी किताब ले आए हैं, जिसको इल्म व हिदायत के साथ खोल-खोल कर बयान किया गया है, वह ईमान वालों के लिए हिदायत और रह़मत है।
53 क्या ये लोग केवल उसी के इन्तिज़ार में हैं कि उसकी ह़क़ीक़त सामने आ जाए? जिस दिन उसकी ह़क़ीक़त सामने आ जाएगी, तो जो लोग उसको पहले से भूले हुए थे, वे बोल उठेंगे, ''बेशक हमारे रब के रसूल ह़क़ लेकर आए थे, तो क्या हमारे कोई सिफ़ारिशी हैं, जो हमारी सिफ़ारिश करें, या हम (दुनिया में) फिर लौटा दिये जाएँ कि जो अ़मल हम करते थे उनके सिवा और (अच्छे) अ़मल करें?'' बेशक उन लोगों ने अपना नुक़सान किया और जो कुछ वे झूठ गढ़ा करते थे, सब उनसे गुम (ग़ायब) हो गये।
54 बेशक तुम्हारा रब अल्लाह ही है, जिसने आसमानों और ज़मीन को छः दिन में पैदा किया- फिर अर्श पर (राज सिंहासन पर विराजमान हुआ) जा ठहरा, 'वही' रात को दिन पर ढ़ाँपता है, जो तेज़ी से उसका पीछा करती है- और सूरज, चाँद, और तारे भी बनाए, इस तरह कि वे 'उसके' हुक्म से काम में लगे हुए हैं; देखो! सब मख़्लूक़ भी (सृष्टि) 'उसी' की है, और 'उसी' का हुक्म है; अल्लाह सारे संसार का रब, बड़ी बरकत वाला है।
55 अपने रब को गिड़गिड़ा कर और चुपके-चुपके पुकारो, बेशक 'वह' ह़द से बढ़ने वालों को पसंद नहीं करता;
56 और धरती में 'उसके' सुधार के बाद बिगाड़ न पैदा करो, ख़ौफ़ और उम्मीद के साथ 'उसको' पुकारो, बेशक अल्लाह की रह़मत नेकी करने वालों से क़रीब है।

57 और 'वही' तो है जो अपनी रहमत से पहले हवाओं को ख़ुशख़बरी बना कर
भेजता है,यहाँ तक कि जब वह भारी-भारी बादलों को उठा लाती हैं तो 'हम'
उसको एक मरी हुई बस्ती की ओर हाँक देते हैं, फिर उससे पानी बरसाते
हैं, फिर उससे हर तरह के फल निकालते हैं; इसी तरह 'हम' मुर्दों को ज़िन्दा
करके बाहर निकालेंगे-ताकि तुम्हें ध्यान रहे;
58 और अच्छी ज़मीन में पेड़ पौधे 'उसके' रब के हुक्म से निकलते हैं; और जो
ज़मीन ख़राब हो गयी, तो उससे खराब पैदावार के सिवा कुछ नहीं निकलता;
इसी तरह 'हम' निशानियों को उन लोगों के लिए तरह-तरह से बयान करते
हैं, जो शुक्रगुज़ार हैं।
59 'हमने' नूह़ को उनकी क़ौम की ओर भेजा, तो उन्होंने कहा, "ऐ मेरी क़ौम
के लोगो! अल्लाह की इबादत करो, 'उसके' सिवा तुम्हारा कोई मअ़बूद नहीं;
मुझे तुम्हारे लिए एक बड़े दिन के अ़ज़ाब का डर है;
60 उनकी क़ौम के सरदारों ने कहा, "हम तो तुम्हें खुली गुमराही में पड़ा देख
रहे हैं।"
61 उन्होंने कहा, "ऐ मेरी क़ौम के लोगो! मुझ में किसी तरह की गुमराही नहीं,
बल्कि मैं सारी दुनिया के रब का एक रसूल हूँ।"
62 तुम्हें अपने रब का पैग़ाम पहुँचाता हूँ, और तुम्हारा भला चाहता हूँ, और
मुझको अल्लाह की ओर से ऐसी बातें मालूम हैं, जो तुम नहीं जानते।"
63 क्या तुमको इस बात से तअ़ज्जुब हुआ कि तुम्हारे पास तुम्हीं में से एक व्यक्ति
के ज़रिये, तुम्हारे 'रब' की नसीह़त आई? ताकि 'वह' तुम्हें सचेत कर दे, और
ताकि तुम परहेज़गार बनो और तुम पर रह़म किया जाए?
64 मगर उन लोगों ने उनको झुठला दिया, तो 'हमने' नूह़ को और जो उनके
साथ कश्ती (नौका) में सवार थे, उनको तो बचा लिया; और जिन लोगों ने
'हमारी' आयतों को झुठलाया था, उन्हें डुबो दिया, बेशक वे अन्धे लोग थे।
65 और आ़द (क़ौम) की ओर उनके भाई 'हूद' को भेजा, उन्होंने कहा, 'ऐ मेरी
क़ौम के लोगो! अल्लाह ही की इबादत करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई मअ़बूद
नहीं, तो क्या तुम डरते नहीं?"
66 तो उनकी क़ौम के सरदार, जो काफ़िर थे कहने लगे, हम तो देखते हैं कि
तुम तो बेवक़ूफ़ हो और हम तो तुम्हें झूठा समझते हैं।"
67 उन्होंने कहा, "ऐ मेरी क़ौम मुझ में बेवक़ूफ़ी की कोई बात नहीं है, बल्कि मैं
सारे संसार के 'रब' का रसूल हूँ;
68 मैं तुम्हें अपने 'रब' का पैग़ाम पहुँचाता हूँ और तुम्हारा अमानतदार, नसीह़त
करने वाला हूँ।
69 क्या तुमको इस बात से तअ़ज्जुब हुआ है, कि तुम्हारे पास तुम्हीं में से एक
व्यक्ति के ज़रिये तुम्हारे रब की नसीह़त आयी, ताकि 'वह' तुम्हें सचेत करे?
और याद करो," जब 'उसने' नूह़ की क़ौम के बाद तुम्हें उसका नायब बनाया
और (जिसमानी तौर पर भी) तुम्हें बढ़ाया, तो अल्लाह की नेअ़मतों को याद
करो, ताकि तुम्हें कामियाबी मिले।"

70 वे बोले, ''क्या तुम हमारे पास इसलिए आए हो कि अकेले अल्लाह की हम
इबादत करें और जिनकी हमारे बाप-दादा इबादत करते चले आए हैं उनको
हम छोड़ दें? फिर अगर तुम सच्चे हो तो जिस चीज़ से हमें डराते हो, उसे
ले आओ।''
71 उन्होंने कहा, ''तुम पर तो तुम्हारे रब की ओर से अ़ज़ाब और ग़ज़ब निश्चित
हो चुका है क्या तुम मुझसे ऐसे नामों के बारे में झगड़ते हो जो तुमने और
तुम्हारे बाप-दादा ने रख लिए हैं, जिनके लिए अल्लाह ने कोई सनद नाज़िल
नहीं की? अच्छा, तो तुम भी इन्तिज़ार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार
करता हूँ।''
72 फिर 'हमने' अपनी रह़मत से उन्हें और जो उनके साथ थे बचा लिया, और
उन लोगों की जड़ काट दी, जिन्होंने 'हमारी' आयतों को झुठलाया था और
वे ईमान लाने वाले ही न थे।
73 और 'समूद' की ओर उनके भाई 'स़ालेह़' को भेजा, उन्होंने कहा, ''ऐ मेरी
क़ौम के लोगो! अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई मअ़बूद
(उपास्य) नहीं, तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से एक खुली दलील आ चुकी
है; यह अल्लाह की ऊँटनी तुम्हारे लिए एक निशानी है, तो इसे छोड़ दो कि
अल्लाह की धरती पर चरती फिरे, और तुम उसे बुरी नियत से हाथ भी न
लगाना, वरना दर्दनाक अ़ज़ाब तुम्हें पकड़ लेगा।
74 और याद करो जब अल्लाह ने आ़द के बाद तुम्हें उसका नायब बनाया, और
धरती में तुम्हें ठिकाना दिया, तुम उसके समतल मैदानों में महल बनाते हो,
और पहाड़ों को काट-छाँट कर घर बनाते हो, तो अल्लाह की नेअ़मतों को
याद करो और ज़मीन में फ़साद न करते फिरो।''
75 तो उनकी क़ौम के सरदार लोग, जो बड़े बने हुए थे उन कमज़ोर लोगों से
जो उनमें ईमान लाए थे कहने लगे, ''क्या तुम जानते हो कि 'सालेह़' अपने
रब का भेजा हुआ है?'' उन्होंने कहा, ''जिस चीज़ के साथ वह भेजा गया है,
हम उस पर ईमान रखते हैं। ''
76 उन घमंड करने वालों ने कहा, ''जिस चीज़ पर तुम ईमान लाए हो, हम तो
उसको नहीं मानते;
77 फिर उन्होंने उस ऊँटनी की कूँचें- काट दीं, और अपने रब के हुक्म को
तोड़ दिया और बोले, ''ऐ सालेह़! हमें तू जिस चीज़ की धमकी देता है,
उसे हम पर ले आ, अगर तू ह़क़ीक़त में, रसूलों में से है।''
78 तो उनको एक भूँचाल ने आ पकड़ा और वे अपने घरों में औंधे पड़े रह गये।
79 फिर वह (सालेह़) उनके यहाँ से लौटे और कहा, ''ऐ मेरी क़ौम! मैं तो तुम्हें
अपने रब का पैग़ाम (सन्देश) पहुँचा चुका और मैंने तुम्हारा भला चाहा, लेकिन
तुम्हें अपने ख़ैर ख़्वाह पसंद ही नहीं आते!''
80 और 'हमने' लूत को भेजा! जब उन्होंने अपनी क़ौम से कहा, क्या तुम ऐसे
बेह़याई के काम करते हो, जिसे संसार में तुमसे पहले किसी ने नहीं किये?-
81 तुम औ़रतों को छोड़कर मर्दों से ख़्वाहिशे- नफ़्स (कामेच्छा) पूरी करते हो,
बल्कि तुम लोग ह़द से निकल जाने वाले हो।''

82 और उनकी क़ौम का जवाब इसके सिवा और कुछ न था, कि वे बोले
“निकालो इन लोगों को अपनी बस्ती से; यह लोग बड़े पाक बनना चाहते हैं!”
83 फिर ‘हमने’ उन्हें और उनके घर वालों को छुट्कारा दिया, सिवाय उनकी बीवी
के कि वह पीछे रह जाने वालों में से थी।
84 और ‘हमने’ उन पर एक बरसात (पत्थरों की) बरसाई, तो देख लो! कि
गुनहगारों का कैसा अंजाम हुआ?
85 और ‘मद्‌यन’ की ओर उनके भाई शुऐब को भेजा, (तो) उन्होंने कहा, “ऐ मेरी
क़ौम! अल्लाह ही की इबादत करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई मअ़बूद नहीं,
तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से निशानी आ चुकी है, तो तुम नाप और
तौल पूरी-पूरी किया करो, और लोगों को उनकी चीज़ें कम न दिया करो, और
ज़मीन में सुधार के बाद ख़राबी न करो; अगर तुम ईमान वाले हो, तो समझ
लो कि यह बात तुम्हारे हक़ में बेहतर है।
86 और हर रास्ते पर न बैठो कि धमकियाँ दिया करो और उस व्यक्ति को
अल्लाह की राह से रोकने लगो जो उस पर ईमान रखता हो, और न उस
रास्ते को टेढ़ा करने में लग जाओ; और याद करो वह वक़्त। जब कि तुम
थोड़े थे, फिर ‘उसने’ तुम्हें ज़्यादा कर दिया! और देखो, बिगाड़ पैदा करने
वालों का अंजाम कैसा हुआ!
87 और अगर तुममें एक गिरोह ऐसा हो, जो उस पर ईमान लाया हो, जिसके
साथ मैं भेजा गया हूँ और एक गिरोह ईमान न लाया, तो सब्र से काम लो,
यहाँ तक कि अल्लाह ‘हमारे’ बीच फ़ैसला कर दे, और ‘वह’ सबसे अच्छा
फ़ैसला करने वाला है।”
88 उनकी क़ौम के सरदार जो घमंड में पड़े हुए थे कहा, “ऐ शुऐब! हम तुझे
और तेरे साथ उन लोगों को, जो ईमान लाए हैं अपनी बस्ती से निकाल कर
रहेंगे, या (फिर) तुम हमारे मज़हब में लौट आओ” उन्होंने कहा, हमें नागवार
हो तब भी?
89 हम इसके बाद, कि अल्लाह ने हमें इससे छुटकारा दे दिया है, तुम्हारे मज़हब
में लौट आएँ, तो बेशक हम अल्लाह पर झूठ गढ़ने वाले होंगे, यह हमसे तो
होने वाला नहीं कि हम उसमें पलट कर आ जाएँ, मगर अल्लाह ही चाहे तो,
जो हमारा ‘रब’ है, इल्म के हिसाब से हमारा ‘रब’ हर चीज़ को अपने घेरे
में लिए हुए है; हमारा अल्लाह ही पर भरोसा है, ऐ हमारे रब! हमारे और
हमारी क़ौम के बीच हक़ का फ़ैसला कर दे, और ‘तू’ सबसे बेहतर फ़ैसला
करने वाला है।”
90 और उनकी क़ौम के सरदार, जो काफ़िर थे, कहने लगे, “अगर तुमने ‘शुऐब’
की पैरवी की, तो बेशक तुम घाटे में पड़ जाओगे।”
91 तो उनको एक दहला देने वाले भूँचाल ने आ पकड़ा, और फिर वे अपने घरों
में औंधे पड़े रह गये;
92 जिन्होंने शुऐब को झुठलाया था, ऐसे बरबाद हुए मानो वहाँ बसे ही न थे,
शुऐब को झुठलाने वाले ही घाटे में पड़ गये।
93 तो शुऐब उनमें से निकल आए और कहा! ऐ मेरी क़ौम के लोगो! मैंने तुमको

अपने रब का पैग़ाम पहुँचा दिया और मैंने तुम्हारा भला चाहा, तो मैं इन्कार
करने वालों पर कैसे अफ़सोस करूँ!''
94 और 'हमने' किसी बस्ती में कोई नबी नहीं भेजा, मगर वहाँ के रहने वालों को
(जो ईमान न लाए) दुखों और मुसीबतों में डाल दिया, ताकि वे गिड़गिड़ाएँ।
95 फिर 'हमने' बदहाली को खुशहाली में बदल दिया, यहाँ तक कि वे खूब
फले-फूले और कहने लगे, ''इसी तरह दुःख और सुख हमारे बाप-दादा को
भी पहुँचता रहा।'' तो 'हमने' उनको अचानक पकड़ लिया, और वे बेख़बर
थे;
96 और अगर उन बस्तियों के लोग ईमान ले आते और परहेज़गार हो जाते,
तो 'हम' उन पर आसमान और ज़मीन की बरकतें खोल देते; मगर उन्होंने
झुठलाया, तो जो कुछ वे करते थे, उसके बदले में 'हमने' उन्हें पकड़ लिया।
97 क्या बस्तियों के रहने वाले इससे बे ख़ौफ़ हैं कि उनको 'हमारा' अ़ज़ाब रात
को आए, जबकि वे सो रहे हों?
98 या क्या बस्तियों के लोग इस ओर से निडर हैं कि उन पर हमारा अज़ाब
दिन चढ़े आ जाए, और वे खेल रहे हों?
99 क्या यह लोग अल्लाह के उपाय (चाल) से बेफ़िक्र हो गये थे? तो अल्लाह की
उपाय से तो वही बेफ़िक्र होते हैं, जो घाटे में पड़ने वाले हैं।
100 क्या जो धरती के, उसके पहले रहने वाले लोगों के (मरने के) बाद वारिस
(उत्तराधिकारी) हुए हैं, उन्हें यह बात हिदायत की वजह नहीं बनी, कि अगर
'हम' चाहें तो उनके गुनाहों की वजह से उन पर मुसीबत डाल दें? और उनके
दिलों पर मुहर लगा दें, तो वे सुन ही न सकें।
101 ये कुछ बस्तियाँ हैं जिनके कुछ हालात 'हम' आप को सुनाते हैं, और उनके
पास उनके रसूल खुली-खुली निशानियाँ लेकर आए, लेकिन वे ऐसे न हुए कि
ईमान लाते, इसकी वजह यह थी कि वे पहले से झुठलाते रहे; काफ़िरों के
दिलों पर अल्लाह इसी तरह मुहर लगा दिया करता है।
102 और 'हमने' तो उनमें से अक्सर लोगों को अहद (प्रतिज्ञा) का पक्का न पाया,
और 'हमने' उनमें से अक्सर लोगों को नाफ़रमान ही पाया।
103 फिर 'हमने' उनके बाद मूसा को अपनी निशानियों के साथ फ़िरऔ़न और
उसके सरदारों के पास भेजा, तो उन लोगों ने उनके साथ ज़ुल्म (ह़क़ अदा
न) किया, तो देखो! फ़साद फैलाने वालों का कैसा अंजाम हुआ?
104 और मूसा ने कहा, ''ऐ फ़िरऔ़न! मैं सारी दुनिया के रब की ओर से रसूल
हूँ;
105 मुझ पर यह ह़क़ है कि मैं कोई बात अल्लाह पर गढ़ कर न कहूँ, मगर ह़क़
(बात ही) तुम्हारे 'रब' की ओर से खुली निशानी लेकर आया हूँ, तो बनी
इस्राईल को मेरे साथ जाने (की इजाज़त दे) दो।
106 (फ़िरऔ़न ने) कहा, ''अगर तुम कोई निशानी लेकर आए हो तो उसे पेश
करो, अगर तुम सच्चे हो;''

107 फिर उसने अपनी लाठी (अ़सा) डाल दी, तो वह एक खुला अज़्दहा (साँप) बन गया;
108 और उन्होंने अपना हाथ बाहर निकाला, तो वह देखने वालों के सामने चमक रहा था।
109 फ़िरऔ़न की क़ौम के सरदारों ने कहा, ''बेशक, यह तो बड़ा माहिर जादूगर है!-
110 यह चाहता है कि तुम्हें तुम्हारी धरती से निकाल दे, तो बताओ क्या कहते हो?''
111 उन्होंने कहा, ''इसे और इसके भाई को मोहलत दीजिए, और (अपने) कार्यकर्ताओं को शहरों में भेज दीजिए;
112 कि वे (साँप के) तमाम माहिर जादूगरों को ले आएँ।''
113 और जादूगर आए फ़िरऔ़न के पास कहने लगे, ''अगर हम जीत गये तो ज़रूर हमें बड़ा बदला दिया जाए''।
114 कहा, ''हाँ, और तुम क़रीबी लोगों में हो जाओगे।''
115 वह (जादूगर) बोले, ''ऐ मूसा ! या तुम फेंको और या हम फेंकते हैं?''
116 (मूसा ने) कहा, '' तुम ही डालो,'' फिर जब उन्होंने (जादू की चीज़ों को) डाला तो लोगों की आँखों पर जादू कर दिया और उन्हें भयभीत कर दिया, और बहुत बड़ा जादू दिखाया।
117 और 'हमने' मूसा की ओर वह्य (प्रकाशना) की कि ''आप अपनी लाठी डाल दें।'' फिर क्या देखते हैं कि वह उनके गढ़े हुए जादू की चीज़ों को निगलती जा रही है।
118 इस तरह ह़क़ ज़ाहिर हो गया, और जो कुछ वे कर रहे थे, सब बातिल (बेकार) हो गया।
119 तो वे लोग वहीं मग्लूब (हार गये) और ज़लील होकर रह गये;
120 और जादूगर सज्दे में गिर पड़े;
121 बोले, ''हम तो ईमान ले आए सारी दुनिया के रब पर;
122 मूसा और हारून के रब पर।''
123 फिरऔ़न बोला, ''इससे पहले कि मैं तुम्हें इजाज़त दूँ, तुम उस पर ईमान लाए! बेशक यह तो एक चाल है, जो तुम लोगों ने मिल कर शहर में किया है, ताकि उनमें के रहने वालों को वहाँ से निकाल दो। अच्छा, तो अब तुम्हें जल्द ही मालूम हुआ जाता है;
124 मैं तुम्हारे एक ओर के हाथ और दूसरी ओर के पाँव कटवा दूँगा; फिर तुम सबको सूली पर चढ़वा कर रहूँगा।''
125 उन्होंने कहा, ''हम तो अपने रब ही की ओर लौटेंगे;
126 और 'उसके' सिवा तुझको हमारी कौन सी बात बुरी लगी है? जब हमारे 'रब' की निशानियाँ हमारे पास आ गयीं, तो हम उन पर ईमान ले आए, ऐ रब!

हम पर सब्र के दहाने खोल दे और हमें इस ह़ाल में उठा कि हम मुस्लिम हों।''

127 और फ़िरऔ़न की क़ौम के सरदार कहने लगे, ''क्या आप मूसा और उसकी क़ौम को ऐसे ही छोड़ देंगे कि वह ज़मीन में बिगाड़ पैदा करें और आप को और आप के मअ़बूदों को छोड़ बैठें?'' उसने कहा, हम उनके बेटों को बुरी तरह क़त्ल करेंगे और उनकी बीवियों को ज़िन्दा रखेंगे, और बेशक हम उन पर पूरा अधिकार रखते हैं।''

128 मूसा ने अपनी क़ौम से कहा, ''अल्लाह से मदद माँगो और साबित क़दम रहो, ज़मीन तो अल्लाह की है! और 'वह' अपने बन्दों में से जिसे चाहता है, उसका मालिक बनाता है; और आखिरी नतीजा तो डर रखने वालों का ही है।''

129 उन्होंने कहा, ''तुम्हारे आने से पहले भी हम को तकलीफ़ें पहुँचती रही और आने के बाद भी, मूसा ने कहा, ''क़रीब है तुम्हारा 'रब' कि तुम्हारे दुश्मन को हलाक कर दे, और उसकी जगह तुम्हें ज़मीन में ख़लीफ़ा बनाए, फिर देखे कि तुम कैसे अ़मल करते हो।''

130 और 'हमने' फिरऔ़नियों को कई साल तक अकाल और पैदावार की कमी में डाले रखा, ताकि नसीह़त हासिल करें।

131 फिर जब उन्हें अच्छी ह़ालत पेश आती है तो कहते है, ''यह तो है ही हमारे लिए,'' और जब उन्हें बुरी ह़ालत पेश आती तो उसे मूसा और उसके साथियों की नहूसत (अपशगुन) बताते, जान लो! कि उनकी नहूसत तो अल्लाह ही के हाथ में है, लेकिन उनमें से अक्सर लोग नहीं जानते।

132 और बोले, ''तुम हम पर जादू करने के लिए चाहे जो निशानी ले आओ, मगर हम तुम पर ईमान लाने वाले नहीं।''

133 तो 'हमने' उन पर तूफान, और टिड्डियाँ और छोटे कीड़े (जुएँ), और मेढ़क, और खून- कितनी ही खुली हुई निशानियाँ भेजीं- मगर वे घमंड ही करते रहे; और वे लोग थे ही मुजरिम।

134 और जब कभी उन पर अ़ज़ाब आता तो कहते, ''ऐ मूसा हमारे लिए अपने 'रब' से दुआ़ करो, जैसा उसने तुमसे अह़द कर रखा है, अगर तुम हमसे अ़ज़ाब को टाल दोगे तो हम तुम पर ईमान ले आएँगे और बनी इस्राईल को भी तुम्हारे साथ जाने देंगे।''

135 फिर जब 'हम' एक मुद्दत के लिए अ़ज़ाब को दूर कर देते, जिस तक उनको पहुँचना था तो वह अह़द को तोड़ डालते।

136 तो 'हमने' उनसे बदला ले लिया और उन्हें गहरे पानी में डुबो दिया, क्योंकि उन्होंने हमारी निशानियों को झुठला दिया और उनसे ग़ाफ़िल हो गये।

137 और जो लोग कमज़ोर समझे जाते थे उनको ज़मीन के पूरब और पश्चिम का, जिसमें हमने बरकत दी थी वारिस बना दिया; और बनी इस्राईल के बारे में, उनके सब्र की वजह से, तुम्हारे 'रब' का नेक वादा पूरा हुआ, फ़िरऔ़न

और उसकी क़ौम का वह सब कुछ 'हमने' बरबाद कर दिया, जिसे वह बनाते और ऊँचा उठाते थे।

138 और 'हमने' बनी इस्राईल को समुद्र से पार उतार दिया, फिर वे ऐसे लोगों के पास पहँचे जो अपनी कुछ मूर्तियों से लगे बैठे थे, कहने लगे ऐ मूसा! हमारे लिए भी कोई मअ़बूद (उपास्य) ठहरा दे; जैसे उनके मअ़बूद हैं, उन्होंने कहा ह़क़ीक़त में तुम बड़े नादान लोग हो।

139 यह लोग जिसमें लगे हुए हैं वह सब कुछ बरबाद होने वाला है, और जो काम यह करते हैं सब बेकार हैं।''

140 कहा, ''क्या मैं अल्लाह के सिवा कोई तुम्हारे लिए और मअ़बूद ढूँ ढूँ, हालाँकि उसी ने सारी दुनिया वालों पर तुम्हें फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) दी?''

141 और जब 'हमने' तुम्हें फ़िरऔ़न के लोगों से छुट्कारा दिया जो तुम्हें बुरी सज़ाएँ दिया करते थे, तुम्हारे बेटों को मार डालते और तुम्हारी बीवियों को ज़िन्दा रहने देते और यह तुम्हारे रब की ओर से बड़ी आज़माइश (परीक्षा) थी।

142 और 'हमने' मूसा से तीस रातों का वादा लिया, फिर 'हमने' दस और बढ़ाकर उसे पूरा किया; इस तरह उनके रब की ठहराई हुई अवधि (मीआ़द) चालीस रातों में पूरी हुई, और मूसा ने अपने भाई हारून से कहा, ''मेरे (पहाड़ पर जाने के) बाद तुम मेरी क़ौम में मेरी जानशीनी (प्रतिनिधित्व) करना, और सुध ाार करते रहना और फ़साद करने वालों के रास्ते पर न चलना।''

143 और जब मूसा 'हमारे' मुक़र्रर किये हुए वक़्त पर पहुँचे और उनके 'रब' ने उनसे बातें कीं, तो वह कहने लगे ''ऐ रब! 'तू' मुझे देखने की ताक़त दे ताकि मैं तुझे देख सकूँ।'' फ़रमाया, ''तू मुझे हरगिज़ न देख सकेगा, हाँ, पहाड़ की ओर देखते रहो, अगर यह अपनी जगह क़ायम रहा तो तुम मुझ को देख सकोगे।'' जब उनका 'रब' पहाड़ पर ज़ाहिर हुआ, तो उसको चूर-चूर कर दिया और मूसा बेहोश होकर गिर पड़े, जब होश में आए तो कहने लगे, ''तेरी ज़ात पाक है! और मैं तेरे सामने तौबः करता हूँ और मैं सबसे पहले ईमान लाने वाला हूँ।''

144 'फ़रमाया' ''ऐ मूसा! मैंने दूसरे लोगों के मुक़ाबिले में आप को चुनकर अपने पैग़ाम और अपने कलाम (वाणी) से आप को मुम्ताज़ (श्रेष्ठ) किया, तो जो कुछ मैं आप को दूँ उसे ले लीजिए; और शुक्र अदा करने वालों में हो जाइए।''

145 और 'हमने' तख़्तियों में उनके लिए हर क़िस्म की नसीह़त और हर चीज़ की तफ़्सील लिख दी, तो उनको मज़बूती से पकड़े रहिए और अपनी क़ौम से कह दीजिए कि इन बातों को अपनाएँ, जो बहुत बेहतर है; 'मैं' बहुत जल्द आप को नाफ़रमान लोगों का घर दिखाऊँगा।

146 जो लोग धरती पर नाह़क़ घमंड करते हैं, 'मैं' अपने निशानियों की ओर से उन्हें फेर दूँगा, अगर हर निशानी भी देख लें तब भी वे उस पर ईमान न लाएँगे; अगर वे सीधा रास्ता देख लें तब भी उसे अपना रास्ता नहीं बनाएँगे; और अगर वे

भट्के हुओं की राह देख लें तो उसे अपनी राह मान लेंगे, यह इसलिए कि
उन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया और उनसे ग़ाफ़िल रहे।
147 और जिन लोगों ने हमारी आयतों को और आख़िरत के मिलने को झूठा
समझा, उनका तो सारा किया-धरा बरबाद हो जाएगा; जो कुछ ये करते हैं,
क्या उसके सिवा वे किसी और (चीज़) का बदला पाएँगे?
148 और मूसा की क़ौम ने उनके बाद अपने ज़ेवर का एक बछड़ा बना लिया,
जिसमें से बैल की सी आवाज़ निकलती थी, क्या उन्होंने देखा नहीं, कि वह न
तो उनसे बातें करता है और न राह दिखाता है? उन्होंने उसे अपना (मअ़बूद
बना) लिया और वे बड़े ज़ालिम थे।
149 और जब (चेतावनी से) वे शर्मिन्दा हुए और देखा कि ह़क़ीक़त में वे भटक गये
हैं तो कहने लगे, ''अगर हमारे 'रब' ने हम पर रह़म न किया और हमको
माफ़ न किया तो हम घाटे में पड़ जाएँगे।''
150 और जब मूसा अपनी क़ौम में बड़े गुस्से और अफ़्सोस की ह़ालत में वापस
हुए तो कहने लगे, ''तुमने मेरे बाद बहुत ही बुरा काम किया है, क्या तुम
अपने रब के हुक्म से पहले ही जल्दी कर बैठे?'' फिर उन्होंने तख़्तियाँ डाल
दीं और अपने भाई का सर पकड़ कर उसे अपनी ओर खींचने लगे; उन्होंने
कहा, ''ऐ मेरी माँ के बेटे! लोगों ने मुझे कमज़ोर समझ लिया और क़रीब था
कि मुझे क़त्ल कर देते, तो ऐसा काम न कीजिए कि दुश्मन मुझ पर हँसें और
मुझे ज़ालिम लोगों में मत शामिल कीजिए।''
151 उन्होंने कहा, ''मेरे रब! मुझे और मेरे भाई को माफ़ कर दे और मुझे अपनी
रह़मत में दाख़िल कर दे, 'तू' सबसे बढ़ कर रह़म करने वाला है।''
152 जिन लोगों ने बछड़े को अपना मअ़बूद बनाया, वे अपने रब की ओर से
ग़ज़ब और दुनियावी ज़िन्दगी में ज़िल्लत में फंस कर रहेंगे; और झूठ गढ़ने
वालों को 'हम' ऐसा ही बदला दिया करते हैं।
153 और जिन्होंने बुरे काम किये, फिर उसके बाद तौबः कर ली और ईमान ले
आए, तो इसके बाद तुम्हारा 'रब' तो बड़ा ही माफ़ करने वाला, मेहरबान है।
154 और जब मूसा का गुस्सा दूर हुआ तो तख़्तियाँ उठा लीं, और जो कुछ उसमें
लिखा था वह उन लोगों के लिए, जो अपने रब से डरते हैं, हिदायत और
रह़मत थी।
155 और मूसा ने अपनी क़ौम के सत्तर आदमियों को 'हमारे' मुकर्रर वक़्त पर
चुना, फिर जब उन लोगों को एक ज़लज़ले ने आ पकड़ा, तो उन्होंने कहा,
''मेरे रब! अगर 'तू' चाहता तो पहले ही उनको और मुझको हलाक कर देता,
जो कुछ हमारे कमअक़्लों ने किया है, क्या उसकी वजह से 'तू' हमें हलाक़
करेगा? यह तो बस 'तेरी' ओर से एक आज़माइश (परीक्षा) है, इसके ज़रिये
'तू' जिसको चाहे भट्का दे, और जिसे चाहे राह दिखा दे, 'तू' ही हमारा वली
(संरक्षक) है। इस लिए 'तू' हमें माफ़ कर दे और हम पर रह़म कर, और
'तू' ही सबसे बढ़कर माफ़ करने वाला है;
156 और हमारे लिए इस दुनिया में भी भलाई लिख दे और आख़िरत में भी, हम

तेरी ओर रूजूअ़ हो चुके'' फ़रमाया, ''अपने अ़ज़ाब में 'मैं' तो उसी को डालता हूँ, जिसे चाहता हूँ, लेकिन मेरी रह़मत हर चीज़ को शामिल है, 'मैं' इसे उन लोगों के लिए लिख दूँगा जो परहेज़गारी करते और ज़कात देते और हमारी आयतों पर ईमान रखते हैं;
157 जो उस रसूल, उम्मी नबी, की पैरवी करते हैं, जिसे वे अपने यहाँ तौरात और इंजील में लिखा पाते हैं, और जो उन्हें भलाई का हुक्म देते और बुराई से रोकते हैं, उनके लिए अच्छी पाक चीज़ों को ह़लाल और बुरी नापाक चीज़ों को ह़राम ठहराते हैं और उन पर से उनके वह बोझ उतारते हैं जो अब तक उन पर लदे हुए थे, और वह उन बन्धनों को खोलता है जिनमें वे जकड़े हुए थे; तो जो लोग उस पर ईमान लाए, उसकी इ़ज़्ज़त की; और उसकी मदद की और जो नूर उनके साथ नाज़िल हुआ उसकी पैरवी की, वही कामियाब होने वाले हैं।''
158 कह दीजिए, ''ऐ लोगो ! मैं तुम सब की ओर उस अल्लाह का रसूल हूँ, जो आसमानों और ज़मीन का मालिक है, उसके सिवा कोई मअ़बूद (उपास्य) नहीं, 'वही' ज़िन्दगी देता है 'वही' मौत देता है; तो अल्लाह और उसके रसूल, उम्मी नबी पर ईमान लाओ जो खुद अल्लाह पर और उसके कलिमे (वाणी) पर ईमान रखता है, उसकी पैरवी करो, ताकि तुम राह पा सको।''
159 और मूसा की क़ौम में एक गिरोह ऐसे लोगों का भी हुआ जो ह़क़ के अनुसार राह दिखाता और उसी के अनुसार इन्साफ़ करता है।
160 और 'हमने' उन्हें, बारह ख़ानदानों (टुकड़ियों) में बाँट दिया, और 'हमने' मूसा को जबकि उनकी क़ौम ने उनसे पानी माँगा तो 'हमने' मूसा की ओर वह्य की, ''अपना अ़सा (लाठी) पत्थर पर मारो।'' तो उससे बारह चश्में (स्रोत) फूट निकले और सब लोगों ने अपना-अपना घाट मालूम कर लिया, और 'हमने' उन पर बादल की छाया की और उन पर 'मन्न' और 'सलूवा' उतारा, 'हमने' तुम्हें जो अच्छी चीज़ें दी हैं उन्हें खाओ।'' और उन्होंने हम पर कोई ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि ह़क़ीक़त में वह अपने ऊपर ही ज़ुल्म करते रहे।
161 और जब उनसे कहा गया, ''इस बस्ती में रहो-बसो और इसमें जहाँ से चाहो खाओ और कहो 'हित्ततुन' (तौबः), और दरवाज़े में सज्दः (झुके) करते हुए दाख़िल हो; और 'हम' तुम्हारी ख़ताओं को माफ़ कर देंगे और 'हम' नेकी करने वालों को और भी ज़्यादा देंगे।''
162 लेकिन उनमें से जो ज़ालिम थे, उन्हें जो कुछ कहा गया था, उसको बदल डाला; तो 'हमने' भी उन पर आसमान से एक आफ़त भेजी, इसलिए कि वे ज़ुल्म कर रहे थे।
163 और आप उनसे उस बस्ती के बारे में पूछिए जो समुद्र के किनारे थी, जबकि वे लोग 'सब्त' (शनिवार) के मामले में ह़द से आगे बढ़ गये थे, जबकि उनके 'सब्त' के दिन उनकी मछलियां खुले तौर पर पानी के ऊपर आ जाती थीं, और जो दिन उनके 'सब्त' का न होता तो वे उनके पास न आतीं इस तरह 'हमने' उनकी आज़माइश की, इसलिए कि वे नाफ़रमानी कर रहे थे।
164 और जब उनके एक गिरोह ने कहा, ''तुम ऐसे लोगों को क्यों नसीह़त किये

जा रहे हो, जिन्हें अल्लाह तआ़ला हलाक करने वाला या उन्हें सख़्त अज़ाब में गिरफ़्तार  करने वाला है?" वे बोले, "अपने रब के सामने उज्र (निरापराध) साबित कर सकें और ताकि वे परहेज़गार बन जाएँ।"
165 फिर जब वे उसे भूल गये, जो नसीहत उनको की गयी थी, तो 'हमने' उन लोगों को बचा लिया, जो लोग बुराई से रोकते थे; और ज़ालिमों को उनके नाफ़रमानी की वजह से सख़्त अ़ज़ाब में पकड़ लिया।
166 फिर जब वे सरकशी के साथ वही सब करते रहे, जिससे उनको रोका गया था, तो 'हमने' उनसे कहा कि "ज़लील बन्दर बन जाओ।"
167 और जब आप के रब ने ख़बर कर दी थी कि वह क़ियामत के दिन तक उनके ख़िलाफ़ ऐसे लोगों को उठाता रहेगा, जो उन्हें बुरा अ़ज़ाब देंगे; बेशक, आप का 'रब' जल्द सज़ा देने वाला है, और 'वह' बड़ा माफ़ करने वाला रहम वाला है।
168 और 'हमने' उन्हें टुकड़े-टुकड़े करके अनेक गिरोहों में बिखेर दिया, कुछ उनमें से नेक हैं, और कुछ उनमें इससे अलग हैं, और 'हम' उन्हें अच्छी और बुरी हालत में डालकर आज़माते रहे, ताकि वे बाज़ आ जाएँ।
169 फिर उनके बाद ऐसे नालायक़ (अयोग्य) हुए जो किताब के वारिस होकर इसी दुनिया का (लोगों से) सामान समेटते हैं और कहते हैं, "हमें तो ज़रूर माफ़ कर दिया जाएगा और अगर इस जैसा और सामान भी उनके पास आ जाए तो वे उसे भी ले लेंगे, क्या उनसे किताब में इसका अ़हद नहीं लिया जा चुका है? कि अल्लाह पर कोई बात न गढ़ें सिवाय हक़ के, और जो इसमें है उसे वे खुद पढ़ भी चुके हैं, और आख़िरत का घर तो उन लोगों के लिए बेहतर है, "जो डर रखते हैं" तो क्या तुम अक़्ल से काम नहीं लेते?
170 और जो लोग किताब को मज़बूती से पकड़ते हैं और जिन्होंने नमाज़ क़ायम कर रखी है, 'हम' भले लोगों का अज्र (बदला) बरबाद नहीं करते।
171 और जब हमने पहाड़ को हिलाया, जो उनके ऊपर था मानों वह कोई सायबान (छत्र) हो और वे समझे कि वह उन पर गिरना ही चाहता है-तो जो 'हमने' तुम्हें दिया है "उसे मज़बूती से पकड़े रहो, और जो कुछ इसमें है उसे याद रखो, ताकि बच सको।"
172 जब तुम्हारे 'रब' ने आदम की औलाद से (यानी उनकी पीठों से) उनकी औलाद निकाली तो उनसे खुद उनके मुक़ाबिले में इक़रार करा लिया, "क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ?" वे कहने लगे, "क्यों नहीं!! हम गवाह हैं।" कि क़ियामत के दिन कहीं यह न कहने लगें कि "हमें तो इसकी ख़बर ही न थी"
173 या यह कहो कि "(अल्लाह के साथ) साझी तो पहले हमारे बाप-दादा ने किया, हम तो उनके बाद उनकी औलाद में से हुए हैं, 'तो' क्या तू हमें उस पर हलाक करेगा जो कुछ अह्ले बातिल (ग़लत लोगों) ने किया है?"
174 और इसी तरह 'हम' खोल-खोल कर आयतें बयान करतें है, ताकि वे पलट आएँ।
175 और उनको उस व्यक्ति का हाल सुनाओ जिसे 'हमने' अपनी आयतें दीं, तो

वह उनसे निकल भागा, फिर शैतान उसके पीछे लगा, तो वह गुमराहों में हो गया।
176 और अगर 'हम' चाहते तो इन ख़बरों से उसको बुलन्द कर देते, मगर वह
तो पस्ती की ओर मायल हो गया और अपनी इच्छा के पीछे चलने लगा, तो
उसकी मिसाल उस कुत्ते जैसी हो गई, कि अगर तुम उस पर सख़्ती करो तो
ज़बान लट्काए या उसे छोड़ दो तो भी ज़बान लट्काए ही रहे; यही मिसाल
उन लोगों की है, जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया; तो यह क़िस्सा बयान
कर दो, ताकि वे सोच-विचार करें;
177 बुरी मिसाल है उन लोगों की जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया और वे खुद
अपने ही ऊपर ज़ुल्म करते रहे।
178 जिसे अल्लाह सीधी राह दिखाए वही सीधी राह पाने वाला है, और जिसे 'वह'
गुमराह करे तो ऐसे ही लोग नुक़सान उठाने वाले हैं।
179 और 'हमने' बहुत-से जिन्नों और इन्सानों को जहन्नम ही के लिए फैला रखा
है, उनके पास दिल हैं लेकिन उस से समझते नहीं, और उनकी आँखें हैं
मगर उससे देखते नहीं और उनके कान हैं मगर उनसे सुनते नहीं, वे लोग
चौपायों की तरह हैं, बल्कि उनसे भी (ज्यादा) भटके हुए हैं; यही वे लोग हैं
जो ग़फ़लत में पड़े हुए हैं।
180 और अल्लाह के सब ही नाम अच्छे हैं, तो उसको 'उसके' नामों से पुकारा
करो और जो लोग उसके नामों में टेढ़ (कुटिलता) करते हैं उनको छोड़ दो,
जो कुछ वे कर रहे हैं बहुत जल्द उसकी सज़ा पाएँगे।
181 और हमारी मख़्लूक़ (प्राणी) में कुछ लोग ऐसे भी हैं जो हक़ का रास्ता दिखाते
और उसके साथ इन्साफ़ करते हैं।
182 और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया, हम उन्हें दर्जा-बदर्जा तबाही
की ओर ले जाएँगे, ऐसे तरीक़े से जिसे वे जानते भी नहीं;
183 और 'मैं' उन्हें ढ़ील दिये जा रहा हूँ, मेरी तद्बीर (उपाय) बहुत मज़बूत है।
184 क्या उन लोगों ने ग़ौर नहीं किया? कि उनके साथी को कोई जुनून नहीं है,
वह तो बस एक साफ़-साफ़ आगाह (सचेत) करने वाले हैं।
185 क्या उन्होंने आसमान व ज़मीन की बादशाही में, और जो चीज़ें अल्लाह ने
पैदा की हैं उन पर नज़र नहीं की; और इस बात पर कि अजब नहीं कि
उनका वक़्त क़रीब आ गया हो? फिर आख़िर इसके बाद कौन-सी बात हो
सकती है जिस पर वह ईमान लाएँगे?
186 जिस व्यक्ति को अल्लाह गुमराह करे उसको कोई राह दिखाने वाला नहीं और
'वह' उनको छोड़े रखता है कि वे अपनी सरकशी में बहकते रहें।
187 आप से उस घड़ी (क़ियामत) के बारे में पूछते हैं कि "वह कब आएगी?"
कह दीजिए "इसका इल्म तो मेरे रब ही के पास है। 'वही' उसे उसके वक़्त
पर ज़ाहिर कर देगा; 'वह' आसमानों और ज़मीन में एक भारी बात होगी
जो अचानक ही तुम पर आ जाएगी।" यह आप से इस तरह पूछते हैं जैसे

आप इसके बारे में अच्छी तरह जानते हैं, कह दीजिए, ''इसका इल्म तो बस अल्लाह ही के पास है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते।''

188 कह दीजिए, ''मैं अपने फ़ायदे और नुक़्सान का कुछ भी अख़्तियार नहीं रखता, मगर जो अल्लाह चाहे; और अगर मैं ग़ैब की बातें जानता होता तो बहुत से फ़ायदे जमा कर लेता और मुझको कोई तक्लीफ़ न पहुँचती; मैं तो बस सचेत करने वाला और ख़ुशख़बरी देने वाला हूँ, जो ईमान लाए।''

189 'वही' है जिसने तुम्हें एक जान (व्यक्ति) से पैदा किया और उसी से उसका जोड़ा बनाया, ताकि उससे राहत हासिल करे, जब वह उसके पास जाता है तो हल्का सा हमल रूक जाता है सो वह उसे लिए हुए चलती-फिरती है जब वह बोझल हो जाती, तो दोनों अपने रब अल्लाह को पुकारते हैं कि ''अगर 'तूने' सही सालिम (बच्चा) दिया, तो ज़रूर हम तेरे शुक्रगुज़ार होंगे।''

190 'उसने' जब उन्हें सही सालिम (बच्चा) दिया, तो जो उन्हें दिया उसमें वे दोनों उस (अल्लाह) का साझी ठहराने लगे, तो अल्लाह तो इससे बुलन्द है, जो वे साझी ठहराते हैं;

191 क्या वे उसको साझी ठहराते हैं, जो कुछ भी पैदा नहीं कर सकते और वे ख़ुद पैदा किये जाते हैं;

192 और वे न तो उनकी मदद करने की ताक़त रखते हैं, और न ख़ुद अपनी ही मदद कर सकते हैं?

193 और अगर तुम उन्हें सीधी राह की ओर बुलाओ, तो वे तुम्हारी पैरवी न करेंगे; तुम्हारे लिए बराबर है कि तुम उन्हें पुकारो या खामोश रहो।

194 तुम अल्लाह को छोड़ कर जिसे पुकारते हो वे तो तुम्हारे ही जैसे बन्दे हैं; तो पुकार लो उनको, ''अगर तुम सच्चे हो'' तो उन्हें चाहिए कि तुम्हें जवाब भी दें!

195 क्या उनके पैर हैं जिनसे वे चलते हों या उनके हाथ हैं जिनसे वे पकड़ते हों या उनके पास आँखें हैं जिनसे वे देखते हों या उनके कान हैं जिनसे वे सुनते हों? कह दीजिए, ''तुम अपने ठहराए हुए साझीदारों को बुला लो, फिर मेरे ख़िलाफ़ चाल बाज़ी करो, इस तरह कि मुझे मोहलत न दो।

196 मेरा वली (संरक्षक) अल्लाह है, जिसने यह किताब उतारी और 'वह' अच्छे लोगों का वली (संरक्षक) है।

197 और जिनको तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो, वे न तो तुम्हारी मदद करने की ताक़त रखते हैं और न ख़ुद अपनी ही मदद कर सकते हैं।

198 और अगर तुम उन्हें सीधी राह की ओर बुलाओ तो वे न सुनेंगे, वे तुम्हें ऐसे दिखाई देते हैं कि जैसे वे तुम्हारी ओर ताक रहे हों, हालाँकि वे कुछ भी नहीं देखते।

199 माफ़ करने को अपनाइए और भलाई का हुक्म देते रहिए और नादानों से किनारा कर लीजिए।

200 और अगर शैतान की ओर से तुम्हारे दिल में किसी तरह का कोई वस्वसा पैदा हो तो अल्लाह की पनाह माँगो। बेशक वह सब कुछ सुनता, जानता है।

201 जो लोग परहेज़गार हैं, जब उनको शैतान की ओर से कोई वस्वसा (ख़याल) पैदा होता है, तो चौंक पड़ते हैं फिर वे (मन में) देखने लगते हैं।

202 और उन (शैतानों) के भाई उन्हें गुमराही में खींचे लिए जाते हैं फिर वे कोई कमी नहीं करते।

203 और जब आप उनके सामने कोई निशानी नहीं लाते तो कहते हैं, ''तुम क्यों नहीं बना लाए?'' कह दीजिए, ''मैं तो केवल उसी की पैरवी करता हूँ जो मेरे रब की ओर से वह्य की जाती है, यह मेरे रब की ओर से दानिश व बसीरत (अन्तः दृष्टियों का प्रकाश) है, और ईमान लाने वालों के लिए हिदायत और रह़मत है''

204 और जब क़ुर्आन पढ़ा जाए तो उसे ध्यान से सुनो और खामोश रहो, ताकि तुम पर रह़म किया जाए;

205 और अपने 'रब' को अपने मन में सुबह् और शाम आ़जिज़ी (विनम्रता पूर्वक) और ख़ौफ से, और हल्की आवाज़ के साथ याद किया करो; और उन में से न होना जो ग़फ़लत में पड़े हुए हैं।

206 जो लोग आप के रब के पास हैं वे उसकी इबादत के मुक़ाबले में नाशुक्री नहीं करते; और उसकी तस्बीह़ (महिमागान) करते हैं और उसको सज्दः करते रहते हैं।

## सूर-ए-अन्फ़ाल

यह मदनी सूरः है, इस में अरबी के 5522 अक्षर,1253 शब्द, 75 आयतें और10 रूकूअ़ हैं।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

1 आप से ग़नीमतों ( के माल ) के बारे में पूछते हैं। आप कह दीजिए कि ग़नीमतें अल्लाह और रसूल की हैं। इस लिए अल्लाह का डर रखो और आपस के संबन्धों को ठीक रखो। और अल्लाह और उसके रसूल के हुक्म की पैरवी करो, अगर तुम ईमान वाले हो।

2 ईमान वाले तो बस वह होते हैं, कि जब (उनके सामने) अल्लाह का जिक्र किया जाता है। तो उनके दिल दहल जाते हैं, और जब उन्हें उस की आयतें पढ़ कर सुनाई जाती हैं, तो वह उन का ईमान बढ़ा देती हैं और वह अपने रब पर भरोसा रखते हैं।

3 ( ये वे लोग हैं ) जो नमाज़ क़ायम करते हैं और जो कुछ हमने दिया है उसमें से खर्च करते रहते हैं।

4 यही लोग तो सच्चे ईमान वाले हैं। बड़े-बड़े दर्जे हैं। उनके लिए उनके रब के
पास और माफ़ी और इज़्ज़त की रोज़ी।
5 जैसे आप के रब ने आप को हक़ के साथ आप के घर से बाहर निकाला,
और ईमान वालों में से एक गिरोह को यह नापसंद था।
6 वे आप से इस हक़ीक़त के बारे में उसके ज़ाहिर (स्पष्ट) हो जाने के बाद
झगड़ रहे थे, मानों वे आँखों देखी मौत की ओर हाँके जा रहे हों।
7 और जब अल्लाह तुम से वादा कर रहा था कि दो गिरोहों में से एक तुम्हारे
हाथ आएगा; और तुम चाहते थे कि तुम्हें वह हाथ आए जो ग़ैर मुसल्लह
(निःशस्त्र) था, हालाँकि अल्लाह चाहता था, कि हक़ का हक़ होना साबित कर
दे 'अपने' हुक्म से, और काफिरों की जड़ काट दे;
8 ताकि हक़ को हक़ होना और बातिल (ग़लत) को बातिल होना साबित कर दे,
चाहे मुजरिमों को कितना ही नागवार हो।
9 (याद करो) जब तुम अपने रब से फ़रियाद कर रहे थे, तो उसने तुम्हारी
पुकार सुन ली,। (फ़रमाया) 'मैं' एक हज़ार फरिश्तों से तुम्हारी मद्द करूँगा
जो तुम्हारे साथ होंगे।"
10 और अल्लाह ने यह केवल इस लिए किया कि यह एक बशारत (शुभ-सूचना)
हो और ताकि तुम्हारे दिलों में उससे इत्मिनान हो जाए,। और मदद तो बस
अल्लाह ही के यहाँ से होती है, बेशक अल्लाह ज़बर्दस्त, हिकमत वाला है।।
11 जब कि वह अपनी ओर से राहत दे कर तुम्हें ऊँघ से ढ़ाँक रहा था, और
वह आसमान से तुम पर पानी बरसा रहा था ताकि उसके ज़रिये तुम्हें अच्छी
तरह पाक कर दे और तुम से शैतानी वस्वसे (ख़याल) को दूर कर दे और
ताकि मज़बूत कर दे तुम्हारे दिलों को, और उसकी वजह से (तुम्हारे) क़दमों
को जमा दे।।
12 जब तुम्हारा 'रब' फ़रिश्तों की ओर वह्य कर रहा था, कि 'मैं' तुम्हारे साथ
हूँ, तो तुम ईमान वालों को तसल्ली दो कि जमे रहें; 'मैं' काफ़िरों (इन्कारियों)
के दिलों में अभी रोअ़ब डाले देता हूँ। तो तुम उनकी गर्दनें मारो और उनके
पोर-पोर पर चोट लगाओ।"
13 यह इसलिए कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालिफ़त की, और
जो व्यक्ति अल्लाह और उसके रसूल की मुखालिफ़त (विरोध) करता है तो
अल्लाह भी सख़्त अ़ज़ाब देने वाला है;
14 यह तो तुम लोग चखो! और यह (जाने रहो) कि काफ़िरों के लिए दोज़ख़ का
अ़ज़ाब है।
15 ऐ ईमान वालो! जब लड़ाई के मैदान में काफ़िरों (इन्कारियों) से तुम्हारा
मुक़ाबला हो, तो पीठ न फेरो;
16 और जिस व्यक्ति ने भी उस दिन उनसे अपनी पीठ फेरी- यह और बात
है कि लड़ाई की चाल चलने के रूप में या दूसरी टुकड़ी से मिलने के लिए
ऐसा करें- तो वह अल्लाह के अ़ज़ाब में गिरफ़्तार हुआ और उसका ठिकाना
जहन्नम है, और वह बहुत ही बुरी जगह है।

17 तुम लोगों ने उनको क़त्ल नहीं किया बल्कि अल्लाह ही ने उनको क़त्ल किया,
और जब आप ने कंकरियाँ फेंकीं थीं, तो वह आप ने नहीं फेंकीं थीं, बल्कि
अल्लाह ने फेंकीं थीं; और ताकि 'वह' अपनी ओर से ईमान वालों को आज़मा
ले, बेशक अल्लाह सुनता, जानता हैं;
18 यह तो हुआ, और बेशक अल्लाह काफ़िरों (इन्कारियों) की चाल को कमज़ोर
कर देने वाला है।
19 अगर तुम फ़तेह़ ( कामियाबी ) चाहते हो तो फ़तेह़ तुम्हारे सामने आ चुकी
अगर तुम ( अपने काम से ) रूक जाओ, तो तुम्हारे ह़क़ में बेहतर है अगर
तुम ने पलट कर फिर वही हरकत की, तो 'हम' भी पलटेंगे, और तुम्हारा
जत्था चाहे कितना ज़्यादह हो, तुम्हारे कुछ काम न आ सकेगा और यह कि
अल्लाह मोमिनों के साथ होता है।
20 ऐ ईमान वालो। अल्लाह और उसके रसूल के हुक्म पर चलो और उससे मुँह
न फेरो, और तुम सुनते हो;
21 और उन लोगों की तरह न हो जाना जिन्होंने कहा था "हम ने सुना" हालाँकि
वे सुनते नहीं।
22 बेशक अल्लाह की नज़र में तो तमाम जानदारों से बद्तर वे बहरे गूँगे लोग
हैं, जो अक़्ल से काम नहीं लेते।
23 और अगर अल्लाह जानता कि उनमें कुछ भलाई है, तो वह ज़रूर सुनने की
तौफ़ीक़ देता; और अगर 'वह' उन्हें सुना देता, तो भी वे कत्राते हुए मुँह फेर
लेते।
24 ऐ ईमान वालो! अल्लाह और रसूल की बात मानो जब कि 'वह' तुम्हें उस
चीज़ की ओर बुलाएँ जो तुम्हें ज़िन्दगी देने वाली है, और जान लो कि अल्लाह,
आदमी और उसके दिल के बीच आड़े आ जाता है, और यह कि 'वही' है
जिसकी ओर तुम इकट्ठा किये जाओगे।
25 और उन फ़ित्नों से बचो जो अपनी लपेट में खास तौर से केवल ज़ालिमों को
ही नहीं मिलेगा और जान लो कि अल्लाह सख़्त अ़ज़ाब देने वाला है।
26 और जब तुम ज़मीन (मक्का ) में थोड़े, और कमज़ोर समझे जाते थे, और
डरे सहमे रहते थे कि लोग तुम्हें कहीं उचक न लें जाएँ, तो 'उसने' तुम्हें
ठिकाना दिया और अपनी मदद से तुम्हें ताक़त दी और पाकीज़ा चीज़ें खाने
को दीं, ताकि तुम शुक्र करो और तुम जानते हो।
27 ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह और उसके रसूल के साथ ख़ियानत न करो और
न अपनी अमानतों में ख़ियानत करो और तुम जानते हो।
28 और जान लो कि तुम्हारा माल और औलाद बड़ी आज़्माइश हैं और यह कि
अल्लाह के पास बड़ा सवाब है।
29 ऐ ईमान वालो। अगर तुम अल्लाह से डरोगे तो वह तुम्हारे लिए फ़र्क़ (अन्तर
) पैदा कर देगा, और तुम्हारे गुनाह और तुम्हारी बुराइयाँ दूर कर देगा, और
तुम्हें माफ़ कर देगा। और अल्लाह बड़ा फ़ज़्ल वाला है।
30 और जब काफ़िर तुम्हारे साथ चालें चल रहे थे, ताकि तुम्हें क़ैद रखें या तुम्हें

क़त्ल कर दें या तुम्हें निकाल बाहर करें वे अपनी चालें चल रहे थे और अल्लाह भी अपनी तद्बीर (उपाय) कर रहा था और अल्लाह सबसे अच्छी चाल चलने वाला है।

31 और जब उनके सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं, तो कहते हैं, ''हम सुन चुके अगर हम चाहें तो ऐसी बातें हम भी बना लें; यह तो बस पहले के लोगों की कहानियाँ हैं।''

32 और जब उन्होंने कहा कि, ''ऐ अल्लाह! अगर यही तेरे यहाँ से ह़क़ है तो हम पर आसमान से पत्थर बरसा दे, या कोई और तक्लीफ़ देने वाला अ़ज़ाब भेज दे।''

33 और अल्लाह ऐसा नहीं कि तुम उनके बीच मौजूद हो और वह उन्हें अ़ज़ाब देता और न अल्लाह ऐसा था कि वे माफ़ी माँगें और 'वह' उन्हें अ़ज़ाब दे।

34 और उनके लिए कौन सी वजह है कि अल्लाह उन्हें अ़ज़ाब न दे, जबकि वे ''मस्जिदे ह़राम'' (कअ़बः) से रोकते हैं, हालाँकि वे उसके कोई मुतवल्ली (व्यवस्थापक) भी नहीं, उसके मुतवल्ली तो केवल परहेज़गार ही हैं, लेकिन उनमें के अक्सर लोग जानते नहीं।

35 और उन लोगों की नमाज़ उस घर (कअ़बः) के पास, सीटियाँ बजाने और तालियाँ पीटने के सिवा कुछ भी न थीं, तो अब अ़ज़ाब का मज़ा चखो, उस इन्कार के बदले में जो तुम करते थे।

36 जो लोग काफ़िर अपना माल खर्च करते हैं, कि ( लोगों को) अल्लाह के रास्ते से रोकें, वे तो खर्च करते रहेंगे, मगर आख़िर में उनके लिए अफ़सोस होगा, और वे मग़लूब (पराजित) हो जाएँगे, और काफ़िर दोज़ख की ओर समेट लिए जाएँगे,

37 ताकि अल्लाह नापाक को पाक से छाँट कर अलग करे, और नापाकों को आपस में एक दूसरे पर रख कर ढ़ेर बना दे, फिर उसे जहन्नम में डाल दे, यही लोग घाटे में पड़ने वाले हैं।

38 उन काफ़िरों से कह दीजिए, अगर वे अपने (बुरे) कामों से बाज़ आ जाएँ, तो जो कुछ हो चुका, उसे माफ़ कर दिया जायेगा; और अगर वे फिर वही करेंगे, तो गुज़रे हुए लोगों के बारे में (जो) तरीक़ा जारी हो चुका है (वही उनके ह़क़ में होगा।)

39 और उन लोगों से लड़ते रहें, यहाँ तक कि फ़ित्ना (ज़ुल्म) बाक़ी न रहे और दीन पूरा का पूरा अल्लाह ही के लिए हो जाए। फिर अगर वे बाज़ आ जाएँ, तो अल्लाह उनके कामों को देख रहा है।

40 और अगर वे मुँह मोड़ें तो जान लो कि अल्लाह तुम्हारा मौला (संरक्षक) है। क्या ही अच्छा हिमायती है 'वह' और क्या ही अच्छा मदद्गार!

41 और जान लो कि जो कुछ तुम्हें ग़नीमत के रूप में माल मिले, उसका पाँचवा भाग अल्लाह का, और उसके रसूल का, और नातेदारों का, और यतीमों का, मुहताजों और मुसाफिरों का है। अगर तुम अल्लाह पर और उस चीज़ पर ईमान रखते हो, जो 'हमने' अपने बन्दे पर फैसले के दिन उतारी, जिस

दिन दोनों सेनाओं में मुठभेड़ हुई, और अल्लाह को हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत (सामर्थ्य ) है।

42 ( याद करो ) जब तुम घाटी के क़रीब किनारे पर थे; और वे घाटी से दूर किनारे पर थे, और क़ाफ़िला तुम से नीचे की ओर था। अगर तुम वक़्त मुक़र्रर ( निश्चित ) करते तो ज़रूर तुम वक़्त मुकर्रर पर न पहुँचते; लेकिन जो कुछ हुआ वह इस लिए कि अल्लाह उस बात का फ़ैसला कर दे, जिसका पूरा होना यक़ीनी था, ताकि जिसे मरना हो वह खुले प्रमाण देख कर(हक़ पहचान कर) ही मरे और जिसे ज़िन्दा रहना हो, वह खुले प्रमाण देख कर ज़िन्दा रहे। बेशक अल्लाह खूब जानता, सुनता है।

43 जब अल्लाह उनको, तुम्हारे सपने में थोड़ा करके तुम्हें दिखा रहा था; और अगर 'वह' उन्हें ज़्यादह करके तुम्हें दिखा देता, तो ज़रुर तुम लोग हिम्मत हार जाते, और अस्ल मामले में झगड़ने लग जाते; लेकिन अल्लाह ने (तुम को) इससे बचा लिया। बेशक 'वह' तो जो कुछ दिलों में होता है उसे भी जानता है।

44 और जब तुम्हारी आपस में मुठ भेड़ हुई, तो वह तुम्हारी निगाहों में उन्हें कम करके, और तुम्हें उनकी निगाहों में कम करके दिखा रहा था, ताकि अल्लाह उस बात का फ़ैसला कर दे जिसका होना तय था, और सारे मामले अल्लाह ही की ओर पलटते हैं।

45 ऐ ईमान वालो! जब तुम्हारा किसी गिरोह से मुक़ाबला हो जाए तो जमे रहो और अल्लाह को खूब याद करो, ताकि तुम्हें कामियाबी मिल जाये।

46 और अल्लाह और उसके रसूल के हुक्म पर चलो और आपस में झगड़ा न करो, वरना हिम्मत हार बैठोगे और तुम्हारी हवा उखड़ जाएगी; और सब्र से काम लो, बेशक अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है;

47 और उन लोगों की तरह न हो जाना जो अपने घरों से इतराते, और लोगों को दिखाते हुऐ निकले थे, और लोगों को अल्लाह की राह से रोकते हैं, हालाँकि जो कुछ ये करते हैं, अल्लाह उसे अपने घेरे में लिए हुए है।

48 और जब शैतान ने उनके आ़माल उनके लिए सुन्दर बना कर दिखाए और कहा, "आज के दिन लोगों में से कोई तुम पर ग़ालिब (प्रभावी) नहीं हो सकता, और मैं तुम्हारे साथ हूँ।" लेकिन जब दोनों गिरोह आमने-सामने हुए तो वह उल्टे पाँव फिर गया और कहने लगा, "मेरा तुम से कोई सम्बन्ध नहीं, मैं तो ऐसी चीज़ें देख रहा हूँ, जो तुम नहीं देख सकते, मैं तो अल्लाह से डरता हूँ, और अल्लाह सख़्त अ़ज़ाब देने वाला है।"

49 जब मुनाफ़िक़ (कप्टाचारी) और वे लोग जिनके दिलों में रोग है कह रहे थे, "उन लोगों को तो उनके धर्म ने धोखे में डाल रखा है।" और जो व्यक्ति अल्लाह पर भरोसा रखता है, तो बेशक अल्लाह ग़ालिब, (प्रभुत्वशाली,) हिक्मत वाला है।

50 और काश तुम उस वक़्त देखो, जबकि फ़रिश्ते काफ़िरों की जाने निकालते हैं, उनके चेहरों और उनकी पीठों पर मारते जाते हैं, कि "लो आग के अ़ज़ाब का मज़ा चखो;"

51 यह उसी का बदला है जो तुम्हारे हाथों ने आगे भेजा, और यह कि अल्लाह
अपने बन्दों पर थोड़ा सा भी ज़ुल्म नहीं करता;
52 (उनके साथ वैसा ही मामला पेश आया) जैसा फ़िरऔन के लोगों और उनसे
पहले के लोगों के साथ पेश आया; उन्होंने अल्लाह की आयतों का इन्कार
किया, तो अल्लाह ने उनके गुनाहों की वजह से उन्हें पकड़ लिया। बेशक
अल्लाह ज़बर्दस्त, (शक्तिशाली), सख़्त अज़ाब देने वाला है।
53 यह इस लिए कि जो नेअ़मत अल्लाह किसी क़ौम को दिया करता है, जब
तक वे ख़ुद अपने (दिलों की) हालत न बदल डालें, अल्लाह उसे नहीं बदला
करता, और यह इस लिए कि अल्लाह सब कुछ सुनता जानता है।
54 जैसे फ़िरऔनियों और उनसे पहले के लोगों का हाल हुआ, उन्होंने अपने रब
की आयतों को झुठलाया, तो 'हमने' उन्हें उनके गुनाहों के बदले में तबाह कर
दिया। और फ़िरऔनियों को डुबो दिया, और यह सभी ज़ालिम थे।
55 सबसे बुरे जानदारों में अल्लाह के नज़दीक, वे लोग हैं जिन्होंने इन्कार किया,
फिर वे ईमान नहीं लाते।
56 जिन लोगों से तुमने अ़हद (सन्धि) लिया, वे फिर हर बार अपने अ़हद को
तोड़ देते हैं और डरते नहीं;
57 अगर तुम उनको लड़ाई में पाओ, तो उन्हें ऐसी सज़ा दो कि जो लोग उनके
पीछे हों, वे उनको देख कर भाग जाएँ, ताकि उनको सबक़ मिले।
58 और अगर तुम को किसी क़ौम से ख़ियानत (विश्वासघात) करने का डर हो,
तो तुम भी उसी तरह (ऐसे लोगों के साथ किये हुए अ़हद को खुल्लम-खुल्ला)
उन्हीं के आगे फेंक दो। बेशक अल्लाह ख़ियानत करने वालों को पसंद नहीं
करता।
59 और काफ़िर यह न समझें कि वे भाग निकले हैं, वे आजिज़ करके बाहर
नहीं जा सकते,
60 और जहाँ तक हो सके उनके लिए क़ूव्वत (बल) और बँधे घोड़े (लड़ाई के
लिए) तैयार रखो, ताकि उसके ज़रिए अल्लाह के दुश्मनों, और अपने दुश्मनों,
और इनके सिवा, उन दूसरे लोगों को भी भयभीत कर दो जिन्हें तुम नहीं
जानते, अल्लाह उनको जानता है; और अल्लाह की राह में जो कुछ तुम खर्च
करोगे, वह पूरा चुका दिया जायेगा, और तुम्हारे साथ हरगिज़ नाइन्साफ़ी न
होगी।
61 और अगर यह लोग सुलह की ओर मायल हों, तो तुम भी उनकी ओर मायल
हो जाओ और अल्लाह पर भरोसा रखो। बेशक 'वह' सब कुछ सुनता, जानता
है।
62 और अगर यह चाहें कि तुम्हें धोखा दें, तो तुम्हारे लिए अल्लाह काफ़ी है,
'वही' तो है 'जिसने' तुम्हें अपनी मदद से और मोमिनो के ज़रिए ताक़त
पहुँचाई;
63 और उनके दिल आपस में एक-दूसरे के साथ जोड़ दिये; अगर तुम धरती में
जो कुछ है सब खर्च कर डालते तो भी उनके दिलों को आपस में जोड़ न

सकते, लेकिन अल्लाह ही ने उन्हें आपस में जोड़ दिया; बेशक 'वह' ज़बर्दस्त (प्रभुत्वशाली), हिक्मत वाला है।

64 ऐ नबी ! अल्लाह आप के लिए और ईमान वालों के लिए, जो आपके अनुयायी काफी हैं।

65 ऐ नबी ! मोमिनों को क़िताल (युद्ध) पर उभारिए । अगर आप में के बीस आदमी भी जमे रहें, तो वे दो सौ पर ग़ालिब (प्रभावी) होंगे; और अगर आप में से ऐसे सौ होंगे, तो वे एक हज़ार काफ़िरों पर ग़ालिब (प्रभावी) होंगे, क्योंकि यह ऐसे लोग हैं जो कुछ भी नहीं समझते।

66 अब अल्लाह ने तुम्हारे बोझ को हल्का कर दिया और 'उसे' मालूम हुआ कि तुममें कुछ कमज़ोरी है, तो अगर तुम्हारे सौ आदमी जमे रहने वाले होंगे, तो वे दो सौ पर ग़ालिब (प्रभावी) रहेंगे; और अगर तुममें ऐसे हज़ार होंगे, तो अल्लाह के हुक्म से वे दो हज़ार पर ग़ालिब (प्रभावी) रहेंगे, और अल्लाह तो उन्हीं के साथ है जो सब्र करते हैं।

67 किसी नबी के लिए यह उचित नहीं कि उनके पास क़ैदी हों, यहाँ तक कि वह धरती में खून खराबा करे; तुम लोग दुनिया का सामान चाहते हो, जबकि अल्लाह आख़िरत चाहता है, और अल्लाह बड़ा ज़बरदस्त (प्रभुत्वशाली), हिक्मत वाला है।

68 अगर अल्लाह का लिखा पहले से मौजूद न होता, तो जो कुछ नीति तुमने अपनाई है उस पर तुम्हें कोई बड़ा अ़ज़ाब आ जाता।

69 तो जो कुछ ग़नीमत का माल तुमने हासिल किया है, उसे हलाल पाक समझकर खाओ और अल्लाह से डरते रहो; बेशक अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, रह़म वाला है।

70 ऐ नबी! कह दीजिए, उन क़ैदियों से जो आप के हाथ में हैं, "कि अगर अल्लाह ने यह जान लिया कि तुम्हारे दिलों में कुछ भलाई है, तो 'वह' उससे कहीं बेहतर तुम्हें देगा, जो तुम से छिन गया है, और तुम्हें माफ़ कर देगा, और अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, रह़म वाला है।"

71 और अगर यह आप से ख़ियानत (विश्वासघात) करना चाहेंगे, तो इससे पहले भी वे अल्लाह के साथ ख़ियानत कर चुके हैं तो उसने तुम्हें उन पर अधिकार दे दिया, अल्लाह जानने वाला, बड़ा हिक्मत वाला है।

72 जो लोग ईमान लाए और उन्होंने हिजरत की, और अल्लाह की राह में अपने मालों और अपनी जानों के साथ जिहाद किया, वे और जिन लोगों ने उन्हें पनाह दी, और मदद की, वही लोग आपस में एक-दूसरे के वली (संरक्षक) हो रहे हैं; और जो लोग ईमान तो लाए, लेकिन उन्होंने हिजरत नहीं की, तुम्हारी उनसे कोई दोस्ती (संरक्षण) नहीं, जब तक कि वे हिजरत न करें और अगर वह तुम से मदद माँगे दीन के काम में तो तुम पर वाजिब है कि मदद करो, सिवाए इसके, कि (यह मदद) किसी ऐसी क़ौम के मुक़ाबले में हो जिससे तुम्हारे दर्मियान मुआहिदा (संधि) हो, और अल्लाह खूब देख रहा है जो कुछ तुम करते हो।

73 और जो लोग काफ़िर हैं, वह आपस में एक दूसरे के दोस्त हैं; अगर तुम
ऐसा न करोगे तो धरती में फ़ित्ना और बड़ा फ़साद फैल जाएगा।
74 और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने हिजरत की और अल्लाह की राह में
जिहाद किया, और जिन लोगों ने उन्हें पनाह दी और मदद की, वही सच्चे
मोमिन हैं। उनके लिए माफ़ी और इज़्ज़त वाली रोज़ी है।
75 और जो लोग बाद में ईमान लाए और उन्होंने हिजरत की और तुम्हारे साथ
मिलकर जिहाद किया तो ऐसे लोग भी तुममें ही से हैं। और क़रीबी रिश्तेदार
एक दूसरे के ज़्यादह हक़दार हैं अल्लाह की किताब में, बेशक अल्लाह हर
चीज़ का इल्म रखने वाला है।

## सूर-ए-तौबः

यह सूरः मदनी है, इसमें अ़रबी के 11360 अक्षर 2537 शब्द,129 आयतें और 16 रूकूअ़ हैं

1 बरी (विरक्ति) होने का एलान है अल्लाह और उसके रसूल की ओर से, जिन
मुश्रिकों (बहुदेववादियों) से तुमने अ़हद (समझौते) किये थे;
2 "अब तुम ज़मीन में चार महीने चल फिर लो, और जान लो! कि तुम अल्लाह
को आजिज़ न कर सकोगे, और यह भी कि अल्लाह काफ़िरों को अपमानित
करने वाला है।"
3 और आम एलान किया जाता है, अल्लाह और उसके रसूल की ओर से लोगों
के लिए बड़े हज के दिन, "अल्लाह (ज़िम्मेदारी से) बरी है मुश्रिकों से और
उसका रसूल भी; अगर अब भी तुम तौबः कर लो, तो यह तुम्हारे लिए अच्छा
है; और अगर तुम मुँह मोड़ते हो तो तुम अल्लाह के क़ाबू से बाहर नहीं जा
सकते;" और शुभ सूचना (ख़बर) सुना दीजिए! काफ़िरों को दुख देने वाले
अ़ज़ाब की;
4 सिवाय उन मुश्रिकों के जिनसे तुमने अ़हद (सन्धि) किया, फिर उन्होंने उसको
निभाने में कोई कमी नहीं की, और न तुम्हारे ख़िलाफ़ किसी की मदद की,
तो ऐसे समझौते को उनके निर्धारित समय तक पूरा करो, (कि) अल्लाह
मुत्तिक़यों (परहेज़गारों) को पसंद करता है।
5 फिर जब ह़राम (आदर वाले) महीने गुज़र जाएँ तो (इन लड़ने वाले) मुश्रिकों
को जहाँ कहीं पाओ (अर्थात कअ़बः के पास ही क्यों न हों) क़त्ल करो, उन्हें
पकड़ो, और घेरो और हर घात की जगह उनकी ताक़ में बैठो, फिर अगर वे
तौबः कर लें और नमाज़ क़ायम करें, और ज़कात दें, तो उनका रास्ता छोड़
दो; बेशक अल्लाह माफ़ करने वाला, रह़म वाला है।
6 और अगर मुश्रिकों में से कोई तुम से पनाह माँगे तो तुम उसे पनाह (शरण

ा) दे दो, यहाँ तक कि अल्लाह का कलाम (वाणी) सुन लें, फिर उन्हें उनके
सुरक्षित स्थान पर पहुँचा दो, यह इसलिए कि ये लोग जानते नहीं;
7 इन मुश्रिकों का कोई अ़हद (सन्धि) अल्लाह और उसके रसूल के नज़्दीक़
किस तरह क़ायम रह सकता है- सिवाय उन लोगों के जिन लोगों से तुमसे
मस्जिदे ह़राम (कअ़बः) के पास मुआ़हिदा हुआ था (सन्धि), अगर वे क़ायम
रहें, तो तुम भी अपने वचन पर क़ायम रहो, बेशक अल्लाह तक़्वा (परहेज़गारी)
अपनाने वालों को पसंद करता है।
8 (उनसे अ़हद) किस तरह बाक़ी रह सकता है, (जबकि उनका ह़ाल यह है,)
कि अगर वे तुम पर क़ाबू पा लें, तो तुम्हारे बारे में न नाते का ख़याल रखें
और न अ़हद (वचन) का; यह मुँह से तो तुम्हें खुश कर देते हैं मगर उनके
दिल क़ुबूल नहीं करते, और उनमें अक्सर फ़ासिक़ (नाफ़रमान) हैं।
9 यह आयतों के बदले मामूली क़ीमत ह़ासिल करते और लोगों को अल्लाह के
रास्ते से रोकते हैं, बेशक बहुत बुरा है जो कुछ यह कर रहे हैं।
10 यह लोग किसी मोमिन के बारे में न तो नाते-रिश्ते का ख़याल रखते हैं, और
न अ़हद (वचन) का, और यही लोग हैं जो ह़द (सीमा) से आगे बढ़ जाने
वाले हैं।
11 फिर अगर यह तौबः कर लें, और नमाज़ क़ायम करें, और ज़कात दें; तो वे
तुम्हारे दीनी भाई हैं, और 'हम' अपनी आयतें खोल-खोल कर बयान करते
हैं उन लोगों के लिए जो जानना चाहें।
12 और अगर अ़हद (वचन) करने के बाद अपनी क़समों को तोड़ डालें; और
तुम्हारे दीन में ताने (तिरस्कार) करने लगें, तो फिर काफ़िरों (इन्कारियों) के
सरदारों से युद्ध करो, इनकी क़समों का कोई भरोसा नहीं, यहां तक कि वे
बाज़ (रूक) आ जाएँ।
13 क्या तुम ऐसे लोगों से क़िताल (जंग) नहीं करोगे, जिन्होंने अपनी क़समें तोड़
डालीं और रसूल को (उसके वतन से) निकालने का पक्का इरादा किया, और
तुम्हारे विरूद्ध जंग करने में पहल की? क्या तुम ऐसे लोगों से डरते हो? तो
(जान लो कि) अल्लाह इसका ज़्यादा ह़क़दार है कि तुम उससे डरो, अगर तुम
ईमान वाले हो;
14 उनसे क़िताल (जंग) करो, अल्लाह तुम्हारे हाथों से उनको अ़ज़ाब में डालेगा,
और अपमानित करेगा, और तुम को उन पर ग़ालिब (विजयी) करेगा; और
ईमान रखने वालों के दिलों को ठंडा करेगा;
15 और उनके दिलों का क्रोध मिटाएगा, और अल्लाह जिसको चाहेगा, तौबः की
तौफ़ीक़ देगा और अल्लाह बड़ा इल्म वाला, ह़िक्मत वाला है।
16 क्या तुम लोगों ने यह समझ रखा है कि यूँ ही छोड़ दिये जाओगे; हालाँकि
अल्लाह ने अभी उन लोगों को अलग ही नहीं किया, जिन्होंने तुममें से जिहाद
किये, और अल्लाह और उसके रसूल और मोमिनों के सिवा किसी को दिली
दोस्त नहीं बनाया? और अल्लाह उसकी ख़बर रखता है जो कुछ तुम करते
हो।

17 यह मुश्रिकों का काम नहीं है कि वे अल्लाह की मस्जिदों को आबाद करें,
जबकि वे खुद अपने ख़िलाफ़ कुफ्र की गवाही दे रहे हैं, यही वे लोग हैं कि
इनके आ़माल अकारथ हो चुके, और यह आग में ही हमेशा पड़े रहेंगे।
18 अल्लाह की मस्जिदों को आबाद करना तो उन लोगों का काम है, जो ईमान
रखते हों अल्लाह और अन्तिम दिन पर, और पाबन्दी करते हों नमाज़ की
और ज़कात देते रहते हों और अल्लाह के सिवा किसी से न डरते हों, तो
ऐसे ही लोगों के लिए उम्मीद है कि हिदायत (सीधा मार्ग) पाने वाले हैं।
19 क्या तुमने हाजियों को पानी पिलाने के काम, और मस्जिदे ह़राम (कअ़बः) के
इन्तिज़ाम को, उस व्यक्ति के काम के बराबर ठहरा लिया है जो अल्लाह और
आख़िरत के दिन पर ईमान लाया, और उसने अल्लाह की राह में जिहाद
(संघर्ष) किया? यह अल्लाह के नज़्दीक़ दोनों बराबर नहीं, और अल्लाह
ज़ालिम लोगों को राह नहीं दिखाता।
20 जो लोग ईमान लाए और उन्होंने हिज्रत की, और अल्लाह की राह में अपने
मालों और जानों से जिहाद किया, उनका दर्जा अल्लाह के नज़्दीक बहुत बड़ा
है, और वही कामियाब होने वाले हैं;
21 उनका 'रब' उन्हें खुशख़बरी देता है, (अपनी) दया और प्रसन्नता की, और
ऐसे बाग़ों की जहाँ उनके लिए हमेशा-हमेश की नेअ़मतें हैं;
22 उनमें वे हमेशा-हमेश रहेंगे, बेशक अल्लाह के पास बहुत बड़ा अज्र (बदला)
है।
23 ऐ ईमान वालो! अगर तुम्हारे (माँ) बाप और (बहन) भाई ईमान के मुक़ाबले
में कुफ्र को पसंद करें, तो उनसे दोस्ती (राज़दार) न रखो, और तुममें से जो
उन से दोस्ती रखेगा तो ऐसे ही लोग ज़ालिम हैं।
24 कह दीजिएः अगर तुम्हारे बाप, तुम्हारे बेटे, तुम्हारे भाई, और तुम्हारी पत्नियाँ,
और तुम्हारे रिश्तेदार, और माल जो तुमने कमाए हैं, और तिजारत जिसके
बन्द होने का ख़ौफ़ है, और घर जिन्हें तुम पसंद करते हो, तुम्हें अल्लाह और
उसके रसूल और उसकी राह में जिहाद करने से ज़्यादा प्यारी हैं, तो इन्तिज़ार
करो! यहाँ तक कि अल्लाह अपना फ़ैसला ले आए, और अल्लाह नाफ़रमानों
को राह नहीं दिखाता।"
25 अल्लाह बहुत से मौक़ों पर तुम्हारी मदद कर चुका है और 'हुनैन' (की लड़ाई)
के दिन जबकि तुम्हें अपनी अधिकता पर गर्व था; तो वह तुम्हारे कुछ काम
न आया, और धरती अपनी विशालता के बावजूद तुम पर तंग हो गई, फिर
तुम पीठ फेरकर भाग खड़े हुए;
26 फिर अल्लाह ने अपने रसूल पर और मोमिनों पर अपनी सकीनत (प्रशान्ति)
उतारी, और ऐसी सेनाएँ उतारीं जिनको तुमने नहीं देखा, और काफ़िरों को
सज़ा दी! और यही बदला है काफ़िरों का।
27 फिर इसके बाद अल्लाह जिसको चाहता है उसे तौबः की तौफीक़ देता है, और
अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, रह़म वाला है।
28 ऐ ईमान वालो! मुश्रिक तो नजिस (अपवित्र) ही हैं, अतः इस वर्ष के बाद
वे 'मस्जिदे ह़राम' के पास न जाने पाएँ और अगर तुम्हें ग़रीबी का डर हो,

तो अल्लाह चाहेगा तो तुम को अपने फ़ज़्ल (अनुग्रह) से सम्पन्न कर देगा, बेशक अल्लाह सब कुछ जानने वाला, ह़िक्मत वाला है।
29 वे किताब वाले जो न अल्लाह पर ईमान रखते हैं, और न आख़िरत के दिन
पर, और न अल्लाह और उसके रसूल ने जिन चीज़ों को हराम ठहराया है उसे ह़राम ठहराते हैं, और न दीने ह़क़ को क़ुबूल करते हैं- उनसे जंग करो, यहाँ तक कि ज़लील हो कर अपने हाथ से जिज़्या (कर) दें।
30 और यहूदी कहते हैं ''उज़ैर अल्लाह का बेटा है।'' और ईसाई कहते हैं,
''मसीह़ अल्लाह का बेटा है,'' यह उनके अपने मुँह की बातें हैं, यह भी उन्हीं की सी बातें कर रहे हैं जो इससे पहले इन्कार कर चुके हैं, अल्लाह इनको हलाक (नाश) करे! यह कहाँ से औंधे हुए जा रहे हैं!
31 इन्होंने अल्लाह को छोड़कर अपने धर्म ज्ञाताओं (उलमा) और सन्तों (बुज़ुर्गों)
को रब बना लिया है और मसीह इब्ने मरयम को भी- हालाँकि उन्हें इसके सिवा कोई हुक्म नहीं दिया गया था कि वह 'केवल एक मअ़बूद' (उपास्य) की इबादत करें (जिसके) सिवा कोई उपास्य नहीं, पाक है 'वह' उस शिर्क से जो यह करते हैं।
32 'यह' लोग अल्लाह के नूर (प्रकाश) को अपने मुँह से बुझा देना चाहते हैं,
हालाँकि अल्लाह अपने (प्रकाश) को पूरा किये बिना नहीं रहेगा, चाहे काफ़िरों को नागवार (अप्रिय) ही लगे।
33 'वही' है जिसने अपने रसूल को हिदायत (मार्गदर्शन) और सच्चे दीन के साथ
भेजा ताकि उसे तमाम दीन (धर्म) पर ग़ालिब (प्रभावी) कर दे चाहे मुश्रिकों को (कितना ही) बुरा ही लगे।
34 ऐ ईमान वालो! (अह्ले किताब के) बहुत से धर्म ज्ञाता (उलमा) और सन्त,
लोगों के माल नाह़क़ खाते हैं, और (उनको) अल्लाह की राह से रोकते हैं; और जो लोग सोना और चाँदी इकट्ठा कर के रखते हैं, और उन्हें अल्लाह की राह में खर्च नहीं करते, आप उन्हें एक दर्दनाक अ़ज़ाब की ख़बर सुना दीजिए;
35 जिस दिन उस (माल) को जहन्नम की आग में तपाया जाएगा, फिर उससे
उनकी पेशानियों (मस्तक) को और उनके पहलुओं, और उनकी पीठों को दाग़ा जाएगा (और कहा जाएगा) ''यही है, वह (ख़ज़ाना) जिसे तुमने अपने लिए जमा किया था, तो अब अपने जमा करने का मज़ा चखो!''
36 महीनों की संख्या-अल्लाह के नज़दीक उस दिन से (जब) कि 'उसने' आसमानों
और ज़मीन को पैदा किया, अल्लाह की किताब में बारह महीने (लिखे) हैं जिनमें चार महीने (ज़ीक़अ़दा, ज़िल्हिज्ज, मुहर्रम, रजब) हुरमत वाले (प्रतिष्ठित) हैं, यही सीधा दीन है, अतः तुम इन महीनों में अपने ऊपर जुल्म न करो; और मुश्रिकों से तुम सब के सब मिल कर लड़ो, जिस तरह वे सब मिल कर तुम से लड़ते हैं, और जान लो! कि अल्लाह मुत्तक़ियों (परहेज़गारों) के साथ है।
37 (अम्न के किसी महीने) का हटा देना कुफ्र में ज़्यादती करना है, इससे इन्कार
करने वाले गुमराही में पड़ते हैं, वह किसी साल ह़राम महीनों को ह़लाल कर

लेते हैं और किसी साल उसे ह़राम समझते हैं ताकि उन (महीनों) को जिन्हें अल्लाह ने ह़राम कर दिया है गिनती पूरी कर लें; फिर अल्लाह के ह़राम किये हुए महीने को ह़लाल कर लेते हैं, उनके बुरे करतूत उन्हें अच्छे मालूम होते हैं और अल्लाह इन्कार करने वालों को सीधी राह नहीं दिखाता।

38 ऐ ईमान वालो! तुम्हें क्या हो गया है, कि जब तुमसे कहा जाता है कि "अल्लाह की राह में निकलो," तो तुम ज़मीन से चिमट जाते हो? क्या तुमने दुनिया की ज़िन्दगी को आख़िरत के मुक़ाबले में पसंद कर लिया है? दुनिया की ज़िन्दगी का सामान आख़िरत के मुक़ाबले में बहुत थोड़ा है!-

39 अगर तुम न निकलोगे तो अल्लाह तुम्हें एक दर्दनाक अ़ज़ाब देगा, और तुम्हारे बदले एक दूसरी क़ौम पैदा कर देगा, और तुम उसे कुछ भी नुक़्सान न पहुँचा सकोगे, और अल्लाह हर चीज़ पर कुद्रत रखता है।

40 अगर तुम (रसूल की) मदद न करोगे, तो उनकी मदद (ख़ुद) अल्लाह कर चुका है, जबकि उनको काफ़िरों ने (वतन से) निकाल दिया था (ऐसी स्थिति में) जबकि वह केवल दो में के दूसरे (अर्थात अबूबक्र और रसूल) थे। जब वे दोनों गुफ़ा में थे; उस वक्त वह अपने साथी से कह रहे थे, "ग़म (शोक) न करो, अल्लाह हमारे साथ है; फिर अल्लाह ने उन पर अपनी ओर से सकीनत (प्रशान्ति) उतारी, और उनकी मदद ऐसी सेनाओं से की जिन्हें तुम देख न सके; और उन्होंने काफ़िरों की बात नीची कर दी, और अल्लाह ही की बात ऊँची रही, और अल्लाह ज़बरदस्त (प्रभुत्वशाली), ह़िक्मत वाला है।

41 निकल पड़ो-हल्के हो या बोझल- और जिहाद करो अपने माल से और अपनी जान से अल्लाह की राह में, यही बेहतर है तुम्हारे लिए, अगर तुम (कुछ) इल्म रखते हो।

42 अगर कुछ माल लगे हाथ मिल जाने वाला होता, और सफ़र भी हल्का होता तो यह लोग ज़रूर आप के साथ हो लेते; और सफ़र की दूरी उन्हें कठिन मालूम हुई, अब वे अल्लाह की क़समें खाएँगे कि "अगर हम से हो सकता तो हम ज़रूर तुम्हारे साथ चलते," ये लोग अपने आपको तबाही में डाल रहे हैं, और अल्लाह जानता है कि ये झूठे हैं।

43 अल्लाह ने आप को माफ़ कर दिया! (लेकिन) आपने उनको इजाज़त क्यों दे दी यहाँ तक कि आप पर जो लोग सच्चे हैं ज़ाहिर हो जाते, और आप झूठों को भी जान लेते?

44 जो लोग अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं, वे आपसे इजाज़त नहीं माँगते (चाहते हैं) कि अपने माल और जान से जिहाद करें,और अल्लाह परहेज़गारों को भली-भाँति जानता है।

45 इजाज़त तो वही लोग माँगते हैं, जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान नहीं रखते, और जिनके दिल सन्देह में पड़े हुए हैं, तो वे अपने सन्देह के तरद्दुद (डाँवाडोल) में हैं।

46 और अगर वे निकलने का इरादा करते, तो उसके लिए सामान जुटाते, किन्तु

अल्लाह ने उनके उठने को नापसंद किया तो 'उसने' उन्हें रोक दिया, और
उनसे कह दिया गया, "बैठने वालों के साथ बैठे रहो;"
47 अगर तुम्हारे साथ निकलते भी तो, तुम्हारे अन्दर ख़राबी के सिवा किसी और
चीज़ को बढ़ावा न देते; और वे तुम्हारे बीच फ़ित्ना (उपद्रव) मचाने के लिए
दौड़ धूप करते, और तुम्हारे बीच कान लगाकर सुनने वाले जासूस भी मौजूद
हैं, और अल्लाह ज़ालिमों को भली-भाँति जानता है;
48 इन्होंने तो इससे पहले भी फ़ित्ना (उपद्रव) माचाना चाहा था और वे तुम्हारे
ख़िलाफ़ घटनाओं और मामलों के उलटने-पलटने में लगे रहे, यहाँ तक कि
हक़ आ गया और अल्लाह का हुक्म ग़ालिब हो कर रहा, और उन्हें नागवार
(अप्रिय) ही लगता रहा।
49 और उनमें कोई ऐसा भी है, जो कहता है, "मुझे तो इजाज़त दे ही दीजिए,
और मुझे फ़ित्ना में न डालिए।" जान लो कि ये फ़ित्ने में तो पड़ ही चुके
हैं, और जहन्नम इन्कार करने वालों को घेर रही है।
50 अगर आप को कोई अच्छी हालत पेश आती है, तो उन्हें बुरा लगता है; और
अगर आप पर कोई मुसीबत आ जाती है तो कहते हैं, " हमने तो अपना
काम पहले ही संभाल लिया था।" और खुश होते हुए लौटते हैं।
51 कह दीजिए, "हम पर कोई मुसीबत नहीं आ सकती मगर वही जो अल्लाह ने
हमारे लिए लिख दिया; 'वह' हमारा मालिक है, और ईमान वालों को अल्लाह
ही पर भरोसा रखना चाहिए।"
52 कह दीजिए, "तुम हमारे लिए दो भलाइयों (शहादत या विजय) में से एक के
इन्तिज़ार में हो और 'हम' तुम्हारे लिए इस बात के इन्तिज़ार में हैं कि अल्लाह
अपनी ओर से तुम्हें कोई अ़ज़ाब (यातना) दे या हमारे हाथों दिलाए; अच्छा
तो तुम भी इन्तिज़ार करो, हम भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार कर रहे हैं।"
53 कह दीजिए, "तुम खुशी से खर्च करो या नाखुशी से, तुमसे कुछ भी कुबूल न
किया जाएगा।" क्योंकि तुम नाफ़रमान (अवज्ञाकारी) लोग हो।"
54 और उनके खर्च के कुबूल होने में इसके अ़लावा और कोई चीज़ रूकावट नहीं
कि उन्होंने अल्लाह और 'उसके' रसूल के साथ कुफ्र किया, और नमाज़ को
आते हैं तो बस सुस्ती के साथ और ख़र्च करते हैं तो नागवारी (अनिच्छापूर्वक)
से;
55 तो तुम को उनके माल और उनकी औलाद हैरत में न डालें, अल्लाह तो बस
यह चाहता है कि उनके ही (नेअ़मतों के) ज़रिये से उन्हें दुनिया की ज़िन्दगी में
अ़ज़ाब देता रहे, और उनकी जानें ऐसी हालत में निकाली जाएँ कि वे इन्कार
करने वाले (काफ़िर) ही रहें;
56 और अल्लाह की क़समें खाते हैं कि 'वे' तुम में से हैं; हालाँकि वे तुम में से
नहीं हैं, बल्कि वे ऐसे लोग हैं जो डरपोक हैं;
57 अगर यह कोई पनाह की जगह पाते, या कोई गुफ़ा या कोई जगह घुस बैठने
की, तो यह ज़रूर मुँह उठा कर उधर चल पड़ते;
58 और उनमें से कुछ ऐसे भी हैं, जो आप को सदक़े के बारे में ताना देते हैं, तो

अगर उन्हें उसमें से मिल जाए तो राज़ी हो जाते हैं, और अगर उन्हें उनमें से नहीं मिलता तो बस नाराज़ हो जाते हैं;

59 और अगर अल्लाह और उसके रसूल ने जो कुछ उन्हें दिया था, उस पर वे राज़ी रहते और कहते "हमारे लिए अल्लाह काफ़ी है, और अल्लाह हमें जल्द ही अपने फ़ज़्ल से देगा और उसका रसूल भी, हम तो अल्लाह ही की ओर लौ लगाते हैं।"

60 सदक़े तो बस गरीबों, मोहताजों और उन लोगों के लिए हैं, जो इस काम पर नियुक्त हों, और उन लोगों के लिए जिनके दिलों में (इस्लाम का) लगाव पैदा करना हो, और गर्दनों को छुड़ाने, और क़र्ज़दारों और तावान (जुर्माना)भरने वालों की मदद करने में, और अल्लाह की राह में मुसाफ़िरों की मदद करने के लिए हैं; यह अल्लाह की ओर से ठहराया हुआ हुक्म है, और अल्लाह जानने वाला, हिकमत वाला है।

61 और इनमें कुछ लोग ऐसे भी हैं जो नबी को दुःख देते हैं और कहते हैं, 'यह व्यक्ति तो केवल कान हैं" (अर्थात कान का कच्चा) कह दीजिए, "वह तुम्हारे लिए कान का भला है, वह अल्लाह पर ईमान रखता है, और मोमिनों (की बात) पर यक़ीन करता है, और जो लोग तुम में से ईमान रखते हैं, उनके लिए सरापा रहमत है; और जो लोग अल्लाह के रसूल को दुःख देते हैं, उनके लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है।"

62 यह लोग तुम्हारे सामने अल्लाह की क़समें खाते हैं, ताकि तुम को खुश कर लें, हालाँकि अल्लाह और उसका रसूल ज़्यादा हक़दार हैं, कि उनको राज़ी करें अगर ये ईमान वाले होते।

63 क्या इन लोगों को मालूम नहीं! कि जो व्यक्ति अल्लाह और उसके रसूल का विरोध करता है, तो उसके लिए जहन्नम की आग है जिसमें वह हमेशा रहेगा, यह बड़ी रूस्वाई की बात है।

64 मुनाफिक़ (कप्टाचारी) डरते रहते हैं कि कहीं उनके बारे में कोई ऐसी सूरः नाज़िल न हो जाए जो वह सब कुछ उन पर खोल दे, जो उन (मुनाफ़िक़ों) के दिलों में है, कह दीजिए, "मज़ाक़ उड़ा लो, अल्लाह तो उसे ज़ाहिर (प्रकट) कर के रहेगा, जिसका तुम्हें डर है।"

65 और अगर तुम उनसे पूछो तो कह देंगे "हम तो केवल बातें और हँसी-खेल कर रहे थे।" कह दीजिए, "क्या अल्लाह और उसकी आयतों और उसके रसूल के साथ तुम हँसी-मज़ाक़ करते थे?-

66 बहाने न बनाओ, तुमने अपने ईमान लाने के बाद इन्कार किया, अगर हम तुम्हारे एक गिरोह को माफ़ भी कर दें तो भी एक गिरोह को तो सज़ा देकर ही रहेंगे, इस लिए कि वे मुजरिम हैं।"

67 मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औ़रतें सब एक ही तरह के (हमजिन्स) हैं: बुरी बात का हुक्म देते रहते हैं, और अच्छी बात से रोकते रहते हैं, और अपने हाथों को बन्द रखते हैं, उन्होंने अल्लाह को भुला दिया तो 'उसने' उन्हें भुला दिया, बेशक मुनाफ़िक़ीन बड़े नाफ़रमान हैं;

68 और अल्लाह ने मुनाफिक़ मर्दों और मुनाफिक़ औ़रतों और काफ़िरों से जहन्नम

की आग का वादा कर रखा है, जिसमें वे हमेशा रहेंगे, वही उनके लिए काफ़ी है और अल्लाह ने उन पर लानत कर दी, और उनके लिए हमेशा का अ़ज़ाब है।

69 तुम्हारा ह़ाल भी वही हुआ जैसा तुम्हारे पूर्वजों का हुआ था, वह तुमसे कहीं ज़्यादा शक्तिशाली थे और माल और औलाद में भी बढ़-चढ़ कर थे, फिर उन्होंने अपने हिस्से का लाभ उठा लिया, और तुमने भी अपने हिस्से का लाभ उठा लिया, जिस तरह तुम से पहले लोगों ने उठाया था; और तुम भी उसी तरह उलझते रहे, जिस तरह वे उलझते रहे, यही वे लोग हैं जिनके आ़माल दुनिया और आख़िरत में बरबाद हो गये, और यही लोग घाटा उठाने वाले हैं।

70 क्या इन्हें उन लोगों की ख़बर नहीं पहुँची जो इनसे पहले गुज़र चुके हैं- (जैसे) क़ौमे 'नूह' और 'आ़द' और 'समूद' की, और क़ौमे इब्राहीम व मद्यन वालों की, और उल्टी हुई बस्तियों की- उनके पास उनके रसूल खुली हुई निशानियां ले कर आए थे, फिर अल्लाह ऐसा न था कि उन पर ज़ुल्म करता, और वे खुद ही अपने आप पर ज़ुल्म करते थे।

71 और ईमान वाले मर्द, और ईमान वाली औरतें एक-दूसरे के रफ़ीक़ (साथी) हैंः भली बातों का हुक्म देते हैं, और बुरी बातों से रोकते रहते हैं, और नमाज़ क़ायम करते हैं, और ज़कात देते रहते हैं और अल्लाह और उसके रसूल की फ़रमाँबरदारी (आज्ञा पालन) करते हैं, यही लोग हैं कि अल्लाह उन पर ज़रूर रह़म करेगा, बेशक अल्लाह जबर्दस्त (प्रभुत्वशाली), ह़िक्मत वाला है।

72 अल्लाह ने ईमान वालों और ईमान वाली औ़रतों से वादा कर रखा हैं जन्नत का, कि उनके नीचे नहरें बह रही होंगी, जिसमें वे हमेशा रहेंगे, और उस हमेशा रहने वाली जन्नत में पाकीज़ा मकान होंगे, और उन्हें अल्लाह की रज़ामन्दी हासिल होगी, जो सबसे बढ़ कर है, यही सबसे बड़ी कामियाबी है।

73 ऐ नबी! काफ़िरों (इन्कार करने वालों) और मुनाफ़िक़ों से जिहाद कीजिए और उनके साथ सख़्ती के साथ पेश आइए, और उनका ठिकाना जहन्नम है और वह बहुत बुरी जगह है!

74 यह लोग अल्लाह की क़सम खा जाते हैं कि उन्होंने (फलाँ बात) नहीं कही, हालाँकि उन्होंने अवश्य ही कुफ़्र की बात कही थी, और अपने इस्लाम कुबूल करने के बाद इन्कार किया और ऐसी बात का इरादा किया जो हासिल न हो सकी; और उन्होंने बदला केवल इस बात का दिया कि अल्लाह और उसके रसूल ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से मालदार कर दिया; अब अगर ये लोग तौबः कर लें तो उनके ह़क़ में बेहतर है और अगर उन्होंने मुँह मोड़ा तो अल्लाह उन्हें दर्दनाक सज़ा दुनिया और आख़िरत में देगा और उनका ज़मीन में न कोई दोस्त होगा और न मदद्गार।

75 और उनमें से कुछ लोग ऐसे भी हैं जिन्होंने अल्लाह को वचन दिया था कि "अगर उसने हमें अपने फ़ज़्ल से दिया, तो हम ज़रूर दान करेंगे और नेक लोगों में  हो कर रहेंगे;"

76 फिर जब अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से (माल) दिया तो वे उसमें कंजूसी करने लगे और मुँह फेर गये;

77 फिर अंजाम यह हुआ कि ‘उसने’ उनके दिलों में उस दिन तक के लिए निफ़ाक़
(कप्टाचार) डाल दिया, जब वे उससे मिलेंगे; इसलिए कि उन्होंने अल्लाह से
जो वादा किया था तोड़ दिया और इसलिए भी कि वे झूठ बोलते रहे।
78 क्या उन्हें ख़बर नहीं कि अल्लाह उनके भेदों और उनकी कानाफूसियों को
अच्छी तरह जानता है और यह कि अल्लाह छिपी बातों को खूब जानता है?
79 जो (मुनाफ़िक़) खुशी-खुशी खर्च करने वाले मोमिनों पर सद्क़ात के बारे में
एतिराज़ किया करते हैं और उन लोगों का मज़ाक़ उड़ाते हैं जो अपनी मेहनत
मज़दूरी के सिवा ख़र्च के लिए कुछ नहीं पाते; अल्लाह उनका मज़ाक़ उन्हीं
पर उलट रहा है और उनके लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है।
80 आप उनके लिए इस्तिग़फ़ार (क्षमा की प्रार्थना) करें, या उनके लिए इस्तिग़फ़ार
न करें, अगर आप उनके लिए सत्तर बार इस्तिग़फ़ार करेंगे तो भी अल्लाह
माफ़ नहीं करेगा, यह इसलिए कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल के
साथ कुफ्र किया, और अल्लाह फ़ासिक़ (अवज्ञाकारी) लोगों को सीधी राह
नहीं दिखाता।
81 यह पीछे रह जाने वाले, अल्लाह के रसूल के पीछे, अपने बैठे रहने पर प्रसन्न
हुए, उन्हें यह नापसंद हुआ कि अल्लाह की राह में अपने मालों और जानों
के साथ (तबूक में) जिहाद करें और उन्होंने कहा,“इस गर्मी में न निकलो।”
कह दीजिए, “जहन्नम की आग इससे कहीं ज़्यादा गर्म है” अगर यह समझते
होते;
82 तो हँस लें थोड़ा और फिर रोते रहें बहुत, उन कामों के बदले में जो कुछ वे
करते रहे।
83 फिर अगर अल्लाह आप को वापस लाए उनके किसी गिरोह की ओर, और
यह लोग आप के साथ चलने की इजाज़त माँगें तो कह दीजिए, “तुम कभी भी
मेरे साथ न चल सकोगे, और न मेरे साथ होकर किसी दुश्मन से लड़ सकते
हो, तुम पहली बार बैठे रहने पर राज़ी हुए, तो अब भी पीछे रहने वालों के
साथ बैठे रहो;”
84 और इनमें से जो कोई मर जाए उस पर कभी भी नमाज़ (जनाज़ा) न पढ़िए
और न उसकी क़ब्र पर खड़े होइए, (क्योंकि) उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल
के साथ कुफ़्र किया, और मरे भी तो फ़ासिक़ (नाफ़रमान)।
85 और उनके माल और उनकी औलाद आप को आश्चर्य में न डाले, अल्लाह
तो बस यह चाहता है कि उन्हीं के ज़रिये से दुनिया में भी अ़ज़ाब देता रहे,
और उनकी जान इस हाल में निकले कि वे काफ़िर हों।
86 और जब कोई सूरः उतरती है कि “अल्लाह पर ईमान लाओ और उसके रसूल
के साथ मिल कर जिहाद करो,” तो जो लोग इनमें क़ुद्रत (सामर्थ्य) वाले हैं
वही आप से इजाज़त माँगने लगते हैं, और कहते हैं “हमें छोड़ दीजिए कि
हम लोग बैठने वालों के साथ रहें;”
87 ये इस पर राज़ी हो गये कि पीछे रह जाने वालों के साथ रह जाएँ और उनके
दिलों पर मुहर लगा दी गयी, इसलिए ये कुछ नहीं समझते।
88 लेकिन रसूल, और जो लोग उनके साथ ईमान ला चुके हैं, उन्होंने अपने माल

और जान से जिहाद किया, यही लोग हैं जिनके लिए भलाइयाँ हैं, और यही लोग कामियाब होने वाले हैं;

89 अल्लाह ने उनके लिए ऐसे बाग़ तैयार कर रखे हैं, जिनके नीचे नहरें बह रही हैं, वे उनमें हमेशा रहेंगे, यही बड़ी कामियाबी है।

90 और बहाना करने वाले बद्दू भी आए कि उन्हें बैठे रहने की इजाज़त मिल जाए, और जो अल्लाह और उसके रसूल से झूठ बोले वे भी बैठे रहे, उनमें से जिन्होंने इन्कार किया उन्हें जल्द ही अ़ज़ाब पहुँच कर रहेगा,

91 न तो कमज़ोरों के लिए कोई गुनाह की बात है, और न बीमारों के लिए और न उन लोगों के लिए जिन्हें खर्च करने के लिए (माल) प्राप्त नहीं, जबकि वे अल्लाह और उसके रसूल के प्रति वफ़ादार हों, नेक लोगों पर कोई इल्ज़ाम नहीं, और अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, रह़म वाला है;

92 और न उन लोगों पर कोई आरोप है जो आप के पास आए, कि आप उनके लिए सवारी का इन्तिज़ाम कर दें और जब आप ने कहा, ''मैं तुम्हारे लिए सवारी का इन्तिज़ाम नहीं कर सकता'' तो वह इस ह़ाल में वापस होते हैं, कि उनकी आँखों से आँसू जारी होता है इस ग़म से कि वे अपने पास खर्च करने को कुछ नहीं पाते।

93 आरोप तो बस उन लोगों पर है जो दौलतमंद होते हुए भी आप से इजाज़त माँगते हैं, वे इस पर राज़ी हुए कि पीछे लोगों के साथ रह जाएँ और अल्लाह ने उनके दिलों पर मुहर लगा दी है तो वे कुछ नहीं जानते।

94 यह लोग तुम्हारे सामने बहाने करेंगे जब तुम उनके पास वापस जाओगे, कह दीजिए, ''बहाने न बनाओ, हम हरगिज़ तुम्हरी बात न मानेंगे, अल्लाह ने हमको तुम्हारी बातों की ख़बर दे दी है; अभी अल्लाह और उसका रसूल तुम्हारे काम को देखेगा, फिर तुम उसकी ओर लौटोगे, जो छिपे और खुले का इल्म रखता है; तो जो कुछ तुम करते रहे हो 'वह' सब तुम्हें बता देगा।''

95 जब तुम पलटकर उनके पास जाओगे तो वे तुम्हारे सामने अल्लाह की क़समें खाएँगे, ताकि तुम उन्हें उनकी ह़ालत पर छोड़ दो, तो तुम उन्हें छोड़ ही दो, यह गन्दे हैं और इनका ठिकाना जहन्नम है, जो कुछ ये करते रहे हैं यह तो उसी का बदला है;

96 यह तुम्हारे सामने क़समें खाएँगे ताकि तुम उनसे राज़ी हो जाओ, अगर तुम उनसे राज़ी भी हो जाओगे तो (भी) अल्लाह हरगिज़ राज़ी न होगा, फ़ासिक़ो (अवज्ञाकारी) से।

97 यह बद्दू लोग इन्कार और निफ़ाक़ (कप्टाचार) में बहुत बढ़े हुए हैं; और यह इसी लायक़ हैं कि उसकी सीमाओं से नावाक़िफ़ (अनभिज्ञ) रहें, जिसे अल्लाह ने अपने रसूल पर नाज़िल किया है, और अल्लाह बड़ा इल्म वाला, ह़िक्मत वाला है;

98 और कुछ बद्दू ऐसे हैं कि जो कुछ खर्च करते हैं, उसे तावान (जुर्माना) समझते हैं और तुम्हारे ह़क़ में मुसीबतों (बुरे दिन) का इन्तिज़ार करते रहते हैं; बुरी मुसीबतों में तो वही हैं, अल्लाह सब कुछ सुनता, जानता है।

99 और बद्दुओं में कुछ ऐसे भी हैं जो अल्लाह और आख़िरत (परलोक) को
मानते हैं और जो कुछ खर्च करते हैं उसे अल्लाह की कुर्बत (निकट्ता) और
रसूल की दुआओं का ज़रिया समझते है। हाँ! बेशक वह उनके हक़ में निकट्ता
है, अल्लाह उन्हें जल्द ही अपनी रह़मत में दाख़िल करेगा, बेशक अल्लाह बड़ा
माफ़ (क्षमाशील) करने वाला, रह़म वाला है।
100 सबसे पहले आगे बढ़ने वाले मुहाजिर और अन्सार, और जिन्होंने भली प्रकार
उनकी पैरवी की, अल्लाह उनसे राज़ी हुआ, और वे उससे राज़ी हुए और
'उसने' उनके लिए ऐसे बाग़ तैयार कर रखे हैं, जिनके नीचे नहरें बह रही
हैं, उनमें हमेशा-हमेश रहेंगे, यही बड़ी कामियाबी है।
101 और तुम्हारे आस-पास के बद्दुओं में और मदीना वालों में कुछ ऐसे मुनाफ़िक़
(कप्टाचारी) हैं जो निफ़ाक़ (कपटा नीती) पर जमे हुए हैं, उनको तुम नहीं
जानते, 'हम' उन्हें भली -भाँति जानते हैं जल्द ही 'हम' उन्हें दोहरी सज़ा देंगे,
फिर वे एक बड़े अ़ज़ाब की ओर लौटाए जाएँगे।
102 और दूसरे कुछ ऐसे लोग हैं जिन्होंने अपने गुनाहों का इक़रार किया, उन्होंने
मिले-जुले काम किये- कुछ अच्छे और कुछ बुरे- उम्मीद है कि अल्लाह की
मेहरबानी (कृपा दृष्टि) उन पर हो, बेशक अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, रह़म
वाला है।
103 आप उनके मालों में से सद्क़ः (दान) लेकर उन्हें पाक-साफ़ (शुद्ध) करें, और
उसके ज़रिये उन (की आत्मा) को विकसित करें, और उनके लिए दुआ़ करें।
कि आपकी दुआ़ उनके लिए तस्कीन (परितोष) है, और अल्लाह सुनने वाला,
जानने वाला है।
104 क्या यह लोग नहीं जानते कि अल्लाह ही अपने बन्दों की तौबः क़ुबूल करता,
और सद्क़ात लेता है? और बेशक अल्लाह ही तौबः क़ुबूल करने वाला बड़ा
रह़म वाला है।
105 और उनसे कह दीजिए, "अ़मल (कर्म) किये जाओ, अल्लाह और उसका रसूल
और ईमान वाले तुम्हारे अ़मल को देखेंगे, और तुम उसकी ओर पलूटोगे, जो
छिपे और खुले को जानता है, और जो कुछ तुम करते रहे हो 'वह' सब तुम्हें
बता देगा।"
106 और कुछ दूसरे लोग भी हैं, जिनका मामला अल्लाह के हुक्म आने तक रूका
हुआ है चाहे वह उन्हें सज़ा दे या उनकी तौबः क़ुबूल करे, और अल्लाह बड़ा
इल्म वाला, ह़िक्मत वाला है।
107 और जिन्होंने इसलिए मस्जिद बनाई है कि नुक़्सान पहुँचाएं और कुफ्र करें
और ईमान वालों में फूट डालें—और जो लोग अल्लाह और उसके रसूल से
पहले जंग कर चुके हैं उन के लिए घात की जगह बनाएँ और वे कसमें खाएंगे
कि "हमने तो बस अच्छा ही चाहा था," मगर अल्लाह गवाही देता है कि वे
बिल्कुल झूठे हैं;
108 आप उसमें कभी भी खड़े न होइएगा; वह मस्जिद जिसकी बुनियाद तक़्वा
(परहेज़गारी) पर पहले दिन ही से पड़ी है, वह इसकी ज्यादा ह़क़दार है कि

आप उसमें खड़े हों, उसमें ऐसे लोग पाये जाते हैं, जो अच्छी तरह पाक रहते हैं, और अल्लाह पाक-साफ़ रहने वालों को पसंद करता है।

109 फिर क्या वह व्यक्ति अच्छा है! जिसने अपनी इमारत की बुनियाद (आध ाारशिला) अल्लाह के डर और उसकी खुशी पर रखी है या वह, जिसने अपनी इमारत की बुनियाद किसी खाईं के खोखले कगार पर रखी- जो गिरने को है फिर वह (इमारत) उसको लेकर जहन्नम की आग में गिर पड़ी? और अल्लाह ज़ालिम लोगों को (सीधी) राह नहीं दिखाता;

110 हमेशा उनकी यह इमारत जो उन्होंने बनाई हैं, उनके दिलों में खटकती रहेगी सिवाय इसके कि उनके दिल ही टुकड़े-टुकड़े हो जाएँ और अल्लाह तो बड़ा इल्म वाला, हिक्मत वाला है।

111 अल्लाह ने ईमान वालों से उनके जान (प्राण) और उनके माल, इसके बदले में ख़रीद लिया है कि उनके लिए जन्नत है; यह लोग अल्लाह की राह में लड़ते हैं, तो मारते भी हैं और मारे भी जाते हैं इसी पर सच्चा वादा है तौरेत और इंजील और कुर्आन में; और अल्लाह से बढ़कर अपने वादे को कौन पूरा कर सकता है? अतः अपने इस सौदे पर खुशियाँ मनाओ, जो सौदा तुमने 'उससे' किया है और यही बड़ी कामियाबी है;

112 वे (मुजाहिद) तौबः करने वाले, इबादत करने वाले, ह़म्द (स्तुति) करने वाले, रोज़ः रखने वाले, रूकूअ़ करने वाले, सज्दः करने वाले, भलाई का हुक्म करने वाले, और बुराई से रोकने वाले, और अल्लाह की सीमाओं का ख़याल रखने वाले हैं, और ईमान वालों को (जन्नत की) खुशख़बरी सुना दीजिए।

113 नबी और ईमान वालों के लिए उचित नहीं कि वे मुश्रिकों के लिए माफ़ी की दुआ़ करें चाहे वे उनके नातेदार ही क्यों न हों, जबकि उन पर यह बात खुल चुकी है कि वे भड़कती हुई आग वाले हैं।

114 और इब्राहीम ने अपने बाप के लिए जो माफ़ी की दुआ़ की थी, वह तो केवल एक वादे की वजह से थी, जो वादा वह उससे कर चुके थे, फिर जब उन पर यह बात खुल गई कि वह अल्लाह का दुश्मन है तो वह उससे अलग हो गये; बेशक इब्राहीम बड़े ही नर्म दिल, सहनशील थे।

115 और अल्लाह ऐसा नहीं कि क़ौम को गुमराह (पथभ्रष्ट) कर दे जबकि वह उनको राह पर ला चुका हो, जब तक कि उन्हें साफ़-साफ़ वे बातें न बता दे जिनसे उन्हें बचना है; बेशक अल्लाह हर चीज़ को भली-भाँति जानता है।

116 बेशक अल्लाह ही तो है 'जिसका' राज्य आसमानों और ज़मीन में है, 'वही' जिलाता और मारता है, और अल्लाह के सिवा तुम्हारा न कोई मित्र है और न मदद्गार।

117 बेशक अल्लाह नबी पर मेहरबान हो गया और मुहाजिरों और अन्सार पर भी, जिन्होंने तंगी की घड़ी में उसका साथ दिया, उसके बाद कि उनमें से एक गिरोह के दिल फिर जाने को थे (अर्थात कुटिलता की ओर झुक गये थे) फिर

उसने उन पर रह़मत की नज़र डाली। बेशक वह (उनके ह़क़ में) बड़ा शफ़ीक़, (करूणामय), रह़म वाला है।

118 और उन तीनों पर भी, जो पीछे छोड़ दिये गये थे, यहाँ तक कि जब धरती विशाल होते हुए भी, उन पर तंग हो गई और उनकी जान उन पर भारी हो गई और उन्होंने समझा कि अल्लाह से बचने के लिए कोई पनाह (शरण ा) नहीं मिल सकती- मिल सकती है तो उसी के यहाँ, फिर 'उसने' उन पर रह़म किया ताकि वे पलट आएँ, बेशक अल्लाह ही तौबः क़ुबूल करने वाला, रह़म वाला है।

119 ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरते रहो और सच्चों के साथ रहो।

120 मदीना वालों और उनके आस-पास के बद्दुओं को ऐसा नहीं चाहिए था कि अल्लाह के रसूल को छोड़कर पीछे रह जाएँ, और न यह कि उसकी जान के मुक़ाबले में उन्हें अपनी जान ज़्यादा प्रिय हो- क्योंकि वह अल्लाह की राह में प्यास, या थकान, या भूख की कोई भी तक्लीफ़ उठाएँ; या वे ऐसी जगह क़दम रखें, जिससे काफ़िरों का क्रोध भड़के; या जो चाल भी वे दुश्मन के लिए चलें, उस पर उनके ह़क़ में (एक-एक) नेक अ़मल लिख लिया जाता है, बेशक अल्लाह नेकों का अज्र अकारथ नहीं करता;

121 और जो कुछ छोटा या बड़ा (थोड़ा बहुत) खर्च उन्होंने किया, और जो घाटी उन्होंने तय की, यह सब उनके नाम लिख लिया जाता है ताकि अल्लाह उन्हें उनके कामों का अच्छे से अच्छा बदला दे।

122 और यह तो हो नहीं सकता कि ईमान वाले सब के सब निकल खड़े हों, फिर ऐसा क्यों नहीं हुआ कि उनके हर गिरोह में से कुछ लोग निकलते, ताकि वे धर्म में समझ हासिल करते और (फिर) वे अपनी क़ौम को सचेत करते, जब वे उनकी ओर लौटते, ताकि वे (बुरे कामों से) बचें।

123 ऐ ईमान वालो! उन काफ़िरों (इन्कार करने वालों) से जंग करो जो तुम्हारे आस- पास हैं, और चाहिए कि वे तुम में सख़्ती पाएँ, और जान लो कि अल्लाह परहेज़गारों के साथ है।

124 और जब भी कोई सूरः उतरती है तो उनमें से कुछ लोग कहते हैं, "इसने तुममें से किसके ईमान को बढ़ाया?" तो जो लोग ईमान वाले हैं उसने उनके ईमान को बढ़ा दिया, और वे खुश होते हैं;

125 और जिन लोगों के दिलों में रोग है, उनकी गन्दगी पर उसने एक और गन्दगी को बढ़ा दिया, और वे इस हालत में मरे कि काफ़िर थे।

126 क्या यह देखते नहीं, कि हर साल यह एक या दो बार आज़माइश में डाले जाते हैं? फिर भी यह न तो तौबः करते हैं और न नसीह़त ह़ासिल करते हैं?

127 और जब कोई सूरः नाज़िल होती है तो एक-दूसरे की ओर देखने लगते हैं कि "तुम्हें कोई देख तो नहीं रहा है," फिर पलट जाते हैं; अल्लाह ने उनका दिल ही फेर दिया है, इस वजह से कि यह समझ से काम न लेने वाले लोग हैं।

128 तुम्हारे पास एक रसूल तुम्हीं में से आ गये हैं; तुम्हारा दुखों में पड़ना उनके

लिए नागवार गुज़रता है, वह तुम्हारे लिए (भलाई के) लालायित हैं; वह ईमान वालों के प्रति बड़े शफ़ीक़ (करूणामय), मेहरबान हैं।
129 फिर अगर यह लोग मुँह मोड़ें तो कह दीजिए, "मेरे लिए अल्लाह काफ़ी है, 'उसके' सिवा कोई मअ़बूद (उपास्य) नहीं! उसी पर मैंने भरोसा किया और 'वही' अर्शेअ़ज़ीम (महान राज सिंहासन) का मालिक है।"

## सूर-ए-यूनुस

यह सूरः मक्की है, इसमें अ़रबी के 7733 अक्षर,1861 शब्द, 109 आयतें और 11 रूकूअ़ हैं

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

1 अलिफ़्- लाम्- रा, यह ह़िक्मत भरी (ज्ञान से परिपूर्ण) किताब की आयातें हैं।
2 क्या लोगों को इस बात पर आश्चर्य है कि 'हमने' उन्हीं में से एक आदमी के पास वह़्य (सन्देश) भेजी कि लोगों को सचेत कर दें और ईमान वालों को ख़ुशख़बरी दे दें कि उनके लिए उनके रब के पास सच्चा दर्जा है, काफ़िर कहते हैं, "यह तो खुला हुआ जादूगर है।"
3 तुम्हारा रब 'वही' अल्लाह है, जिसने आसमानों और ज़मीन को छः दिन में पैदा किया, फिर अर्श (राज सिंहासन) पर विराजमान होकर व्यवस्था चला रहा है, उसकी इजाज़त के बिना कोई सिफ़ारिश करने वाला नहीं है, 'यही' अल्लाह तुम्हारा रब है तो उसी की इबादत करो, क्या तुम फिर भी नहीं समझते?
4 'उसी' की ओर तुम सब को लौटना है, यह अल्लाह का सच्चा वादा है; 'वही' तो ख़ल्क़त (सृष्टि) को पहली बार पैदा करता है; फिर वही उसको दोबारा पैदा करेगा, ताकि जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म (आ़माल) किये उन्हें इन्साफ़ के साथ बदला दे; और जिन्होंने इन्कार किया उनके लिए खौलता हुआ पानी और दर्दनाक अ़ज़ाब है, उस इन्कार के बदले में जो वे करते थे।
5 'वही' तो है जिसने सूरज को चमकता हुआ बनाया और चाँद को रोशन बनाया, और उसकी (घटने बढ़ने की) मंज़िलें तय कर दीं, ताकि तुम वर्षो की गिनती और ह़िसाब मालूम कर सको; अल्लाह ने यह सब कुछ बिना किसी उद्देश्य के नहीं पैदा किया, 'वह' अपनी निशानियों को उनके के लिए खोल-खोल कर बयान करता है, जो (कुछ) इल्म रखते हैं,
6 रात और दिन के उलट-फेर में, और जो कुछ अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन में पैदा किया है उसमें डर रखने वालों के लिए निशानियाँ हैं।
7 जिन लोगों को 'हम' से मुलाक़ात की उम्मीद ही नहीं, और वह दुनिया की ज़िन्दगी पर राज़ी और उसी पर संतुष्ट हो गये, और जो 'हमारी' निशानियों से ग़ाफ़िल हैं;

8 यही लोग हैं जिनका ठिकाना आग है, उसके बदले में जो वे करते हैं।
9 जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किये, उनका रब उनके ईमान
की वजह से उनको कामियाबी की मंज़िलों तक पहुँचाएगा, उनके नीचे नहरें
बह रही होंगी नेअ़मत के बाग़ों में,
10 वहाँ उनकी पुकार यह होगी कि पाक है 'तू' ऐ अल्लाह'' और वहाँ उनकी
आपसी दुआ़ का शब्द 'सलाम' होगा, और उनकी पुकार का अन्त इस पर
होगा कि ''प्रशन्सा अल्लाह ही के लिए है जो सारे संसार का रब है।''
11 और अगर अल्लाह लोगों को अ़ज़ाब देने में जल्दी करता, जिस तरह भलाई
के मामले में 'वह' जल्दी करता है, तो उनकी अवधि पूरी हो चुकी होती,
'हम' उन लोगों को, जो 'हम' से मिलने की उम्मीद नहीं रखते, छोड़ देते हैं
कि अपनी सरकशी में भटकते रहें।
12 और जब इन्सान को कोई तक्लीफ़ पहुँचती है तो 'हम' को पुकारता है लेटे
भी, और बैठे भी और खड़े भी; फिर जब 'हम' उससे उसकी तक्लीफ़ को दूर
कर देते हैं तो वह ऐसा हो जाता है कि जैसे जो तक्लीफ़ उसको पहुँची थी
उसके लिए हमें पुकारा ही न था; इसी तरह हद से गुज़रने वालों को उनके
आमाल सजा कर (शोभाएमान) दिखाए गये हैं।
13 और तुमसे पहले हम कितनी ही नस्लों को हलाक कर चुके हैं, जबकि उन्होंने
ज़ुल्म किया, और उनके रसूल उनके पास खुली निशानियाँ लेकर आए थे, और
वे ऐसे थे ही नहीं कि ईमान ले आते, 'हम' इसी तरह बदला दिया करते हैं
मुजरिमों को।
14 फिर 'हमने' उनके बाद तुम्हें ज़मीन में ख़लीफा (उत्तराधिकारी) बनाया, ताकि
'हम' देखें कि तुम कैसे अ़मल करते हो?
15 और जब उनके सामने हमारी स्पष्ट आयतें पढ़ कर सुनाई जाती हैं, तो वे
लोग जो 'हम से' मिलने की उम्मीद नहीं रखते वे कहते हैं, ''इसके सिवा कोई
और क़ुर्आन ले आओ या इसमें कुछ परिवर्तन करो'' कह दीजिए, ''मुझसे यह
नहीं हो सकता कि मैं अपनी ओर से इसमें कोई परिवर्तन करूँ, मैं तो बस
उसका अनुयायी हूँ, जो वह्य (अर्थात अल्लाह का आदेश) मेरी ओर उतारी
जाती है, अगर मैं अपने रब की नाफ़रमानी करूँ तो मुझे एक बड़े दिन के
अ़ज़ाब का डर है।''
16 कह दीजिए, ''अगर अल्लाह चाहता तो मैं तुम्हें यह पढ़ कर न सुनाता, और
न 'वह' तुम्हें इसके बारे में बताता फिर मैं तो तुम्हारे बीच इसके पहले भी
एक उम्र गुज़ार चुका हूँ, क्या तुम अक़्ल से काम नहीं लेते?''
17 फिर उससे बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा! जो अल्लाह पर झूठ गढ़े या उसकी
आयतों को झुठलाए? बेशक मुजरिम कभी कामियाब नहीं होंगे;
18 और यह अल्लाह के सिवा (ऐसी चीज़ों की) इबादत करते हैं जो उनको न
कुछ नुक़्सान पहुँचा सकें और न उनका कुछ भला कर सकें और वे कहते हैं
''यह अल्लाह के यहाँ हमारे सिफारिशी हैं।'' कह दीजिए, ''क्या तुम अल्लाह
को ऐसी चीज़ों की ख़बर देते हो, जिसे वह नहीं जानता न आसमानों में और
न ज़मीन में?'' पाक और बुलन्द है 'वह' इस शिर्क से, जो यह करते हैं।

19 और इन्सान तो एक ही उम्मत (तरीक़े पर) थे, फिर उन्होंने मतभेद किया;
और अगर तुम्हारे रब की ओर से पहले ही एक बात तय न हो गयी होती,
तो उनके बीच उस चीज़ का फ़ैसला कर दिया जाता, जिसमें वे मतभेद कर
रहे हैं,
20 और कहते हैं, "इस पर उनके रब की ओर से कोई निशानी क्यों नहीं उतरी,
तो कह दीजिए, "ग़ैब (परोक्ष की ख़बर) तो बस अल्लाह ही को है, तो
इन्तिज़ार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करता हूँ।"
21 और जब 'हम' लोगों को तक्लीफ़ के बाद रह़मत (दयालुता) का मज़ा चखाते
हैं तो वे हमारी निशानियों के बारे में चाल बाज़ियाँ करने लगते हैं; कह दीजिए,
"अल्लाह अपनी चाल (तद्बीर या उपाय) में ज़्यादा तेज़ है" हमारे भेजे हुए
(फ़रिश्ते) उनको लिख रहे हैं, जो चालबाज़ियाँ तुम कर रहे हो।
22 'वही' तो है जो तुम्हें जल और थल में चलाता है, यहाँ तक कि जब तुम
नौका में (सवार) होते हो, और वह लोगों को अच्छी अनुकूल हवा के सहारे
लेकर चलती हैं और वे उससे ख़ुश होते हैं तो अचानक! तेज़ हवा का झोंका
आता है, और हर ओर से मौजें उठती हैं और वे समझ लेते हैं कि लहरों
में घिर गये, तो उस वक़्त वे अल्लाह ही पर केवल आस्था रख कर पुकारने
लगते हैं, "अगर 'तू' ने इस (मुसीबत) से हमें बचा लिया, तो हम ज़रूर तेरे
शुक्रगुज़ार (आभारी) होंगे"
23 फिर जब वह उनको बचा लेता है, तो क्या देखते हैं कि वे नाह़क़ ज़मीन में
सरकशी करने लगते हैं; लोगो! तुम्हारी सरकशी तुम्हारे अपने ही ख़िलाफ़ है,
तुम दुनिया की ज़िन्दगी का फ़ायदा उठा लो; फिर तुमको 'हमारी' ही ओर
वापस आना है, तो तुम्हें 'हम' बता देंगे, जो कुछ तुम किया करते थे।
24 दुनिया की ज़िन्दगी की मिसाल तो बस ऐसी है, जैसे 'हमने' आसमान से पानी
बरसाया, तो उससे ज़मीन पर उगने वाली चीज़ें, (वनस्पति आदि) जिनको
इन्सान और चौपाए खाते हैं- मिल कर निकाला यहाँ तक कि जब ज़मीन ने
अपना श्रंगार कर लिया और बन संवर गयी, और उसके मालिक समझने लगे
कि उन्हें उस पर पूरा कब्ज़ा हो गया है; तो अचानक रात या दिन के समय
'हमारा' हुक्म आ गया, फिर 'हमने' उसे कटी फ़सल की तरह कर दिया, जैसे
कल वहाँ कुछ था ही नहीं; इसी तरह 'हम' अपनी निशानियाँ खोल-खोल कर
बयान करते हैं (उन लोगों के लिए) जो सोच-विचार से काम लेने वाले हैं।
25 और अल्लाह सलामती के घर की ओर बुलाता है, और जिसको चाहता है
सीधी राह पर चलाता है;
26 जो लोग नेकी करते रहे उनके लिए अच्छा बदला है, और उसके अलावा और
भी। और उनके चेहरों पर न तो कलौंस (स्याही) छाएगी और न ज़िल्लत, यही
जन्नत वाले हैं कि वे उसमें हमेशा रहेंगे।
27 और जिन लोगों ने बुराइयाँ कमाईं, तो बुराई का बदला वैसा ही मिलेगा, जैसी
बुराई की होगी, और उन पर रूस्वाई छाई हुई होगी, उनको अल्लाह से बचाने
वाला कोई न होगा उनके चेहरों पर ऐसा अन्धकार छाया होगा, जैसे अंधेरी

रात के टुकड़ों से उन्हें ढाँक दिया गया हो; यही आग वाले हैं, कि उसमें उन्हें हमेशा रहना है।

28 और जिस दिन 'हम' उन सब को इकट्ठा करेंगे, फिर उन लोगों से, जिन्होंने शिर्क किया होगा, कहेंगे, ''अपनी जगह ठहरे रहो, तुम भी और तुम्हारे साझीदार भी।'' फिर 'हम' उनके बीच अलगाव पैदा कर देंगे, और उनके ज़रिए ठहराए गये साझीदार कहेंगे, ''तुम हमारी तो इबादत करते नहीं थे।''

29 अल्लाह हमारे और तुम्हारे बीच गवाही के लिए काफ़ी है, कि हम तुम्हारी इबादत से बिल्कुल बेख़बर थे।

30 वहाँ हर व्यक्ति अपने पहले के किये हुए कर्मों को जाँच लेगा, और वे अपने सच्चे मालिक के सामने लौटाए जाएँगे, और जो कुछ उन्होंने गढ़ रखा था, सब गुम हो जाएगा।

31 कह दीजिए, ''तुम्हें आसमान और ज़मीन से रोज़ी कौन देता है? या यह कान और आखें किसके अधिकार में हैं और कौन जानदार को निकालता है बेजान से, और बेजान को निकालता है जानदार से, और कौन यह सारा इन्तिज़ाम चला रहा है?'' इस पर वे बोल पड़ेंगे ''अल्लाह!'' तो कहिए फिर तुम क्यों नहीं डरते?''

32 तो 'यही' अल्लाह तो है तुम्हारा ह़क़ीक़ी (वास्तविक) रब, फिर सच्चाई के खुल जाने के बाद (दूसरी राह चलना) गुमराही के सिवा और क्या रह जाता है? तो तुम किधर (बहके) फिरे जाते हो।

33 इसी तरह आप के रब की बात सरकशी करने वालों के ह़क़ में पूरी हो चुकी है कि यह ईमान न लाएँगे।

34 कह दीजिए ''क्या तुम्हारे ठहराए हुए साझीदारों में कोई ऐसा भी है जो पहली बार मख़्लूक़ (सृष्टि) को पैदा करेगा, फिर वह दोबारा भी पैदा करे?'' कह दीजिए, ''अल्लाह ही पहली बार पैदा करता है, फिर 'वही' दोबारा भी पैदा करेगा; तो तुम कहाँ भट्के चले जा रहे हो?''

35 कह दीजिए, ''क्या तुम्हारे ठहराए हुए साझीदारों में कोई ऐसा है जो सच्ची राह दिखा सके?'' कह दीजिए, ''अल्लाह ही ह़क़ का रास्ता दिखाता है तो फिर जो ह़क़ का रास्ता दिखाए, वह इस लायक़ है कि उसकी पैरवी (अनुसरण ा) की जाए या वह जो खुद ही राह नहीं पा सकता जब तक दूसरा उसको राह न दिखलाए? तो तुम को क्या हो गया है तुम कैसे फ़ैसला कर रहे हो?''

36 और उनमें से अक्सर तो बस अट्कल पर चलते हैं, बेशक ह़क़ के सामने कुछ भी काम नहीं आ सकता, बेशक वे जो कुछ कर रहे हैं अल्लाह उसको भली- भाँति जानता है।

37 और यह क़ुर्आन ऐसा नहीं है कि अल्लाह के सिवा और कोई अपनी ओर से बना लाए, बल्कि यह तो तस्दीक़ करने वाला है उस (कलाम) की जो इसके पहले से है और उन्हीं किताबों का विस्तार है, जिसमें कोई सन्देह नहीं, यह सारे संसार के 'रब' की ओर से है।

38 क्या ये लोग कहते हैं ''उस (रसूल) ने इसको अपनी ओर से गढ़ लिया है?''

कह दीजिए, “अगर सच्चे हो तो, तुम एक ही सूरः ऐसी बना लाओ और अल्लाह के सिवा बुला लो, जिसे बुला सकते हो। अगर तुम सच्चे हो।”

39 बल्कि बात यह है कि उस चीज़ को झुठलाने लगे जिसके इल्म पर ये हावी न हो सके, और अभी इन पर सच्चाई खुलने का मौक़ा ही नहीं आया; इसी तरह उन लोगों ने भी झुठलाया था, जो इनसे पहले थे, फिर देख लो! उन ज़ालिमों का कैसा अंजाम हुआ।

40 और इनमें से कुछ तो ऐसे हैं कि इस (किताब) पर ईमान ले आते हैं, और इनमें कुछ ऐसे भी हैं, कि ईमान नहीं लाते, और आप का ‘रब’ फ़सादियों को खूब जानता है।

41 और अगर यह आप को झुठलाएँ, तो कह दीजिए, “मेरा किया मेरे लिए और तुम्हारा किया तुम्हारे लिए; तुम मेरे काम के ज़िम्मेदार नहीं और मैं तुम्हारे काम का ज़िम्मेदार नहीं हूं।”

42 और इनमें कुछ ऐसे हैं जो आप की ओर कान लगाते हैं, तो क्या आप बहरों को सुना देंगे, जबकि वह कुछ न समझते हों?

43 और उनमें से कुछ ऐसे हैं, जो आप की ओर देख रहे हैं, तो क्या आप अन्धों को रास्ता दिखा सकेंगे, चाहे वे कुछ भी न देखते हों?

44 अल्लाह तो लोगों पर ज़रा भी ज़ुल्म नहीं करता, लेकिन लोग खुद ही अपने आप पर ज़ुल्म करते हैं।

45 और जिस दिन ‘वह’ उनको इकट्ठा करेगा तो ऐसा लगेगा जैसे वे (दुनिया में) दिन की एक घड़ी से ज़्यादा भर ठहरे ही नहीं थे, आपस में एक-दूसरे को पहचानेंगे, वे लोग घाटे में पड़ गये, जिन्होंने अल्लाह से मिलने को झुठलाया और रास्ता न पा सके।

46 और अगर ‘हम’ आप को कुछ दिखा भी दें जिसका ‘हम’ उनसे वादा कर रहे हैं, या हम आप को वफ़ात (मौत) दे दें, उन्हें तो हमारी ही ओर लौटकर आना है, फिर जो कुछ वे कर रहे हैं उस पर अल्लाह गवाह है।

47 और हर उम्मत (समुदाय) के लिए एक रसूल (भेजा) है, फिर जब उनके पास उनका रसूल आ जाता है तो उनके बीच इन्साफ़ के साथ फ़ैसला कर दिया जाता है, और उन पर कुछ ज़ुल्म नहीं किया जाता।

48 और ये कहते हैं, “अगर तुम सच्चे हो तो यह वादा (अ़ज़ाब का) कब पूरा होगा?”

49 कह दीजिए, “मेरा अपना फ़ायदा व नुक़्सान भी मेरे हाथ में नहीं सिवाय इसके कि जो अल्लाह चाहता है, हर उम्मत (समुदाय) के लिए एक समय (निर्धारित) है जब उनका समय आ जाता है तो वे एक घड़ी भी देर नहीं कर सकते और न जल्दी कर सकते हैं।

50 कह दीजिए, “यह तो बताओ कि अगर तुम पर अल्लाह का अ़ज़ाब रात को या दिन को आ जाए, तो फिर मुज्रिम किस बात की जल्दी करेंगे;

51 क्या फिर जब वह आ पड़ेगी, तब ही उसका यक़ीन करोगे? क्या अब! इसी के लिए तो जल्दी मचाया करते थे।

52 फिर जिन लोगों ने ज़ुल्म किया, उनसे कहा जाएगा, ''हमेशा-हमेश के लिए
अ़ज़ाब का मज़ा चखो जो कुछ तुम किया करते थे तुम उन्हीं (आमाल) का
बदला पाओगे।
53 और आपसे पूछते हैं, ''क्या यह (अ़ज़ाब) सच है?'' कह दीजिए, ''मेरे रब
की क़सम! वह बिल्कुल सच है और तुम क़ाबू से बाहर निकल जाने वाले
नहीं।''
54 और अगर हर (नाफ़रमान) व्यक्ति के पास वह सब कुछ हो, जो धरती में है,
तो वह फ़िदिया (अर्थदण्ड) के रूप में उसे दे डाले, (लेकिन उससे छुट्कारा
नहीं) जब वे अ़ज़ाब को देखेंगे नदामत को छिपाएँगे, और उनके बीच इन्साफ़
के साथ फ़ैसला कर दिया जाएगा और उन पर कोई ज़ुल्म न होगा।
55 याद रखो जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है, सब अल्लाह ही का है, और
याद रखो कि अल्लाह का वादा सच्चा है लेकिन अकसर लोग नहीं जानते;
56 'वही' जिलाता और मारता है और 'उसी' की ओर तुम 'सब' को लौट कर
जाना है।
57 ऐ लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे 'रब' की ओर से नसीहत (उपदेश), और दिलों
के बीमारियों की शिफ़ा और ईमान वालों के लिए हिदायत और रह़मत आ
चुकी है।
58 कह दीजिए, ''यह (क़ुर्आन) अल्लाह की मेहरबानी और उसकी रह़मत से
नाज़िल हुआ है, और लोगों को चाहिए कि इसको पाकर ख़ुश हों, यह उस से
कहीं बेहतर है जिसको यह जमा करने में लगे हैं,''
59 कह दीजिए '' क्या तुम लोगों ने यह भी देखा है कि जो रोज़ी अल्लाह ने
तुम्हारे लिए उतारी है उसमें से तुमने ख़ुद ही (कुछ को) ह़राम और (कुछ को)
ह़लाल ठहरा लिया है?'' कह दीजिए, ''क्या अल्लाह ने तुम्हें इसकी इजाज़त
दी है या तुम अल्लाह पर झूठ गढ़ कर थोप रहे हो?''
60 और जो लोग झूठ गढ़ कर उसे अल्लाह पर थोपते हैं वे क़ियामत के दिन के
विषय में क्या समझ रखे हैं? बेशक अल्लाह तो लोगों पर बड़ा फ़ज़्ल करने
वाला है लेकिन उनमें अक्सर लोग नाशुक्रे हैं।
61 और तुम जिस ह़ाल में भी होते हो, और क़ुर्आन में से जो कुछ भी पढ़ते हो,
और तुम लोग जो काम भी करते हो, 'हम' तुम्हें देख रहे होते हैं, जब तुम
उसमें लगे रहते हो, और तुम्हारे रब से ज़र्रा (कण) भर भी कोई चीज़ छिपी
नहीं है, न धरती में, और न आसमान में; और न उससे छोटी और न बड़ी
कोई चीज़ ऐसी है, जो एक स्पष्ट किताब में मौजूद न हो।
62 सुनो, अल्लाह के दोस्तों को न तो कोई डर होगा और न वे ग़मगीन होंगे;
63 जो लोग ईमान लाए और परहेज़गारी अपनाते रहे।;
64 उनके लिए दुनिया की ज़िन्दगी में ख़ुशख़बरी है, और आख़िरत में भी, अल्लाह
की बातें बदला नहीं करतीं- यही बड़ी कामियाबी है।
65 और उन लोगों (काफ़िरों) की बातें आप को दुखी न करें, इज़्ज़त (प्रभुत्व) सब
अल्लाह ही के लिए है, 'वह' सुनता, जानता है।

66 जान लो! कि जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, सब अल्लाह
ही का है और जो अल्लाह को छोड़ कर दूसरे साझीदारों को पुकारते हैं, वे
किसी के पीछे नहीं चलते वे तो केवल ज़न्न (अट्कल) पर चलते हैं और
केवल अट्कलें दौड़ाते हैं।
67 'वही' तो है जिसने तुम्हारे लिए रात बनाई ताकि तुम उसमें आराम करो, और
दिन को प्रकाशमान बनाया? बेशक इनमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो
सुनते हैं।
68 कहते हैं, ''अल्लाह ने बेटा बना रखा है'' उसकी ज़ात पाक और बेनियाज़
(निस्पृह) है, जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, सब 'उसी'
का है तुम्हारे पास इसकी कोई दलील नहीं, क्या तुम अल्लाह के बारे में ऐसी
बातें कहते हो, जिसकी तुम्हें जानकारी नहीं?
69 कह दीजिए, ''जो लोग अल्लाह पर झूठी बातें गढ़ते हैं वे कामियाब नहीं होते।''
70 यह तो दुनिया का सुख है फिर 'हमारी' ही ओर उन्हें लौट कर आना है,
फिर जो इन्कार वे किया करते थे उसके बदले में 'हम' उन्हें सख़्त अ़ज़ाब का
मज़ा चखाएँगे।
71 और उनको 'नूह़' का ह़ाल पढ़ कर सुनाइए, जबकि उन्होंने अपनी क़ौम से
कहा था, ऐ मेरी क़ौम! अगर तुमको मेरा रहना और अल्लाह की आयतें
पढ़कर समझाना नागवार गुज़रता हो तो मेरा भरोसा तो अल्लाह पर है; तुम
अपने साझीदारों के साथ मिलकर एक काम तय कर लो और वह तुम्हारी
तमाम जमाअ़त से भी छिपा न रहे फिर मेरे साथ जो कुछ करना है कर डालो
और मुझे मोह़लत न दो।''
72 तो अगर तुम मुँह फेरोगे, तो मैंने तुमसे कोई बदला नहीं मांगा, मेरा बदला
तो बस अल्लाह ही के ज़िम्मे है, और मुझे हुक्म हुआ है, कि मैं मुस्लिम
(फरमाँबरदार) रहूँ।
73 तो उन लोगों ने उसे झुठला दिया, फिर 'हमने' उन्हें और उन लोगों को, जो
उनके साथ नौका में थे, सब को बचा लिया और उन्हें ख़लीफ़ा (उत्तराधिकारी)
बनाया; और उन लोगों को डुबो दिया जिन्होंने 'हमारी' आयतों को झुठलाया
था, तो (देख लो!) जिन्हें सचेत किया गया था उनका क्या अंजाम हुआ?
74 फिर उसके बाद कितने ही रसूल उनकी क़ौम की ओर भेजे, और वे उनके
पास स्पष्ट निशानियाँ लेकर आए; मगर वे लोग ऐसे न थे कि जिसको पहले
झुठला चुके हों उसे मानते, इसी तरह 'हम' ज़्यादती करने वालों के दिलों पर
मुहर लगा देते हैं।
75 फिर उनके बाद 'हमने' मूसा और हारून को अपनी निशानियाँ दे कर फिरऔ़न
और उसके सरदारों की ओर भेजा तो उन्होंने घमंड किया और वे थे ही
मुजरिम लोग,
76 फिर जब उनके पास हमारी ओर से सच बात पहुँची, तो वह कहने लगे कि
यह तो खुला जादू है।
77 मूसा ने कहा, ''क्या तुम ह़क़ के बारे में ऐसा कहते हो जबकि यह तुम्हारे

सामने आ गया है, क्या यह कोई जादू है? और जादूगर तो कामियाब नहीं
हुआ करते।''
78 उन्होंने कहा, ''क्या 'तू' हमारे पास इसलिए आया है कि हमें उस चीज़ से
हटा दे, जिस पर हमने अपने बाप-दादा को पाया है, और धरती में तुम दोनों
की बड़ाई स्थापित हो जाए, और हम तो तुम पर ईमान लाने वाले नहीं।''
79 और फ़िरऔ़न ने कहा, ''लाओ मेरे पास हर माहिर जादूगर को।''
80 तो जब जादूगर आ गये, तो मूसा ने कहा, ''जो कुछ तुम्हें डालना है डालो।''
81 जब उन्होंने (रस्सियाँ) डाल दिया, तो मूसा बोले, ''तुम जो कुछ लाए हो जादू
है, अल्लाह अभी उसे मलया मेट किये देता है, अल्लाह बिगाड़ पैदा करने
वालों के काम को नहीं बनाता;
82 और अल्लाह अपने हुक्म से सच को सच ही कर देगा, और चाहे गुनहगार
बुरा ही मानें।''
83 तो 'मूसा' की बात उसकी क़ौम के लोगों में से बस कुछ ही लोगों ने मानी
'फिरऔ़न' और उनके अपने सरदारों के भय से कि कहीं उन्हें किसी फ़ित्नों
में न डाल दे; और फ़िरऔ़न था भी धरती पर बहुत सर उठाए हुए, और
वह ह़द से आगे बढ़ गया था।
84 और मूसा ने कहा, ''ऐ मेरी क़ौम के लोगो! अगर तुम अल्लाह पर ईमान
लाए हो, तो 'उस' पर भरोसा करो अगर तुम फ़रमाँबरदार हो।''
85 तो बोले, 'हमने अल्लाह पर भरोसा किया, हमारे रब 'तू' हमें ज़ालिमों के
हाथों आज़माइश में न डाल;
86 और अपनी रह़मत से हमें काफ़िरों की क़ौम से छुट्कारा दिला।''
87 और 'हमने' मूसा और उसके भाई की ओर वह़्य की कि ''तुम दोनों अपने
लोगों के लिए मिस्र में घर बनाओ, और अपने घरों को क़िब्ला ठहराओ, और
नमाज़ क़ायम करो, और ईमान वालों को ख़ुशख़बरी दे दो।''
88 और मूसा ने कहा, ''हमारे रब 'तूने' फ़िरऔ़न और उसके सरदारों को दुनिया
की ज़िन्दगी में साज़ व सामान (वैभव प्रतिष्ठा) एवं धन-दौलत प्रदान किया,
ऐ हमारे रब! यह इसलिए कि तेरी राह से भट्काएँ, ऐ हमारे रब! इनके माल
को नष्ट कर दे और इनके दिलों को कठोर कर कि वे ईमान न लाएँ, यहां
तक कि दर्दनाक अ़ज़ाब देख लें।''
89 फ़रमाया, ''तुम दोनों की दुआ़ क़ुबूल हो गयी, तो तुम दोनों जमे रहना और
उन की राह पर हरगिज़ न चलना, जो बे अक़्ल है।''
90 और 'हमने' बनी इस्राईल को समुद्र पार करा दिया, तो फ़िरऔ़न और उसकी
सेनाओं ने सरकशी और ज़्यादती के साथ उनका पीछा किया, यहाँ तक कि
जब वह डूबने लगा तो पुकार उठा, ''मैं ईमान लाता हूँ, कि उसके सिवा
कोई मअ़बूद नहीं'' जिस पर बनी इस्राईल ईमान ले आए हैं और मैं मुस्लिमों
(आज्ञाकारियों) में हूँ।
91 ''क्या अब? हालाँकि इससे पहले तू तो सरकशी ही करता रहा और फ़सादियों
में शामिल रहा,

92 तो आज हम तेरे शरीर को बचा लेंगे, ताकि तू बाद वालों के लिए निशानी हो जाए, और बहुत से लोग तो 'हमारी' निशानियों से ग़ाफ़िल हैं।''

93 और 'हमने' बनी इस्राईल को बहुत अच्छा ठिकाना दिया और पाक चीज़ों का रिज़्क़ अ़ता किया, फिर उन्होंने मतभेद किया यहाँ तक कि उनके पास इल्म आ चुका; बेशक आप का रब क़ियामत के दिन उनके बीच, उस चीज़ का फ़ैसला कर देगा जिसमें वे मतभेद करते रहे।

94 तो अगर तुम्हें उस चीज़ के बारे में कोई सन्देह हो, जो 'हमने' तुम्हारी ओर नाज़िल की हैं, तो उनसे पूछ लो, जो तुमसे पहले से किताबें पढ़ते हैं, तुम्हारे पास तो तुम्हारे रब की ओर से हक़ (सत्य) आ चुका है, तो तुम हरगिज़ सन्देह करने वालों में न होना।

95 और न उन लोगों में शामिल होना जिन्होंने अल्लाह की आयतों को झुठलाया, वरना तुम घाटे में पड़ कर रहोगे।

96 जिन लोगों के बारे में तुम्हारे रब की बात सच्ची होकर रही, वे ईमान नहीं लाएँगे;

97 और चाहे सारी निशानियाँ उनके पास आ जाएँ (ईमान न लाएँगे); यहाँ तक कि वे दर्दनाक अ़ज़ाब देख लें।

98 तो ऐसी कोई बस्ती क्यों न हुई, कि ईमान लाती तो उसका ईमान लाना उसके लिए फ़ायदा पहुँचाता? सिवाय यूनुस की क़ौम के; जब ईमान लाई तो 'हमने' उन पर से रूस्वाई के अ़ज़ाब को दुनियावी ज़िन्दगी में दूर कर दिया, और एक मुद्दत (अवधि) तक फ़ायदा उठाने का मौक़ा दिया।

99 और अगर तुम्हारा रब चाहता तो धरती के ऊपर जितने लोग हैं सब के सब ईमान ले आते, तो क्या तुम लोगों पर ज़बर्दस्ती करना चाहते हो कि वे ईमान वाले हो जाएँ?

100 और किसी व्यक्ति के लिए यह सम्भव नहीं, कि अल्लाह की इजाज़त के बिना ईमान ले आए, और उन लोगों पर गन्दगी डाल देता है  जो अक़्ल से काम नहीं लेते।

101 कह दीजिए, '' देखो! क्या-क्या चीज़ें आसमानों और ज़मीन में हैं? और निशानियाँ, और चेतावनियाँ उनके कुछ काम नहीं आतीं, जो ईमान न लाना चाहें।

102 तो क्या वैसे ही दिनों के इन्तिज़ार में हैं, जैसे कि इनसे पहले के लोगों पर आ चुके हैं, कह दीजिए, ''तुम भी इन्तिज़ार करो मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करता  हूँ।''

103 फिर 'हम' अपने रसूलों को बचा लेते हैं, और जो ईमान ले आए; इसी तरह 'हम पर यह हक़ है कि ईमान वालों को बचा लें।

104 कह दीजिए, ''ऐ लोगो, ''अगर तुम मेरे धर्म के सम्बन्ध में किसी सन्देह में हो तो (जान लो कि) मैं उनकी इबादत नहीं करता जिनकी तुम अल्लाह के सिवा इबादत करते हो, बल्कि मैं अल्लाह की इबादत करता हूँ, जो तुम्हें मौत देता है, और मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं ईमान लाने वालों में से हो जाऊँ;

105 और यह कि हर ओर से यकसू (एकाग्र) हो कर, अपना रूख इस धर्म की
ओर कर लो, और हरगिज़ मुश्रिकों में न होना;
106 और अल्लाह के सिवा किसी और को न पुकारना जो न तुम्हें फायदा पहुँचा
सकते हैं और न नुक़्सान, अगर तुम ऐसा करोगे तो ज़ालिमों में से हो जाओगे;
107 और अगर अल्लाह तुम्हें किसी मुसीबत में डाल दे, तो उसके सिवा कोई उसे
दूर करने वाला नहीं, और अगर 'वह' तुम्हारे लिए किसी भलाई का इरादा
कर ले तो कोई 'उसके' फ़ज़्ल को रोकने वाला नहीं, वह अपने बन्दों में से
जिसे चाहता है (फ़ायदा) पहुंचाता है, और 'वह' माफ़ करने वाला, रहम वाला
है।''
108 कह दीजिए, ''ऐ लोगो! तुम्हारे रब की ओर से तुम्हारे पास ह़क़ आ गया है,
तो अब जो कोई राह पर आएगा, तो वह अपने लिए ही आएगा, और जो
कोई गुमराह (पथभ्रष्ट) होगा तो वह अपने ही लिए गुमराह होगा, और मैं
तुम्हारा वकील (ज़िम्मेदार) नहीं हूँ।''
109 और जो कुछ तुम पर वह्‌य (सन्देश) की जा रही है उसकी पैरवी करो और
सब्र से काम लो! यहाँ तक कि अल्लाह फ़ैसला कर दे और 'वह' सबसे बेहतर
फ़ैसला करने वाला है।

## सूर-ए-हूद

यह सूरः मक्की है, इसमें अ़रबी के 7924 अक्षर,1936 शब्द, 123 आयतें और 12 रूकूअ़ हैं

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

1 अलिफ़्- लाम्- रा, यह वह किताब है जिसकी आयतें सुदृढ़ (पक्की) हैं, फिर
विस्तार पूर्वक बयान हुई हैं,ह़कीम व ख़बीर अल्लाह की ओर से,
2 यह कि तुम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो, मैं तो उसकी ओर से
तुम्हें सचेत करने वाला और खुश-ख़बरी देने वाला हूँ।
3 और यह कि ''अपने रब से तौबः करो और 'उसकी' ओर पलट आओ, 'वह'
तुम को एक निश्चित अवधि तक अच्छी जीवन सामग्री देगा, और बढ़-चढ़
कर अ़मल करने वालों पर अपना अधिक फ़ज़्ल (अनुग्रह) करेगा; किन्तु अगर
तुम मुंह फेरते हो, तो मुझे तुम्हारे बारे में एक बड़े दिन के अ़ज़ाब का डर
है।
4 तुम्हें अल्लाह ही की ओर पलटना है, और 'उसे' हर चीज़ पर कुदरत
(सामर्थ्य) है।''

5 सुनो! ये अपने सीनों को दोहरा करते हैं, ताकि उससे छिपें, याद रखो! जब
यह अपने कपड़े से स्वयं को ढ़ाँप लेते हैं, ‘वह’ जानता है, वह भी जो वे
छिपाते हैं और उसको भी जो वे ज़ाहिर करते हैं, बेशक ‘वह’ तो सीनों के
भेदों को भी खूब जानता है।
6 और ज़मीन पर कोई चलने-फिरने वाला (जानदार) ऐसा नहीं, जिसकी रोज़ी
अल्लाह के ज़िम्मे न हो, ‘वह’ उसके ठहरने की जगह को भी जानता है और
उस जगह को भी जहाँ वह सौंप दिया जाता है, यह सब कुछ एक स्पष्ट किताब
में (लिखा) है।
7 और ‘वही’ तो है, जिसने आसमानों और ज़मीन को छः दिनों में पैदा किया,
और उसका अर्श (सिंहासन) पानी पर था; ताकि तुम्हें आज़माए; कि कौन कर्म
में बेहतर है? और अगर तुम कहते हो कि ‘‘मरने के बाद तुम लोग उठाए
जाओगे,’’ तो काफ़िर बोल उठते हैं, ‘‘यह तो खुली जादूगरी है।’’
8 और अगर ‘हम’ एक निश्चित अवधि तक अ़ज़ाब को पीछे कर देते हैं, तो वे
कहने लगते हैं, ‘‘आख़िर क्या चीज़ है जो इसे रोक रही है?’’ सुन लो! जिस
दिन वह उन पर आ पड़ेगा तो फिर टाला न जा सकेगा, और जिस अ़ज़ाब
का वे मज़ाक़ उड़ा रहे हैं वही उनको आ घेरेगा।
9 और अगर ‘हम’ इन्सान को अपनी रह़मत का मज़ा चखा कर फिर उससे
उसको छीन लेते हैं, तो वह निराश, नाशुक्रा हो जाता है।
10 और अगर ‘हम’ इसके बाद कि उसे तक्लीफ़ पहुँची हो, उसे राहत का मज़ा
चखाते हैं; तो कहता है, ‘‘मेरे सब दुःख दूर हो गये,’’ बेशक वह फूला नहीं
समाता डींगे मारने लगता है।
11 मगर जिन्होंने सब्र से काम लिया, और अच्छे अ़मल किये ‘वही’ हैं; जिनके
लिए मग़्फ़िरत (क्षमा) है और बहुत बड़ा बदला।
12 तो शायद तुम उसमें से कुछ छोड़ बैठोगे! जो तुम्हारी ओर वह़्य के रूप में
भेजी जा रही है, और तुम इस बात पर तंग दिल हो रहे हो कि वे कहते हैं,
‘‘उस पर कोई ख़ज़ाना क्यों नहीं उतरा, या उसके साथ कोई फ़रिश्ता क्यों
नहीं आया?’’ आप तो केवल सचेत करने वाले हैं, और हर चीज़ अल्लाह ही
के ह़वाले है।
13 क्या यह कहते हैं, उन्होंने इसको खुद गढ़ लिया है? कह दीजिए, ‘‘अच्छा,
अगर तुम सच्चे हो तो इस (क़ुर्आन) जैसी गढ़ी हुई दस सूरतें ले आओ और
अल्लाह के अ़लावा जिस किसी को बुला सकते हो बुला लो।’’
14 तो अगर वे तुम्हारी बात न मानें, तो जान लो! यह अल्लाह के इल्म ही के
साथ उतारा गया है और यह कि ‘उसके’ सिवा कोई मअ़बूद नहीं, तो क्या
अब तुम मुस्लिम (आज्ञाकारी) होते हो?
15 जो (व्यक्ति) दुनिया की ज़िन्दगी और उसकी शोभा का इच्छुक हो, तो उनके
अ़मलों (कर्मों) का पूरा-पूरा बदला ‘हम’ यहीं दे देते हैं, और इसमें उनका कोई
ह़क़ नहीं मारा जाता;
16 यही वे लोग हैं जिनके लिए आग के सिवा और कुछ भी नहीं, उनका किया

कराया सब बेकार हो जाएगा और जो कुछ अ़मल वे करते रहे सब बातिल (व्यर्थ) ठहरेंगे।
17 क्या वह व्यक्ति जो अपने रब की ओर से रौशन दलील रखता हो और फिर एक गवाह भी उसकी ओर से हो-और इससे पहले मूसा की किताब भी एक मार्ग-दर्शक और रह़मत के रूप में मौजूद हो-ऐसे ही लोग तो उस पर ईमान लाते हैं और जो कोई और गिरोहों में से इसका इन्कार करेगा, तो उसका ठिकाना आग है; अतः तुम्हें इसके बारे में सन्देह न हो, यह तुम्हारे रब की ओर से ह़क़ है मगर अक्सर लोग ईमान नहीं लाते।
18 और उस व्यक्ति से बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा! जो अल्लाह पर थोप कर झूठ गढ़े, ऐसे लोग अपने रब के पास पेश होंगे, और गवाही देने वाले कहेंगे, ''यही लोग हैं जिन्होंने अपने रब पर झूठ गढ़ा था,'' सुन लो! ऐसे ज़ालिमों पर अल्लाह की लानत है।
19 जो अल्लाह की राह से रोकते और उसमें टेढ़ पैदा करना चाहते हैं, और वह आख़िरत का भी इन्कार करते हैं,
20 ये लोग धरती में क़ाबू से बाहर नहीं जा सकते, और न अल्लाह के सिवा उनका कोई हिमाायती है! उनको दोगुना अ़ज़ाब दिया जाएगा, क्योंकि ये न तो सुनना गवारा कर सकते थे और न ही देखना;
21 यही हैं जिन्होंने अपने आप को घाटे में डाला और जो कुछ वे गढ़ा करते थे, उनसे ग़ायब हो गया।
22 बेशक वही आख़िरत में सबसे बढ़कर घाटे में रहेंगे।
23 रहे वे लोग जो ईमान लाए, और उन्होंने अच्छे काम किये, और अपने रब की ओर झुके, वही जन्नत वाले हैं, उसमें वे हमेशा रहेंगे।
24 दोनों फ़िर्क़ों (पक्षों) की मिसाल ऐसी है जैसे एक अन्धा, एक बहरा हो, और एक देखने और सुनने वाला; क्या दोनों का ह़ाल एक जैसा हो सकता है, फिर तुम लोग समझते क्यों नहीं?
25 और 'हमने' 'नूह' को उनकी क़ौम की ओर भेजा (उन्होंने कहा), ''मैं तुम्हें साफ़-साफ़ चेतावनी देने वाला हूँ;
26 यह कि तुम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो, मुझे तुम्हारे बारे में एक दर्दनाक अ़ज़ाब के दिन का डर है।''
27 तो उनकी क़ौम के सरदारों ने, जो काफ़िर थे, कहा, ''तुम हमारे ही जैसे एक आदमी हो और यह भी देखते हैं कि बस कुछ ऐसे लोग ही तुम्हारे अनुयायी हैं जो हमारे यहां के नीच हैं, वह भी ज़ाहिर राय से, और हम अपने मुक़ाबले में तुम्हारे अन्दर कोई विशेषता नहीं पाते, बल्कि हम तो समझते हैं कि तुम झूठे हो।''
28 उन्होंने कहा, ''ऐ मेरी क़ौम यह तो बताओ, कि अगर मैं अपने रब की ओर से एक (रौशन) दलील पर हूँ, और 'उसने' अपनी खास रह़मत से मुझे नवाज़ा हो, मगर वह तुम्हें दिखाई न दे रही हो, तो क्या हम ज़बर्दस्ती तुम्हारे सर चिपका दें और जबकि वह तुम्हें अप्रिय है?-

29 और, “ऐ मेरी क़ौम के लोगो! मैं तुम से इस काम पर कोई माल तो नहीं
मांगता! मेरा अज्र (बदला) अल्लाह ही के ज़िम्मे है, और मैं उन लोगों को जो
ईमान ले आए हैं दूर करने वाला नहीं उन्हें तो अपने रब से मिलना है मगर
मैं तुम्हें देख रहा हूं कि तुम जिहालत किये जा रहे हो;
30 और ऐ मेरी क़ौम के लोगो! अगर मैं उन्हें दूर कर दूँ तो अल्लाह के मुक़ाबले
में कौन मेरी मदद कर सकता है? भला तुम ध्यान क्यों नहीं देते।
31 और मैं तुमसे यह नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं, और न
ही मुझे ग़ैब (परोक्ष) का इल्म है; और न मैं यह कहता हूँ कि मैं फ़रिश्ता
हूँ, और न मैं यह कह सकता हूँ, कि जिनको तुम नीची नज़र से देखते हो,
उनको अल्लाह भलाई नहीं देगा, जो उनके जी में है अल्लाह उसे खूब जानता
है, मैं अगर ऐसी बात कहूँ तब तो ज़ालिमों में हूँगा।”
32 उन्होंने कहा, “ऐ नूह! तुम हम से झगड़ चुके और बहुत बह़स कर चुके,
अगर तुम सच्चे हो, तो जिसकी तुम हमें धमकी देते हो उसे हम पर ले ही
आओ।”
33 कहा, “वह तो अल्लाह ही अगर चाहेगा तो तुम पर लाएगा, और तुम हरा
नहीं सकते;
34 और अगर मैं तुम्हारा भला भी चाहूँ (और) अल्लाह यह चाहे कि तुम्हें गुमराह
करे, तो मेरा भला चाहना तुम्हें कुछ भी लाभ नहीं पहुँचा सकता, ‘वही’ तुम्हारा
रब है और ‘उसी’ की ओर तुम्हें लौटना भी है।”
35 क्या यह कहते हैं कि, “इन्होंने इस (क़ुर्आन) को गढ़ लिया है, कह दीजिए,
“अगर मैंने गढ़ लिया है तो मेरे ही ऊपर मेरा यह जुर्म होगा, और तुम जो
जुर्म कर रहे हो मैं उससे बरी (मुक्त) हूँ।”
36 और ‘नूह’ के पास वह़्य भेजी गई कि “तुम्हारी क़ौम में से (और कोई) ईमान
नहीं लाएँगे सिवाय उनके, जो लोग ईमान ला चुके; तो जो कुछ ये कर रहे हैं
उनकी वजह से दुःखी न हो।
37 और नाव ‘हमारे’ सामने हमारे हुक्म के अनुसार तैयार करो, और ‘मुझसे’
उन लोगों के विषय में बात न करना जिन्होंने ज़ुल्म किया है, इसलिए कि वे
ज़रूर डुबो दिये जाएँगे।
38 और (नूह़) नाव बनाने लगे, और उनकी क़ौम के सरदार जब भी उनके पास
से गुज़रते तो उसका मज़ाक़ उड़ाते, उन्होंने कहा, “अगर तुम हमारा मज़ाक़
उड़ाते हो तो हम भी तुम्हारा मजा़क़ उड़ाएँगे जैसे तुम हमारा मज़ाक़ उड़ाते
हो;
39 तो जल्द ही तुम को मालूम हो जाएगा कि किस पर अ़ज़ाब आने वाला है जो
उसे रूस्वा कर देगा, और किस पर हमेशा का अ़ज़ाब नाज़िल होगा?”
40 यहाँ तक कि जब हमारा हुक्म आ गया, और तंदूर उबल पड़ा, तो ‘हमने’
कहा; ‘हर नस्ल में से दो (नर और मादा) के जोड़े उसमें ले लो और अपने
घर वालों को भी-सिवाय ऐसे व्यक्ति के जिसके बारे में बात तय हो चुकी हो
और जो ईमान लाया हो उसे भी;” मगर उनके साथ जो ईमान लाए थे, वे
बहुत थोड़े ही लोग थे।

41 और कहा कि अल्लाह का नाम लेकर (उसी के हाथ में है) इस का चलना
और ठहरना, इसमें सवार हो जाओ बेशक मेरा 'रब' बड़ा माफ़ करने वाला,
रहम वाला है।''
42 और वह (नाव) उन्हें लेकर लहरों के बीच चलने लगी; पहाड़ जैसी मौजों
में, और नूह ने अपने बेटे को पुकारा- और वह किनारे पर था- कि ''ऐ मेरे
बेटे! सवार हो हमारे साथ, और काफ़िरों के साथ मत हो।''
43 वह बोला, '' मैं अभी किसी पहाड़ की पनाह लिए लेता हूँ जो मुझे पानी से
बचा लेगा,'' कहा, ''आज अल्लाह के हुक्म से कोई बचाने वाला नहीं सिवाय
उसके जिस पर 'वह' रहम करे।'' इतने में दोनों के बीच मौज आ पड़ी और
डूबने वालों के साथ वह भी डूब गया।
44 और कहा गया, '' ऐ धरती! अपना पानी निगल जा और ऐ आसमान तू
थम जा'' इतने में पानी तह में बैठ गया, और फ़ैसला पूरा हो गया और वह
(नाव) जूदी (पहाड़) पर टिक गई, और कह दिया गया कि ज़ुल्म करने वाले
लोग दूर हो गये।''
45 और नूह ने अपने रब को पुकारा, और कहा, ''ऐ मेरे रब! मेरा बेटा तो मेरे
घर वालों ही में है और तेरा वादा सच्चा है और 'तू' सबसे बेहतर हाकिम
है।''
46 (अल्लाह ने) कहा, '' ऐ नूह! वह तुम्हारे घर वालों में से नहीं, क्योंकि उस के
कर्म (आमाल )बुरे थे, तो मुझसे ऐसी चीज़ों का सवाल न करो जिसकी तुम्हें
ख़बर न हो; 'मैं' तुम्हें नसीहत करता हूँ कि तुम नादानों में से न हो।''
47 (नूह) बोले, ''ऐ मेरे रब! मैं 'तुझ' से तेरी पनाह माँगता हूँ कि 'तुझसे' उस
चीज़ का सवाल करूँ जिसका मुझे कोई इल्म न हो, अब अगर 'तू' ने मुझे
माफ़ न किया और मुझ पर दया न की, तो मैं घाटे में पड़ कर रहूँगा।''
48 कहा गया, '' ऐ नूह! 'हमारी' ओर से सलामती और उन बरकतों के साथ,
(जो) तुम पर और उन गिरोहों पर होगी जो तुम्हारे साथ हैं; उतर आओ कुछ
गिरोह ऐसे भी होंगे जिन्हें हम थोड़े दिनों का सुख देंगे, फिर उन्हें हमारी ओर
से दुःख देने वाला अज़ाब आ पहुँचेगा।''
49 यह ग़ैब (परोक्ष) की ख़बरें हैं जिनकी 'हम' आप की ओर वह्य कर रहे हैं
इससे पहले न तो आप को उनकी ख़बर थी और न आप की क़ौम को, अतः
सब्र से काम लो, बेशक (भला) अंजाम तो परहेज़गारों ही का है।
50 और 'आद' की ओर उनके भाई 'हूद' को (भेजा), उन्होंने कहा, ''ऐ मेरी
क़ौम! अल्लाह की इबादत करो, 'उसके' सिवा तुम्हारा कोई मअ़बूद नहीं, तुम
तो केवल झूठ गढ़ते हो;
51 ऐ मेरी क़ौम! मैं इस पर तुम से बदले में कुछ मज़दूरी नहीं माँगता, मेरी
मज़दूरी तो बस उसी के ज़िम्मे है 'जिसने' मुझे पैदा किया है, फिर क्या तुम
अक़्ल से काम नहीं लेते?-
52 और ऐ मेरी क़ौम! अपने रब से अपने गुनाह माफ़ कराओ, फिर 'उसी से'
तौबः करो, 'वह' तुम पर खूब बारिशें बरसाएगा और दिन पर दिन तुम्हारी
शक्ति बढ़ाएगा, और मुजरिम बनकर मुँह न फेरो।''

53 वे बोले, ''ऐ हूद! तुम हमारे सामने कोई स्पष्ट प्रमाण लेकर नहीं आए, और
हम तुम्हारे कहने से अपने मअ़बूदों को नहीं छोड़ सकते, और न तुम पर
ईमान लाने वाले हैं;
54 हम तो यही समझते हैं कि हमारे मअ़बूदों में से किसी की मार तुम पर पड़
गई है, उन्होंने कहा, ''मैं अल्लाह को गवाह बनाता हूँ, और तुम भी गवाह
रहो कि उनसे मेरा कोई सम्बन्ध नहीं, जिनको तुमने साझीदार ठहरा रखा है;
55 अल्लाह के सिवा तुम सब मेरे साथ दाँव घात लगा कर देखो, और मुझे
मोहलत न दो;
56 मैं तो अल्लाह ही पर भरोसा रखता हूँ 'वही' मेरा 'रब' है, और तुम्हारा भी,
जितने भी जानदार हैं सबकी पेशानी (मस्तक) तो 'उसी' के हाथ में है, बेशक
मेरा रब सीधी राह पर है;
57 तो अगर तुम मुँह फेरोगे, तो जो पैग़ाम देकर मैं भेजा गया था, वह मैं तुम्हें
पहुँचा चुका, और मेरा रब तुम्हारी जगह दूसरी किसी क़ौम को लाएगा, और
तुम 'उसका' कुछ भी न बिगाड़ सकोगे, मेरा रब हर चीज़ पर निगराँ (संरक्षक)
है।''
58 और जब 'हमारा' हुक्म (अ़ज़ाब का) आ पहुँचा, तो 'हमने' अपनी दया से
हूद को, और उन लोगों को जो उनके साथ ईमान लाए थे अपनी मेहरबानी
से बचा लिया, और 'हमने' उन्हें भारी अ़ज़ाब से बचा लिया।
59 और ये आ़द हैं, जिन्होंने अपने 'रब' की आयतों से इन्कार किया, और रसूलों
की नाफ़रमानी की और हर सरकश विरोधी के पीछे चलते रहे;
60 तो और इस दुनिया में भी लानत उनके पीछे लगी रही और क़ियामत के दिन
भी, ''सुन लो! कि 'आ़द' ने अपने 'रब' के साथ कुफ्र किया, (और) सुन लो!
कि 'हूद' की क़ौम, 'आ़द' पर फिट्कार हो।
61 और 'समूद' की ओर उनके भाई 'सालेह़' को (भेजा) तो उन्होंने कहा, ''ऐ
मेरी क़ौम! तुम अल्लाह ही की इबादत करो, 'उसके' सिवा तुम्हारा कोई मअ़बूद
(उपास्य) नहीं, 'उसी' ने तुम्हें ज़मीन से पैदा किया और उस में आबाद कर
दिया, तो तुम 'उसी से गुनाह माफ़ कराओ और 'उसी' से तौबः करो, बेशक
मेरा 'रब' निकट है और दुआ़ओं का क़ुबूल करने वाला है।''
62 उन्होंने कहा, ''ऐ सालेह़! इससे पहले हम तुम से उम्मीदें रखते थे, क्या तुम
हमें उनकी इबादत से रोकते हो जिनकी इबादत हमारे बाप-दादा करते रहे हैं?
और जिसकी ओर तुम हमें बुला रहे हो इसमें हमें बड़ा सन्देह है?''
63 (सालेह़ ने) कहा, ''ऐ मेरी क़ौम! क्या तुमने सोचा, अगर मैं अपने रब की
ओर से प्रमाण पर हूँ और 'उसने' मुझे अपनी रह़मत से नवाज़ा हो, तो कौन
है, जो अल्लाह की पकड़ से मुझे बचाएगा, अगर मैं 'उसकी' नाफ़रमानी करूँ;
तो तुम इसके सिवा और क्या कर सकते हो कि मेरी तबाही में ज़्यादती कर
दो?''
64 और ''ऐ क़ौम! यह अल्लाह की ऊँटनी तुम्हारे लिए एक निशानी है, तो इसे
छोड़ दो कि अल्लाह की धरती में खाए, (चरती रहे), और इसे तक्लीफ़ न
देना, वरना! जल्द ही तुम्हें अ़ज़ाब आ पकड़ेगा।''

65 फिर उन्होंने उसकी कूँचे काट डालीं (अर्थात मार डाला), तब (सालेह़ ने) कहा,
''तुम अपने घरों में तीन दिन फ़ायदा उठा लो यह ऐसा वादा है जो झूठा न
होगा।''
66 फिर जब 'हमारा' हुक्म (अ़ज़ाब का) आ पहुँचा, तो 'हमने' अपनी रह़मत से
स़ालेह़ को, और उनके साथ जो ईमान लाए थे उनको, अपनी मेहरबानी से
(उस अ़ज़ाब से भी) बचा लिया, और उस दिन की रूस्वाई से भी, (बचाए
रखा) बेशक तुम्हारा 'रब' ज़बर्दस्त, ताक़त वाला (प्रभुत्वशाली) है।
67 और जो ज़ालिम थे उन्हें एक भयंकर चीख ने आ पकड़ा, तो वे अपने घरों
में औंधे पड़े रह गये;
68 मानों वे कभी वहाँ बसे ही न थे, सुन लो! कि 'समूद' ने अपने रब से कुफ्र
किया, खूब सुन लो! कि 'समूद' (रह़मत से) दूर हो गये।
69 और 'हमारे' भेजे हुए (फ़रिश्ते) 'इब्राहीम' के पास खुशख़बरी लेकर आए
उन्होंने कहा, ''सलाम हो,'' उन्होंने भी कहा, ''सलाम हो,'' फिर उन्होंने कुछ
देर न की, कि एक भुना हुआ बछड़ा ले आए।
70 तो जब देखा कि उनके हाथ उसकी ओर नहीं बढ़ रहे, तो उन्हें अजनबी
समझा और दिल में उनसे डरे, वे बोले, ''डरो नहीं! हम तो लूत की क़ौम
की ओर भेजे गये हैं।''
71 और उनकी पत्नी भी खड़ी थीं, वह उस पर हँस पड़ीं, फिर 'हमने' उनको
बशारत दी इस्ह़ाक़ और इस्ह़ाक़ के बाद याक़ूब की।
72 वह बोलीं, ''अरे! मेरे सन्तान होगी? जबकि मैं तो बूढ़ी हो चुकी हूँ, और यह
मेरे पति भी बूढ़े हो चुके हैं, यह तो बड़ी अ़जीब बात है।''
73 उन्होंने कहा, ''क्या तुम अल्लाह के हुक्म पर तअ़ज्जुब करती हो? अल्लाह
की रह़मत और बरकतें हों तुम पर, ऐ अह्ले बैत! बेशक 'वही' तअ़रीफ़ के
लायक़ और बड़ी शान वाला है।''
74 तो जब इब्राहीम की घबराहट दूर हो गई और उन्हें खुशख़बरी भी मिल गयी
तो लूत की क़ौम के बारे में 'हमसे' हुज्जत करने लगे;
75 बेशक इब्राहीम बड़े सहनशील, नर्म दिल, 'हमारी' ओर रूजूअ़ होने वाले थे।
76 ''ऐ इब्राहीम! इन्हें छोड़ दो, तुम्हारे रब का हुक्म आ चुका है, और इन लोगों
पर ऐसा अ़ज़ाब आने वाला है जो किसी तरह टल नहीं सकता;''
77 और जब 'हमारे' भेजे हुए दूत (फ़रिश्ते) लूत के पास पहुँचे, तो वह (उनके
आने से) घबराए और उनकी वजह से बहुत तंग दिल हुए और बोले ''आज
तो बड़ी मुसीबत का दिन है;
78 और उनकी क़ौम के लोग दौड़ते हुए उनके पास आए, और पहले ही से कुकर्म
किया करते थे, उन्होंने कहा, ऐ क़ौम! यह मेरी बेटियाँ हैं, यह तुम्हारे लिए
पवित्र हैं, तो अल्लाह से डरो, मेरे मेहमानों के मामले में मुझे रूसवा न करो,
क्या तुम में कोई भी भला आदमी नहीं?''
79 उन लोगों ने कहा, ''तुम्हें तो मालूम है कि तेरे बेटियों की हमें कोई ज़रूरत
नहीं, और तुम वह भी खूब जानते हो जो कुछ हम इरादा रखते हैं।''

80 उन्होंने कहा, "क्या ही अच्छा होता कि मुझमें तुमसे मुक़ाबले की शक्ति होती,
या कोई मज़बूत सहारा होता, जिसकी मैं पनाह लेता।"
81 उन्होंने कहा, "ऐ लूत! हम तुम्हारे रब के भेजे हुए हैं, ये लोग तुम तक हरगिज़
नहीं पहुँच सकते; अतः तुम रात के किसी हिस्से में अपने घर वालों को लेकर
निकल जाओ, और तुममें से पीछे कोई व्यक्ति पलट कर न देखे, मगर तुम्हारी
पत्नी, कि उस पर भी वही आफ़त आएगी जो उन पर आएगी, उन के अ़ज़ाब
का वक़्त सुबह के लिए निश्चित है, तो क्या सुबह् क़रीब नहीं?"
82 फिर जब 'हमारा' हुक्म आ पहुँचा तो 'हमने' उसको (उलट कर) नीचे ऊपर
कर दिया, और 'हमने' कंकरीले पत्थर ताबड़ तोड़ बरसाए;
83 जिन पर तुम्हारे रब के यहाँ से निशान किये हुए थे और यह ज़ालिमों से कुछ
दूर नहीं।
84 और मदयन की ओर उनके भाई शुऐब को (भेजा) तो उन्होंने कहा, "ऐ
क़ौम! अल्लाह की इबादत करो, 'उसके' सिवा तुम्हारा कोई मअ़बूद नहीं, और
नाप तौल में कमी न करो, मैं तो तुम्हें अच्छी हालत में देख रहा हूँ, मगर
मुझे तुम्हारे बारे में एक ऐसे दिन के अ़ज़ाब का डर है, जो तुम को घेर कर
रहेगा;
85 ऐ मेरी क़ौम ! इन्साफ़ के साथ नाप और तौल को पूरा किया करो, और लोगों
को उनकी चीज़ें कम न दिया करो, और ज़मीन में फ़साद न फैलाते फिरो;
86 अगर तुम को यक़ीन हो तो अल्लाह का दिया हुआ नफ़ा तुम्हारे लिए है, अगर
तुम ईमान वाले हो, और मैं तुम पर रखवाला नहीं हूँ!"
87 उन्होंने कहा, "ऐ शुऐब! क्या तेरी नमाज़ तुझे यही सिखाती है कि उन्हें हम
छोड़ दें जिन्हें हमारे बाप-दादा पूजते आए हैं, या हमें इस बात का अधिकार
नहीं कि अपने माल जिस तरह चाहें इस्तेमाल (प्रयोग) करें? तुम बड़े नर्म दिल
और समझदार हो।"
88 (शुऐब ने) कहा, "ऐ मेरी क़ौम! तुमने यह भी सोचा कि अगर मैं अपने रब
की ओर से रौशन दलील पर हूँ और 'उसने' अपनी ओर से मुझे अच्छी रोज़ी
भी प्रदान की हो, और मैं यह नहीं चाहता कि जिन बातों से मैं तुम्हें रोकता हूँ
ख़ुद उस को करूँ, मैं तो अपने बस भर केवल सुधार चाहता हूँ, और मुझे
तौफ़ीक़ का मिलना अल्लाह ही से है 'उसी' पर मेरा भरोसा है, और 'उसी'
की ओर मैं रूजूअ़ होता (पलटता) हूँ;
89 और ऐ मेरी क़ौम! मेरे ख़िलाफ़ तुम्हारा विरोध कोई ऐसा काम न करा दे कि
तुम पर भी वही कुछ बीते जो 'नूह्' की क़ौम, या 'हूद' की क़ौम, या 'सालेह्'
की क़ौम पर बीत चुका है, और लूत की क़ौम तो तुम से कुछ दूर नहीं;
90 और अपने रब से अपने गुनाह माफ़ कराओ फिर 'उसके' आगे तौबः करो,
बेशक मेरा रब बड़ी रहमत वाला, मुहब्बत वाला है।"
91 उन्होंने कहा, "ऐ शुऐब! तुम्हारी बहुत सी बातें तो हमारी समझ में नहीं आतीं,
और हम तो तुम को अपने बीच कमज़ोर ही देखते हैं, और अगर तुम हमारी
बिरादरी के आदमी न होते, तो हम तुमको संगसार(पत्थर मार-मार कर ख़त्म)
कर देते और तुम हम पर ग़ालिब (प्रभावी) नहीं हो।"

92 उनहों ने कहा, ''ऐ मेरी क़ौम! क्या मेरी बिरादरी', तुम पर अल्लाह से भी
ज़्यादा है, कि अल्लाह को तुम ने पीछे डाल दिया! तुम जो कुछ भी कर रहे
हो मेरा 'रब' सब अहाता किये हुए है;
93 और ऐ मेरी क़ौम! तुम अपनी जगह काम करते रहो मैं भी कर रहा हूँ, जल्द
ही तुम को मालूम हो जाएगा कि किस पर अज़ाब आएगा, जो उसे ज़लील
कर के रहेगा और कौन है जो झूठा है? और तुम भी इन्तिज़ार करो, तुम्हारे
साथ मैं भी इन्तिज़ार करता हूँ।''
94 और जब 'हमारा' हुक्म (अज़ाब का) आया, तो 'हमने' शुऐब को और उन
लोगों को जो उन पर ईमान लाए थे, अपनी रह़मत से बचा लिया; और जो
ज़ालिम थे उनको चिंघाड़ ने आ पकड़ा, तो सुबह को औंधे पड़े रह गये;
95 मानो वह वहाँ कभी बसे ही न थे, सुन लो! मद्यन वालों को (रह़मत से) दूरी
हुई जैसी दूरी समूद को हो चुकी थी।''
96 और 'हमने' मूसा को अपनी निशानियों और खुली दलील के साथ भेजा,
97 फ़िरऔन और उसके सरदारों की ओर तो वह लोग फ़िरऔन ही के हुक्म पर
चलते रहे और फ़िरऔन का हुक्म ठीक न था;
98 वह क़ियामत के दिन अपनी क़ौम के आगे-आगे होगा और उनको आग में
जा उतारेगा, और बहुत ही बुरा घाट है वह उतरने का;
99 और यहाँ (दुनिया में) भी लानत उनके पीछे लगी रही, और क़ियामत के दिन
भी, बुरा बदला है जो उनको मिलेगा।
100 यह उन बस्तियों की कुछ ख़बरें हैं जो 'हम' आप से बयान करते हैं उनमें
से कुछ क़ायम हैं और कुछ उजड़ गयीं।
101 और 'हमने' उन लोगों पर ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि उन्होंने ख़ुद अपने आप पर
ज़ुल्म किया, फिर जब आप के 'रब' का हुक्म आ गया; तो उनके वे मअ़बूद
जिन्हें वे अल्लाह के सिवा पुकारा करते थे उनके कुछ भी काम न आ सके,
और उन्होंने विनाश के अ़लावा उनके लिए किसी और चीज़ में ज़्यादती नहीं
की।
102 और आपके रब की पकड़ ऐसी ही होती है, जब 'वह' किसी ज़ालिम बस्ती
को पकड़ता है, बेशक 'उसकी' पकड़ बड़ी दर्दनाक, बड़ी सख़्त होती है।
103 बेशक इसमें उस व्यक्ति के लिए निशानी है, जो आख़िरत के अ़ज़ाब से डरे
यह ऐसा दिन होगा जिसमें सारे लोग इकट्ठा किये जाएँगे; और यही वह दिन
होगा, जिसमें सब (अल्लाह के सामने) हाज़िर किये जाएँगे।
104 और 'हमने' उसको एक निश्चित समय तक के लिए ही रोक रखा है;
105 जिस दिन वह आएगा तो उसकी इजाज़त के बिना कोई व्यक्ति बात भी न
कर सकेगा, फिर उनमें भी कुछ बद्‌बख़्त (अभागे) होंगे, और कुछ भग्यशाली।
106 तो जो बद्‌बख़्त होंगे वह आग में होंगे उसमें वे चीख़ और पुकार करेंगे।
107 हमेशा उसी में पड़े रहेंगे जब तक कि आसमान और ज़मीन क़ायम है, मगर
सिवाय उतना जितना तुम्हारा रब चाहे, बेशक तुम्हारा रब जो चाहता है कर
डालता है;

108 और जो नेक लोग होंगे तो वे जन्नत में (जाएँगे) जहाँ वे हमेशा रहेंगे, जब तक कि आसमान और ज़मीन क़ायम है, मगर जितना तुम्हारा रब चाहे, यह एक ऐसा उपहार है जो कभी न टूटेगा।

109 तो यह लोग जिनकी इबादत करते हैं उनके सम्बन्ध में तुम किसी तरह के ध ाोखे में न पड़ना, जैसी पूजा पहले उनके बाप-दादा करते आए हैं, वैसी ही यह भी करते हैं; 'हम' तो इनका हिस्सा बिना किसी कमी के उनको पूरा -पूरा देने वाले हैं।

110 और 'हम' मूसा को भी किताब दे चुके हैं फिर वे लोग उसमें भेद डालने लगे, अगर तुम्हारे रब की ओर से एक बात पहले ही निश्चित न कर दी गयी होती, तो उनके बीच कभी का फ़ैसला कर दिया गया होता, यह 'उसकी' ओर से शक में पड़े हुए डाँवाडोल हैं।

111 और (बेशक समय आने पर) हर- एक को, तुम्हारा 'रब' उनके कर्मों का पूरा-पूरा बदला ज़रूर देगा बेशक जो कुछ वे कर रहे हैं, 'उसे' उसकी पूरी ख़बर है।

112 सो जैसा तुम को हुक्म हुआ है जमे रहो और वह लोग भी जिन्होंने तुम्हारे साथ तौबः की, और ह़द से आगे न बढ़ना, जो कुछ भी तुम करते हो 'वह' उसे देख रहा है।

113 और उनकी ओर मत झुकना, जिन्होंने ज़ुल्म किया, वरना आग तुम्हें आ लिपटेगी, और अल्लाह के सिवा तुम्हारा कोई न दोस्त होगा और न तुम्हारी मदद ही की जाएगी;

114 और नमाज़ क़ायम करो, दिन के दोनों सिरों पर, और रात के कुछ हिस्से में; बेशक नेकियाँ बुराइयों को दूर कर देती हैं; उनके ह़क़ में यह चेतावनी है, जो चेतावनी को याद रखने वाले हैं;

115 और सब्र से काम लो क्योंकि अल्लाह अच्छे कामों का अज्र (बदला) बेकार नहीं करता।

116 तो तुम से पहले जो नस्लें गुज़र चुकी हैं, उनमें ऐसे भले समझदार क्यों न हुए, जो धरती में बिगाड़ से रोकते? उन थोड़े से लोगों के सिवा जिनको उनमें से 'हमने' बचा लिया, और जो ज़ालिम थे वह तो उसी ऐश के सामानों के पीछे पड़े रहे जो उन्हें दिया गया था, और वे तो थे ही अपराधी।

117 और आप का रब तो ऐसा नहीं है कि बस्तियों को नाह़क़ तबाह कर दे, जबकि वहाँ के लोग नेकोंकार हों।

118 और अगर आपका रब चाहता तो 'वह' सारे लोगों को एक ही राह पर कर देता, मगर वे हमेशा विभेद करते ही रहेंगे;

119 सिवाय उनके कि जिन पर तुम्हारा रब रह़मत करे, और इसीलिए 'उसने' उन्हें पैदा किया, और तुम्हारे रब की यह बात पूरी होकर रही कि 'मैं' जहन्नम को जिन्नों और इन्सानों दोनों से भर दूंगा।"

120 (ऐ मुह़म्मद) और रसूलों के जितने क़िस्से 'हम' आप को सुनाते हैं, उसके ज़रिये

'हम' आप के दिल को मज़बूत करते हैं, इसमें आपके पास ह़क़ पहुँच गया, और ईमान वालों के लिए नसीह़त और इब्रत (सबक़) है।
121 और जो लोग ईमान नहीं लाते उनसे कह दीजिए, "कि तुम अपनी जगह काम किये जाओ हम भी काम कर रहे हैं;
122 और तुम भी इन्तिज़ार करो और हम भी इन्तिज़ार करते हैं।"
123 और अल्लाह ही का है, जो कुछ आसमानों और ज़मीन में छिपा है, और हर मामले का पलटना उसी की ओर है, तो 'उसी' की इबादत करो और 'उसी' पर भरोसा रखो, और जो कुछ तुम करते हो, उससे तुम्हारा 'रब' बेख़बर नहीं है।

## सूर-ए-यूसुफ

यह सूरः मक्की है, इसमें अ़रबी के 7411 अक्षर, 1808 शब्द, 111 आयतें और 12 रूकूअ़ हैं।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

1 अलिफ़्- लाम्- रा। यह स्पष्ट किताब की आयतें हैं।
2 'हमने' इस क़ुर्आन को अ़रबी में उतारा है ताकि तुम समझो।
3 'हमने' जो यह क़ुर्आन आपके पास वह्य के ज़रिये भेजा है उसके ज़रिये आप को एक बहुत ही अच्छा क़िस्सा सुनाते हैं, और आप उससे पहले बेख़बर थे।
4 जब यूसुफ़ ने अपने बाप से कहा, "ऐ मेरे अब्बा जान! मैंने (सपने में) ग्यारह सितारे देखे, और सूर्य और चाँद; मैंने उन्हें देखा कि वे मुझे सज्दः कर रहे हैं।"
5 उन्होंने कहा, "ऐ बेटे! अपना सपना अपने भाइयों को मत बताना, नहीं तो वे तेरे ख़िलाफ चाल चलेंगे, कि शैतान तो इन्सान का खुला दुश्मन है।"
6 और इसी तरह तुम्हारा 'रब' तुम्हें चुन लेगा, और तुम्हें अस्ल बातों की ह़क़ीक़त मालूम करना सिखाएगा और 'वह' अपनी नेअ़मत तुम पर और याक़ूब की सन्तान पर, उसी तरह पूरी कर देगा जिस तरह इससे पहले वह तुम्हारे बाप-दादा इब्राहीम और इस्ह़ाक़ पर पूरी कर चुका है, बेशक तुम्हारा रब इल्म वाला, ह़िक्मत वाला है।
7 हाँ, यूसुफ़ और उसके भाइयों में सवाल करने वालों के लिए निशानियाँ हैं;
8 जब उन्होंने कहा, "यूसुफ़ और उसका भाई, हमारे बाप को हम से ज़्यादा प्रिय है, हालाँकि हम एक पूरा जत्था (एक गिरोह) हैं, बेशक हमारे बाप खुली ग़ल्ती पर हैं,
9 तो यूसुफ़ को क़त्ल करो, या उसको किसी जगह फेंक आओ ताकि तुम्हारे

बाप का ध्यान तुम्हारी ही ओर हो जाए, उसके बाद तुम अच्छी हालत में हो जाओगे।

10 उनमें से एक कहने वाला बोल उठा, “यूसुफ़ को जान से न मारो, (अगर तुम्हें कुछ करना ही है) और उसको किसी अंधेरे कुएँ में डाल दो कि कोई राह चलता मुसाफ़िर उसे निकाल ले जाए, अगर तुम को करना है।”

11 (भाईयो ने) कहा, “ऐ हमारे अब्बा जान! आप को क्या हो गया है?!! कि यूसुफ़ के मामले में आप हम पर भरोसा नहीं करते हालाँकि हम तो उसके ख़ैरख़्वाह (हितैषी) हैं;

12 हमारे साथ कल उसे भेज दीजिए कि वह खाये-पिये और खेले-कूदे, और उसकी रक्षा के लिए हम तो हैं ही।”

13 (याकूब ने) कहा, “यह बात कि तुम उसे ले जाओ मुझे दुःखी कर देती है, कि कहीं ऐसा न हो कि तुम उसका ध्यान न रख सको और भेड़िया उसे खा जाए।”

14 वे बोले, “अगर उसको भेड़िया खा जाए हमारे पूरे जत्थे के होते हुए, तो हम बिल्कुल नाकारा होंगे।”

15 फिर जब वे उनको ले गये और तय कर लिया कि उन्हें अंधेरे कुएँ में डाल दें, और ‘हमने’ यूसुफ की ओर वह्य भेजी, कि “तुम इनको इनके इस व्यवहार को (एक वक्त) जतलाओगे और वह (तुमको) जान भी न पाएँगे।”

16 और वे अपने बाप के पास अ़िशा के वक़्त (शुरू रात में) रोते हुए आए,

17 बोले, “अब्बा जान! हम सब आपस में दौड़ने और एक-दूसरे से आगे निकलने में लग गये, और हम ने यूसुफ़ को अपने सामान के पास छोड़ दिया था, तो भेड़िया खा गया और आप तो हम पर भरोसा करेंगे नहीं! चाहे हम (कितने ही) सच्चे हों।”

18 और उनके कुर्ते पर झूठ-मूठ का खून लगा लाए, बोले, “हाँ तुम ने अपने आप से एक बात बना ली है, तो अब सब्र ही करना अच्छा है, जो बात तुम बता रहे हो उसमें अल्लाह ही से मदद चाहिए।”

19 और एक क़ाफ़िला आया तो उन लोगों ने अपने एक पानी लाने वाले को भेजा, उसने अपना डोल डाला, तो पुकार उठा, “अरे वाह! कितनी खुशी की बात है, यह तो एक लड़का निकल आया,” और उसको उसे व्यापार का माल समझ कर छिपा लिया, और जो वे कर रहे थे अल्लाह उसे जान रहा था।

20 और (व्यापारियों ने) उसे सस्ते दाम, गिनती के चन्द दिरहम, में बेच दिया और वे उसके मामले में बेपरवाह थे।

21 और मिस्र के जिस व्यक्ति ने उसे ख़रीदा था, उसने अपनी पत्नी से कहा, “इसको अच्छी तरह इज़्ज़त से रखना बहुत सम्भव है कि यह हमारे काम आए, या हम इसे बेटा बना लें।” इस तरह ‘हमने’ यूसुफ़ को (मिस्र की) ध ारती पर जगह दी ताकि ‘हम’ उसे बातों की हक़ीक़त मालूम करना सिखाएं; और अल्लाह अपना हुक्म लागू कर के रहता है लेकिन अक्सर लोग जानते नहीं।

22 और जब वह (यूसुफ़) अपनी जवानी को पहुँचा तो 'हमने' उसको ह़िक्मत
और इल्म दिया; और 'हम' नेक बन्दों को इसी तरह बदला दिया करते हैं।
23 और जिस औ़रत के घर में वह रहते थे, उसने उनको अपनी ओर मायल
करना चाहा और, उसने दरवाज़े बन्द कर दिये, और बोली, ''जल्दी आओ''
उन्होंने कहा, ''अल्लाह की पनाह! वह (अर्थात तुम्हारे पति) तो मेरे आक़ा हैं
उन्होंने मुझे अच्छा स्थान दिया है, बेशक ज़ालिम लोग कामियाब नहीं होंगे''।
24 और उस औ़रत ने उसका इरादा किया, और उन्होंने उसका इरादा किया,
अगर वह अपने रब का स्पष्ट प्रमाण न देख लेते- (तो जो होता, वह होता)
ऐसा इसलिए हुआ ताकि 'हम' उनसे बुराई और बेह़याई को दूर रखें- बेशक
वह हमारे चुने हुए बन्दों में से थे।
25 और दोनों दरवाज़े की ओर दौड़े और औ़रत ने उनका कुर्ता पीछे से फाड़
डाला, और दरवाज़े पर दोनों ने औ़रत के पति को मौजूद पाया, तो औ़रत
बोल उठी, ''क्या सज़ा है उस व्यक्ति की जो तुम्हारे घर वाली के साथ बुराई
का इरादा करे, उसका बदला इसके सिवा क्या होगा कि उसे क़ैद किया जाए,
या दर्दनाक सज़ा दी जाए?''
26 (यूसुफ़ ने) कहा, ''यही तो मुझे अपनी ओर मायल करना चाही थी, और
उसी (औ़रत) के ख़ानदान से एक फ़ैसला करने वाले ने गवाही दी कि अगर
उसका कुर्ता आगे से फटा है तो यह सच्ची है और वह झूठा है;
27 और अगर उसका कुर्ता पीछे से फटा है तो यह झूठी है, और वह सच्चा है।''
28 तो जब देखा कि उसका कुर्ता पीछे से फटा था, (तो कहा,) ''यह तुम औ़रतों
की चाल है, और तुम्हारी चालें बड़ी (ख़तरनाक) होती हैं;
29 यूसुफ़! इस मामले को जाने दीजिए, और ऐ औ़रत! तू अपने गुनाह की माफ़ी
माँग, बेशक तू ही ख़ताकार है।''
30 और शहर की कुछ औ़रतें कहने लगीं, ''अ़ज़ीज़ की पत्नी अपने ग़ुलाम को,
अपनी ओर मायल करना चाहती है और उसकी मुह़ब्बत उसके दिल में घर
कर गयी है, हम तो उसे खुली गुमराही में देख रहे हैं।''
31 तो जब (ज़ुलैखा ने) इन औ़रतों की बातें सुनीं तो (ज़ुलेख़ा ने) उन्हें बुला भेजा,
और उनके लिए तकिया वाली मजलिस सजाई, और हर एक को एक-एक
छुरी दे दी, और (यूसुफ़ से) कहा, ''इनके सामने से निकल जाओ,'' जब उन
औ़रतों ने उनको देखा तो उनका रोअ़ब ऐसा छा गया कि उन्होंने अपने ही
हाथ घायल कर लिये, और पुकार उठीं! ''अल्लाह की पनाह! यह इन्सान नहीं;
यह तो कोई बुजुर्ग फरिश्ता है।''
32 (औ़रत) बोली, ''यह वही है जिसके बारे में तुम मुझ को मलामत कर रही
थीं, निश्चय ही मैंने इसे रिझाना चाहा था किन्तु यह बचा रहा, और अगर
यह वह न किया जो मैं इससे कहती हूँ, तो यह ज़रूर क़ैद किया जाएगा और
ज़लील होगा।''
33 (यूसुफ़ ने) कहा, ''मेरे रब! जिसकी ओर यह मुझे बुला रही है उससे तो क़ैद
में रहना ही मुझ को ज़्यादा पसंद है, और अगर 'तू' इनकी चालों से मुझ

को न बचाएगा, तो मैं इनकी ओर मायल हो जाऊँगा और जाहिलों में से हो जाऊँगा।''

34 तो उनके 'रब' ने उनकी सुन ली और उनसे औरतों की चालों को ख़त्म कर दिया बेशक 'वह' सुनने वाला, जानने वाला है।

35 फिर उन्हें, इसके बाद कि निशानियाँ देख चुके थे उनकी राय यही हुई कि इसे कुछ अवधि के लिए क़ैद ही कर दें।

36 और उनके साथ दो और नौजवान भी जेल खाने में दाख़िल हुए, उनमें से एक ने कहा, ''मैंने (सपना) देखा है कि मैं शराब निचोड़ रहा हूँ'' दूसरे ने कहा, ''मैंने देखा है कि मैं अपने सर पर रोटियाँ उठाए हुए हूँ जिनको परिन्दे खा रहे हैं, हमें इसकी तअ़बीर (स्वप्न फल) बता दीजिए कि हमें तो आप भले मालूम होते हैं।''

37 (यूसुफ़ ने) कहा, ''जो खाना तुम्हें मिलता है उसके आने से पहले ही मैं तुम्हें इसकी तअ़बीर (स्वप्नफल) बता दूँगा, यह उस इल्म में से है, जो मेरे रब ने मुझे सिखाया है, मैंने उन लोगों के धर्मों को छोड़ दिया है जो अल्लाह पर ईमान नहीं रखते, और आख़िरत का भी इन्कार करते हैं;

38 और मैंने अपने बाप-दादा इब्राहीम, और इस्हाक़, और याक़ूब के दीन को अपनाया, हम से यह नहीं हो सकता कि हम अल्लाह के साथ किसी चीज़ को शरीक करें; यह अल्लाह की मेहरबानी है हम पर और लोगों पर, लेकिन अक्सर लोग शुक्र नहीं करते।

39 ऐ जेल के साथियो! क्या अलग- अलग बहुत से रब अच्छे हैं, या अकेला अल्लाह ज़बर्दस्त (प्रभुत्वशाली);

40 तुम 'उसके' सिवा जिसकी भी इबादत करते हो, वे तो बस नाम हैं, जो तुमने और तुम्हारे बाप-दादा ने रख लिये हैं, उनके लिए अल्लाह ने कोई प्रमाण नहीं उतारा, सत्ता और अधिकार तो बस अल्लाह का है, 'उसने' हुक्म दिया है कि उसके सिवा किसी की इबादत न करो; यही सीधा (सच्चा) धर्म है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते;

41 ऐ जेल के साथियो! तुम में से एक तो अपने मालिक को शराब पिलाएगा, और दूसरा सूली पर चढ़ाया जाएगा और परिन्दे उसका सर नोंच कर खाएँगे, इस बात का फ़ैसला हो चुका है जिसको तुम पूछ रहे हो।''

42 और (दोनों से) जिसके बारे में उसने समझा था कि रिहा हो जाने वाला है उससे कहा, ''अपने मालिक के पास मेरी चर्चा करना।'' मगर शैतान ने अपने मालिक के पास चर्चा करना भुलवा दिया, और (यूसुफ) कई साल जेल ही में पड़े रहे।

43 और बादशाह ने कहा, ''मैंने (सपने में) देखा है कि 'सात मोटी गायों को सात पतली गायें खा रही हैं; और सात (अनाज की) बालियाँ हरी हैं और दूसरी (सात) सूखी, ऐ मेरे (दरबार के) सरदारो! मेरे सपने का अर्थ बताओ अगर तुम तअ़बीर स्वप्नार्थ बताना जानते हो।''

44 (दरबारियों ने) कहा, ‘‘यह परेशान सपने हैं, और हम ऐसे सपनों का अर्थ
नहीं जानते।’’
45 और उन दोनों में से जो रिहा हो गया था, उसे एक मुद्दत के बाद बात याद
आ गई तो वह बोल उठा, ‘‘मैं आप को इसका अर्थ बताता हूँ, ज़रा मुझे
(यूसुफ के पास) भेज दीजिए।’’
46 ‘यूसुफ़’ ऐ बड़े सच्चे! हमें (इस का अर्थ) बताइए, ‘‘कि सात मोटी गायों को
सात दुबली गाएँ खा रही हैं, और सात बालियाँ हरी हैं और सात बालियाँ
सूखी, ताकि मैं लोगों के पास जाऊँ ताकि वे (इस का अर्थ) जान लें।’’
47 (यूसुफ़ ने) कहा, ‘‘सात वर्ष तक तुम लगातार खेती करते रहोगे, तो जो
(फसलें) काटो, उन्हें उनकी बाली में ही रहने देना सिवाय उस थोड़ी सी के,
जो तुम्हारे खाने के काम आए,
48 फिर इसके बाद सात कठिन (वर्ष) आएँगे जो इस (पूँजी) को खा जाएँगे,
जो तुम ने उन (वर्षो) के लिए पहले से इकट्ठा कर रखा होगा, सिवाय उस
थोड़े-से हिस्से के जो तुम सुरक्षित कर लोगे;
49 फिर इसके बाद एक वर्ष ऐसा आएगा, जिसमें रह़मत की वर्षा भेजी जाएगी
और उसमें वे लोग रस निचोड़ेंगे।
50 और बादशाह ने हुक्म दिया कि (यूसुफ को) ‘‘मेरे पास ले आओ! तो जब दूत
उसके पास पहुँचा, तो उन्होंने कहा, तुम अपने मालिक के पास वापस जाओ
और उनसे पूछो कि ‘उन औ़रतों का क्या हाल है, जिन्होंने अपने हाथ घायल
कर लिये, बेशक मेरा रब उनकी मक्कारी को भली-भाँति जानता है।’’
51 बादशाह ने उन औ़रतों से पूछा, ‘‘तुम्हारा क्या मामला है, जब तुम ने यूसुफ
को रिझाना चाहा था?’’ उन्होंने कहा, ‘‘पाक है अल्लाह! हम ने उसमें बुराई
की कोई बात नहीं पायी’’ अजी़ज़ की पत्नी बोल उठी, ‘‘अब तो सच्ची बात
ज़ाहिर ही हो चुकी है, मैंने ही अपनी ओर रिझाना चाहा था, बेशक वह तो
सच्चा है।’’
52 (यूसुफ़ ने कहा) ‘‘यह इसलिए कि उसे (अज़ीज़ को) मालूम हो जाए कि मैं
ने गुप्त रूप से विश्वासघात नहीं किया, और यह कि अल्लाह विश्वासघातियों
को राह नहीं दिखाता।
53 और मैं अपने आप को पाक-साफ़ नहीं कहता क्यों कि नफ्स अम्मारा (जी)
तो बुराई ही सिखाता है मगर यह कि मेरा रब जिस पर रह़म करे, बेशक
मेरा रब माफ़ करने वाला, रह़म वाला है।’’
54 और बादशाह ने हुक्म दिया, ‘‘उनको मेरे पास ले आओ! मैं उनको अपने
लिए खास कर लूँगा,’’ जब उसने उनसे बात चीत की तो कहा, ‘‘आज से
तुम हमारे यहाँ दर्जे वाले और एतिबार वाले हो।’’
55 (यूसुफ़ ने) कहा, ‘‘देश के ख़ज़ानों पर मुझे नियुक्त कर दीजिए, इसलिए कि
मैं रक्षक और इल्म वाला भी हूँ,’’
56 इस तरह हमने यूसुफ को उस ज़मीन (मिस्र) में सत्ता दे दिया, और उसमें

जहाँ चाहें रहें, हम जिस पर चाहते हैं अपनी मेहरबानी भेजते हैं, और अच्छे काम करने वालों का अज्र बेकार नहीं होने देते।

57 और आख़िरत का बदला कहीं बेहतर है, जो लोग ईमान लाए और परहेज़गारी अपनाए।

58 और यूसुफ़ के भाई आए (और) उनके पास हाज़िर हुए, तो उन्हों ने उन्हें पहचान लिया, और वे उन्हें न पहचान सके।

59 और जब उनके लिए उनका सामान तैयार करा दिया तो कहा, ''तुम्हारे बाप की ओर से जो तुम्हारा एक (सौतेला) भाई (बिनयामीन) है, उसे भी मेरे पास लाओ क्या तुम देखते नहीं, ''मैं पूरी नाप देता हूँ और मैं मेहमानदारी भी खूब करता हूँ?-

60 फिर अगर तुम उसको मेरे पास न लाए, तो मेरे पास तुम्हारे लिए कोई माँप (ग़ल्ला) नहीं है, और न तुम मेरे पास आना।

61 उन्होंने कहा, ''हम उसके बारे में उसके बाप से चर्चा करेंगे और यह (काम) हम ज़रूर करेंगे।''

62 और (यूसुफ़ ने) अपने नौकरों से कहा, ''इनका दिया हुआ माल इनके सामान में रख दो, ताकि जब यह लोग अपने घर वालों में जाएं तो उसे पहचान लें, (और) शायद कि यह वापस आएँ।''

63 फिर जब वे अपने बाप के पास वापस गये तो कहा, ''ऐ अब्बा जान! हम को ग़ल्ला देने से रोक दिया गया है, तो हमारे साथ हमारे भाई को भेज दीजिए, ताकि हम ग़ल्ला लाएँ और हम ज़रूर इसकी रक्षा करेंगे।''

64 (याकूब ने) कहा, ''क्या मैं इसके मामले में तुम पर वैसा ही भरोसा करूँ जैसा इससे पहले इसके भाई के मामले में तुम पर कर चुका हूँ? अतः अल्लाह ही सबसे अच्छा रक्षक है और 'वह' सबसे बढ़कर मेहरबान है।''

65 और जब उन्होंने अपना सामान खोला, तो उन्होंने अपना माल अपनी ओर वापस किया हुआ पाया, वे बोले, ''ऐ हमारे बाप! हमें (और) क्या चाहिए, यह हमारा माल लौटा दिया गया है, अब हम अपने घर वालों के लिए फिर ग़ल्ला लाएँगे, और अपने भाई की रक्षा भी करेंगे, और एक ऊँट भर और अधिक लाएंगे यह अनाज थोड़ा है।

66 (याकूब ने) कहा, ''मैं उसे तो तुम्हारे साथ हरगिज़ नहीं भेज सकता, जब तक तुम अल्लाह के नाम पर मुझ को पक्का वचन न दे दो कि तुम उसे मेरे पास ज़रूर लाओगे, सिवाए इसके कि तुम किसी घेरे में आ जाओ,'' जब उन्होंने उनसे वचन ले लिया तो याकूब ने कहा, ''हमारे इस वचन पर अल्लाह निगहबान है।''

67 और (याकूब ने) कहा, 'ऐ मेरे बेटो! एक ही दरवाज़े से दाख़िल न होना, बल्कि विभिन्न दरवाज़ों से दाख़िल होना और मैं अल्लाह के मामले में तुम्हारे कुछ

काम नहीं आ सकता, हुक्म तो बस अल्लाह ही का चलता है 'उसी' पर मैं ने
भरोसा किया, और भरोसा करने वालों को 'उसी' पर भरोसा करना चाहिए।''
68 और जब वे लोग दाख़िल हुए, जिस तरह उनके बाप ने उनको हुक्म दिया
था- अल्लाह की ओर से होने वाली किसी चीज़ को वह उन्हें टाल नहीं सकता
था, बस याकूब के जी की एक इच्छा थी जो उसने पूरी कर ली, और बेशक
वह 'हमारी' दी हुई शिक्षा के आधार पर इल्म वाला था, लेकिन अक्सर
लोग नहीं जानते;
69 और जब वे लोग यूसुफ़ के पास पहुँचे तो उन्होंने अपने सगे भाई को अपने
पास जगह दी और बताया''मैं तुम्हारा भाई हूँ, तो यह लोग जो व्यवहार करते
रहे, उस पर तुम ग़म न करो।''
70 तो जब उनका सामान तैयार कर दिया, तो अपने भाई के सामान में पानी पीने
का प्याला रख दिया, फिर एक पुकारने वाले ने पुकार कर कहा, ''ऐ क़ाफिले
वालो! तुम तो चोर हो;
71 (भाइयों ने) उनकी ओर पलट कर देखा, और कहा ''तुम्हारी कौन सी चीज़
खो गई है?''
72 (दरबारियों ने) कहा, ''हमें शाही पैमाना (गिलास) नहीं मिल रहा है जो व्यक्ति
उसे लाएगा एक ऊँट के बोझ भर ग़ल्ला (इनआ़म) मिलेगा, मैं उसकी ज़िम्मेदारी
लेता हूँ।''
73 (भाइयों ने) कहा, ''अल्लाह की क़सम! तुम लोग जानते ही हो कि हम इस
ज़मीन पर न फ़साद करने वाले हैं और न हम चोर हैं।''
74 (दरबारियों ने) कहा, ''अगर तुम झूठे सिद्ध हुए तो फिर उसकी सजा़ क्या
होगी?''
75 (भाइयों ने) कहा, ''उसकी सज़ा यह है कि जिसके सामान में वह मिले वही
उसका बदला ठहराया जाए हम ज़ालिमों को ऐसी ही सज़ा दिया करते हैं।''
76 फिर (यूसुफ़ ने) अपने भाई की बोरी से पहले उनके थैलियों की तलाशी शुरू
की; फिर अपने भाई की थैलियों से उस (प्याले) को बरामद कर लिया; इस
तरह 'हमने' यूसुफ़ के लिए उपाय की, वह शाही क़ानून के अनुसार अपने
पास नहीं रख सकता था, मगर यह कि अल्लाह चाहे, 'हम' जिसको चाहते
हैं दर्जे बुलन्द करते हैं, और हर इल्म वाले से दूसरा इल्म वाला बढ़ कर है
77 (भाइयों ने) कहा, ''अगर इसने चोरी की है तो इसका एक भाई भी चोरी कर
चुका है, मगर यूसुफ ने इसे अपने जी ही में रखा, और उन पर ज़ाहिर नहीं
किया।'' उन्होंने कहा, ''तुम बहुत बुरे हो! जो कुछ तुम कह रहे हो, अल्लाह
उसकी हक़ीक़त खूब जानता है।''
78 (भाइयों नें) कहा, ''ऐ अ़ज़ीज़! इसका बाप बहुत ही बूढ़ा है इसलिए इसकी
जगह पर हममें से किसी को रख लीजिए, हमारी नज़र में तो आप एहसान
करने वाले हैं।''
79 (यूसुफ़ ने) कहा, ''इस बात से अल्लाह पनाह में रखे कि, जिसके पास हमारी

चीज़ निकली है, उसके सिवा किसी और को पकड़ लें, अगर हम ऐसा करेंगे
तो हम ज़ालिम होंगे।''
80 फिर जब नाउम्मीद हो गये, तो अलग होकर सलाह़ करने लगे, उसमें से जो
बड़ा था, उसने कहा, ''क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारे पिता तुमसे अल्लाह
के नाम पर वचन ले चुके हैं, और इससे पहले भी यूसुफ़ के मामले में जो
तुमसे ग़लती हो चुकी है? मैं तो अब इस ज़मीन से हरगिज़ हिलने वाला नहीं
हूँ, जब तक कि मेरे पिता मुझे हुक्म न दें, या अल्लाह कोई फ़ैसला न कर
दे, और 'वह' सबसे अच्छा फ़ैसला करने वाला है।''
81 तुम सब अपने बाप के पास लौट कर जाओ और कहो, ''ऐ अब्बा जान!
आप के बेटे ने चोरी की है, और हमने वही बात बयान की जो हम जानते
थे और ग़ैब (परोक्ष) हमारी नज़र में था नहीं;
82 और आप उस बस्ती (के लोगों) से पूछ लीजिए, जहाँ हम ठहरे थे और उन
क़ाफ़िले वालों से, जिसके साथ हम आए थे, और हम बिल्कुल सच्चे हैं।''
83 (याक़ूब ने) कहा, ''नहीं बल्कि तुम्हारे जी ही ने (तुम्हें पट्टी पढ़ा कर) एक
बात बना दी है, तो अब सब्र से ही काम लेना बेहतर है, अ़जब नहीं कि
अल्लाह उन सब को मेरे पास ले आए, बेशक 'वह' तो सब कुछ जानने वाला,
ह़िकमत वाला है।''
84 और (याक़ूब ने) उनकी ओर से मुँह फेर लिया और पुकार उठे, ''हाय
अफ़सोस, यूसुफ़ पर और ग़म से उनकी आँखे सफेद पड़ गयीं (और) उनका
दिल ग़म से भर रहा था।
85 वे कहने लगे, ''अल्लाह की क़सम! आप तो यूसुफ़ ही की याद में लगे रहेंगे,
यहाँ तक कि अपने आप को घुला देंगे या हलाक हो जाएँगे।''
86 (याक़ूब ने) कहा, ''मैं तो अपनी परेशानी और अपने ग़म की शिकायत अल्लाह
ही से करता हूँ, और अल्लाह की ओर से मैं वह बातें जानता हूँ जो तुम नहीं
जानते;
87 बेटो! जाओ यूसुफ और उसके भाई को खोजो और अल्लाह की रह़मत से
मायूस न हो 'उसकी' रह़मत से तो काफ़िर ही मायूस होते हैं।''
88 तो जब वे उनके पास पहुँचे तो कहा, ''ऐ अज़ीज! हमें और हमारे घर वालों
को बहुत तक्लीफ़ पहुँची है, और हम थोड़ी सी पूँजी लाए हैं; तो आप हमें
ग़ल्ला पूरा दीजिए, और हमें सद्क़ा दीजिए कि अल्लाह सद्क़ा करने वालों को
बदला देता है।''
89 (यूसुफ़ ने) कहा, ''क्या तुम्हें मालूम है कि तुमने यूसुफ़ और उनके भाई के
साथ क्या किया था जब कि तुम जिहालत में फंसे हुए थे?''
90 (भाईयों ने) कहा, ''क्या वास्तव में आप ही यूसुफ़ हैं?'' उन्होंने कहा, ''हाँ
मैं ही यूसुफ हूँ। और यह मेरा भाई है, अल्लाह ने हम पर एहसान फ़रमाया
है, और जो व्यक्ति अल्लाह से डरता और सब्र से काम लेता है, तो अल्लाह
ऐसे नेक लोगों का बदला अकारथ नहीं करता।''

91 वे बोले, “अल्लाह की क़सम! आप को अल्लाह ने हम पर फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता)
दी और बेशक हम ही ख़ताकार थे।
92 (यूसुफ़ ने) कहा, “आज के दिन तुमसे कोई पूछ-गछ नहीं अल्लाह तुम्हें माफ़
करे, और ‘वह’ सबसे बढ़ कर रहम करने वाला है।”
93 मेरा यह कुर्ता ले जाओ और इसे मेरे अब्बा के चेहरे पर डाल दो, उनकी
आँखों की रोशनी लौट आएगी, और अपने तमाम घर वालों को लेकर मेरे
पास आओ।”
94 और जब क़ाफ़िला रवाना हुआ तो उनके अब्बा कहने लगे, “अगर तुम लोग
यह न कहो कि मैं बहक गया हूँ तो मुझे यूसुफ की ख़ुशबू आ रही है।”
95 (भाइयों ने) कहा, “अल्लाह की क़सम! आप अभी तक अपनी उसी पुरानी
गुमराही (भ्राँति) में पड़े हुए हैं।”
96 तो जब ख़ुशख़बरी देने वाला आया तो उसने कुर्ता उनके चेहरे पर डाल दिया
और उनकी (आँखों की) रोशनी लौट आई, उन्होंने कहा, “क्या मैंने तुमसे कहा
न था कि मैं अल्लाह की ओर से वह बातें जानता हूँ, जो तुम नहीं जानते।”
97 (बेटों ने) कहा, “ऐ अब्बा जान! हमारे गुनाहों के माफ़ी के लिए दुआ कीजिए,
बेशक हम ख़ताकार थे।”
98 उन्होंने कहा, “मैं अपने रब से तुम्हारे लिए माफ़ी की दुआ करूँगा बेशक ‘वह’
बड़ा माफ़ करने वाला, रहम वाला है।”
99 जब यूसुफ़ के पास पहुँचे, तो उसने अपने माँ-बाप को अपने पास जगह दी
और कहा, “मिस्र (शहर) में दाख़िल हो जाओ, ‘इन्शाअल्लाह’ अमन और
चैन के साथ (रहोगे)।”
100 और अपने माँ-बाप को अ़र्श (सिंहासना) पर ऊँचा बिठाया, और सब उसके
आगे सज्दे में गिर पड़े; उन्होंने कहा, “अब्बा जान! यह है मतलब मेरे उस
सपने का, जो मैंने पहले देखा था, मेरे रब ने इसे सच्चा कर दिखाया। और
उसने मुझ पर एहसान किये हैं कि मुझे उसने जेलख़ाने से निकाला इसके बाद
कि शैतान ने मेरे और मेरे भाइयों के बीच फ़साद डलवा दिया था; आप को
गाँव से यहाँ ले आया, बेशक, मेरा रब जो चाहता है तद्बीर (सूक्ष्म उपाय
से) करता है, ‘वही’ इल्म वाला, हिकमत वाला है।
101 ऐ मेरे रब! ‘तूने’ मुझे हुकूमत दी और सपनों की तअ़बीर (स्वप्नार्थ) का इल्म
दिया, ऐ आसमानों और ज़मीन के पैदा करने वाले, दुनिया और आख़िरत में
‘तू’ ही मेरा संरक्षक है, मुझे इस हालत में मौत दे कि मैं मुस्लिम (आज्ञाकारी)
हूँ, और मुझे भले बन्दों मे शामिल कीजिए।
102 यह ग़ैब (परोक्ष) की खबरों में से है जिसकी हम तुम पर ‘वह्य’ कर रहे हैं,
वरना तुम उस समय उनके पास मौजूद न थे, जब उन्होंने आपस में एक बात
तय कर के साज़िश की थी;
103 और बहुत से लागों (का हाल यह है कि) चाहे आप (जितना) चाहें, ईमान
लाने वाले नहीं।

104 और आप इस पर उनसे कोई अज्र (बदला) भी तो नहीं माँगते हैं, यह तो
एक नसीहत है तमाम दुनिया वालों के लिए।
105 और कितनी ही निशानियाँ हैं आसमानों और ज़मीन में, जिन पर से यह लोग
गुज़रते हैं, मगर उनकी ओर ध्यान ही नहीं देते;
106 उनमें अक्सर लोग अल्लाह को मानते भी हैं तो इस तरह कि वे साझीदार भी
ठहराते हैं;
107 क्या ये इस बात से बेख़बर हैं कि अल्लाह का अ़ज़ाब उन्हें ढाँक ले, या
अचानक वह घड़ी (क़ियामत) ही उन पर आ जाए, और उन्हें ख़बर भी न
हो।
108 कह दीजिए, "यह है मेरा रास्ता, मैं अल्लाह की ओर बुलाता हूँ; मैं ख़ुद भी
समझबूझ कर (बुलाता हूँ) और मेरे मानने वाले भी- और अल्लाह ही के लिए
पाकी है- और मैं शिर्क करने वालों में से नहीं हूँ।"
109 और आप से पहले भी 'हमने' जिनको रसूल बनाकर भेजा था, वे सब बस्तियों
के ही रहने वाले मर्द थे, 'हम' उनकी ओर "वह्य" (प्रकाशना) करते थे तो,
क्या (यह) ज़मीन पर चले फिरे नहीं! कि देख लेते कि जो लोग इनसे पहले
गुज़र चुके हैं उनका कैसा अंजाम हुआ? और परहेज़गारों के लिए आख़िरत
का घर ज़्यादा बेहतर है; तो क्या तुम इतना भी नहीं समझते।
110 यहाँ तक कि जब रसूल नाउम्मीद हो गये, और वे समझने लगे कि मदद के
बारे में जो बात उन्होंने कही थी उसमें वे सच्चे न निकले तो अचानक हमारी
मदद उनके पास आ पहुँची, और वे लोग बचा लिए गये जिनको 'हमने' बचाना
चाहा, और मुजरिमों से तो हमारा अ़ज़ाब टलता ही नहीं।
111 उनके क़िस्सों में बुद्धि और समझ रखने वालों के लिए एक नसीहत है, यह
कोई ऐसी बात नहीं है, जो बना ली गयी हो, बल्कि यह अपने से पहले की
पुष्टि में है, और हर चीज़ का विस्तार और ईमान वालों के लिए हिदायत
(मार्ग दर्शन) और रहमत है।

## सूर-ए-रअ़द

यह सूरः मक्की है, इसमें अ़रबी के, 3614 अक्षर, 863 शब्द, 43 आयतें और 6 रूकूअ़ हैं

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

1 अलिफ़्- लाम्- मीम्- रा, यह किताब की आयतें हैं और जो कुछ आप के
'रब' की ओर से आप पर नाज़िल किया गया है वह ह़क़ है, मगर अक्सर
लोग ईमान नहीं लाते।

2 अल्लाह ‘वह’ है जिसने आसमानों को बिना सुतून (सहारे) के ऊँचा खड़ा कर
दिया, (जैसा) कि तुम उन्हें देखते हो, फिर अर्श (सिंहासन) पर क़ायम हुआ;
और सूरज और चांद को काम में लगा दिया, हर एक निश्चित समय तक
के लिए चले जा रहे हैं, ‘वही’ सारे कामों का इन्तिज़ाम करता है वह अपनी
आयतें साफ़-साफ़ बयान करता है, ताकि तुम अपने ‘रब’ से मिलने का यक़ीन
कर लो।
3 और वह ‘वही’ है ‘जिसने’ ज़मीन को फैलाया और उसमें पहाड़ और नदियाँ
पैदा कीं, और उसमें हर तरह के फलों की दो-दो क़िस्में बनाईं। ‘वही’ रात से
दिन को ढ़ांप देता है, इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो सोच-विचार
से काम लेते हैं।
4 और ज़मीन में एक-दूसरे से मिले हुए भू-भाग और अंगूर के बाग़ और खेतियाँ
और ऐसी खजूरें हैं जिनमें कुछ की बहुत सी शाखें होती हैं और कुछ की
इतनी नहीं होतीं, सबको पानी एक ही दिया जाता है, फिर भी ‘हम’ पैदावार
और स्वाद में किसी को किसी के मुक़ाबले में बढ़ा देते हैं; इसमें उन लोगों के
लिए निशानियां हैं जो अक़्ल से काम लेते हैं।
5 और अगर तुम्हें तअ़ज्जुब ही करना है तो तअ़ज्जुब की बात तो उनका यह
कहना है कि ‘‘क्या जब हम मिट्टी हो जाएंगे’’ तो क्या हम नए सिरे से पैदा
किये जाएंगे? यही हैं जिन्होंने अपने ‘रब’ के साथ इन्कार की नीति अपनाई,
और यही हैं जिनकी गर्दनों में तौंक़ डाले जाएंगे और यही दोज़ख़ वाले हैं कि
उसी में हमेशा रहेंगे।
6 और ये लोग भलाई से पहले बुराई के लिए तुमसे जल्दी मचा रहे हैं, हालाँकि
उनसे पहले कितनी ही इबरतनाक (शिक्षाप्रद) मिसालें गुज़र चुकी हैं; और
तुम्हारा ‘रब’ लोगों को उनके ज़ुल्म के बावजूद माफ़ कर देता है, बेशक तुम्हारा
‘रब’ सज़ा देने में बड़ा सख़्त है।
7 और जिन्होंने इन्कार किया वे कहते हैं, ‘‘इस पर उसके ‘रब’ की ओर से
कोई निशानी क्यों नहीं उतरी?’’ आप तो केवल चेतावनी देने वाले हैं और हर
क़ौम के लिए, हिदायत करने (रास्ता बतलाने) वाले होते चले आए हैं।
8 अल्लाह जानता है जिसको हर माँ अपने रह़िम (गर्भाश्य) में रखती है और
जो रह़िम (गर्भाश्य) में कमी-बेशी होती है, और ‘उसके’ यहाँ हर एक चीज़
का निश्चित अन्दाज़ा है;
9 वह छिपी और ज़ाहिर तमाम बातों का जानने वाला, और बड़ाई में बहुत
ऊँची शान वाला है।
10 तुम में से जो व्यक्ति चुपके से बात कहे और जो पुकार कर कहे, और जो
कोई रात में छिपता हो, और जो दिन में चलता-फिरता हो (‘उसके’ लिए)
सब बराबर हैं।
11 उसके आगे और पीछे (अल्लाह के) रक्षक होते हैं, जो अल्लाह के हुक्म से
उसकी ह़िफ़ाज़त करते हैं; अल्लाह किसी क़ौम की ह़ालत को (जो नेअ़मत उसे
मिली है) नहीं बदलता, जब तक कि वह अपनी ह़ालत को नहीं बदलते; और

जब अल्लाह किसी क़ौम पर बुराई का इरादा करता है तो फिर 'वह' उससे हटती नहीं, और फिर 'उसके' सिवा कोई मददगार नहीं रहता।
12 'वही' तो है जो तुम को डराने और उम्मीद दिलाने के लिए बिजली दिखलाता है और भारी बादलों को उठाता है।
13 और (गरजने वाला) बादल अल्लाह की तअ़रीफ़ के साथ पाकी बयान करता है और फ़रिश्ते भी 'उसके' डर से, और 'वही' कड़कती बिजलियाँ भेजता है, फिर जिस पर चाहता है गिरा देता है, और वे अल्लाह के विषय में झगड़ रहे होते हैं, और 'उसकी' तद्बीर (उपाय) बड़ी सख़्त है।
14 'उसी' के लिए सच्ची पुकार है; उसके अ़लावा जिनको ये पुकारते हैं, वे उनकी पुकार का कुछ भी जवाब नहीं देते- बस यह तो ऐसा ही है, जैसे कोई अपने दोनों हाथ पानी की ओर इसलिए फैलाए कि वह उसके मुँह में पहुँच जाए, हालाँकि वह उस तक पहुँचने वाला नहीं- कुफ्र करने वालों की पुकार तो बस भटकने ही के लिए होती है।
15 और अल्लाह ही को सज्दः करते हैं, (जो) आसमानों में हैं और (जो) ज़मीन में हैं खुशी से या मजबूरी से, और उनके साए (परछाइयाँ) भी सुबह़ और शाम (सज्दः करते हैं)।
16 कह दीजिए " आसमानों और ज़मीन का 'रब' कौन है?" कह दीजिए, "अल्लाह" (फिर) कह दीजिए, "तो क्या तुमने उससे हटकर दूसरों को अपना संरक्षक बना रखा है, जिन्हें खुद न अधिकार है अपने किसी लाभ का और न किसी नुक़्सान का?" कह दीजिए, "क्या अन्धा और आँखों वाला बराबर होते हैं? या अंधेरा और उजाला बराबर हो सकते हैं?" या उन लोगों ने जिनको अल्लाह का साझीदार ठहराया है, उन्होंने भी कुछ पैदा किया है, जैसा कि उस (अल्लाह) ने पैदा किया है, जिसकी वजह से सृष्टि की रचना में भ्रम पैदा हो गया है।" कह दीजिए, "हर चीज़ का पैदा करने वाला अल्लाह है, और 'वह' अकेला ज़बर्दस्त है"
17 'उसने' आसमान से पानी उतारा तो नदी-नाले अपनी-अपनी क्षमता के अनुसार बह निकले, फिर पानी के बहाव ने उभरे हुए झाग को उठा लिया और उसमें से भी, जिसे ज़ेवर और सामान बनाने के लिए आग में तपाते हैं, वैसा ही झाग उठता है- इस तरह़ अल्लाह ह़क़ और नाह़क़ की मिसाल बयान करता है- फिर जो झाग है वह तो सूखकर नष्ट हो जाता है और जो लोगों को लाभ पहुँचाने वाला होता है, वह ज़मीन में बाक़ी रहता है; इस तरह अल्लाह मिसालें बयान करता है।
18 जिन्होंने अपने 'रब' की बात को कुबूल कर लिया, उनके लिए भलाई है; और जिन्होंने 'उसका' हुक्म न माना, अगर उनके पास वह सब कुछ हो जो ध रती में है, बल्कि उसके साथ उतना और भी हो तो वे सब दे डालें, (अपने छुटकारे के) बदले में, वही हैं जिनका बुरा हिसाब होगा, और उनका ठिकाना जहन्नम है, और वह बुरी जगह है।
19 भला! जो व्यक्ति जानता हो कि जो कुछ आप पर उतरा है आप के रब की

ओर से वह हक़ है, क्या ऐसा व्यक्ति उस जैसा हो सकता है जो अन्धा है? समझते तो वही हैं जिनको बुद्धि है–
20 जो अल्लाह के साथ किये हुए अ़हद (प्रतिज्ञा) को पूरा करते हैं और अपने वचन को तोड़ते नहीं;
21 और जो ऐसे हैं कि जिसे अल्लाह ने जोड़ने का हुक्म दिया है, उसे जोड़ते हैं और अपने रब से डरते रहते हैं और बुरे हिसाब का उन्हें डर लगा रहता है।
22 और जिन लोगों ने अपने रब की खुशी हासिल करने के लिए सब्र से काम लिया, और नमाज़ें क़ायम रखीं, और 'हमारे' दिये हुए में से खुले और छिपे खर्च किया, और बुराई के बदले में भलाई की; यही लोग हैं जिनका आख़िरत में अच्छा बदला है–
23 रहने के बाग़ हैं जिनमें वे दाख़िल होंगे, और उनके बाप-दादा, और उनकी पत्नियाँ और औलाद में से जो नेक होंगे वे भी, और हर दरवाज़े से फ़रिश्ते उनके पास आएँगे।
24 (फ़रिश्ते कहेंगे) ''तुम पर सलामती हो इसके बदले में कि तुमने सब्र किया, और आख़िरत का घर खूब (घर) है।
25 और जो लोग अल्लाह के साथ पक्का अ़हद करने के बाद तोड़ते हैं, और अल्लाह ने जिनको जोड़े रहने का हुक्म दिया है उसे तोड़ते हैं, और ज़मीन पर फ़साद फैलाते हैं, यही लोग हैं जिन पर लानत है और उनके लिए (आख़िरत में) बहुत बुरा घर है।
26 अल्लाह जिसकी रोज़ी चाहता है बढ़ा देता है; और जिसकी चाहता है कम कर देता है, और वे दुनिया की ज़िन्दगी पर रीझते हैं, हालाँकि दुनिया की ज़िन्दगी आख़िरत के मुक़ाबले में कुछ भी नहीं सिवाय थोड़े से लाभ के।
27 और जिन लोगों ने इन्कार किया वे कहते हैं, ''इस पर इसके रब की ओर से कोई निशानी क्यों नहीं उतरी?'' कह दीजिए, ''अल्लाह जिसे चाहता है उसे बेराह (पथभ्रष्ट) कर देता है, और 'अपनी' ओर की राह उसी को दिखाता है जो 'उसकी' ओर रूजू (आकृष्टि) होता है।''
28 जो लोग ईमान लाए और उनके दिलों में अल्लाह की याद से चैन मिलता है, जान लो! कि अल्लाह की याद से दिलों को चैन मिलता है।
29 जो लोग ईमान लाए; और भले काम किये, उनके लिए भलाई है और अच्छा ठिकाना है।
30 उसी तरह 'हमने' आप को ऐसी उम्मत (समुदाय) में रसूल बना कर भेजा है कि उससे पहले बहुत सी उम्मतें गुज़र चुकी हैं, ताकि जो 'वह्य' 'हमने' भेजी है, पढ़ कर उनको सुना दें; और ये लोग रहमान का इन्कार करते हैं। कह दीजिए, 'वही' मेरा रब है 'उसके' सिवा कोई मअ़बूद (उपास्य) नहीं, 'उसी' पर मेरा भरोसा है, और 'उसी' की ओर रूजूअ़ करता हूँ।
31 और अगर ऐसा कुर्आन होता जिसके ज़रिये पहाड़ चला दिये जाते, या उससे धरती के टुकड़े-टुकड़े हो जाते, या उससे मुर्दों के साथ किसी की बातें करा

दी जातीं (तब भी यह लोग ईमान न लाते) बल्कि यह सब काम अल्लाह ही के अधिकार में हैं; तो क्या ईमान वालों को फिर भी इस बात को जान कर मायूसी (निराशा) नहीं हुई, अगर अल्लाह चाहता तो सारे ही लोगों को सीधी राह पर ले आता; और इन्कार करने वालों पर उनके करतूतों की वजह से हमेशा कोई न कोई आफ़त आती रहेगी, या उनके मकानों के क़रीब उतरती रहेगी, यहाँ तक कि अल्लाह का वादा आ पहुँचेगा, बेशक अल्लाह कभी वादा ख़िलाफ़ी नहीं करता।''

32 और आप से पहले कितने ही रसूलों का मज़ाक़ उड़ाया जा चुका है, (किन्तु)'मैंने' इन्कार करने वालों को मोहलत दी, फिर 'मैंने' उनको पकड़ लिया, तो कैसी रही 'मेरी' सज़ा!

33 भला 'वह' (अल्लाह) जो हर नफ़्स (इन्सान) के काम की ख़बर रखता है, और उन लोगों ने अल्लाह का साझीदार ठहरा दिया; कह दीजिए, ''उन लोगों के नाम तो लो! क्या तुम उसे ऐसी बात की ख़बर दे रहे हो, जिसे 'वह' नहीं जानता या ऊपर-ऊपर ही बातें करते हो।'' सच्चाई यह है कि काफ़िरों के लिए उनकी मक्कारियाँ खूबसूरत मालूम होती हैं, और वे सीधे रास्ते से रोक दिये गये हैं, और जिसको अल्लाह ही गुमराही में छोड़ दे, उसे कोई रास्ता बताने वाला नहीं;

34 उनके लिए दुनिया की ज़िन्दगी में भी अ़ज़ाब है, और आख़िरत का अ़ज़ाब तो और भी सख़्त है, और कोई नहीं जो उन्हें अल्लाह (के अ़ज़ाब) से बचा सके।

35 जिस जन्नत (बाग़) का वादा परहेज़गारों से किया गया है, उसकी ह़ालत यह है कि उसके नीचे नहरें बहती होंगी, उसका फल हमेशा रहेगा और साया भी, यह बदला है परहेज़गारों के लिए; और इन्कारियों (काफ़िरों) का बदला आग है।

36 और जिन लोगों को 'हमने' किताब दी है वे उससे, जो आप की ओर उतारा है खुश होते हैं; और उन्हीं में के कुछ फ़िर्क़े ऐसे भी हैं जो उसकी कुछ बातों का इन्कार करते हैं, कह दीजिए, ''मुझे तो बस यह हुक्म हुआ है कि मैं अल्लाह ही की इबादत करूँ और 'उसका' साझीदार न ठहराऊँ, मैं उसी की ओर बुलाता हूँ और उसी की ओर मुझे लौट कर जाना है।''

37 और इसी तरह 'हमने' इस (क़ुर्आन) को उतारा कि वह एक विशेष हुक्म है अ़रबी भाषा में; और अगर आप उन की इच्छाओं पर चलें, उस इल्म के आ जाने के बाद, जो आप तक पहुँच चुका है, तो अल्लाह के मुक़ाबले में न तो आप का कोई मददगार होगा और न कोई बचाने वाला।

38 और 'हम' आप से पहले बहुत से रसूल भेज चुके हैं, और 'हमने' उनको पत्नियाँ और सन्तान भी दी थीं, और किसी रसूल के अधिकार में न था कि वह अल्लाह की इजाज़त के बिना कोई निशानी लाए, हर चीज़ के लिए एक समय है जो लिखित है।

39 अल्लाह जिसे चाहता है मिटा देता है, और (जिसे चाहता) बाक़ी रखता है, और 'उसी' के पास अस्ल किताब है।

40 और अगर 'हम' आप को कोई वादा दिखला दें, जो उनसे किया है या हम आप को वफ़ात (मौत) दे दें; तो आप का काम तो केवल (सन्देश) पहुँचा देना है, और हिसाब लेना तो 'हमारे' ज़िम्मे है।

41 क्या उन्होंने देखा नहीं! कि 'हम' इस ज़मीन के चारों ओर की सीमाओं को घटाते हुए बढ़ रहे हैं? और अल्लाह ही हुक्म करता है; कोई नहीं जो 'उसके' हुक्म को रद्द कर सके, और 'वह' जल्द हिसाब लेने वाला है।

42 और इनसे पहले जो लोग गुज़रे हैं, वे भी योजनाएँ बना चुके (चालें चलते रहे) लेकिन हक़ीक़ी योजना बनाना तो पूरा अल्लाह ही के हाथ में है, हर नफ़्स (इन्सान) जो कुछ वह करता है वह उसे जानता है, इन्कार करने वालों को जल्द ही मालूम हो जाएगा कि आख़िरत के घर (जन्नत) का कौन हक़दार है।

43 और काफ़िर कहते हैं, आप उसके भेजे हुए (रसूल) नहीं हैं, कह दीजिए, ''तुम्हारे और मेरे बीच में अल्लाह गवाही के लिए काफ़ी है, और वह व्यक्ति जिसके पास (अल्लाह की) किताब का इल्म है।

## सूर-ए-इब्राहीम

यह सूरः मक्की है, इसमें अ़रबी के 3601 अक्षर, 845 शब्द, 52 आयतें और 7 रूकूअ़ है

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

1 अलिफ़्- लाम्- रा-, यह एक किताब जिसे 'हमने' आप पर उतारा है, ताकि आप लोगों को अन्धेरों से उजाले की ओर उनके रब के हुक्म से ले आएँ, शक्तिशाली, ख़ूबियों वाले अल्लाह के रास्ते की ओर।

2 'वह' अल्लाह (ऐसा है) कि 'उसी' का है, जो कुछ आसमानों में है, और जो कुछ ज़मीन में है, और इन्कार करने वालों के लिए बड़े सख़्त अ़ज़ाब की ख़राबी है।

3 जो आख़िरत के मुक़ाबले दुनिया को पसंद करते, और अल्लाह के रास्ते से रोकते, और उसमें टेढ़ पैदा करना चाहते हैं, ये लोग रास्ता भूल कर दूर जा पड़े।

4 और 'हमने' जो भी रसूल भेजे, उनकी अपनी क़ौम की भाषा के साथ भेजा, ताकि उन्हें स्पष्ट तरीक़े से बयान करे, तो अल्लाह जिसे चाहता है बेराह

करता है और जिसे चाहता है सीधी राह पर लगा देता है, और 'वह' ज़बर्दस्त, हिक्मत वाला है।
5 और 'हमने' मूसा को अपनी निशानियों के साथ भेजा था कि, ''अपनी क़ौम को अन्धेरों से उजाले की ओर निकालें, और उन्हें अल्लाह के दिन याद दिलाएँ, बेशक इसमें हर उस व्यक्ति के लिए निशानियाँ हैं जो सब्र और शुक्र करने वाला हो।''
6 और जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा, ''तुम अपने ऊपर अल्लाह की उन नेअ़मतों को याद करो, जब कि तुम को फ़िरऔ़न की क़ौम से छुड़ा दिया था, वे लोग तुम्हें बुरी सज़ा देते थे, और तुम्हारे बेटों को ज़ब्ह़ (कत्ल) कर डालते थे, और तुम्हारी औ़रतों को ज़िन्दा रखते थे, इसमें तुम्हारे रब की ओर से बड़ी आज़्माइश थी।''
7 और जब तुम्हारे रब ने सचेत कर दिया, ''अगर तुम शुक्र करोगे तो 'मैं' तुम्हें और ज़्यादा दूँगा, और अगर नाशुक्री (अकृतज्ञता) करोगे तो मेरी सज़ा बड़ी सख़्त है।''
8 और मूसा ने कहा, ''अगर तुम और वे लोग जो ज़मीन में हैं सारे के सारे (अल्लाह की) नाशुक्री करने लगें, तो अल्लाह बेनियाज़, (बेपरवाह) खूबियों वाला है।''
9 क्या तुम को उन लोगों की ख़बर नहीं पहुँची जो तुमसे पहले गुज़र चुके हैं? क़ौमे नूह़, और आ़द और समूद और जो उनके बाद हुए उन्हें और कोई नहीं जानता सिवाय अल्लाह के, उनके पास उनके रसूल खुली हुई निशानियाँ लेकर आए, तो उन्होंने उनके मुँह पर अपने हाथ रख दिये और कहने लगे, ''जो कुछ देकर तुम्हें भेजा गया है, हम उसका इन्कार करते हैं और जिसकी ओर तुम हमें बुला रहे हो, हम को तो उसमें शंका है जो हम को तरद्दुद (असमन्जस) में डाले हुए है''
10 उनके रसूलों ने कहा, ''क्या आसमानों और ज़मीन के पैदा करने वाले, अल्लाह के विषय में सन्देह है? 'वह' तो तुमको इसलिए बुला रहा है, ताकि तुम्हारे गुनाहों को माफ़ कर दे और तुम्हें एक निश्चित समय तक मोहलत दे।'' वे लोग कहने लगे, तुम तो केवल हमारे ही जैसे एक आदमी हो, चाहते हो कि हमें उनसे रोक दो जिनकी पूजा हमारे बाप-दादा करते आए हैं, (अच्छा) तो कोई स्पष्ट प्रमाण (चमत्कार) ले आओ।''
11 रसूलों ने उनसे कहा, ''हम तो वास्तव में तुम्हारे ही जैसे मनुष्य हैं, लेकिन अल्लाह अपने बन्दों में से जिस पर चाहता है एहसान करता है और यह बात हमारे अधिकार में नहीं कि तुम्हें कोई चमत्कार ला दिखाएँ, हाँ, अल्लाह के हुक्म से यह बात हो सकती है; और अल्लाह ही पर ईमान वालों को भरोसा रखना चाहिए''
12 और हम को क्या हुआ कि हम अल्लाह पर भरोसा न करें, ह़ालाँकि 'उसने' हमको हमारे रास्ते दिखा दिये, और जो तुम हमको तक्लीफ़ देते हो, हम उस पर सब्र से काम लेंगे; और भरोसा करने वालों को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए।''

13 और काफ़िरों ने अपने रसूलों से कहा, ''हम तुम को अपनी ज़मीन से बाहर
निकाल देंगे, या यह कि तुम हमारे मज़हब (धर्म) में लौट आओ।'' तो उनके
रब ने उन पर वह्य भेजी कि, 'हम' इन ज़ालिमों को ज़रूर हलाक कर देंगे;
14 और उनके बाद तुम को इस धरती में आबाद कर देंगे, यह उस व्यक्ति के
लिए है, जो मेरे सामने खड़े होने का डर रखता हो और मेरी चेतावनी से
डरता हो।''
15 और उन्होंने फ़त्ह़ (विजय) चाही तो हर सरकश और हर हठधर्मी असफल
हो गया।
16 इसके पीछे (बाद) उसके लिए दोज़ख़ है और उसको पीप (Pus) का पानी
पिलाया जाएगा,
17 वह उसे कठिनाई से घूँट-घूँट कर पिएगा और ऐसा नहीं लगेगा कि आसानी
से उसे उतार सकता है, और मौत उस पर हर ओर से चली आती होगी,
फिर भी वह मरेगा नहीं; और उसके पीछे एक सख़्त अ़ज़ाब होगा।
18 जिन लोगों ने अपने रब का इन्कार किया उनके कामों की मिसाल राख की
सी है कि आँधी के दिन, उस पर ज़ोर की हवा चले (और) उसे उड़ा ले जाए
जो कुछ उन्होंने कमाया उससे कुछ भी उनको ह़ासिल न हो सकेगा, यही तो
है निचले दर्जे की गुमराही।
19 क्या तुम ने देखा नहीं! कि अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को ठीक-ठीक
पैदा किया? अगर 'वह' चाहे तो तुम सब को ले जाए और नई मख़्लूक़ (सृष्टि)
ले आए;
20 और ऐसा करना अल्लाह के लिए कुछ भी कठिन नहीं है।
21 और सबके सब अल्लाह के सामने इकट्ठा होंगे, तो कमज़ोर लोग उन लोगों
से, जो बड़े बने हुए थे, कहेंगे, ''हम तो तुम्हारे पीछे चलते थे, तो क्या तुम
हम को अल्लाह के अ़ज़ाब से बचा सकोगे?'' वे कहेंगेः ''अगर अल्लाह हम
को रास्ता बतलाता, तो हम तुम को भी रास्ता बतलाते, अब हमारे लिए बराबर
है, चाहे चीख़ पुकार करें या सब्र से काम लें, हमारे लिए बचने का कोई उपाय
नहीं।''
22 जब (सब कामों का) फ़ैसला हो चुकेगा तो शैतान कहेगा, ''अल्लाह ने तो तुम
से सच्चे वादे किये थे, और मैं ने भी तुम से वादे किये थे, तो मैं ने वे वादे
झूठे किये थे, और मेरा तुम पर कुछ ज़ोर नहीं था, सिवाय इसके कि मैंने
तुम को बुलाया तो तुमने मेरी बात को मान लिया; तो अब मुझको मलामत
न करो, बल्कि अपने आप को ही मलामत करो; न मैं तुम्हारी फ़रियाद सुन
सकता हूँ और न तुम मेरी फ़रियाद सुन सकते हो। इससे पहले जो तुमने
मुझे साझीदार ठहराया था, तो मैं उससे बेज़ारी (विरक्त) ज़ाहिर करता हूं।''
बेशक ज़ालिमों के लिए दुःख देने वाला अ़ज़ाब है।
23 और जो ईमान लाए और भले काम किये, वे ऐसे बाग़ों में दाख़िल होंगे जिनके
नीचे नहरें बह रही होंगी, उनमें वे अपने रब की इजाज़त से हमेंशा रहेंगे,
वहाँ उनकी मुलाक़ात की दुआ़ 'सलाम' होगी।
24 क्या आप ने नहीं देखा! कि अल्लाह ने कैसी मिसाल 'कलिम-ए-तय्यिबः' की

दी? (उसकी मिसाल ऐसी है) जैसे एक अच्छा वृक्ष जिसकी जड़ जमी हुई, और
शाखाएँ आसमान में फैली हुई हों;
25 अपने रब की इजाज़त से वह अपना फल दे रहा हो; और अल्लाह लोगों के
लिए मिसालें बयान करता है, ताकि वह खूब समझ लें।
26 और 'कलिम-ए-खबीसा' (अशुभ एवं अशुद्ध) की मिसाल, एक गन्दे वृक्ष की
सी है, जिसे ज़मीन के ऊपर ही से उखाड़ लिया जाए, और उसे कुछ भी
स्थिरता प्राप्त न हो।
27 ईमान वालों को अल्लाह पक्की बात के ज़रिये दुनिया की ज़िन्दगी में भी मज़बूत
करता है और अख़िरत में भी, और अल्लाह ज़ालिमों को गुमराही में डाल
देता है; और अल्लाह जो चाहता है, करता है।
28 क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा! जिन्होंने अल्लाह की नेअ़मतों को कुफ्र से
बदल डाला, और अपनी क़ौम को तबाही के घर में जा उतारा?-
29 जहन्नम है उसमें, वे झोंके जाएँगे और वह बहुत बुरा ठिकाना है!
30 और उन्होंने अल्लाह के मुक़ाबले में दूसरे मअ़बूद ठहरा लिए, ताकि उस
(अल्लाह) की राह से भटकाएँ, कह दीजिए, ("थोड़े दिन) मज़े ले लो, क्योंकि
तुम्हें अन्त में आग ही में जाना है।"
31 कह दीजिए, "मेरे जो बन्दे ईमान लाए वे नमाज़ क़ायम करें, और 'हमारी' दी
हुई रोज़ी में से छिपे और खुले खर्च करें, इससे पहले कि वह दिन आ जाए
जिसमें न कोई सौदा (क्रय-विक्रय) होगा और न दोस्ती।"
32 अल्लाह 'ही तो' है 'जिसने' आसमानों और ज़मीन को बनाया, और आसमान
से पानी बरसाया फिर उससे फलों की क़िस्म से तुम्हारे लिए रोज़ी निकाली;
और नाव को तुम्हारे लिए काम में लगाया, ताकि उसके हुक्म से समुद्र में चलें;
और नहरों को भी तुम्हें लाभ पहुँचाने के लिए लगा दिया;
33 और सूरज और चाँद को तुम्हारी सेवा में लगा दिया, जो 'बराबर' चलते रहते
हैं, और रात और दिन को तुम्हारी सेवा में लगा दिया;
34 और हर उस चीज़ में से तुम्हें दिया जो तुमने माँगा, और अगर तुम अल्लाह
की नेअ़मतों को गिनने लगो तो गिन नहीं सकते। बेशक इन्सान बड़ा ही
अन्यायी और नाशुक्रा है,
35 और जिस समय इब्राहीम ने कहा, "मेरे रब! इस भू-भाग (शहर) को अम्न
वाला बना दीजिए, और मुझ को और मेरी सन्तान को, इससे बचा लीजिए
कि हम मूर्तियों को पूजने लग जाएँ;
36 मेरे रब! उन्होंने बहुत से लोगों को गुमराह (पथभ्रष्ट) कर दिया, तो जो कोई
मेरे रास्ते पर चलेगा वह तो मेरा है ही; और जिसने मेरा कहना न माना तो
'तू' उसे बड़ा माफ़ करने वाला, रह़म वाला है।"
37 ऐ हमारे रब! मैंने अपनी औलाद को (एक ऐसी) घाटी में, जहाँ खेती नहीं
होती, 'तेरे' सम्मानित घर (कअ़बः) के पास बसाया है, ऐ हमारे रब! ताकि
ये नमाज़ क़ायम करें; अतः लोगों के दिलों को झुका दीजिए, और उन्हें फल
खाने को दीजिए, ताकि वे शुक्र करें;

38 हमारे रब! आप तो जानते हैं जो कुछ हम छिपा कर करते हैं, और जो कुछ
दिखा कर करते हैं; और अल्लाह से कोई भी चीज़ छिपी हुई नहीं है न ज़मीन
में। और न आसमान में।
39 अल्लाह का शुक्र है, 'जिसने' इतनी बड़ी उम्र में इस्माईल और इस्हाक़ दिये,
बेशक मेरा 'रब' दुआ़ ज़रूर सुनता है;
40 ऐ रब! मुझे और मेरी औलाद को नमाज़ क़ायम करने वाला बना दीजिए, ऐ
रब! और हमारी दुआ़ को क़ुबूल कर लीजिए।
41 ऐ रब! ''मुझे और मेरे माँ-बाप को और ईमान वालों को उस दिन माफ़ कर
दीजिएगा, जिस दिन हिसाब का मामला पेश आएगा।''
42 और (आप) ऐसा न समझें कि अल्लाह इन ज़ालिमों के करतूतों से बेख़बर
है, 'वह' तो केवल उनको उस दिन तक की मोहलत दे रहा है जबकि आँखें
फटी की फटी रह जाएंगी;
43 अपने सिर उठाए दौड़ते होंगे; उनकी निगाहें खुद उनकी अपनी ओर भी न
फिरेंगी और उनके दिल उड़ रहे होंगे।
44 और लोगों को उस दिन से डराइए, जबकि उन पर सज़ा उतरेगी; तब ज़ालिम
लोग कहेंगे, ''ऐ हमारे रब! हम को थोड़ी-सी देर की मोहलत दे दीजिए, ताकि
हम तेरे बुलाने पर उठ खड़े हों और रसूलों की पैरवी करें'' (जवाब मिलेगा)
''क्या तुम पहले क़समें नहीं खाया करते थे, हमारा तो ज़वाल (पतन) ही न
होगा?-
45 और उन्हीं की बस्तियों में तुम भी बसे थे, जिन्होंने अपने ऊपर ज़ुल्म किया
था और तुम जान चुके थे कि 'हमने' उन लोगों के साथ कैसा मामला किया
था? और 'हमने' तुम्हारे लिए मिसालें भी बतला दी थीं।''
46 और वह अपनी चाल चल चुके हैं, और उनकी चालें अल्लाह की नज़र में हैं,
और उनकी चालें ऐसी थीं कि पहाड़ों को भी (अपनी) जगह से टाल दें।
47 तो ऐसा न समझना कि अल्लाह जो अपने रसूलों से अ़हद कर चुका है उसके
खिलाफ़ करेगा, बेशक अल्लाह ज़बर्दस्त बदला लेने वाला है।
48 जिस दिन यह ज़मीन दूसरी ज़मीन से बदल दी जाएगी, और आसमान भी,
और वे सब के सब एक ज़बर्दस्त अल्लाह के सामने निकल खड़े होंगे।
49 और उस दिन तुम मुजरिमों को देखोगे कि ज़ंजीरों में जकड़े हुए हैं,
50 उनके कुर्ते गन्धक के होंगे और उनके चेहरों को आग ढाँक लेती होगी,
51 ताकि अल्लाह हर एक जीव को उस की कमाई का बदला दे। बेशक अल्लाह
जल्द हि़साब लेने वाला है।
52 यह लोगों के लिए सन्देश है ताकि उन्हें इसके ज़रिये डराया जाए और ताकि
वे जान लें कि 'वही' अकेला 'इलाह' (उपास्य) है, और ताकि अक़्ल वाले
नसीह़त ह़ासिल करें।

यह सूरः मक्की है, इसमें अ़रबी के 2907 अक्षर, 663 शब्द,99 आयतें और 6 रूकूअ़ है

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

1 अलिफ़्- लाम्- रा, यह 'किताब' और स्पष्ट कुर्आन की आयतें हैं।
2 एक ऐसा वक्त आ जाएगा कि काफ़िर तमन्ना (इच्छा) करेंगे कि क्या ही अच्छा होता कि हम मुस्लिम (आज्ञाकारी) होते?
3 (ऐ मुह़म्मद) इनको रहने दीजिए, कि (दुनिया में) खा उड़ा लें; और उम्मीद उन्हें भुलावे में डाले रहे, बहुत जल्द उन्हें मालूम हो जाएगा,
4 और 'हमने' कोई बस्ती नहीं उजाड़ी सिवाय, उसके जिसका फ़ैसला निश्चित था।
5 कोई गिरोह (जमाअ़त) न अपनी मुद्दत (अवधि) से आगे निकल सकता है, और न पीछे रह सकता है,
6 और वे कहते हैं "ऐ वह व्यक्ति जिस पर नसीह़त उतरी है, तुम तो दीवाने हो!
7 अगर तुम सच्चे हो तो हमारे सामने फ़रिश्तों को क्यों नहीं लाते?"
8 फ़रिश्तों को हम केवल सत्य के साथ ही उतारते हैं और (फ़ैसले के बाद) तब उन्हें मोहलत नहीं मिलेगी।
9 बेशक 'हम' ही ने नसीह़त-नामा उतारा है और 'हम' ही इसके निगहबान (संरक्षक) हैं।
10 और 'हम' आपसे पहले लोगों में भी रसूल भेज चुके हैं,
11 और कोई रसूल उनके पास ऐसा नहीं आया जिसका उन्होंने मज़ाक़ न उड़ाया हो।
12 इसी तरह 'हम' मुजरिमों के दिलों में उतार देते हैं;
13 यह इस (कुर्आन) पर ईमान नहीं लाते, और यह तरीक़ा पहले से चला आया है।
14 अगर 'हम' उन पर आसमान से कोई दरवाज़ा खोल दें और वे उसमें चढ़ने भी लगें,
15 फिर भी वे यही कहेंगेः " हमारी नज़रें बाँध दी गई हैं बल्कि हम पर किसी ने जादू कर दिया है।"
16 और 'हमने' आसमान में बुर्ज (तारों का समूह) बनाए, और उसको देखने वालों के लिए सुसज्जित भी किया;
17 और हर फिट्कारे हुए शैतान से उसकी रक्षा की;

18 हाँ अगर कोई चोरी-छिपे कुछ सुन ले, तो चमकता हुआ अंगारा उसका पीछा करता है।

19 और 'हमने' धरती को फैलाया और उसमें पहाड़ डाल दिये, और उसमें हर चीज़ नपे-तुले अन्दाज़ में उगाई।

20 और उसमें 'हमने' तुम्हारे गुज़र- बसर के सामान बनाए, और उनके लिये भी जिनको रोज़ी देने वाले तुम नहीं हो।

21 और हर चीज़ के 'हमारे' पास ख़ज़ाने हैं, और 'हम' उसको एक निश्चित अन्दाज़े से उतारते रहते हैं।

22 और 'हम' ही बादल को बोझल करने वाली हवाएँ भेजते हैं फिर 'हम' ही आसमान से पानी उतारते हैं; फिर वह पानी तुम को पिलाते हैं, और तुम तो उसका खज़ाना नहीं रखते?

23 और 'हम' ही जिलाने वाले और मारने वाले हैं, और 'हम' ही सबके वारिस हैं।

24 और 'हम' तुम से पहले के लोगों को भी जानते हैं, और बाद के लोगों को भी जानते हैं।

25 और तुम्हारा 'रब' उन सब को इकट्ठा करेगा; 'वह' बड़ा इल्म वाला, हिकमत वाला है।

26 और 'हमने' इन्सानों को सड़े हुए गारे की खनकती हुई मिट्टी से बनाया है;

27 और जिन्नों को इससे पहले लू (गर्म हवा) रूपी आग से पैदा कर चुके थे।

28 और जब आप के 'रब' ने फरिश्तों से कहा कि, 'मैं' एक बशर (इन्सान) को खनकती हुई मिट्टी से, जो सड़े हुए गारे की बनी होगी पैदा, करने वाला हूं।"

29 तो जब 'मैं' उसे पूरा बना चुकूँ और उसमें अपनी 'रूह' फूँक दूँ, तो तुम उसके आगे सज्दे में गिर जाना।"

30 तो सब के सब फ़रिश्तों ने मिलकर सज्दः किया,

31 सिवाय इब्लीस के, उसने सज्दः करने वालों के साथ शामिल होने से इन्कार कर दिया।

32 (अल्लाह ने) फ़रमाया, "ऐ इब्लीस! तुझे क्या हुआ कि तू सज्दः करने वालों में शामिल न हुआ?"

33 (शैतान ने) कहा, "मैं ऐसा नहीं हूं कि ऐसे बशर (इन्सान) को सज्दः करूँ, जिसको 'तू' ने सड़े हुए गारे की खनकती हुई मिट्टी से बनाया।"

34 (अल्लाह ने) फ़रमाया, "अच्छा 'तू' दूर हो जा यहाँ से, तू मर्दूद (दुष्ट) है!

35 और तुझ पर बदले के दिन (क़ियामत के दिन) तक धिक्कार है।"

36 (शैतान ने) कहा, ''ऐ मेरे 'रब' मुझको उस दिन तक के लिए मोहलत दीजिए,
जबकि लोग उठाए जाएँगे।''
37 (अल्लाह ने) फ़रमाया, ''अच्छा, तुझे मोहलत दी जाती है,
38 उस दिन तक के लिए, जिसका समय निर्धारित है।''
39 कहा, ''ऐ मेरे 'रब' चूँकि 'आपने' मुझे सीधे मार्ग से विचलित (गुमराह) कर
दिया है, इसलिए मैं ज़मीन में (आदम और उसकी औलाद को) उन को (गुनाह)
सजा कर दिखाऊँगा, और उन सब को सीधे रास्ते से बहका दूँगा;
40 सिवाय उनके जो तेरे चुने हुए मुख़्लिस बन्दे होंगे।
41 फ़रमाया, 'मुझ' तक पहुँचने का यही सीधा रास्ता है।''
42 'मेरे' बन्दे पर तो तेरा कुछ ज़ोर न चलेगा, सिवाय उन बहके हुए लोगों के
जो तेरे पीछे चल पड़ें।
43 और ऐसे तमाम लोगों के लिए, जहन्नम का वादा है।
44 उस (दोज़ख) के सात दरवाज़े हैं, हर दरवाज़े के लिए, उनमें से जमाअतें
तक़्सीम कर दी गयी हैं।
45 बेशक, परहेज़गार बाग़ों और चश्मों (स्रोतों) में होंगे;
46 (उनसे कहा जाएगा) दाख़िल हो जाओ, 'सलामती (और) अमन' के साथ;
47 और उनके दिलों में जो कुदूरत (ईर्ष्या) होगी उसे ''हम'' दूर कर देंगे (तो) वे
भाई-भाई बनकर एक-दूसरे के आमने-सामने तख़्तों पर बैठे होंगे;
48 न उनको वहाँ किसी तरह का दुःख होगा, और न वे वहाँ से निकाले जाएंगे।
49 मेरे बन्दों को बता दीजिए! कि मैं बड़ा माफ़ करने वाला, रह़म वाला हूँ;
50 और यह कि मेरा अ़ज़ाब बड़ा दर्दनाक अ़ज़ाब है।''
51 और उन्हें इब्राहीम के मेहमानों की ख़बर (सुना) दीजिए;
52 जबकि वह उनके पास आए और कहा, ''सलाम हो,'' (तो) बोले ''हमें तो
तुमसे डर लग रहा है।''
53 (फ़रिश्ते) बोले, ''आप डरिए नहीं, हम आप को एक ज्ञानी लड़के की
ख़ुशख़बरी देते हैं।''
54 कहा, ''क्या आप मुझे इस उम्र में बशारत देते हैं, कि मुझ पर बुढ़ापा आ
चुका है, तो यह किस बात की ख़ुशख़बरी है?''
55 (फ़रिश्तों ने) कहा, ''हम आपको सच्ची ख़ुशख़बरी दे रहे हैं, तो आप नाउम्मीद
न हों।''
56 (इब्राहीम ने) कहा, ''अपने 'रब' की रह़मत से नाउम्मीद होता ही कौन है?
सिवाय गुमराहों के;
57 (इब्राहीम ने) कहा, ''ऐ फ़रिश्तों (दूतों) आप किस मुहिम (अभियान) पर आए
हैं।''
58 (फ़रिश्तों ने) कहा, ''हम एक मुज़रिम क़ौम की ओर भेजे गये हैं,
59 सिवाय लूत के घर वालों के, उन सब को तो हम बचा लेंगे,

60 सिवाय उनकी पत्नी के, 'हमने' निश्चित कर दिया है कि वह पीछे रह जाने वालों में रहेगी।''
61 फिर जब यह दूत, (फ़रिश्ते) लूत के यहाँ पहुँचे,
62 तो (लूत ने) कहा, ''आप लोग अजूनबी मालूम होते हैं।''
63 (फ़रिश्तों ने) कहा, ''नहीं, बल्कि हम लोग आप के पास वही चीज़ लेकर आए हैं, जिसके बारे में यह लोग सन्देह में थे।''
64 और हम आप के पास यक़ीनी चीज़ ले कर आए हैं, और हम बिल्कुल सच्चे हैं।
65 अतः अब आप अपने घर वालों को लेकर रात के किसी हिस्से में निकल जाइए, और आप उनके पीछे- पीछे चलिए और आप में से कोई व्यक्ति पीछे मुड़ कर न देखे, और जहाँ का हुक्म आप को मिला है, उसी ओर चले जाइए।''
66 और 'हमने' लूत के पास यह फ़ैसला भेज दिया है, सुबह होते-होते उन लोगों की जड़ ही कट जाएगी।
67 और इतने में शहर के लोग खुशियाँ मनाते हुए आ पहुँचे।
68 (लूत ने) कहा, ''यह मेरे मेहमान हैं तुम लोग मेरी रूस्वाई (बेइज़्ज़ती) न करो,
69 अल्लाह से डरो, और मुझे रूसवा न करो;
70 (फ़रिश्तों ने) कहा, ''क्या हमने तुम्हें दुनिया भर के लोगों का ज़िम्मा लेने से मना नहीं किया?''
71 (लूत ने) कहा, ''अगर तुम्हें कुछ करना ही है, तो यह मेरी (क़ौम की) बेटियाँ मौजूद हैं।''
72 आप के जान की क़सम, वे अपनी बद्मस्तियों में अन्धे हो गये थे,
73 बस सूरज के निकलते-निकलते एक भयंकर आवाज़ ने आ पकड़ा।
74 और 'हमने' उस बस्ती को उलट - पलट कर दिया, और उन पर कंकरीले पत्थर बरसाए।
75 बेशक इसमें उन लोगों के लिए बड़ी निशानियाँ हैं जो बुद्धि से काम लेते हैं;
76 और वह (बस्ती) तो एक आबाद रास्ते पर है।
77 बेशक इसमें ईमान लाने वालों के लिए बड़ी निशानी है।
78 और 'ऐका' वाले (शुऐब की क़ौम के लोग) भी ज़ालिम थे।
79 तो 'हमने' उनसे भी बदला लिया, और यह दोनों खुले मार्ग पर (स्थित) हैं।
80 और हिज्र वाले भी रसूलों को झुठला चुके हैं।
81 और 'हम' ने तो उन्हें अपनी निशानियाँ दीं, मगर वे मुँह फेरते ही रहे;
82 और वे लोग पहाड़ों को तराश कर घर बनाते ताकि अमन चैन से रहेंगे।
83 तो एक भयानक आवाज़ ने सुबह होते-होते उन्हें आ पकड़ा;

84 और जो कुछ वे करते थे, वह उनके कुछ भी काम न आया।
85 और 'हमने' तो आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ उनके बीच है, बिना
किसी मक़सद के नहीं पैदा किया, और क़ियामत ज़रूर आने वाली है, अतः
आप ख़ूबसूरती के साथ दरगुज़र कीजिए।
86 बेशक, आप का 'रब' बड़ा ही पैदा करने वाला, इल्म वाला है।
87 और 'हमने' आप को सात दोहराई जाने वाली आयतें, और महान क़ुर्आन
प्रदान किया है।
88 आप अपनी आँख उठा कर भी उन चीज़ों को न देखिए, जो 'हमने' (काफ़िरों
के लिए) कुछ सुख सामग्री विभिन्न गिरोहों को दे रखी है, और न उनकी हालत
पर ग़म कीजिए, और अपनी भुजाएँ ईमान वालों के लिए झुकाए रखिए,(अर्थात
मोमिनों से भले तरीक़े से पेश आइए)
89 और कह दीजिए, ''मैं तो साफ़-साफ़ डराने वाला हूँ।''
90 जिस तरह 'हमने' उतारा था तक़्सीम (भेद) पैदा करने वालों पर,
91 जिन्होंने क़ुर्आन के टुकड़े-टुकड़े कर डाले।
92 तो आप के रब की क़सम! हम उन सबसे ज़रूर सवाल करेंगे।
93 उन कामों के बारे में जो वे करते रहे हैं;
94 अतः आप को जिस काम का हुक्म दिया गया है उसे साफ़ सुना दीजिए; और
मुश्रिकों की परवाह न कीजिए।
95 हम आप के लिए मज़ाक़ उड़ाने वालों के मुक़ाबिले में काफ़ी हैं।
96 जिन्होंने अल्लाह के साथ किसी दूसरे को मअ़बूद बना लिया है, तो बहुत जल्द
उन्हें मालूम हो जाएगा!
97 'हमें' मालूम है कि वे जो कुछ कहते हैं, उससे तुम्हारा दिल तंग होता है।
98 और आप अपने 'रब' की ह़म्द व तस्बीह़ (गुणगान) करते रहिए और सज्दः
करने वालों में शामिल रहिए।
99 और आप, अपने 'रब' की इबादत में लगे रहिए, यहाँ तक कि आप की मौत
आ जाए।

## सूर-ए-नह़्ल

यह सूरः मक्की है, इसमें अ़रबी के 7974 अक्षर, 1879 शब्द,128 आयतें और 16 रूकूअ़ हैं।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने

वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।
1 अल्लाह का हुक्म, (समझो) आ ही पहुँचा तो उसके लिए जल्दी न मचाओ; 'वह' पाक और बुलन्द है उस शिर्क से जो ये कर रहे हैं।
2 'वह' फ़रिश्तों को रूह़ के साथ अपने हुक्म से जिस बन्दे पर चाहता है उतारता है, ''लोगों को सचेत कर दो कि मेरे सिवा कोई 'इलाह' (उपास्य) नहीं, तो मुझ से ही डरो।''
3 'उसने' आसमान और ज़मीन को सत्य के आधार पर पैदा किया, 'वह' बुलन्द है, 'उससे' जिसको यह साझीदार ठहराते हैं।
4 'उसने' मनुष्य को एक बूँद से पैदा किया, फिर क्या देखते हैं कि 'वह' खुला झगड़ालू बन गया?
5 और 'उसने' तुम्हारे लिए चौपाए पैदा किये, जिनमें तुम्हारे लिए जाड़े का सामान और (बहुत से) फ़ायदे हैं, और कुछ को तुम खाते भी हो,
6 और उनकी वजह से तुम्हारी रौनक़ (शोभा) है, जबकि शाम को उन्हें वापस लाते हो और जब (सुबह़ को) चरने के लिए छोड़ देते हो;
7 और तुम्हारे बोझ ऐसी जगहों तक ले जाते हैं, जहाँ तुम सख़्त मेहनत (कठोर परिश्रम) के बिना नहीं पहुँच सकते थे; बेशक तुम्हारा रब बड़ा रह़मदिल, बेहद मेहरबान है।
8 और (उसीने) घोड़े, और खच्चर, और गधे भी पैदा किये, ताकि तुम उन पर सवार हो और तुम्हारी शोभा हो, और उसे भी पैदा करता है जिसे तुम नहीं जानते।
9 और सीधा रास्ता अल्लाह तक पहुँचता है और कुछ रास्ते टेढ़े हैं, और अगर 'वह' चाहता तो तुम सबको सीधी राह दिखा देता।
10 'वही' तो है 'जिसने' आसमान से तुम्हारे लिए पानी उतारा, जिसे तुम पीते हो और जिससे वनस्पतियाँ भी (उगती) हैं, जिनमें तुम अपने जानवरों को चराते हो;
11 उसी (पानी) से 'वह' तुम्हारे लिए खेती, और ज़ैतून, और खजूरें, और अंगूर, और हर प्रकार के फल पैदा करता है, जो लोग सोच-विचार करते हैं उनके लिए इसमें निशानी है।
12 और 'उसी ने' रात और दिन को, और सूरज और चाँद को तुम्हारे काम में लगा दिया है; और सितारे भी 'उसके' हुक्म से काम में लगे हैं, इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो अक़्ल से काम लेते हैं;
13 और ज़मीन में जो भी रंग-बिरंग की चीज़ें पैदा की हैं, इसमें भी (उन लोगों के लिए बड़ी) निशानी हैं, जो नसीह़त ह़ासिल करने वाले हैं।
14 और 'वही' तो है जिसने समुद्र को तुम्हारे काम में लगा दिया ताकि तुम उसमें से ताज़ा गोश्त खाओ, और उसमें से ज़ेवर निकालो, जिनको तुम पहनते हो; तुम देखते हो कि कश्तियाँ (नौकाएं) उसको चीरती हुई चली जाती हैं ताकि तुम 'उसका' फ़ज़्ल (रोज़ी) तलाश करो और 'उसके' शुक्रगुज़ार बनो।

15 और 'उसी' ने ज़मीन में पहाड़ रख दिये, ताकि वह तुमको लेकर डगमगाने न लगे, और नहरें और रास्ते बना दिये, ताकि एक जगह से दूसरी जगह जा सको;

16 और चिन्ह (मार्ग) भी रखे, और सितारों से भी लोग रास्ते मालूम कर लेते हैं।

17 अच्छा, तो क्या 'वह' जो पैदा करता है उस जैसा हो जाएगा, जो कुछ भी पैदा नहीं कर सकता? तो क्या तुम इतनी भी बात नहीं समझते?

18 और अगर तुम अल्लाह की नेअ़मतों को गिन्ना चाहो तो नहीं गिन सकते; बेशक अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, रह़म वाला है।

19 और अल्लाह जानता है उसको भी, जो कुछ तुम छिपाते हो और जो कुछ ज़ाहिर करते हो।

20 और जिन लोगों को ये अल्लाह के सिवा पुकारते हैं, वे किसी को पैदा नहीं कर सकते, बल्कि वे खुद पैदा किये जाते हैं,

21 मुर्दा हैं न कि ज़िन्दा, और उनको इतनी भी ख़बर नहीं कि कब उठाए जाएंगे?

22 तुम्हारा 'मअ़बूद' (उपास्य) एक ही अल्लाह है, तो जो आ़खिरत पर ईमान नहीं रखते उनके दिल इन्कार कर रहे हैं। और वे अपने आप को बड़ा समझ रहे हैं।

23 अल्लाह ज़रूर जानता है, उसको जो कुछ ये छिपाते हैं, और जो ज़ाहिर करते हैं; 'वह' (अल्लाह) पसंद नहीं करता अपने आप को बड़ा समझने वाले को।

24 और जब इनसे कहा जाता है, "तुम्हारे 'रब' ने क्या उतारा है?" तो कहते हैं, "यह तो पहले लोगों की कहानियाँ हैं।"

25 ये क़ियामत के दिन अपने बोझ भी पूरे-पूरे उठाएँगे और उन लोगों के बोझ भी, जिन्हें यह इल्म के बग़ैर गुमराह कर रहे हैं सुन लो! कि बहुत ही बुरा है वह बोझ जो उठा रहे हैं।

26 जो इनसे पहले गुज़रे हैं वह भी मक्कारियाँ कर चुके हैं, फिर अल्लाह उन की इमारत पर नीवों (फाउन्डेशन) की ओर से आ पहुँचा, और छत उन पर उनके ऊपर से गिर पड़ी और अ़ज़ाब उस राह से आया जिधर से उन्हें एहसास भी न था।

27 फिर 'वह' उनको क़ियामत के दिन भी ज़लील करेगा और कहेगा, " कहाँ हैं मेरे वे साझीदार, जिनके लिए तुम झगड़ते थे?" जिन लोगों को इल्म दिया गया था, वे कहेंगे, "आज रूस्वाई और ख़राबी है, इन्कार करने वालों के लिए।"

28 उनके लिए जिन्हें फ़रिश्ते इस ह़ाल में मौत देते हैं कि वे अपने आप पर ज़ुल्म कर रहे होते हैं, उस समय (विवश होकर) फ़रमाँबरदारी दिखाने लगते हैं; 'हम' तो कुछ बुरा काम नहीं करते थे; (नहीं,) बल्कि अल्लाह खूब जानता है जो कुछ तुम किया करते थे।"

29 तो दोज़ख के दरवाज़ों में दाख़िल हो जाओ; उसी में तुम्हें हमेशा रहना है, तो घमंड करने वालों का कैसा बुरा ठिकाना है?

30 और जो लोग परहेज़गार हैं उनसे पूछा जाता हैं, "तुम्हारे 'रब' ने क्या चीज़

उतारी है?" तो कहते हैं, "सबसे भली (चीज़);" जिन लोगों ने भलाई की
उनकी इस दुनिया में भी अच्छी हालत है और आख़िरत का घर तो है ही
अच्छा। और क्या ही अच्छा घर है परहेज़गारों का;
31 हमेशा-हमेश रहने की जन्नत जिनमें वे दाख़िल होंगे, उनके नीचे नहरें बह रही
होंगी, वहाँ उनके लिए वह सब कुछ होगा जो वे चाहेंगे, अल्लाह परहेज़गारों
को ऐसा ही बदला देता है।
32 जब फ़रिश्ते उनकी जानें निकालने लगते हैं (इसहाल में) कि वे पाक होते हैं,
तो वे कहते हैं, "तुमपर 'सलाम' हो, दाख़िल हो जाओ जन्नत में अपने उन
कामों के बदले जो तुम किया करते थे।"
33 क्या यह इस बात के इन्तिज़ार में हैं कि फ़रिश्ते इनके पास आएँ या तुम्हारे
रब का हुक्म आ पहुँचे; ऐसा ही उन लोगों ने भी किया था, जो इनसे पहले
गुज़र चुके, और अल्लाह ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया था, बल्कि वे खुद अपने
ऊपर ज़ुल्म करते थे;
34 तो उनके करतूतों की सज़ा उन्हें मिलकर रही, और जिसका मज़ाक़ वे उड़ाते
थे उसी ने उन्हें आ घेरा।
35 और मुश्रिक कहते हैं, "अगर अल्लाह चाहता तो न हम ही 'उसके' सिवा
किसी चीज़ को पूजते और न हमारे बाप-दादा ही और न हम 'उसके' सिवा
किसी चीज़ को हराम ठहराते; इनसे पहले के लोगों ने भी ऐसा ही किया, तो
क्या साफ़-साफ़ सन्देश पहुँचा देने के सिवा रसूलों पर कोई और भी ज़िम्मेदारी
है"
36 और 'हमने' हर उम्मत (समुदाय) में रसूल भेजे कि, "एक अल्लाह की इबादत
(उपासना) करो, और शैतान (बुतों) से बचते रहो, तो उनमें से किसी को
अल्लाह ने सीधी राह सुझाई और किसी पर गुमराही (पथभ्रष्टता) सिद्ध हो
कर रही, फिर ज़रा धरती पर चल फिर कर देखो! कि झुठलाने वालों का
कैसा अंजाम हुआ?
37 अगर आप इनको सीधे रास्ते पर लाने की लालसा भी करें, तो अल्लाह जिसको
भट्का देता है, उसको हिदायत नहीं दिया करता, और ऐसे लोगों का कोई
मदद्गार भी नहीं होता;
38 और यह लोग बड़ा ज़ोर लगा- लगा कर अल्लाह की क़समें खाते हैं, "कि जो
मर जाता है (फिर) उसे अल्लाह नहीं उठाएगा।" क्यों नहीं? यह तो एक वादा
है, जिसे पूरा करना अल्लाह ने अपने ऊपर अनिवार्य कर रखा है, लेकिन
अक्सर लोग नहीं जानते।
39 ताकि उसको उनपर स्पष्ट कर दे जिसके बारे में ये मतभेद कर रहे हैं, और
इसलिए भी ताकि काफ़िरों को मालूम हो जाए कि वे झूठे हैं।
40 हम जब किसी चीज़ का इरादा कर लेते हैं, तो बस उससे हमारा इतना ही
कहना होता है, "हो जा!" बस वह हो जाती है।
41 और जिन लोगों ने इसके बाद कि उन पर ज़ुल्म हो चुका था, अल्लाह के
लिए हिज्रत (घरबार छोड़ना) की उन्हें 'हम' दुनिया में भी अच्छा ठिकाना

देंगे, और आख़िरत का बदला तो बहुत बड़ा है; क्या ही अच्छा होता कि वे जानते?
42 वे लोग जो सब्र करते हैं और अपने 'रब' पर भरोसा रखते हैं।
43 और 'हमने' आप से पहले भी मर्दों (पुरूषों) ही को रसूल बना कर भेजा था जिन पर 'हम' वह्य (अल्लाह का पैग़ाम) भेजते रहे हैं, तो अगर तुम लोगों को नहीं मालूम तो इल्म वालों से पूछ लो।
44 और 'हमने' आप पर भी यह नसीहतनामा उतारा है, ताकि आप लोगों पर ज़ाहिर कर दें, जो कुछ उनके पास भेजा गया है; और ताकि वह सोच-विचार से काम लें।
45 क्या वे लोग जो ऐसी बुरी- बुरी चालें चल रहे हैं, इस बात से निश्चिन्त हो गये हैं कि अल्लाह उन्हें धरती में धँसा दे या ऐसी हालत में उन पर अज़ाब आ जाए जिसका उन्हें एहसास तक न हो;
46 या ऐसे समय उन्हें पकड़ ले कि वे चल-फिर रहे हों, वे (उसकी पकड़ से) हरगिज़ नहीं बच सकते;
47 या ऐसे समय उन्हें पकड़ ले, कि वे डर की हालत में हों, बेशक आप का 'रब' बड़ा ही नर्म दिल, मेहरबान है।
48 क्या यह लोग देखते नहीं, कि अल्लाह ने जो चीज़ें भी पैदा की हैं? उनकी परछाइयाँ दाएँ से और बाएँ से लौटती रहती हैं, अल्लाह के आगे आजिज़ (नम्र) होकर सज्दः करती हैं।
49 और आसमानों और ज़मीन में जितने भी जानदार हैं वे सब अल्लाह ही को सज्दः करते हैं, और फ़रिश्ते भी, और ये घमंड बिल्कुल नहीं करते;
50 अपने रब से जो उनके ऊपर है डरते हैं, और वह वही करते हैं, जिसका उन्हें हुक्म मिलता रहता है।
51 और अल्लाह ने हुक्म दिया है कि "दो मअ़बूद (उपास्य) न बनाओ, अल्लाह तो बस एक ही है, अतः 'मुझ' ही से डरो।"
52 और 'उसी' का है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है, वह दिन स्थायी और अनिवार्य है, तो क्या अल्लाह के सिवा तुम किसी और से डरते हो?
53 और तुम्हारे पास जो भी नेअ़मत है, वह अल्लाह ही की ओर से हैं, फिर जब तुम्हें कोई तक्लीफ़ पहुँचती है, तो तुम 'उसी' के आगे गिड़गिड़ाने लगते हो;
54 फिर जब 'वह' तुमसे तकलीफ़ को हटा देता है, तो तुममें का एक गिरोह अपने 'रब' के साथ शिर्क करने लगता है;
55 ताकि 'हमारी' दी हुई (नअ़मतों) की नाशुक्री करें, तो (दुनिया में) मज़े उड़ा लो बहुत जल्द तुम्हें मालूम हो जाएगा!
56 और 'हमने' जो इन्हें रोज़ी दी है उसमें से यह लोग एक हिस्सा ऐसे लोगों के लिए ठहराते हैं जिन्हें जानते भी नहीं, अल्लाह की क़सम, तुमसे इन मनगढ़त बातों की ज़रूर पूछ-ताछ होगी;
57 और यह लोग अल्लाह के लिए बेटियाँ ठहराते हैं; 'वह' उनसे पाक है और अपने लिए जो चाहे सो ठहराते हैं।

58 और जब उनमें से किसी को बेटी की ख़बर सुनाई जाती है तो उनका चेहरा
स्याह (काला) पड़ जाता है, और जी में घुट कर रह जाता है।
59 इस बुरी ख़बर की वजह से लोगों से छिपा-छिपा फिरता है, कि अपमान के
साथ रख ले या मिट्टी में उसे दबा दे, देखो! कैसा बुरा फ़ैसला है जो ये
करते हैं।
60 जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते उनकी बुरी मिसाल है, और अल्लाह
की मिसाल सबसे ऊपर है, और 'वही' बड़ा ज़बर्दस्त, हिक्मत वाला है।
61 और अगर अल्लाह लोगों को उनके ज़ुल्म की वजह से पकड़ता तो ज़मीन पर
कोई चलने वाला न होता, लेकिन 'वह' उनको एक निश्चित समय तक ढ़ील
दे रहा है; फिर जब उनका वह निश्चित समय आ पहुँचेगा तो वे न एक घड़ी
पीछे रह सकेंगे न एक घड़ी आगे बढ़ सकेंगे।
62 और अल्लाह के लिए ऐसी चीज़ ठहरा देते हैं, जिन्हें ख़ुद नापसन्द करते हैं,
और उनकी ज़बानें झूठ कहती जाती हैं और उनके लिए भलाई है, बेशक
उनके लिए आग है, और यह लोग सबसे पहले भेजे जाएंगे।
63 अल्लाह की क़सम! 'हमने' आप से पहली उम्मतों की ओर रसूल भेजे, तो
शैतान ने उनके (बुरे) अ़मल उनको सजा कर दिखाए; तो वह आज भी उनका
दोस्त है, और उन्हीं के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है।
64 और 'हमने' आप पर किताब बस इसलिए नाज़िल की है, कि जिस मामले
में यह लोग विवाद कर रहे हैं आप उनको फ़ैसला कर दें, और यह हिदायत
और रह़मत है उन लोगों के लिए जो ईमान लाएँ।
65 और अल्लाह ही ने आसमान से पानी बरसाया, फिर उसके ज़रिये ज़मीन
जो मुर्दा हो चुकी थी उसे ज़िन्दा कर दिया, बेशक इसमें सुनने वालों के लिए
निशानी है।
66 और तुम्हारे लिए चौपायों में भी सबक़ है, 'हम' उनके पेट से गोबर और खून
के बीच से ख़ालिस दूध तुम्हें पिलाते हैं, जो पीने वालों के लिए स्वादिष्ट होता
है।
67 और खजूर और अंगूर के फलों से तुम नशे की चीज़ भी बना लेते हो, और
अच्छी रोज़ी भी, इसमें निशानी है उन लोगों के लिए जो अ़क़्ल से काम लेते
हैं।
68 और आप के रब ने मधुमक्खी के जी में यह बात डाल दी, कि पहाड़ों में
और वृक्षों में और छतों में जिनको लोग बनाते हैं घर (छत्ता) बना लें।
69 फिर हर तरह के फल-फूलों को चूसे और अपने 'रब' के तरीक़े पर चले जो
आसान है, उनके पेट से पीने की एक चीज़ निकलती है जिसकी रंगतें कई
तरह की होती हैं; उससे लोगों के रोग अच्छे होते हैं बेशक सोच-विचार से
काम लेने वालों के लिए उसमें भी निशानी है।
70 और अल्लाह ही ने तुमको पैदा किया फिर 'वही' तुमको मौत देता है, और तुम
में कुछ ऐसे होते हैं कि निहायत ख़राब उम्र को पहुँच जाते हैं और जानने के

बाद हर चीज़ से बे इल्म हो जाते हैं, बेशक अल्लाह बड़ा इल्म वाला, कुदरत
(सामर्थ्य) वाला है।
71 और अल्लाह ने तुम में से कुछ को कुछ पर रोज़ी में बढ़ौतरी दी है; तो जिन
को ज़्यादा रोज़ी दी गई है, वे ऐसे नहीं हैं कि लोगों को अपनी रोज़ी दे डालें
जो उनके क़ब्ज़े में हैं कि वे सब इसमें बराबर हो जाएं, तो क्या यह लोग
अल्लाह की नेअ़मत का इन्कार करते हैं?
72 और अल्लाह ने तुम्हीं में से तुम्हारे लिए औ़रतें पैदा कीं और औ़रतों से
तुम्हारे बेटे और पोते पैदा किये, और खाने की तुम्हें पाक चीज़ें दीं, तो क्या
यह बातिल (असत्य) पर विश्वास रखते हैं, और अल्लाह की नेअ़मतों का
इन्कार करते हैं।
73 और अल्लाह के सिवा ऐसों को पूजते हैं; जिन्हें आसमानों और ज़मीन से रोज़ी
देने का कुछ भी अधिकार नहीं, और न वे कुद्रत ही रखते हैं।
74 तो अल्लाह के लिए मिसालें न गढ़ो, अल्लाह ही जानता है, और तुम नहीं
जानते।
75 अल्लाह एक और मिसाल देता है कि एक गुलाम है जिसपर दूसरे का अधि
ाकार है, उसे किसी चीज़ पर अधिकार नहीं; इस के विपरीत एक वह व्यक्ति
है, जिसे 'हमने' अपनी ओर से अच्छी रोज़ी दी, फिर उसमें से वह छिप कर
और खुले रूप में खर्च करता रहता है, तो क्या यह दोनों व्यक्ति एक जैसे
हैं? सारी तअ़रीफें अल्लाह ही के लिए हैं मगर इनमें से अक्सर लोग नहीं
जानते।
76 और अल्लाह मिसाल देता है कि दो आदमी हैं जिनमें से एक गूँगा है, (जो)
किसी चीज़ की कुद्रत नहीं रखता, और अपने मालिक पर वह एक बोझ है,
उसे वह जहाँ कहीं भेजता है कुछ भला कर के नहीं आता; क्या वह और वह
व्यक्ति जो लोगों को इन्साफ़ का हुक्म देता है? और खुद भी सीधी राह पर
है वह, (दोनों) बराबर हो सकते हैं?
77 और आसमानों और ज़मीन की छिपी बातों का इल्म अल्लाह ही को है और
क़ियामत का मामला उसी तरह पेश आएगा जिस तरह कि आँख का झपकना,
या वह इससे भी ज़्यादा क़रीब है बेशक अल्लाह को हर चीज़ पर कुदरत
(सामर्थ्य) है।
78 और अल्लाह ही ने तुम्हें तुम्हारी माओं के पेट से इस हाल में निकाला कि
तुम कुछ भी नहीं जानते थे; और 'उसने' तुम को कान आँखें और दिल दिये,
ताकि तुम शुक्रगुज़ार बनो।
79 क्या ये लोग परिन्दों को नहीं देखते कि आसमान (और) हवा में घिरे हुए
(उड़ते) हैं, उनको अल्लाह ही थामे रखता है, इसमें निशानियाँ हैं उन लोगों
के लिए जो ईमान लाएँ।
80 और अल्लाह ही ने तुम्हारे लिए घरों को रहने की जगह बनाया और उसी
में चौपाए की खालों से भी घर बनाया, जिन्हें तुम अपनी यात्रा के दिन, और
अपने ठहरने के दिन, हल्का-फुल्का पाते हो; और उनके ऊन के, लोम चर्म

और उनके बालों से कितने ही सामान बनाए और प्रयोग की जो एक मुद्दत तक चलती है।
81 और अल्लाह ही ने तुम्हारे लिए अपनी पैदा की हुई चीज़ों से साया बनाया, और पहाड़ों में तुम्हारे लिए पनाहगाहें बनाई और तुम्हें लिबास दिये- जो तुम्हें गर्मी से बचाते हैं, और कुछ अन्य वस्त्र दिये जो तुम्हारी लड़ाई में तुम्हारे बचाओ का काम करते हैं- इसी तरह 'वह' तुम पर अपनी नेअ़मतें पूरी करता है, ताकि तुम फरमाँबरदार (आज्ञाकारी) बनो।
82 फिर अगर ये लोग मुँह मोड़ें तो आप पर केवल साफ़ पैग़ाम पहुँचा देना है।
83 यह अल्लाह की नेअ़मतों को पहचानते हैं फिर भी उन का इन्कार करते हैं और इनमें अक्सर तो काफ़िर हैं।
84 और जिस दिन 'हम' उठाएंगे हर उम्मत में से एक गवाह, फिर काफ़िरों को न इजाज़त दी जाएगी और न उनको तौबः के लिए मौक़ा ही दिया जाएगा;
85 और ज़ालिम लोग जब अ़ज़ाब को देख लेंगे, तो फिर न उनका अ़ज़ाब हल्का किया जाएगा और न उनको मोहलत ही दी जाएगी।
86 और जब वे लोग, जिन्होंने शिर्क किया, अपने ठहराए हुए साझीदारों को देखेंगे तो कहेंगे, ''हमारे 'रब' यही हमारे वे साझीदार हैं जिनको हम 'तुझे' छोड़ कर पुकारा करते थे; इस पर वे उनकी बात उन्हीं पर लौटा देंगे कि ''तुम तो झूठे हो''
87 और उस दिन वे अल्लाह के सामने (अपने को) झुका (आत्मसमर्पण कर) देंगे और जो कुछ वे गढ़ा करते थे सब ग़ायब हो जाएंगे।
88 जिन लोगों ने इन्कार किया और अल्लाह की राह से रोकते रहे; 'हम' उनको अ़ज़ाब पर अज़ाब बढ़ाते रहेंगे उस फ़साद के बदले जो वे करते रहे।
89 और जिस दिन 'हम' हर उम्मत में एक गवाह उन्हीं में से उनके मुक़ाबले में उठा खड़ा करेंगे, और आप को उन लोगों पर गवाही देने के लिए लाएंगे, और 'हम' ने आप पर किताब उतारी है जो हर चीज़ को साफ़-साफ़ बयान करने वाली है, और हिदायत व रह़मत और खुशख़बरी है, मुस्लिमों (आज्ञाकारियों) के लिए।
90 अल्लाह हुक्म देता है न्याय का, और भलाई का और नातेदारों को (उनके हक़) देने का और बेह़याई, बुराई और सरकशी से रोकता है, 'वह' तुम्हें नसीह़त करता है ताकि तुम ध्यान दो।
91 और अल्लाह से किये अ़हद (प्रतिज्ञा) को पूरा करो, और जब तुम आपस में अ़हद करो तो क़समों को पक्का करने के बाद मत तोड़ो, और जबकि तुम अल्लाह को गवाह बना चुके हो, बेशक अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो।
92 और तुम उस (औ़रत) की तरह न हो जाना जिसने अपना सूत मेह़नत से कातने के बाद टुकड़े-टुकड़े कर के रख दिया, कि तुम भी अपनी क़समों को आपसी फ़साद का ज़रिया बनाने लगो; इस तरह कहीं ऐसा न हो कि एक गिरोह दूसरे से बढ़ जाए। अल्लाह इसके ज़रिये तुम्हें आज़माता है, और

जिन बातों में तुम विभेद करते हो, 'वह' क़ियामत के दिन तुम्हारे मतभेदों की
हक़ीक़त तुम पर ज़रूर खोल देगा।
93 और अगर अल्लाह चाहता तो तुम सब को एक ही उम्मत (समुदाय) बना
देता, लेकिन 'वह' जिसे चाहता है गुमराह करता है, और जिसे चाहता है राह
दिखाता है, और जो कुछ तुम कर रहे हो उसके बारे में तुम से सवाल हो
कर रहेगा।
94 और अपनी क़समों को आपसी फ़साद का ज़रिया न बनाओ, कहीं कोई क़दम
उस के जमने के बाद फिसल न जाए और अल्लाह की राह से तुम्हारे रोकने
के बदले तुम्हें तकलीफ़ का मज़ा चखना पड़े, और तुम्हें सख़्त अ़ज़ाब मिले।
95 और अल्लाह से जो तुमने अ़हद किया है, उसके बदले थोड़ी से भी क़ीमत न
लो, अल्लाह के पास जो कुछ निश्चित है वह तुम्हारे लिए कहीं ज़्यादा बेहतर
है अगर तुम जानो।
96 जो कुछ तुम्हारे पास है ख़त्म हो जाएगा, और जो अल्लाह के पास है बाक़ी
रहने वाला है; और जिन लोगों ने सब्र किया 'हम' उनको ज़रूर बदला देंगे,
जो कुछ वे अच्छा काम करते रहे।
97 भले काम जो व्यक्ति भी करेगा मर्द हो या औ़रत- और (शर्त यह है कि)
वह ईमान वाला हो- तो हम उसे ज़रूर एक पाक ज़िन्दगी देंगे, और हम उन्हें
उनके अच्छे कामों का ज़रूर बदला देंगे, जो वे करते रहे।
98 तो जब आप क़ुर्आन पढ़ने लगें, तो शैतान मरदूद से अल्लाह की पनाह माँग
लिया करें;
99 उसका कुछ भी ज़ोर उन लोगों पर नहीं चलता जो ईमान ले आएँ, और अपने
'रब' पर भरोसा रखें।
100 उसका ज़ोर तो बस उन्हीं लोगों पर चलता है, जो उसे दोस्त बनाए रखते
हैं, और जो अल्लाह के साथ साझीदार ठहराते रहते हैं।
101 और जब 'हम' किसी आयत की जगह दूसरी आयत बदल कर लाते हैं; और
अल्लाह ही बेहतर जानता है जो कुछ 'वह' उतारता है; तो कहते हैं, "तुम
खुद ही गढ़ लेते हो" (नहीं) बल्कि उनमें से अक्सर जानते नहीं।
102 कह दीजिए, "इसको रूहुल क़ुदुस (पवित्र आत्मा) ने आप के 'रब' के पास से
हक़ के साथ उतारा है, ताकि ईमान वालों के क़दम जमा दे और मुसलमानों
(आज्ञाकारी) के लिए हिदायत और खुशख़बरी है।
103 और 'हम' खूब जानते हैं कि यह लोग कहते हैं, "इन्हें तो एक व्यक्ति सिखा
जाता है, हालांकि जिसकी ओर वे संकेत करते हैं 'अ़जमी' हैं (उस की भाषा
विदेशी है) और यह स्पष्ट अ़रबी भाषा में है।"
104 जो लोग अल्लाह की आयतों को नहीं मानते अल्लाह उनको राह नहीं दिखाता,
और उनके लिए दुःख देने वाला अ़ज़ाब है।
105 झूठ तो बस वही लोग गढ़ते हैं जो अल्लाह की आयतों को मानते नहीं, और
वही हैं जो झूठे हैं,
106 जिस व्यक्ति ने अल्लाह पर ईमान लाने के बाद 'उससे' कुफ्र किया- सिवाय

उसके, जो इसके लिए मजबूर कर दिया गया हो- और उसका दिल ईमान पर संतुष्ट हो, बल्कि वह जिसने कुफ़्र के लिए सीना खोल दिया हो तो ऐसे लोगों पर अल्लाह का ग़ज़ब है और उनके लिए बहुत बड़ा अ़ज़ाब है;

107 यह इसलिए कि उन्होंने आख़िरत के मुक़ाबले में दुनिया की ज़िन्दगी को पसंद कर लिया, और अल्लाह कुफ़्र करने वालों को हिदायत नहीं दिया करता।

108 यही लोग हैं जिनके दिलों पर, और कानों पर, और उनकी आँखों पर, अल्लाह ने मुहर लगा दी है और यही लोग ग़फ़लत में पड़े हुए हैं,

109 बेशक आख़िरत में वे ही घाटे में रहेंगे।

110 फिर आप का रब उन लोगों के लिए जिन्होंने इसके बाद कि वे आज़माइश में पड़ चुके थे घर बार छोड़ा, फिर जिहाद किया और सब्र से काम लिया तो इसके बाद बेशक आप का रब उन को माफ़ करने वाला, बड़ा रह़म वाला है।

111 और उस दिन जबकि हर जानदार अपनी जान बचाने के लिए बहस करने में लगा होगा, और हर व्यक्ति को उस के करतूतों का पूरा-पूरा बदला दिया जाएगा और किसी पर ज़ुल्म न होगा।

112 और अल्लाह ने एक बस्ती की मिसाल बयान की है; एक बस्ती थी जो निश्चिन्त संतुष्ट थी, हर ओर से रोज़ी उनके पास बहुतायत के साथ पहुँच रही थी, फिर उन लोगों ने अल्लाह की नेअ़मतों की नाशुक्री की, तो अल्लाह ने उनके करतूतों की वजह से उनको भूख और भय के छा जाने का मज़ा चखाया।

113 और उनके पास एक रसूल उन्हीं में से आया, तो उन्होंने उसको झुठला दिया, तो उन्हें अ़ज़ाब ने आ पकड़ा, और वे ज़ालिम थे।

114 तो जो चीज़ें तुम्हें अल्लाह ने, ह़लाल पाक रोज़ी दी हैं, उनमें से खाओ और अल्लाह की नेअ़मतों का शुक्र अदा करो, अगर तुम केवल 'उसी' की इबादत करते हो।

115 'उसने' तो तुम पर केवल मुर्दार (मरे हुए) और ख़ून, और सुअ़र का गोश्त, और जिस पर अल्लाह के सिवा किसी और का नाम लिया गया, ह़राम ठहराया- फिर अगर कोई मजबूर हो जाए, और न तो वह इसकी इक्षा रखता हो, और न हद से आगे बढ़ने वाला हो- तो अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, रह़म वाला है।

116 और अपनी ज़बानों के बयान किये हुए झूठ के आधार पर यह न कहा करो, कि "यह ह़लाल है और यह ह़राम" इस तरह अल्लाह पर झूठा आरोप लगाने लगो, जो लोग अल्लाह पर झूठा आरोप लगाते हैं, वह कामियाब नहीं होते।

117 यह थोड़ा सा ऐ़श है, फिर दुखदायी अ़ज़ाब होगा।

118 और यहूदियों पर हमने वे चीज़ें ह़राम कर दी थीं, जिनका बयान 'हमने' तुमसे किया, और 'हमने' उन पर कोई ज़ुल्म नहीं किया था बल्कि वे ख़ुद अपने ऊपर ज़ुल्म करते थे।

119 फिर तुम्हारा 'रब' उनके लिए जिन्हों ने जिहालत की वजह से बुरे कर्म किये

फिर तौबः कर के सुधार कर लिया, तो आप का 'रब' इसके बाद बड़ा माफ़ करने वाला, रह़म वाला है।
120 बेशक इब्राहीम (एक मिसाली व्यक्ति थे) अल्लाह के फ़रमाँबरदार, और 'उसी' के होकर रहने वाले, और मुश्रिकों में से न थे।
121 'उसकी' रह़मत के शुक्रगुज़ार थे अल्लाह ने उनको चुन लिया, और सीधी राह की ओर उनकी रह़नुमाई की।
122 और 'हमने' उन्हें दुनिया में भी भलाई दी और आख़िरत में भी वह भले लोगों में से होंगे।
123 फिर 'हमने' आप की ओर वह़्य भेजी कि "इब्राहीम के तरीक़े पर चलें जो बिल्कुल एक ओर के हो गये थे और मुश्रिकों में से न थे।"
124 'सब्त' (सामूहिक इबादत का दिन) की पाबन्दी उन्हीं लोगों पर लागू की गयी थी जिन्होंने उसके बारे में विभेद किया था, और आप का 'रब' क़ियामत के दिन इनके बीच उन बातों का फ़ैसला कर देगा, जिन में यह विभेद करते रहे।
125 लोगों को अपने 'रब' की राह की ओर बुलाइए, ह़िक्मत से और अच्छी नसीह़त से, और उनके साथ नसीह़त कीजिए तो अच्छे तरीक़े से, और आप का 'रब' उसे भली भाँति जानता है जो 'उसकी' राह से भटक गया, और 'वह' उन्हें भी भली भाँति जानता है जो राह पर हैं।
126 और अगर तुम बदला लो तो उतना ही जितना तुम्हारे साथ किया गया है, और अगर सब्र करो तो यह सब्र करने वालों के लिए ज़्यादा बेहतर है।
127 और आप सब्र करते रहिए और आप का सब्र करना अल्लाह ही की तौफ़ीक़ पर है, और आप उन लोगों के ह़ाल पर ग़म न कीजिए, न उनकी चालों से तंगदिल होइए।
128 बेशक, अल्लाह उनके साथ है जो परहेज़गार और नेक हैं,

## सूर-ए-बनी इस्राईल

यह सूरः मक्की है, इसमें अ़रबी के 6710 अक्षर, 1582 शब्द,111 आयतें और 12 रूकूअ़ हैं।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

1 पाक है, 'वह' जो अपने बन्दे (मुह़म्मद) को रातों-रात मस्जिदे ह़राम (कअ़बः) से मस्जिदे-अक़्सा तक ले गया- जिसके चारों ओर 'हमने" बरकतें रखी हैं- ताकि उनको 'हम" अपनी कुछ निशानियाँ दिखाएं, बेशक 'वही' सुनने वाला, देखने वाला है।
2 और 'हमने" मूसा को किताब दी थी, और 'हमने" उसको बनी इस्राईल के

लिए हिदायत का ज़रिया बनाया था, ''कि मेरे सिवा किसी और को काम बनाने वाला न ठहरा लेना।''

3 ऐ उन लोगों की औलाद! जिन्हें 'हमने' नूह़ के साथ (नाव में) सवार कर लिया था, बेशक वह 'हमारे' शुक्रगुज़ार बन्दे थे।

4 और 'हमने'' बनी इस्राईल को किताब में बता दिया था, ''तुम ज़मीन पर दो बार फ़साद मचाओगे और बड़ी सरकशी करोगे।''

5 जब उन दोनों में से पहले वादे का मौक़ा आ गया, तो 'हमने' तुम्हारे मुक़ाबले में अपने ऐसे बन्दों को उठाया जो बड़े जंगजू थे, तो वे बस्तियों में घुस कर हर ओर फैल गये और यह वादा पूरा होना ही था।

6 फिर 'हमने'' तुम्हारी बारी उन पर लौटाई कि उन पर ग़ालिब (प्रभावी) हो सको, और माल और औलाद से तुम्हारी मदद की और तुम्हें बहुसंख्यक लोगों का एक जत्था बनाया।

7 ''अगर तुमने भलाई की तो अपने ही लिए की और अगर तुमने बुराई की तो अपने ही लिए की, फिर जब दूसरे (वादे) का वक्त आएगा, तो वह तुम्हारे चेहरे बिगाड़ देंगे और मस्जिद (बैतुल् मक्दिस) में दाख़िल हो जाएंगे जैसे पहली बार वह उसमें दाख़िल हो गये थे, और ताकि जिस चीज़ पर उनका ज़ोर हो उसे तबाह कर डालें,

8 उम्मीद है कि तुम्हारा रब' तुम पर मेहरबानी करे और अगर तुम फिर उसी पुरानी नीति की ओर पलटे तो 'हम'' भी पलटेंगे, और दोज़ख को 'हमने'' काफ़िरों के लिए जेलख़ाना बना रखा है।''

9 यह क़ुर्आन वह रास्ता दिखाता है, जो सब से सीधा है, और ईमान वालों को जो भले काम करते हैं ख़ुशख़बरी देता है, कि उनके लिए बड़ा बदला है।

10 और यह भी कि जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, उनके लिए दुःख देने वाला अज़ाब तैयार कर रखा है।

11 और इन्सान उसी तरह बुराई माँगता है, जिस तरह भलाई की दुआ माँगता है, और इन्सान है ही बड़ा जल्द बाज़।

12 और 'हमने' रात और दिन को दो निशानियाँ बनाया है, रात की निशानी को 'हमने' मद्धिम बनाया, और दिन की निशानी को 'हमने' रौशन कर दिया-ताकि तुम अपने रब' का फ़ज़्ल (रोज़ी) ढूँढों और ताकि तुम वर्षों की गिनती और हिसाब मालूम कर सको, और हर चीज़ को 'हमने' अलग-अलग स्पष्ट करके बयान कर दिया है।

13 और 'हमने' हर इन्सान का शकुन- -अपशकुन उसकी अपनी गर्दन से बाँध दिया है, और क़ियामत के दिन 'हम' उसका 'नाम-ए-आमाल' (लेख) निकाल कर सामने कर देंगे, जिसे वह खुला हुआ देख लेगा।

14 (कहा जाएगा) ''पढ़ अपनी किताब (कर्म पत्र) आज तू ख़ुद ही अपना हिसाब लेने के लिए काफ़ी है।''

15 और जो व्यक्ति हिदायत (सीधी राह) अपनाता है तो अपने ही लिए अपनाता है, और जो गुमराह होता है तो उसका वबाल भी उसी पर होता है और

कोई व्यक्ति किसी दूसरे का बोझ न उठाएगा। और ‘हम’ अ़ज़ाब नहीं दिया
करते जब तक कि उसमें कोई रसूल न भेज दें।
16 और जब ‘हम’ इरादा कर लेते हैं किसी बस्ती के हलाक करने का, तो उसके
खुशह़ाल लोगों को हुक्म देते हैं, फिर वे नाफ़रमानी करने लग जाते हैं, तब
उन पर बात पूरी हो जाती है, तो ‘हम’ उन्हें बिल्कुल बरबाद कर देते हैं।
17 और ‘हम’ नूह के बाद कितनी ही क़ौमों को हलाक कर चुके हैं, और आप
का ‘रब’ ही अपने बन्दों के गुनाहों को जानने, देखने के लिए काफ़ी है।
18 जो व्यक्ति जल्द मिलने वाली (दुनिया) का इच्छुक हो तो ‘हम’ उसमें से जिसे
चाहते हैं और जितना चाहते हैं जल्द दे देते हैं, फिर ‘हमने’ उसके लिए
दोज़ख़ को निश्चित कर रखा है जिसमें वह (दाख़िल होगा इस ह़ाल में कि
तिरस्कृत) ठुकराया हुआ होगा;
19 और जो व्यक्ति आख़िरत का इच्छुक होगा, और उसके लिए कोशिश करेगा
जैसी कोशिश करना चाहिए, और वह ईमान वाला भी हो, तो ऐसे ही लोग हैं
जिनकी कोशिश कुबूल की जाएगी।
20 ‘हम’ इनको भी और उनको भी, हर एक को तुम्हारे ‘रब’ की देन में से मदद
करते जा रहे हैं, और तुम्हारे ‘रब’ की देन बन्द नहीं है।
21 देखो, कैसे ‘हमने’ कुछ लोगों को कुछ लोगों पर फ़ज़ीलत (बढ़ौतरी) दे रखी
है, और आख़िरत में तो बड़े दर्जे हैं और बड़ी फ़ज़ीलत है।
22 अल्लाह के साथ कोई दूसरा मअ़बूद (उपास्य) न बनाओ, वरना तुम ज़लील
और लाचार हो कर रह जाओगे।
23 और तुम्हारे ‘रब’ ने फ़ैसला कर दिया है, कि उसके सिवा किसी की इबादत
न करो, और माँ-बाप के साथ अच्छा व्यवहार करो, अगर उनमें से कोई एक
या दोनों ही तुम्हारे सामने बुढ़ापे को पहुँच जाएँ, तो उन्हें ‘उफ़’ तक न कहो
और न उन्हें झिड़को, बल्कि उनसे अदब (आदर) के साथ बात करो;
24 और प्यार से विनम्रता के साथ उनके सामने भुजाएँ झुकाए रखो और उनके
लिए दुआ़ करते रहो, ‘ऐ मेरे रब’! जिस तरह उन्होंने मुझे बचपन में पाला
है, उसी तरह ‘तू’ भी उन पर रह़म कर।”
25 तुम्हारा रब’ खूब अच्छी तरह जानता है कि ‘तुम्हारे’ दिलों में क्या है?” अगर
तुम भले बन जाओ, तो वह तौबः करने वालों को माफ़ कर देने वाला है।
26 और रिश्तेदारों, मुह़ताजों और मुसाफ़िरों को उनका ह़क़ अदा करते रहो और
फ़ुज़ूल खर्ची न करो।
27 कि फ़ुज़ूलख़र्ची करने वाले शैतान के भाई हैं; और शैतान अपने ‘रब’ का बड़ा
नाशुक्रा है।
28 और अगर तुम अपने ‘रब’ की रह़मत के इन्तिज़ार में, जिसकी तुम्हें उम्मीद
हो, उन (ह़क़दारों) की ओर न ध्यान दे सको, तो उनसे नर्मी से बात कह
दिया करो।
29 और अपने हाथ को न तो अपनी गर्दन से बंधा हुआ (तंग) रखो, और न
बिल्कुल खोल ही दो कि (सब दे कर) फिट्कारे हुए लाचार होकर बैठ जाओ।

30 बेशक तुम्हारा 'रब' जिसकी रोज़ी चाहता है फैला देता है,और (जिसकी चाहता
है) तंग कर देता है, 'वह' अपने बन्दों की ख़बर रखने वाला, खूब देखने वाला
है।
31 और अपनी औलाद को मुफ्लिसी (निर्धनता) के डर से क़त्ल न करो, 'हम'
उन्हें भी रोज़ी देंगे और तुम्हें भी; बेशक इन का क़त्ल बहुत बड़े गुनाह की
बात है।
32 और ज़िना (व्यभिचार) के क़रीब भी न जाना कि वह बेहयाई और बुरी राह
है।
33 और किसी जीव को क़त्ल न करो, जिसे (मारना) अल्लाह ने हराम ठहराया
है, मगर हक़ के आधार पर; और जिस व्यक्ति को मज़लूमी की हालत में
क़त्ल किया गया हो, तो 'हमने' उसके वारिस को अधिकार दे दिया है, (बदले
का) तो उसको चाहिए कि क़त्ल में ज़्यादती न करे, कि वह मदद किया हुआ
(कामियाब) है।
34 और यतीम के माल के क़रीब भी न जाओ, मगर उससे जो बेहतर हो, यहाँ
तक कि वह जवानी को पहुँच जाए, और अ़हद (प्रतिज्ञा) को पूरा करो कि
अ़हद (प्रतिज्ञा) के बारे में ज़रूर पूछा जाएगा।
35 और जब नाप कर देने लगो, तो नाप पूरी रखा करो, और ठीक तराजू से
तौला करो, यह बुहत अच्छी बात है और परिणाम के एतिबार से भी बहुत
बेहतर है।
36 और जिस बात का तुम्हें इल्म न हो, उसके पीछे न लगो-बेशक कान और
आँख, और दिल इनमें से हर एक के विषय में ज़रूर पूछा जाएगा।
37 और धरती पर अकड़ कर न चलो, न तो तुम धरती को फाड़ सकते हो, और
न लम्बे होकर पहाड़ों को पहुँच सकते हो।
38 इन तमाम चीज़ों की बुराई तुम्हारे 'रब' के नज़दीक बहुत नापसंद है।
39 यह हिक्मत की उन बातों में से है, जो तुम्हारे 'रब' ने तुम पर 'वह्य'
(आदेश) की है, और अल्लाह के साथ कोई और मअ़बूद (उपास्य) न ठहराना,
वरना दोज़ख में डाल दिये जाओगे मलामत किये हुए और धुत्कारे हुए।
40 क्या तुम्हारे 'रब' ने तुम्हारे लिए तो बेटे खास कर दिये और अपने लिए
फ़रिश्तों को बेटियाँ बना लिया? बड़ी सख्त बात है जो तुम कहते हो।
41 और 'हमने' इस क़ुर्आन में तरह--तरह की बातें स्पष्ट कर दीं, ताकि लोग
नसीहत हासिल करें, मगर इससे उनकी दूरी और बढ़ती ही जा रही है।
42 कह दीजिए, ''अगर अल्लाह के साथ कोई और मअ़बूद होता- जैसा कि यह
कहते हैं- तो वे अर्श (सिंहासन) तक पहुँचने की कोई राह ज़रूर निकाल
लेते।''
43 'वह' पाक (पवित्र) है! और जो कुछ ये बकवास करते हैं उससे बहुत ऊँचा
है;
44 सातों आसमान और ज़मीन और जो कुछ उनमें हैं, सब 'उसी' की तस्बीह

बयान करते हैं; और कोई चीज़ ऐसी नहीं, जो 'उसकी' प्रशंसा के साथ 'उसकी' तस्बीह़ न करती हो, लेकिन तुम उनकी तस्बीह़ को समझते नहीं, बेशक 'वह' बड़ा सहनशील, माफ़ करने वाला है।

45 और जब आप कुर्आन पढ़ते हैं, तो 'हम' आप के और उन लोगों के बीच, जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, एक पर्दा की आड़ कर देते हैं;

46 और उनके दिलों पर पर्दा डाल देते हैं कि उसे समझ न सकें; और उनके कानों में बोझ पैदा कर देते हैं, और जब आप कुर्आन में अपने 'एक रब' का ज़िक्र करते हैं, तो वे पीठ फेर कर भाग खड़े होते हैं।

47 'हम' जानते हैं, जब यह आप की ओर कान लगाते हैं, कि यह किस नियत से सुनते हैं; और जब यह काना फूसी करते हैं, (अर्थात) जब ज़ालिम कहते हैं, "तुम तो एक ऐसे व्यक्ति के पीछे चल रहे हो जिस पर जादू किया गया है"।

48 देखो! यह कैसी मिसालें तुम्हारे बारे में देते हैं, ये तो भटक गये हैं, अब कोई राह नहीं पा सकते।

49 और कहते हैं, "जब हमारी हड्डियाँ चूर-चूर हो जाएंगी, तो क्या नए सिरे से पैदा कर के उठाए जाएँगे?"

50 कह दीजिए, "तुम पत्थर या लोहा हो जाओ;"

51 या कोई और चीज़, जो तुम्हारे नज़ूदीक इससे भी ज़्यादा (कठोर) हो," वे कहेंगे, "कौन हमें दोबारा ज़िन्दा करेगा?" कह दीजिए, 'वही' जिसने पहली बार हमें पैदा किया," फिर वे तुम्हारे आगे सर हिला कर पूछेंगे, "अच्छा तो वह कब होगा; कह दीजिए, " उम्मीद है कि जल्द ही होगा।"

52 जिस दिन 'वह' तुम्हें पुकारेगा, तो तुम उसकी तअ़रीफ़ के साथ जवाब दोगे, और यह ख़याल करोगे कि बस थोड़ी ही देर (दुनिया में) रहे।

53 और मेरे बन्दों से कह दीजिए, (लोगों से) "ऐसी बातें कहा करें जो बहुत पसंदीदा हों, क्योंकि शैतान लोगों के बीच फ़साद डलवा देता है, बेशक शैतान इन्सान का खुला दुश्मन है"

54 तुम्हारा 'रब' तुम को खूब जानता है, 'वह' अगर चाहे तो तुम पर रह़म करे, और 'वही' अगर चाहे तो तुमको अ़ज़ाब देने लगे,- और 'हमने' तुमको उनका ज़िम्मेदार बना कर नहीं भेजा।

55 और तुम्हारा 'रब' उनको खूब जानता है, जो आसमानों और ज़मीन में हैं, और 'हमने' कुछ नबियों को कुछ पर फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) दी थी, और दाऊद को ज़बूर दी थी।

56 कह दीजिए, "पुकार कर देखो! उनको जिनको तुमने 'उसके' सिवा (मअ़बूद) बना रखे हैं, न तुम्हारी कोई तक्लीफ़ दूर कर सकते हैं, और न तुम्हारी ह़ालत बदल सकते हैं।"

57 यह लोग जिनको पुकारते हैं वे खुद अपने रब' के यहाँ ज़रिया ढूँढते हैं, कि कौन उनमें (अल्लाह का) ज़्यादा से ज़्यादा क़रीबी हो जाए; और 'उसके' रह़मत

की उम्मीद लगाते हैं और उसके अ़ज़ाब से डरते हैं; बेशक तुम्हारे 'रब' का अ़ज़ाब है ही डरने की चीज़।
58 और कोई बस्ती ऐसी नहीं जिसको 'हम' क़ियामत से पहले हलाक न कर दें, या सख़्त अ़ज़ाब न दें; यह बात किताब में लिखी जा चुकी है।
59 और 'हमें' निशानियाँ भेजने से इसके सिवा किसी चीज़ ने नहीं रोका, कि पहले के लोग उनको झुठला चुके हैं। और 'हमने' 'समूद' को स्पष्ट प्रमाण के रूप में ऊँटनी दी; मगर उन्हों ने उसके साथ ज़ुल्म किया; और निशानियाँ तो 'हम' इसी लिए भेजते हैं कि उनके ज़रिये डराएँ।
60 और जब 'हमने' तुमसे कहा था, तुम्हारे 'रब' ने लोगों को अपने घेरे में ले रखा है, और जो नुमाइश हमने तुम्हें दिखायी, उसे तो हमने' लोगों के लिए केवल एक आज़माइश बना दिया; और उस पेड़ (वृक्ष) को भी जिसको क़ुर्आन में लानत वाला कहा गया है; और हम' उन्हें डराते हैं, लेकिन इससे उनकी बढ़ी हुई सरकशी और बढ़ रही है।''
61 और जब 'हमने' फ़रिश्तों से कहा, ''आदम को सज्दः करो, तो सब ने सज्दः किया मगर इब्लीस ने नहीं किया, उसने कहा, ''क्या, मैं ऐसे व्यक्ति को सज्दः करूँ, जिसे 'तूने' मिट्टी से पैदा किया।
62 कहने लगा, ''देख तो सही! उसे जिसको 'तूने' मेरे मुक़ाबले में श्रेष्ठता दी है, अगर 'तूने' मुझे क़ियामत के दिन तक मोहलत दे दी तो मैं इसकी पूरी नस्ल को जड़ से उखाड़ डालूँगा सिवाय थोड़े से लोगों के।''
63 फ़रमाया, ''दूर हो जा! इनमें से जो व्यक्ति तेरे पीछे चलेगा, तो तुम सब का भरपूर बदला दोज़ख़ है;
64 और तू उनमें से जिस-जिस को अपनी आवाज़ से बहका सकता है बहका ले, फिर अपने सवारों और अपने प्यादों (पैदल सेना) से ह़मला कर, माल और औलाद में उनका साझीदार बन जा, और उनसे वादे कर, किन्तु शैतान उनसे जो वादे करता है, वह एक धोखे के सिवा और कुछ भी नहीं होता।
65 बेशक 'वह' जो मेरे (खास) बन्दे हैं उन पर तेरा कुछ भी ज़ोर नहीं चल सकता, और तुम्हारा 'रब' इसके लिए काफ़ी है''
66 तुम्हारा 'रब' तो 'वही' है जो तुम्हारे लिए समुद्र में कश्ती (नाव) चलाता है ताकि तुम उसके फ़ज़्ल (रोज़ी) को तलाश करो, बेशक 'वह' तुम पर बहुत मेहरबान है।
67 और जब तुमको समुद्र में तक्लीफ़ पहुँचती है, तो 'उसके' सिवा सब ग़ायब हो जाते हैं, फिर जब 'वह' तुम को बचाकर खुश्की (शुष्क-भूमि) में पहुंचा देता है तो तुम उससे मुहँ मोड़ जाते हो, और इन्सान बड़ा ही नाशुक्रा है।
68 क्या तुम इस बात से निश्चिन्त हो गये हो, कि 'वह' खुश्क ज़मीन के किसी हिस्से में तुमको धंसा दे, या तुम पर पत्थर बरसाने वाली आँधी भेज दे, फिर तुम अपने लिए कोई संरक्षक न पाओगे।
69 या इस बात से तुम निश्चिन्त हो गये हो, कि तुमको दूसरी बार समुद्र में ले जाए, फिर तुम पर तेज़ हवा चलाए और तुम्हारे कुफ्र की वजह से तुमको डुबो

दे; फिर तुम किसी को ऐसा न पाओ जो तुम्हारे लिए इस पर 'हमारा' पीछा करने वाला हो?

70 और 'हमने' आदम की औलाद को इज़्ज़त दी, और उनको थल और जल में सवारी दी, और अच्छी पाक चीज़ों की उन्हें रोज़ी दी, और अपनी पैदा की हुई मख़्लूक़ (प्राणियों) पर फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) दी।

71 (उस दिन से डरो) जिस दिन हम' हर इन्सानी गिरोह को उनके रहनुमाओं के साथ बुलाएंगे, तो जिनको उनका आ़मालनामा, दाहिने हाथ में दिया जाएगा, वह अपना आ़मालनामा पढ़ेंगे, और उन पर धागे बराबर भी ज़ुल्म न होगा,

72 और जो व्यक्ति यहाँ अन्धा हो कर रहा , वह आख़िरत में भी अन्धा रहेगा, और वह राह से बहुत दूर जा पड़ा होगा।

73 और जो 'हमने' वह्य तुम्हारी ओर भेजी है, क़रीब था कि ये (काफ़िर) लोग तुम को इससे बिचला दें ताकि इस (क़ुर्आन) को छोड़ कर तुम कुछ और झूठ 'हमारे' नाम पर गढ़ लो, और तब तुमको वह दोस्त बना लेते।

74 और अगर 'हमने' आप को जमाए न रखा होता, तो आप उनकी ओर थोड़ा झुकने के क़रीब हो गये थे;

75 उस समय 'हम' आप को दुगना अ़ज़ाब चखाते- ज़िन्दगी में भी और मौत के बाद भी, फिर आप 'हमारे' मुक़ाबले में किसी को भी मद्‌दगार न पाते।

76 और क़रीब था कि यह लोग (काफ़िर) इस ज़मीन (मक्का) से आप के क़दम उखाड़ दें, ताकि आप को वहाँ से निकाल दें, और इस ह़ालत में यह भी आप के बाद बहुत ही कम ठहरने पाते।

77 यही तरीक़ा 'हमारे' उन रसूलों के वि-ाय में रहा है, जिन्हें 'हमने' तुम से पहले भेजा था और तुम 'हमारे' नियम में कोई अन्तर न पाओगे।

78 नमाज़ क़ायम करो, सूरज के ढ़लने से लेकर रात के छा जाने तक और फज्र (सुबह़) में क़ुर्आन पढ़ने की पाबन्दी करो, बेशक फज्र का क़ुर्आन पढ़ना ह़ुज़ूरी (साक्षात) की चीज़ है।

79 और रात के कुछ हिस्से में भी, तहज्जुद की नमाज़ पढ़ लिया करो, यह आप के हक़ में (फ़र्ज़ के अ़लावह) ज़्यादा चीज़ (नफ़्ल) है, उम्मीद है कि आप का 'रब' आप को मक़ामे मह़मूद (प्रशंसा योग्य स्थान) दे।

80 और कहिए, ''ऐ मेरे रब'! मुझको दाख़िल कीजिए, तो सच्चाई के साथ दाख़िल कीजिए, और मुझे निकालिए तो सच्चाई के साथ निकालिए, और 'अपनी' ओर से मुझे ग़ल्बा (शक्ति) प्रदान कीजिए।''

81 और कह दीजिए, ''ह़क़ (सत्य) आ गया और बातिल (असत्य) मिट गया, बेशक बातिल तो था ही मिटने के लिए।''

82 और 'हम' क़ुर्आन के ज़रिये ऐसी बातें उतारते हैं, जो ईमान वालों के लिए शिफ़ा (इलाज) और रह़मत है; और ज़ुल्म करने वालों का तो इससे नुक़सान ही बढ़ता है।

83 और जब 'हम' इन्सान को कोई नेअ़मत आता करते हैं, तो वह मुँह मोड़

लेता है, और पहलू बचा कर चलता है; और जब कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो नाउम्मीद हो जाता है।
84 कह दीजिए, ''हर व्यक्ति अपने-अपने तरीक़े पर काम करता है, तुम्हारा 'रब' ही खूब जानता है कि कौन ज़्यादा सही़ रास्ते पर है?''
85 और आप से रूह़ के विषय में पूछते हैं, कह दीजिए, ''रूह मेरे रब' के हुक्म में से है, और तुम्हें जो इल्म दिया गया है वह बहुत थोड़ा ही है।''
86 और अगर 'हम' चाहें तो जो वह्य 'हमने' आप की ओर की है, वह छीन लें फिर तुम उसके लिए 'हमारे' मुक़ाबले में अपना कोई हिमायती न पाओगे।
87 यह तो बस तुम्हारे रब' की रह़मत है, ह़क़ीक़त में 'उसका' तुम पर बड़ा फ़ज़्ल है।
88 कह दीजिए, ''अगर इन्सान और जिन्न इस के लिए इकट्ठे हो जाएं कि इस क़ुर्आन जैसी कोई चीज़ बना लाएँ, तो इस जैसी कोई चीज़ न ला सकेंगे, चाहे वे आपस में एक-दूसरे के मददगार हों।
89 और 'हमने' इस क़ुर्आन में लोगों के लिए सब बातें तरह-तरह से बयान कर दी हैं, फिर भी अक्सर लोगों ने इन्कार करने के सिवा क़ुबूल न किया।
90 और कहने लगे, ''हम' तुम पर हरगिज़ ईमान न लाएंगे, जब तक तुम हमारे लिए ज़मीन से एक चश्मा (स्रोत) न जारी कर दो;
91 या खुद तुम्हारे लिए एक बाग़ खजूरों या अंगूरों का हो और तुम उसके बीच बहती नहरें निकाल दो;
92 या तुम 'हम' पर आसमान से टुकड़े गिरा दो जैसा कि तुम दावा करते हो, या तुम अल्लाह या फ़रिश्तों को सामने ले आओ;
93 या फिर तुम्हारे लिए कोई घर ही सोने का हो, या तुम आसमान पर चढ़ जाओ; हम तो तुम्हारे चढ़ने पर भी ईमान नहीं लाएंगे, जब तक कि तुम हम पर कोई किताब न लाओ, जिसे हम पढ़ सकें'' कह दीजिए, ''पाक है मेरा रब! क्या मैं एक इन्सानी रसूल के सिवा कुछ और हूँ?''
94 और लोगों को ईमान लाने से, जबकि हिदायत उनके पास आ गयी, इसके सिवा कोई चीज़ रूकावट नहीं हुई, कि कहने लगे, ''क्या अल्लाह ने आदमी को रसूल बना कर भेजा है?''
95 कह दीजिए कि ''अगर ज़मीन पर फ़रिश्ते आबाद हो कर चलते- फिरते तो 'हम' उनके लिए ज़रूर आसमान से किसी फ़रिश्ते को रसूल बनाकर भेजते।''
96 कह दीजिए, ''मेरे और तुम्हारे बीच अल्लाह ही गवाह काफ़ी है 'वह' अपने बन्दों की पूरी ख़बर रखने वाला, देखने वाला है।''
97 और जिस व्यक्ति को अल्लाह राह दिखाता है, वही राह पाया हुआ है; और 'वह' जिसे गुमराह (पथभ्रष्ट) करे तो तुम अल्लाह के सिवा उनका कोई मददगार नहीं पाओगे, और क़ियामत के दिन 'हम' उन लोगों को औंधे मुँह अन्धे, गूँगे, और बहरे उठाएँगे, और उनका ठिकाना जहन्नम है, जब आग बुझने को होगी तो 'हम' और भड़का देंगे;

98 यह सज़ा है उनकी, इस वजह से कि वे 'हमारी' आयतों का इन्कार किया
करते थे; और कहते थे, ''जब हम हड्डियाँ और बिल्कुल चूरा-चूरा हो जाएँगे
तो क्या हमें नये सिरे से पैदा करके उठा खड़ा किया जाएगा?''
99 क्या वह यह नहीं देखते! कि जिस अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को पैदा
किया, 'उसे' उन जैसों को भी पैदा करने की क़ुद्रत है? और 'उसने' तो
उनके लिए एक समय निश्चित कर रखा है, जिसमें कोई सन्देह नहीं, इस पर
भी ज़ालिमों ने इन्कार करने के सिवा कुछ नहीं माना।
100 कह दीजिए, ''अगर तुम मेरे रब की रह़मत के ख़ज़ाने के मालिक होते, तो
ज़रूर तुम खर्च हो जाने के डर से रोके रहते, और इन्सान तो है ही बड़ा
तंगदिल।
101 और 'हमने' मूसा को नौ खुली निशनियाँ दी थीं, जबकि वह बनी इस्राईल के
पास आए थे, तो आप उनसे पूछिये; तो फ़िरऔन ने उनसे कहा, ''ऐ मूसा!
मेरी समझ में तुम पर जादू किया गया है।''
102 उन्होंने कहा; ''तू खूब जानता है कि आसमानों और ज़मीन के 'रब' के
सिवा किसी और ने इन निशानियों को नहीं भेजा; और मैं समझता हूँ कि, ऐ
फ़िरऔन तुमने अपने को हलाकत में डाल दिया।''
103 फिर उसने चाहा कि उनके क़दम ज़मीन (मिस्र) से उखाड़ दे, तो 'हमने' उसको
और उसके साथियों को डुबो दिया।
104 और उसके बाद 'हमने' बनी इस्राईल से कहा, ''तुम इस ज़मीन में रहो-बसो
फिर जब आख़िरत का वादा आएगा, तो 'हम' तुम सब को इकट्ठा कर देंगे।''
105 और 'हमने' इस (क़ुर्आन) को ह़क़ ही के साथ नाज़िल किया है, और यह
ह़क़ ही के साथ नाज़िल हुआ है, और 'हमने' तो तुमको बस खुशख़बरी देने
वाला और डराने वाला बना कर भेजा है।
106 और क़ुर्आन को 'हमने' थोड़ा-थोड़ा कर के इसलिए उतारा, ताकि तुम
ठहर-ठहर कर लोगों को इसे पढ़ कर सुनाते रहो, और 'हमने' इसे धीरे-ध
ीरे उतारा है।
107 कह दीजिए, ''तुम इस पर ईमान लाओ या न लाओ, जिन लोगों को इससे
पहले इल्म दिया जा चुका है, जब यह उनको पढ़ कर सुनाया जाता है, तो वे
ठोड़ियों के बल सज्दे में गिर पड़ते हैं।''
108 और कहते हैं, ''पाक है हमारा रब! बेशक हमारे 'रब' का वादा तो पूरा होकर
ही रहता है।''
109 और वे रोते हुए ठोड़ियों के बल गिर जाते हैं और इससे उनका खुशूअ़
(विनम्रता) और बढ़ जाता है।
110 कह दीजिए, ''तुम अल्लाह को पुकारो या रह़मान को पुकारो, या जिस नाम
से भी पुकारो, उसके सब अच्छे ही नाम हैं।'' और अपनी नमाज़ न बहुत
ऊँची आवाज़ से पढ़िए और न उसे बहुत चुपके से पढ़िए बल्कि इन दोनों के
बीच का रास्ता अपनाइए।
111 और कह दीजिए, ''हर तरह की तअ़रीफें अल्लाह ही के लिए हैं, 'जिसने'

न तो अपना कोई बेटा बनाया और न बादशाही में ‘उसका’ कोई साझीदार है, और न ऐसा ही है कि ‘वह’ बेबस कि कोई ‘उसका’ मददगार हो, और उसको बड़ा समझ कर उसकी ख़ूब बड़ाइयाँ बयान कीजिए।’’

## सूर-ए-कहफ़

यह सूरः मक्की है, इसमें अ़रबी के 6620 अक्षर, 1201 शब्द,110 आयतें और 12 रूकूअ़ हैं।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

1 सब तअ़रीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं जिसने अपने बन्दे पर (यह) किताब नाज़िल की और इस में कोई टेढ़ नहीं रखी,

2 ठीक और दुरूस्त (किताब) ताकि वह सख़्त अ़ज़ाब से डराए जो ‘उसकी’ ओर से आ पड़ेगा, और ईमान लाने वालों को जो भले काम करते रहते हैं, ख़ुशख़बरी सुना दें कि उनके लिए अच्छा बदला है;

3 जिस में वे हमेशा-हमेश रहेंगे।

4 और उन लोगों को भी डराए, जो कहते हैं ‘‘अल्लाह ने (किसी के) बेटा बना लिया है।

5 उनको इस बात का कुछ भी इल्म नहीं और न उनके बाप-दादा ही को था, बड़ी सख़्त बात है, जो उनके मुहँ से निकलती है, यह केवल झूठ बकते हैं।

6 तो शायद, आप उनके पीछे अगर वह ईमान न लाएँ, तो अफ़सोस के मारे (क्या) अपनी जान दे देंगे।

7 जो चीज़ ज़मीन पर है उसको ‘हमने’ उसके लिए ज़ीनत (शोभा) बनाया ताकि लोगों को आज़माएं, कि उनमें बेहतर अ़मल करने वाला कौन है?

8 और जो कुछ उस (धरती) पर है उसे तो ‘हम’ एक चटियल मैदान बना देने वाले हैं।

9 क्या आप समझते हैं कि कहफ़ (गुफ़ा) और रक़ीम वाले हमारी अद्‌भुत निशानियों में से थे?-

10 जब उन नौजवानों ने गुफ़ा में जाकर पनाह ली, तो कहा, ‘‘हमारे रब! हमें अपने यहाँ से रह़मत उतार, और इस मामले में हमारी रहनुमाई का सामान कर दे।’’

11 फिर ‘हमने’ उस गुफ़ा में सालों-साल तक उनके कानों पर पर्दा डाल दिया।

12 फिर ‘हमने’ उन्हें उठाया ताकि ‘हम’ मालूम करें कि कौन दोनों गिरोहों में से जानने वाला है, कि कितनी अवधि तक वे रहे।

13 ‘हम’ उनका क़िस्सा ठीक-ठीक बयान करते हैं, वे कुछ नौजवान थे जो अपने
‘रब’ पर ईमान लाए थे, और ‘हमने’ उन्हें हिदायत में तरक़्क़ी दी थी।
14 और ‘हमने’ उनके दिलों को मज़बूत कर दिया, जब वे उठे तो उन्होंने कहा,
‘‘हमारा ‘रब’ वही है जो आसमानों और ज़मीन का ‘रब’ है, हम तो उसके
अ़लावा किसी मअ़बूद (उपास्य) को न पुकारेंगे, (अगर हम ने ऐसा किया) तो
उस समय हमने अ़क़्ल से दूर की बात कही।
15 यह हमारी क़ौम के लोग हैं, जिन्होंने उसके सिवा दूसरों को मअ़बूद बना लिए
हैं, भला यह उन पर कोई खुली दलील क्यों नहीं लाते। तो उससे बढ़ कर
ज़ालिम कौन होगा, जो अल्लाह पर झूठ गढ़े?
16 और जब तुम लोग इनसे, और जिन की यह अल्लाह के सिवा इबादत करते
हैं उनसे अलग हो गये हो; तो गुफ़ा में पनाह लो, तुम्हारा ‘रब’ तुम पर रह़मत
फैला देगा, और तुम्हारे लिए तुम्हें कामियाबी का सामान पैदा कर देगा।
17 और तुम सूरज को देखते हो कि जब वह निकलता, तो उनकी गुफ़ा से दाहिनी
ओर हटा रहता, और जब डूबता तो उनके बाईं ओर कतरा कर निकलता
है। और वे उसके अन्दर एक कुशादा (विस्तृत) जगह में है; यह अल्लाह की
निशानियों में से है, जिसको अल्लाह हिदायत दे, वही राह पाने वाला है, और
जिसे ‘वह’ गुमराह करें (अर्थात भटकताछोड़ दे,) उसका आप कोई मददगार,
रहनुमाई करने वाला न पाएंगे।
18 और तुम उनको जागता हुआ ख़याल करते हो हाँलाकि वह सोए हुए थे, हम
ही उन्हें करवट दिलाते रहते हैं दाईं ओर भी और बाईं ओर भी-और उनका
कुत्ता ड्योढ़ी पर अपने दोनों भुजाएँ फैलाए हुए था; अगर तुम उनको झाँक
कर देखते तो तुम उनसे पीठ फेर कर भाग खड़े होते और तुम्हारे अन्दर
उनकी दहशत बैठ जाती।
19 और इसी तरह ‘हमने’ उन्हें उठा खड़ा किया ताकि आपस में पूछ-ताछ करें,
उनमें से एक कहने वाले ने कहा, ‘‘भला तुम कितनी देर ठहरे होगे? बोले,
कि हम एक दिन या एक दिन से भी कम,’’ उन्होंने कहा, ख़ूब ‘‘तुम्हारा ‘रब’
ही अच्छी तरह जानता है, जितनी देर तुम ठहरे, अब अपने में से किसी को
यह (चाँदी का) सिक्का देकर शहर की ओर भेजो, फिर वह देख ले कि उसमें
सबसे अच्छा खाना कौन सा मिलता है? तो उसमें से वह तुम्हारे लिए कुछ
खाने को ले आए, और चाहिए कि वह नर्मी और होशियारी से काम ले, और
किसी को तुम्हारी ख़बर न होने दे।
20 अगर वह तुम्हारी ख़बर पा जाएँगे तो पत्थरों से मार-मार कर तुम्हें ख़त्म
कर डालेंगे, या तुम्हें अपने दीन (धर्म) में लौटा लेंगे, और तुमको उस वक़्त
कामियाबी न मिल सकेगी।
21 और इस तरह ‘हमने’ (लोगों को) उनकी सूचना देदी, ताकि वे जान लें कि
अल्लाह का वादा सच्चा है, और यह कि क़ियामत की घड़ी में कोई सन्देह
नहीं है; उस वक़्त लोग उनके बारे में आपस में झगड़ने लगे, तो उन्होंने
कहा, ‘‘उन पर एक इमारत बनाओ, और उनके मामले को तो उनका ‘रब’

ही अच्छी तरह जानता है'' उनके बारे में और उनके मामले में जिन की राय ग़ालिब रही उन्होंने कहा, ''हम उन पर ज़रूर एक मस्जिद बनाएंगे।''
22 (कुछ लोग) अब कहेंगे, ''वे तीन थे, और उनमें चौथा उनका कुत्ता था।'' और कहेंगे, ''वे पाँच थे, और उनमें छटा उन का कुत्ता था"-यह अट्कल बातें हैं बिना इल्म के और यह भी कहेंगे, "वे सात थे और उनमें आठवॉ उन का कुत्ता था"। कह दीजिए, "मेरा 'रब' ही उनकी संख्या को खूब जानता है"। उनको जानते भी हैं तो थोड़े ही लोग, तो आप उन (के मामले) में बहस न कीजिए सिवाय सरसरी बहस के, और न उनके बारे में किसी से कुछ पूछिये।
23 और आप किसी चीज़ के बारे में यह न कहा कीजिएः "मैं इसे कल कर दूँगा"
24 बल्कि (कहा कीजिए) ''इन्शाअल्लाह, (अल्लाह चाहे तो) जब आप भूल जाएं तो अपने रब को याद कर लिया कीजिए, और कहा कीजिए, ''उम्मीद है कि मेरा 'रब' इससे भी ज़्यादा सही बात की ओर रहनुमाई कर दे।''
25 और वे अपनी गुफ़ा में तीन सौ साल  और नौ साल ज़्यादा रहे।
26 कह दीजिए, ''अल्लाह ही भली-भाँति जानता है जितना वे ठहरे, और आसमानों और ज़मीन की छिपी बात का सम्बन्ध 'उसी' से है, 'वह' क्या ही देखने वाला और सुनने वाला है! 'उस' के सिवा न कोई संरक्षक है? और न 'वह' अपने हुक्म में किसी को शरीक करता है।
27 और आप पढ़ दिया कीजिए, जो कुछ वह्य आप पर, आप के 'रब' की किताब के ज़रिये भेजी गई है; कोई बदल उसकी बातों का नहीं हो सकता, और 'उसके' सिवा आप को कहीं पनाह नहीं मिल सकती।
28 और अपने आप को उन लोगों के साथ रखा कीजिए, जो अपने रब को पुकारते रहते हैं, सुबह और शाम, और 'उसी' की रज़ामन्दी चाहते हैं; और आप की दोनों आँखें उन पर से न हटने पाएँ जो दुनिया की ज़िन्दगी के साज़ व सामान की चाह में लग जाएँ; और ऐसे व्यक्ति का कहना न मानिएगा, जिसके दिल को 'हमने' अपनी याद से ग़ाफ़िल कर रखा है, और जो अपनी वासना (इच्छा) के पीछे लगा है और उसका मामला ह़द से आगे बढ़ चुका है।
29 और कह दीजिए, ''यह (क़ुर्आन) ह़क़ है, तुम्हारे रब की ओर से, तो जिसका जी चाहे ईमान लाए और जिस का जी चाहे इन्कार करे,'' 'हमने' ज़ालिमों के लिए आग तैयार कर रखी है, जिसकी क़नातें उन को घेरे होंगी, और अगर वह फ़रियाद करेंगे, तो ऐसे पानी से उनकी फ़रियाद पूरी की जाएगी जो तेल की तलछट की तरह होगा, और चेहरों को भूँन डालेगा; कितना बुरा होगा वह पानी! और कैसी बुरी होगी वह जगह!
30 बेशक जो लोग ईमान लाए, और  भले काम किये, तो 'हम' भले काम करने वालों का बदला कभी बरबाद नहीं करते।
31 ऐसे ही लोगों के लिए हमेशा-हमेश के लिए बाग़ हैं, उनके नीचे नहरें बह रही होंगी, उनको उसमें सोने के कंगन पहनाए जाएंगे और वह हरे रंग के महीन

और मोटे रेशमी कपड़े पहनेंगे, और ऊँचे तख़्तों पर तकिया लगाए बैठे होंगे। क्या ही अच्छा बदला है! और क्या ही ख़ूब आराम की जगह है?
32 और उनसे दो व्यक्तियों की मिसाल बयान कीजिएः जिनमें से एक को 'हमने'
दो बाग़ अंगूर के दे रखे थे, और उनको 'हमने' खजूरों से घेर रखा था, और
उन दोनों के बीच 'हमने' खेती उगा रखी थी;
33 दोनों बाग़ अपना पूरा फल देते थे, और किसी की पैदावार में कोई कमी न
रहती थी; और 'हमने' उन दोनों के बीच एक नहर जारी कर रखी थी;
34 और उस (व्यक्ति) को ख़ूब पैदावार मिलती थी; तो उसने अपने साथी से बातें
करते-करते बोल उठा, "मैं तुझ से माल में और आदमियों में बढ़ कर इज़्ज़त
में हूँ।"
35 और वह अपने बाग़ में इस हाल में दाख़िल हुआ, कि अपने आप पर ज़ुल्म
कर रहा था, उसने कहा! मैं नहीं समझता कि यह बाग़ कभी तबाह होगा;
36 और न मैं यह समझता हूँ कि क़ियामत आने वाली है, और अगर मैं अपने
रब की ओर लौटाया भी जाऊँ, तो ज़रूर उसमें अच्छी जगह पाऊँगा।"
37 उसका दोस्त जो उससे बातें कर रहा था बोल उठा, "क्या तू 'उसका' इन्कार
करता है, 'जिसने' तुझको मिट्टी से, फिर नुत्फ़े (वीर्य) से पैदा किया, फिर तुझे
एक पूरा आदमी बना दिया;
38 लेकिन मेरा 'रब' 'वही' अल्लाह है, और मैं किसी को अपने रब के साथ
साझीदार नहीं बनाता;
39 और जब तुम अपने बाग़ में दाख़िल हुए तो तुमने 'माशाअल्लाह ला हौला वला
कुव्वता इल्ला बिल्लाहि' (जो अल्लाह चाहे होता वही है अल्लाह के अलावा
कोई शक्ति नहीं है।) क्यों न कहा (चाहे) तू भले ही देख रहा हो कि मैं
माल और औलाद में तुझ से कम हूँ।
40 तो उम्मीद है, कि मेरा 'रब' मुझे तेरे बाग़ से अच्छा दे दे और तेरे इस बाग़
पर आसमान से कोई ऐसी आफ़त भेज दे, कि वह चटयल मैदान हो कर रह
जाए;
41 या उसका पानी नीचे उतर जाए फिर तू उसको हासिल न कर सके।"
42 और उसकी सारी पैदावार (अज़ाब के) घेरे में आ गयी, और वह अपने उस
माल पर जो उसने ख़र्च किया था, और वह बाग टट्टियों पर गिरा पड़ा था,
और वह कह रहा था, "क्या ही अच्छा होता कि मैं अपने रब के साथ किसी
को साझीदार न बनाया होता!"
43 और कोई जत्था ऐसा न हुआ जो अल्लाह के मुक़ाबले में उसकी मदद करता,
और न वह ख़ुद ही मुक़ाबला कर सका।
44 (उस समय यह बात खुल गयी,) कि सारा अधिकार अल्लाह ही के लिए है,
'वही' बदला देने में सब से अच्छा है और अंजाम की दृष्टि से सब से बेहतर
है।
45 और उन्हें दुनिया के ज़िन्दगी की मिसाल सुनाइएः उसकी मिसाल ऐसी है कि
पानी को 'हमने' आसमान से बरसाया, तो उससे ज़मीन की पैदावार ख़ूब

फली- फूली, फिर वह चूरा-चूरा हो कर रह गयी जिसे हवाएं उड़ाए लिए फिरती हैं, और अल्लाह को तो हर चीज़ पर कुद्रत (सामर्थ्य) है,''

46 माल और औलाद तो दुनियावी ज़िन्दगी की ज़ीनत हैं, और बाक़ी रहने वाले अच्छे अ़मल हैं, जो तुम्हारे 'रब' के नज़दीक बदले की दृष्टि से बेहतर हैं और उम्मीद की दृष्टि से भी।

47 और जिस दिन 'हम' पहाड़ों को चलाएंगे, और तुम ज़मीन को देखोगे कि खुला मैदान है और 'हम' लोगों को इकट्ठा करेंगे तो उन में से किसी को भी न छोड़ेंगे;

48 और तुम्हारे रब के सामने सफ़ बाँध कर (पंक्तिबद्ध) तरीक़े से हाज़िर किये जाएंगे- ''तो तुम 'हमारे' सामने आ पहुँचोगे जैसा कि 'हमने' तुम्हें पहली बार पैदा किया था कि बल्कि तुम्हारा तो यह दावा था; कि 'हमने' तुम्हारे लिए कोई समय निश्चित ही नहीं किया।

49 और (अमलों की) किताब रख दी जाएगी, तो तुम मुजरिमों को देखोगे कि जो कुछ उसमें लिखा है उससे डर रहे होंगे, और कह रहे होंगे, ''हाय! हमारा दुर्भाग्य यह कैसी किताब है कि यह न छोटी बात छोड़ती है न बड़ी, बल्कि सभी को इसने अपने अन्दर सुमो लिया है।'' और जो कुछ उन्होंने किया होगा सब मौजूद पाएंगे, और आप का 'रब' किसी पर जुल्म नहीं करेगा।

50 और जब हमने फ़रिश्तों से कहा, ''आदम को सज्दः करो,'' तो इब्लीस के सिवा सबने सज्दः किया, वह जिन्नों में से था, तो वह अपने रब के हुक्म की नाफ़रमानी कर बैठा, तो क्या तुम उसे और उनके नस्ल को 'मेरे' मुक़ाबले में दोस्त बनाते हो? हालाँकि वह तुम्हारे दुश्मन हैं; और ज़ालिमों के लिए बहुत बुरा बदला है।

51 'मैंने' उनको न तो आसमानों और ज़मीन के पैदा करने के वक्त बुलाया था, और न खुद उनके पैदा करने के वक्त, और 'मैं' ऐसा न था कि गुमराह करने वालों को मदद्गार बनाता।

52 और जिस दिन 'वह' कहेगा, ''बुलाओ मेरे साझीदारों को, जिनके साझी दार होने का तुम्हें दावा था।'' तो वे उनको पुकारेंगे, मगर वे उनको कोई जवाब न देंगे, और 'हम' उनके बीच एक आड़ कर देंगे।

53 और मुजरिम लोग आग को देखेंगे, तो वे समझ जाएंगे, कि उन्हें उसमें गिरना है और उससे बच निकलने का कोई रास्ता न पाएंगे।

54 और 'हमने' इस कुर्आन में लोगों के लिए तरह-तरह की मिसालें बयान कर दी, मगर इन्सान सबसे बढ़कर झगड़ालू है।

55 जब लोगों के पास हिदायत आ गई, तो इस बात से कि वे ईमान लाते, और अपने 'रब' से माफ़ी चाहते, इसके सिवा उन्हें किसी चीज़ ने नहीं रोका, कि उनके लिए वही कुछ सामने आए जो उनसे पहलों के साथ आ चुका है, यहाँ तक कि अ़ज़ाब उनके सामने आ मौजूद हो।

56 और हम जो रसूलों को भेजा करते हैं, तो केवल इसलिए कि खुशख़बरी सुनाएँ, और (अ़ज़ाब से) डराएँ; और जो काफ़िर हैं वह नाहक़ झगड़े निकालते

हैं ताकि उसको ह़क़ से फ़िसला दें; और उन्होंने हमारी निशानियों को और
उसको, जिससे उन्हें डराया गया है मज़ाक़ करते हैं।
57 और उससे बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा? जिसे उसके रब के कलाम (ईशवाणी)
से समझाया गया, तो उसने उससे मुँह फेर लिया और जो आ़माल वह आगे
कर चुका उनको भूल गया, 'हमने' उनके दिलों पर पर्दे डाल दिये कि इसे
समझ न सकें और कानों में डाट लगा दिये; और अगर आप उन्हें हिदायत
की ओर बुलाएँ तो यह ऐसी ह़ालत में हरगिज़ न आएँगे।
58 और आप का 'रब' बड़ा माफ़ करने वाला रह़मत वाला है, अगर 'वह' उन्हें
उस पर पकड़ता, जो कुछ कि उन्होंने कमाया है, तो उन पर जल्द ही अ़ज़ाब
आ जाता, बल्कि उनके लिए तो वादे का एक समय निश्चित है, उस से हटकर
वे बच निकलने की कोई राह न पाएँगे।
59 और यह बस्तियाँ वह हैं, जिन्हें 'हमने' हलाक कर डाला, जब उन्होंने ज़ुल्म
किया; और 'हमने' उन की हलाकत के लिए एक समय निर्धारित कर रखा
था।
60 और जब मूसा ने अपने सेवक से कहा था, ''मैं चलता रहूंगा यहाँ तक कि
दो समुद्रों के मिलने की जगह पर पहुँच जाऊँ, चाहे मुझे कितना ही समय
गुज़ारना पड़े।''
61 फिर जब दोनों दो समुद्रों के मिलने की जगह (संगम) पर पहुँचे, तो अपनी
मछली को दोनों भूल गये, और उसने समुद्र में जाने के लिए सुरंग की तरह
अपना रास्ता बना लिया।
62 फिर जब आगे बढ़े तो (मूसा ने) अपने सेवक से कहा, ''लाओ हमारा नाश्ता,
इस सफ़र से तो हमें बड़ी थकान हो गई है।''
63 (उसने) कहा, ''अरे जब हम उस चट्टान के पास ठहरे थे तो मैं (वही) उस
मछली को भूल गया- और शैतान ने भुला दिया कि मैं उसका ज़िक्र करता
उसने समुद्र में जाने का रास्ता विचित्र तरीक़े से निकाल लिया।''
64 (मूसा ने) कहा, ''वही तो था जिसे हम को तलाश थी; फिर दोनों अपने क़दमों
के निशान पर वापस हुए।
65 फिर उन्होंने 'हमारे' बन्दों में से एक बन्दे को पाया, जिसे 'हमने' अपनी रह़मत
से नवाज़ा था, और अपने पास से विशेष इल्म सिखाया था।
66 मूसा ने उनसे कहा; ''क्या मैं आप के साथ रह सकता हूँ, कि जो इल्म आप
को सिखाया गया है? उसमें से आप मुझे भी सिखा दें।''
67 कहा, ''आप मेरे साथ रह कर सब्र न कर सकेंगे,
68 और आप उन बातों पर सब्र कैसे कर सकेंगे! जो आप के दायर-ए-इल्म
(ज्ञान परिधि) से बाहर है।''
69 (मूसा ने) कहा, ''इन्शाअल्लाह आप मुझे सब्र करने वाला पाएंगे, और मैं किसी
मामले में भी आप की नाफ़रमानी नहीं करूँगा।''

70 कहा अच्छा अगर आप मेरे साथ रहना चाहते हैं तो किसी चीज़ के बारे में मुझ से न पूछिएगा, जब तक कि मैं आप से खुद उस का ज़िक्र न करूँ।

71 तो दोनों चले, यहाँ तक कि जब वे एक नाव में सवार हो गये तो उसने उस (नाव) में दरार डाल दिया, (मूसा ने) कहा, ''क्या आप ने उसमें इसलिए दरार डाल दी ताकि उसके सवारों को डुबो दें, यह तो आप ने बड़ी भारी बात की।''

72 कहा, ''क्या मैंने आप से कहा न था कि आप मेरे साथ सब्र न कर सकेंगे?''

73 (मूसा ने) कहा, ''भूल-चूक पर पकड़ मत कीजिए, और मेरे मामले में सख़्ती से काम न लीजिए।''

74 फिर वे दोनों चले यहाँ तक कि जब एक लड़के से मिले तो उन्होंने उसे मार डाला (मूसा ने) कहा क्या आप ने एक बेगुनाह व्यक्ति को मार डाला? हालाँकि उसने किसी की जान नहीं ली थी, यह तो आप ने बहुत ही बुरा किया!''

75 (खिज़्र ने) कहा, ''क्या मैंने आप से कहा नहीं था कि आप मेरे साथ सब्र नहीं कर सकेंगे?''

76 (मूसा ने) कहा, ''अगर इसके बाद मैं आप से कुछ पूछूँ तो आप मुझे अपने साथ न रखिएगा, अब तुम मेरी ओर से पूरी तरह उज़्र को पहुँच चुके।''

77 फिर दोनों चले, यहाँ तक कि जब एक बस्ती वालों के पास पहुँचे और उनसे खाना माँगा, तो उन्होंने उनके मेहमानी से इन्कार कर दिया, फिर उनको एक दीवार मिली, जो गिरने वाली थी, तो उसे सीधा कर दिया (मूसा ने) कहा, ''अगर आप चाहते तो इसकी कुछ मज़दूरी ही ले लेते।''

78 (उन्होंने) कहा, ''यह मेरे और आप के बीच जुदाई की बात हुई, अब मैं उन चीज़ों की ह़क़ीक़त बताता हूँ जिन पर आप सब्र नहीं कर सके।''

79 कि वह नाव ग़रीब लोगों की थी जो दरिया में काम करते थे, तो मैंने चाहा कि उसे ऐबदार कर दूँ, क्योंकि उनके आगे एक बादशाह था जो हर (अच्छी) नाव को ज़बर्दस्ती छीन लेता था।

80 और वह, जो लड़का था उसके माँ- बाप दोनों ईमान वाले थे, तो हम को डर हुआ कि वह इन दोनों को सरकशी और कुफ़्र में न फँसा दे;

81 फिर 'हमने' चाहा कि उसके बदले में उनका रब उन्हें ऐसी औलाद दे, जो उससे ज़्यादा पाक और मुह़ब्बत वाला हो।

82 और रही वह दीवार तो वह शहर के दो यतीम लड़कों की थी, और उसके नीचे उन का ख़ज़ाना गड़ा हुआ था और उनका बाप एक नेक आदमी था, तो तुम्हारे रब ने चाहा कि वह लड़के अपनी जवानी को पहुँच कर अपना गड़ा हुआ ख़ज़ाना निकाल लें; यह आप के रब की मेहरबानी थी, मैंने तो इसमें अपनी ओर से कुछ भी नहीं किया, यह उन बातों की ह़क़ीक़त है जिन पर आप सब्र न कर सके।

83 यह आप से ज़ुलक़रनैन के बारे में पूछते हैं, कह दीजिए, ''उनका ज़िक्र मैं अभी तुम्हारे सामने बयान करता हूँ।''

84 ‘हमने’ उसे ज़मीन पर हुकूमत दी थी, और उसे हर तरह का सामान दिया
था।
85 फिर उसने (सफ़र की) एक राह अपना ली;
86 यहाँ तक कि जब सूरज के डूबने की जगह पहुँचा, तो उसे मट्मैले काले पानी
के एक स्रोत में डूबते हुए पाया, और उसी के क़रीब उसे एक क़ौम मिली,
हमने कहा, “ऐ ज़ुल्क़रनैन! तुझे अधिकार है कि चाहे तक्लीफ़ पहुँचाए और
चाहे उनके साथ अच्छा व्यवहार करे।”
87 उसने कहा “जो कोई ज़ुल्म करेगा उसे तो हम सज़ा देंगे, फिर वह अपने रब
की ओर पलटेगा तो वह भी उसे सख़्त अज़ाब देगा;
88 और जो ईमान ले आए, और भले काम करे तो उसके लिए अच्छा बदला है
और ‘हम’ उसके लिए नर्मी का हुक्म देंगे।”
89 फिर उसने एक (और) राह अपना ली;
90 यहाँ तक कि जब वह सूरज के निकलने की जगह पहुँचा तो उसने उसे एक
ऐसी क़ौम पर निकलते हुए देखा, जिनके लिए ‘हमने’ उसके ऊपर कोई आड़
नहीं रखी थी।
91 ऐसा ही (‘हमने’ किया) था और जो कुछ उसके पास था, उस की ‘हमें’ पूरी
ख़बर थी।
92 फिर उसने एक (और) राह अपना ली,
93 यहँ तक कि जब चलते-चलते दो पहाड़ों के बीच पहुँचा, तो देखा कि उनके
उस ओर कुछ लोग हैं।, जो कोई बात ही नहीं समझते थे।
94 उन्होंने कहा, ऐ ज़ुल्क़रनैन! याजूज और माजूज इस जमीन पर बड़ा फ़साद
मचाते हैं, तो क्या हम आप के लिए कुछ खर्च जमा कर दें, ताकि आप हमारे
और उनके बीच कोई रोक बना दें?”
95 (ज़ुल्क़रनैन ने) कहा, “मेरे रब ने मुझे जो कुछ अधिकार और शक्ति दी है
वह बहुत है, तुम तो बस ताक़त के ज़रिये मेरी मदद करो, मैं तुम्हारे और
उनके बीच एक मज़बूत दीवार बनाए देता हूँ;
96 तुम मुझे लोहे के टुकड़े ला दो।” यहाँ तक कि जब दोनों पहाड़ों के बीच की
खाली जगह को पाटकर बराबर कर दिया तो कहा, “धौंको!” यहाँ तक कि
जब उसे आग कर दिया तो कहा, “मुझे पिघला हुआ ताँबा ला दो, ताकि मैं
उस पर उँडेल दूँ।”
97 फिर उनमें यह शक्ति न रही कि (याजूज-माजूज) उस पर चढ़ सकें और न
यह शक्ति रही कि उसमें सेंघ लगा सकें।
98 कहा, “यह मेरे ‘रब’ की रह़मत है, फिर जब मेरे रब का वादा आ पहुँचेगा
तो वह उसे (ढा कर) बराबर कर देगा, और मेरे रब का वादा सच्चा है।”

99 और 'हम' उस दिन उन्हें छोड़ देंगे कि वे एक-दूसरे से मौजों की तरह आपस में गुत्थम-गुत्था हो जाएँगे, और 'सूर' फूँका जाएगा, तो 'हम' उन सब को एक साथ इकट्ठा कर देंगे।

100 और उस दिन 'हम' जहन्नम को इन्कार करने वालों के सामने कर देंगे।

101 जिनकी आँखों पर 'हमारी' याद से पर्दा पड़ा हुआ था; और वह सुन ही नहीं सकते थे।

102 क्या फिर भी काफ़िरों का ख़याल है, कि मुझे छोड़कर मेरे बन्दों को अपना हिमायती बना लें? बेशक 'हमने' ऐसे काफ़िरों की मेहमानी के लिए जहन्नम तैयार कर रखी है।

103 कह दीजिए, ''क्या हम तुम्हें उनकी ख़बर दें, जो अपने अ़मल की दृष्टि से सबसे बढ़कर घाटा उठाने वाले हैं?-

104 यह वह लोग हैं, ''जिनकी पूरी कोशिश दुनिया ही की ज़िन्दगी में बरबाद हो कर रही, और वह अपने आप को यही समझते रहे, कि वह अच्छे काम कर रहे हैं,

105 यही वे लोग हैं जिन्होंने अपने रब की आयतों और उसके सामने हाज़िर होने को न माना, तो इनके काम अकारथ हो गये, फिर क़ियामत के दिन 'हम' उन्हें कोई वज़न न देंगे।

106 उनका बदला वही दोज़ख़ है, इस लिए कि उन्होंने कुफ़्र (इन्कार) किया, और 'हमारी' आयतों, और 'हमारे' रसूलों की हँसी उड़ाई।

107 जो लोग ईमान लाए, और भले काम किये, उनकी मेहमानी के लिए जन्नत के बाग़ हैं;

108 जिनमें वे हमेशा रहेंगे, वहाँ से और कहीं न जाना चाहेंगे।''

109 कह दीजिए, ''अगर समुद्र मेरे रब की बातों के (लिखने के) लिए स्याही हो, तो इससे पहले कि मेरे रब की बातें पूरी हों, समुद्र ख़त्म हो जाए चाहे हम उस जैसा एक और भी (समुद्र) उनकी मदद के लिए ले आएँ।

110 कह दीजिए, ''मैं भी तुम्हीं जैसा एक आदमी (बशर) हूँ; मेरे पास तो बस यह वह्य आती है कि तुम्हारा मअ़बूद (उपास्य) एक ही मअबूद है। तो जो कोई अपने रब से मिलने की उम्मीद रखता हो, उसे चाहिए कि अच्छे काम करता रहे, और अपने रब की इबादत में किसी को साझीदार न बनाए।

## सूर-ए-मरयम

यह सूरः मक्की है, इसमें अ़रबी के 6986 अक्षर, 968 शब्द,98 आयतें, और 12

रूकूअ़ हैं।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

1 काफ़- हा- या- अ़ैन- साद,
2 ज़िक्र है आप के रब की मेहरबानी का, जो उसने अपने बन्दे ज़करीया पर की।
3 जब उन्होंने अपने 'रब' को चुपके- चुपके पुकारा;
4 कहा, ''ऐ मेरे रब! मेरी हड्डियाँ कमज़ोर हो गईं, और सर में बालों की सफ़ेदी फैल गई; और तुझ को पुकार कर, ऐ मेरे 'रब' मैं कभी मह़रूम नहीं रहा;
5 और अपने (मरने के) बाद रिश्तेदारों की ओर से डरता हूँ, और मेरी पत्नी बाँझ है, तो 'तू' ही मुझे अपनी ओर से एक वारिस (बेटा) दे,
6 जो मेरा वारिस हो और याक़ूब के घराने का, और ऐ रब! 'तू' उसे पसंदीदा (चहीता) बना।''
7 ऐ ज़करीया! 'हम' तुम को खुशख़बरी देते हैं एक लड़के की, नाम उसका 'यह़या' होगा, 'हमने' उससे पहले किसी व्यक्ति को उस जैसा नहीं बनाया।
8 उन्होंने कहा, ''मेरे रब! लड़का कैसे होगा, जबकि मेरी पत्नी बाँझ है, और मैं बुढ़ापे की आख़िरी उम्र को पहुँच चुका हूँ।''
9 फ़रमाया, ''ऐसा ही होगा तेरे 'रब' ने कहा है कि यह 'मेरे' लिए आसान है, इससे पहले भी 'मैं' आप को पैदा कर चुका हूँ और आप तो (इस से पहले) कुछ भी न थे।''
10 (ज़करीया ने) कहा, ''मेरे रब! मेरे लिए कोई निशानी निश्चित कर दे।'' फ़रमाया, ''आप के लिए निशानी यह है कि आप भले चंगे (तन्दुरूस्त) रह कर भी तीन रात (और दिन) लोगों से बात-चीत न कर सकेंगे।
11 तो वह मेहराब (कमरे) से निकल कर अपनी क़ौम के पास आए और उन्हें इशारे से समझाया, ''सुबह और शाम (अल्लाह की) याद में लगे रहो।''
12 ''ऐ यह़या! किताब को मज़बूती से थाम लें।'' और 'हमने' उन्हें बचपन ही में समझ दे दी थी।
13 और अपने पास से ख़ास नर्मी और पाकीज़गी दी, और वह बड़े परहेज़गार थे;
14 और अपने माँ-बाप के साथ भलाई करने वाले थे और वह सरकश नाफ़रमान न थे।
15 ''और 'सलाम' हो उन पर जिस दिन वह पैदा हुए और जिस दिन उन की मौत हो, और जिस दिन वह ज़िन्दा कर के उठाये जाएं!''
16 और इस किताब में मरयम का ज़िक्र कीजिए, जब वह अपने घर वालों से अलग हो कर पूरब की ओर एक मकान में चली गई;

17 फिर उसने उनकी ओर से पर्दा कर लिया, तो ‘हमने’ उसके पास अपनी रूह़ (फ़रिश्ता) को भेजा, और वह उसके सामने पूरा मनुष्य बन गया।

18 वह बोल उठीं, ‘‘मैं तुझ से बचने के लिए रह़मान की पनाह माँगती हूँ, अगर तुम परहेज़गार हो।’’

19 (फ़रिश्ते ने) कहा, ‘‘मैं तो तुम्हारे रब का भेजा हुआ हूँ, ताकि तुम्हें एक पाकीज़ा लड़का दूँ’’

20 (मरयम) बोली, ‘‘मेरे लड़का कैसे होगा, जबकि मुझे किसी आदमी ने छुआ तक नहीं, और न मैं बद्कार हूँ।’’

21 (फ़रिश्ते ने) कहा, ‘‘ऐसा ही होगा, तुम्हारे ‘रब’ ने फ़रमाया है, कि ऐसा करना मेरे लिए आसान है, और ‘हम’ यह इस लिए करेंगे ताकि ‘हम’ उसे लोगों के लिए एक निशानी बनाएं, और अपनी ओर से रह़मत, और यह एक ऐसी बात है जिस का फैसला हो चुका है।’’

22 तो उनको ह़मल (गर्भ) ठहर गया, और वह उसे लिए हुए एक दूर स्थान पर (अलग) चली गयीं।

23 फिर उसे दर्दज़ेह (बच्चा पैदा होने के वक़्त का दर्द) खजूर के तने की ओर ले आया, कहने लगीं, ‘‘क्या ही अच्छा होता, कि मैं इससे पहले मर चुकी होती और भूली बिसरी हो गयी होती।’’

24 उस समय उसके नीचे से फ़रिश्ते ने पुकारा, ‘‘दुखी न हो! तुम्हारे रब ने तुम्हारे नीचे से एक स्रोत जारी कर दिया है;

25 और खजूर के तने को पकड़ कर अपनी ओर हिलाओ, ताज़ा-ताज़ा खजूर तुम पर झड़ पड़ेंगी,

26 तो खाओ और पियो, और आँखें ठंडी करो, फिर अगर कोई आदमी नज़र आए तो कह दो मैंने रह़मान के लिए रोज़े की नज़्र मानी है, इसलिए आज किसी आदमी से हरगिज़ बात नहीं करूँगी।’’

27 फिर वह उसको लिए हुए अपनी क़ौम के पास आईं; लोग कहने लगे, ‘‘ऐ मरयम! यह तो ‘तूने’ बुरा काम किया,

28 ऐ हारून की बहन! न तो तेरा बाप ही बुरी आदतों वाला था और न तेरी माँ ही बद्कार थी।’’

29 तो (मरयम ने) उस बच्चे की ओर इशारा किया, लोगों ने कहा, ‘‘हम इस बच्चे से क्या बात करें जो अभी पालने में है।’’

30 (बच्चे ने) कहा, ‘‘मैं अल्लाह का बन्दा हूँ, उसने मुझे किताब दी है और नबी बनाया है;

31 और मुझे बरकत वाला बनाया, जहाँ भी मैं रहूँ, और 'उसने' मुझे नमाज़ और
ज़कात की ताकीद की, जब तक कि मैं ज़िन्दा रहूँ;
32 और अपनी माँ का हक़ अदा करने वाला बनाया, और 'उसने' मुझे सरकश
और बद बख़्त नहीं बनाया;
33 और सलाम है मुझ पर कि जिस दिन मैं पैदा हुआ, और जिस दिन मैं
मरूँगा, और जिस दिन ज़िन्दा करके उठाया जाऊँगा!"
34 यह मरयम का बेटा ईसा है, सच्ची बात है, जिसमें लोग सन्देह करते हैं।
35 अल्लाह ऐसा नहीं, कि 'वह' किसी को अपना बेटा बनाए, 'वह' पाक है, जब
'वह' किसी बात का फ़ैसला कर लेता है, तो बस कहता है, "हो जा" और
वह हो जाती है।
36 और बेशक अल्लाह मेरा भी 'रब' है और तुम्हारा भी, तो उसी की इबादत
करो, यही सीधी राह है।"
37 तो उनमें कितने ही गिरोहों ने आपस में विभेद किया, तो जिन लोगों ने इन्कार
किया, उनके लिए बड़ी तबाही है एक बड़े दिन के हाज़री पर;
38 जिस दिन यह 'हमारे' सामने हाज़िर होंगे, उस दिन वह खूब सुनेंगे, और खूब
देखेंगे; मगर आज यह ज़ालिम खुली गुमराही में पड़े हुए हैं।
39 और उनको पछतावे के दिन से ख़बरदार कर दो जबकि मामले का फ़ैसला
कर दिया जाएगा, और वे ग़फ़लत में हैं, और ईमान नहीं लाते।
40 बेशक हम ही ज़मीन के, और उस पर बसने वालों के वारिस हैं, और 'हमारी'
ही ओर उनको लौटना है।
41 और इस किताब में इब्राहीम का ज़िक्र कीजिए, बेशक "वह बड़े सच्चे नबी
थे।"
42 जब उन्होंने अपने बाप से कहा, "ऐ मेरे अब्बा जान! आप क्यों ऐसी चीज़ों
की इबादत करते हैं, जो न सुनते हैं, और न देखते हैं और न आप के किसी
काम आते हैं।?-
43 ऐ मेरे अब्बा जान! मेरे पास वह इल्म आ चुका है; जो आप के पास नहीं
था; तो आप मेरे पीछे चलें, मैं आप को सीधी राह दिखा दूँगा;
44 ऐ मेरे अब्बाजान! शैतान की इबादत न कीजिए, शैतान तो रह़मान का
नाफ़रमान है।
45 ऐ मेरे अब्बाजान! मैं डरता हूँ कि कहीं रह़मान का अ़ज़ाब न आ पड़े, और
आप शैतान के साथी हो कर रह जाएँ।"
46 (आज़र ने) कहा, "ऐ इब्राहीम क्या तू मेरे मअ़बूदों (उपास्यों) से फिर गया
है? अगर तू बाज़ न आया, तो मैं तुझे संगसार (पत्थर मार-मार कर मार
डालूँगा) करूँगा, और तू मुझसे हमेशा के लिए अलग हो जा"
47 (इब्राहीम ने) कहा, "सलाम हो आप पर! मैं आप के लिए अपने 'रब' से
माफ़ी की दरख़्वास्त करूँगा, बेशक 'वह' तो मुझ पर बहुत मेहरबान है;
48 और मैं आप लोगों से और उनसे जिन को आप लोग अल्लाह के सिवा

पुकारते हैं, अलग होता हूँ, और अपने 'रब' ही को पुकारता हूँ, उम्मीद है कि मैं अपने 'रब' को पुकार कर महरूम नहीं रहूँगा।

49 तो जब वह उन लोगों से और जिन्हें वह अल्लाह के सिवा पूजते थे, उन से अलग हो गये, तो 'हमने' उन्हें इस्हाक़ और याक़ूब प्रदान किये, और उन में से हर एक को नबी बनाया;

50 और उनको अपनी रहमत से हिस्सा दिया, और उनके लिए सच्चाई की ज़बाने (बेहतर ज़िक्र) बुलन्द कीं।

51 और आप इस किताब में मूसा का ज़िक्र कीजिए, बेशक वह चुने हुए और भेजे हुए नबी थे।

52 और 'हमने' उस को तूर (पहाड़) के दायीं ओर से पुकारा, और बात करने के लिए क़रीब कर लिया।

53 और अपनी रहमत से उनके भाई 'हारून' को नबी बना कर उन्हें दिया।

54 और इस किताब में इस्माईल का ज़िक्र कीजिए, वह वादे के सच्चे थे, और वह भेजे हुए नबी थे।

55 और अपने घर वालों को नमाज़ और ज़कात का हुक्म देते थे, और अपने रब के नज़दीक पसंदीदा थे।

56 और इस किताब में इद्रीस का भी ज़िक्र कीजिए, वह भी बड़े सच्चे नबी थे;

57 और 'हमने' उन्हें बुलन्द दर्जे तक पहुँचाया।

58 यही वे नबी हैं, जिन पर अल्लाह का इन्आम हुआ, आदम की औलाद में से और उन लोगों की नस्ल से जिनको 'हमने' नूह के साथ सवार किया, और इब्राहीम और याक़ूब की औलाद में से, और उन लोगों में से जिनको 'हमने' हिदायत दी, और चुन लिया; जब उनके सामने रहमान की आयतें सुनाई जाती थीं तो वे सज्दः करते, और रोते हुए गिर पड़ते थे।

59 फिर उनके बाद कुछ बुरे लोग उनके जानशीन (उत्तराधिकारी) हुए, जिन्होंने नमाज़ को बरबाद किया, और मन की इच्छाओं के पीछे पड़ गये, तो जल्द ही उनकी गुमराही (उनको आगे) मिलेगी;

60 सिवाय उनके जो तौबः कर लें, और ईमान ले आएं और नेक काम करने लगें, तो ये लोग जन्नत में दाख़िल होंगे, और उनका कुछ भी नुक़्सान न किया जाएगा–

61 हमेशा के लिए जन्नत, जिन का रहमान ने अपने बन्दों (की आँखों) से छिपा हुआ वादा किया है, बेशक 'उसके' वादे पर हाज़िर होना है–

62 वहाँ वे कोई व्यर्थ (बकवास) की बात न सुनेंगे, जो कुछ सुनेंगे सलामती ही की बात होगी, और उन्हें सुबह और शाम अपनी रोज़ी (खाना) मिलती रहेगी;

63 यह है वह जन्नत जिसका वारिस 'हम' अपने बन्दों में से उनको बनाएँगे जो परहेज़गार होंगे।

64 और हम आप के रब के हुक्म के बिना नहीं उतर सकते, जो कुछ हमारे आगे है, और जो कुछ पीछे है, और जो उसके बीच में है, सब 'उसी' का है; और आप का रब भूलने वाला नहीं।

65 ‘वह’ रब है आसमानों और ज़मीन और उनके बीच की चीज़ों का, तो ‘उसी’
की इबादत करो, और ‘उसी’ की इबादत पर जमे रहो, क्या तुम्हारे इल्म में
उस जैसा कोई (और) नाम है?
66 और इन्सान कहता है, ‘‘क्या जब मैं मर जाऊँगा तो फिर ज़िन्दा कर के
निकाला जाऊँगा?’’
67 क्या इन्सान को याद नहीं कि ‘हम’ इससे पहले उसे पैदा कर चुके हैं, और
जबकि वह कुछ भी न था।
68 तो क़सम है आप के रब की! हम उनको इकट्ठा करेंगे, और शैतानों को भी,
फिर उन को दोज़ख के आस-पास हाज़िर करेंगे, (जो) घुटनों के बल गिरे हुए
होंगे।
69 फिर ‘हम’ हर गिरोह में से, उनको अलग कर लेंगे, जो रह़मान की सरकशी
में सब से ज़्यादा बढ़े हुए थे।
70 फिर ‘हम’ उन्हें खूब जानते हैं, जो इस में झोंके जाने के ज़्यादा ह़क़दार है।
71 और तुम में से कोई भी ऐसा नहीं जिसको वहाँ तक न पहुँचना हो, यह आप
के रब पर ज़रूरी है जो पूरा होकर रहेगा।
72 फिर उन्हें ‘हम’ बचा लेंगे, जो परहेज़गार थे, और ज़ालिमों को उसमें पड़ा
रहने देंगे, घुटनों के बल झुके हुए।
73 और जब उन्हें ‘हमारी’ खुली हुई निशानियाँ बताई जाती हैं, तो जो लोग
काफ़िर हैं; वह ईमान वालों से कहते हैं, ‘‘दोनों फ़रीक़ों में से किसका स्थान
(मकान) सबसे बेहतर है और मज्लिस किसकी बेहतर है?’’
74 और ‘हम’ उनसे पहले कितने ही गिरोहों को हलाक कर चुके हैं, वे इनसे भी
बढ़-चढ़ कर थे, सामान और दिखावे में।
75 कह दीजिए, ‘‘जो (व्यक्ति) गुमराही में पड़ा हुआ था, रह़मान उसको धीरे-ध
ीरे ढ़ील दिये जाता है, यहाँ तक कि जिस चीज़ का उनसे वादा किया गया है,
जब वह उसको देख लेंगे- चाहे वह अ़ज़ाब हो, या क़ियामत उस समय उन्हें
पता चल जाएगा कि किस की जगह बुरी और किसका जत्था बिल्कुल कमज़ोर
है।’’
76 और जो लोग हिदायत की राह अपनाते हैं, अल्लाह उनकी हिदायत को बढ़ाता
रहता है, और बाक़ी रहने वाली नेकियाँ आप के रब के नज़्दीक बदले के
एतिबार से भी बेहतर और अंजाम के एतिबार से भी बेहतर हैं।
77 क्या आपने उस व्यक्ति को देखा! जो ‘हमारी’ निशानियों से कुफ्ऱ करता है?
और कहता है, ‘‘मुझे तो ज़रूर माल और औलाद मिल कर रहेंगे?’’
78 तो क्या इसने ग़ैब (परोक्ष) की ख़बर पा ली? या रह़मान से कोई वादा ले रखा
है-?
79 हरगिज़ नहीं, यह जो कुछ कहता है ‘हम’ उसको लिखते जाते हैं, और उसके
अ़ज़ाब को बढ़ाते चले जाते हैं।
80 और जो कुछ वह बताता है उसके हम वारिस होंगे, और वह अकेला ही हमारे
पास आएगा।

81 और इन लोगों ने अल्लाह के सिवा दूसरे मअ़बूद बना रखे हैं ताकि वे इनके
मददगार हों;
82 हरगिज़ नहीं, वे (क़ियामत के दिन) उनकी इबादत का इन्कार कर बैठेंगे, और
उनके विरोधी बन जाएँगे।-
83 क्या आपने देखा नहीं! कि हमने काफ़िरों पर शैतानों को छोड़ रखा है, जो
इन्हें खूब उभारते रहते हैं?-
84 तो आप इनके लिए जल्दी न कीजिए, हम इनके (दिन) गिन रहे हैं।
85 जिस दिन 'हम' पहरहेज़गारों को रह़मान की ओर मेहमान बना कर इकट्ठा
करेंगे;
86 और मुजरिमों को जहन्नम की ओर प्यासे (जानवरों की तरह) हाँक ले जाएँगे।
87 (उस दिन) किसी को सिफ़ारिश का अधिकार न होगा, मगर वही सिफ़ारिश
कर सकेगा जिसने रह़मान से वादा (इजाज़त) लिया हो।
88 और कहते हैं, "रह़मान ने किसी को अपना बेटा बना रखा है।"
89 बड़ी भारी बात है जो तुम (ज़बान पर) लाते हो।
90 क़रीब है कि इस (झूठ) से आसमान टूट पड़े और ज़मीन फट जाए और
पहाड़ टुकड़े-टुकड़े हो कर गिर पड़ें,
91 (इस बात पर) कि इन्होंने रह़मान के लिए बेटा होने का दावा किया,
92 और रह़मान की यह शान नहीं कि किसी को बेटा बनाए।
93 आसमानों और ज़मीन में जो भी है, एक बन्दे के रूप में रह़मान के पास
हाज़िर होंगे।
94 सब को 'उसने' घेर रखा है और (एक-एक को) गिन रखा है।
95 और सभी क़ियामत के दिन उस (रह़मान) के सामने अकेले-अकेले हाज़िर
होंगे।
96 जो लोग ईमान लाए, और अच्छे काम किये, रह़मान उनकी मुह़ब्बत पैदा कर
देगा।
97 'हमने' इस (कुर्आन) को आप की ज़बान में आसान किया है, ताकि आप
इससे परहेज़गारों को खुशख़बरी पहुँचा दें और झगड़ालू लोगों को इसके ज़रिये
डरा दें।
98 और 'हमने' इससे पहले बहुत से गिरोहों को हलाक कर दिया है, क्या तुम
उनमें से किसी की आहट पाते हो, या तुम्हें उनकी भनक भी सुनाई देती है।

## सूर-ए-ता-हा

यह सूरः मक्की है, इसमें अ़रबी के 5466 अक्षर, 1251 शब्द,135 आयतें और 8

रूकूअ़ हैं।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

1 ता- हा,
2 (ऐ मुह़म्मद) 'हमने' आप पर यह कुर्आन इसलिए नहीं उतारा, कि आप मुसीबत में पड़ जाएँ;
3 यह तो एक नसीह़त है, उसके लिए जो डर रखें;
4 यह उसका उतारा हुआ है 'जिसने' पैदा किया, ज़मीन को और ऊँचे-ऊँचे आसमानों को;
5 (वह) रह़मान, (जो) अ़र्श (राजसिंहासन) पर विराजमान।
6 'उसी' का है जो कुछ आसमानों में है, और जो कुछ ज़मीन में है, और जो कुछ इन दोनों के बीच में है, और जो कुछ मिट्टी के नीचे है।
7 और अगर तुम बात पुकार कर कहो (या चुपके से) 'वह' तो चुपके से कही हुई बात, और छिपी हुई बात तक को जानता है।
8 (वह) अल्लाह, कि 'उसके' सिवा कोई मअ़बूद (उपास्य) नहीं, 'उसके' (सब) नाम अच्छे हैं।
9 और क्या आप को मूसा की ख़बर मिली है?-
10 जब उन्होंने आग देखी! तो अपने घर वालों से कहा, "ठहरो! मुझे आग दिखाई दी है। शायद उसमें से मैं तुम्हारे लिए अंगारा ले आऊँ, या हो सकता है उस आग पर मैं रास्ते का पता पा लूँ।"
11 फिर जब वह वहाँ पहुँचे तो आवाज़ आई "ऐ मूसा!
12 मैं ही तुम्हारा रब हूँ, तो अपने जूते उतार दो; तुम 'तुवा' की पाक घाटी (या मैदान) में हो;
13 और 'मैंने' तुम्हें चुन लिया है, तो जो वह़्य (हुक्म) की जा रही है उसे सुनो;
14 बेशक 'मैं ही' अल्लाह हूँ, 'मेरे' सिवा कोई मअ़बूद (उपास्य) नहीं, तो 'मेरी' ही इबादत करो और मेरी याद के लिए नमाज़ क़ायम करो;
15 क़ियामत की घड़ी आने वाली है, मैं चाहता हूँ कि उसको छिपाए रखूँ, ताकि हर व्यक्ति अपनी कोशिश के अनुसार बदला पा सके;
16 तो जो व्यक्ति उस पर ईमान नहीं लाता, और अपनी इच्छाओं के पीछे चलता है, वह तुम्हें इस (नमाज़) से रोक न दे, कि फिर तुम हलाक हो जाओ;
17 और ऐ मूसा! यह तुम्हारे दाहिने हाथ में क्या है?"
18 (मूसा ने) कहा, "यह मेरी लाठी है, इस पर मैं टेक लगाता हूँ, और इससे अपनी बकरियों के लिए पत्ते झाड़ता हूँ, और इसमें मेरे और भी कई फ़ायदे हैं।"
19 फ़रमाया, "डाल दो इसको ऐ मूसा।"
20 तो उन्होंने, उसको डाल दिया; अचानक वह एक साँप बन कर दौड़ने लगा;

21 (अल्लाह ने) फ़रमाया, ''उसे पकड़ लीजिए, और मत डरिए; 'हम' उसे फिर उसकी पहली हालत पर लौटा देंगे,
22 और अपना हाथ अपने बाज़ू से लगा लीजिए, वह रौशन हो कर निकलेगा, बिना किसी ऐब के, (यह) दूसरी निशानी है।
23 ताकि 'हम' आप को अपनी बड़ी निशानियाँ दिखाएँ।
24 आप फ़िरऔन के पास जाइए, (कि) वह सरकश (उद्दंड) हो रहा है।''
25 (मूसा ने) कहा, ''ऐ रब! (इस काम के लिए) मेरा सीना खोल दीजिए।
26 और मेरा काम आसान कर दीजिए,
27 और मेरी ज़बान की गिरह खोल दीजिए,
28 ताकि वह मेरी बात समझ लें,
29 और मेरे घर वालों में से (एक को) मेरा वज़ीर (सहायक) नियुक्त कर दीजिए;
30 (अर्थात) मेरे भाई हारून को,
31 उसके ज़रिये मेरी कमर (ताक़त) को मज़बूत कर दीजिए,
32 और उसे मेरे काम में शरीक कर दीजिए,
33 ताकि हम खूब 'तेरी' तस्बीह़ बयान करें,
34 और 'तेरा' खूब ज़िक्र करें,
35 बेशक 'तू' हमें देख रहा है।''
36 फ़रमाया, ''दिया गया तुझे जो 'तू ने' माँगा, ऐ मूसा!
37 और 'हमने' तो आप पर एक बार और एह़सान किया था,
38 जबकि 'हमने' आप की माँ को इल्ह़ाम किया, (दिल में बात डाली) जो आपको बताया जाता है;
39 कि उसको सन्दूक़ में रख फिर उसको दरिया में डाल दे, फिर दरिया उसे किनारे पर डाल देगा, तो उन्हें वह (दुश्मन) उठा लेगा, जो मेरा भी दुश्मन है उनका और इनका भी, और 'मैंने' आप पर अपनी ओर से मुह़ब्बत डाल दी, और ताकि आप मेरी देख-रेख में परवरिश पाएँ।
40 जबकि आपकी बहन (फ़िरऔन के यहाँ) चलती हुई आईं, फिर बोलीं कि 'क्या मैं तुम्हें उस व्यक्ति का पता बता दूँ जो इनका पालन पोषण अपने ज़िम्में ले ले? इस तरह 'हमने' फिर आप को आप की माँ के पास पहुँचा दिया, ताकि उनकी आँखें ठंडी हों; और वह ग़म न करें; आपने एक व्यक्ति को मार डाला था, तो 'हमने' आपको उस ग़म से छुट्कारा दिया, और 'हमने' आप को तरह-तरह से आज़माया, और आप कई वर्ष मद्यन वालों में रहे, फिर आप ठीक समय पर आ गये, ऐ मूसा!
41 और 'मैंने' आप को अपने (काम के) लिए चुन लिया है,
42 आप और आप के भाई 'मेरी' निशानियों के साथ जाएँ, और 'मेरी' याद में सुस्ती न करें;
43 जाएँ दोनों, फ़िरऔन के पास, वह सरकश हो रहा है।
44 उससे नर्मी से बात करें, शायद कि वह नसीह़त ह़ासिल कर ले या डर जाए।''

45 दोनों बोले, ‘‘ऐ हमारे रब! हमें इसका डर है कि वह हम पर कहीं ज़्यादती
न करे या ज़्यादा सरकश हो जाए।’’
46 (अल्लाह ने) फ़रमाया, ‘‘आप डरें नहीं, ‘मैं’ आप दोनों के साथ हूँ, सुनता
और देखता हूँ;
47 आप उसके पास जाएँ, फिर उससे कहें, ‘हम ‘तेरे’ ‘रब’ की ओर से भेजे
गये हैं, तो तू हमारे साथ बनी इस्राईल को जाने दे, और उन्हें दुःख न दे,
हम तेरे पास, तेरे ‘रब’ की निशानी लेकर आए हैं; और सलामती हो उसके
लिए जो सीधी राह पर चले।
48 हमारे पास तो वह्य आ चुकी है कि अ़ज़ाब उसी के लिए है, जो झुठलाए
और मुँह फेरे।’’
49 (फ़िरऔ़न ने) कहा, ‘‘तो कौन है, तुम्हारा रब! ऐ मूसा?’’
50 (मूसा ने) कहा, ‘‘हमारा रब वह है ‘जिसने’ हर चीज़ को उसकी आकृति
(शक्ल सूरत) दी, फिर राह दिखाई।’’
51 (फ़िरऔ़न ने) कहा, ‘‘अच्छा तो उन नस्लों का क्या ह़ाल हुआ, जो पहले थीं?’’
52 (मूसा ने) कहा, ‘‘उसका इल्म मेरे रब के पास एक किताब में है, मेरा ‘रब’
न भटक सकता है न भूल सकता है।’’
53 ‘‘वह (वही तो है) जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन को फर्श बना दिया, और तुम्हारे
लिए उसमें रास्ते बना दिये; और आसमान से पानी उतारा, फिर ‘हमने’ उससे
तरह-तरह की पैदावारें (उपज) निकालीं;
54 खाओ और अपने चौपायों को भी चराओ; बेशक इसमें निशानियाँ हैं अक़्ल
वालों के लिए।
55 इसी (ज़मीन) से ‘हमने’ तुम्हें पैदा किया, और इसी में ‘हम’ तुम्हें लौटाएँगे,
और इसी से फिर तुम्हें दोबारा निकालेंगे।’’
56 और ‘हमने’ उसे (फिरऔ़न को) अपनी सभी निशानियाँ दिखाईं मगर वह
झुठलाता और इन्कार ही करता रहा।
57 (फिरऔन ने) कहा, ‘‘ऐ मूसा! क्या तू हमारे पास इसलिए आया है कि अपने
जादू से हम को, हमारे अपने ही ज़मीन से निकाल दे?
58 अच्छा, हम भी तुम्हारे मुक़ाबले में वैसा ही जादू लाएंगे; तुम हमारे और अपने
बीच एक निर्धारित समय तय कर लो, न हम उससे फिरें और न तुम, (और
यह) एक समतल मैदान में (हो)।
59 (मूसा ने) कहा, ‘‘तुम्हारे लिए ज़ीनत (उत्सव) के दिन का वादा है, और यह
कि लोग दिन चढ़े (चाश्त के वक़्त) इकट्ठा हो जाएँ।’’
60 तो फ़िरऔ़न पलटा और अपने सारे दाँव जुटाए, फिर (मुक़ाबले में) आ गया।
61 मूसा ने उन लोगों से कहा, ‘‘तबाही है तुम्हारे लिए, झूठ गढ़ कर अल्लाह
पर न थोपो, कि ‘वह’ तुम्हें एक अ़ज़ाब से तबाह कर देगा और जिसने झूठ
गढ़ा, वह नाकाम (असफल) रहा।’’

62 तो वे आपस में अपने मामले में झगड़ने और चुपके-चुपके काना -फूसी करने
लगे।
63 कहने लगे, ''यह दोनों जादूगर हैं, चाहते हैं कि अपने जादू से तुम्हें तुम्हारी
ज़मीन से निकाल दें, और तुम्हारे सुन्दर तरीके (धर्म) को मिटा दें;
64 तो तुम सब मिलकर अपना दाँव जुटा लो, और एक पंक्ति बना कर आओ,
आज जो ग़ालिब (प्रभावी) रहा वही कामियाब हुआ।''
65 वे बोले, ''ऐ मूसा! या तुम (अपनी लाठी) डालो, या हम पहले (रस्सियाँ) डालते
हैं।''
66 (मूसा ने) फ़रमाया, ''नहीं, बल्कि तुम्हीं (रस्सियाँ) डालो,'' (जब उन्होंने रस्सियाँ
डालीं) तो अचानक उनकी रस्सियां और लाठियाँ मूसा के ख़याल में ऐसी आने
लगीं कि वह दौड़ रही हैं।
67 तो मूसा अपने जी में डरे।
68 'हमने' कहा, ''मत डरो! बेशक तुम ही ग़ालिब (प्रभावी) हो,
69 और जो चीज़ तुम्हारे दाहिने हाथ में (लाठी) है, उसे डाल दो, वह उसको
निगल जाएगी, जो कुछ उन्होंने रचा है, वह तो बस जादूगर का फ़रेब है
और जादूगर कामियाब नहीं हो सकता, चाहे (जहाँ) आए।''
70 तो जादूगर सज्दः में गिर गये, (और) बोले, ''हम, हारून और मूसा के 'रब'
पर ईमान ले आए।''
71 (फ़िरऔन ने) कहा, ''तुम उस पर ईमान ले आए, इससे पहले कि मैं तुम्हें
इसकी इजाज़त देता, ज़रूर यह तुम्हारा उस्ताद है, जिसने तुम्हें जादू सिखाया
है, तो मैं तुम्हारे हाथ और पाँव विपरीत दिशाओं से कट्वा दूँगा, और खजूर
के तनों पर तुम्हें सूली दे दूँगा; तब तुम्हें ज़रूर मालूम हो जाएगा कि हममें
से किस का अज़ाब ज़्यादा सख़्त और देर तक रहने वाला है।;
72 उन्होंने कहा, ''जो स्पष्ट निशानियाँ हमारे सामने आ चुकी हैं, और उस हस्ती
पर, 'जिसने' हमको पैदा किया है, उसके मुक़ाबले में हम तुमको किसी तरह
तर्जीह (प्राथ्मिकता) देने वाले नहीं, तो तुझ को जो करना है, कर गुजर, और
तू तो बस इसी दुनिया की ज़िन्दगी पर हुक्म दे सकता है।
73 ''हम तो अपने रब पर ईमान ले आए, ताकि वह हमारी ख़ताओं को माफ़
कर दे, और इस जादू को भी जिस पर 'तूने' हमें मजबूर किया, और अल्लाह
ही बेहतर और बाक़ी रहने वाला है।''
74 जो व्यक्ति अपने 'रब' के पास मुजरिम हो कर हाज़िर होगा, तो उसके लिए
जहन्नम है, जिसमें न वह मरेगा और न जिएगा।
75 और जो व्यक्ति आएगा मोमिन (मुस्लिम) हो कर, और अच्छे काम भी किये
होंगे, तो ऐसे लोगों के लिए ऊँचे-ऊँचे दर्जे हैं;
76 हमेशा-हमेश रहने के बाग़ हैं, जिनके नीचे नहरें बह रही हैं, उनमें वे हमेशा
रहेंगे; और यह बदला है उसका जिसने पाकी अपनाई।
77 और 'हमने' मूसा की ओर वह्य की, कि 'हमारे' बन्दों को रातों-रात निकाल

ले जाओ, फिर उनके लिए दरिया में (लाठी) मार कर सूखा रास्ता बना दो, फिर तुमको न तो (फ़िरऔ़न के) पकड़ने का डर होगा, और न (डूबने का) डर।''

78 तो फ़िरऔ़न ने अपनी सेना के साथ उनका पीछा किया, तो दरिया (की मौजें) उनको ढांप ली, जैसा कि उसे उनको ढ़ाँपना था।

79 और फिरऔ़न ने अपनी क़ौम को गुमराह कर दिया,और सीधी राह न दिखाई।

80 ऐ बनी इस्राईल! (याक़ूब की औलाद) 'हमने' तुमको तुम्हारे दुश्मन से छुट्कारा दिया, और तुमसे 'तूर' के दाहिनी छोर का वादा किया, और तुम पर 'मन्न' और 'सल्वा' उतारा;

81 ''खाओ, जो कुछ पाक अच्छी चीज़ें 'हमने' तुम्हें दी हैं, और इसमें ह़द से आगे न बढ़ना कि तुम पर मेरा ग़ज़ब टूट पड़े, और जिस पर 'मेरा' ग़ज़ब टूटा, वह तो गिर कर ही रहा;

82 और 'मैं' बड़ा माफ़ करने वाला हूँ उसके लिए जो तौबः कर ले, और ईमान ले आए, और भले काम करे, फिर सीधी राह पर चले।''–

83 ''और अपनी क़ौम से (आगे चले आने में) क्यों जल्दी की, ऐ मूसा?''

84 (मूसा ने) कहा, ''वह मेरे पीछे हैं और मैंने तेरी ओर आने की जल्दी इस लिए की, ऐ रब! ताकि तू राज़ी हो जाए।''

85 फ़रमाया, ''अच्छा, तो 'हमने' तुम्हारे पीछे तुम्हारे क़ौम को आज़ूमाइश में डाल दिया, और सामरी ने उन्हें गुमराह कर डाला।''

86 तब मूसा अपनी क़ौम के पास वापस आए, गुस्सा और अफ़सोस से भरे हुए, कहा, ''ऐ मेरी क़ौम! क्या तुम्हारे 'रब' ने तुम से अच्छा वादा नहीं किया था? तो क्या तुम पर लम्बा ज़माना गुज़र गया था या तुमने यह चाहा था कि तुम पर तुम्हारे 'रब' का ग़ज़ब उतर पड़े, इसलिए तुमने मुझसे वादा ख़िलाफ़ी की।''

87 उन्होंने कहा, ''हमने आप से किये हुए वादे के ख़िलाफ़ अपने से कुछ नहीं किया, बल्कि क़ौम के ज़ेवरों के बोझ हम उठाए हुए थे, फिर हमने उनको (आग में) फेंक दिया, तो इसी तरह सामरी ने भी डाल दिया।''–

88 तो वह उनके लिए एक बछड़े का जिस्म बना लाया जिसकी आवाज़ बछड़े की सी थी, फिर उन्होंने कहा, ''यही तुम्हारा मअ़बूद (उपास्य) है और मूसा का भी, मगर वह भूल गया है।''

89 क्या वे लोग इतना भी नहीं देख रहे थे, कि वह न तो किसी बात का जवाब दे सकता है और न उनको नुक़सान पहुँचाने का अधिकार है और न नफ़ा का।

90 और हारून ने उनसे पहले ही कह दिया था कि ''लोगो तुम इसके ज़रिये फ़ित्ने में पड़ गये हो, और तुम्हारा 'रब' तो रह़मान है, तो मेरी बताई राह पर चलो और मेरी बात मानो।''

91 उन्होंने कहा, ''हम तो इसी (की इबादत) पर जमे रहेंगे, जब तक कि मूसा वापस न आएँ।''

92 उन्होंने कहा, ''ऐ हारून तुम्हें किस चीज़ ने रोका, जब तुम ने देख लिया था कि यह भटक गये हैं;

93 इस बात से कि तुम मेरे पीछे चले आते तो तुमने मेरे हुक्म की नाफ़रमानी
की?''
94 (हारून ने) कहा, ''ऐ मेरी माँ के बेटे, मेरी दाढ़ी न पकड़िए और न मेरा सर!
मुझे डर हुआ कि आप कहेंगे कि 'तू ने बनी इस्राईल में फूट डाल दी, और
मेरी बात को ध्यान न दिया'।''
95 (मूसा ने) कहा, ''ऐ सामरी! तेरा क्या मामला है।''
96 उसने कहा, ''मुझे ऐसी चीज़ नज़र आयी, जो दूसरों को नज़र नहीं आयी,
तो मैंने रसूल के पैर के निशान से एक मुट्ठी मिट्टी उठा ली, फिर उसको
छोड़ दिया, और मुझे मेरे मन ने ऐसा ही सुझाया है।''
97 कहा, ''अच्छा, तू जा! अब ज़िन्दगी भर तुझे यह कहते रहना है कि, 'कोई
छुए नहीं', और तेरे लिए एक निश्चित वादा है, जो तुझ पर से हरगिज़ न
टलेगा, और देख अपने इस मअ़बूद को जिस पर तू जमा बैठा है, हम अभी
इसे जलाए डालते हैं, फिर इस (की राख) को दरिया में बहा देते हैं।''
98 ''तुम्हारा मअ़बूद (उपास्य) वही अल्लाह है, जिसके सिवा कोई मअ़बूद नहीं,
'वह' अपने इल्म से हर चीज़ पर छाया हुआ है।''
99 इसी तरह 'हम' आप से गुज़रे हुए किस्सों की ख़बरें बयान करते हैं, और
'हमने' आप को अपने पास से एक नसीहत नामा दिया।
100 जिस व्यक्ति ने इससे मुँह फेरा, तो वह क़ियामत के दिन एक बोझ उठाएगा;
101 (वह लोग) हमेशा उसी में रहेंगे और यह बहुत बुरा बोझ होगा जिसको वह
क़ियामत के दिन लादे होंगे।
102 जिस दिन सूर फूँका जाएगा और हम मुजरिमों को (इस हालत में) इकट्ठा
करेंगे, और उनकी आँखें नीली पड़ गयी होंगी;
103 वे आपस में चुपके-चुपके कहेंगे ''तुम (दुनिया में) बस दस ही दिन रहे
होगे।''
104 'हम' खूब जानते हैं, ''जो कुछ यह कहेंगे, उस समय उनमें सब से बेहतर
अन्दाज़ा लगाने वाला कहेगा कि, तुम तो बस एक ही दिन ठहरे हो।''
105 और यह लोग आपसे पहाड़ों के बारे में पूछते हैं कह दीजिए कि, ''मेरा 'रब'
इन्हें (धूल की तरह) उड़ा देगा,
106 फिर ज़मीन को एक समतल मैदान बना कर छोड़ेगा।
107 न तुम उसमें कोई टेढ़-मेढ़ देखोगे और न कहीं ऊँच नीच।''
108 उस दिन लोग एक पुकारने वाले के पीछे चलेंगे और 'उसकी' पैरवी से अकड़
न दिखा सकेंगे, और सारी आवाज़ें रहमान के सामने दब जाएँगी तो एक
आहट के सिवा तुम कुछ न सुन सकोगे।
109 उस दिन सिफ़ारिश कुछ काम न आएगी, मगर उस व्यक्ति की जिसको रहमान
इजाज़त दे, और उसके बोलने को पसंद करे।

110 ‘वह’ जानता है, सब के अगले पिछले ह़ालात को; और वे अपने इल्म से उस
पर अहाता (घेरा) नहीं कर सकते।

111 तमाम चेहरे झुके होंगे, उस ज़िन्दा बाक़ी रहने वाले (अल्लाह) के सामने,
नाकाम रहेगा वह, जो ज़ुल्म लेकर आएगा।

112 और जिसने भले काम किये होंगे, और वह ईमान वाला भी होगा, तो उसके
लिए न किसी ज़ुल्म का डर होगा, और न ह़क़ मारे जाने का।

113 और इसी तरह ‘हमने’ इसे अ़रबी क़ुर्आन के रूप में उतारा है, और इसमें
तरह-तरह से चेतावनी दी, ताकि लोग उससे डरें या (अल्लाह) उनके लिए
समझ पैदा करे।

114 तो सबसे ऊँचा अल्लाह, सच्चा बादशाह है; और आप क़ुर्आन के बारे में
जल्दी न किया कीजिए, जब तक कि इसकी वह़्य आप पर पूरी न कर दी
जाए, और कहिये कि ‘‘ऐ मेरे रब, मेरे इल्म में ज़्यादती कर।’’

115 और ‘हमने’ इससे पहले आदम से एक वादा लिया था, लेकिन वह भूल गये,
और ‘हमने’ उनमें इरादे की मज़बूती न पाई।

116 और जब ‘हमने’ फ़रिश्तों से कहा कि ‘‘आदम को सज्दः करो, तो उन्होंने
सज्दः किया, मगर इब्लीस ने इन्कार किया।’’

117 तो ‘हमने’ कहा, ‘‘ऐ आदम! यह आप का और आपकी पत्नी का दुश्मन है,
तो ऐसा न हो कि यह आप दोनों को जन्नत से निकलवा दे, तो आप मुसीबत
में पड़ जाएँ

118 आप के लिए तो ऐसा (आराम) है कि न आप यहाँ भूखे रहेंगे और न नंगे;

119 और यह कि न यहाँ आप को प्यास लगेगी और न धूप।’’

120 तो शैतान ने उनको बहकाया, कहा ‘‘ऐ आदम! क्या मैं तुमको (ऐसा) पेड़
बताऊँ (जो) हमेशा की ज़िन्दगी दे और (ऐसी) बादशाहत, जो कभी न खत्म
हो?’’

121 फिर दोनों ने उस पेड़ का फल खा लिया, तो उन पर उनकी शर्मगाहें (गुप्त
अंग) खुल गईं और वे जन्नत के पत्तों से अपने को ढ़ांपने लगे, और आदम
ने अपने ‘रब’ की नाफ़रमानी की, तो वह राह से भटक गये।

122 फिर उनके रब ने उन्हें चुन लिया और उनकी तौबः क़ुबूल कर ली और सीध
ी राह बताई।

123 कहा, ‘‘आप दोनों(जन्नत से) उतरे! आप में कुछ लोग कुछ के दुश्मन होंगे’’
तो अगर ‘मेरी’ ओर से आप के पास कोई हिदायत आए, तो जो व्यक्ति मेरी
राह पर चलेगा, वह न भटकेगा, न महरूम रहेगा;

124 और जो मेरी नसीह़त से मुँह मोड़ेगा तो उसकी ज़िन्दगी तंगी में गुज़रेगी और
क़ियामत के दिन ‘हम’ उसको अन्धा उठाएँगे।’’

125 वह कहेगा, ‘‘ऐ मेरे रब! ‘तूने’ मुझे अन्धा क्यों उठाया, जबकि मैं आँखों वाला
था।’’

126 ‘वह’ कहेगा, ‘‘इसी तरह तेरे पास ‘हमारी’ निशानियाँ आयीं तो ‘तूने’ उन्हें
भुला दिया, इसी तरह आज हम तुझ को भुला देंगे।’’
127 और इसी तरह ‘हम’ उसे बदला देते हैं जो व्यक्ति ह़द से गुज़र जाता है, और
अपने ‘रब’ की निशानियों पर ईमान नहीं लाता; और आख़िरत का अ़ज़ाब
बहुत सख़्त और बहुत देर तक बाक़ी रहने वाला है।
128 तो क्या यह बात लोगों के लिए हिदायत का ज़रिया न बनी, कि ‘हम’ उनसे पहले
कितनी ही क़ौमों को हलाक कर चुके हैं, जिनकी बस्तियों में यह चलते-फिरते
हैं? इसमें उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो अक़्ल रखते हैं
129 और अगर आप के रब की ओर से पहले ही एक बात तय न हो गयी होती,
और समय निश्चित न किया जा चुका होता, तो अ़ज़ाब उनको ज़रूर पकड़
लेता।
130 तो जो कुछ यह कह रहे हैं, उस पर सब्र से काम लीजिए, और अपने ‘रब’
की तअ़रीफ़ के साथ तस्बीह़ किया कीजिए, सूरज के निकलने से पहले और
उसके डूबने से पहले, और रात की कुछ घड़ियों में और दिन के किनारों पर
तस्बीह़ किया कीजिए, ताकि आप राज़ी हो जाएँ।
131 और उनकी ओर आँख उठा कर न देखिए जो कुछ ‘हमने’ उनमें से कुछ
लोगों को दुनिया के आराम की चीज़ें दे रखी हैं, ताकि ‘हम’ उसके ज़रिये उन्हें
आज़्माएँ; और आप के ‘रब’ की रोजी़ बहुत बेहतर और बाक़ी रहने वाली
है।
132 और अपने घर वालों को नमाज़ का  हुक्म कीजिए, और खुद भी उस पर
जमे रहिए ‘हम’ आप से रोज़ी नहीं माँगते, (बल्कि) आप को ‘हम’ ही रोज़ी
देते हैं, और अच्छा अंजाम तो परहेज़गारों के लिए है।
133 और कहते हैं, ‘‘यह अपने रब की ओर से कोई निशानी हमारे पास क्यों नहीं
लाते?’’ क्या इनके पास उसका स्पष्ट प्रमाण नहीं आ चुका, जो कुछ पहले की
किताबों में मौजूद है?
134 और अगर ‘हम’ इस पहली (रसूल के आने) से पहले ही इन्हें अ़ज़ाब के
ज़रिये हलाक कर देते, तो वे कहते कि ‘‘ऐ हमारे रब! ‘तूने’ हमारे पास कोई
रसूल क्यों नहीं भेजा कि ज़लील और बदनाम होने से पहले, हम ‘तेरे’ हुक्म
पर चलते?’’
135 कह दीजिए, ‘‘हर एक इन्तिज़ार में  है, तो तुम भी इन्तिज़ार करो, जल्द ही
तुम जान लोगे कि कौन सीधी राह पर चलने वाले हैं और कौन हिदायत (सीध
ी राह) पाए हुए हैं।’’

## सूर-ए-अंबिया

यह सूरः मक्की है, इसमें अ़रबी के 5154 अक्षर, 1187 शब्द,112 आयतें और 7

रूकूअ़ हैं

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

1 क़रीब आ गया है लोगों का हिसाब, और वे ग़फ़लत में (पड़े हुए,) मुँह फेरे हुए हैं।

2 उनके पास उनके 'रब' की ओर से, जो भी नई नसीह़त आती है, मगर वे उसे हँसी-खेल बनाते हुए सुनते हैं।

3 उनके दिल ग़ाफ़िल हैं और यह ज़ालिम लोग चुपके-चुपके काना-फूसी करते हैं कि "यह तुम जैसा ही तो एक आदमी है; फिर क्या तुम देखते हुए जादू में फँस जाओगे?"

4 (मुह़म्मद ने) कहा, "मेरा 'रब' जानता है उस बात को, जो आसमान और ज़मीन में है, 'वह' खूब सुनने वाला, जानने वाला है।"

5 (नहीं,) बल्कि वे कहते हैं "यह तो उड़ते हुए सपने हैं, बल्कि उसने इसे खुद ही गढ़ लिया है, बल्कि यह शायर (कवि) है, इसे हमारे पास कोई निशानी लानी चाहिए, जैसे कि (निशानियाँ दे कर) पहले (रसूल) भेजे गये थे।"

6 इनसे पहले जिन बस्तियों को 'हमने' हलाक किया, वे ईमान न ले आयी थीं तो क्या यह ईमान ले आएँगी?

7 और आप से पहले 'हमने' मर्दों ही को (रसूल बना कर) भेजा, जिनकी ओर 'हम' वह़्य करते थे अगर आप नहीं जानते तो ज़िक्र वालों (किताब वालों ) से पूछ लीजिए;

8 और 'हमने' उनके जिस्म (शरीर) ऐसे नहीं बनाए थे जो खाना न खाते हों और न वे हमेशा रहने वाले ही थे;

9 फिर 'हमने' उनके बारे में वादा सच्चा कर दिखाया, तो उन्हें 'हमने' छुट्कारा दिया, और जिसे 'हम' चाहें, और ह़द से निकल जाने वालों को 'हमने' हलाक कर दिया।

10 'हमने' तुम्हारी ओर ऐसी किताब उतारी है, जिसमें तुम्हारे लिए नसीह़त है, क्या तुम नहीं समझते?

11 और कितनी ही ज़ालिम बस्तियाँ हैं, जिनको 'हमने' हलाक कर दिया, और उनके बाद 'हमने' दूसरे लोगों को उठा खड़ा किया।

12 जब उन्हें 'हमारा' अ़ज़ाब महसूस हुआ, तो लगे वहाँ से भागने।

13 "मत भागो, और जिन (नेमतों) में तुम ऐश व आराम करते थे उनकी और अपने घरों की ओर लौट जाओ, ताकि तुमसे (इस बारे में) पूछा जाए।

14 वे पुकार उठे, "हाय! हमारा दुर्भाग्य बेशक हम ज़ालिम थे।"

15 तो उनकी लगातार यही पुकार रही, यहाँ तक कि 'हमने' उन्हें ऐसा कर दिया, जैसे कटी हुई (खेती), बुझी हुई आग का ढ़ेर;

16 और ‘हमने’ आसमान और ज़मीन को और इन दोनों के बीच जो कुछ है,
इसलिए नहीं बनाया कि ‘हम’ कोई खेल करने वाले हों।
17 अगर ‘हम’ कोई खेल-तमाशा करना चाहते, तो अपने ही पास से कर लेते,
अगर ‘हमें’ ऐसा करना ही होता;
18 (नहीं,) बल्कि ‘हम’ तो सच को झूठ पर चोट लगाते हैं, तो वह उसका सर
तोड़ देता है, फिर क्या देखते हैं कि वह मिट कर रहता; और तबाही हो उन
बातों की वजह से जो तुम बनाते हो।
19 और आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है सब ‘उसी’ का है, और जो
(फ़रिश्ते) ‘उसके’ पास हैं, वे न तो अपने को बड़ा समझ कर ‘उसकी’ इबादत
से मुँह मोड़ते हैं, और न थकते।
20 रात और दिन तस्बीह़ करते रहते हैं, दम नहीं लेते हैं।
21 क्या लोगों ने ज़मीन की चीज़ों से (कुछ को) मअ़बूद बना लिए हैं, (तो क्या)
वह उनको (मरने के बाद) उठा खड़ा करेंगे
22 अगर इन दोनों (आसमान और ज़मीन) में अल्लाह के सिवा और मअ़बूद
होते, तो दोनों (ज़मीन व आसमान) फ़साद से भर जाते तो पाक है अल्लाह,
(जो) अर्श का ‘रब’ उन बातों से जो यह बयान करते हैं।
23 ‘वह’ जो कुछ करता है, उससे उसकी कोई पूछ नहीं होगी, और (जो काम
यह करते हैं, उसकी) इनसे पूछ होगी।
24 क्या लोगों ने अल्लाह को छोड़ कर दूसरों को मअ़बूद बना लिये हैं, कह
दीजिए, ‘‘लाओ, अपना प्रमाण, जो लोग मेरे साथ हैं उनकी किताब (क़ुर्आन)
है, और जो मुझसे पहले (रसूल) गुज़र चुके हैं, उनकी किताबें भी हैं, बल्कि
उनमें अक्सर लोग सच बात को नहीं जानते, इसलिए वह मुँह फेर लेते हैं;
25 और ‘हमने’ आप से पहले कोई ऐसा रसूल नहीं भेजा, कि जिसके पास
‘हमने’ वह़्य न भेजी हो ‘मेरे’ सिवा कोई मअ़बूद नहीं, तो ‘मेरी’ ही इबादत
करो।’’
26 और उन्होंने कहा, ‘‘रह़मान औलाद रखता है।’’ पाक है ‘वह’ बल्कि वे उसके
सम्मानित बन्दे हैं;
27 ‘वह’ उससे बढ़ कर बात नहीं कर सकते, और ‘उसी’ के हुक्म पर अ़मल
करते हैं।
28 ‘वह’ जानता है जो कुछ उनके आगे और पीछे है, और वह सिफ़ारिश नहीं
कर सकते, ‘मगर उस व्यक्ति की’ जिससे अल्लाह खुश हो और वे ‘उसके’
जलाल से डरते हों।
29 और जो आदमी उनमें से अगर यह कह दे कि ‘‘उसके सिवा मैं अल्लाह हूँ,’’
तो ‘हम’ उसे जहन्नम की सज़ा देंगे; ‘हम’ ज़ालिमों को ऐसी ही सज़ा दिया
करते हैं।
30 क्या इन्कार करने वालों ने नहीं देखा! कि आसमान और ज़मीन आपस में

मिले हुए थे, फिर 'हमने' उन्हें अलग-अलग कर दिया, और 'हमने' पानी से
हर जानदार चीज़ को बनाया, क्या फिर भी वे ईमान नहीं लाएँगे?
31 और 'हमने' ज़मीन में पहाड़ इस लिए रख दिये, ताकि ऐसा न हो कि वह
लोगों को लेकर हिलने लगे, और 'हमने' उसमें ऐसे कुशादा (चौड़े) रास्ते बनाए,
ताकि लोग रास्ता पाते रहें।
32 और 'हमने' आसमान को एक सुरक्षित छत बना दिया, और इस पर भी वे
'हमारी' निशानियों से मुँह फेरे हुए हैं।
33 और 'वही' तो है जिसने रात और दिन को, और चाँद और सूरज को पैदा
कर दिया; यह सब अपने-अपने मदार (मण्डल) में तैर रहे हैं।
34 और 'हमने' आप से पहले भी किसी इन्सान को हमेशा के लिए नहीं बनाया
था, क्या अगर आप की मौत हो जाए, तो (क्या) यह लोग हमेशा रहेंगे?
35 हर जानदार को मौत का मज़ा चखना है, और 'हम' तुम लोगों को आज़माते
हैं, बुरी और अच्छी हालत में डाल कर, और 'हमारी' ही ओर तुम लौट कर
आओगे।
36 और जब काफ़िर आप को देखते हैं, तो आप का मज़ाक़ उड़ाते हैं, (कहते
हैं) "क्या यही वह व्यक्ति है, जो तुम्हारे मअ़बूदों की चर्चा किया करता है?"
और उनका अपना हाल यह है कि रहमान के ज़िक्र से इन्कार करते हैं।
37 इन्सान जल्दबाज़ बनाया गया है, 'मैं' जल्द ही तुमको अपनी निशानियां दिखा
दूँगा, तो तुम जल्दी मत मचाओ।
38 और कहते हैं, "यह वादा कब पूरा होगा, अगर तुम सच्चे हो।"
39 अगर इन काफ़िरों को उस वक़्त की ख़बर होती, जब आग को न रोक सकेंगे
अपने चेहरों से, और न अपनी पीठों से, और न ही उनको कोई मदद पहुँच
सकेगी;
40 बल्कि वह तो अचानक आ जाएगी और उन्हें बदहवास कर देगी, फिर न तो
उन्हें उसको दूर करने की ताक़त होगी, और न उन्हें मोहलत ही मिलेगी।
41 और आप से पहले भी रसूलों की हँसी उड़ाई जा चुकी है, तो उनमें से जिन
लोगों ने उनकी हँसी उड़ाई थी, उन्हें उसी चीज़ ने आ घेरा, जिसकी वे हँसी
उड़ाते थे।
42 कह दीजिए, "कौन रहमान के मुक़ाबले में रात और दिन तुम्हारी रक्षा करेगा?"
बल्कि बात यह है कि वे अपने रब के ज़िक्र से मुँह फेरे हुए हैं।
43 क्या उनके पास 'हमारे' सिवा और मअ़बूद हैं; जो उनको बचा सकते हों?
वे तो खुद ही अपनी मदद नहीं कर सकते और न हमारे मुक़ाबले में उनका
कोई साथ ही दे सकता हैं;
44 बल्कि 'हमने' उन्हें और उनके बाप-दादा को खूब सामान दिया, यहाँ तक कि
उन पर एक लम्बा ज़माना गुज़र गया; तो क्या यह देखते नहीं! कि 'हम' इस
धरती की ओर इसकी सीमाओं को घटाते हुए बढ़ रहे हैं, तो क्या यह लोग
ग़ालिब रहेंगे?

45 कह दीजिए, मैं तो बस 'वह्य' के आधार पर तुम्हें डराता हूँ, और बहरे तो
पुकार सुनते ही नहीं! जबकि उन्हें डराया जाए।''
46 और अगर उनको आप के रब के अ़ज़ाब का एक झोंका भी छू जाए, तो यूँ
कहने लगते हैं कि, ''हाय! हमारा दुर्भाग्य, बेशक हम ही ज़ालिम थे।''
47 और 'हम' क़ियामत के दिन इन्साफ़ का तराज़ू क़ायम करेंगे, फिर किसी
व्यक्ति पर कुछ भी ज़ुल्म न होगा, अगर किसी का कोई अ़मल राई के दाने
के बराबर भी होगा, तो 'हम' उसे ला हाज़िर करेंगे, और 'हम' हिसाब लेने
के लिए काफ़ी हैं।
48 और 'हम' मूसा और हारून को फुरक़ान (फैसला), और रोशनी, और नसीहत
दे चुके हैं परहेज़गारों के लिए;
49 जो अपने रब से बिन देखे डरते हैं, और उन्हें क़ियामत की घड़ी का डर लगा
रहता है।
50 और यह मुबारक नसीहत है, जिसे 'हमने' नाज़िल किया, तो क्या तुम्हें इससे
इन्कार है?
51 और इससे पहले ही 'हमने' इब्राहीम को हिदायत, और समझ दी थी, और
'हम' उनको खूब जानते थे;
52 जब उन्होंने अपने बाप और अपनी क़ौम के लोगों से कहा, ''यह मूर्तियाँ क्या
हैं, जिनसे तुम लगे बैठे हो?''
53 वे बोले, ''हमने अपने बाप-दादा को इन्हीं की पूजा करते हुए पाया है।''
54 (इब्राहीम ने) कहा, ''अगर तुम और तुम्हारे बाप-दादा भी खुली गुमराही में
रहे हों।''
55 उन्होंने कहा, ''क्या तू हमारे पास ह़क़ लेकर आया है या यूँ ही खेल कर
रहा है?''
56 कहा, ''(नहीं) बल्कि तुम्हारा 'रब' वह है जो आसमानों और ज़मीन का 'रब'
है; 'उसी' ने उनको पैदा किया, और मैं इसका गवाह हूँ;
57 और अल्लाह की क़सम! मैं ज़रूर तुम्हारे बुतों के साथ एक उपाय करूँगा,
जब तुम पीठ फेर कर चले जाओगे।''
58 तो उसने उन्हें टुकड़े-टुकड़े कर डाला, सिवाय एक बड़े (बुत) के, ताकि वे
उसकी ओर रूजूअ़ करें।
59 वे कहने लगे, ''किसने हमारे देवताओं के साथ यह हरकत की है? वह तो
कोई ज़ालिम है।''
60 लोगों ने कहा, ''हमने तो एक नौजवान को उनके बारे में कुछ कहते सुना है,
जिसको इब्राहीम कहते हैं।''
61 उन्होंने कहा, ''तो उसे ले आओ लोगों की आँखों के सामने, कि वे गवाह
रहें।''
62 उन्होंने कहा, ''क्या तूने हमारे मअ़बूदों के साथ यह हरकत की है, ऐ
इब्राहीम।''

63 (इब्राहीम ने) कहा, बल्कि उनके इस बड़े ने किया है तो इनसे पूछ लो, अगर
यह बोलते हों।''
64 तो वे अपने जी में सोचने लगे फिर बोले, वास्तव में ज़ालिम तो तुम ही हो।
65 फिर वे अपने सरों के बल औंधे हो गये, ''बोले तुम्हें मालूम है कि यह बोलते
नहीं हैं।''
66 (इब्राहीम ने) कहा, ''क्या तुम अल्लाह को छोड़ कर ऐसी चीज़ों की पूजा करते
हो, जो तुम को न फ़ायदा पहुँचा सकती हैं और न नुक़्सान?-
67 अफ़्सोस है! तुम पर, जो तुम अल्लाह को छोड़ कर पूजते हो, तो क्या तुम
बुद्धि से काम नहीं लेते?''
68 उन्होंने कहा, ''जला दो इसे और अपने मअ़बूदों की मदद करो, अगर तुम्हें
कुछ करना है।''
69 'हमने' कहा, ''ऐ आग! तू ठंडी और सलामती हो जा, इब्राहीम पर।''
70 और उन्होंने उसके साथ एक चाल चलनी चाही थी, किन्तु 'हमने' उन्हीं को
घाटे में डाल दिया;
71 और 'हमने' उनको (इब्राहीम) और लूत को ऐसी ज़मीन की ओर भेजकर बचा
लिया, जिसको 'हमने' दुनिया वालों के लिए बरकत बना दिया था।
72 और 'हमने' उन्हें इस्ह़ाक़ और याक़ूब (पोता) दिये और सब को 'हमने' नेक
बनाया।
73 और 'हमने' उनको इमाम (नायक) बनाया, कि 'हमारे' हुक्म से (लोगों को)
राह बताएँ; और उनको नेक काम करने, और नमाज़ क़ायम करने, और
ज़कात देने के लिए हुक्म भेजा, और वे हमारी ही इबादत में लगे रहते थे।
74 और लूत को 'हमने' हिक्मत और समझ दी, और उसको उस बस्ती से
छुट्कारा दिया, जो गन्दे काम करते थे, बेशक वे बुरे बद्कार लोग थे।
75 और 'हमने' (लूत को) अपनी रह़मत में दाख़िल कर लिया, बेशक वह बड़े
नेक लोगों में से थे।
76 और इससे पहले 'नूह' को भी, जब उन्होंने 'हमें' पुकारा तो 'हमने' उनकी
दुअ़ा क़ुबूल की, तो 'हमने' उनको और उनके साथियों को बड़ी मुसीबत से
बचा लिया;
77 और 'हमने' उनकी मदद की, उन के मुक़ाबले में, जिन्होंने 'हमारी' आयतों को
झुठलाया था; बेशक वे बहुत बुरे लोग थे, तो 'हमने' उन सबको डुबो दिया।
78 और 'दाऊद' और 'सुलेमान' को जब वह खेत के बारे में फ़ैसला कर रहे
थे, जबकि उसमें लोगों की बकरियां जा पड़ी थीं, और 'हम' उनके मामले को
देख रहे थे।
79 तो 'हमने' इस फ़ैसले की समझ सुलेमान को दे दी, और ह़िमत व इल्म हर
एक को दिया था; और 'हमने' दाऊद के अधीन कर दिये थे पहाड़ों को, कि
वह तस्बीह़ करते थे; और पक्षियों को भी, और (ऐसा) करने वाले 'हम' ही
थे।

80 और ‘हमने’ उसे सिखाई कारीगरी लिबास (कवच) बनाने की, ताकि वह तुमको
लड़ाई में बचाए, तो क्या तुम शुक्र अदा करते हो?
81 और ‘हमने’ सुलेमान के लिए तेज़ हवा को अधीन कर दिया था, कि वह
उनके हुक्म से चलती, उस ज़मीन की ओर; जिसमें ‘हमने’ बरकत रख दी
थी, और ‘हम’ तो हर चीज़ का इल्म रखते हैं।
82 और कितने शैतानों को उनके अधीन कर दिया था, जो सुलेमान के लिए ग़ोते
लगाते, और दूसरे काम भी करते थे, और ‘हम’ ही उनको थामे रहते थे।
83 और अय्यूब को, जब उन्होंने अपने रब को पुकारा कि ‘‘मुझको तक्लीफ़ पहुँच
रही है, और ‘तू’ सबसे बढ़ कर रह़म करने वाला है।’’
84 तो ‘हमने’ उनकी दुआ़ कुबूल की, और जो उनको तक्लीफ़ थी दूर कर दी
और उनको उनके परिवार के लोग दिये, और उनके साथ उनके जैसे और
भी दिये, अपनी ओर से रह़मत के तौर पर, ताकि नसीह़त रहे, इबादत करने
वालों के लिए।
85 और इस्माईल और इद्रीस और ज़ुल्क़िफ्ल को भी, यह सब सब्र करने वाले
थे।
86 और उन्हें ‘हमने’ अपनी रह़मत में दाख़िल किया, बेशक वह नेक लोगों में से
थे।
87 और ‘ज़ुन्नून’ जबकि वह (मछली वाले) ग़ुस्सा होकर चले गये, तो यह समझे
कि ‘हम’ उन पर तंगी न करेंगे, तो उन्होंने अन्धेरों में पुकारा कि ‘तेरे’ सिवा
कोई मअ़बूद (उपास्य) नहीं, ‘तू’ पाक है, बेशक मैं ही ख़ताकार हूँ।’’
88 तो ‘हमने’ उनकी दुआ़ कुबूल की, और उन्हें ग़म से छुट्कारा दिया, और इसी
तरह ‘हम’ ईमान वालों को, छुट्कारा दिया करते हैं।
89 और ज़करीया (को याद करो) जबकि उन्होंने अपने रब को पुकारा, ‘‘ऐ मेरे
‘रब’! मुझे अकेला न छोड़, और ‘तू’ सबसे अच्छा वारिस है।’’
90 तो ‘हमने’ उनकी दुआ़ कुबूल की और उसे ‘यह़्या’ को दिया, और उसकी
पत्नी को उनके लिए ठीक (औलाद के क़ाबिल) कर दिया; बेशक वे नेकी के
कामों में एक-दूसरे के मुक़ाबले में जल्दी करते थे, और हमें रग़बत (लगाओ)
और डर के साथ पुकारते और ‘हमारे’ सामने नर्म (डरते) रहने वाले थे।
91 और वह (मरयम) जिन्होंने अपनी पाक दामनी (सतीत्व) को बचाए रखा, तो
‘हमने’ उनमें अपनी रूह़ फूँक दी और उनको और उनके बेटे को सारी दुनिया
के लिए एक निशानी बना दिया।
92 यह तुम्हारी जमाअ़त एक ही जमाअ़त है और ‘मैं’ तुम्हारा ‘रब’ हूँ,’ तो तुम
‘मेरी’ ही इबादत किया करो।’’
93 और उन्होंने अपने मामले (दीन) को टुकड़े-टुकड़े कर डाला- सब ‘हमारे’ पास
ही वापस आने वाले हैं,
94 तो जो कोई नेक काम करेगा, और वह ईमान वाला भी हो, तो उसकी कोशिश
बेकार जाने वाली नहीं, और ‘हम’ तो उसे लिख लेते हैं।

95 और जिस बस्ती को ‘हमने’ हलाक कर दिया, कि (रूजूअ़ करें) वह रूजूअ़ नहीं करेंगे।
96 यहाँ तक कि याजूज और माजूज खोल दिये जाएँ, और वे हर ऊँची जगह से निकल पड़ें।
97 और सच्चा वादा क़रीब आ जाए तो अचानक उन लोगों की आखें फटी की फटी रह जाएँ जिन्होंने इन्कार किया, “हाय हमारा दुर्भाग्य! हम इससे ग़फ़लत में पड़े थे, बल्कि हम ही ज़ालिम थे।”
98 “बेशक तुम और जिन की तुम अल्लाह के सिवा इबादत करते रहे जहन्नम के ईंधन होंगे, उसमें तुम दाख़िल हो कर रहोगे।”
99 अगर यह लोग मअ़बूद होते, तो इसमें क्यों जाते, और इन सब को हमेशा इसी में रहना होगा।
100 वहाँ भी चीख़ते-चिल्लाते रहेंगे, और कुछ न सुन सकेंगे।
101 जिन लोगों के लिए पहले ही ‘हमारी’ ओर से भलाई निश्चित हो चुकी है, वे इससे दूर रखे जाएँगे।
102 वे उसकी आहट तक न सुनेंगे, और अपनी मन चाही (नेअ़मतों में) हमेशा रहेंगे।
103 उन्हें सबसे बड़ी घबराहट ग़म में न डालेगी, और फ़रिश्ते उनका स्वागत करेंगे, “और यही है तुम्हारा वह दिन जिसका तुमसे वादा किया जाता था;
104 जिस दिन ‘हम’ आसमान को लपेट देंगे, जैसे तुमार (रोल) में काग़ज़ लपेटे जाते हैं, जिस तरह ‘हमने’ (दुनिया को) पहले पैदा किया था, फिर ‘हम’ उसे दोहरावेंगे, और यह वादा है, ‘हमारे’ ज़िम्मे, ‘हम’ इस काम को करके रहेंगे।
105 और ‘हमने’ ज़बूर में नसीहत के बाद लिख दिया था कि “धरती के वारिस ‘हमारे’ नेक बन्दे होंगे।”
106 इसमें एक सन्देश है इबादत करने वालों के लिए।
107 और ‘हमने’ आप को सारी दुनिया के लिए रह़मत बना कर भेजा है।
108 कह दीजिए, “मेरे पास यह वह़्य आयी है कि, ‘तुम्हारा मअ़बूद ‘वही’ एक अल्लाह है,’ तो क्या तुम मुस्लिम (आज्ञाकारी) होते हो?”
109 फिर भी अगर यह लोग मुँह फेरें तो कह दीजिए, “मैंने तुम्हें खुल्लम- खुल्ला सचेत कर दिया, अब मैं यह नहीं जानता कि जिसका तुमसे वादा किया जा रहा है वह क़रीब है या दूर।”
110 ‘वह’ ऊँची आवाज़ में कही हुई बात को भी जानता है, और उसे भी जानता है जो तुम छिपा कर करते हो।
111 और मुझे नहीं मालूम, हो सकता है कि वह तुम्हारे लिए आज़माइश हो, और एक मुद्दत (अवधि) तक के लिए फ़ायदा,
112 कहा, “ऐ मेरे रब! ह़क़ के साथ फ़ैसला कर दीजिए! और हमारा ‘रब’ रह़मान है, ‘उसी’ से मदद माँगी जाती है, उन बातों के मुक़ाबले में जो तुम बयान करते हो।

यह सूरः मक्की है, इसमें अ़रबी के 5432 अक्षर, 1283 शब्द,78 आयतें और 10 रूकूअ़ हैं।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

1 ऐ लोगो! अपने रब से डरो, क़ियामत का ज़लज़ला बड़ी भारी चीज़ है;
2 जिस दिन तुम उसे देखोगे, हर दूध पिलाने वाली, अपने दूध पीते (बच्चे) को भूल जाएगी, और जितनी ह़मल वालियां (गर्भवती) हैं सब अपना ह़मल डाल देंगी, और लोग तुझे नशा की ह़ालत में दिखाई देंगे, हालाँकि वे नशे में न होंगे, बल्कि अल्लाह का अ़ज़ाब है ही सख़्त चीज़।
3 और कुछ लोग ऐसे भी हैं, जो अल्लाह के बारे में बिना इल्म के झगड़ा किया करते हैं, और हर सरकश शैतान के पीछे हो लेते हैं।
4 (जबकि) उसके लिए लिखा जा चुका है, कि जो उससे दोस्ती रखेगा, तो उसे वह गुमराह कर के रहेगा, और उसको दोज़ख के अ़ज़ाब की राह दिखा देगा।
5 ऐ लोगो! अगर तुमको (दोबारा) जी उठने में कुछ शक हो तो 'हमने' तुमको मिट्टी से, फिर बूंद से, फिर खून के लोथड़े से, फिर उससे बोटी बना कर पैदा किया जिस की बनावट अधूरी भी और पूरी भी होती है, ताकि 'हम' तुम्हारे सामने (हक़) ज़ाहिर कर दें, और 'हम' रह़िम (गर्भाशय) में जिसको चाहते हैं एक निश्चित समय तक ठहराए रखते हैं, फिर तुमको बच्चे की शक्ल में निकालते हैं कि तुम अपनी जवानी को पहुँचो; और तुम में से कोई तो पहले मर जाता है, और कोई बुढ़ापे की बद्तरीन आयु तक पहुँचा दिया जाता है कि जानने के बाद भी वह कुछ नहीं जानता; और तुम देखते हो कि धरती सूखी पड़ी है, फिर जब 'हम' उस पर पानी बरसाते हैं, तो वह हरी भरी हो जाती है, और फूलने लगती है और हर तरह की सुन्दर चीज़ें उगाती है।
6 यह इसलिए कि अल्लाह ही ह़क़ है, और यह कि 'वह' मुर्दो को ज़िन्दा करता है, और यह कि 'उसे' हर चीज़ पर क़ुद्रत (सामर्थ्य) है।
7 और यह कि वह घड़ी ज़रूर आनी है, इसमें किसी तरह का सन्देह नहीं, और जो लोग क़ब्रों में हैं, अल्लाह उन्हें उठा खड़ा करेगा।
8 और इन्सानों में कुछ लोग ऐसे भी होते हैं, जो अल्लाह के बारे में झगड़ते हैं, हालाँकि न उनके पास इल्म है, न सूझ-बूझ, और न कोई रौशन किताब;
9 अकड़ते हुए, ताकि लोगों को अल्लाह की राह से गुमराह करें, ऐसों के लिए दुनिया में भी रूसवाई है, और क़ियामत के दिन 'हम' उसको जलती हुई आग का अ़ज़ाब चखाएँगे।
10 कि "यह तेरे ही हाथों के करतूतों का बदला है, और यह कि अल्लाह बन्दों पर ज़रा भी ज़ुल्म करने वाला नहीं।"

11 और इन्सानों में कुछ ऐसे भी होते हैं, जो अल्लाह की इबादत किनारे पर (खड़े
होकर) करते हैं, फिर अगर उसे कोई फ़ायदा पहुँच गया तो उस पर जमा
रहता है, और अगर उस पर कोई आज़माइश आ गई तो वह मुँह के बल
पलट जाता है, उसने दुनिया को भी खो दिया और आख़िरत को भी, यही है
खुला हुआ घाटा;
12 यह अल्लाह को छोड़ कर उसे पुकारते हैं, जो न उन्हें नुक़्सान पहुँचा सकें
और न नफ़ा पहुँचा सकें, यही तो भटक कर दूर होना है।
13 वे उन्हें पुकारते हैं जिनका नुक़्सान उनके फ़ायदे से ज़्यादा क़रीब है, बहुत ही
बुरा दोस्त है वह, और बहुत ही बुरा साथी!
14 बेशक अल्लाह उन लोगों को, जो ईमान लाए और उन्होंने भले काम किये,
ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, बेशक अल्लाह
जो चाहे करता है।
15 जो व्यक्ति यह समझता है कि अल्लाह दुनिया और आखिरत में उस (रसूल)
की हरगिज़ कोई मदद न करेगा, तो उसे चाहिए कि वह आसमान की ओर
एक रस्सी ताने, फिर (मदद) काट दे, फिर देख ले कि क्या उसका उपाय उस
चीज़ को दूर कर सकता है, जो उसे गुस्से में डाले हुए है।
16 और इसी तरह 'हमने' इस (क़ुर्आन) को स्पष्ट दलीलों के रूप में उतारा है,
और अल्लाह जिसे चाहता है हिदायत देता है।
17 जो लोग ईमान लाए, और जो यहूदी हुए, और साबिई, और ईसाई, और
मजूसी, और जिन लोगों ने शिर्क किया- इन सब के बीच अल्लाह क़ियामत
के दिन फ़ैसला कर देगा; बेशक अल्लाह हर चीज़ को देख रहा है।
18 क्या तुमने देखा नहीं! कि अल्लाह ही को सज्दः करते हैं, वे सब जो आसमानों
में हैं, और जो ज़मीन में है, और सूरज- चाँद, तारे, पहाड़, वृक्ष, जानवर,
। और बहुत से इन्सान ऐसे हैं जिन पर अ़ज़ाब तय हो चुका, और जिसे
अल्लाह अपमानित करे उसे कोई इज़्ज़त देने वाला नहीं, बेशक अल्लाह जो
चाहता है करता है।
19 यह दो फ़रीक़ (विवादी) हैं, जिन्होंने अपने 'रब' के बारे में झगड़ा किया; तो
जो लोग काफ़िर हैं, उनके लिए आग के कपड़े काटे जाएँगे, उनके सरों पर
खौलता हुआ पानी डाला जाएगा;
20 इससे जो कुछ उनके पेटों में है, पिघल जाएगा और खालें भी।
21 और उनके (मारने के) लिए लोहे के गुर्ज़ (हथौड़े) होंगे।
22 जब कभी वे घबरा कर उससे निकलना चाहेंगे तो उसी में लौटा दिये जाएँगे,
और (कहा जाएगा), "चखो दहकती आग का मज़ा।"
23 जो लोग ईमान लाए, और भले काम किये, अल्लाह उनको ऐसे बाग़ों में दाख़िल
करेगा, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, वहाँ उन्हें सोने के कंगनों और मोती
के ज़ेवरात पहनाए जाएँगे, और वहाँ उनका पहनावा रेशम का होगा;

24 और उनको राह मिली अच्छी और पाक बातों की, और उनको तअ़रीफ़ वाले
(अल्लाह) की राह दिखाई गयी।
25 जो लोग काफ़िर हैं, और रोकते हैं अल्लाह की राह से, और मस्जिदे ह़राम
से, जिसको 'हमने' सब लोगों के लिए ऐसा बनाया है कि उसमें बराबर है,
वहाँ का रहने वाला और बाहर से आया हुआ, और जो कोई भी उसके अन्दर
किसी बेदीनी का इरादा ज़ुल्म से करेगा, 'हम' उसे दुःख देने वाला अ़ज़ाब
चखाएँगे।
26 और जब 'हमने' इब्राहीम के लिए (अल्लाह के) घर को ठिकाना बनाया, (और
कहा) कि, "मेरे साथ किसी को साझीदार न बनाइयेगा, और 'मेरे' घर को
पाक रखिएगा, तवाफ़ करने वालों, और क़ियाम व रूकूअ़ और सज्दे करने
वालों के लिए।"
27 और लोगों में ह़ज का एलान कर दीजिए "(लोग) आप के पास पैदल भी
आएँगे, और दुबली-दुबली ऊँटनियों पर भी, जो दूर-दूर के रास्तों से पहुँची
होंगी;
28 ताकि अपने फ़ायदे को देखें जो उनके लिए रखे गये, और (क़ुर्बानी) निश्चित
दिनों में, मवेशी-चौपायों पर अल्लाह का नाम लें, जो (अल्लाह ने) उन्हें दिये
हैं फिर उसमें से खुद भी खाओ और तंगदस्त मोहताजों को भी खिलाओ।"
29 फिर उन्हें चाहिए कि लोग अपना मैल -कुचैल दूर करें, और अपनी मन्नतें
पूरी करें और इस क़दीम (प्राचीन) घर का तवाफ़ (परिक्रमा) करें।
30 यह और जो व्यक्ति अल्लाह की ठहरायी हुई हुरमतों (अल्लाह की बाँधी हुई
पाबंदियों) की इ़ज़्ज़त करेगा, तो यह उसके 'रब' के यहाँ उसके लिए बेहतर
है; और तुम्हारे लिए मवेशी ह़लाल किये गये, सिवाय उनके जिनका हुक्म तुम्हें
सुना दिया गया; तो मूर्तियों की बन्दगी से बचो, और बचो झूठी बात से;
31 इस तरह कि अल्लाह ही की ओर के होकर 'उसके' साथ किसी को साझीदार
न ठहराओ, और जो व्यक्ति अल्लाह के साथ साझीदार ठहराता है, तो मानो
वह आसमान से गिर पड़ा, फिर चाहे उसे पक्षी उचक ले जाएँ या हवा उसे
किसी दूर जगह फेंक दे।
32 यह (है हमारा हुक्म) और जो व्यक्ति अल्लाह के निश्चित किये हुए निशानों
का आदर करे, तो यह दिलों के परहेज़गारी की बात है।
33 उनमें एक निश्चित समय तक तुम्हारे लिए फ़ायदे हैं, फिर उनको उस क़दीम
(पुरातन) घर तक पहुँचना है।
34 और 'हमने' हर उम्मत के लिए क़ुर्बानी का तरीक़ा निश्चित किया, ताकि वह
उन जानवरों पर अल्लाह का नाम लें, जो 'उसने' उन्हें दिये हैं; तुम्हारा अल्लाह
'एक ही अकेला अल्लाह है;' तो अपने को 'उसी' के हवाले कर दो और नर्मी
(विनम्रता) अपनाने वाले को खुशख़बरी सुना दो;
35 जिनका ह़ाल यह है कि जब उनके सामने अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है, तो
उनके दिल दहल जाते हैं; जो मुसीबत में सब्र करने वाले और नमाज़ क़ायम
करने वाले हैं; और जो रोज़ी 'हमने' उन्हें दी है उसमें से वे खर्च करते हैं।

36 और (कुर्बानी के) जानवरों को भी 'हमने' तुम्हारे लिए अल्लाह की निशानियों
में से बनाया है, तुम्हारे लिए उनमें भलाई है, तो उन्हें क़तार में खड़ा कर के
उन पर अल्लाह का नाम लिया करो, फिर जब वे अपने पहलुओं के बल गिर
पड़ें, तो खुद भी उनमें से खाओ और सब्र करने वालों और मांगने वालों को
भी खिलाओ, इस तरह 'हमने' उनको तुम्हारे बस में कर दिया, ताकि तुम
शुक्र करो।
37 अल्लाह तक न उनका गोश्त पहुँचता है, और न उनका खून, लेकिन 'उसके'
पास तुम्हारा तक़्वा (परहेज़गारी) पहुँचता है, इसी तरह अल्लाह ने उनको
तुम्हारे क़ाबू में कर दिया, कि 'उसने' जो तुमको राह सुझाई है, उस बदले में
अल्लाह की बड़ाई बयान करो, और (ऐ नबी) नेक लोगों को खुशख़बरी सुना
दीजिए।
38 अल्लाह उन लोगों की ओर से दिफ़ा (प्रतिरक्षा) करता है, जो ईमान लाए,
बेशक अल्लाह पसंद नहीं करता किसी ख़ियानत (दग़ाबाज़ी) करने वाले, कुफ्र
करने वाले को।
39 (उन लोगों को) इजाज़त दी जाती है जिनके विरूद्ध युद्ध किया जा रहा है,
क्योंकि उन पर ज़ुल्म हो रहा है, और अल्लाह उनकी मदद करने पर क़ादिर
(सामर्थ्य) है;
40 (यह वे लोग हैं) जो अपने घरों से नाहक़ निकाले गये, केवल इस बात पर
कि वे कहते हैं, ''हमारा 'रब' अल्लाह है,'' अगर अल्लाह लोगों को एक -
दूसरे से न हटाता रहता, तो खानक़ाहें (मठ), और गिरजा, और यहूदी प्रार्थना
भवन, और मस्जिदें जिनमें अल्लाह का खूब नाम लिया जाता है, सब ढ़ा दिये
जाते, और अल्लाह उसकी ज़रूर मदद करेगा, जो 'उसकी' मदद करेगा; बेशक
अल्लाह बड़ा ज़बर्दस्त, ताक़त वाला है;
41 तो यह वे लोग हैं कि अगर धरती पर 'हम' इन्हें सत्ता दें, तो वे नमाज़
क़ायम करेंगे, और ज़कात देंगे, और भली बात का हुक्म करेंगे और बुराइयों
से रोकेंगे; और सब मामलों का अंजाम तो अल्लाह ही के हाथ में है।
42 और अगर ये लोग आप को झुठलाते हैं तो, इनसे पहले क़ौमे नूह़, और आ़द,
और समूद ने भी झुठलाया था;
43 और क़ौमे इब्राहीम और क़ौमे लूत भी, (झुठला चुकी है;)
44 और मद्‌यन वालों ने भी झुठलाया था, और मूसा भी झुठलाए जा चुके हैं, तो
'मैंने' काफ़िरों को मोहलत दी, फिर 'मैंने' उन्हें पकड़ लिया, तो (देखो) मेरा
अ़ज़ाब कैसा रहा;
45 और कितनी ही बस्तियाँ हैं जिन्हें 'हमने' हलाक कर डाला कि वे ज़ालिम थीं
तो वे अपनी छतों के बल गिरी पड़ी हैं, और कितने ही कुएँ बेकार हो गये,
और कितने ही पक्के महल।
46 तो क्या यह लोग ज़मीन पर चले फिरे नहीं! कि इनके दिल ऐसे हो जाते जिनसे
यह समझने लगते, या कान ऐसे हो जाते जिनसे यह सुनने लगते? वास्तव में
आँखें अन्धी नहीं हुआ करतीं, बल्कि दिल अन्धे हो जाया करते हैं। जो सीनों
में हैं।

47 और आप से (यह लोग) अ़ज़ाब की जल्दी मचा रहे हैं, और अल्लाह कभी
अपने वादा के ख़िलाफ़ न करेगा, और आपके 'रब' के यहाँ का एक दिन,
तुम लोगों की गिनती के अनुसार, एक हज़ार वर्ष के बराबर है।
48 और कितनी ही बस्तियाँ हैं जिनको मोहलत दी और वे ज़ालिम थीं फिर 'मैंने'
उन्हें पकड़ लिया, और 'मेरी' ही ओर लौट कर आना है।
49 कह दीजिए, "ऐ लोगो! मैं तो तुम्हारे लिए एक साफ़-साफ़ सचेत करने वाला
हूँ।"
50 तो जो लोग ईमान लाए, और भले काम किये, उनके लिए मग़्फ़िरत (क्षमा)
और इ़ज़्ज़त की रोज़ी है।
51 और जो लोग कोशिश करते रहते हैं, हमारी निशानियों के बारे में नीचा दिखाने
के लिए, वही लोग दोज़ख वाले हैं।
52 और 'हमने' आप से पहले कोई रसूल और कोई नबी ऐसा नहीं भेजा, मगर
यह कि जब वह कोई तमन्ना करता था तो शैतान उसकी तमन्ना में (वस्वसा)
डाल देता था, मगर अल्लाह शैतान के डाले हुए (वस्वसे) को मिटाता है, फिर
अल्लाह अपनी आयतों को मज़बूत करता है, और अल्लाह सब कुछ जानने
वाला, हि़क्मत वाला है;
53 ताकि यह शैतान के डाले हुए वस्वसे को उन लोगों के लिए आज़माइश बना
दे, जिनके दिलों में रोग है, और जिनके दिल कठोर हैं, बेशक यह ज़ालिम
विरोध में बहुत दूर जा पड़े;
54 और ताकि यह लोग जिन लोगों को इल्म दिया गया है, वे जान लें कि यह
आप के रब की ओर से ह़क़ है, तो वह इस पर ईमान लाएँ, और उसके
सामने उनके दिल झुक जाएँ, और अल्लाह ईमान वालों को सीधी राह दिखा
देता है।
55 और जिन लोगों ने इन्कार किया, वे हमेशा उसकी ओर से शक ही में पड़े
रहेंगे, यहाँ तक कि क़ियामत अचानक उन पर आ जाए या मह़रूमी के दिन
का अ़ज़ाब आ जाए,
56 उस दिन बादशाही अल्लाह ही की होगी, 'वह' उनके बीच फ़ैसला कर देगा,
तो जो लोग ईमान लाए, और उन्होंने अच्छे अ़मल किये, वह नेअ़मत के बाग़ों
में होंगे।
57 और जिन लोगों ने इन्कार किया और 'हमारी' आयतों को झुठलाया, उनको
ज़िल्लत वाला अ़ज़ाब होगा;
58 और जिन लोगों ने अल्लाह की राह में घर-बार छोड़ा, फिर क़त्ल कर दिये
गये या मर गये, अल्लाह उनको ज़रूर अच्छी रोज़ी देकर रहेगा; और बेशक
अल्लाह सब से बेहतर रोज़ी देने वाला है।
59 'वह' उन्हें ऐसी जगह दाख़िल करेगा, जिससे वह खुश हो जाएँगे, बेशक
अल्लाह जानने वाला, ह़लीम (सहनशील) है।
60 यह है (उनका बदला) और जो व्यक्ति बदला ले, वैसा ही जैसा कि उसके साथ

किया गया, फिर उस व्यक्ति पर ज़्यादती की जाए, तो अल्लाह ज़रूर उसकी मदद करेगा; बेशक अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला, बड़ा बख़्शने वाला है।
61 यह इसलिए कि अल्लाह रात को दिन में दाख़िल करता है, और दिन को रात में, और अल्लाह सुनता, देखता है;
62 यह इसलिए भी कि अल्लाह ही बरहक़ (सत्य) है और अल्लाह के सिवा जिन को यह पुकारते हैं, वे सब असत्य हैं और इस लिए कि अल्लाह ऊँची शान वाला, बड़ा है।
63 क्या तुमने देखा नहीं! कि अल्लाह आसमान से पानी बरसाता है, तो ज़मीन हरी भरी हो जाती है? बेशक अल्लाह बारीक (सूक्ष्म) चीज़ों का जानने वाला, और ख़बर रखने वाला है।
64 'उसी' का है जो कुछ आसमान में है और जो कुछ ज़मीन में है, और बेशक अल्लाह बेनियाज़ (निस्पृह) और सब तअ़रीफ़ों के लायक़ है।
65 क्या तुमने देखा नहीं! कि अल्लाह ही ने तुम्हारे लिए काम में लगा रखा है? जो ज़मीन पर है, और नाव को भी, कि वह 'उसके' हुक्म से समुद्र में चलती हैं, और 'उसी' ने आसमान को धरती पर गिरने से रोक रखा है, मगर हाँ 'उसकी' इजाज़त हो तो बात दूसरी है; बेशक अल्लाह इन्सानों के हक़ में बड़ी नर्मी करने वाला मेहरबान है।
66 और 'वही' तो है जिसने तुमको ज़िन्दगी दी, फिर तुम्हें मौत देगा फिर तुमको ज़िन्दा करेगा; इन्सान बड़ा ही नाशुक्रा है।
67 हर उम्मत (समुदाय) के लिए 'हमने' इबादत का एक तरीक़ा निर्धारित किया है, जिस पर वे चल रही हैं, तो ये लोग इस मामले में आप से न झगड़ें, आप अपने 'रब' की ओर बुलाते रहिए, बेशक आप सीधी राह पर हैं।
68 और अगर यह आप से झगड़ा करें तो कह दीजिए, "तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उसे (खूब) जानता है।"
69 अल्लाह क़ियामत के दिन तुम्हारे बीच इस बात का फ़ैसला कर देगा, जिन बातों में तुम मतभेद करते हो।
70 क्या तुम्हें मालूम नहीं! कि अल्लाह जानता है, जो कुछ आसमान और ज़मीन में है, यह सब एक किताब में है? बेशक यह अल्लाह के लिए बहुत आसान है।
71 यह लोग अल्लाह को छोड़ कर उन चीज़ों की पूजा करते हैं, जिनके लिए अल्लाह ने कोई प्रमाण नहीं उतारा, और न उनके बारे में उनको कोई इल्म है; और इन ज़ालिमों का कोई मदद्गार नहीं।
72 और जब उनको 'हमारी' साफ़-साफ़ आयतें सुनाई जाती हैं तो उनके चेहरों से नागवारी झलक रही होती है, जैसे वे उन लोगों पर हमला कर बैठेंगे जो 'हमारी' आयतें उनको सुनाते हैं, कह दीजिए, "मैं तुम्हें बताऊँ कि इससे बद्तर चीज़ क्या है? और आग जिसको अल्लाह ने काफ़िरों से वादा कर रखा है और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है।"
73 ऐ लोगो! एक मिसाल बयान की जाती है, इसे ध्यान से सुनो! अल्लाह के सिवा

जिनको तुम पुकारते हो, वे एक मक्खी भी पैदा नहीं कर सकते, चाहे वे सब इकट्ठा क्यों न हो जाएँ; और अगर मक्खी उनसे कोई चीज़ छीन ले, तो वे उससे छुड़ा भी नहीं सकते, तालिब (मदद चाहने वाला) भी कमज़ोर और मतलूब भी (जिनसे मदद चाही)।
74 उन्होंने अल्लाह की जैसी क़दर करनी चाहिए थी नहीं की, बेशक अल्लाह बड़ा ज़बर्दस्त, ताक़त वाला (प्रभुत्वशाली) है।
75 अल्लाह फरिश्तों में से और इन्सानों में से पैग़ाम पहुँचाने वाले चुन लेता है, बेशक अल्लाह खूब सुनने वाला, देखने वाला है।
76 'वह' जानता है जो कुछ उनके आगे है, और जो कुछ उनके पीछे है, और सभी मामले अल्लाह ही की ओर पलट्ते हैं।
77 ऐ ईमान वालो! रूकूअ़ करो, सज्दः करो, अपने 'रब' की इबादत करो, और भलाई के काम करो, ताकि तुम कामियाब हो।
78 और अल्लाह की राह में, जिहाद करो जैसा कि जिहाद करने का ह़क़ है, 'उसने' तुम्हें चुन लिया, और तुम्हारे लिए दीन में कोई तंगी नहीं रखी, (और) तुम्हारे बाप इब्राहीम का दीन (तुम्हारे लिए पसंद किया) है; 'उसने' तुम्हारा नाम पहले (की किताबों में) भी मुस्लिम (आज्ञाकारी) रखा था, और इसमें भी ताकि रसूल तुम पर गवाह हों, और तुम लोगों पर गवाह हो, तो नमाज़ क़ायम करो, और ज़कात दो, और अल्लाह को मज़बूती से पकड़े रहो, 'वही' तुम्हारा मौला (संरक्षक) है, तो 'वह' क्या ही अच्छा मौला है, और क्या ही अच्छा मदद्गार।

## सूर-ए-मुमिनून

यह सूरः मक्के में उतरी, इसमें अ़रबी के 4538 अक्षर 1070 शब्द,118 आयतें और 6 रूकूअ़ हैं।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु महादयालु) है।

1 (बेशक) कामियाब हो गये ईमान वाले,
2 जो अपनी नमाज़ में खुशूअ़ (विनम्रता) अपनाते हैं;
3 और जो व्यर्थ बातों से मुँह फेर लेते हैं
4 और जो ज़कात अदा करते हैं;
5 और जो अपनी शर्मगाहों (गुप्त अंगों) की ह़िफ़ाज़त (रक्षा) करते हैं,
6 सिवाय अपनी पत्नियों के, या बाँदियों के, जो उनकी सम्पत्ति हैं, तो उनके बारे में कोई मलामत नहीं।
7 तो जो इसके सिवा ढूँढ़े, तो यही लोग ह़द से बाहर निकलने वाले हैं।

8 और जो अपनी अमानतों और अ़हद (प्रतिज्ञा) का ध्यान रखते हैं;
9 और जो अपनी नमाज़ों की ह़िफ़ाज़त (रक्षा) करते हैं;
10 यही लोग वारिस होने वाले हैं;
11 जो फ़िरदौस (जन्नत) के वारिस होंगे, उसमें वे हमेशा रहने वाले हैं।
12 और 'हमने' इन्सान को मिट्टी के जौहर (तत्व) से बनाया।
13 फिर 'हमने' उसे नुत्फ़ा (वीर्य) बना कर एक सुरक्षित जगह में रखा;
14 फिर 'हमने' उस नुत्फ़े (वीर्य) को जमे हुए खून का रूप दिया, फिर जमे हुए खून के टुकड़े को हड्डियों का रूप दिया, फिर हड्डियों पर गोश्त चढ़ाया, फिर 'हमने' उसे एक नई सूरत में बना दिया, तो अल्लाह बड़ी बरकत वाला और सबसे अच्छा पैदा करने वाला है।
15 फिर इसके बाद तुम को निश्चित रूप से मरना है;
16 फिर निश्चय ही क़ियामत के दिन उठाए जाओगे।
17 और 'हमने' तुम्हारे ऊपर सात आसमान पैदा किये, और 'हम' मख़्लूक़ (सृष्टि) की ओर से ग़ाफ़िल नहीं;
18 और 'हमने' ही एक अन्दाज़े के साथ पानी उतारा, फिर उसको ज़मीन में ठहरा दिया, और 'हम' उस पर क़ादिर हैं कि उसको ग़ायब कर दें;
19 फिर 'हमने' उसके ज़रिये तुम्हारे लिए खजूरों और अंगूरों के बाग़ पैदा किये; तुम्हारे लिए उनमें बहुत से फल हैं और उसमें से तुम खाते भी हो;
20 और वह वृक्ष भी जो 'तूर-ए-सैना' (पर्वत) से निकलता है, जो तेल और खाने वालों के लिए सालन लिए हुए उगता है;
21 और तुम्हारे लिए मवेशियों में भी बड़ा सबक़ है कि उनके पेटों में जो कुछ है उससे 'हम' तुम्हें (दूध) पिलाते हैं, और तुम्हारे लिए उनमें बहुत से फ़ायदे हैं और कुछ को तुम खाते भी हो,
22 और उन पर, और नावों पर तुम सवार होते हो।
23 और 'हमने' नूह़ को उनकी क़ौम की ओर भेजा, तो उन्होंने कहा, "ऐ मेरी क़ौम! 'अल्लाह की इबादत करो,' उसके सिवा तुम्हारा कोई मअ़बूद (उपास्य) नहीं, क्या तुम डरते नहीं?"
24 तो उनकी क़ौम के सरदार, जिन्होंने इन्कार किया था, कहने लगे कि "यह तुम ही जैसा एक इन्सान है, तुम पर यह बड़ापन जमाना चाहता है", और अगर अल्लाह को मंज़ूर होता तो फ़रिश्तों को भेजता, हमने तो ऐसी बात अपने अगले बाप-दादों से कभी नहीं सुनी;
25 यह तो बस एक जुनूनी आदमी है, तो कुछ दिन इसके बारे में इन्तिज़ार करो।"
26 (नूह़ ने दुआ़ की) कहा, "ऐ मेरे रब! मेरी मदद कर, इस बात पर कि इन्होंने मुझे झुठलाया।"
27 तब 'हमने' उनकी ओर वह़्य की कि "हमारी आँखों के सामने और हमारी वह़्य के अनुसार नाव बनाइए और फिर जब 'हमारा' हुक्म आ जाए, और तूफ़ान उमंड पड़े, तो हर तरह के नर और मादा का जोड़ा उसमें रख लीजिए,

और अपने घर वालों को साथ ले लीजिए, और जिन के विरूद्ध पहले ही फ़ैसला हो चुका है, और ज़ालिमों के बारे में मुझ से कुछ न कहिए, वे तो डूब कर ही रहेंगे;
28 फिर जब आप नाव पर सवार हो जाएँ, और आप के साथी भी तो कहिए 'तअ़रीफ़ है अल्लाह की, जिसने हमें ज़ालिम लोगों से छुट्कारा दिया,
29 और कह दीजिए ''ऐ मेरे 'रब' मुझे बरकत के साथ उतार, और 'तू' सबसे अच्छा उतारने वाला है।''
30 बेशक इसमें कितनी ही निशानियाँ हैं, और आज़्माइश तो 'हम' करते ही हैं।
31 फिर 'हमने' इनके बाद दूसरे गिरोह को पैदा किया,
32 और उनमें 'हमने', खुद उन्हीं में से एक रसूल भेजा (उसने कहा) कि ''अल्लाह ही की इबादत करो, 'उसके' सिवा तुम्हारा कोई मअ़बूद (उपास्य) नहीं, तो क्या तुम डरते नहीं?''
33 और उनकी क़ौम में जो सरदार थे, जिन्होंने इन्कार किया, और आख़िरत के मिलने को झुठलाया, और 'हमने उन्हें दुनिया की ज़िन्दगी में ऐश भी दे रखा था, वे बोले, ''यह तो बस तुम्हारे ही तरह के एक आदमी हैं, जिस तरह का खाना तुम खाते हो, उसी तरह का यह भी खाता है और जो तुम पीते हो, उसी तरह़ का यह भी पीता है,
34 और अगर तुम अपने ही जैसे आदमी (बशर) के पीछे चल पड़े, तो तुम घाटे में रहोगे।
35 क्या यह तुम से वादा करता है, ''जब तुम मर जाओगे और मिट्टी और हड्डियों का रूप हो जाओगे तो तुम निकाले जाओगे?'
36 दूर की बात है, बहुत दूर, की जिसका तुमसे वादा किया जा रहा है?-
37 ज़िन्दगी तो बस दुनिया ही की ज़िन्दगी है, जिसमें हम मरते और जीते हैं, और हमें हरगिज़ उठाया न जाएगा,
38 यह तो एक ऐसा व्यक्ति है जिसने अल्लाह के नाम पर झूठ गढ़ा है, और 'हम' इसकी बात को हरगिज़ मानने वाले नहीं।''
39 उन्होंने कहा, ''ऐ मेरे रब! मेरी मदद कर, जो इन्होंने मुझे झुठलाया है।''
40 कहा, ''जल्द ही यह लोग शर्मिन्दा हो कर रहेंगे।''
41 तो सच ही हुआ कि एक सख़्त आवाज़ ने आ पकड़ा और 'हमने' उन को कूड़ा-करकट बना डाला; और फिट्कार हो, ऐसे ज़ालिमों पर।
42 फिर 'हमने' उनके बाद दूसरी नस्लों को पैदा किया।
43 कोई उम्मत (गिरोह) न तो अपने निर्धारित समय से आगे बढ़ सकती है, और न पीछे हट सकती है।
44 फिर 'हमने' लगातार अपने रसूल भेजे, जब भी-कभी किसी गिरोह में से कोई रसूल उनके पास पहुँचा तो उसे झुठलाते रहे, तो 'हम' भी एक के पीछे एक को लगाते चले गये; और उनकी कहानियाँ बन कर रह गईं फिटकार हो उन लोगों पर जो ईमान नहीं लाते।

45 फिर 'हमने' मूसा और उनके भाई हारून को अपनी निशानियों और खुले प्रमाण के साथ भेजा;
46 फ़िरऔन और उसके सरदारों की ओर तो उन लोगों ने घमंड किया,और वे सरकश लोग थे।
47 तो वे कहने लगे, ''क्या हम अपने ही जैसे दो आदमियों की बात मान लें, और उनकी क़ौम के लोग हमारे ग़ुलाम हैं?''
48 तो उन्होंने उन दोनों को झुठला दिया तो तबाह हो जाने वालों में शामिल हो गये।
49 और 'हमने' मूसा को किताब दी थी, ताकि वे लोग राह पा सकें।
50 और मरयम के बेटे और उनकी माँ को 'हमने' एक निशानी बनाया, और 'हमने' उन दोनों को एक ऊँची जगह पर जो ठहरने के लायक़ थी, और जहाँ स्रोत जारी था पनाह दी थी।
51 ''ऐ रसूलों पाकीज़ा चीज़ें खाओ, और अच्छा काम करो, जो कुछ आप लोग करते हैं उसे 'मैं' जानता हूँ;
52 और यह सब तुम्हारी जमाअ़तें, एक ही दीन पर हैं, और 'मैं' तुम्हारा 'रब' हूँ, तो 'मुझसे' डरते रहो।''
53 तो उन्होंने खुद अपने मामले (धर्म) को आपस में टुकड़े-टुकड़े कर डाला, हर गिरोह उसी पर खुश है, जो उसके पास है।
54 तो उन्हें एक समय तक उनको ग़फलत में डूबे रहने दें।
55 क्या यह लोग समझते हैं कि 'हम' जो उनकी माल, और सन्तान से मदद किये जा रहे हैं;
56 तो यह उनके लिए भलाइयों में जल्दी कर रहे हैं, (नहीं,) बल्कि उन्हें इसका एहसास ही नहीं है।
57 बेशक जो लोग अपने 'रब' के भय से काँपते रहते हैं,
58 और जो अपने 'रब' की आयतों पर ईमान रखते हैं,
59 और जो अपने रब के साथ किसी को साझीदार नहीं ठहराते,
60 और जो दे सकते हैं देते हैं और (हाल यह होता है कि) दिल उनके काँप रहे होते हैं, कि उन्हें अपने रब की ओर लौट कर जाना है;
61 यही वे लोग हैं, जो भलाइयों में जल्दी करते हैं और यही उनके लिए आगे लपकते हैं।
62 और 'हम' किसी व्यक्ति की ताक़त से बढ़कर उस पर बोझ नहीं डालते, और 'हमारे' पास किताब (आमाल नामा) है, जो सच-सच बतलाती है, और उन पर ज़ुल्म नहीं किया जाएगा।
63 बल्कि उनके दिल इसकी ओर से ग़फ़लत में (फंसे हुए) हैं, और उनके सिवा उनके कुछ और भी काम हैं जो यह करते रहते हैं।
64 यहाँ तक कि जब 'हम' इनके खुशहाल लोगों को अ़ज़ाब में पकड़ेंगे, तो यह तिलमिला उठेंगे।

65 (कहा जाएगा), “आज तिलमिलाओ नहीं, तुम्हें ‘हमारी’ ओर से कोई मदद मिलने वाली नहीं;
66 ‘मेरी’ आयतें तुमको पढ़-पढ़ कर सुनाई जाती थीं, तो तुम उल्टे पाँव भागते थे।
67 घमण्ड करते हुए इसी (क़ुर्आन) के साथ भपकियाँ कसते हुए बेहूदा बकवास करते।
68 तो क्या उन लोगों ने इस कलाम (क़ुर्आन) पर विचार नहीं किया, या यह कि उनके पास कोई ऐसी चीज़ आ गयी, जो उनके पहले बाप-दादा के पास न आई थी?-
69 या इन्होंने अपने रसूल को पहचाना नहीं, इसलिए इसका इन्कार कर रहे हैं,
70 या यह कहते हैं, “इसको जुनून हो गया है;” बल्कि इनका रसूल ह़क़ बात लेकर इनके पास आया है, और इनमें से बहुतों को सच बात बुरी लगती है।
71 और अगर ह़क़ (अल्लाह) उनकी ख़ुशी पर चलने लगता, तो आसमान और ज़मीन, और जो कुछ उनके बीच में है टूट-फूट गये होते, बल्कि ‘हमने’ उनको उनकी नसीह़त पहुँचाई, तो वे अपनी नसीह़त से मुँह फेरते हैं।
72 क्या आप उनसे कुछ रोज़ी माँगते हैं? रोज़ी तो आप के ‘रब’ की (दी हुई) सबसे बेहतर है, और ‘वही’ सब रोज़ी देने वालों से बेहतर है।
73 और आप तो उनको सीधी राह की ओर बुला रहे हैं,
74 और बेशक जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, वह राह से बहकने वाले हैं।
75 और अगर ‘हम’ उन पर मेहरबानी कर दें और उन्हें जो तक्लीफ़ें पहुँच रही हैं उसे दूर कर दें, तो वह ज़रूर इस्रार करेंगे अपनी सरकशी में।
76 और ‘हमने’ उन्हें अ़ज़ाब में पकड़ा, तब भी वे अपने ‘रब’ के आगे न तो झुके और न वे गिड़गिड़ाए;
77 यहाँ तक कि जब ‘हम’ उन पर सख़्त अज़ाब का दरवाज़ा खोल देंगे तो वे निराश हो कर रह जाएँगे।
78 और ‘वही’ है जिसने तुम्हारे लिए कान और आँखें और दिल बनाए, (मगर) तुम लोग बहुत ही कम शुक्र अदा करते हो;
79 और ‘वही’ तो है जिसने तुम को ज़मीन पर फैला रखा है, और तुम लोग ‘उसी’ के पास इकट्ठा किये जाओगे।
80 और ‘वही’ है जो जिलाता है और मारता है, और ‘उसी’ के बस में है रात और दिन का उलट-फेर, तो क्या तुम अक़्ल से काम नहीं लेते;
81 (नहीं,) बल्कि यह लोग ऐसी ही बात कहते हैं जैसे पहले के (काफ़िर) कहते आए हैं।
82 कहते हैं, “जब हम मर जाएँगे और मिट्टी और हड्डियाँ बन जाएँगे, तो क्या हम फिर उठाए जाएँगे?

83 यह वादा तो हमसे और हमारे बड़ों से पहले से होता आया है, यह तो केवल
अगलों की बे सनद बातें हैं।"
84 कह दीजिए, "ज़मीन और उस पर जो कुछ है, (सब) किसका है? बताओ
अगर तुम जानते हो?"
85 वे बोल पड़ेंगे, "अल्लाह का," कह दीजिए, "फिर तुम सोचते क्यों नहीं?"
86 कह दीजिए, "सातों आसमान का मालिक, और आलीशान अर्श (महान
राजासन) का मालिक कौन है?"
87 वे कहेंगे "सब अल्लाह ही का है" कह दीजिए, "फिर डरते क्यों नहीं?"
88 कह दीजिए, "वह कौन है? जिस के हाथ में हर चीज़ का अधिकार है, और
वह पनाह देता है, और कोई 'उसके' मुक़ाबले में पनाह नहीं दे सकता, अगर
तुम जानते हो?"
89 वह ज़रूर यही कहेंगे कि यह सब अल्लाह ही का है," कह दीजिए, "फिर
तुम पर कहाँ से जादू चल जाता है?"
90 (नहीं,) बल्कि हम उनके पास हक़ (सत्य) लेकर आए हैं, और बेशक यह झूठे
हैं।
91 अल्लाह ने अपना कोई बेटा नहीं बनाया, और न 'उसके' साथ कोई और
मअ़बूद (उपास्य) है; ऐसा होता तो हर मअ़बूद अपनी मख़्लूक़ (सृष्टि) को
लेकर अलग हो जाते, और उनमें से एक-दूसरे पर चढ़ाई कर देते, ये जो
कुछ बयान करते हैं, अल्लाह उससे पाक है;
92 'वह' जानने वाला है, छिपे और खुले का, और उस शिर्क से बहुत ऊँचा है
जो यह करते हैं!
93 (ऐ मुहम्मद) कह दीजिए, "ऐ मेरे 'रब'! अगर आप मुझे दिखा दें, जिसका
वादा इनसे किया जा रहा है;
94 ऐ मेरे रब! मुझे इन ज़ालिम लोगों में शामिल न कीजिए।"
95 और 'हम' जो वादा इनसे कर रहे हैं, 'हम' आप को भी दिखा कर उन पर
नाज़िल करने की क़ुद्रत (सामर्थ्य) रखते हैं,
96 बुरी बात के जवाब में ऐसी बात कहिए जो बहुत अच्छी हो, 'हम' खूब जानते
हैं, जो यह कहा करते हैं।
97 और कह दीजिए, "ऐ मेरे रब! मैं तुझसे पनाह माँगता हूँ शैतान के वस्वसों
से।"
98 और ऐ मेरे रब! "मैं तुझसे पनाह माँगता हूँ, इससे कि वह (शैतान) मेरे पास
आए।"
99 यहाँ तक कि जब उनमें से किसी की मौत आ जाएगी तो कहेगा, "ऐ मेरे
रब! मुझ को (दुनिया में) वापस भेज दीजिए;
100 ताकि जिस (दुनिया) को छोड़ आया हूँ उसमें (फिर जाकर) भले काम करूँ।"
हरगिज़ नहीं! यह तो बस एक बात है, जो वह कह रहा है, और उनके पीछे

एक बर्ज़ख (मरने के बाद क़ियामत तक रहने की जगह) है, उस दिन तक के लिए जब वे उठाए जाएंगे।

101 फिर जब सूर (नर सिंघा) में फूँक मारी जाएगी, तो उस दिन उनके बीच न रिश्तेदारियाँ होंगी, न एक-दूसरे को पूछेंगे;

102 तो जिनके पलड़े भारी होंगे वही कामियाब होंगे;

103 और जिनके पलड़े हल्के होंगे, वे वही होंगे, जिन्होंने अपने को घाटे में डाला, हमेशा जहन्नम में रहेंगे।

104 आग उनके चेहरों को झुलसा देगी, और उसमें उनके चेहरे बिगड़ गये होंगे।

105 "क्या 'मेरी' आयतें तुमको पढ़कर नहीं सुनाई जाती थीं, तो तुम उनको झुठलाते थे?"

106 कहेंगे, "ऐ हमारे रब! कमबख़्ती (दुर्भाग्य) हम पर छा गयी थी, और हम गुमराह हो गये थे,"

107 ऐ हमारे रब! हमें यहाँ से निकाल दे! फिर अगर हम (दोबारा) ऐसा करें तो हम ही ज़ालिम होंगे।"

108 फ़रमाएगा "पड़े रहो! इसी में ज़िल्लत के साथ और 'मुझसे' बात न करना।"

109 मेरे बन्दों में से एक गिरोह ऐसा था, जो कहता था "ऐ हमारे रब! हम ईमान लाए हैं, 'हमें' माफ़ कर, और 'हम' पर रहम कर, और 'तू' सब रहम करने वालों से अच्छा रहम करने वाला है;

110 तो तुम उनका मज़ाक़ उड़ाते रहे,यहाँ तक कि उनके पीछे मेरी याद भी भूल गये और तुम उनकी हँसी उड़ाया करते थे।

111 आज उनके सब्र का बदला मैंने यह दिया है, कि वे कामियाब हो गये।"

112 (अल्लाह) पूछेगा, 'तुम' धरती में कितने वर्ष रहे।"

113 वे कहेंगे, "एक दिन या एक दिन से भी कम, गिनती करने वालों से पूछ लीजिए।"

114 (अल्लाह) फ़रमाएगा, "तुम उसमें बहुत थोड़े ही रहे, काश! तुमने यह बात जान ली होती;

115 क्या तुमने यह समझा था कि 'हम ने' तुमको बेकार पैदा किया है, और यह कि तुमको हमारी ओर लौट कर नहीं आना है?"

116 तो अल्लाह 'वह' सच्चा मालिक, बहुत ऊँचा है, 'उसके' सिवा कोई मअ़बूद (उपास्य) नहीं, वही इज़्ज़त वाले अर्श का मालिक है।

117 और जो आदमी अल्लाह के साथ किसी दूसरे मअ़बूद (उपास्य) को पुकारे, जिसके पास उसका कोई प्रमाण नहीं, तो बस उसका हिसाब उसके 'रब' के पास है, बेशक इन्कार करने वाले कभी कामियाब नहीं होंगे।

118 और कहो, "ऐ हमारे रब! हमें माफ़ कर दे, और रहम कर, 'तू' तो सबसे अच्छा रहम करने वाला है।"

# सूर-ए-नूर

यह सूरः मदनी है, इस में अ़रबी के 641 अक्षर, 142 शब्द, 64 आयतें और 9 रूकूअ़ हैं।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

1 यह एक सूरः है, जिसे 'हमने' उतारा है, और इसे 'हमने' फर्ज़ ठहराया है, और 'हमने' इसमें साफ़-साफ़ हुक्म उतारा है, शायद कि तुम नसीह़त ह़ासिल करो।

2 बद्कारी करने वाली औ़रत और बद्कारी करने वाला मर्द, दोनों में से हर एक को सौ-सौ कोड़े मारो; और अगर अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हो तो अल्लाह के हुक्म को पूरा करने में इन दोनों पर ज़रा भी तरस न आए, और उन्हें सज़ा देते समय ईमान वालों की एक जमाअ़त मौजूद हो।

3 ज़ानिया (बद्कार) मर्द निकाह़ किसी के साथ नहीं करता सिवाय ज़ानिया (बद्कार) औ़रत या मुश्रिक औ़रत के, और ज़ानिया (बद्कार) औ़रत के साथ कोई निकाह़ नहीं करता सिवाय ज़ानिया या मुश्रिक के, और यह ईमान वालों के लिए ह़राम कर दिया गया है।

4 और जो लोग पाकदामन औ़रतों पर (बद्कारी का) आरोप लगाएँ! और चार गवाह न ला सकें, तो उनको अस्सी कोड़े मारो; और कभी उनकी गवाही कुबूल न करो और यही लोग फ़ासिक़ (कप्टाचारी) हैं;

5 सिवाय उनके जो इसके बाद तौबः कर लें और सुधार कर लें, तो अल्लाह माफ़ करने वाला, रह़म वाला है।

6 और जो लोग अपनी पत्नियों पर (बद्कारी का) इल्ज़ाम लगाएँ और उनके पास खुद उनके अपने सिवा कोई गवाह मौजूद न हो, तो उनमें से एक (पति या पत्नी) चार बार अल्लाह की क़सम खाकर गवाही दे कि बेशक वह सच्चा है;

7 और पाँचवीं बार यह गवाही दे कि अगर वह झूठा हो तो उस पर अल्लाह की लानत (फिट्कार) हो।

8 और पत्नी से इस तरह सज़ा टल सकती है, कि वह चार बार अल्लाह की क़सम खा कर बयान करे कि बेशक यह झूठा है;

9 और पाँचवीं बार यह कहे कि मुझ (औ़रत) पर अल्लाह का ग़ज़ब हो, अगर वह सच्चा हो।

10 और अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़्ल व रह़म न होता, और (यह बात न होती कि) अल्लाह बड़ा तौबः कुबूल करने वाला, ह़िक्मत वाला है (तो तुम मुसीबत में फंस जाते)।

11 जो लोग तोहमत गढ़ लाए हैं तुम्हारे ही भीतर की एक टोली है, तुम उसे

अपने लिए बुरा मत समझो, बल्कि वह भी तुम्हारे लिए अच्छा ही है, उनमें से हर व्यक्ति के लिए उतना ही हिस्सा है जितना गुनाह उसने कमाया, और उनमें से जिसने उसकी ज़िम्मेदारी का एक बड़ा बोझ लिया, उसके लिए बड़ा अ़ज़ाब है।

12 ऐसा क्यों न हुआ! कि जब तुम ने वह बात सुनी थी, तब मोमिन मर्द और मोमिन औ़रतों ने क्यों अपने दिलों में नेक गुमान न किया और (क्यों न) कहा कि ''यह तो खुली तोह़मत (आरोप) है?''

13 यह (लोग) अपने कहने के अनुसार चार गवाह क्यों न लाए? तो जब यह गवाह नहीं लाए, तो बस यह अल्लाह के नज़ूदीक झूठे ही हैं;

14 और अगर तुम लोगों पर दुनिया और आख़िरत में अल्लाह की मेहरबानी और उसका रह़म न होता, तो जिन कामों में तुम (लोग) पड़ गये थे उसकी वजह से तुम पर बड़ा अ़ज़ाब आ जाता।

15 जब तुम अपनी ज़बानों से इसका एक-दूसरे से ज़िक्र कर रहे थे और अपने मुँह से वह बात कह रहे थे, जिसके बारे में तुम्हें कुछ भी इल्म न था, और तुम उसे एक हल्की बात समझ रहे थे; हालाँकि अल्लाह के नज़ूदीक वह बड़ी (भारी) बात थी।

16 और जब तुमने यह बात सुनी थी तो तुमने क्यों न कह दिया ''हमें ऐसी बात ज़बान पर लाना अच्छा नहीं लगता, तू पाक है यह एक बड़ी तोहमत है।''

17 अल्लाह तुम्हें नसीह़त करता है, कि फिर कभी ऐसा न करना! अगर तुम मोमिन हो।

18 और अल्लाह तो आयतों को तुम्हारे लिए खोल-खोल कर बयान करता है, और अल्लाह तो जानने वाला, ह़िक्मत वाला है।

19 जो लोग चाहते हैं कि ईमान वालों में बेह़याई फैले, उनके लिए दुनिया और आख़िरत में दर्दनाक अज़ाब है, और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते।

20 और अगर अल्लाह का फ़ज़्ल (अनुग्रह) और उसका रह़म तुम पर न होता, और अल्लाह तो है ही बड़ा मेहरबान, रह़म करने वाला।

21 ऐ ईमान वालो! शैतान के नक़्शे क़दम (पद चिन्हों) पर न चलो, और जो कोई शैतान के नक़्शे-क़दम पर चलेगा तो वह उसे बेहयाई और बुराई का हुक्म देगा, और अगर अल्लाह की मेहरबानी और उसकी दया न होती तो तुममें से कोई व्यक्ति भी पाक न हो सकता, लेकिन अल्लाह जिसे चाहता है पाक करता है, और अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है।

22 और तुममें जो लोग बड़ाई वाले और क़ुदरत (सामर्थ्य) वाले हैं, वे इस बात की क़सम न खा बैठें कि रिश्तेदारों और मोहताजों और अल्लाह की राह में हिजरत करने वालों की मदद नहीं करेंगे, उन्हें चाहिए कि माफ़ करें और दरगुज़र से काम लें, क्या तुम पसंद नहीं करते कि अल्लाह तुम्हें माफ़ कर दे? और अल्लाह तो बड़ा माफ़ करने वाला, रह़म वाला है।

23 जो लोग शरीफ़ पाकदामन (बुरे कामों से) बेख़बर ईमान वाली औ़रतों पर

तोहमत लगाते हैं उन पर दुनिया और आख़िरत में लानत की गयी है और उनके लिए बड़ा अ़ज़ाब है;

24 जिस दिन उनकी ज़बानें और हाथ और पैर उनके (ख़िलाफ़) गवाही देंगे, जो कुछ वे करते थे;

25 उस दिन अल्लाह उन्हें पूरा-पूरा बदला देगा जिसके वे हक़दार हैं, और जान लेंगे कि बेशक अल्लाह ही (ह़क़ है और) ह़क़ को स्पष्ट करने वाला है।

26 ख़बीस औ़रतें ख़बीस मर्दों के लिए हैं, और ख़बीस मर्द ख़बीस औ़रतों के लिए, और पाकीज़ा औ़रतें पाकीज़ा मर्दों के लिए, और पाकीज़ा मर्द पाकीज़ा औ़रतों के लिए, यह लोग इन बातों से बरी हैं, उनके लिए माफ़ी, और इ़ज़्ज़त की रोज़ी है।

27 ऐ ईमान वालो! अपने घरों के सिवा दूसरे के घरों में दाख़िल न हुआ करो, जब तक कि इजाज़त हासिल कर के घर वालों को सलाम न कर लिया करो, यही तुम्हारे लिए बेहतर है, ताकि तुम याद रखो;

28 तो अगर तुम वहाँ किसी को न पाओ, तो अन्दर न जाओ, जब तक कि तुमको इजाज़त न मिल जाए, और अगर तुमसे वापस होने के लिए कहा जाए, तो वापस हो जाओ, यह तुम्हारे लिए पाकीज़ा तरीक़ा है और जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह खूब जानता है।

29 तुम्हारे लिए कोई हर्ज नहीं कि तुम ऐसे घरों में दाख़िल हो, जिनमें कोई न रहता हो, उसमें तुम्हारा सामान हो और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम ज़ाहिर करते हो और जो कुछ छिपाते हो।

30 कह दीजिए, ‘‘ईमान वाले मर्दों से कि अपनी निगाहें नीची रखा करें और अपनी शर्मगाहों (गुप्त अंगों) की हिफ़ाज़त करें, यह उनके लिए पाकीज़ा तरीक़ा है, अल्लाह को उसकी पूरी ख़बर रहती है, जो कुछ वे करते हैं।’’

31 और कह दीजिए, ‘‘ईमान वाली औ़रतों से कि वे भी अपनी निगाहें नीची रखें, और अपनी शर्मगाहों की ह़िफ़ाज़त करें,’ और अपनी ज़ीनत न दिखावें, सिवाय उसके कि जो खुले रहते हैं (हाथ पैर आदि), और अपने सीनों पर अपनी ओढ़नी ओढ़े रहें; और अपना साज़ व सिंघार न दिखावें सिवाय अपने पति के, या अपने बाप के, या अपने पति के बापों (ससुर) के, या अपने बेटे के, या अपने पति के बेटों या अपने भाइयों के या अपने भतीजों के, या अपने भाँजों के, या अपनी (जैसी) औरतों के, या लौंडी-गुलाम के सिवा उन ख़ादिमों के जो औ़रतों की इच्छा न रखें या उन बच्चों के जो औ़रतों के पर्दों की चीज़ों को नहीं जानते; और अपने पैर ऐसे ज़ोर से न रखें कि उनके अन्दुरूनी ज़ेवर मालूम हो जाएँ और ऐ ईमान वालो! सब अल्लाह के सामने तौबः करो, ताकि तुम्हें कामियाबी ह़ासिल हो।

32 और अपनी क़ौम की बेवा औ़रतों का निकाह़ कर दिया करो, तुम्हारे गुलामों और तुम्हारी लौंडियों में जो नेक हों, अगर वह तंग हों तो अल्लाह उन्हें अपने

फ़ज़्ल से खुशहाल कर देगा, और अल्लाह बड़ी गुन्जाइश वाला, जानने वाला है।
33 और जो लोग विवाह का सामर्थ्य न रखते हों वे अपने को पाकदामन रखें, यहाँ तक कि अल्लाह अपने फ़ज़्ल से उन्हें मालदार कर दे, और जिन लोगों पर तुम्हें मिल्कियत हासिल है उनमें से जो (आज़ादी का) लिखित समझौता करना चाहते हों उनके साथ लिखित समझौता कर लो, अगर तुम जानते हो कि उनके अन्दर भलाई है, और उनको भी अल्लाह के उस माल में से दो, जो 'उसने' तुम्हें दिया है, और अपनी लौंडियों को कुकर्म पर मजबूर न करो, जबकि वे खुद पाकदामन रहना चाहती हों, केवल इसलिए कि तुम दुनियावी ज़िन्दगी हासिल करना चाहते हो और जो उनको मजबूर करेगा, तो उनके मजबूर किये जाने के बाद अल्लाह माफ़ करने वाला, रहम वाला है।
34 और 'हमने' तुम्हारी ओर खुली हुई आयतें उतार दी हैं, और उन लोगों की मिसालें भी पेश कर दी हैं, जो तुमसे पहले गुज़र चुके हैं, और परहेज़गारों के लिए नसीहत है।
35 अल्लाह आसमानों और ज़मीन का नूर (प्रकाश) है, उसके नूर की मिसाल ऐसी है, जैसे एक ताक़ है, जिसमें एक चिराग़ हो- चिराग़ एक शीशा के अन्दर हो, शीशा ऐसा हो, जैसे चमकता हुआ तारा, उस चिराग़ को ज़ैतून के एक बरकत वाले पेड़ के तेल से जलाया जाता हो, जो न पूर्वी हो न पश्चिमी, उसका तेल आप ही आप भड़क रहा हो, चाहे उसे आप न भी छुएँ रोशनी पर रोशनी- (देता हो) अल्लाह जिसे चाहता है अपने नूर के हासिल होने की राह दिखा देता है, अल्लाह लोगों के लिए मिसालें देता है, और अल्लाह हर चीज़ का इल्म रखने वाला है;
36 ऐसे घरों में जिनको अल्लाह ने ऊँचा करने और जिनमें उसका नाम याद करने का हुक्म दिया है, उनमें उसकी तस्बीह करते रहें सुबह और शाम;
37 ऐसे लोग जिन्हें व्यापार और खरीद व फ़रोख़्त अल्लाह की याद से, नमाज़ क़ायम करने से, और ज़कात देने से, ग़ाफ़िल नहीं करती; वे उस दिन से डरते हैं, जब दिल और आखें उलट जाएँगी;
38 ताकि अल्लाह उनको, उनके अच्छे अ़मल का बदला दे, और अपने फ़ज़्ल से उन्हें और ज्यादा दे, और अल्लाह जिसे चाहता है बेहिसाब देता है।
39 और जिन्होंने इन्कार किया, उनके काम ऐसे हैं, जैसे मैदान में चमकता हुआ रेत, कि प्यासा उसको पानी समझे, यहाँ तक कि जब उसके पास आए तो उसमें कुछ भी न पाए और अल्लाह को अपने पास मौजूद पाए, तो वह उसका हिसाब पूरा-पूरा चुका दे, और अल्लाह बहुत जल्द हिसाब करने वाला है;
40 या (उनके आ़माल ऐसे हैं) फिर जैसे एक गहरे समुद्र में अन्धेरे हों, जिस पर लहर चढ़ी आ रही हो और लहर के ऊपर लहर छा रही हो उसके ऊपर बादल हो, अन्धेरे हों एक के ऊपर एक, जब वह अपना हाथ निकाले तो वह कुछ सुझाई न देता हो, जिसे अल्लाह ही रोशनी न दे तो उसके लिए कहीं रोशनी नहीं।
41 क्या तुमने नहीं देखा! कि जो लोग आसमानों और ज़मीन में हैं, अल्लाह की

तस्बीह़ करते रहते हैं, और पंख फैलाए हुए पक्षी भी? हर एक अपनी नमाज़ और तस्बीह़ जानते हैं, और जो कुछ वे करते हैं अल्लाह को खूब मालूम है।
42 अल्लाह ही के लिए है आसमानों और ज़मीन का राज्य और अल्लाह ही की ओर लौट कर जाना है।
43 क्या तुमने देखा नहीं! कि अल्लाह बादल को चलाता है, फिर उन (टुकड़ों) को आपस में मिलाता है, फिर उसे तह पर तह कर देता है; फिर तुम देखते हो कि उसके बीच से मेंह बरसाता है? और आसमान से- जो (बादल के) पहाड़-हैं ओले बरसाता है फिर जिस पर चाहता है गिराता है, और जिस पर से चाहता है हटा देता है; ऐसा मालूम होता है कि बिजली की चमक निगाहों को उचक ले जाएगी।
44 अल्लाह ही रात और दिन को उलट फेर करता है, इबरत (सबक़) है उन लोगों के लिए, जो देखने वाली आँख रखते हों।
45 और अल्लाह ही ने हर जानदार को पानी से पैदा किया, उनमें से कुछ अपने पेट के बल चलते हैं, और कुछ अपने दो पैर पर, और कुछ चार पैर पर, अल्लाह जो चाहता है, पैदा करता है बेशक अल्लाह ही हर चीज़ पर क़ादिर है।
46 'हमने' ही स्पष्ट कर देने वाली आयतें नाज़िल की हैं, और अल्लाह जिसको चाहता है सीधी राह की ओर लगा देता है।
47 यह (मुनाफ़िक़) कहते हैं, ''हम अल्लाह और रसूल पर ईमान लाए और 'हमने' उसका हुक्म मान लिया'' फिर इसके बाद एक गिरोह मुँह मोड़ जाता है तो ऐसे लोग ईमान वाले ही नहीं।
48 और जब उन्हें अल्लाह और उसके रसूल की ओर बुलाया जाता है, ताकि वह उनके बीच फ़ैसला करें, तो उनमें से एक गिरोह कतूरा जाता है;
49 और अगर ह़क़ उनके पक्ष में हो तो रसूल के पास बड़े फ़रमाँबरदार हो कर चले आते हैं।
50 क्या उनके दिलों में रोग है? या धोखे में हैं, या उनको डर है कि अल्लाह और उसका रसूल उनके साथ अन्याय करेंगे, (नहीं), बल्कि यह लोग खुद ही ज़ालिम हैं
51 मोमिनों की बात तो यह होती है कि जब अल्लाह और उसके रसूल की ओर बुलाए जाएं, ताकि वह उनके बीच फ़ैसला करें, तो कहते हैं, ''हमने सुना और माना,'' तो यही लोग कामियाब होने वाले हैं।
52 और जो व्यक्ति अल्लाह और उसके रसूल की फ़रमाँबरदारी करे, और अल्लाह से डरे, और तक़्वा (उसकी सीमाओं का ख़याल) रखे, तो ऐसे ही लोग कामियाब होने वाले हैं।
53 और अल्लाह की पक्की क़समें खा कर कहते हैं, कि अगर आप उन्हें हुक्म दें तो वे ज़रूर निकल खड़े होंगे, कह दीजिए, ''क़समें न खाओ, सामान्य तरीक़े से फ़रमाँबरदारी करो, बेशक अल्लाह को ख़बर है जो कुछ तुम करते हो।''
54 कह दीजिए, ''अल्लाह का हुक्म मानो और उसके रसूल का कहना मानो,

फिर अगर तुम मुँह मोड़ते हो तो बस (रसूल पर) वही ज़िम्मेदारी है जिसका
बोझ उस पर डाला गया है, और तुम उसके ज़िम्मेदार हो जिसका बोझ तुम
पर डाला गया है, और अगर तुम फ़रमाँबरदारी करोगे तो राह पा लोगे; और
रसूल पर तो बस साफ़-साफ़ (सन्देश) पहुँचा देना है।
55 और अल्लाह ने उन लोगों से जो तुम में से ईमान लाए, और उन्होंने नेक
अ़मल किये, उनसे अल्लाह का वादा है कि उनको ज़मीन में ख़लीफ़ा (सत्ताधि
िकारी) बनाएगा जैसे उनके पहले के लोगों को ख़लीफ़ा बनाया था; और उनका
दीन जो उसने उनके लिए पसंद किया है; उसको उनके लिए मज़बूत कर देगा;
और उनके डर के बदले में उनको अम्न देगा, कि वे 'मेरी' इबादत किया करें,
और किसी को 'मेरा' साझीदार न ठहराएँ; और जो कोई इसके बाद इन्कार
करे, तो ऐसे ही लोग फ़ासिक़ (उल्लंघनकारी) हैं।
56 और नमाज़ क़ायम करो, और ज़कात देते रहो और रसूल की फ़रमाँबरदारी
करो, ताकि तुम पर रहम किया जाए।
57 काफ़िरों के बारे में यह न समझो कि वे 'हमारी' धरती में क़ाबू से बाहर निकल
जाने वाले हैं, उनका ठिकाना आग है, और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है।
58 ऐ ईमान वालो! जो तुम्हारी मिल्कियत में (ग़ुलाम आदि) हों, और तुम लोगों
के वे बच्चे जो अभी जवानी को नहीं पहुँचे,उनको चाहिए कि तीन वक़्तों में
तुमसे इजाज़त लेकर तुम्हारे पास आएँ फ़ज्र (भोर) की नमाज़ से पहले, और
दोपहर को जबकि तुम कपड़े उतार कर रखते हो, और इशा की नमाज़ के
बाद, यह तीन समय तुम्हारे लिए पर्दे के हैं, इनके अ़लावा दूसरे वक़्तों में तुम
पर न कोई पकड़ है और न उन पर, कि (किसी काम के लिए) एक दूसरे
के पास आते रहते हो। इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी आयतें स्पष्ट
करता है, और अल्लाह खूब जानने वाला, हिक्मत वाला है।
59 और जब तुम्हारे बच्चे जवानी को पहुँच जाएँ, तो वह भी उसी तरह इजाज़त
लिया करें, जिस तरह उनसे पहले वाले इजाज़त लेते रहे हैं, इस तरह अल्लाह
अपना हुक्म तुम्हारे लिए स्पष्ट करता है, और अल्लाह इल्म वाला, हिक्मत
वाला है।
60 और वह बूढ़ी औ़रतें जो निकाह की उम्मीद नहीं रखतीं, अगर अपने कपड़े
(चादर) उतार कर रख दें, तो उन पर कोई पकड़ नहीं, जबकि वे अपनी
ज़ीनत की नुमाइश करने वाली न हों, मगर उनके हक़ में यही है कि वे इससे
बचें, और अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है।
61 न अन्धे पर कोई हरज है, और न लंगड़े पर कोई हरज है और न रोगी पर
कोई हरज है, और न तुम्हारे लिए इस बात में कि तुम अपने घरों में खाओ,
या अपने बापों के घरों में, या अपनी माँओं के घरों में, या अपने भाइयों
के घरों में, या अपनी बहनों के घरों में, या अपने चचाओं के घरों में, या
अपनी फूफियों के घरों से, या अपने मामाओं के घरों में, या अपनी ख़ालाओं
के घरों में, या उन घरों में, जिनकी कुन्जिया तुम्हारे हाथ में हों, या अपने
दोस्त के घरों में, तुम पर कोई हरज नहीं कि तुम सब मिल कर खाओ या
अलग-अलग; फिर जब घरों में जाया करो तो अपने लोगों को सलाम किया

करो, यह अल्लाह की ओर से मुबारक और पाकीज़ा (दुआ का) कलिमा है, इस तरह अल्लाह अपनी आयतें तुम पर खोलता है, ताकि तुम अक़्ल से काम लो।

62 ईमान वाले तो वही हैं, जो अल्लाह और उसके रसूल पर पूरा ईमान रखते हैं, और जब किसी सामूहिक मामले में रसूल के साथ होते हैं तो उस समय तक चले नहीं जाते हैं जब तक कि उससे इजाज़त न ले लें, जो लोग आप से इजाज़त माँगते हैं, वही अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान रखने वाले हैं अतः जब वे किसी अपनी ज़रूरत से इजाज़त माँगे तो जिसे आप चाहें इजाज़त दे दिया करें, और उनके लिए अल्लाह से माफ़ी माँगा करें, बेशक अल्लाह माफ़ करने वाला रहम वाला है।

63 (मोमिनों!) रसूल के बुलाने को तुम आपस में एक-दूसरे का बुलाना न समझो, बेशक अल्लाह उन लोगों को खूब जानता है जो तुममें से ऐसे हैं, कि आड़ लेकर चुपके से खिसक जाते हैं, तो जो लोग उनके हुक्म को मानने से मुँह फेरते हैं, उन्हें इस बात से डरना चाहिए कि वे किसी फ़ित्ने का शिकार न हो जाएँ या दर्दनाक अ़ज़ाब उनको पकड़ न ले।

64 सुन लो! आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है, वह अल्लाह ही का है, तुम जिस हाल में भी हो 'वह' उसे जानता है और जिस दिन लोग 'उसकी' ओर लौटाए जाएँगे, कि वह क्या कर के आए हैं, 'वह' उन्हें बता देगा, और अल्लाह तो हर चीज़ को जानता है।

## सूर-ए-फ़ुर्क़ान

यह सूरः मक्की है, इस में अ़रबी के 3919 अक्षर, 906 शब्द, 77 आयतें और 6 रूकूअ़ हैं

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

1 'वह' बड़ा ही बरकत वाला है जिसने फ़ुरक़ान (सत्य और असत्य में अन्तर करने वाली) अपने बन्दे पर उतारा, ताकि वह सारे संसार के लिए चेतावनी (देने वाला) हो।

2 'वह' जिसके क़ब्ज़े में आसमानों और ज़मीन की बादशाही है, और न तो 'उसने' अपने लिए औलाद बनाई, और न 'उसकी' बादशाही में कोई उसका साझीदार है; और 'उसने' हर चीज़ को पैदा किया, फिर उसको ठीक अन्दाज़े पर रखा।

3 और उन्होंने 'उससे' हट कर ऐसे मअ़बूद (उपास्य) बना लिए जो किसी चीज़ को पैदा नहीं करते, बल्कि वे खुद पैदा किये जाते हैं। उन्हें न तो अपने

नुक़्सान का अधिकार है, और न फ़ायदे का, और न उन्हें मौत का अधिकार है और न ज़िन्दगी का और न (मरने के बाद) उठ खड़े होने का।
4 और जिन लोगों ने इन्कार किया, कहते हैं, ''यह तो बस मन गढ़त बातें हैं, जो इसने ख़ुद ही गढ़ लिया है, और कुछ दूसरे लोगों ने (इस काम में) इसकी मदद की है,'' तो ये लोग ज़ुल्म और झूठ ही पर (उतर आए) हैं।
5 और कहते हैं, ''यह पहले लोगों के क़िस्से हैं, जो इस व्यक्ति ने लिखवाए हैं, तो वह उसको सुबह़ और शाम पढ़ कर सुनाई जाती हैं।''
6 कह दीजिए, ''इसे उतारा है 'उसने' जो आसमानों और ज़मीन के भेद को जानता है, बेशक 'वह' बहुत माफ़ करने वाला, रह़म वाला है।''
7 और कहते हैं, ''यह कैसा रसूल है जो खाना खाता है और बाज़ारों में चलता-फिरता है, इसकी ओर कोई फ़रिश्ता क्यों न भेजा गया कि इसके साथ रह कर चेतावनी देता;
8 या इसकी ओर कोई ख़ज़ाना उतार दिया जाता, या इसके पास कोई बाग़ होता, कि उसमें से यह खाता।'' और इन ज़ालिमों का कहना है, ''तुम लोग तो बस एक जादू किये हुए व्यक्ति के पीछे चल रहे हो।''
9 देखो! यह तुम पर कैसी-कैसी मिसालें दे रहे हैं, तो यह भटक गये हैं, अब कोई राह नहीं पा सकते!
10 बड़ा बरकत वाला है 'वह', जो अगर चाहे तो तुम्हारे लिए इससे कहीं ज़्यादा (चीज़ें) बना दे, ऐसे बाग़, जिनके नीचे नहरें जारी हों, और तुम्हारे लिए बहुत से मह़ल तैयार कर दे।
11 (नहीं,) बल्कि यह लोग तो क़ियामत को झुठलाते हैं, और जो उस घड़ी को झुठला दे, उसके लिए 'हमने' दहकती आग तैयार कर रखी है;
12 जब वह उनको दूर से देखेगी, तो यह उसके जोश (ग़ज़ब) और उसके चीखने चिल्लाने की आवाज़ को सुनेंगे;
13 और जब वे उसके किसी तंग जगह में जकड़े हुए डाले जाएँगे, तो वहाँ मौत को पुकारेंगे;
14 ''आज एक ही मौत को न पुकारो, बल्कि बहुत सी मौतों को पुकारो!''
15 कह दीजिए, ''यह बेहतर है या हमेशा-हमेश की जन्नत, जिसका वादा परहेज़गारों से किया गया है, यह उनका बदला और रहने का ठिकाना होगा।''
16 उसमें उनके लिए वह सब कुछ होगा जो चाहेंगे, उसमें हमेशा रहेंगे, और यह वादा तुम्हारे रब के ज़िम्मे ऐसा है जो माँगने के लायक़ है।
17 और जिस दिन (अल्लाह) इनको और जिनको यह अल्लाह के सिवा पूजते हैं इकट्ठा करेगा, तो उनसे पूछेगा, ''क्या तुमने मेरे इन बन्दों को गुमराह किया था, या यह ख़ुद सीधे रास्ते से भटक गये थे?''
18 वे कहेंगे, ''कि 'तू' पाक है, यह हमसे नहीं हो सकता था, कि हम 'तेरे' सिवा किसी दूसरे को संरक्षक बनाएँ, मगर 'तूने' इन्हें और इनके बाप-दादा को सुख सामग्री दी, यहाँ तक कि वे 'तेरी' याद को भुला बैठे, और ये तबाह होने वाले लोग थे।''

19 तो उन्होंने तुमको और तुम्हारी बातों को झूठा ठहराया, अब न तुम अज़ाब को
टाल सकते हो, और न कोई मदद पा सकते हो, और जो व्यक्ति भी तुममें
से ज़ुल्म करेगा, 'हम' उसे बड़े अ़ज़ाब का मज़ा चखाएँगे।
20 और 'हमने' तुमसे पहले जितने रसूल भेजे, वे खाना भी खाते थे और
बाज़ारों में भी चलते-फिरते थे, और 'हमने' तुम्हें आपस में एक-दूसरे के लिए
आज़माइश बना दिया, "तो क्या तुम सब्र करोगे?" और तुम्हारा रब खूब
देखने वाला है।
21 और जो लोग 'हमसे' मुलाक़ात की उम्मीद नहीं रखते, कहते हैं, "क्यों न
हम पर फ़रिश्ते उतारे गये या ऐसा क्यों न हुआ कि हम अपने 'रब' को देख
लेते?" इन्होंने अपने जी में अपने को बड़ा समझा और बड़ी सरकशी पर
उतर आए।
22 जिस दिन ये फ़रिश्तों को देख लेंगे, उस दिन मुज़रिमों के लिए कोई ख़ुशी की
बात न होगी और पुकार उठेंगे, (खुदा करे तुम) रोक लिए (और बंद कर
दिए) जाओ।
23 और 'हम' बढ़ेंगे उन आ़माल की ओर जो उन्होंने किया होगा, और उनको-
उड़ती हुई धूल कर देंगे।
24 उस दिन जन्नत वालों का ठिकाना भी बेहतर होगा और आरामगाह भी खूब
अच्छी होगी।
25 और जिस दिन आसमान बादल के साथ फटेगा और फ़रिश्ते उतारे जाएँगे;
26 उस दिन ह़क़ीक़ी बादशाही 'रह़मान' ही की होगी, और वह दिन काफ़िरों पर
बड़ा सख्त होगा।
27 और ज़ालिम उस रोज़ अपने हाथ काट खाएगा (और) कहेगा, "काश मैंने भी
रसूल के साथ राह पकड़ ली होती।
28 हाय मेरा दुर्भाग्य!! काश, मैं फ़लाँ व्यक्ति को दोस्त न बनाया होता!-
29 उसने मुझे गुमराह करके नसीह़त (कुर्आन) से दूर रखा, जबकि वह (नसीह़त)
मेरे पास आ चुकी थी, और शैतान तो है ही इन्सान को बेसहारा छोड़ने
वाला।"
30 और रसूल कहेंगे, "ऐ मेरे रब! मेरी क़ौम ने इस कुर्आन को छोड़ दिया
था।"
31 और इसी तरह 'हम' मुज़रिमों में से हर नबी के लिए दुश्मन बनाते रहे, और
तुम्हारा 'रब' रह़नुमाई और मदद के लिए काफ़ी है।
32 और काफ़िर कहते हैं कि "इस पर पूरा कुर्आन एक ही समय में क्यों नहीं
उतरा?" ऐसा इसलिए किया गया ताकि इसके ज़रिये 'हम' तुम्हारे दिल को
मज़बूत करें, और हम इस (कलाम) को ठहर-ठहर कर पढ़ते रहें (या उचित
क्रम के साथ रखा)।
33 और यह लोग जो (एतिराज़) भी तुम्हारे सामने लाते हैं, तो 'हम' ह़क़ बात
तुम्हारे सामने पेश कर देते हैं, और बेहतरीन तफ़्सीर (स्पष्टीकरण) के साथ।

34 जो लोग अपने मुँह के बल जहन्नम की ओर घसीटे जाएँगे, उनका ठिकाना भी बुरा है, और उनकी राह बिल्कुल भट्की हुई है।
35 और 'हमने' मूसा को किताब दी, और उनके भाई हारून को मदद्गार के रूप में उनके साथ कर दिया;
36 और कहा, दोनों उन लोगों के पास जाओ, जिन्होंने 'हमारी' आयतों को झुठलाया '' तो 'हमने' उन को तबाह कर दिया।
37 और नूह की क़ौम ने भी, जब रसूलों को झुठलाया तो 'हमने' उन्हें डुबो दिया और लोगों के लिए उन्हें एक निशानी बना दिया, और ज़ालिमों के लिए 'हमने' एक दर्दनाक अ़ज़ाब तैयार कर रखा है।
38 और आ़द, और समूद, और अर-रस्स वालों और उनके बीच की बहुत सी नस्लों को भी (तबाह कर दिया),
39 और 'हमने' हर एक के सामने मिसालें दीं, और 'हमने' हर एक को तबाह कर दिया।
40 और यह (काफ़िर) उस बस्ती पर से भी गुज़रे हैं जिस पर बुरी (पत्थर की) बारिश हुई, तो क्या यह उसे देखते नहीं रहे? बल्कि ये दोबारा ज़िन्दा होकर उठने की उम्मीद ही नहीं रखते।
41 और आप को जब यह लोग देख लेते हैं, तो आप का मज़ाक़ उड़ाने लगते हैं, ''क्या यही व्यक्ति है जिसको अल्लाह ने रसूल बना कर भेजा है-
42 इसने तो हमें भट्का कर, हमको हमारे मअ़बूदों (उपास्यों) से फेर ही दिया होता, अगर हम उन पर मज़्बूती से जम न गये होते।'' जल्द ही यह जान लेंगे! जब अ़ज़ाब को देखेंगे, कि कौन राह से हटा हुआ था?
43 क्या आप ने उस व्यक्ति को देखा है, जिसने अपना मअ़बूद अपनी इच्छा को बना रखा है? तो क्या आप उसकी ज़िम्मेदारी ले सकते हैं;
44 या आप यह समझते हैं कि इनमें अक्सर सुनते या समझते हैं? ये तो चौपायों की तरह हैं, बल्कि उनसे भी ज़्यादा राह से भटके हुए हैं।
45 क्या आपने अपने 'रब' को नहीं देखा! कि 'उसने' छाया को किस तरह फैला दिया? और अगर 'वह' चाहता तो उसे ठहराया हुआ रखता, फिर 'हमने' सूरज को उसका रहनुमा (दलील) बनाया,
46 फिर 'हम' उसको धीरे-धीरे अपनी ओर समेट लेते हैं।
47 और 'वही' तो है जिसने रात को तुम्हारे लिए पर्दा, और नींद को आराम की चीज़, और दिन को उठ खड़े होने का समय बनाया।
48 और 'वही' तो है जो अपनी रह़मत की हवाओं को आगे-आगे खुशख़बरी बना कर भेजता है, और 'हम' आसमान से पानी बरसाते, हैं खूब पाक व साफ़;
49 ताकि 'हम' इसके ज़रिए मुर्दा बस्ती में जान डाल दें और 'अपने' पैदा किये हुए बहुत से चौपायों और इन्सानों को पिलाएँ।
50 और 'हम' इस (क़ुर्आन) को उन लोगों के बीच विभिन्न ढंग से पेश कर देते हैं, ताकि ध्यान दें, लेकिन अक्सर लोगों ने इन्कार और नाशुक्री के अ़लावा कुछ न माना।

51 और अगर 'हम' चाहते तो हर बस्ती में डराने वाला भेज देते।
52 तो आप काफ़िरों की बात न मानिए और इस (कुर्आन) के ज़रिये उनसे जिहाद
कीजिए– बड़ा जिहाद।
53 और 'वही' तो है जिसने दो समुद्रों को मिलाया– एक मीठा स्वादिष्ट, और
दूसरा खारी कड़वा– और दोनों के बीच एक पर्दा (आड़) कर दिया, और एक
रूकावट खड़ी कर दी।
54 और 'वही' है जिसने पानी से मनुष्य को पैदा किया, फिर उसको खानदान
वाला, और ससुराली रिशते वाला बनाया, और आप का 'रब' बड़ी कुद्‍रत
(सामर्थ्य) वाला है।
55 और ये लोग अल्लाह के मुक़ाबले में उनकी इबादत करते हैं जो न उन्हें नफ़ा
पहुँचा सकते हैं और न नुक़्सान, और काफ़िर अपने रब की मुखालिफ़त में
बड़ा ज़ोर मारता है।
56 और 'हमने' तो आप को बस खुश-ख़बरी देने वाला और ख़बरदार करने
वाला बना कर भेजा है।
57 कह दीजिए, "मैं तुमसे इस पर कोई बदला नहीं माँगता सिवाय इसके कि
जिसका जी चाहे अपने रब की ओर (ले जाने वाली) राह अपना ले।"
58 और 'उस' (अल्लाह) पर भरोसा करो जो ज़िन्दा और कभी मरने वाला नहीं,
और उसकी तअ़रीफ़ बयान करो, 'वह' अपने बन्दों के गुनाहों से बाख़बर
रहने के लिए काफ़ी है;
59 'जिसने' आसमानों और ज़मीन को, और उन तमाम चीज़ों को, जो कुछ इन
दोनों के बीच है छः दिनों में पैदा किया, फिर अर्श (सिंहासन) पर जा ठहरा,
रह़मान है 'वह'! तो उसकी शान, उससे पूछो जो उसकी ख़बर रखता हो।
60 और इन (इन्कारियों) से जब कहा जाता है कि "रह़मान को सज्दः करो,"
तो कहते हैं, "रह़मान क्या है? क्या हम उसको सज्दः करें जिसका तुम हमें
हुक्म देते हो?" और यह चीज़ उनकी घृणा को और बढ़ा देती है।
61 बड़ी बरकत वाला है 'वह' 'जिसने' आसमान में बुर्ज (नक्षत्र) बनाए, और
उसमें एक चिराग़ और एक चमकता हुआ चाँद भी बनाया।
62 और 'वही' है जिसने रात और दिन को एक-दूसरे के पीछे आने वाला बनाया,
हर उस व्यक्ति के लिए (निशानी है) जो विचार करना चाहे या शुक्र गुज़ार
बनना चाहे।
63 और रह़मान के बन्दे तो वे हैं जो ज़मीन पर आजिज़ी (विनम्रता) के साथ
चलते हैं, और जब जाहिल लोग उनसे (जाहिलाना) बातें करने लगते हैं, तो
वह "सलाम कहते हैं!"
64 और वे जो अपने रब के आगे सज्दः करने और खड़े रहने में रातें गुज़ारते
हैं;
65 और वे जो कहते हैं कि, "ऐ रब! जहन्नम के अ़ज़ाब को हमसे दूर रख,"
उसका अ़ज़ाब बड़ी तक्लीफ़ की चीज़ है–
66 वह बहुत बुरा ठिकाना है और बुरी ठहरने की जगह है–

67 और वे जब खर्च करते हैं, तो न फुज़ूल खर्ची करते हैं और न कन्जूसी, बल्कि
उनका खर्च दोनों के बीच सन्तुलित रहता है;
68 और वे जो अल्लाह के साथ किसी और मअ़बूद को नहीं पुकारते, और किसी
जान को- जिसे अल्लाह ने ह़राम ठहराया है, क़त्ल नहीं करते- मगर ह़क़ के
बिना पर, और बदकारी नहीं करते- और जो इस काम को करे, वह सख़्त
गुनाह में पड़ेगा।
69 उसको दोहरा अ़ज़ाब दिया जाएगा क़ियामत के दिन, और वह उसमें अपमान
के साथ हमेशा पड़ा रहेगा;
70 सिवाय उसके- जिसने तौबः की, और ईमान लाया, और भले काम किये; तो
अल्लाह ऐसे लोगों की बुराइयों को भलाइयों से बदल देगा, और अल्लाह बड़ा
माफ़ करने वाला, रह़म वाला है;
71 और जो तौबः करके नेक अ़मल करता है, तो बेशक वह अल्लाह की ओर
पलटता है (जैसा कि पलटने का ह़क़ है-)
72 और वे जो झूठी गवाही नहीं देते, और जब बेहूदा चीज़ों के पास से गुज़रते
हैं, तो अच्छे अन्दाज़ से गुज़र जाते हैं;
73 और जब उनके रब की आयतों के ज़रिये नसीह़त की जाती है, तो वह उन
पर बहरे और अन्धे हो कर नहीं गिरते;
74 और वे जो कहते हैं, ''ऐ 'हमारे' 'रब'! हम को हमारी पत्नियों और हमारी
सन्तान की ओर से आँखों की ठंडक दे और हमको परहेज़गारों का इमाम
(नायक) बना।''-
75 यही वे लोग हैं जिनको, उनके सब्र के बदले में ऊँचे मह़ल मिलेंगे, और वहाँ
(फ़रिश्ते उन से) दुआ़ और सलाम के साथ उनका इस्तिक़बाल (स्वागत) करेंगे;
76 उसमें वे हमेशा रहेंगे, और वह बहुत अच्छा ठिकाना और वह बहुत ही अच्छी
रहने की जगह है।
77 कह दीजिए, ''मेरे रब को तुम्हारी क्या परवाह, अगर तुम 'उसको' न पुकारो;
अब जबकि तुम झुठला चुके हो, तो जल्द ही उसकी सज़ा लाज़िम (ज़रूरी)
होगी।

## सूर-ए-शुअ़रा

यह सूरः मक्की है, इस में अ़रबी के 5689 अक्षर,1347 शब्द,227 आयतें और 11 रूकूअ़ हैं।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

1 ता- सीन्- मीम्;

2 यह स्पष्ट किताब की आयतें हैं।
3 शायद, आप अपने आप को हलाक कर देंगे, इस पर कि यह लोग ईमान नहीं लाते।
4 अगर 'हम' चाहें तो इन पर आसमान से ऐसी निशानी उतार दें, कि इनकी गर्दनें उनके आगे झुक जाएँ।
5 और उनके रहमान के पास से जो भी ताज़ा नसीहत आती है, वे उससे मुँह फेर ही लेते हैं।
6 अब जबकि वे झुठला चुके हैं, तो जल्द ही उन्हें उसकी हक़ीक़त मालूम हो जाएगी, जिसका वे मज़ाक़ उड़ाते रहे हैं।
7 क्या उन्होंने ज़मीन पर निगाह नहीं डाली! कि 'हमने' उसमें कितने ही क़िस्म की उम्दा चीज़ें उगायीं?-
8 बेशक इसमें निशानी है, मगर इनमें से अक्सर लोग ईमान लाने वाले नहीं।
9 और तुम्हारा 'रब' ग़ालिब (प्रभुत्वशाली), रहम करने वाला है।
10 और जब तुम्हारे 'रब' ने मूसा को पुकारा कि ''ज़ालिम क़ौम के पास जाओ-
11 फ़िरऔन की क़ौम के पास- क्या यह डरते नहीं?''
12 (मूसा ने) कहा, ''ऐ मेरे रब! मुझे डर है कि वह मुझे झूठा समझें,
13 और मेरा सीना घुटता है, और मेरी ज़बान नहीं चलती, तो हारून की ओर भी सन्देश (रिसालत) भेज;
14 और मुझ पर उन लोगों का एक गुनाह भी है, इसलिए मुझे डर है कि मुझे क़त्ल कर देंगे।''
15 कहा, ''हरगिज़ नहीं! तुम दोनों 'हमारी' निशानियाँ लेकर जाओ, हम तुम्हारे साथ सुनते रहेंगे।''
16 तो तुम दोनों फ़िरऔन के पास जाओ और कहो, ''हम सारे संसार के 'रब' के भेजे हुए हैं;
17 कि तू बनी इस्राईल को हमारे साथ जाने दे।''
18 (फ़िरऔन ने) कहा, ''क्या हमने तुझे जबकि 'तू' बच्चा था, अपने यहाँ पाला नहीं? और तूने अपनी उम्र के बरसहा-बरस हमारे यहाँ (नहीं) गुज़ारे;
19 और 'तूने' वह जो हरकत की थी, वह तो की, और तू बड़ा ही नाशुक्रा है।''
20 (मूसा ने) कहा, ''ऐसा तो उस समय हो गया था जबकि मैं ख़ताकारों में था;
21 तो जब मुझे तुम्हारा डर हुआ तो मैं तुम्हारे यहाँ से भाग गया, फिर मेरे 'रब' ने मुझे हुक्म किया, और मुझे रसूलों में शामिल कर लिया;
22 और यही एहसान है जो तू मुझ पर रखता है कि 'तूने' बनी इस्राईल को गुलाम बना रखा है।''
23 फ़िरऔन ने कहा, ''और यह सारे संसार का 'रब' क्या होता है?''
24 कहा, ''आसमानों और ज़मीन का रब और उनके बीच की तमाम चीज़ों का, अगर तुम्हें यक़ीन हो।''

25 (फ़िरऔ़न ने) अपने आस-पास वालों से कहा, ''क्या तुम सुनते नहीं हो?''
26 कहा, ''तुम्हारा 'रब' और तुम्हारे अगले बाप-दादा का रब।''
27 (फ़िरऔ़न ने) कहा, तुम्हारा यह रसूल, जो तुम्हारी ओर भेजा गया है, बिल्कुल पागल है।''
28 (मूसा ने) कहा, ''पूरब और पश्चिम का 'रब' और जो कुछ इन दोनों के बीच में है उनका भी, अगर तुम कुछ अक़्ल रखते हो।''
29 (फ़िरऔ़न) बोला, ''अगर तूने मेरे सिवा किसी और को मअ़बूद (उपास्य) बनाया तो मैं तुझे बन्दी बना कर रहूँगा।''
30 (मूसा ने) कहा, ''क्या अगर मैं तेरे पास एक स्पष्ट चीज़ लाऊँ तब भी?''
31 बोला, ''अच्छा तो वह ले आ, अगर तू सच्चा है।''
32 फिर उन्होंने अपना अ़सा (लाठी) डाल दिया, तो उसी वक़्त एक खुला हुआ साँप बन गया।
33 और उन्होंने अपना हाथ बाहर खींचा, तो (क्या देखते हैं कि) वह देखने वालों को सफ़ेद नज़र आने लगा।
34 (फ़िरऔ़न ने) अपने आस-पास के सरदारों से कहा, यह कोई बड़े इल्म वाला जादूगर है;
35 यह चाहता है कि अपने जादू से तुम्हें तुम्हारी ज़मीन से निकाल बाहर करे, तो तुम्हारी क्या राय है?''
36 उन्होंने कहा, ''इसको और इसके भाई को अभी मोहलत दीजिए, और तमाम शहरों में बुलाने वालों को भेज दीजिए,
37 कि वह तमाम माहिर जादूगरों को तुम्हारे पास ले आए।''
38 तो जादूगर निश्चित दिन, निश्चित समय पर जमा कर लिए गये;
39 और लोगों से कहा गया, ''तुम (सब) भी इकट्ठा होगे?''
40 ताकि हम जादूगरों के पीछे चलें, अगर वह विजयी हों।
41 तो जब जादूगर आए, उन्होंने फ़िरऔ़न से कहा, ''क्या हमें कोई इनूआ़म भी मिलेगा, अगर हम विजयी हुए?''
42 (फ़िरऔ़न ने) कहा, ''हाँ, और तुम तो उस समय क़रीबी लोगों में से हो जाओगे।''
43 (मूसा ने) उनसे कहा, ''डाल दो जो कुछ तुम्हें डालना है।''
44 तब उन्होंने अपनी रस्सियाँ और लाठियाँ डाल दीं और बोले, ''फ़िरऔ़न के इज़्ज़त की क़सम! हम ही विजयी रहेंगे।''
45 फिर मूसा ने अपनी लाठी डाली तो वह उन चीज़ों को, जो जादूगरों ने बनाई थीं, निगलने लगी;
46 तो जादूगर सज्दे में गिर पड़े।
47 वे कहने लगे, ''हम सारे संसार के 'रब' पर ईमान ले आए;

48 मूसा और हारून के रब पर!''
49 (फ़िरऔन ने) कहा, ''तुमने उसको मान लिया, इससे पहले कि मैं इजाज़त देता! बेशक यह तुम सब का बड़ा है, जिसने तुम सबको जादू सिखाया है, तो अभी तुम सब को मालूम हो जाएगा! मैं तुम्हारे हाथ और पैर, विपरीत (मुख़ालिफ़) दिशाओं के, कट्वा दूँगा और तुम सब को सूली पर चढ़ा दूँगा।''
50 उन लोगों ने कहा, ''कुछ हरज नहीं, हम तो अपने 'रब' ही की ओर पलट कर जाने वाले हैं;
51 बेशक हमें तो उम्मीद है कि हमारा 'रब' हमारे गुनाहों को माफ़ कर देगा, क्यों कि हम सबसे पहले ईमान ले आए।''
52 और 'हमने' मूसा की ओर वह्य की, ''हमारे बन्दों को रातों-रात लेकर निकल जाओ, निश्चय ही तुम्हारा पीछा किया जाएगा।''
53 तो फ़िरऔन ने बुलाने वालों को शहरों में भेजा,
54 कि ''यह गिरे-पड़े थोड़े लोगों का एक गिरोह है;
55 और यह हमें ग़ुस्सा दिला रहे हैं,
56 और हम सब साज़ और सामान के साथ हैं।''
57 तो 'हमने' उनको बाग़ों, और चश्मों (स्रोतों) से निकाला;
58 और ख़ज़ानों और बेहतरीन मकानों से;
59 ऐसा ही 'हम' करते हैं और इनका वारिस, 'हमने' बनी इस्राईल को बना दिया।
60 तो उन्होंने सूरज निकलने के वक़्त पीछा किया।
61 फिर जब दोनों गिरोहों ने एक-दूसरे को देख लिया, तो मूसा के साथियों ने कहा, ''हम तो पकड़े गये।''
62 (मूसा ने) कहा, ''हरगिज़ नहीं! मेरे साथ मेरा 'रब' है, 'वह' ज़रूर मुझे राह दिखाएगा।''
63 तो 'हमने' मूसा की ओर वह्य की, ''कि अपना अ़सा (लाठी) समुद्र पर मारो,'' तो वह फट गया और हर टुकड़ा एक बड़े पहाड़ की तरह हो गया।
64 और 'हम ने' वहाँ दूसरों को क़रीब कर दिया।
65 और 'हमने' मूसा और उन सब को जो उनके साथ थे, बचा लिया।
66 फिर दूसरों को ग़र्क़ (डुबो) कर दिया।
67 बेशक इसमें निशानी है, मगर इस में अक्सर ईमान लाने वाले नहीं।
68 और आप का 'रब' ही है जो बड़ी ताक़त वाला, रहम वाला है।
69 और इनको इब्राहीम की ख़बर पढ़ कर सुनाइए,
70 जब उन्होंने अपने बाप और अपनी क़ौम के लोगों से कहा, ''तुम किन चीज़ों की इबादत करते हो।''
71 उन्होंने कहा, ''हम बुतों की इबादत करते हैं, और हम इन्हीं की सेवा में लगे रहेंगे।''
72 (इब्राहीम ने) कहा, ''क्या वे तुम्हारी सुनते हैं, जब तुम उनको पुकारते हो,

73 या यह तुम्हें फ़ायदा, या नुक़्सान पहुँचाते हैं?''
74 उन्होंने कहा, ''(नहीं) बल्कि हमने अपने बाप-दादा को ऐसा ही करते पाया है।''
75 (इब्राहीम ने) कहा, ''क्या तुमने उन पर विचार भी किया है जिन्हें तुम पूजते रहे हो;
76 तुम भी और तुम्हारे पहले के बाप-दादा भी?''
77 वह मेरे दुश्मन हैं, सिवाय रब्बुलू-आ़लमीन (सारे संसार के पालनकर्ता) के,
78 'जिसने' मुझे पैदा किया तो 'वही' मेरी रहनुमाई करता है,
79 और 'वही' है जो मुझे खिलाता और पिलाता है,
80 और जब मैं बीमार होता हूँ, तो 'वही' मुझको अच्छा करता है,
81 और 'वही' है जो मुझे मारेगा, फिर ज़िन्दा करेगा;
82 और 'वही' है, 'जिससे' मुझे इसकी उम्मीद है कि बदला दिये जाने के दिन वह मेरी खताएँ माफ़ कर देगा।
83 ऐ मेरे 'रब'! मुझे हिक्मत अ़ता कर और मुझे अच्छे लोगों में शामिल कर,
84 और बाद के आने वालों में मुझे सच्ची ख्याति (शोहरत) दे,
85 और मुझे नेअ़मत के बाग़ों (जन्नत) के वारिसों में (शामिल) कर,
86 और मेरे बाप को माफ़ कर दे, वह गुमराह लोगों में से है,
87 और मुझे उस दिन रूसवा न कर, जिस दिन लोग उठाए जाएँगे;
88 जिस दिन न माल काम आएगा और न औलाद,
89 सिवाय उसके जो व्यक्ति सलामती वाला दिल लेकर अल्लाह के सामने आया।
90 और जन्नत, परहेज़गारों के क़रीब लाई जाएगी;
91 और दोज़ख़ गुमराहों के सामने लाई जाएगी,
92 और उनसे कहा जाएगा, ''कहाँ हैं वे जिनकी तुम इबादत करते थे;
93 अल्लाह को छोड़ कर, क्या वे तुम्हारी मदद कर सकते हैं या अपना बचाव कर सकते हैं?''
94 तो वे और तमाम गुमराह लोग उस (जहन्नम) में औंधे झोंक दिये जाएँगे,
95 और इब्लीस की सारी सेनाएँ भी,
96 वे वहाँ आपस में झगड़ते हुए कहेंगे,
97 ''अल्लाह की क़सम! हम तो खुली हुई गुमराही में थे,
98 जबकि हम तुम्हें सारे संसार के 'रब' के बराबर ठहरा रहे थे;
99 और मुजरिमों ने ही हमें गुमराह किया था,
100 तो (आज) हमारा कोई सिफ़ारशी नहीं;
101 और न कोई जिगरी दोस्त है;
102 अगर हमें एक बार और लौटने का मौक़ा मिल जाए, तो हम ईमान वालों में से हो जाते।''

103 बेशक इसमें बड़ी निशानी है, इस पर भी इनमें से अक्सर ईमान लाने वाले नहीं;
104 और आप का 'रब' ही बड़ी ताक़त वाला, रह़म वाला है।
105 नूह़ की क़ौम ने भी रसूलों को झुठलाया,
106 जबकि उनसे उनके भाई नूह़ ने कहा, "क्या तुम डरते नहीं?
107 मैं तुम्हारे लिए एक अमानतदार रसूल हूँ,
108 तो तुम अल्लाह से डरो और मेरा कहा मानो;
109 और मैं इस काम का तुमसे कोई बदला नहीं माँगता हूँ मेरा बदला तो बस सारे संसार के 'रब' के ज़िम्मे है;
110 तो अल्लाह से डरो और मेरी फ़रमाँबरदारी करो।"
111 उन्होंने कहा, "क्या हम तुम्हें मान लें, जबकि तुम्हारे पीछे तो बड़े नीच लोग चल रहें हैं?"
112 (नूह़ ने) कहा, "मुझे क्या मालूम कि वे क्या करते रहे?
113 उनका हिसाब तो मेरे 'रब' के ज़िम्मे है, क्या ही अच्छा होता कि तुम समझते?-
114 और मैं उन लोगों को धुत्कारने वाला नहीं, जो ईमान लाए;
115 मैं तो बस खुली हुई चेतावनी देने वाला हूँ।"
116 उन्होंने कहा, "अगर तुम बाज़ न आए तो, 'ऐ नूह़ तुम ज़रूर संगसार (पत्थर द्वारा मार डालना) किये जाओगे।"
117 (नूह़ ने) कहा, "ऐ मेरे रब! मेरी क़ौम ने मुझे झुठला दिया;
118 अब 'तू' मेरे और उनके बीच साफ़ फ़ैसला कर दे, और मुझे और जो ईमान वाले मेरे साथ हैं, उन्हें बचा ले।"
119 तो 'हमने' उसे और जो उसके साथ भरी हुई नौका में (सवार) थे, बचा लिया;
120 फिर इसके बाद बाक़ी लोगों को डुबो दिया।
121 बेशक इसमें बड़ी निशानियाँ हैं, और इनमें अक्सर लोग ईमान लाने वाले नहीं थे।
122 और तुम्हारा 'रब' बड़ी ताक़त वाला, (प्रभुत्वशाली) रह़म वाला है।
123 आ़द ने भी रसूलों को झुठलाया।
124 जबकि उनके भाई हूद ने उनसे कहा, "क्या तुम डरते नहीं?-
125 मैं तुम्हारे लिए एक अमानतदार हूँ।
126 तो अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो;
127 और मैं इस पर तुमसे कुछ बदला नहीं माँगता, मेरा बदला तो रब्बुल्-आ़लमीन के ज़िम्मे है;
128 तुम हर ऊँची जगह पर बेकार निशान तामीर (निर्माण) करते हो?
129 और महल बनाते हो जैसा कि तुम्हें हमेशा रहना है;
130 और जब (किसी को) पकड़ते हो तो बड़ी सख़्ती से पकड़ते हो;

131 तो अल्लाह से डरो और मेरा कहना मानो,
132 और डरो 'उससे' जिसने तुम्हारी उन चीज़ों से मदद की, जो तुम्हें मालूम हैं:
133 'उसने' तुम्हारी मदद की, चौपायों और औलाद से;
134 और बाग़ों, और स्रोतों से।
135 मुझे डर है एक ऐसे दिन के अ़ज़ाब का जो बड़ा ही सख़्त होगा।''
136 उन्होंने कहा, ''हमारे लिए सब बराबर है तुम नसीह़त करो या न करो।
137 यह बात तो अगलों से चली आ रही है;
138 और हमको अ़ज़ाब नहीं दिया जाएगा।''
139 तो उन्होंने उसको (हूद) झुठलाया, तो 'हमने' उनको हलाक कर दिया, बेशक इसमें बड़ी निशानी है, और इनमें अक्सर लोग ईमान लाने वाले नहीं थे।
140 और आप का 'रब' बड़ी ताक़त वाला, रह़म वाला हैं।-
141 समूद ने भी रसूलों को झुठलाया,
142 जबकि उनके भाई सालेह़ ने उनसे कहा, ''क्या तुम डरते नहीं?
143 मैं तो तुम्हारा एक अमानतदार रसूल हूँ,
144 तो अल्लाह से डरो और मेरा कहना मानो,
145 और मैं इस पर तुमसे कोई बदला नहीं माँगता, मेरा बदला तो सारे संसार के 'रब' के ज़िम्मे है;
146 क्या जो चीज़ें तुम्हारे पास हैं, उनमें चैन से छोड़ दिये जाओगे;
147 बाग़ों और स्रोतों में,
148 और खेतों, और ख़जूरों के बाग़ों में- जिनके गुच्छे बड़े मज़ेदार होते हैं;
149 और पहाड़ों को तराश कर तुम इमारतें बनाते हो, ताकि तुम उस पर गर्व करो,
150 तो अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो;
151 और ह़द से गुज़रने वालों के पीछे न चलो,
152 जो ज़मीन में फ़साद बरपा करते हैं, और सुधार पैदा नहीं करते।''
153 उन्होंने कहा, ''तुम पर जादू का असर हो गया है;
154 कुछ नहीं, तुम हमारे ही जैसे आदमी हो, और अगर सच्चे हो तो लाओ कोई निशानी।''
155 (सालेह़ ने) कहा, ''यह ऊँटनी है, एक दिन पानी पीने की बारी इसकी है, और एक निश्चित दिन पानी की बारी तुम्हारे लिए है;
156 और इसको कोई तक्लीफ़ पहुँचाने के लिए हाथ न लगाना (वरना) एक सख़्त दिन का अ़ज़ाब तुम पर आ जाएगा।''
157 मगर उन्होंने उसकी कूँचें काट दीं, और फिर पछता के रह गये।

158 तो उन्हें अ़ज़ाब ने आ दबोचा, बेशक इसमें बड़ी निशानी है, इस पर भी इनमें से अक्सर लोग मानने वाले नहीं।

159 और तुम्हारा रब बड़ी ताक़त वाला, रह़म वाला है।

160 लूत की क़ौम ने भी रसूलों को झुठलाया।

161 जबकि उनके भाई लूत ने उनसे कहा, ''क्या तुम डरते नहीं?-

162 मैं तो तुम्हारे लिए एक अमानतदार रसूल हूँ;

163 तो अल्लाह से डरो और मेरा कहना मानो,

164 और मैं इस काम पर तुमसे कोई बदला नहीं माँगता, मेरा बदला तो सारे संसार के 'रब' के ज़िम्मे है।

165 क्या सारे संसार के लोगों में तुम्हीं ऐसे हो कि (इच्छापूर्ति के लिए) मर्दों के पास जाते हो?-

166 और अपनी पत्नियों को, जिन्हें तुम्हारे 'रब' ने तुम्हारे लिए पैदा की हैं छोड़ देते हो (इतना ही नहीं) बल्कि तुम ह़द से आगे बढ़े हुए लोग हो।''

167 उन्होंने कहा, ''अगर तू बाज़ न आया, 'ऐ लूत! तो तू ज़रूर निकाल बाहर किया जाएगा।''

168 (लूत नें) कहा, ''मैं तुम्हारे काम से बेज़ार (विरक्त) हूँ;

169 ऐ मेरे रब! मुझे और मेरे घर वालों को, इनके कर्तूतों से छुट्कारा दिला, जो वह करते हैं।''

170 तो 'हमने' उनको और उनके घर वालों को बचा लिया;

171 सिवाय एक बुढ़िया के, जो पीछे रह जाने वालों में थी।

172 फिर 'हमने' बाक़ी लोगों को हलाक कर दिया,

173 और उन पर (पत्थरों की) वर्षा की- क्या ही बुरा (पत्थराव) उन पर बरसा- जो सचेत किये जाने वालों पर बरसाया गया।

174 बेशक इसमें निशानी है, इस पर भी अक्सर लोग ईमान लाने वाले नहीं।

175 और तुम्हारा 'रब' ताक़त वाला (प्रभुत्वशाली), रह़म वाला है।

176 अल-ऐका (जंगल के रहने) वालों ने रसूलों को झुठलाया;

177 जबकि शुऐब ने उनसे कहा, ''क्या तुम डरते नहीं?-

178 मैं तुम्हारे लिए एक अमानतदार हूँ,

179 तो अल्लाह से डरो और मेरा कहना मानो,

180 मैं इस पर तुमसे कोई बदला नहीं माँगता, मेरा बदला तो सारे संसार के 'रब' के ज़िम्मे है।

181 नाप पूरा-पूरा भरा करो और घाटा न दिया करो।

182 और तराज़ू सीधा रख कर तौला करो;
183 और लोगों को उनकी चीज़े कम न दिया करो, और ज़मीन में फ़साद न फैलाते फिरो;
184 और डरो उससे 'जिसने' तुम्हें और तुम से पहलों की नस्लों को पैदा किया।''
185 उन्होंने कहा, ''तुम पर जादू का असर हो गया है,
186 और तुम तो बस हमारे ही जैसे आदमी हो, और हम तो तुम्हें बिल्कुल झूठा समझते हैं;
187 अगर तुम सच्चे हो तो, हम पर आसमान का एक टुकड़ा गिरा दो।''
188 (शुअ़ैब ने) कहा, मेरा 'रब' ही जानता है जो कुछ तुम कर रहे हो।''
189 मगर उन्होंने उनको झुठला दिया, फिर छाया वाले दिन के अ़ज़ाब ने आ पकड़ा, बेशक वह एक बड़े दिन का अ़ज़ाब था;
190 इसमें बड़ी निशानी है, और इनमें से अक्सर लोग ईमान लाने वाले नहीं;
191 और तुम्हारा रब ताक़त वाला, रह़म वाला है।
192 और (क़ुर्आन)यह सारे संसार के रब का नाज़िल किया हुआ है;
193 इसको रूहुल अमीन (विश्वसनीय आत्मा) लेकर नाज़िल हुए हैं;
194 आप के दिल पर, ताकि आप चेतावनी देने वाले बनें;
195 स्पष्ट अ़रबी भाषा में,
196 और इसकी ख़बर पहले लोगों के ग्रन्थों में भी मौजूद है।
197 क्या उन लोगों के लिए यह निशानी नहीं है कि इसे बनी इस्राईल के उल्मा (विद्वान) जानते हैं?
198 और अगर हम इसे किसी अ़जमी (ग़ैर जानने वाले) पर उतारते,
199 वह उनको पढ़ कर सुनाता तो भी यह उस पर ईमान लाने वाले न थे।
200 इस तरह 'हमने' यह बात मुजरिमों के दिलों में दाख़िल कर दी,
201 वे इस पर ईमान नहीं लाएँगे, जब तक दर्दनाक अ़ज़ाब न देख लें;
202 तो वह उन पर अचानक आएगा और उससे वे बेख़बर होंगे।
203 तो उस समय वे कहेंगे, ''क्या हमें मोहलत मिलेगी?''
204 तो क्या यह 'हमारे' अ़ज़ाब की जल्दी मचा रहे हैं?
205 क्या तुम ने सोचा! अगर हम इन्हें कुछ साल तक सुख भोगने दें;
206 फिर उन पर वह चीज़ आ जाए, जिससे उन्हें डराया जा रहा है?-
207 तो जो सुख उन्हें मिला होगा वह उनके कुछ काम न आएगा।
208 और 'हमने' किसी बस्ती को हलाक नहीं किया, मगर उसके लिए सचेत करने वाले (पहले) भेज देते थे;
209 (ताकि) नसीह़त (करें) !और 'हमारा' काम ज़ुल्म करना नहीं है।

210 और इस (क़ुर्आन) को शैतान लेकर नहीं उतरा,
211 और न यह काम उनके बस का है, और न वह ताक़त रखते हैं;
212 वे इसके सुनने से भी दूर रखे गये हैं।
213 तो अल्लाह के साथ किसी और मअ़बूद (उपास्य) को न पुकारिए वरना आप सज़ा पाने वालों में शामिल हो जाएँगे;
214 और अपने क़रीबी रिश्तेदारों को भी सचेत कीजिए,
215 और जो ईमान लाने वाले आपकी पैरवी करें, उनके लिए अपने बाज़ू (भुजाएँ) झुका दें।
216 तो अगर वे इन्कार करें तो उनसे कह दीजिए ''जो कुछ तुम करते हो उसकी ज़िम्मेदारी से मैं बरी हूँ।''
217 और भरोसा करो 'उस' पर, 'जो' बड़ी ताक़त वाला, रह़म वाला है;
218 'जो' तुम्हें देख रहा होता है, जब तुम (नमाज़ में) खड़े होते हो;
219 और सज्दा करने वालों में तुम्हारी चलत-फिरत को भी, (वह देखता है)
220 बेशक 'वह' सब कुछ सुनने वाला, जानने वाला है।
221 क्या 'मैं' तुम्हें बताऊँ कि शैतान किस पर उतरते हैं?-
222 हर ढ़ोंग रचने वाले गुनहगार पर उतरते हैं;
223 वे कान लगाते हैं और उनमें से अक्सर लोग झूठे होते हैं।
224 और रहे शायर (कवि), तो उनके पीछे बहके हुए लोग चला करते हैं;
225 क्या तुम देखते नहीं! कि वे हर घाटी में बहकते फिरते हैं,
226 और ऐसी बातें कहते हैं जो करते नहीं?-
227 सिवाय उनके, जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे अ़मल किये और अल्लाह को ज़्यादा से ज़्यादा याद किया, और इसके बाद भी उन पर ज़ुल्म किया गया तो उन्होंने उसका बदला लिया, और जिन लोगों ने ज़ुल्म किया, उन्हें जल्द मालूम हो जाएगा कि वे किस जगह लौट कर जाते हैं।

## सूर-ए-नम्ल

यह सूरः मक्की है, इस में अ़रबी के 4879 अक्षर, 1167 शब्द, 93 आयतें और 7 रूकूअ़ हैं।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

1 ता-सीन। ये आयतें हैं क़ुर्आन और एक स्पष्ट किताब की।
2 हिदायत और खुशख़बरी है ईमान वालों के लिए;

3 वे जो नमाज़ क़ायम करते, और ज़कात देते, और आख़िरत पर यक़ीन रखते
हैं।
4 जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, 'हमने' उनके काम उनके लिए
खुशनुमा (सुन्दर) बना दिये हैं तो वे परेशान भटकते फिरते हैं;
5 ऐसे ही लोगों के लिए (दुनिया में) बुरा अ़ज़ाब है, और आख़िरत में भी, वे
बड़े घाटे में होंगे।
6 और आप यह क़ुर्आन एक हिक्मत वाले, बड़े जानने वाले की ओर से पा रहे
हैं।
7 (और याद करो) जब मूसा ने अपने घर वालों से कहा, ''मैंने एक आग देखी
है, मैं अभी वहाँ से तुम्हारे पास कोई ख़बर लेकर आता हूँ या तुम्हारे पास
कोई दहकता हुआ अंगारा लाता हूँ, ताकि तुम तापो।''
8 जब वह उसके पास पहुँचे तो आवाज़ आई, ''मुबारक है 'वह' जो इस आग
में है, और जो इसके आस-पास है, और पाक है अल्लाह, सारे संसार का
'रब';
9 ऐ मूसा! वह तो, 'मैं अल्लाह हूँ,' बड़ी ताक़त वाला (प्रभुत्वशाली), हिक्मत
वाला!
10 और अपना अ़सा (लाठी) डाल दें।'' जब उन्होंने देखा कि वह हरकत कर
रहा है, जैसे वह कोई साँप है, तो पीठ फेर कर भागे और पलट कर भी न
देखे। ''ऐ मूसा! डरो नहीं, रसूल मेरे पास डरा नहीं करते;
11 सिवाय उसके कि जिसने ज़ुल्म किया हो, फिर बुराई को भलाई से बदल दिया;
तो 'मैं' बड़ा माफ़ करने वाला, रहम वाला हूँ।
12 और आप अपना हाथ अपने गिरेबान में डलें, तो वह बिना किसी रोग के
सफ़ेद चमकता हुआ निकलेगा, यह नौ निशानियों में से है जिनके साथ आप
फ़िरऔन और उसकी क़ौम के पास जाएँ वे बड़े फ़ासिक़ (दुराचारी) लोग हैं।''
13 तो जब उनके सामने 'हमारी' खुली निशानियाँ आईं, तो उन्होंने कहा, ''यह
तो खुला जादू है।''
14 और ज़ुल्म और घमंड की वजह से उनका इन्कार किया, जबकि उनको अपने
दिल में यक़ीन हो चुका था, तो देखो! फ़साद करने वालों का कैसा अंजाम
हुआ?
15 और 'हमने' दाऊद और सुलेमान को इल्म दिया, और उन्होंने कहा, ''शुक्र
है अल्लाह का, जिसने हमें अपने बहुत से ईमान वाले बन्दों पर फ़ज़ीलत
(श्रेष्ठता) दी।''
16 और दाऊद के वारिस सुलेमान हुए, और कहने लगे ''लोगो! हमें परिन्दों
की बोली सिखाई गयी है, और हमें हर चीज़ दी गयी है, बेशक यह स्पष्ट
मेहरबानी है।''
17 और सुलेमान के लिए जिन्नों, और इन्सानों और परिन्दों में से उसकी सेनाएँ
जमा की गयीं, फिर उनकी दर्जाबन्दी (पंक्तिबद्धता) की गयी;
18 यहाँ तक कि जब चींटियों की घाटी में पहुँचे, तो एक चींटी ने कहा, ''ऐ

चींटियो! अपने घरों में दाख़िल हो जाओ, कहीं सुलेमान और उसकी सेनाएँ तुम्हें कुचल न डालें और उनको एहसास भी न हो।"

19 तो वह उसकी बात पर ख़ुश हो कर मुस्कुराए और कहा, "ऐ 'रब'! मुझे संभाले रख, कि मैं तेरे उस एहसान का शुक्र अदा करता रहूँ जो 'तूने' मुझ पर और मेरे माँ-बाप पर किया है, और यह कि अच्छे काम करूँ जो 'तुझे' पसंद आएँ और अपनी रहमत से मुझे अपने भले बन्दों में दाख़िल कर।"

20 और (जब) उन्होंने पक्षियों की जाँच पड़ताल की तो कहा, "क्या बात है कि मैं हुदहुद को नहीं देख रहा हूँ, क्या वह ग़ायब हो गया?-

21 मैं उसे सख़्त सज़ा दूँगा या उसे ज़ब्ह कर डालूँगा, या फिर मेरे सामने कोई खुली दलील ले आए।"

22 फिर ज़्यादा देर नहीं लगी कि उसने आकर कहा, "मैंने वह जानकारी हासिल की है, जो आप को मालूम नहीं, मैं 'सबा' से एक सच्ची ख़बर लेकर आया हूँ;

23 और मैंने एक औरत (सबा) को शासन करते हुए पाया है, उसे हर चीज़ हासिल है और उसका एक बड़ा सिंहासन है;

24 मैंने उसे और उसकी क़ौम को, अल्लाह को छोड़ कर सूरज को सज्दः करते हुए पाया है, और शैतान ने उसके आमाल उसके लिए ख़ुशनुमा (शोभायमान) बना दिये हैं और उनको सीधी राह से रोक दिया है इसलिए वे राह नहीं पा रहे हैं-

25 कि अल्लाह को सज्दः क्यों न करें, जो आसमानों और ज़मीन की छिपी चीज़ें निकालता है, और जानता है जो कुछ तुम छिपाते हो, और जो दिखा कर करते हो;

26 अल्लाह, कि उसके सिवा कोई मअ़बूद (उपास्य) नहीं, वह अर्श-अज़ीम (महान सिंहासन) का 'रब' है;"

27 (सुलेमान ने) कहा, "अभी हम देख लेते हैं कि 'तूने' सच कहा, या झूठ बोलने वालों में से है;

28 मेरा यह पत्र लेकर जा, और उनके पास डाल दे, फिर उनके पास से अलग हट कर देख कि वे क्या जवाब देते हैं?"

29 वह (रानी) बोली, "ऐ दरबार वालो! मेरे पास एक महत्वपूर्ण पत्र डाला गया है,

30 वह सुलेमान की ओर से है और वह यह है कि 'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम' (शुरू अल्लाह के नाम से, जो बड़ा कृपालु, महा- दयालु है);

31 यह कि मेरे मुक़ाबले में सरकशी न करो, और मुस्लिम (फरमाँबरदार) हो कर मेरे पास हाज़िर हो जाओ।"

32 उसने कहा, "ऐ दरबार वालो! इस मामले में मुझे सुझाव दो, मैं किसी मामले का फ़ैसला नहीं करती, जब तक कि तुम मेरे पास मौजूद न हो।"

33 उन्होंने कहा, "हम बड़ी ताक़त वाले और युद्ध क्षमता वाले लोग हैं, मगर

फ़ैसला आप के हाथ में है, अतः आप देख लें कि आप को क्या आदेश देना है।''

34 उसने कहा, ''बादशाह जब किसी आबादी में दाख़िल होते हैं, तो उसे तोड़-फोड़ देते हैं और वहाँ के सम्मानित लोगों को अपमानित कर देते हैं, और इसी तरह यह भी करेंगे;

35 और मैं उनके पास कुछ उपहार (तोहफ़ा) भेजती हूँ; फिर देखती हूँ कि क़ासिद (दूत) क्या जवाब लेकर आते हैं।''

36 तो जब वह (दूत) सुलेमान के पास पहुँचा तो (सुलेमान ने) कहा, ''क्या तुम माल से मेरी मदद करना चाहते हो, मुझे अल्लाह ने जो कुछ दिया है वह उससे कहीं बेहतर है, जो तुम्हें दिया है? बल्कि तुम ही हो, जो अपने उपहार से खुश होते हो!

37 उनके पास वापस जाओ, 'हम' उन पर ऐसी सेनाएँ लेकर आएँगे जिनका मुक़ाबला वे न कर सकेंगे, और 'हम' उन्हें अपमानित कर के वहाँ से निकाल देंगे और वे ज़लील होंगे।''

38 (सुलेमान ने) कहा, ''ऐ दरबारियो! तुममें से कौन उसका तख़्त (सिंहासन) लेकर मेरे पास आता है, इससे पहले कि वे मुस्लिम (आज्ञाकारी) होकर मेरे पास आएँ।''

39 जिन्नों में से एक अफ़रीत (बलिष्ट निर्भीक) ने कहा, ''मैं उसे आप के पास ले आऊँगा, इससे पहले कि आप अपनी जगह से उठें, मुझे इसकी शक्ति है, और मैं अमानतदार हूँ।''

40 एक व्यक्ति जिसके पास किताब का इल्म था, कहने लगा, ''मैं उसको आप के पलक झपकने से पहले हाज़िर किये देता हूँ।'' तो जब (सुलेमान ने) तख़्त को अपने पास रखा हुआ देखा तो कहा, ''यह मेरे 'रब' का फ़ज़्ल (अनुग्रह) है, ताकि मुझे आज़माए कि मैं शुक्र करता हूँ या नाशुक्री, और जो शुक्र करता है, वह अपने ही फ़ायदे के लिए करता है और जो नाशुक्री करता है, तो मेरा 'रब' बेनियाज़ (बेपरवाह), बड़ा करम वाला है।''

41 (सुलेमान ने) कहा, ''उसके सिंहासन का रूप बदल दो, देखें वह हक़ीक़त को पा लेती है या उन लोगों में से होकर रह जाती है, जो हक़ीक़त को नहीं पाते।''

42 जब वह आई तो कहा गया, ''क्या तुम्हारा सिंहासन ऐसा ही है उसने कहा, ''यह तो उसी जैसा है, और हमें तो इससे पहले ही इल्म हो चुका था; और हम मुस्लिम (फ़रमाँबरदार) हो गये थे।''

43 और अल्लाह को छोड़ कर वह दूसरे को पूजती थी, (सुलेमान ने) उसको उससे मना किया, बेशक वह एक काफ़िर क़ौम में से थी;

44 उससे कहा गया कि, ''महल में दाख़िल हो जाओ।'' उसने जब देखा तो समझी कि गहरा पानी है और अपनी पिंडुलियाँ खोल दीं; (सुलेमान ने कहा,) ''यह महल है शीशों से जुड़ा हुआ।'' वह पुकार उठी, ''ऐ रब! मैंने अपने

आप पर ज़ुल्म किया, और अब मैं सुलेमान के साथ अपने आप को अल्लाह रब्बुलआलमीन के सामने ईमान लाती (समर्पित करती) हूँ।''
45 और 'हमने' समूद की ओर उनके भाई सालेह़ को भेजा, ''अल्लाह की इबादत करो।'' तो वे दो गिरोह बन कर आपस में झगड़ने लगे।
46 (सालेह़ ने) कहा, ''ऐ मेरी क़ौम के लोगो! तुम भलाई से पहले बुराई के लिए क्यों जल्दी मचाते हो? अल्लाह से माफ़ी क्यों नहीं माँगते, ताकि तुम पर रह़म किया जाए?''
47 वे कहने लगे, ''हम तुमको और तुम्हारे साथियों को अपशगुन (मन्हूस) समझते हैं।'' तो (सालेह़ ने) कहा, ''तुम्हारा शकुन या अपशकुन तो अल्लाह की ओर से है, बल्कि बात यह है कि तुम्हारी आज़माइश हो रही है।''
48 और शहर में नौ व्यक्ति थे, जो ज़मीन में फ़साद बरपा करते थे, और सुध ाार का कोई काम न करते थे;
49 वे आपस में अल्लाह की क़सम खा कर बोले, ''हम ज़रूर उस पर और उसके घर वालों पर छापा मारेंगे, फिर उसके वारिसों से कह देंगे कि हम उसके घर वालों के हलाक होने के समय मौजूद न थे, और हम बिल्कुल सच्चे हैं।''
50 और उन्होंने एक चाल-चली और 'हमने' भी एक उपाय किया कि उन्हें ख़बर भी न हुई।
51 तो देख लो! कि उनकी चाल का कैसा अंजाम हुआ! 'हमने' उनको और उनकी क़ौम, सब को हलाक कर दिया।
52 तो यह उनके घर हैं जो वीरान पड़े हैं, उस ज़ुल्म की वजह से जो वे करते थे, इसमें बड़ी निशानी है, उन लोगों के लिए जो समझ रखते हों।
53 और 'हमने' उन लोगों को बचा लिया, जो ईमान लाए और डर रखते थे।
54 और लूत को (रसूल बना कर भेजा) जब उन्होंने अपनी क़ौम से कहा, ''क्या तुम नज़रों के सामने बद्कारी (कुकर्म) करते हो?-
55 क्या तुम औरतों को छोड़ कर मर्दों के पास नफ़्सानी ख्वाहिश (काम तृप्ति) के लिए जाते हो? बल्कि बात यह है कि तुम बड़े जाहिल लोग हो।''
56 तो उनकी क़ौम के लोगों का जवाब इसके सिवा कुछ न था कि उन्होंने कहा, ''निकाल बाहर करो लूत के घर वालों को अपनी बस्ती से, यह लोग बड़े पारसा बनते हैं।''
57 तो 'हमने' उनको और उनके घर वालों को बचा लिया सिवाय उन की पत्नी के, कि 'हमने' तय कर दिया था कि वह पीछे रह जाने वालों में से होगी।
58 और 'हमने' उन पर एक बारिश बरसाई, और वह बहुत ही बुरी बारिश थी उन लोगों के ह़क़ में, जिन्हें सचेत किया जा चुका था।
59 कह दीजिए, ''तमाम तअ़रीफें अल्लाह ही के लिए हैं, और सलाम है 'उसके' उन बन्दों पर जिनको 'उसने' चुन लिया, क्या अल्लाह बेहतर है, या जिनको ये अल्लाह का साझी ठहराते हैं?-
60 या 'वह' जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया, और तुम्हारे लिए आसमान से पानी बरसाया, और उसके ज़रिये सुन्दर बाग़ उगाए जिनके वृक्षों

को तुम्हारे लिए उगाना सम्भव न था; क्या अल्लाह के साथ कोई और भी
मअ़बूद (उपास्य) है? (नहीं,) बल्कि ये लोग राह से हटते चले जा रहे हैं;
61 या 'वह' जिसने धरती को ठहरने की जगह बनाई, और उसके बीच-बीच में
नदियाँ बहाईं, और उसके लिए मज़बूत पहाड़ बनाए, और दो समुद्रों के बीच
एक रोक लगा दी, तो क्या अल्लाह के साथ कोई और मअ़बूद है? (नहीं)
बल्कि उनमें से अक्सर जानते ही नहीं;
62 या 'वह' जो बेक़रार की फ़रियाद सुनता हो, जबकि वह उसको पुकारता है,
और वह उसके कष्ट को दूर करता है, और तुम को धरती में नायब (अधि
ाकारी) बनाता है, तो क्या अल्लाह के साथ कोई और मअ़बूद है? तुम बहुत
कम ध्यान देते हो;
63 भला कौन तुमको थल और जल के अन्धेरों में राह दिखाता है, और जो अपनी
रह़मत के आगे हवाओं को ख़ुशख़बरी बना कर भेजता है, क्या अल्लाह के
साथ कोई और मअ़बूद है अल्लाह बहुत ऊँचा है उस शिर्क से जो यह लोग
करते हैं;
64 भला कौन मख़्लूक़ (सृष्टि) को पैदा करता है, फिर उसी तरह दोबारा पैदा
करेगा, और जो तुम को आसमान और ज़मीन से रोज़ी देता है, क्या अल्लाह
के साथ कोई और मअ़बूद है? कह दीजिए, ''अपना प्रमाण लाओ अगर तुम
सच्चे हो।''
65 कह दीजिए, ''आसमानों और ज़मीन में कोई भी ऐसा नहीं, जो ग़ैब (परोक्ष)
का इल्म रखता हो, सिवाय अल्लाह के, और वे नहीं जानते कि कब उठाए
जाएँगे।''
66 बल्कि आख़िरत के बारे में उन लोगों की जानकारी 'मुन्तही' (ख़त्म) हो गयी
है बल्कि वे उसकी ओर से शक में हैं, बल्कि यह उससे अन्धे हो रहे हैं;
67 और जो लोग काफ़िर हैं कहते हैं, ''जब हम और हमारे बाप-दादा मिट्टी हो
जाएँगे, तो क्या हमें फिर (क़ब्रों) से निकाला जाएगा?-
68 इसका वादा तो इससे पहले भी किया जा चुका है, हमसे भी और हमारे
बाप-दादा से भी, यह तो बस पहले लोगों की कहानियाँ हैं।''
69 कह दीजिए, ''ज़मीन में चल फिर कर देख लो, कि मुजरिमों का क्या अंजाम
हुआ?''
70 और (ऐ मुह़म्मद) आप उन पर ग़म न कीजिए, और न दिल को तंग कीजिए
इनकी चालों पर, जो वे चल रहे हैं।
71 और कहते हैं, ''यह वादा कब पूरा होगा, अगर तुम सच्चे हो।''
72 कह दीजिए, ''जिसकी तुम जल्दी मचा रहे हो, बहुत सम्भव है कि कोई ह़िस्सा
तुम्हारे पीछे ही लगा हो।''
73 और तुम्हारा 'रब' तो लोगों पर बड़ा फ़ज़्ल (अनुग्रह) करने वाला है, मगर
इनमें अक्सर लोग शुक्र नहीं करते;
74 और बेशक तुम्हारा 'रब' खूब जानता है, जो कुछ वे सीनों में छिपाए हुए हैं,
और जो कुछ वे ज़ाहिर करते हैं।

75 और आसमानों और ज़मीन में कोई भी चीज़ ऐसी नहीं है, जो एक स्पष्ट
किताब में मौजूद न हो।
76 बेशक यह क़ुर्आन बनी इस्राईल पर उन बहुत सी बातों की हक़ीक़त स्पष्ट कर
रहा है जिनमें वे इख़्तिलाफ़ (मतभेद) कर रहे हैं।
77 और बेशक यह हिदायत और रहमत है ईमान वालों के लिए।
78 तुम्हारा 'रब' अपने हुक्म से उनके बीच फ़ैसला कर देगा, और 'वह' बड़ी
ताक़त वाला, इल्म वाला है।
79 तो अल्लाह पर भरोसा रखो! तुम तो खुले हक़ पर हो।
80 बेशक तुम न मुर्दों को सुना सकते हो और न बहरों को अपनी पुकार सुना
सकते हो, जबकि वे पीठ फेर कर आगे जा रहे हों।
81 और तुम अन्धों को उनकी गुमराही से हटा कर राह पर नहीं ला सकते, तुम
तो उन्हीं को सुना सकते हो जो 'हमारी' आयतों पर ईमान लाते हैं, और वे
मुस्लिम (आज्ञाकारी) बन जाते हैं;
82 और जब उन पर 'हमारी' बात पूरी हो जाएगी, तो 'हम' उनके लिए ज़मीन से
एक प्राणी निकालेंगे जो उनसे बयान करेगा "इसलिए कि लोग हमारी आयतों
पर ईमान नहीं लाते थे।"
83 और जिस दिन, हम हर उम्मत (समुदाय) में से उन लोगों की एक फौज
इकट्ठा करेंगे, जो 'हमारी' आयतों को झुठलाया करते थे, तो उनकी सफ़बन्दी
(क्रमबद्धता) की जाएगी;
84 यहाँ तक कि जब (सब) हाज़िर हो जाएँगे, तो 'वह' कहेगा, "क्या तुमने 'मेरी'
आयतों को झुठला दिया था और इल्म से तुम उन पर हावी न थे, फिर तुम
क्या करते थे?"
85 और बात उन पर पूरी होकर रहेगी, उनके ज़ुल्म की वजह से, तो वे कुछ न
बोल सकेंगे।
86 क्या उन्होंने देखा नहीं! कि हमने रात को (इसलिए) बनाया कि वे उसमें सुकून
हासिल करें, और दिन को रोशन बनाया? बेशक इसमें बड़ी निशानियाँ हैं, उन
लोगों के लिए जो ईमान लाते हैं।
87 और जिस दिन सूर (नरसिंघा) फूँका जाएगा, तो जो आसमानों और ज़मीन
में हैं, सब घबरा उठेंगे, सिवाय उनके जिन्हें अल्लाह चाहे, और सब आजिज़
होकर (कान दबाए) उसके सामने हाज़िर हो जाएँगे।
88 और तुम पहाड़ों को देखते हो! तो समझते हो कि वे जमे हुए हैं, मगर वे
बादलों की तरह उड़ रहे होंगे, (यह) अल्लाह की कारीगरी है 'जिसने' हर
चीज़ को मज़बूत बनाया, बेशक 'वह' उसकी ख़बर रखता है, जो कुछ तुम
करते हो।
89 जो व्यक्ति नेकी लेकर आएगा उसको उससे बेहतर बदला मिलेगा; और ऐसे
लोग उस दिन की घबराहट से सुरक्षित रहेंगे।

90 और जो बुराई लेकर आएगा तो ऐसे लोग औंधे मुँह जहन्नम में झोंक दिये
जाएँगे, तुम को उन्हीं आ़माल का बदला मिलेगा जो कुछ तुम करते रहे हो।
91 मुझे यही हुक्म दिया गया है कि इस (मक्का) शहर के 'रब' की इबादत करूँ,
जिसने इसे हुर्मत वाला (प्रतिष्ठित) बनाया है, और जो हर चीज़ का मालिक
है, मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं मुस्लिम (आज्ञाकारी) बन कर रहूँ;
92 और यह कि कु़र्आन पढ़ा करूँ, तो जो व्यक्ति सीधी राह अपनाएगा, वह अपनी
ही भलाई के लिए अपनाएगा, और जो गुमराह रहा, तो कह दीजिए कि "मैं
तो बस नसीह़त करने वाला हूँ।"
93 और कह दीजिए, "तमाम तअ़रीफें अल्लाह के लिए हैं, 'वह' तुम्हें अपनी
निशानियाँ दिखाएगा और तुम उन्हें पहचान लोगे, और तुम जो कुछ कर रहे
हो उससे तुम्हारा रब बेख़बर नहीं है।"

## सूर-ए-क़सस

यह सूरः मक्की है, इस सूरः में अ़रबी के 6011 अक्षर, 1454 शब्द, 88 आयतें और 9 रूकूअ़ हैं।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महा दयालु) है।

1 ता- सीन- मीम;
2 ये स्पष्ट किताब की आयतें हैं।
3 'हम' आप को मूसा और फ़िरऔन की कुछ सच्ची ख़बर सुनाते हैं, उन लोगों
के लिए जो ईमान लाएँ।
4 कि फ़िरऔ़न धरती में सरकश हो गया था और उसने वहाँ के रहने वालों को
विभिन्न गिरोहों में बाँट दिया था, उनमें से एक गिरोह को कमज़ोर बना रखा
था, उनके बेटों को ज़ब्ह़ (क़त्ल) करता, और उनकी औ़रतों को ज़िन्दा रहने
देता; बेशक वह फ़साद करने वालों में से था।
5 और 'हम' चाहते थे कि उन पर अपना फ़ज़्ल (उपकार) करें जो लोग ज़मीन
में कमज़ोर पड़े थे, और उनको पेशवा (नायक) बनाएँ; और उन्हीं को वारिस
बनाएँ;
6 और उनको ज़मीन में सत्ता (हुकूमत) दें; और फ़िरऔ़न, और हामान और
उनके लश्करों को उनके ज़रिये वह दिखाएँ, जिसका उन्हें डर था।
7 और 'हमने' मूसा की माँ को वह़्य (संकेत) किया, "उन्हें दूध पिलाओ फिर

जब तुमको इनके बारे में कुछ डर हो, तो उन्हें दरिया में डाल देना; और न
डरना और न दुःखी होना, 'हम' उनको तुम्हारे पास वापस लाएँगे और उन्हें
रसूल बना देंगे।''
8 तो फ़िरऔन के लोगों ने उन्हें उठा लिया, ताकि वह उनके लिए दुश्मनी और
ग़म का ज़रिया बने; बेशक फ़िरऔन और हामान और उनकी सेनाएँ बड़ी
ख़ताकार (दोषी) थीं।
9 और फ़िरऔन की पत्नी ने कहा, ''यह मेरी और तुम्हारी आँखों की ठंडक है,
इसको क़त्ल न करो, शायद यह हमें फ़ायदा पहुँचाए या हम इसे अपना बेटा
ही बना लें,'' और वे (अंजाम से) बेख़बर थे।
10 और मूसा की माँ का दिल बेचैन हो गया, अगर 'हम' उसका दिल मज़बूत
न कर देते तो क़रीब था कि वह इस (गुस्से) को ज़ाहिर कर देती, ताकि वह
ईमान वालों में रहे।
11 और उनकी बहन से कहा कि ''तू उसके पीछे-पीछे चली जा।'' तो वह उनको
दूर से देखती रही और उन लोगों को कुछ ख़बर न थी।
12 और 'हमने' उन (मूसा) पर पहले ही से दूध पिलाने वालियों को ह़राम कर
रखा था, उन (की बहन) ने कहा, ''क्या मैं तुम्हें ऐसे घर वालों का पता
बताऊँ जो तुम्हारे लिए इस (बच्चे) के परवरिश का ज़िम्मा ले लें, और इसका
भला चाहने वाले हों?''
13 इस तरह 'हमने' उनको उनकी माँ के पास लौटा दिया, ताकि उनकी आखें
ठंडी हों और वह ग़म न करें, और ताकि वह जान लें कि अल्लाह का वादा
सच्चा है, लेकिन अक्सर लोग जानते नहीं।
14 और जब वह अपनी जवानी को पहुँच गये और उनमें गम्भीरता आ गई, तो
'हमने' उनको ह़िक्मत और इल्म दिया, और 'हम' नेक लोगों को इसी तरह
बदला दिया करते हैं।
15 और वह शहर में ऐसे समय दाख़िल हुए जबकि वहाँ के रहने वाले बेख़बर
थे, तो देखा कि दो व्यक्ति लड़ रहे हैं, एक उनके अपने गिरोह का था और
दूसरा उनके दुश्मन के गिरोह का था- जो व्यक्ति उनके गिरोह का था उसने
उस व्यक्ति के मुक़ाबले में, जो दुश्मन के गिरोह से सम्बन्ध रखता था, उनको
मदद के लिए पुकारा! तो मूसा ने उसे घूँसा मारा और उसका काम तमाम कर
दिया, कहने लगे, ''यह शैतान की हरकत है, बेशक वह खुला गुमराह करने
वाला दुश्मन है।''
16 बोले, ''ऐ रब! मैंने अपने आप पर ज़ुल्म किया है, अतः आप मुझे माफ़ कर
दें।'' तो अल्लाह ने उन्हें माफ़ कर दिया, बेशक वह माफ़ करने वाला, रह़म
वाला है।
17 उन्होंने कहा, ''ऐ रब! तेरे इस एह़सान के बाद जो 'तूने' मुझ पर किया है,
मैं कभी अपराधियों का मददगार न बनूँ।''
18 फिर दूसरे दिन वह शहर में डरते, टोह लगाते हुए दाख़िल हुए तो क्या देखते
हैं, कि वही व्यक्ति जिसने कल मदद के लिए उनको पुकारा था, आज फिर
उन्हें पुकार रहा है; मूसा ने कहा, ''बेशक तू तो खुली हुई गुमराही में है।''

19 तो जब (मूसा ने) उस (क़िब्ती) व्यक्ति को, जो उन दोनों का दुश्मन था पकड़ने
का इरादा किया, तो वह पुकार उठा, ''ऐ मूसा, क्या तुम मुझे उसी तरह क़त्ल
करना चाहते हो, जिस तरह तुमने कल एक व्यक्ति को क़त्ल कर दिया था?
तुम ज़मीन में जब्बार (अत्याचारी) बन कर रहना चाहते हो, और सुधार करने
वाला नहीं बनना चाहते।''
20 और शहर के आख़िरी ओर से एक व्यक्ति दौड़ता हुआ आया, और कहने
लगा, ''मूसा हुकूमत के ज़िम्मेदार तुम्हें क़त्ल करने के लिए सलाह़ कर रहे हैं,
तो तुम यहाँ से निकल जाओ, मैं तुम्हारा भला चाहने वाला हूँ।''
21 तो वहाँ से (मूसा) निकल गये डरते हुए कि देखें (क्या होता है, और) कहा,
''ऐ रब! मुझे ज़ालिम क़ौम से छुटकारा दिला।''
22 और जब मद्यन का रूख किया, कहने लगे, ''उम्मीद है कि मेरा रब मुझे
सीधे रास्ते पर डाल दे;''
23 और जब वह मद्यन के पानी पर पहुँचे, तो उन्होंने उस पर पानी पिलाते
लोगों का एक गिरोह पाया, और उनसे हट कर एक ओर दो औ़रतों को पाया,
जो अपने जानवरों को रोक रही थीं, उन्होंने कहा, ''तुम्हारा क्या मामला है?''
कहा, ''हम उस समय तक पानी नहीं पिलाते, जब तक यह चरवाहे अपने
जानवर निकाल न ले जाएँ, और हमारे अब्बा बहुत बूढ़े हैं।''
24 तो (मूसा ने) उन दोनों के लिए पानी पिला (बकरियों को) दिया फिर छाया की
ओर पलट गये और कहा, ''ऐ रब! जो भलाई भी तू मुझ पर नाज़िल करे,
मैं उसका मुहताज हूँ।''
25 फिर उन दो औ़रतों में से एक उनके पास शर्माती हुई आई, उसने कहा,
''मेरे पिता आप को बुला रहे हैं, ताकि आपने जो हमारे जानवरों को पानी
पिलाया है, उसका बदला आप को दें।'' फिर जब वह उनके पास पहुँचे और
उन्हें सारा क़िस्सा सुनाया, तो उन्होंने कहा, ''डरो नहीं! ज़ालिम क़ौम से तुम्हें
छुटकारा मिल गया।''
26 उन दो औ़रतों में से एक ने कहा, ''ऐ अब्बा जान! इनको मज़दूरी पर रख
लीजिए; अच्छा आदमी- जिनको आप मज़दूरी पर रखें- वही हो जो मज़बूत
और अमानतदार हो।
27 (मूसा से) कहा, ''मैं चाहता हूँ कि अपनी इन दो बेटियों में से एक का निकाह़
तुम्हारे साथ इस शर्त पर कर दूँ कि तुम आठ वर्ष तक मेरे यहाँ नौकरी
करोगे; और अगर दस वर्ष पूरा करो, तो यह तुम्हारी मर्ज़ी पर होगा, मैं तुम्हें
कठिनाई में डालना नहीं चाहता, अगर अल्लाह ने चाहा तो तुम मुझे नेक लोगों
में पाओगे।''
28 (मूसा ने) कहा, ''यह बात हमारे और आप के बीच तय हो गयी है, इन दोनों
में से जो भी मुद्दत, मैं पूरी कर दूँ तो मुझ पर कोई ज़्यादती न होगी; और
जो समझौता हम कर रहे हैं, अल्लाह गवाह है।''
29 जब मूसा ने मुद्दत पूरी कर दी और अपने घर वालों को लेकर चले तो
'तूर' की ओर एक आग दिखाई दी, तो अपने घर वालों से कहा, ''ठहरो,

मुझे आग नज़र आयी है, शायद मैं वहाँ से कोई ख़बर ले आऊँ या आग का
कोई अंगारा, ताकि तुम ताप सको;
30 जब वह उसके पास पहुँचे तो मुबारक क्षेत्र में घाटी के दाईं ओर के एक वृक्ष
(पेड़) से आवाज़ आयी, ‘‘ऐ मूसा! मैं ही अल्लाह हूँ, सारे संसार का रब!’’
31 और यह कि ‘‘आप अपनी लाठी डाल दें।’’ फिर जब उसे देखा कि वह साँप
की तरह हरकत कर रही है, तो पीठ फेर कर भागे और पीछे मुड़ कर भी
न देखा; ‘‘ऐ मूसा! आगे आइए और डरिए नहीं, आप बिल्कुल सुरक्षित हैं;
32 अपना हाथ गिरेबान में डालिए, बिना किसी ख़राबी के सफ़ेद (चमकता हुआ)
निकलेगा, और डर के समय अपने बाज़ू (भुजा) को अपने से मिलाए रखिए।
यह दो निशानियाँ हैं आप के रब की ओर से फ़िरऔन और उसके दरबारियों
के पास (जाएँ) कि वे फ़ासिक़ (अवज्ञाकारी) लोग हैं।’’
33 (मूसा ने) कहा, ‘‘ऐ रब! मैंने उनके एक व्यक्ति की हत्या की थी, इस लिए
मुझे डर है कि वह मुझे क़त्ल कर देंगे;
34 और मेरे भाई हारून की ज़बान मुझसे ज़्यादा अच्छी (धारा प्रवाह) है, तो
उनको मेरे साथ मददगार बना कर भेज दीजिए ताकि वह मेरी पुष्टि करे, मुझे
डर है कि वे लोग मुझे झुठलाएँगे।’’
35 (अल्लाह ने) कहा, ‘‘‘हम’ आप के भाई के ज़रिये आप के बाज़ू मज़बूत करेंगे,
और आप दोनों को ग़लबा देंगे, तो ‘हमारी’ निशानियों की वजह से वे आप
तक पहुँच न सकेंगे, और आप (और) जिन्होंने आप की पैरवी की ग़ालिब
(प्रभावी) रहेंगे।’’
36 तो जब मूसा उनके पास ‘हमारी’ खुली हुई निशानियाँ लेकर आए, तो उन
लोगों ने कहा, ‘‘यह तो बस एक जादू है, और हमने तो यह बात अपने
अगले बाप-दादा में कभी सुनी ही नहीं।’’
37 और मूसा ने कहा, ‘‘मेरा रब उस व्यक्ति को खूब जानता है जो ‘उसके’ यहाँ
से हिदायत (मार्ग दर्शन) लेकर आया है, और उसको भी जिसके लिए आक़िबत
का घर है, बेशक ज़ालिम कामियाब नहीं होते।’’
38 और फ़िरऔन ने कहा, ‘‘ऐ दरबारियो! मैं तो अपने सिवा तुम्हारे किसी
मअ़बूद (उपास्य) को नहीं जानता; अच्छा तो ऐ हामान! तू मेरे लिए ईटें आग
में पकवा, फिर मेरे लिए एक महल बना ताकि मैं मूसा के रब (उपास्य) को
झाँक आऊँ, और मैं तो उसे झूठा समझता हूँ;’’
39 और वह और उसकी सेनाओं ने धरती में नाहक़ घमण्ड किया, और समझा
कि उन्हें ‘हमारी’ ओर लौटना ही नहीं है।
40 तो ‘हमने’ उसे और उसकी सेनाओं को पकड़ लिया, और गहरे पानी में
फेंक दिया; अब देख लो कि ज़ालिमों का कैसा अंजाम हुआ?
41 और ‘हमने’ उन्हें आग की ओर बुलाने वाला सरदार बना दिया और क़ियामत
के दिन उन्हें कोई मदद न मिल सकेगी।
42 और ‘हमने’ इस दुनिया में उनके पीछे लानत लगा दी और क़ियामत के दिन
उनका बुरा हाल होगा।

43 और अगली उम्मतों को हलाक कर देने के बाद 'हमने' मूसा को किताब दी,
जिससे लोगों को कुछ सूझ-बूझ हो, और (सीधे) राह पकड़ें, और रह़मत हो,
ताकि वे ध्यान दें।
44 और (ऐ मुह़म्मद) आप तो पश्चिमी किनारे पर नहीं थे, जिस समय 'हमने'
मूसा को हुक्म भेजा था, और न आप गवाहों में से थे।
45 और कितनी ही उम्मतों को 'हमने' पैदा किया और उन पर बहुत समय बीत
गया, और न तुम मद्‌यन वालों में रहते थे कि उनको 'हमारी' आयतें सुना
रहे होते, किन्तु रसूलों (सन्देशवाहकों) को भेजने वाले 'हम' ही थे।
46 और तुम 'तूर' के पास उस समय न थे जबकि 'हमने' (मूसा को) पुकारा था,
बल्कि तुम्हारे रब की यह रह़मत है कि तुम उन लोगों को सचेत करो जिनके
पास तुमसे पहले कोई सचेत करने वाला नहीं आया, ताकि वे ध्यान दें।
47 और अगर यह बात न होती कि जो कुछ उनके हाथ आगे भेज चुके हैं उसकी
वजह से जब उन पर कोई मुसीबत आती तो कहने लगते, ''ऐ हमारे रब!
'तूने' क्यों न हमारी ओर कोई रसूल भेजा कि हम 'तेरी' आयतों का पालन
करते और ईमान वाले होते।?''
48 तो जब 'हमारी' ओर से ह़क़ (सत्य) उनके पास आ पहुँचा तो कहने लगे,
''जो चीज़ मूसा को मिली थी उसी तरह की चीज़ हम को क्यों नहीं मिली?''
क्या वे उसका इन्कार नहीं कर चुके हैं, जो इससे पहले मूसा को दिया गया
था? कहने लगे, ''दोनों (तौरेत और क़ुर्आन) जादू हैं जो एक-दूसरे की मदद
करते हैं,'' और कहा, 'हम' तो हर एक का इन्कार करते हैं।''
49 कह दीजिए, ''अच्छा तो लाओ अल्लाह के यहाँ से कोई ऐसी किताब, जो इन
दोनों से बढ़ कर राह दिखाने वाली हो ताकि मैं उसके अनुसार चलूँ, अगर
तुम सच्चे हो।
50 फिर अगर ये तुम्हारी माँग पूरी न करें, तो जान लो कि ये केवल अपनी
इच्छाओं के पीछे चलते हैं, और उससे बढ़ कर भटका हुआ कौन होगा जो
अल्लाह की ओर से किसी हिदायत (मार्गदर्शन) के बिना अपनी इच्छा पर चले?
बेशक अल्लाह ज़ालिम लोगों को राह नहीं दिखाता।
51 और 'हम' उनके लिए बराबर आयतें (रहनुमाई) भेजते रहे, कि शायद वे ध्यान
दें।
52 जिन लोगों को 'हमने' इससे पहले किताब दी थी, वे इस पर ईमान लाते हैं।
53 और जब (क़ुर्आन) उनको पढ़ कर सुनाया जाता है तो कहते हैं, ''हम इस
पर ईमान लाए, बेशक वह ह़क़ (सत्य) है हमारे रब की ओर से, हम तो इसके
पहले से ही मुस्लिम (आज्ञाकारी) हैं।''
54 यही वे लोग हैं जिनको दोहरा बदला दिया जाएगा, क्योंकि सब्र करते रहे हैं
और भलाई से बुराई को दूर करते हैं और जो कुछ रोज़ी 'हमने' उन्हें दी है,
उसमें से खर्च करते हैं।
55 और जब व्यर्थ (बकवास) बात सुनते हैं तो यह कहते हुए उससे मुँह फेर लेते

हैं और कहते हैं “हमारे लिए हमारे आमाल (कर्म) हैं और तुम्हारे लिए तुम्हारे
आमाल हैं, तुम को सलाम हो, हम जाहिलों के चाहने वाले नहीं।”
56 (ऐ मुहम्मद) आप जिसे चाहें राह (हिदायत) पर नहीं ला सकते, मगर अल्लाह
जिसे चाहता है, राह दिखाता है और ‘वही’ राह पाने वालों को खूब जानता
है।
57 और कहते हैं “अगर हम तेरे दीन की पैरवी (अनुसरण) करें तो हम अपनी
जगह से उचक लिए जाएँ।” क्या ख़तरों से सुरक्षित हरम (कअ़बः) में हमने
ठिकाना नहीं दिया, जहाँ ‘हमारी’ ओर से रोज़ी के रूप में हर चीज़ की पैदावार
खिंची चली आती हैं? मगर उनमें से अक्सर नहीं समझते।
58 और ‘हमने’ कितनी ही बस्तियों को हलाक (बरबाद) कर दिया, जो अपनी
रोज़ी (दौलत) पर इतरा चली थीं; तो ये उनके घर हैं, जो उनके बाद आबाद
नहीं हुए सिवाय थोड़े से लोगों के, और (अन्त में) ‘हम’ ही वारिस हुए।
59 और आप का ‘रब’ तो उस समय तक बस्तियों को तबाह करने वाला नहीं,
जब तक कि उनकी केन्द्रीय बस्ती में कोई रसूल न भेज दे, जो उन्हें ‘हमारी’
आयतें सुनाए। और हम बस्तियों को तबाह करने वाले नहीं, सिवाय इस हालत
में कि वहाँ के रहने वाले ज़ालिम हों।
60 और जो चीज़ें भी तुम को दी गई हैं, वह तो दुनिया की ज़िन्दगी का फ़ायदा
और उसकी ज़ीनत (शोभा) है; और जो कुछ अल्लाह के पास है वह बेहतर
और हमेशा बाक़ी रहने वाली है, तो क्या तुम अक़्ल से काम नहीं लेते?
61 क्या वह व्यक्ति जिससे ‘हमने’ अच्छा वादा किया है और वह उसे पाने वाला
भी हो, वह उस व्यक्ति की तरह हो सकता है जिसे ‘हमने’ दुनिया की ज़िन्दगी
का फ़ायदा दिया, फिर वह क़ियामत के दिन उन लोगों में हो जो पकड़ कर
पेश किये जाएँगे?
62 और जिस दिन ‘वह’ उन (काफ़िरों) को पुकारेगा और कहेगा, “कहाँ हैं मेरे
वे साझीदार जिन पर तुम्हें गर्व था?”
63 जिन लोगों पर हक़ साबित हो चुका होगा, वे बोल उठेंगे कि “ऐ हमारे रब!
यह वे लोग हैं जिनको ‘हमने’ बहकाया था, जिस तरह हम खुद बहके थे उसी
तरह हमने इनको भी बहकाया, हमने ‘तेरे’ सामने स्पष्ट कर दिया कि इनसे
हमारा कोई सम्बन्ध नहीं, ये हमारी इबादत (उपासना) नहीं करते थे?”
64 और कहा जाएगा, “बुलाओ, अपने साझीदारों को!” वे उनको पुकारेंगे, तो
वे उनको जवाब भी न दे सकेंगे; और अ़ज़ाब देख कर रहेंगे, काश, वे सीधी
राह पर होते!
65 और जिस दिन (अल्लाह) उनको पुकार कर कहेगा, “तुमने रसूलों को क्या
जवाब दिया था;”
66 तो वे उस दिन ख़बरों से अन्धे हो जाएँगे और वे आपस में एक-दूसरे से
पूछताछ भी न कर सकेंगे।
67 तो जो तौबः कर ले और ईमान ले आए, और नेक अ़मल करे; तो उम्मीद
है कि वह कामियाब होने वालों में से होगा।

68 और आपका रब पैदा करता है जो कुछ चाहता है और चुन लेता है जिसे
चाहता है, उनको कोई अधिकार नहीं अल्लाह पाक और ऊँचा है उस शिर्क
से, जो वे करते हैं।
69 और आपका 'रब' जानता है जो कुछ यह अपने सीने में छिपाए हुए हैं और
जो ये ज़ाहिर करते हैं।
70 और 'वही' अल्लाह है, उसके सिवा कोई मअ़बूद नहीं, 'उसी' के लिए
तअ़रीफ़ें हैं दुनिया, और आख़िरत में और हुक्म भी 'उसी' का, और 'उसी'
की ओर तुम लौट कर जाओगे।
71 कह दीजिए, "क्या तुमने विचार किया! कि अगर अल्लाह क़ियामत के दिन
तक हमेशा के लिए तुम पर रात कर दे, तो अल्लाह के सिवा दूसरा कौन
मअ़बूद है जो तुम्हारे लिए रोशनी लाए? तो क्या तुम सुनते नहीं?-"
72 कह दीजिए, "क्या तुमने विचार किया! अगर अल्लाह क़ियामत के दिन तक
हमेशा के लिए तुम पर दिन कर दे, तो अल्लाह के सिवा कौन मअ़बूद है जो
तुम्हारे लिए रात लाए, जिसमें तुम आराम पाते हो? तो क्या तुम देखते नहीं?-
73 और 'उसी' ने 'अपनी' रहमत से तुम्हारे लिए रात और दिन बनाए, ताकि
तुम उसमें आराम पाओ और उसका फ़ज़्ल (रोज़ी) तलाश करो, और ताकि
तुम शुक्र गुज़ार बनो।"
74 और उस दिन जब वह उनको पुकारेगा और कहेगा, "कहाँ हैं मेरे वे साझीदार,
जिन पर तुम्हें गर्व था?"
75 और 'हम' हर उम्मत (समुदाय) में से एक गवाह निकाल लाएँगे और (लोगों
से) कहेंगे, "लाओ अपना प्रमाण," उस समय मालूम हो जाएगा कि ह़क़ (सत्य)
अल्लाह ही की ओर से है और जो कुछ वे गढ़ते थे, वह सब उनसे गुम हो
कर रह जाएगा।
76 क़ारून मूसा की क़ौम में से था, फिर उसने उनके ख़िलाफ़ सर उठाया
और हमने उसे इतने खज़ाने दे रखे थे कि उनकी कुंजियाँ एक शक्तिशाली
गिरोह मुश्किल से उठा सकता था, जब उससे उसकी क़ौम के लोगों ने कहा,
"इतराओ नहीं, अल्लाह इतराने वालों को पसंद नहीं करता;
77 और जो कुछ अल्लाह ने तुझे दिया है, उसके ज़रिये आख़िरत का घर बना,
और दुनिया में से अपना हिस्सा न भूल, और भलाई कर, जैसा कि अल्लाह
ने तेरे साथ भलाई की है; और धरती में फ़साद पर न तुल, क्यों कि अल्लाह
फ़साद करने वालों को पसंद नहीं करता।"
78 (उसने) कहा, "यह तो मुझे अपनी क़ाबलियत (व्यक्तिगत ज्ञान) की वजह
से मिला है।" क्या वह यह नहीं जानता कि अल्लाह उससे पहले कितनी ही
ज़ातियों को हलाक कर चुका है जो शक्ति में उससे बढ़-चढ़ कर और जत्थे
में उससे अधिक थीं? और अपराधियों से तो उनके गुनाहों के विषय में पूछा
भी नहीं जाएगा।
79 फिर वह (क़ारून) अपनी क़ौम के सामने ठाठ-बाट से निकला, तो जो लोग
दुनिया की ज़िन्दगी के चाहने वाले थे, कहने लगे, "जो कुछ क़ारून को मिला
है, काश! हमको भी मिलता, वह तो बड़ा भाग्यशाली है।"

80 और जिन लोगों को इल्म दिया गया था, वे कहने लगे, ''तुम पर अफ़सोस
हो! अल्लाह का सवाब (इनाम) बहुत बेहतर है, उसके लिए जो ईमान लाए
और भले काम करे, और वह केवल सब्र करने वालों ही को मिलेगा।''
81 तो 'हमने' उस (क़ारून) को और उसके घर को ज़मीन में धंसा दिया, और
कोई ऐसा गिरोह न हुआ जो अल्लाह के मुक़ाबले में उसकी मदद करता, और
न वह खुद भी अपना बचाओ कर सका;
82 और वही लोग, जो कल तक उस (क़ारून) जैसे होने की तमन्ना करते थे,
सुबह उठ कर कहने लगे, हाय अफ़सोस! ''अल्लाह ही अपने बन्दों में से
जिसकी रोज़ी चाहता है बढ़ा देता है और (जिस को चाहता है) तंग कर देता
है, अगर अल्लाह की मेहरबाानी न होती तो हमें भी धंसा देता, अफ़सोस (हम
भूल ही गये थे!) कि इन्कार करने वाले कामियाब नहीं होते।''
83 आख़िरत का घर 'हम' उन लोगों के लिए ख़ास कर देंगे जो न तो ज़मीन पर
अपनी बड़ाई चाहते हैं और न फ़साद। और परहेज़गारों का आख़िरी अंजाम
भला है।
84 जो व्यक्ति नेक काम करके आएगा उसे उससे बढ़ कर (बदला) मिलेगा, और
जो बुरे काम कर के आएगा तो बुराइयाँ करने वालों को तो बस वही मिलेगा
जो बुराइयाँ करते थे।
85 'जिसने' आप पर क़ुर्आन फर्ज़ किया है (अर्थात ज़िम्मेदारी डाली है), 'वह' आप
को एक बेहतरीन अंजाम तक पहुँचाएगा, कह दीजिए, ''मेरा रब उस व्यक्ति को
खूब जानता है कि कौन हिदायत (मार्ग दर्शन) लेकर आया है, और कौन खुली
गुमराही में है?''
86 और आप को क्या उम्मीद थी कि आप पर किताब उतारी जाएगी, सिवाय
इसके कि आप के रब की मेहरबानी से दी गयी, तो आप काफ़िरों के मददगार
(समर्थक) न बनिए।
87 और वे आप को अल्लाह की आयतों से रोकने न पाएँ, इसके बाद कि वह
आप पर उतारी जा चुकी है। और अपने रब की ओर बुलाइए और हरगिज़
मुश्रिकों (बहुदेववादियों) में शामिल न होइए;
88 और अल्लाह के साथ किसी और मअ़बूद (उपास्य) को न पुकारना 'उसके'
सिवा कोई मअ़बूद नहीं, हर चीज़ फ़ना (विनष्ट) हो जाने वाली है, सिवाय
'उसकी' ज़ात (स्वरूप) के, उसी की हुकूमत है और 'उसी' की ओर तुम सब
लौट कर जाओगे।

## सूर-ए-अ़नकबूत

यह सूरः मक्की है, इस में अ़रबी के 4410 अक्षर, 990 शब्द, 69 आयतें और 7

रूकूअ़ हैं।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम करने वाला (असीम कृपालु, महा दयालु) है।

1 अलिफ्- लाम्- मीम्,
2 क्या लोगों ने यह समझ रखा है कि वे यह कह दिये जाने पर छोड़ दिये जाएँगे
कि "हम ईमान लाए" और उनको आज़माया न जाएगा?
3 और जो लोग इनसे पहले गुज़रे हैं 'हमने' उन लोगों को भी आज़माया था,
अल्लाह तो उन लोगों को मालूम कर के रहेगा, जो सच्चे हैं और उन को भी
मालूम कर के रहेगा जो झूठे हैं।
4 क्या जो लोग बुरे काम करते हैं, उन्होंने यह समझ रखा है कि ये 'हमारे'
क़ाबू से बाहर निकल जाएँगे? बहुत बुरा है जो फ़ैसला ये कर रहे हैं।
5 जिसको अल्लाह से मिलने की उम्मीद हो तो (जान ले कि) अल्लाह का निश्चित
किया हुआ समय ज़रूर आने वाला है, और 'वह' सब कुछ सुनने, जानने
वाला है।
6 और जो व्यक्ति जिहाद (संघर्ष) करता है वह अपने ही (फ़ायदे के) लिए जिहाद
करता है, अल्लाह सारी दुनिया वालों से बेपरवाह (निस्पृह) है।
7 और जो लोग ईमान लाए और अच्छे अ़मल करते रहे, तो 'हम' उनसे उनकी
बुराइयों को दूर कर देंगे और उनको उनके आ़माल का बहुत अच्छा बदला
देंगे।
8 और 'हमने' इन्सान को ताकीद की है कि अपने माँ-बाप के साथ अच्छा
व्यवहार करे, और अगर वे तुम पर ज़ोर डालें कि तुम किसी ऐसी चीज़ को
'मेरा' साझी ठहराओ जिसकी हक़ीक़त तुम्हें नहीं मालूम, तो उनकी बात न
मानना, 'मेरी' ही ओर तुम सबको पलट कर आना है, फिर तुम को 'मैं' बता
दूँगा जो कुछ तुम किया करते थे।
9 और जो लोग ईमान लाए, और अच्छे अ़मल करते रहे, 'हम' उन्हें ज़रूर
अच्छे लोगों में शामिल करेंगे।
10 और कुछ लोग ऐसे हैं जो कहते हैं कि "हम अल्लाह पर ईमान लाए" फिर
जब वह अल्लाह की राह में सताए गये, तो लोगों की ओर से आई हुई
आज़माइश को अल्लाह का अ़ज़ाब जैसा समझ लिया, और अगर आप के
'रब' की ओर से मदद पहुँच गयी तो कहेंगे, "हम तो तुम्हारे साथ थे क्या
जो कुछ दुनिया वालों के सीने में है, अल्लाह उसे नहीं जानता?
11 और अल्लाह तो उनको मालूम कर के रहेगा जो ईमान लाए, और मुनाफ़िक़ों
(कप्टाचारियों) को भी मालूम कर के रहेगा!
12 और जो काफ़िर हैं वे ईमान वालों से कहते हैं, "तुम हमारी राह पर चलो,
हम तुम्हारी ख़ताओं का बोझ उठा लेंगे।" हालाँकि वे उनकी ख़ताओं में से
कुछ भी उठाने वाले नहीं, बेशक वे ही झूठे हैं।

13 और यह अपने बोझ भी उठाएँगे और अपने बोझों के साथ और बहुत से
बोझ भी, और क़ियामत के दिन ज़रूर उनसे उनके बारे में पूछा जाएगा, जो
कुछ यह गढ़ते रहते थे।
14 और 'हमने' नूह़ को उनकी क़ौम के पास भेजा, तो वह पचास वर्ष कम एक
हज़ार वर्ष उनमें रहे, फिर उनको तूफ़ान ने पकड़ लिया, (ऐसे ह़ाल में) कि वे
ज़ालिम थे।
15 तो 'हमने' उनको और नाव वालों को बचा लिया और 'हमने' नाव को तमाम
दुनिया वालों के लिए निशानी बना दी।
16 और इब्राहीम को (भेजा) जबकि उन्होंने अपनी क़ौम से कहा, "अल्लाह की
इबादत करो और 'उसी' से डरो, यह तुम्हारे लिए ज़्यादा अच्छा है, अगर तुम
कुछ जानो।
17 तुम तो अल्लाह के सिवा मूर्तियों की पूजा करते हो, और झूठी बातें बनाते हो
तो तुम अल्लाह को छोड़ कर जिनको पूजते हो, वे तुम्हारे लिए रोज़ी का भी
अधिकार नहीं रखते, तो तुम अल्लाह ही के यहाँ से रोज़ी तलाश करो और
'उसी' की इबादत करो और उसी के शुक्र गुज़ार बनो, तुम्हें 'उसी' की ओर
लौट कर जाना है।
18 और अगर तुम झुठलाते हो तो तुमसे पहले भी बहुत सी उम्मतें झुठला चुकी
हैं, और रसूल के! ज़िम्मे तो केवल स्पष्ट रूप से पहुँचा देना है।"
19 क्या लोगों ने देखा नहीं कि अल्लाह किस तरह सृष्टि (कायनात) को पहली बार
पैदा करता है? फिर उसको दोहराएगा, यह अल्लाह के लिए बहुत आसान
है।
20 कह दीजिए, ज़मीन में चलो-फिरो और देखो! कि उसने किस तरह पैदाइश
शुरू की, फिर अल्लाह ही दोबारा उठा खड़ा करेगा, बेशक अल्लाह हर चीज़
पर कुदरत (सामर्थ्य) रखता है।"
21 'वह' जिसे चाहे अ़ज़ाब दे, और जिस पर चाहे रह़म करे, और 'उसी' की
ओर तुम्हें पलट कर जाना है।"
22 और तुम न तो धरती में उसके क़ाबू से बाहर निकल सकते हो और न
आसमान में, और तुम्हारे लिए अल्लाह के सिवा न कोई काम बनाने वाला है
और न मदद्गार।
23 और जिन लोगों ने अल्लाह की आयतों का और 'उसके' मिलने का इन्कार
किया, वे 'मेरी' रह़मत से मायूस (निराश) हो गये हैं, और वे वही हैं जिनके
लिए दु:ख देने वाला अ़ज़ाब होगा।
24 फिर उनकी क़ौम के लोगों का जवाब इसके सिवा कुछ न था कि उन्होंने कहा,
"मार डालो उसे या जला दो!" फिर अल्लाह ने उनको आग से बचा लिया,
बेशक उन के लिए निशानियाँ हैं, जो ईमान रखते हैं।
25 और (इब्राहीम ने) कहा, "अल्लाह के सिवा तुमने जो मूर्तियों को केवल दुनिया
की आपसी ज़िन्दगी में मुह़ब्बत के लिए, (उपास्य) ठहरा रखा है, फिर क़ियामत

के दिन तुम एक-दूसरे का इन्कार करोगे, और एक-दूसरे पर लानत करोगे, और तुम्हारा ठिकाना आग होगी और कोई भी तुम्हारा मदद्गार न होगा।''

26 फिर लूत ने उनकी बात मानी और (इब्राहीम ने) कहा, ''मैं अपने रब की ओर हिजरत (अर्थात अल्लाह के लिए घर बार छोड़ना) करता हूँ, बेशक वह ग़ालिब, हिक्मत वाला है।''

27 और 'हमने' उसे इस्हाक़ और याक़ूब दिये और उसके वंश में नुबूवत और किताब का सिलसिला जारी किया, और 'हमने' उसे दुनिया में भी उसका अच्छा बदला दिया, और आख़िरत में भी वह अच्छे लोगों में होंगे।

28 और 'हमने' लूत को भेजा, जब उन्होंने अपनी क़ौम से कहा, ''तुम बेहयाई का काम करते हो?'' जो तुमसे पहले दुनिया वालों में से किसी ने नहीं किया।

29 क्या तुम पुरूषों से काम इच्छा पूरी करते हो, और रहज़नी (लूट-मार) करते हो, और अपनी मजलिसों में बुरे काम करते हो?'' तो उस क़ौम के पास इसके सिवा कोई जवाब न था कि उन्होंने कहा, ''ले आओ अल्लाह का अ़ज़ाब, अगर तुम सच्चे हो।''

30 (लूत ने) कहा, ''ऐ मेरे रब! फ़साद पैदा करने वाले लोगों के मुक़ाबले में मेरी मदद कर।''

31 और जब 'हमारे' रसूल (फ़रिश्ते) इब्राहीम के पास खुशख़बरी लेकर आए तो उन्होंने कहा, ''हम इस बस्ती के रहने वालों को हलाक (नाश) करने आए हैं, उसके रहने वाले ज़ालिम हैं।''

32 (इब्राहीम ने) कहा, ''वहाँ तो लूत भी हैं;'' वे बोले जो कोई भी वहाँ है, हम खूब जानते हैं, हम उनको और उनके घर वालों को बचा लेंगे, सिवाय उनकी पत्नी के, वह पीछे रह जाने वालों में से होगी।''

33 और जब हमारे रसूल (फ़रिश्ते) लूत के पास आए, तो उनको देख कर परेशान और दुखी हुए और (फ़रिश्तों ने) कहा, ''डरो नहीं, न ग़म करो हम तुमको और तुम्हारे घर वालों को बचा लेंगे, सिवाय तुम्हारी पत्नी के वह पीछे रह जाने वालों में होगी।''

34 हम इस बस्ती के रहने वालों पर आसमान से एक अ़ज़ाब उतारने वाले हैं, इसलिए कि यह नाफ़रमान हैं।''

35 और 'हमने' उसकी एक स्पष्ट निशानी छोड़ दी है, उन लोगों के लिए जो कुछ अक़्ल रखते हों।

36 और मद्यन की ओर उनके भाई शुऐब को भेजा, तो उन्होंने कहा, ''ऐ मेरी क़ौम के लोगो, अल्लाह ही की इबादत करो, और आख़िरत के दिन की उम्मीद रखो; और ज़मीन में फ़साद फैलाते न फिरो।''

37 फिर उन्होंने उसे झुठला दिया, तो भूकम्प ने उनको आ पकड़ा, तो वे अपने घरों में औंधे पड़े रह गये।

38 और आ़द और समूद को भी (हलाक किया) और तुम्हारे लिए उनकी बस्तियाँ

(आँखों के सामने) स्पष्ट हैं, और शैतान ने उनके काम अच्छे कर के दिखाए, (जो वे करते थे) और उनको (सीधी) राह से रोक रखा, जब कि वे बड़े सूझ-बूझ वाले थे।

39 और क़ारून और फ़िरऔन और हामान को, (हमने हलाक किया) और मूसा उनके पास खुली निशानियाँ ले कर आए थे, मगर उन्होंने ज़मीन में अपनी बड़ाई का दम भरा, हालाँकि वे ज़मीन में 'हमारे' क़ाबू से निकल जाने वाले न थे।

40 तो 'हमने' हर एक को उनके अपने गुनाहों की वजह से पकड़ लिया, फिर उनमें से किसी पर तो पत्थराव करने वाली आँधी भेजी, और किसी को बड़े ज़ोर की चिंघाड़ (धमाके) ने आ पकड़ा, और किसी को 'हमने' ज़मीन में ध ंसा दिया, और किसी को डुबो दिया, और अल्लाह उन पर ज़ुल्म करने वाला न था, बल्कि वे खुद ही अपने ऊपर ज़ुल्म कर रहे थे।

41 जिन लोगों ने अल्लाह को छोड़ कर अपने दूसरे संरक्षक बना लिए हैं, उनकी मिसाल मकड़ी जैसी है जिसने अपना घर बनाया, और बेशक सब घरों से कमज़ोर मकड़ी का घर होता है, काश! यह जानते।

42 अल्लाह उन चीज़ों को खूब जानता है जिन्हें यह 'उससे' हट कर पुकारते हैं, और 'वह' बड़ी ताक़त वाला, हिक्मत वाला है।

43 और यह मिसालें 'हम' लोगों के लिए बयान करते हैं, और इसको वही लोग जानते हैं, जो इल्म वाले हैं।

44 अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को हिकमत के साथ पैदा किया, निश्चय ही इसमें ईमान वालों के लिए बड़ी निशानी है।

45 (ऐ मुहम्मद) तिलावत (पढ़ा) कीजिए उस किताब की जो आप की ओर वह्य की गई है, और नमाज़ क़ायम कीजिए, निश्चय ही नमाज़ बेहयाई और बुरे कामों से रोकती है, और अल्लाह का ज़िक्र (ध्यान) बहुत बड़ी चीज़ है, और जो कुछ तुम रचते बनाते हो अल्लाह उसे जानता है।

46 और किताब वालों से बहस कीजिए मगर बेहतर तरीक़े से, सिवाय उनके जो उनमें से ज़ालिम हैं! और कह दीजिए, ''हम ईमान लाए हैं उस चीज़ पर जो हमारी ओर भेजी गई है, और उस चीज़ पर भी, जो तुम्हारी ओर भेजी गई थी, और हमारा और तुम्हारा अल्लाह एक ही है, और हम 'उसी' के फ़रमाँबरदार (आज्ञाकारी) हैं।

47 और इसी तरह 'हमने' आप की ओर किताब उतारी है, तो जिन लोगों को 'हमने' किताबें दी थीं वे उस पर ईमान ले आते हैं और कुछ उन लोगों में से ऐसे भी हैं, कि वह भी इस पर ईमान ले आते हैं, और जो नाफ़रमान हैं 'वही' हमारी आयतों को नहीं मानते।

48 और इससे पहले तुम न कोई किताब पढ़ते थे, और न उसे अपने हाथ से लिख ही सकते थे, ऐसा होता तो बातिल वाले (झूठा ठहराने वाले) ज़रूर शक करते।

49 बल्कि यह खुली निशानियाँ हैं उन लोगों के सीनों में, जिन्हें कुछ इल्म मिला
है, और ‘हमारी’ आयतों का इन्कार तो ज़ालिम ही करते हैं।
50 और कहते हैं कि इस पर इनके ‘रब’ की ओर से निशानियाँ क्यों नहीं उतारी
गईं, कह दीजिए, “निशानियाँ तो अल्लाह ही के अधिकार में हैं, और मैं तो
खुली हुई नसीहत करने वाला हूँ।”
51 क्या इन लोगों के लिए यह काफ़ी नहीं कि ‘हमने’ आप पर किताब उतारी;
जिसे पढ़कर सुनाया जाता है, निश्चय ही इसमें रह़मत और नसीह़त है उन
लोगों के लिए जो ईमान लाएँ।
52 कह दीजिए, “अल्लाह मेरे और तुम्हारे बीच गवाही के लिए काफ़ी है, ‘वह’
जानता है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है। और जो लोग बातिल (असत्य)
पर यक़ीन रखते हैं और अल्लाह से इन्कार करते हैं, वही तबाह होने वाले
हैं।
53 और यह लोग आप से अ़ज़ाब के लिए जल्दी मचा रहे हैं अगर इसका एक
निर्धारित समय न होता तो उन पर ज़रूर अ़ज़ाब आ जाता, और वह तो
अचानक उन पर ज़रूर आकर रहेगा, और उनको ख़बर भी न होगी।
54 यह आप से अ़ज़ाब के लिए जल्दी मचा रहे हैं, और जहन्नम तो इन्कार करने
वालों को घेरे में लिए हुए है।
55 जिस दिन अ़ज़ाब उन्हें उनके ऊपर से ढ़ाँक लेगा, और उनके पैर के नीचे से
भी और (अल्लाह) कहेगा, “चखो उसका मज़ा जो कुछ तुम करते रहे।”
56 ऐ ‘मेरे’ बन्दो! जो ईमान लाए हो, ‘मेरी’ ज़मीन विशाल है तो तुम ‘मेरी’ ही
इबादत करो।
57 हर जानदार को मौत का मज़ा चखना है, फिर तुम हमारी ही ओर लौट कर
आओगे।
58 और जो लोग ईमान लाए, और अच्छे अ़मल करते रहे, उनको ‘हम’ जन्नत
के ऊँचे-ऊँचे महलों (ऊपरी मन्ज़िल) में जगह देंगे, जिनके नीचे नहरें बहती
होंगी, वे उसमें हमेशा रहेंगे, क्या ही अच्छा बदला है (नेक) अ़मल करने वालों
का?
59 जिन्होंने सब्र किया और अपने ‘रब’ पर भरोसा रखा;
60 और कितने ही जानदार हैं, जो अपनी रोज़ी उठाए नहीं फिरते, अल्लाह ही
उनको रोज़ी देता है, और तुम को भी, और ‘वह’ सुनने वाला, जानने वाला
है।
61 और अगर तुम इनसे पूछो कि किसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया,
और सूरज और चाँद को काम से लगाया, तो कह देंगे, “अल्लाह ने,” तो
ये किधर फिरे जाते हैं।
62 अल्लाह ही अपने बन्दों में से जिसकी रोज़ी चाहता है बढ़ा देता है, और
जिसकी चाहता है नपी-तुली कर देता है, बेशक अल्लाह हर चीज़ का जानने
वाला है।
63 और अगर आप उनसे पूछें कि किसने आसमान से पानी बरसाया, फिर उसके

ज़रिये ज़मीन को उसके मुर्दा हो जाने के बाद ज़िन्दा किया, तो कहेंगे ''अल्लाह ने,'' कह दीजिए, ''तमाम तअ़रीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं, मगर अक्सर लोग समझते नहीं।''

64 और यह दुनिया की ज़िन्दगी तो केवल दिल का बहलावा और खेल है, और आख़िरत का घर ही अस्ल ज़िन्दगी है, क्या ही अच्छा होता कि यह लोग जान लेते?

65 फिर जब यह नाव में सवार होते हैं तो अल्लाह को उसके दीन के लिए ख़ालिस (निष्ठावान) हो कर पुकारते हैं, फिर 'वह' जब उनको छुट्कारा देकर ख़ुश्की (थल) की ओर पहुँचा देता है, तो (छुट्कारा पाते ही) वह 'उसका' साझीदार ठहराने लगते हैं।

66 ताकि जो 'हमने' उन्हें दिया है, उससे नाशुक्री करें और मज़े उड़ाएँ, तो जल्द ही उन्हें मालूम हो जाएगा।

67 क्या उन्होंने देखा नहीं! कि 'हमने' ह़रम (कअ़बः) को अम्न वाला बनाया, और लोग उनके आस-पास से उचक लिए जाते हैं तो क्या फिर भी बातिल (असत्य) को मानते हैं, और अल्लाह के नेअ़मत की नाशुक्री करते हैं;

68 और उससे बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा, जो अल्लाह पर झूठ बाँधे या ह़क़ को झुठलाए, जबकि वह उसके पास आ चुका हो? क्या ऐसे काफ़िरों का ठिकाना जहन्नम में नहीं होगा?

69 और जो लोग 'हमारी' राह में जिहाद (कोशिश) करेंगे 'हम' ज़रूर उन पर अपनी राहें खोल देंगे, और अल्लाह भले काम करने वालों के साथ है।

## सूर-ए-रूम

यह सूरः मक्की है, इस में अ़रबी के 3547 अक्षर, 827 शब्द, 60 आयतें, और 6 रूकूअ़ हैं।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महा दयालु) है।

1 अलिफ़्- लाम्- मीम्,

2 रूम (वाले) पराजित हो गये,

3 क़रीब के इलाक़े में, और वे अपनी पराजय के बाद बहुत जल्द विजयी हो जाएँगे,

4 कुछ ही साल में, हुक्म तो अल्लाह ही का है पहले भी और बाद में भी, और उस दिन ईमान वाले खुश हो जाएँगे।

5 अल्लाह की मदद से, 'वह' जिसकी चाहता है मदद करता है, और 'वही' शक्तिशाली, रह़म वाला है।

6 और यह अल्लाह का वादा है, और अल्लाह अपने वादे के ख़िलाफ़ नहीं करता, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते;

7 यह तो दुनिया की ज़िन्दगी के बाहरी रूप को ही जानते हैं, और आख़िरत से ग़ाफ़िल (बेपरवाह) हैं।

8 क्या इन्होंने अपने आप में सोच -विचार नहीं किया कि अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को और उनके बीच की तमाम चीज़ों को, ह़क़ के साथ और एक निश्चित समय तक के लिए पैदा किया, और बहुत से लोग तो अपने रब से मिलने का इन्कार ही करते हैं।

9 क्या ये लोग ज़मीन में चले-फिरे नहीं, कि देख लेते कि उन लोगों का अंजाम कैसा हुआ, जो इनसे पहले गुज़र चुके हैं? वे इनसे अधिक शक्तिशाली थे, और उन्होंने ज़मीन को जोता था और इनसे ज़्यादा अधिक आबाद किया था, जैसा इन्होंने आबाद किया उनके पास उनके रसूल स्पष्ट निशानियाँ लेकर आते रहे, तो अल्लाह उन पर ज़ुल्म करने वाला न था, बल्कि खुद ही अपने ऊपर ज़ुल्म कर रहे थे

10 तो जिन लोगों ने बुरा किया था उनका अंजाम भी बुरा हुआ, क्योंकि अल्लाह की आयतों को झुठलाते, और उनका मज़ाक़ उड़ाते रहे।

11 अल्लाह ही (सृष्टि को) पहली बार पैदा करता है, 'वही' उसको फिर पैदा करेगा, फिर तुम 'उसी' की ओर लौट जाओगे।

12 और जिस दिन वह घड़ी आ जाएगी, उस दिन मुज्रिम मायूस (निराश) हो जाएँगे;

13 और उनके ठहराए हुए साझीदारों में से कोई उनका सिफ़ारिश करने वाला न होगा, और वे अपने ठहराए हुए साझीदारों का इन्कार करेंगे।

14 और जिस दिन वह घड़ी आ जाएगी, उस दिन वे सब अलग-अलग गिरोह हो जाएँगे।

15 तो जो लोग ईमान लाए और नेक अ़मल करते रहे, वे बाग़ में खुशह़ाल होंगे;

16 और जिन लोगों ने इन्कार किया और हमारी आयतों और आख़िरत की मुलाक़ात को झुठलाया होगा, तो ऐसे ही लोग अ़ज़ाब के लिए हाज़िर किये जाएँगे।

17 तो अल्लाह की तस्बीह़ करो, शाम के वक्त भी और सुबह़ के वक्त भी।

18 और उसी के लिए तमाम तअ़रीफ़ें हैं आसमानों और ज़मीन में, और पिछले पहर और जब तुम पर दोपहर हो।

19 'वह' ज़िन्दा को मुर्दा से निकालता है और मुर्दा को ज़िन्दा से, और ज़मीन को उसके मुर्दा होने के बाद ज़िन्दा करता है, और इसी तरह तुम निकाले जाओगे।

20 और यह उसकी निशानियों में से है कि 'उसने' तुम्हें मिट्टी से पैदा किया; फिर अब तुम इन्सान होकर फैलते जा रहे हो।

21 और यह भी उसकी निशानियों में से है कि 'उसने' तुम्हारे लिए तुम्हारे बीच
जोड़े पैदा किये, ताकि तुम उनसे सुकून हासिल करो, और तुम्हारे बीच मुहब्बत
और रहमत पैदा की, इसमें निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो सोच विचार
करते हैं;
22 और 'उसकी' निशानियों में से है आसमानों और ज़मीन का पैदा करना और
तुम्हारी भाषाओं (बोलियों) और तुम्हारी रंगतों का भाँति-भाँति का होना, इसमें
बड़ी निशानियाँ हैं इल्म वालों के लिए।
23 और 'उसकी' निशानियों में से है तुम्हारा रात और दिन में सोना, और उसके
फ़ज़्ल (रोज़ी) का तलाश करना, इसमें निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो
सुनते हैं।
24 और 'उसकी' निशानियों में से यह भी है कि वह तुमको बिजली की चमक
दिखाता है, जो डर पैदा करती है और उम्मीद भी, और आसमान से पानी
बरसाता है और ज़मीन को उसके मुर्दा होने के बाद ज़िन्दा कर देता है, बेशक
इसमें निशानियाँ हैं अक़्ल वालों के लिए,
25 और 'उसकी' निशानियों में से यह भी है कि आसमान और ज़मीन उसके हुक्म
से क़ायम हैं, फिर जब 'वह' तुमको ज़मीन में से पुकारेगा, तो तुम अचानक
निकल पड़ोगे।
26 और आसमानों और ज़मीन में जो कुछ भी है 'उसी' का है, सब उसी के
फरमाँबरदार हैं।
27 और 'वही' है जो ख़िल्क़त (लोगों) को पहली बार पैदा करता है फिर उसको
दोबारा पैदा करेगा, और यह उसके लिए बहुत आसान है आसमानों और
ज़मीन में 'उसी' की शान सबसे ऊँची है। और 'वह' बड़ा शक्तिशाली, हिकमत
वाला है।
28 'वह' तुम्हारे लिए खुद तुम्हारे ही हाल की एक मिसाल देता है कि क्या रोज़ी
हमने तुम्हें दी है, उसमें तुम्हारे बाँदी (अधीनस्थ) या गुलामों में से कोई तुम्हारे
साझीदार हैं, और क्या तुम बराबर के हक़दार समझते हो, और क्या तुम
उनका डर रखते हो जैसा कि तुम अपनों का डर रखते हो, इस तरह 'हम'
उन लोगों के लिए आयतें खोल-खोल कर बयान करते हैं जो अक़्ल से काम
लेते हैं;
29 (नहीं) बल्कि यह ज़ालिम बिना इल्म के अपनी इच्छाओं के पीछे चल रहे हैं,
तो अब कौन उन्हें राह दिखाएगा जिसे अल्लाह ने भटका दिया हो? और
उनका तो कोई मदद्गार नहीं;
30 तो तुम एक ओर के होकर अपने रूख़ को दीन (धर्म) पर जमा दो, वह
स्वभाविक दीन जिस पर अल्लाह ने इन्सानों को पैदा किया, अल्लाह की बनाई
हुई संरचना बदली नहीं जा सकती, यही दीन सीधा है, लेकिन अक्सर लोग
नहीं जानते।
31 'उसी' की ओर ध्यान रखो, और 'उसी' का डर रखो और नमाज़ क़ायम करो,
और साझी ठहराने वालों में से न हो जाओ,

32 (और न) उन लोगों में, जिन्होंने अपने दीन (धर्मों) को टुकड़े-टुकड़े कर दिया
और गिरोहों में बट गये, हर गिरोह के पास जो कुछ है, वह उसी में ख़ुश हैं।
33 और जब लोगों को कोई तक्लीफ़ पहुँचती है तो अपने 'रब' को पुकारते हैं
उसी की ओर रूजूअ़ होते हैं, फिर जब वह अपनी रह़मत का मज़ा चखाता
है, तो उनमें से एक गिरोह अपने रब का साझी ठहरा लेता है;
34 ताकि जो कुछ 'हमने' उसकों दिया है उसकी नाशुक्री करें, ''अच्छा तुम मज़े
उड़ा लो बहुत जल्द तुम को मालूम हो जाएगा।''
35 क्या हमने कोई प्रमाण उतारा है कि वह उसके ह़क़ में बोलता हो, जो वे उसके
साथ साझी ठहराते हैं।
36 और जब 'हम' लोगों को अपनी रह़मत का मज़ा चखाते हैं तो वे इतराने लगते
हैं; और जब उनके करतूतों की वजह से उन पर कोई मुसीबत आ जाती है,
तो तुरन्त निराश हो जाते हैं
37 क्या देखते नहीं! कि अल्लाह जिसकी रोज़ी चाहता है बढ़ा देता है और (जिसके
लिए चाहता है) तंग कर देता है, बेशक इसमें निशानियाँ हैं, उनके लिए जो
ईमान लाते हैं।
38 तो रिश्तेदारों को उनका ह़क़ दो, और मुहताज़ों व मुसाफ़िरों को भी, यह बेहतर
है उन लागों के लिए जो अल्लाह की रज़ा (प्रसन्नता) के चाहने वाले हों और
यही कामियाब होने वाले हैं।
39 और तुम जो कुछ ब्याज (सूद) पर देते हो, ताकि वह लोगों के मालों में मिलकर
बढ़ जाए तो वह अल्लाह के यहाँ नहीं बढ़ता और जो तुम ज़कात अल्लाह
की खुशी के लिए देते हो, तो ऐसे ही लोग अपना माल बढ़ाते हैं।
40 अल्लाह 'वह' है जिसने तुमको पैदा किया, फिर तुमको रोज़ी दी; फिर तुम को
मौत देता है; फिर तुमको ज़िन्दा करेगा, तो क्या तुम्हारे ठहराए हुए साझीदारों
में से कोई ऐसा है, जो इनमें से कोई काम भी कर सकता हो? 'वह' पाक है
और ऊँचा है उससे, जिसे ये साझी ठहराते हैं।
41 थल और जल में फ़साद बरपा हो गया है खुद लोगों के ही हाथों के करतूतों
से, ताकि उनको उनके करतूतों का मज़ा चखाए, शायद वे (सच्चाई की ओर)
लौट आएँ।
42 कह दीजिए, ''ज़मीन में चल-फिर कर देख लो, कि उनका कैसा अंजाम हुआ,
जो पहले गुज़र चुके हैं, उनमें अक्सर मुश्रिक (बहुदेववादी) ही थे।''
43 तो तुम अपना रूख़ उस सीधे दीन की ओर किये रहो, इससे पहले कि
अल्लाह की ओर से वह दिन आ जाए जिसके लिए वापसी नहीं, उस दिन
लोग अलग-अलग हो जाएँगे;
44 जिस व्यक्ति ने इन्कार किया तो उसका इन्कार (का वबाल) उसी पर है, और
जिसने अच्छे अ़मल किये, वे अपने ही लिए राह आसान कर रहे हैं;
45 ताकि 'वह' अपने फ़ज़्ल (अनुग्रह) से उन लोगों को अच्छा बदला दे, जो लोग
ईमान लाए और भले काम करते रहे, बेशक वह काफ़िरों को पसंद नहीं करता।
46 और 'उसकी' निशानियों में से है कि वह हवाओं को भेजता है जो खुशख़बरी

देती हैं, ताकि "वह अपनी रहमत का मज़ा चखाए और ताकि उसके हुक्म से नौकाएँ चलें, ताकि तुम उसका फ़ज़्ल (रोज़ी) तलाश करो और ताकि तुम उसके शुक्रगुज़ार बनो।

47 और 'हमने' आप से पहले भी रसूल इनकी ओर भेजे थे और वे उनके पास स्पष्ट निशानियाँ लेकर आए थे, फिर हमने उन लोगों को सज़ा दी, जिन्होंने अपराध किया, और 'हम' पर तो हक़ है कि ईमान वालों की मदद करें।

48 अल्लाह ही तो है जो हवाओं को भेजता है, फिर वे बादलों को उठाती हैं; फिर जिस तरह चाहता है आसमान में फैला देता है, और उन्हें परतों और टुकड़ियों का रूप देता है, फिर तुम देखते हो कि उसके बीच से वर्षा की बूँदे टपकी चली आती हैं, फिर जब वह अपने बन्दों में से जिन पर चाहता है उसे बरसा देता है, तो वे खुश हो उठते हैं;

49 और इससे पहले तो वे इसके बरसाए जाने के बारे में मायूस थे।

50 तो अल्लाह की रहमत की निशानियों की ओर देखो! कि वह किस तरह ज़मीन को उसके मुर्दा होने के बाद ज़िन्दा करता है बेशक वह मुर्दों को ज़िन्दा करने वाला है, और वह हर चीज़ पर क़ादिर (सामर्थ्यवान) है।

51 और अगर 'हम' एक-दूसरी हवा भेज दें, जिसके प्रभाव से वे उस (खेती) को पीली पड़ी हुई देखें, तो इसके बाद वे इन्कार करने लग जाएँ।

52 तो तुम मुर्दों को नहीं सुना सकते और न बहरों को अपनी पुकार सुना सकते हो, जबकि वे पीठ फेरे चले जा रहे हों;

53 और न तुम अन्धों को उनकी गुमराही से निकाल कर सीधी राह पर ला सकते हो, तुम तो उन्हीं लोगों को सुना सकते हो, जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं, तो 'वही' मुस्लिम (आज्ञाकारी) हैं।

54 अल्लाह ही तो है, जिसने तुम्हें कमज़ोर हालत में पैदा किया, फिर कमज़ोरी के बाद ताक़त दी; फिर ताक़त के बाद कमज़ोरी और बुढ़ापा दिया, वह जो चाहता है पैदा करता है वह जानने वाला, क़ुद्रत वाला (सामर्थ्यवान) है।

55 और जिस दिन वह घड़ी आ जाएगी मुजरिम क़सम खाकर कहेंगे कि वे घड़ी भर से ज़्यादा नहीं रहे, इस तरह वे (रास्ते से) उल्टे जाते थे।

56 और जिन लोगों को इल्म और ईमान मिला था वे कहेंगे कि, "अल्लाह के रिकार्ड में तो तुम ज़िन्दा होकर उठने के दिन तक ठहरे रहे हो, तो यही ज़िन्दा होकर उठने का दिन है और तुमको इसका इल्म न था।"

57 तो उस दिन ज़ालिमों के लिए कोई उज़्र (सफ़ाई) काम न आएगा, और न उनसे यह चाहा जाएगा कि वह तौबः करें।

58 और 'हमने' इस क़ुर्आन में लोगों के लिए हर तरह की मिसाल पेश की है, चाहे आप कोई भी निशानी उनके पास ले आएँ, जिन लोगों ने इन्कार किया, वे तो यही कहेंगे, "तुम तो बस झूठ बोलते हो।

59 इसी तरह अल्लाह मुहर (ठप्पा) लगा देता है उन लोगों के दिलों पर जो इल्म नहीं रखते।

60 तो आप सब्र करें, बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है और आप कों हरगिज़ बेवज़न (हल्का) न पाएँ, जो लोग यक़ीन नहीं रखते।

## सूर-ए-लुक़मान

यह सूरः मक्की है, इस में अ़रबी के 2217 अक्षर, 554 श्ब्द, 34 आयतें और 4 रूकूअ़ हैं।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महा दयालु) है।

1 अलिफ़्-लाम्-मीम्।

2 यह ह़िक्मत वाली किताब की आयतें हैं;

3 हिदायत और रह़मत है भले काम करने वालों के लिए;

4 जो नमाज़ क़ायम करते और ज़कात देते और आख़िरत पर यक़ीन रखते हैं;

5 यही अपने 'रब' की ओर से राह पर हैं, और यही हैं कामियाब होने वाले।

6 और लोगों में कुछ ऐसे हैं, जो दिल को लुभाने वाली बातों को ख़रीदते हैं, ताकि बिना किसी इल्म के अल्लाह की राह से भटकाएँ और उनका मज़ाक़ उड़ाएँ, ऐसे लोगों के लिए ज़लील करने वाला (अपमान जनक) अ़ज़ाब है।

7 और जब उसे 'हमारी' आयतें सुनाई जाती हैं तो वह अपने आप को बड़ा समझता हुआ पीठ फेर कर चल देता है, जैसे उसने उसे सुना ही न हो, मानो उसके कान बहरे हैं तो उसे दुःख देने वाले अ़ज़ाब की ख़ुशख़बरी सुना दीजिए।

8 जो लोग ईमान लाए और भले काम करते रहे उनके लिए नेअ़मतों के बाग़ हैं;

9 उनमें वे हमेशा रहेंगे, यह अल्लाह का पक्का वादा है, और वह बड़ी ताक़त वाला, ह़िक्मत वाला है

10 'उसने' आसमानों को पैदा किया, बिना खम्बों के, जैसा कि तुम देखते हो, 'उसी ने' ज़मीन में पहाड़ डाल दिये कि तुम को लेकर लुढ़क न जाए, और उसमें हर तरह के जानवर फैला दिये, और हम ही ने आसमान से पानी बरसाया, फिर उसमें हर तरह की अच्छी चीज़ें उगाईं।

11 यह है अल्लाह की पैदाइश, तो मुझे दिखाओ कि उन्होंने क्या पैदा किया है, जो उसके सिवा (पूज्य) हैं बल्कि यह ज़ालिम तो खुली गुमराही में पड़े हैं।

12 और 'हमने' लुक़मान को ह़िक़मत (तत्वदर्शिता) दी कि अल्लाह का शुक्र करो और जो व्यक्ति शुक्र करता है, उसका शुक्र करना उसके अपने ही फ़ायदे के लिए है, और जो नाशुक्री करता है, तो भी अल्लाह बेपरवाह ह़म्द (ख़ूबियों) वाला है।

13 और जब लुक़मान ने अपने बेटे को नसीहत करते हुए कहा,''ऐ मेरे बेटे!
अल्लाह का साझी न ठहराना, शिर्क तो बड़ा (भारी) ज़ुल्म है।''

14 और 'हमने' इन्सान को ताकीद की है उसके माँ-बाप के बारे में, उसकी माँ ने
तक्लीफ़ पर तक्लीफ़ उठा कर, उसे अपने पेट में रखा, और दो साल उसके
दूध छुड़ाने में लगे कि मेरा शुक्र कर और अपने माँ-बाप का भी, आख़िरकार
मेरी ही ओर लौट कर आना है।

15 और अगर वे तुझ पर दबाव डालें कि तू किसी को मेरा साझीदार ठहरा, कि
जिसका तुझे इल्म नहीं है, तो उनकी बात न मानना और दुनिया में उनके
साथ अच्छा व्यवहार रखना, और पैरवी उनके रास्ते की करना जो व्यक्ति मेरी
ओर रूजूअ़ किया, फिर मेरी ही ओर तुमको लौट कर आना है; उस समय
मैं तुम्हें बताऊँगा जो कुछ तुम करते रहे।''

16 (लुक़मान ने कहा), ''ऐ मेरे बेटे! अगर कोई चीज़ राई के दाने के बराबर
भी हो, फिर वह किसी चट्टान के बीच या आसमान में या ज़मीन में हो,
अल्लाह उसको (क़ियामत में) निकाल लाएगा, बेशक अल्लाह बारीक से बारीक
(सूक्ष्मदर्शी) की ख़बर रखने वाला है।

17 ऐ मेरे बेटे! नमाज़ क़ायम कर और भली बात का हुक्म दे, और बुरी बातों
से रोक और जो मुसीबत पहुँचे उस पर सब्र से काम ले, बेशक यह हौसले
(साहस) के कामों में से है।

18 और लोगों से बेरूख़ी न कर और न ज़मीन पर अकड़ कर चल, बेशक
अल्लाह इतराने वाले, बड़ाई हाँकने वाले को पसंद नहीं करता।

19 और अपनी चाल में दर्मियानी (सन्तुलन) चाल अपनाओ और अपनी आवाज़
नीची रखो, इसलिए कि सब से बुरी आवाज़ गधे की है।''

20 क्या तुम देखते नहीं, कि अल्लाह ने उन तमाम चीज़ों को जो आसमानों और
ज़मीन में हैं, सबको तुम्हारे काम में लगा रखा है और उसने तुम पर अपनी
खुली और छिपी नेअ़मतें पूरी कर दी हैं? और इन्सानों में कुछ ऐसे लोग हैं
जो अल्लाह के बारे में झगड़ते हैं, बिना किसी इल्म, हिदायत और रोशन
किताब के;

21 और जब उनसे कहा जाता है, ''उस की पैरवी करो जो अल्लाह ने उतारी
है'' तो कहते हैं, ''(नहीं) बल्कि हम उस की पैरवी करेंगे जिस पर हमने
अपने बाप-दादा को पाया है।'' क्या उस ह़ाल में भी कि अगर शैतान उन्हें
भड़कती हुई आग की ओर बुला रहा हो?

22 और जो व्यक्ति अपने आप को अल्लाह के हवाले कर दे, और भला भी
हो, तो उसने ही मज़बूत सहारा थाम लिया, और सारे मामलों का अंजाम तो
अल्लाह ही की ओर है

23 और जिसने इन्कार किया उसका इन्कार आप के लिए ग़म का ज़रिया न बने,

उनको तो पलट कर ‘हमारी’ ही ओर आना है, फिर हम बता देंगे कि उन्होंने
क्या कुछ किया था? बेशक अल्लाह सीनों की बातों को जानता है।
24 हम उनको थोड़ा मज़ा उड़ाने देंगे, फिर उनको एक सख़्त अ़ज़ाब की ओर
खींच कर ले जाएँगे।
25 और अगर तुम उनसे पूछो कि, “आसमानों और ज़मीन को किसने पैदा किया
है?” तो ज़रूर कहेंगे, “अल्लाह ने, कह दीजिए, तमाम तअ़रीफ़ें अल्लाह ही
के लिए हैं,” मगर उसमें से अक्सर लोग नहीं जानते।
26 आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है अल्लाह ही का है, बेशक अल्लाह
बेपरवाह ह़म्द (तअ़रीफ़) के लायक़ है।
27 और अगर ज़मीन के जितने पेड़ हैं, क़लम बन जाएँ और समुद्र उसकी स्याही
हो जाए, इसके बाद सात और समुद्र हों तब भी अल्लाह की बातें खत्म न
हों, बेशक अल्लाह बड़ा ताक़त वाला, ह़िक्मत वाला है।
28 तुम सब का पैदा करना और (तुम सब का ज़िन्दा करके) दोबारा उठाना, तो
बस ऐसा ही है जैसे एक जीव का, बेशक अल्लाह सब कुछ सुनता, देखता है।
29 क्या तुम देखते नहीं, कि अल्लाह रात को दिन में दाख़िल करता है, और दिन
को रात में, और उसी ने सूरज और चाँद को काम में लगा रखा है? हर एक
अपने एक निर्धारित समय तक चले जा रहे हैं? और अल्लाह को ख़बर है,
जो कुछ तुम करते हो।
30 यह इस वजह से है कि अल्लाह ही  ह़क़ (सत्य) है और यह कि उसे छोड़
कर जिनको यह लोग पुकारते हैं, वे असत्य हैं,। और यह कि अल्लाह ही
सबसे ऊँचा (और) महान है।
31 क्या तुम देखते नहीं, कि नाव समुद्र में अल्लाह के फ़ज़्ल (अनुग्रह) से चलती
हैं, ताकि ‘वह’ तुम्हें कुछ निशानियाँ दिखाए? बेशक इसमें निशानियाँ हैं हर
उस व्यक्ति के लिए, जो सब्र और शुक्र करने वाला हो।
32 और जब मौजें (लहरें) उन पर बादलों की तरह ढाँप लेती हैं, तो अल्लाह ही
को पुकारते हैं, दीन को उसके लिए ख़ालिस करते हुए, फिर जब वह उनको
बचा कर थल की ओर ले आता है, तो उनमें से कुछ ही सही राह पर क़ायम
रहते हैं, और ‘हमारी’ निशानियों का इन्कार तो बस वही करते हैं, जो वादा
तोड़ने वाले नाशुक्रे हैं;
33 ऐ लोगो! अपने रब का डर रखो और उस दिन से डरो जब न कोई बाप
अपनी औलाद की ओर से बदला देगा और न कोई औलाद ही अपने बाप की
ओर से बदला देने वाली होगी, बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है, तो दुनिया
की ज़िन्दगी हरगिज़ तुम्हें धोखे में न डाले, और न अल्लाह के बारे में वह ध
ोखेबाज़ (शैतान) तुम्हें धोखे में डाले।
34 उस (क़ियामत की) घड़ी का इल्म अल्लाह ही के पास है, वही बारिश बरसाता
है और जानता है जो कुछ (माओं के) रह़िम (गर्भ) में है। और कोई नफ़्स
(व्यक्ति) नहीं जानता कि वह कल क्या करेगा और कोई नहीं जानता कि वह

किस ज़मीन में मरेगा, बेशक अल्लाह ही सब कुछ जानने वाला, ख़बर रखने वाला है।

## सूर-ए-सज्दः

यह सूरः मक्की है, इस में अ़रबी के 1577 अक्षर, 274 शब्द,30 आयतें और 3 रूकूअ़ हैं।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महा दयालु) है।

1 अलिफ़्- लाम्- मीम्,

2 इस किताब (क़ुर्आन) में कुछ शक नहीं कि सारे संसार के रब की ओर से नाज़िल हुई।

3 क्या यह लोग कहते हैं कि, ''इस व्यक्ति ने इसे खुद गढ़ लिया है?'' (नहीं,) बल्कि वह बर-ह़क़ (सत्य) है आप के रब की ओर से, ताकि आप उन लोगों को सचेत कर दें जिनके पास आप से पहले कोई सचेत करने वाला नहीं आया, ताकि ये हिदायत पाएँ।

4 अल्लाह ही है 'जिसने' आसमानों और ज़मीन और उनके बीच की चीज़ों को जो इन दोनों में है छः दिनों में पैदा किया, फिर अर्श (सिंहासन) पर क़ायम (विराजमान) हुआ, उसके सिवा न कोई तुम्हारा काम बनाने वाला है और न कोई सिफ़ारिशी, तो क्या तुम समझते नहीं?

5 'वही' ज़मीन से आसमान तक हर काम का इन्तिज़ाम करता है, फिर सारे मामले उसी की ओर लौटते हैं वह एक दिन जिस की मिक़्दार तुम्हारी गिनती के अनुसार एक हज़ार वर्ष की होगी।

6 'यही' तो है ग़ैब (छिपे) और ह़ाज़िर का जानने वाला और बड़ी ताक़त वाला, रह़म वाला है।

7 'उसने' जो चीज़ बनाई, अच्छी तरह बनाई और इन्सान की पैदाइश को मिट्टी से शुरू किया,

8 फिर उसका वंश ह़क़ीर पानी (वीर्य) से पैदा किया;

9 फिर उसको दुरूस्त किया और उसमें अपनी रूह़ फूँक दी और तुम्हारे कान, और आँखें और दिल बनाए, तुम बहुत कम शुक्र करते हो।

10 और यह लोग कहते हैं,''जब हम ज़मीन में घुल-मिल चुके होंगे तो क्या हम

फिर नये सिरे से पैदा किये जाएँगे?'' बल्कि यह लोग अपने रब ही के इन्कारी हैं।

11 कह दीजिए, ''मौत का फ़रिश्ता जो तुम पर नियुक्त है, वह तुम्हें पूरे तरीक़े से अपने क़ब्ज़े में ले लेता है, फिर तुम अपने रब की ओर वापस होगे।''

12 और अगर तुम उनको देख लेते जब वे मुजरिम अपने रब के सामने सर झुकाए होंगे, ''ऐ हमारे रब! हमने देख लिया और सुन लिया, तो अब हमें वापस भेज दे कि हम नेक अ़मल करें, बेशक हमें यक़ीन हो गया है।''

13 और अगर 'हम' चाहते तो हर जानदार को इसकी हिदायत (सीधी राह) दे देते, लेकिन 'मेरी' वह बात पूरी हो चुकी है कि ''मैं जहन्नम को जिन्नों और इन्सानों सब से भर दूँगा।''

14 तो अब चखो मज़ा इसका, कि तुमने इस दिन के मिलने को भुला रखा था, तो 'हमने' भी तुम्हें भुला दिया अब तुम अपने करतूतों के बदले हमेशा-हमेश अ़ज़ाब का मज़ा चखो।

15 'हमारी' आयतों पर तो वही लोग ईमान लाते हैं कि जब उनको उनसे नसीह़त की जाती है, तो सज्दे में गिर जाते हैं और अपने रब के साथ पाकी बयान करते हैं और घमंड नहीं करते।

16 उनकी पीठें बिस्तरों से अलग रहती हैं कि वे अपने रब को डर और उम्मीद के साथ पुकारते हैं, और जो कुछ 'हमने' उनको दिया है उसमें से ख़र्च करते हैं।

17 तो कोई नफ़्स (व्यक्ति) नहीं जानता कि उनके लिए कैसी आँखों की ठंडक छिपा कर रखी गई है यह उनके आ़माल का बदला है जो वे करते थे।

18 क्या वह व्यक्ति जो मोमिन है उस व्यक्ति की तरह हो सकता है, जो फ़ासिक़ (नाफ़रमान) हो, दोनों बराबर नहीं हो सकते।

19 जो लोग ईमान लाए और नेक अ़मल करते रहे, उनके रहने के लिए बाग़ हैं यह मेहमानदारी उनके कामों का बदला है, जो वे करते थे।

20 और जिन्होंने नाफ़रमानी की, उनका ठिकाना दोज़ख़ है, जब कभी वे उससे निकलना चाहेंगे तो उसी में ढ़केल दिये जाएँगे और उनसे कहा जाएगा चखो अब उस आग के अ़ज़ाब का मज़ा, जिसको तुम झूठ समझते थे।''

21 और 'हम' उन्हें उस बड़े अ़ज़ाब से पहले (दुनिया के) अ़ज़ाब का मज़ा चखाएँगे, ताकि वे (हमारी ओर) लौट आएँ।

22 और उस व्यक्ति से बढ़कर ज़ालिम कौन होगा, जिसे उसके रब की आयतों के ज़रिये नसीह़त की जाए, तो वह उनसे मुँह फेर ले, हम गुनाहगारों से बदला लेकर रहेंगे।

23 और 'हमने' मूसा को किताब दी, तो तुम उसके मिलने के बारे में शक में न पड़ो, और 'हमने' उसको बनी इस्राईल के लिए हिदायत बनाया।

24 और 'हमने' उनमें से पेशवा (नायक) बनाए थे, जो 'हमारे' हुक्म से हिदायत

(मार्गदर्शन) किया करते थे, वह सब्र पर क़ायम रहे और ‘हमारी’ आयतों पर यक़ीन रखते रहे।
25 बेशक तुम्हारा रब ही क़ियामत के दिन उन बातों का फ़ैसला करेगा, जिनमें वे मतभेद करते रहे हैं।
26 क्या उनके लिए यह चीज़ हिदायत (मार्गदर्शक) का ज़रिया न हुई, कि इनसे पहले कितनी ही नस्लों को हम हलाक कर चुके हैं, जिनके रहने बसने की जगहों पर वे चलते-फिरते हैं? बेशक इसमें निशानियाँ हैं तो क्या यह सुनते नहीं?
27 क्या इन्होंने नहीं देखा कि हम सूखी पड़ी हुई ज़मीन की ओर पानी ले जाते हैं, फिर उससे खेती उगाते हैं, जिसमें से इनके चौपाए भी खाते हैं और वे खुद भी? तो क्या यह इनको दिखाई नहीं देता।
28 और कहते हैं ‘‘यह फ़ैसला कब होगा, अगर तुम सच्चे हो?’’
29 कह दीजिए, ‘‘फ़ैसले के दिन इन्कार करने वालों का ईमान लाना उनके लिए कुछ फ़ायदेमन्द न होगा और न उनको मोहलत दी जाएगी।
30 अच्छा तो उन्हें उनके ह़ाल पर छोड़ दीजिए और इन्तिज़ार कीजिए यह भी इन्तिज़ार कर रहे हैं।

## सूर-ए-अह़ज़ाब

यह सूरः मदनी है, इस में अ़रबी के 5909 अक्षर, 73 आयतें और 9 रूकूअ़ हैं।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महा दयालु) है।

1 ऐ नबी! अल्लाह से डरिए और काफ़िरों (इन्कारियों) और मुनाफ़िक़ों (कप्टाचारियों) की बात न मानिए, बेशक अल्लाह इल्म वाला, ह़िक्मत वाला है।
2 और पैरवी (अनुसरण) कीजिए उस वह़्य की जो आप के रब की ओर से आप पर की जा रही है, बेशक अल्लाह जो तुम करते हो, उसकी ख़बर रखता है।
3 और आप अल्लाह पर भरोसा रखिए ‘वही’ काम बनाने के लिए काफ़ी है।
4 अल्लाह ने किसी आदमी के सीने में दो दिल नहीं बनाए, और न तुम्हारी पत्नियों को जिनसे तुम ज़िहार कर बैठते हो, (अर्थात यह कह दे कि तू मेरी माँ की पीठ की तरह ह़राम है) तुम्हारी माँ बनाया और न उसने तुम्हारे मुँह बोले बेटों को तुम्हारे ह़क़ीक़ी बेटे बनाए, ये सब तुम्हारे मुँह की बातें हैं और अल्लाह तो ह़क़ बात कहता है और ‘वही’ सही राह की ओर रहनुमाई करता है।
5 (मोमिनो) उन्हें उनके बापों के नाम से पुकारा करो, अल्लाह के नज़दीक यही इन्साफ़ की बात है, और अगर तुम उनके बापों को न जानते हो, तो वे तुम्हारे

दीनी भाई और साथी हैं, और इसमें जो ग़लती तुमसे हुई उसके लिए तुम पर कोई पकड़ नहीं, लेकिन जिसका इरादा तुमने दिल से कर लिया, (उसकी बात और है) और अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, रह़म वाला है।

6 नबी का ह़क़ ईमान वालों पर, खुद उनके अपनी जान से बढ़ कर है- और उनकी पत्नियाँ उनकी माएँ और अल्लाह की किताब के अनुसार, ईमान वालों और हिजरत करने वालों के मुक़ाबले में- नातेदार आपस में एक-दूसरे से ज़्यादा क़रीब हैं। यह और बात है कि तुम अपने साथियों के साथ कोई भलाई करो, यह बात किताब में लिखी हुई है।

7 और जब 'हमने' नबियों से अहद (प्रतिज्ञा) लिया, और तुमसे भी, और नूह़, और इब्राहीम और मूसा और मरयम के बेटे, ईसा, से भी, और 'हमने' मज़बूत अहद (प्रतिज्ञा) लिया था;

8 ताकि उन सच्चे लोगों से उनकी सच्चाई के बारे में पूछें, और इन्कार करने वालों के लिए दुःख देने वाला अ़ज़ाब तैयार कर रखा है।

9 ऐ ईमान वालो! अल्लाह के उस एह़सान को याद करो जो 'उसने' तुम पर किया- जब तुम पर फौजें चढ़ आयी थीं, तो 'हमने' उन पर आँधी भेजी, और ऐसी फौजें, जो तुमको दिखाई नहीं देती थीं, और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे देख रहा था;

10 जब वे तुम पर ऊपर की ओर से भी (चढ़) आए और नीचे की ओर से भी, और जब आँखें पथरा गयीं, और कलेजे मुँह को आने लगे, और तुम अल्लाह के बारे में तरह़-तरह़ के ख़याल करने लगे थे;

11 उस वक़्त ईमान वाले आज़माइश में डाल दिये गये, और बुरी तरह हिला दिये गये।

12 और जब मुनाफिक़ (कप्टाचारी), और वे लोग जिनके दिलों में रोग था, कहने लगे, "अल्लाह और उसके रसूल ने जो वादे हम से किये थे वह बिल्कुल ध ोखा था।"

13 और जब उनमें से एक गिरोह कहने लगा, "ऐ यसरिब (मदीना) वालो तुम्हारे लिए (ठहरने की) कोई जगह नहीं है, तो लौट चलो," और उनमें से एक गिरोह यह कह कर नबी से इजाज़त माँगने लगा कि "हमारे घर खुले पड़े हैं," हलाँकि वे खुले हुए (असुरक्षित) न थे, वे तो केवल भागना चाहते थे।

14 और अगर (फ़ौजें) शहर के चारों ओर से उन पर चढ़ आतीं और उस समय उनसे फित्ने (जंग)में पड़ने के लिए कहा जाता, तो वे (तुरन्त) उसमें जा पड़ते और इसके लिए बहुत कम ठहरते;

15 हालाँकि वे लोग इससे पहले अल्लाह से अहद (प्रतिज्ञा) कर चुके थे कि पीठ न फेरेंगे, और अल्लाह से किये गये अहद की ज़रूर पूछ-ताछ होगी।

16 कह दीजिए, "अगर तुम मौत या क़त्ल से भागो, तो यह भागना तुम्हारे लिए कुछ भी लाभदायक न होगा, और (इसके बाद तुम ज़िन्दगी का) मज़ा थोड़ा ही उठा सकोगे।"

17 कह दीजिए, "कौन है जो तुम्हें अल्लाह से बचा सकता है, अगर 'वह' तुम्हें

कोई नुक़्सान पहुँचाना चाहे, या अगर ‘वह’ तुम पर मेहरबानी करना चाहे,”
तो अल्लाह के मुक़ाबले में न कोई दोस्त पाएँगे और न कोई मदद्गार।
18 अल्लाह तुम में से उन लोगों को भी जानता है जो रूकावटें डाल रहे हैं, और
अपने भाइयों से यह कहते हैं कि “हमारे पास चले आओ।” और वे जंग में
बहुत कम हिस्सा लेते हैं।
19 वह तुम्हारा साथ देने में तंग दिल हैं फिर जब ख़तूरा पेश आ जाता है, तो
तुम उन्हें देखते हो, कि वे तुम्हें किस तरह़ ताकते हैं कि उनकी आँखें चक्कर
खा रही हैं, जैसे किसी पर बेहोशी छा रही हो, फिर जब ख़तूरा खत्म हो
जाता है तो तेज़ ज़बानों के साथ तुम्हारे बारे में ज़बानदराज़ी करें और माल
में कंजूसी करें, यह लोग ईमान लाए ही न थें, तो अल्लाह ने इनके किये हुए
कामों को बरबाद कर दिया और यह अल्लाह के लिए आसान था।
20 (डर की वजह से) समझ रहे हैं कि हमलाआवर गिरोह अभी गये नहीं हैं,
और अगर हमलाआवर गिरोह फिर आ जाएँ तो यह चाहेंगे कि वे देहात में
बद्दुओं (देहातियों) के बीच हों और वहाँ से तुम्हारी ख़बरें मालूम करते रहें,
और अगर यह तुम्हारे बीच रहें भी तो लड़ाई में कम ही हिस्सा लेंगे।
21 तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल में बेहतरीन नमूना (उत्तम आदर्श) है उस व्यक्ति
के लिए जो अल्लाह और आख़िरत का उम्मदीवार हो और वह अल्लाह को
ज़्यादा से ज़्यादा याद करे।
22 और जब ईमान वालों ने हमलाआवर गिरोहों को देखा तो पुकार उठे, “यह
वही है, जिसका अल्लाह और उसके रसूल ने हमसे वादा किया था, और
अल्लाह और उसके रसूल ने सच कहा था” और इस चीज़ ने उनके ईमान
और फ़रमाँबरदारी को और बढ़ा दिया।
23 ईमान वालों में ऐसे लोग भी हैं जिन्होंने अल्लाह से किये हुए अहृद (प्रतिज्ञा)
को सच कर दिखाया, उनमें से कुछ अपनी ज़िन्दगी पूरी कर चुके और कुछ
इन्तिज़ार में हैं, और उन्होंने अपनी बात ज़रा भी नहीं बदली।
24 ताकि अल्लाह सच्चों को उनकी सच्चाई का बदला दे और मुनाफ़िक़ों
(कप्टाचारियों) को चाहे तो सज़ा दे या उनकी तौबः कुबूल कर ले, बेशक
अल्लाह माफ़ करने वाला, रहृम वाला है।
25 और अल्लाह ने काफ़िरों को इस हाल में लौटा दिया कि वे अपने क्रोध में
(भरे हुए) थे, और वे कोई भलाई हासिल न कर सके; और ईमान वालों की
ओर से अल्लाह काफ़ी हो गया अल्लाह ज़बर्दस्त ताक़त वाला, (प्रभुत्वशाली)
है।
26 और किताब वालों में से जिन लोगों ने उनकी मदद की थी, अल्लाह ने उनके
क़िलों से उनको उतार दिया, और उनके दिलों में ऐसा रोअ़ब (धाक) बिठा
दिया, कि कितनों को तुम क़त्ल करते रहे और कितनों को तुम ने क़ैद कर
लिया।
27 और ‘उसने’ तुम्हें उनकी ज़मीन, और उनके घरों, और उनके मालों का वारिस

बना दिया, और उस ज़मीन का भी जिस पर तुमने अभी क़दम नहीं रखा, अ़ल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर (सामर्थ्यवान) है।

28 ऐ नबी! अपनी पत्नियों से कह दीजिए, ''अगर तुम दुनिया की ज़िन्दगी और ज़ीनत चाहती हो तो आओ, मैं तुम्हें कुछ दे दिला कर अच्छे तरीक़े से विदा कर दूँ;

29 और अगर तुम अल्लाह और 'उसके' रसूल, और आख़िरत के घर को चाहती हो तो अल्लाह ने तुम में से अच्छे काम करने वालियों के लिए बहुत बड़ा अज्र (बदला) तैयार कर रखा है।''

30 ऐ नबी की पत्नियो! तुममें जो किसी खुली बेहयाई (अनुचित काम) में लगेगी उसे दोहरा अ़ज़ाब दिया जाएगा, और अल्लाह के लिए यह बहुत आसान है;
31 और तुममें से जो अल्लाह और 'उसके' रसूल की फ़रमाँबरदार बन कर रहेगी और अच्छे काम करेगी, 'हम' उसको दोहरा बदला देंगे, और 'हमने' उनके लिए इज़्ज़त की रोज़ी तैयार कर रखी है।
32 ऐ नबी की पत्नियो! तुम दूसरी औ़रतों की तरह नहीं हो, अगर तुम परहेज़गारी अपनाती हो, तो तुम दबी आवाज़ में बात न किया करो, ताकि वह व्यक्ति जिसके दिल में रोग है, वह लालसा (न) करने लगे, और भली बात कहा करो;
33 और अपने घरों में ठहरी रहो और पिछली जाहिलियत की तरह नुमाइश न करो, नमाज़ क़ायम करो, ज़कात दो, और अल्लाह और उसके रसूल की फरमाँबदारी करो, अल्लाह तो बस यही चाहता है कि ऐ नबी के घरवालो, तुम से गन्दगी को दूर रखे और तुम्हें पूरी तरह पाक-साफ़ रखे।
34 और याद रखो अल्लाह की आयतों और हिकमत की उन बातों को जो तुम्हारे घरों में सुनाई जाती हैं, बेशक अल्लाह बारीक से बारीक (सूक्ष्मदर्शी) चीज़ों की ख़बर रखने वाला है।
35 मुस्लिम मर्द और मुस्लिम औरतें, ईमान वाले मर्द और ईमान वाली औरतें फरमाँबरदार (आज्ञाकारी) मर्द और फरमाँबरदार औरतें, सच्चे मर्द और सच्ची औरतें, और सब्र करने वाले मर्द और सब्र करने वाली औरतें, और गिड़गिड़ाने वाले मर्द और गिड़गिड़ाने वाली औरतें, और सद्क़ा (दान) करने वाले मर्द और सद्क़ा करने वाली औ़रतें; और रोज़ः रखने वाले मर्द और रोज़ः रखने वाली औरतें, अपने शर्मगाहों (गुप्तांगों) की हिफ़ाज़त करने वाले मर्द और शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करने वाली औ़रतें, और अल्लाह को ज़्यादा से ज़्यादा याद करने वाले मर्द और ज़्यादा से ज़्यादा याद करने वाली औरतें, अल्लाह ने इनके लिए बड़ी माफ़ी और बहुत बड़ा बदला तैयार कर रखा है।
36 और न किसी ईमान वाले मर्द और न किसी ईमान वाली औ़रत को यह अधिकार है कि जब अल्लाह और उसका रसूल किसी मामले का फ़ैसला कर दे, तो फिर उन्हें अपने मामले में कोई अधिकार बाक़ी रहे, और जो कोई अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़रमानी करे, तो वह खुली हुई गुमराही में पड़ गया।
37 और जबकि तुम उस व्यक्ति (ज़ैद) से कह रहे थे, जिस पर अल्लाह ने एहसान किया, और तुमने भी किया कि ''अपनी पत्नी (ज़ैनब) को अपने पास रखो

(आर्थात तलाक़ न दो) और अल्लाह से डरो, और तुम अपने दिल की वह बात छिपा रहे थे जिसको अल्लाह ज़ाहिर करने वाला था, और तुम लोगों से डर रहे थे, हाँलाकि अल्लाह इस बात का ज़्यादा हक़दार है कि उससे डरो।'' फिर ज़ैद ने जब उससे हाजत (ज़रूरत) न रखी (उसको तलाक़ दे दी) तो 'हमने' तुमसे उसका निकाह कर दिया, ताकि ईमान वालों पर अपने मुँह बोले बेटों की पत्नियों के मामले में कोई तंगी न रहे जबकि वे उनसे अपनी ज़रूरत पूरी कर लें, अल्लाह का हुक्म तो पूरा होकर ही रहता है।

38 नबी पर उस काम में कोई तंगी नहीं जो अल्लाह ने उनके लिए ठहराया हो, यही अल्लाह का तरीक़ा उन लोगों के मामले में भी रहा है, जो पहले गुज़र चुके हैं, और अल्लाह का हुक्म निश्चित हो चुका था।

39 जो अल्लाह के पैग़ाम को पहुँचाते थे और 'उसी' से डरते थे, और अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरते थे, और हिसाब लेने के लिए अल्लाह काफ़ी है।

40 मुहम्मद तुम्हारे मर्दों में से किसी के बाप नहीं, बल्कि वह अल्लाह के रसूल और आख़िरी नबी (खातमुन्नबीईन) हैं अल्लाह को तो हर चीज़ का पूरा इल्म है;

41 ऐ ईमान वालो! अल्लाह को ज़्यादा से ज़्यादा याद किया करो।

42 और सुबह व शाम 'उसकी' तस्बीह़ (पाकी) बयान किया करो;

43 'वही' तो है जो तुम पर रहमत भेजता है और 'उसके' फ़रिश्ते भी, ताकि 'वह' तुम्हें अन्धेरों से निकाल कर रोशनी की ओर ले आए, और (अल्लाह) ईमान वालों पर बहुत मेहरबान है।

44 जिस दिन वह 'उससे' (अल्लाह) मिलेंगे उनका स्वागत सलाम से होगा और उनके लिए इज़्ज़त वाला बदला तैयार कर रखा है।

45 ऐ नबी! 'हमने' आप को गवाही और खुशख़बरी देने वाला और सचेत करने वाला बना कर भेजा है।

46 और अल्लाह की इजाज़त से 'उसकी' ओर बुलाने वाला और रोशन चिराग़ (बनाया है)।

47 और ईमान वालों को खुशख़बरी दे दीजिए, ''उनके लिए अल्लाह की ओर से बहुत बड़ा फ़ज़्ल (अनुग्रह) है।''

48 और काफ़िरों और मुनाफ़िकों (कप्टाचारियों) की बात न मानिए, उनकी पहुँचायी हुई तकलीफ़ की परवाह न कीजिए। और अल्लाह पर भरोसा रखिए, अल्लाह इस बात के लिए काफ़ी है कि 'उसपर' भरोसा किया जाए।

49 ऐ ईमान लाने वालो! जब तुम ईमान लाने वाली औरतों से निकाह करो, और उन्हें हाथ लगाने से पहले तलाक़ दे दो तो तुम को कुछ अख़्तियार नहीं कि उनसे इद्दत पूरी कराओ, उनको कुछ दे दिला कर अच्छे तरीक़े से विदा कर दो।

50 ऐ नबी! 'हमने' आप के लिए आप की पत्नियों को जायज़ कर दिया, जिनके महर आप अदा कर चुके हैं, और उन औरतों को भी जो अल्लाह के दिये हुए

'माल-ए- ग़नीमत' में से  आप की मिल्कियत में आईं, और आप के चचा की बेटियाँ और आपके फूफियों की बेटियाँ और आपके मामुओं की बेटियाँ और आपके ख़ालाओं की बेटियाँ, जिन्होंने आपके साथ हिजरत की, और वह ईमान वाली औ़रतें जो अपने आप को नबी के लिए (निकाह़ में) दे दें, बशर्त कि नबी उनको अपने निकाह़ में लाना चाहें, ईमान वालों से हट कर यह केवल आप ही के लिए है, 'हमको' मालूम है कि 'हमने' उनकी पत्नियों और उनकी मम्लूक औ़रतों (दासियों) के बारे में जो निश्चित किया है ताकि आप पर कोई तंगी न रहे, और अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला, रह़म  वाला है।

51 आप जिस (पत्नी) को चाहें अलग रखें और जिस को चाहें अपने पास रखें, और जिसको आप अलग रखें उनमें से किसी के इच्छुक हों तो आप के लिए कुछ हर्ज नहीं, यह इसलिए है कि उनकी आँखें ठंडी हों और वे ग़मगीन न हों और जो कुछ भी आप उनको दें वे राज़ी रहेंगी। अल्लाह जानता है जो कुछ तुम्हारे दिलों  में है, और अल्लाह बड़ा इल्म वाला, ह़लीम (सहनशील) है।

52 इसके बाद आप के लिए दूसरी औ़रतें जायज़ नहीं और न यह जायज़ है कि उनकी जगह दूसरी पत्नियाँ कर लें, चाहे उनकी सुन्दरता आप को (कितनी ही) अच्छी लगे, सिवाय उनके जो आप की मिल्कियत में हों (अर्थात दासी) आप को अख़्तियार है, और अल्लाह हर चीज़ का देखने वाला है।

53 ऐ ईमान वालो! नबी के घरों में दाख़िल न हुआ करो, मगर यह कि तुम्हें खाने पर आने की इजाज़त दी जाए, वह भी इस तरह कि उसके तैयारी के इन्तिज़ार में न हो, लेकिन तुम्हें बुलाया जाए तो जाओ, और जब तुम खा चुको तो उठ कर चले जाओ, और बातों में जी लगा कर न बैठे रहो, यह बात नबी को तक्लीफ़ देती है। मगर वे तुम से कहने में लज्जा करते हैं, और अल्लाह ह़क़ बात कहने में लज्जा (संकोच) नहीं करता। और जब तुम्हें नबी की पत्नियों से कोई चीज़ मांगना हो तो उन से पर्दे के पीछे से मांगो, यह तरीक़ा तुम्हारे दिलों के लिए पाकीज़ा है और उनके दिलों के लिए भी पाकीज़ा है; और तुम्हारे लिए हरगिज़ जायज़ नहीं कि उनको तक्लीफ़ पहुँचाओ, और न यह जायज़ है कि इसके बाद भी कभी तुम उनकी पत्नियों से निकाह करो बेशक यह अल्लाह के नज़दीक बड़ी (गम्भीर) बात है।

54 अगर तुम किसी बात को ज़ाहिर करो या उसको छिपाओ, अल्लाह को तो हर चीज़ का इल्म है।

55 (औरतों को) न उनके लिए अपने बापों के सामने होने (पर्दा न करने) में कोई गुनाह है और न अपने बेटों से, और न अपने भाइयों से, और न अपने भतीजों से, और न अपने भाँजों से, और न अपनी जैसी औ़रतों से, और न जो उनकी मिल्कियत में हैं ( अर्थात दास और दासी)  और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर गवाह है।

56 अल्लाह और उसके फ़रिश्ते नबी पर दुरूद भेजते हैं, ऐ ईमान वालो तुम भी उन पर दुरूद और सलाम भेजा करो।

57 जो लोग अल्लाह और उसके रसूल को तक्लीफ़ देते हैं, उन पर अल्लाह ने

दुनिया और आख़िरत में लानत की है और उनके लिए अपमान जनक अ़ज़ाब तैयार कर रखा है।
58 और जो लोग ईमान वाले मर्दों और ईमान वाली औ़रतों को, ऐसे कामों पर तक्लीफ़ देते हों, जो उन्होंने न किया हो तो उन्होंने अपने सर एक बोहतान (मिथ्यारोपण) और खुले गुनाह का भार उठा लिया।
59 ऐ नबी! अपनी पत्नियों और अपनी बेटियों, और ईमान वाली औ़रतों से कह दीजिए, ''अपने ऊपर अपनी चादरें डाल लिया करें। इससे इस बात की ज़्यादा उम्मीद है कि पहचान (न) ली जाएँ और सताई न जाएँ, और अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, रह़म वाला है–
60 मुनाफ़िक़ (कप्टाचारी) और वे लोग जिनके दिलों में रोग है और जो मदीना में झूठी अफ़वाहें फैलाते हैं, अगर बाज़ न आए, तो 'हम' तुमको उनके ख़िलाफ़ उठा खड़ा करेंगे, फिर वे उसमें तुम्हारे साथ थोड़ा ही रहने पाएँगे।
61 वह भी फिट्कारे हुए, जहाँ पाए गये पकड़े गये और बुरी तरह क़त्ल किये गये;
62 यह अल्लाह की सुन्नत (रीति) रही है उन के मामले में भी जो लोग पहले गुज़र चुके हैं, और तुम अल्लाह की सुन्नत (नियम) में कोई परिवर्तन न पाओगे।
63 लोग आप से क़ियामत की घड़ी के बारे में पूछते हैं, कह दीजिए, ''इसका इल्म तो अल्लाह ही को है और तुम्हें क्या ख़बर? कि शायद वह घड़ी क़रीब ही आ गयी हो।''
64 बेशक अल्लाह ने इन्कार करने वालों पर लानत की है और उनके लिए भड़कती हुई आग तैयार कर रखी है,
65 जिसमें वे हमेशा रहेंगे, न कोई दोस्त मिलेगा और न मदद्गार;
66 जिस दिन उनके चेहरे आग में उलट-पलट कर दिये जाएँगे, वे कहेंगे, ''काश हमने फ़रमाँबरदारी (अनुपालन) की होती अल्लाह की, और फ़रमाँबरदारी की होती रसूल की!''
67 और कहेंगे, ''ऐ हमारे रब! हमने अपने सरदारों और बड़े लोगों की पैरवी की और उन्होंने हमें राह से गुमराह कर दिया;
68 ऐ हमारे रब! इनको दोगुना अ़ज़ाब दे और उन पर बड़ी लानत कर!''
69 ऐ ईमान वालो! उन लोगों की तरह न हो जाना जिन्होंने मूसा को तक्लीफ़ पहुँचाई, तो अल्लाह ने उनसे, जो कुछ उन्होंने कहा था बरी कर दिया, और वह अल्लाह के यहाँ इज्ज़तदार था।
70 ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरते रहो और बात सीधी कहा करो।
71 'वह' तुम्हारे आ़माल (कर्मो) को ठीक कर देगा, और तुम्हारे गुनाहों को माफ़ कर देगा, और जो व्यक्ति अल्लाह और उसके रसूल की फ़रमाँबरदारी करेगा, तो वह बहुत बड़ी कामियाबी हासिल करेगा।
72 हमने (वह) अमानत को आसमानों , और ज़मीन और पहाड़ों के सामने पेश किया तो उन्होंने उसको उठाने से इन्कार किया, और उससे डर गये, और इन्सान ने उसे उठा लिया, बेशक वह बड़ा ज़ालिम और नादान (जाहिल) था।

73 ताकि अल्लाह मुनाफ़िक़ (कप्टी) मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों, और मुश्रिक मर्दों
और मुश्रिक औरतों को अ़ज़ाब दे; और ईमान वाले मर्दों और ईमान वाली
औरतों पर रह़म करे, और अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, रह़म वाला है।

## सूर-ए-सबा

यह सूरः मक्की है, इस में अ़रबी के 3636 अक्षर, 896 शब्द, 45 आयतें और 3 रूकूअ़ हैं।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महा दयालु) है।

1 तमाम तअ़रीफें अल्लाह ही के लिए हैं, जो कुछ आसमानों में हैं और जो कुछ
ज़मीन में हैं, (सब) 'उसी' का है, और आख़िरत में भी 'उसी' की तअ़रीफ़
है और 'वही' ह़िकमत वाला, पूरी ख़बर रखने वाला है।
2 'वह' जानता है जो कुछ ज़मीन में दाख़िल होता है, और जो कुछ उससे
निकलता है, और जो कुछ आसमान से उतरता है, और जो कुछ उस पर
चढ़ता है, 'वह' रह़म करने वाला, माफ़ करने वाला है।
3 और जिन लोगों ने इन्कार किया, उनका कहना है, (क़ियामत की) "वह घड़ी
नहीं आएगी।" कह दीजिए, "क्यों नहीं! सारे संसार के ग़ैब (परोक्ष) के इल्म
रखने वाले की क़सम, वह तुम पर ज़रूर आ कर रहेगी, 'उससे' ज़र्रा (कण)
बराबर भी कोई चीज़ न आसमानों में छिपी है, और न ज़मीन में, और न
इससे छोटी कोई चीज़ न बड़ी, मगर एक स्पष्ट किताब में (लिखी हुई) है;
4 ताकि 'वह' लोगों को बदला दे, जो ईमान लाए और अच्छे अ़मल करते रहे,
उनके लिए माफ़ी और इ़ज़्ज़त वाली रोज़ी है;
5 और जो लोग 'हमारी' आयतों को हराने की कोशिश करते रहे, उन्हें सख़्त
दुःख देने वाले अ़ज़ाब की सज़ा है।"
6 और जिनको समझ दी गई है वह जानते हैं कि आप के 'रब' की ओर से
जो आप पर उतारा गया है, वह ह़क़ है, और 'उसका' रास्ता दिखाता है जो
बड़ी ताक़त वाला, ह़म्द (तअ़रीफ़) के लायक़ है।
7 और जिन लोगों ने इन्कार किया वे कहते हैं, "क्या हम तुम्हें एक ऐसा आदमी
बताएँ जो तुम्हें ख़बर देता है कि जब तुम बिल्कुल चूरा-चूरा हो जाओगे तो
फिर नये सिरे से ज़िन्दा किये जाओगे।"
8 क्या उसने अल्लाह पर झूठ गढ़कर थोपा है, या उसे जुनून है? नहीं, बल्कि
जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, वह अज़ाब और निचले दर्जे की
गुमराही में हैं।
9 क्या उन्होंने आसमान और ज़मीन को नहीं देखा, जो उनके आगे भी है

और उनके पीछे भी? अगर हम चाहें तो उन्हें  धरती में धंसा दें या उन पर आसमान से कुछ टुकड़े गिरा दें। बेशक इसमें निशानी है हर उस बन्दे के लिए जो रूजूअ़ करने वाला हो।
10 और 'हमने' दाऊद को अपनी ओर से फ़ज्ल (श्रेष्ठ) किया था, ऐ पहाड़ो! इन के साथ तस्बीह़ करो और परिन्दों को (उन के वश में कर दिया) और 'हमने' उनके लिए लोहे को नर्म कर दिया था;
11 कि कुशादा ज़िरह (कवच) बनाओ और कड़ियों को अन्दाज़े से जोड़ो, और अच्छे काम करो, जो कुछ तुम करते हो उसको 'मैं' देख रहा हूँ।
12 और हवा को सुलेमान के  अधिकार में कर दिया था कि उसका सुबह का चलना एक महीने तक (की दूरी) का होता, और उसका शाम के समय भी 'महीने तक (की दूरी) का होता, और 'हमने' उनके लिए पिघले हुए ताँबे का स्रोत बहा दिया, और जिन्नो में से कितने ही जिन्न उनके रब के हुक्म से उनके सामने काम करते, ''और उनमें से जो कोई हमारे हुक्म से फिरेगा 'हम' उसको आग का मज़ा चखाएँगे।''
13 वे (जिन्न) उनके लिए जो वह चाहते बना देते (अर्थात) इमारतें, तस्वीरें, बड़े-बड़े थाल जैसे हौज़ और देगें (डेग) जो एक ही जगह रखी रहें।'' ऐ दाऊद की औलाद शुक्र अदा करो, और मेरे बन्दों में बहुत ही कम  शुक्रगुज़ार हैं।
14 फिर जब 'हमने' उनके लिए मौत का फ़ैसला लागू किया, तो उनकी मौत का पता बस उस ज़मीन के कीड़े ने दिया जो उनकी लाठी को खा रहा था, फिर जब वह गिर पड़े, तब जिन्नों को मालूम हुआ कि अगर वे ग़ैब (परोक्ष) का इल्म रखते तो इस अपमान भरी मुसीबत में न पड़ते।
15 सबा के लिए उनकी बस्ती में एक निशानी थी दो बाग़-दाएँ और बाएँ, ''खाओ अपने रब की रोज़ी, और उसका शुक्रिया अदा करो, शहर भी अच्छा सा, और रब भी माफ़ करने वाला।''
16 तो उन्होंने मुँह फेर लिया तो 'हमने' उन पर बाँध तोड़, बाढ़ भेज दी और उनके दोनों बाग़ों के बदले में उन्हें दो दूसरे बाग़ दिये, जिनमें कुछ कड़वे-कसैले फल और झाऊ थे, और कुछ थोड़ी सी झड़बेरियाँ।
17 यह बदला 'हमने' उन्हें इसलिए दिया था कि उन्होंने नाशुक्री की थी, और ऐसा बदला तो हम नाशुक्रे को ही दिया करते हैं।
18 और 'हमने' उनके और उनकी बस्तियों के बीच, जिनमें 'हमने' बरकत रखी थी, स्पष्ट बस्तियाँ बसायी थीं जो सामने नज़र आती थीं और उनमें सफ़र की मन्ज़िलें ख़ास अन्दाज़े पर रखीं, उनमें रात-दिन बेखटके चलो-फिरो।
19 तो फिर उन्होंने कहा, ''ऐ हमारे रब! हमारी यात्राओं में दूरी कर दे, और इन लोगों ने खुद अपने आप पर जुल्म किया तो हमने उनके क़िस्से बना दिये और उनके टुकड़े-टुकड़े कर दिये, इसमें निशानियाँ हैं हर सब्र करने वाले, शुक्र करने वाले के लिए।
20 और इब्लीस ने अपनी अटकल सच कर दिखाई, और ईमान वाले के एक गिरोह के सिवा, उन्होंने उसी की पैरवी की।

21 और उसका उन पर कोई ज़ोर न था, मगर (हमारा) मक़्सद यह था कि जो
लोग आख़िरत में शक करते हैं, उनसे उन लोगों को, जो उस पर ईमान रखते
हैं अलग कर दें और तुम्हारा 'रब' तो हर चीज़ का संरक्षक है।
22 कह दीजिए, ''अल्लाह को छोड़ कर जिनका तुम्हें दावा है, उनको पुकार कर
देखो वह न आसमानों में ज़र्रा बराबर चीज़ के मालिक हैं, और न ज़मीन
में, और न इन दोनों में उनका कोई साझा है, और न इनमें से कोई उस
(अल्लाह) का मददगार है''।
23 और उसके यहाँ कोई सिफ़ारिश काम न आएगी, मगर उसी के लिए जिस के
बारे में 'उसने' इजाज़त दी होगी, यहाँ तक कि जब उनके दिलों से घबराहट
दूर कर दी जाएगी, तो (फ़रिश्ते) कहेंगे, ''तुम्हारे रब ने क्या कहा?'' वे कहेंगे,
''बिल्कुल हक़ (कहा), और 'वह' ऊँचे मर्तबे वाला बहुत बड़ा है।''
24 पूछिए, ''कौन तुम्हें आसमानों और ज़मीन से रोज़ी देता है?'' कहिए,
''अल्लाह,'' और हम या तुम (या तो) सीधे रास्ते पर हैं या खुली गुमराही में।
25 कह दीजिए,''तुम से हमारे जुर्म की पूछ-ताछ न होगी, और न जो कुछ तुम
कर रहे हो, उसके बारे में हमसे पूछ-ताछ होगी।
26 कह दीजिए, ''हमारा 'रब' हम को जमा करेगा, फिर हमारे बीच ह़क़ के साथ
फ़ैसला करेगा, और वही फ़ैसला करने वाला, इल्म वाला है।
27 कह दीजिए, ''मुझे उनको दिखाओ, जिनको तुमने साझीदार बना कर उसके
साथ जोड़ रखा है, कुछ नहीं!! बल्कि वही अल्लाह बड़ी ताक़त वाला, ह़िक्मत
वाला है''
28 और (ऐ मुह़म्मद) 'हमने' आप को तमाम लोगों के लिए ख़ुशख़बरी देने वाला,
और ख़बरदार करने वाला बना कर भेजा है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते।
29 और कहते हैं, यह वादा कब पूरा होगा, अगर तुम सच्चे हो।''
30 कह दीजिए, ''तुम्हारे लिए एक ऐसे दिन की अवधि निर्धारित है जिससे न
एक घड़ी भर पीछे हट सकोगे और न आगे बढ़ सकोगे।''
31 और जो काफ़िर (इन्कारी) हैं, वे कहते हैं ''हम इस क़ुर्आन को हरगिज़ न
मानेंगे और न उसको जो उसके आगे है, और अगर तुम देख लेते जबकि यह
ज़ालिम अपने रब के सामने खड़े कर दिये जाएँगे, वे एक-दूसरे को मलामत
करेंगे, जो लोग कमज़ोर समझे जाते थे, वे उन बड़े लोगों से कहेंगे, ''अगर
तुम न होते तो हम ज़रूर मोमिन (मुसलमान) होते।''
32 बड़े लोग कमज़ोर लोगों से कहेंगे, ''क्या हमने तुमको हिदायत (सच्ची राह)
से रोका था, जबकि वह तुम्हारे पास आ चुकी थी? (नहीं) बल्कि तुम खुद ही
मुजरिम (गुनहगार) थे।''
33 और कमज़ोर लोग बड़े लोगों से कहेंगे, (नहीं,) बल्कि रात और दिन की
(तुम्हारी) चालें थीं, जब तुम हमसे कहते थे कि हम अल्लाह के साथ कुफ़्र करें
और (दूसरों को) उसके बराबर का ठहराएं, जब वे अ़ज़ाब देखेंगे तो मन ही
मन पछताएँगे, और 'हम' उन लोगों की गर्दनों में जिन्होंने कुफ़्र को अपनाया
था तौक़ डाल देंगे। उन्हें वही तो बदले में मिलेगा जो वे करते थे।

34 और 'हमने' किसी बस्ती में कोई सचेत करने वाला नहीं भेजा मगर वहाँ के
खुशहाल लोगों ने कहा, ''जो कुछ तुम्हें देकर भेजा गया है, हम तो उसे नहीं
मानते।''
35 और (यह भी) कहा, ''हम तो धन और संतान में तुमसे बढ़कर हैं, और हम
को अ़ज़ाब नहीं दिया जाएगा।''
36 कह दीजिए,''मेरा 'रब' जिसकी चाहता है रोज़ी कुशादा (ज़्यादा) कर देता है
और जिसकी चाहता है नपी-तुली देता है। लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते।''
37 और तुम्हारा माल और औलाद ऐसी चीज़ नहीं कि तुम को हमारा मुकर्रब
बना दें हाँ (हमारा मुक़र्रब वह है) जो कोई ईमान लाया और उसने अच्छा
काम किया, तो ऐसे ही लोग हैं जिनके लिए उसका दो गुना बदला है, और
वे ऊपरी मंजिलों में चैन (इत्मिनान) से रहेंगे।
38 और जो लोग 'हमारी' आयतों के बारे में हराने (मात देने) की कोशिश करते
हैं, वे अ़ज़ाब में पकड़ लिए जाएँगे।
39 कह दीजिए, ''मेरा रब अपने बन्दों में से जिसकी चाहता है रोज़ी कुशादा
(ज़्यादा) कर देता है, और जिसकी चाहता है नपी-तुली कर देता है, और जो
कुछ तुम खर्च करते हो उसकी जगह वह तुमको और देगा, और वह सबसे
अच्छा रोज़ी देने वाला है।''
40 और जिस दिन (अल्लाह) इन सब लोगों को इकट्ठा करेगा, ''फिर फ़रिश्तों
से कहेगा, क्या यही लोग तुम्हारी इबादत किया करते थे?''
41 वे कहेंगे, ''तू पाक है हमारा सम्बन्ध तो केवल तुझसे ही है, न कि इनसे,
बल्कि यह लोग जिन्नात की पूजा किया करते थे, इनमें से अक्सर यक़ीन भी
इन्हीं (जिन्नों) पर रखते थे।
42 ''तो आज तुममें से कोई किसी को न फ़ायदा पहुँचाने का अधिकार रखता है
और न नुक़्सान पहुँचाने का, और हम ज़ालिमों से कहेंगे कि जिस दोज़ख़ के
अ़ज़ाब को तुम झुठलाया करते थे, अब उसका मज़ा चखो।''
43 और जब उन्हें 'हमारी' स्पष्ट आयतें पढ़ कर सुनाई जाती हैं तो कहते हैं,
''यह एक (ऐसा) व्यक्ति है जो चाहता है कि तुम्हें उनसे रोक दे कि जिनको
तुम्हारे बाप-दादा पूजते चले आए हैं, और कहते हैं, ''यह (कुर्आन) तो एक
गढ़ा हुआ झूठ है, जिन लोगों ने इन्कार किया उन्होंने हक़ (सत्य) के बारे में,
जबकि वह उनके पास आया, कह दिया ''यह तो खुला हुआ जादू है।''
44 और न उन्हें 'हमने' किताबें दी थीं जिनको यह पढ़ते-पढ़ाते हैं, और न आप
से पहले हमने उनके पास कोई सचेत करने वाला भेजा।
45 और झुठलाया उन लोगों ने भी जो उनसे पहले थे, और जो कुछ 'हमने' उन्हें
दिया था ये तो उसके दसवें भाग को भी नहीं पहुँचे हैं, तो उन्होंने मेरे रसूलों
को झुठलाया, तो मेरा कैसा अ़ज़ाब हुआ।
46 कह दीजिए, ''बस मैं तो तुम को एक नसीहत करता हूँ कि अल्लाह के लिए
उठ खड़े हो दो-दो और एक-एक, फिर विचार करो तुम्हारे साथी (मुहम्मद)

को कोई जुनून नहीं है, वह तो-तुम को आगे आने वाले एक सख़्त अ़ज़ाब से सचेत करने वाले हैं?
47 कह दीजिए, "मैं तुमसे कुछ बदला नहीं चाहता वह तुम्हें ही मुबारक हो, मेरा बदला तो बस अल्लाह ही के ज़िम्में है, और 'वह' हर चीज़ पर गवाह है।"
48 कह दीजिए, "मेरा रब हक़ को असत्य पर ग़ालिब (प्रभावी) करता है वह ग़ैब (परोक्ष) की बातें भली-भाँति जानने वाला है।"
49 कह दीजिए, "हक़ (सत्य) आ गया और बातिल (असत्य मअ़बूद) न तो पहली बार पैदा कर सकता है और न दोबारा पैदा करेगा।
50 कह दीजिए, "अगर मैं गुमराह हूँ तो अपना ही बुरा करूँगा, और अगर मैं सच्ची राह पर हूँ तो वह उस वह्य (प्रकाशना) की वजह से है, जो मेरा रब मेरी ओर वह्य भेजता है, बेशक 'वह' सुनने वाला, क़रीब है।"
51 और अगर तुम देख लेते जब ये घबराए हुए होंगे तो बच न सकेंगे और क़रीब से ही पकड़ लिए जाएँगे।
52 और कहेंगे, "हम इस पर ईमान ले आए," और उनके लिए कहाँ सम्भव है कि इतनी दूर जगह से उसको पा सकेंगे!
53 और पहले तो इससे इन्कार करते रहे और बिना देखे-भाले दूर ही से तीर (अट्कलें) चलाते रहे।
54 और उनके और उनकी इच्छाओं के बीच रोक लगा दी गई, जिस तरह इससे पहले उनके जैसे लोगों के साथ किया गया, वे भी शक और भ्रम में पड़े हुए थे।

## सूर-ए-फ़ातिर

यह सूरः मक्की है, इस में अरबी के 3289 अक्षर, 792 शब्द, 45 आयतें और 5 रूकूअ़ हैं।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महा दयालु) है।

1 सब तअ़रीफ़ अल्लाह ही के लिए हैं, जो आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला (और) फ़रिश्तों को पैग़ाम पहुँचाने वाला बना कर नियुक्त करता है, जिनके दो-दो, तीन-तीन और चार-चार पर हैं, वह पैदाइश में जो चाहता है बढ़ा देता है, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ुद्रत (सामर्थ्य) रखता है।
2 अल्लाह जो रह़मत (दयालुता) लोगों के लिए खोल दे तो उसे कोई रोकने वाला नहीं, और जिसे वह रोक ले तो उसके बाद उसे कोई जारी करने वाला भी नहीं, वह बड़ा ग़ालिब (प्रभुत्वशाली), ह़िक्मत वाला है।
3 ऐ लोगो! अल्लाह के एहसान जो तुम पर हैं, उनको याद करो, अल्लाह के

सिवा क्या और कोई पैदा करने वाला है, जो आसमान और ज़मीन से तुमको रोज़ी दे? उसके सिवा कोई इलाह (उपास्य) नहीं, फिर तुम किधर उल्टे बहके चले जा रहे हो?

4 और अगर यह लोग आप को झुठलाते हैं तो आप से पहले भी कितने ही रसूल झुठलाए जा चुके हैं, और सारे मामले अल्लाह ही की ओर पलटते हैं।

5 ऐ लोगो! अल्लाह का वादा सच्चा है, तो दुनिया की ज़िन्दगी तुम्हें धोखे में न डाल दे और न वह धोखेबा़ (शैतान) अल्लाह के बारे में तुम्हें धोखा दे।

6 शैतान तुम्हारा दुश्मन है, तो तुम भी उसको दुश्मन ही समझो, वह तो अपने गिरोह को केवल इसी लिए बुला रहा है कि वह दोज़ख़ वालों में शामिल हो जाएँ।

7 जिन्होंने इन्कार किया उनके लिए सख़्त अ़ज़ाब है, और जो ईमान लाए और अच्छे अ़मल किये उनके लिए माफ़ी और बड़ा बदला है।

8 फिर क्या वह व्यक्ति जिसको उसके बुरे कामों को (शैतान ने) अच्छे काम बना कर दिखाए हों, और वह उनको अच्छा समझने लगें तो बेशक अल्लाह जिसे चाहता है भटका देता है और जिसे चाहता है सीधी राह दिखाता है, तो उन लोगों पर अफ़सोस करके आपकी जान न जाती रहे, जो कुछ ये कर रहे हैं, अल्लाह खूब जानता है।

9 और अल्लाह ही तो है जो हवाएँ चलाता है फिर वे बादल को उभारती हैं, फिर ‘हम’ उसे किसी सूखी निर्जीव ज़मीन की ओर हाँक देते हैं, फिर हम ज़मीन को उसके मुर्दा होने के बाद ज़िन्दा कर देते हैं, इसी तरह (मरने के बाद) ज़िन्दा हो कर उठना होगा।

10 जो व्यक्ति इ़ज़्ज़त का चाहने वाला हो तो इ़ज़्जत तो सारी की सारी अल्लाह ही के लिए है, भली बातें अल्लाह तक पहुँचती हैं और भले काम उनको ऊँचा उठाते हैं, और जो लोग बुरी चालें चलते हैं उनको सख़्त अ़ज़ाब होगा, और उनकी चालें नाकाम होकर रह जाएँगी।

11 और अल्लाह ही ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर बूँद (वीर्य) से, फिर जोड़े- जोड़े बनाए, उसके इल्म के बिना न कोई औ़रत गर्भवती होती है और न जन्म देती है, और न बड़ी उम्र वाला उम्र पाता है, और जो कुछ उसकी उम्र में कमी होती है वह सब एक किताब में( लिखा होता) है, बेशक यह सब अल्लाह के लिए आसान है।

12 और दो दरिया एक तरह के नहीं हैं, एक का पानी मीठा पीने में स्वादिष्ट और प्यास बुझाने वाला, और एक का पानी खारा कड़वा, और दोनों में से ताज़ा गोश्त (मछलियाँ) खाते और ज़ेवर (आभूषण) निकालते हो, जिसको पहनते हो, और तुम देखते हो, कि नवकाएँ नदियों में (पानी को) चीरती चली जाती हैं, ताकि तुम अल्लाह का फ़ज़्ल (अनुग्रह) तलाश करो, और ताकि तुम शुक्र करो।

13 वही रात को दिन में दाख़िल करता है, दिन को रात में दाख़िल करता है, और उसी ने सूरज और चाँद को काम में लगा रखा है हर एक निर्धारित समय तक चलता रहेगा, यही अल्लाह तुम्हारा ‘रब’ है उसी की हुकूमत है,

और जिन्हें तुम उसके सिवा पुकारते हो, वह खजूर की गुठली के छिलके के
बराबर भी अधिकार नहीं रखते।
14 अगर तुम उन्हें पुकारो तो वह तुम्हारी पुकार सुनेंगे भी नहीं, और अगर सुन
भी लें तो तुम्हारा कहना न कर सकेंगे, और क़ियामत के दिन वे तुम्हारे साझी
ठहराने का इन्कार कर देंगे, पूरी ख़बर रखने वाले (अल्लाह) की तरह तुम्हें
कोई न बताएगा।
15 ऐ लोगो! तुम अल्लाह के मुहताज हो, और अल्लाह बेपरवाह ह़म्द (खूबियों)
वाला है।
16 अगर 'वह' चाहे तो तुम्हें हटा दे और एक नई मख़्लूक़ (सृष्टि) ला बसाए।
17 और यह अल्लाह के लिए कुछ भी कठिन नहीं।
18 और कोई (आदमी) किसी दूसरे का बोझ न उठाएगा, और अगर कोई बोझ
से दबा हुआ अपना बोझ उठाने के लिए पुकारेगा तो उसमें से कुछ भी न
उठाया जाएगा, चाहे कितना ही क़रीबी रिश्तादार क्यों न हो, आप तो केवल
उन्हीं को सचेत कर सकते हैं, जो बिना देखे अपने रब से डरते हैं, और
नमाज़ क़ायम रखते हैं, और जो व्यक्ति अपने को संवारता है तो अपने ही
लिए संवारता है, और लौट कर जाना तो अल्लाह ही की ओर है।
19 और अन्धा और आँखों वाला बराबर नहीं,
20 और न अन्धेरा और न उजाला,
21 और न छाया और न धूप,
22 और न ज़िन्दे और न मुर्दे बराबर हो सकते हैं, अल्लाह जिसे चाहता है सुनाता
है और आप उन लोगों को नहीं सुना सकते, जो क़ब्रों में हैं;
23 आप तो केवल सचेत करने वाले हैं।
24 'हमने' आप को ह़क़ के साथ खुशख़बरी सुनाने वाला और सचेत करने वाला
बना कर भेजा है, और कोई उम्मत नहीं कि जिसमें सचेत करने वाला न
गुज़रा हो।
25 और अगर यह आप को झुठलाएँ तो जो लोग इनसे पहले थे, वे भी झुठला
चुके हैं, उनके पास उनके रसूल निशानियाँ और ज़बूर और रोशन किताबें
लेकर आते रहे।
26 फिर 'मैंने' (उन लोगों को,) जिन्होंने इन्कार किया, धर पकड़ा, तो फिर कैसा
रहा 'मेरा' इन्कार!
27 क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाह ने आसमान से पानी बरसाया, फिर उसके
ज़रिये 'हमने' फल निकाले, जिनके रंग विभिन्न प्रकार के होते हैं? और पहाड़ों
में भी विभिन्न रंगतों के टुकड़े जिनमें सफेद, लाल, और काले भुजंग भी हैं।
28 और इसी तरह आदमियों और जानवरों, और चौपायों के रंग भी विभिन्न
प्रकार के हैं, अल्लाह से डरते तो उसके वही बन्दे हैं जो इल्म रखते हैं, बेशक
अल्लाह बड़ा ताक़त वाला, (प्रभुत्वशाली) माफ़ करने वाला है।
29 जो लोग अल्लाह की किताब पढ़ते हैं, और नमाज़ क़ायम रखते हैं, और जो

कुछ 'हमने' उन्हें दे रखा है उसमें से छिपा कर और खुले तौर पर खर्च करते हैं, वह ऐसे व्यापार की उम्मीद लगाए बैठे हैं जो कभी तबाह नहीं होगा।
30 यह कि अल्लाह उनको उनका पूरा- पूरा बदला देगा अपने (कृपा) से, और उनको ज़्यादा भी देगा, वह बड़ा माफ़ करने वाला, क़दर करने वाला है।
31 और जो किताब हमने तुम्हारी ओर वह्य की है, वही हक़ है, अपने से पहले (की किताबों) की पुष्टि करती है। बेशक अल्लाह अपने बन्दों की पूरी ख़बर रखने वाला, देखने वाला है।
32 फिर 'हमने' अपने बन्दों में से उन लोगों को किताब का वारिस ठहराया, जिनको हमने चुना, फिर उनमें से कुछ तो अपने आप पर ज़ुल्म कर रहे हैं और कुछ उनमें से बीच की चाले चल रहे हैं, और कुछ उनमें से अल्लाह के हुक्म से भलाइयों में आगे बढ़ रहे हैं, यही बड़ा फ़ज़्ल (अनुग्रह) है;
33 कि वहाँ 'हमेशा' रहने के बाग़ हैं, जिनमें वे दाख़िल होंगे, वहाँ उनको सोने के कंगन और मोती का गहना पहनाया जाएगा, और वहाँ उनका वस्त्र (कपड़ा) रेशम का होगा।
34 और वे कहेंगे, ''सब तअ़रीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं जिसने हम को ग़म से दूर कर दिया है, बेशक हमारा रब बड़ा माफ़ करने वाला, क़दर करने वाला है।''
35 जिसने हमको अपने फ़ज़्ल (अनुग्रह) से हमेशा रहने के घर (जन्नत) में उतारा यहाँ न हमें कोई तक्लीफ़ पहुँचती है और न हमें कोई थकान ही आती है।
36 और जिन्होंने इन्कार किया, उनके लिए जहन्नम की आग है, न उनका काम तमाम किया जाएगा कि मर जाएँ और न उनसे उनका अ़ज़ाब ही कुछ हल्का किया जाएगा, हम ऐसा ही बदला हर नाशुक्रे को दिया करते हैं।
37 और वे उसमें चिल्लाएँगे, ''ऐ हमारे रब! हमें निकाल ले, हम अच्छे अ़मल करेंगे, वैसा नहीं जैसा हम पहले करते रहे, ''क्या हमने तुम्हें इतनी उम्र नहीं दी थी कि जिसमें कोई होश में आना चाहता तो होश में आ जाता? और तुम्हारे पास सचेत करने वाला भी आया था, अब मज़ा चखते रहो, ज़ालिमों का कोई मदद्गार नहीं।
38 बेशक अल्लाह ही आसमानों और ज़मीन की छिपी बातों को जानता है, 'वह' तो सीनों तक की बात जानता है।
39 'वही' तो है जिसने तुम्हें ज़मीन में ख़लीफ़ा (उत्तराधिकारी) बनाया, तो जो कोई इन्कार करेगा, उसका वबाल उसी पर होगा इन्कार करने वालों का इन्कार उनके रब के यहाँ केवल अ़ज़ाब ही को बढ़ाता है, और इन्कार करने वालों का इन्कार करने की वजह से घाटा ही होता चला जाता है।
40 कह दीजिए, ''भला तुम देखो तो अपने साझीदारों को, जिनको तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो, मुझे दिखाओ कि उन्होंने ज़मीन में कौन सी चीज़ पैदा की है या आसमानों में उनका कुछ साझा है?'' या 'हमने' उनको कोई किताब दी है कि उसका कोई स्पष्ट प्रमाण उनके पास हो, (नहीं,) बल्कि ज़ालिम आपस में एक-दूसरे से केवल धोखे का वादा कर रहे हैं।

41 अल्लाह ही आसमानों और ज़मीन को थामे हुए है कि वे टल न जाएँ और
अगर वे टल जाएँ तो उसके बाद कोई भी नहीं जो उन्हें थाम सके, बेशक
(निःसन्देह) वह बहुत ह़लीम (सहनशील), माफ़ करने वाला है।
42 और ये अल्लाह की बड़ी-बड़ी क़समें खाया करते हैं कि अगर उनके पास कोई
सचेत करने वाला आएगा तो यह ज़रूर हर एक उम्मत (गिरोह) से ज़्यादा
अच्छी राह पर होंगे फिर जब सचेत करने वाला आ गया, तो उससे उनकी
नफ़रत और बढ़ गयी।
43 ज़मीन में घमंड करना और बुरी चालें चलना और बुरी चाल का वबाल उसके
चलने, वाले ही पर पड़ता है ये अगले लोगों के रवय्ये (रीति) के सिवा और
किसी चीज़ के इन्तिज़ार में नहीं, तुम अल्लाह के दस्तूर (नियम) में कोई
परिवर्तन न पाओगे और न तुम कभी अल्लाह के नियम को टलते ही पाओगे।
44 क्या वे धरती में चले फिरे नहीं कि देखते कि उन लोगों का क्या अंजाम हुआ
जो उनसे पहले गुज़रे हैं? हालाँकि वे शक्ति में उनसे बढ़ कर थे, अल्लाह
ऐसा नहीं कि आसमानों में कोई चीज़ उसे हरा सके, और न धरती ही में,
वह जानने वाला, क़ुदरत वाला (सामर्थ्यवान) है।
45 और अगर अल्लाह लोगों को उनके हर कामों के बदले में पकड़ने लगे तो
ज़मीन पर किसी जानदार को न छोड़े, मगर वह एक निश्चित समय तक
मोहलत देता है, तो जब उनका निश्चित समय आ जाएगा तो अल्लाह अपने
बन्दों को खूब देख रहा है।

## सूर-ए-यासीन

यह सूरः मक्की है, इस में अ़रबी के 3090 अक्षर,739 शब्द, 83 आयतें और 5 रूकूअ़ हैं।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महा दयालु) है।

1 यासीन,
2 क़सम है क़ुर्आन की जो ह़िक्मत से भरा है।
3 (ऐ मुह़म्मद) बेशक, आप रसूलों में से हैं;
4 सीधी राह पर।
5 (और यह क़ुर्आन ) बड़ी ताक़त वाले, रह़मत वाले का उतारा हुआ है।
6 ताकि आप ऐसे लोगों को सचेत करें, जिनके बाप-दादा को सचेत नहीं किया
गया था, (इस वजह से) वह ग़फलत में पड़े हुए हैं।
7 उनमें से अक्सर लोगों पर यह बात पूरी हो चुकी है कि वे ईमान नहीं लाएँगे।

8 ‘हमने’ उनकी गर्दनों में तौक़ डाल दिये हैं जो उनकी ठोड़ियों से लगे हैं, तो उनके सिर ऊपर को उठे हुए हैं।
9 और ‘हमने’ उनके आगे भी एक दीवार बना दी है और एक दीवार उनके पीछे भी, फिर उन पर पर्दा डाल दिया, तो उन्हें कुछ सुझाई नहीं दे सकता।
10 और उनके लिए बराबर है कि तुम उनको नसीहत करो या न करो, वे ईमान लाने वाले नहीं।
11 आप तो केवल उस व्यक्ति को नसीहत कर सकते हैं जो नसीहत पर चले और बिना देखे रहमान से डरे, तो उसको माफ़ी और अच्छे बदले की ख़ुशख़बरी सुनाओ।
12 बेशक हम मुर्दों को ज़िन्दा करेंगे, और जो कुछ आगे भेज चुके हैं और जो निशानी पीछे छोड़ चुके हैं वह सब हम लिखते जाते हैं, और हर चीज़ को ‘हमने’ एक स्पष्ट किताब (लौहे महफ़ूज़) में दर्ज कर रखी है।
13 और उनसे मिसाल के तौर पर एक बस्ती का हाल बयान कीजिए, जबकि उनके पास पैग़म्बर (दूत) आए;
14 जब ‘हमने’ उनकी ओर दो (पैग़म्बर) भेजे, तो उन्होंने उनको झुठला दिया, तब हमने तीसरे के ज़रिये मदद पहुँचायी, तो उन्होंने कहा, “हम तुम्हारी ओर पैग़म्बर होकर आए हैं।”
15 वे बोले, “तुम तो बस हमारे ही जैसे इन्सान हो, रहमान ने तो कोई भी चीज़ नाज़िल नहीं की है, तुम केवल झूठ बोलते हो।”
16 उन्होंने कहा, “हमारा ‘रब’ जानता है कि हम तुम्हारी ओर (सन्देश लेकर) भेजे गये हैं;
17 और ‘हमारी’ ज़िम्मेदारी तो केवल स्पष्ट रूप से पहुँचा देने की है।”
18 वे बोले, “हम तो तुमको मन्हूस समझते हैं अगर तुम बाज़ न आए तो हम तुम्हें पथराव (संगसार) कर के मार डालेंगे, और तुम्हें ज़रूर हमारी ओर से दुःख देने वाला अज़ाब पहुँचेगा।”
19 उन्होंने कहा, “तुम्हारी मन्हूसियत तो तुम्हारे अपने ही साथ है, क्या इसलिए कि तुम को नसीहत की गयी, बल्कि तुम लोग हद को पार करने वाले हो?”
20 और शहर के दूर के सिरे से एक आदमी दौड़ता हुआ आया, उसने कहा, “ऐ मेरी क़ौम! पैग़म्बरों की पैरवी करो,
21 ऐसे लोगों के कहने पर चलो जो तुमसे बदला नहीं चाहते और सीधी राह पर हैं।”
22 और मुझे क्या हुआ है कि मैं ‘उसकी’ इबादत न करूँ, जिसने मुझे पैदा किया, और ‘उसी‘ की ओर तुम को लौट कर जाना है।
23 क्या मैं ‘उसके’ सिवा किसी दूसरे को मअ़बूद (उपास्य) बनाऊँ? कि अगर अल्लाह मुझे कोई तक्लीफ़ पहुँचाना चाहे तो उनकी सिफ़ारिश मेरे कुछ काम न आए और न मुझको वे छुड़ा ही सकें,

24 तब तो मैं खुली हुई गुमराही में पड़ गया,
25 मैं तो आप के 'रब' पर ईमान ले आया, तो मेरी बात सुनो।"
26 हुक्म हुआ, "दाख़िल हो जन्नत में" उसने कहा, "क्या ही अच्छा होता कि मेरी क़ौम जानती,
27 कि मेरे 'रब' ने मुझे माफ़ कर दिया और मुझको इज़्ज़त वालों में शामिल कर लिया।"
28 और उसके बाद उसकी क़ौम पर 'हमने' आसमान से कोई फ़ौज नहीं उतारी और न 'हम' इस तरह उतारते हैं।
29 वह तो बस एक चिंघाड़ (चीख़) थी तो वे उसी समय बुझ कर रह गये।
30 बन्दों पर अफ़सोस! है कि उनके पास कोई रसूल नहीं आता मगर उसका मज़ाक़ उड़ाते हैं।
31 क्या उन्होंने नहीं देखा कि उनसे पहले कितनी ही नस्लों को 'हमने' तबाह कर दिया अब वह उनकी ओर पलट कर कभी नहीं आएँगी?
32 और जितने भी हैं सब 'हमारे' सामने हाज़िर किये जाएँगे।
33 और इनके लिए मुर्दा ज़मीन एक निशानी है, 'हमने' उसको ज़िन्दा किया और उससे अनाज निकाला फिर ये उसी में से खाते हैं।
34 और 'हमने' उसमें खजूरों और अंगूरों के बाग़ लगाए और उसमें स्रोत जारी किये।
35 ताकि वे उनके फल खाएँ, हालाँकि यह सब कुछ उनके हाथों का बनाया हुआ नहीं है, तो क्या ये शुक्र नहीं करते?
36 'वह' ज़ात पाक (महिमावान) है जिसने सब (चीज़ों) के जोड़े पैदा किये, ज़मीन जो चीज़ें उगाती है उनमें से भी, और खुद उनकी अपनी जाति में से भी, और उन चीज़ों में से भी जिनको वे नहीं जानते।
37 और एक निशानी उनके लिए रात है कि 'हम' उसमें से दिन को खींच लेते हैं, तो उस वक़्त उन पर अन्धेरा छा जाता है।
38 और सूरज अपने एक निश्चित ठिकाने के लिए चला जा रहा है, यह बड़ी ताक़त वाले इल्म वाले का (निश्चय किया हुआ) अन्दाज़ा है।
39 और चाँद के लिए 'हमने' मंज़िलें ठहरा दीं, यहां तक कि फिर वह ऐसा हो जाता है जैसे खजूर की पुरानी टहनी।
40 न तो सूरज ही से हो सकता है कि चाँद को जा पकड़े, और न रात ही दिन से आगे बढ़ सकती है, और सब अपने दायरे (कक्ष) में तैर रहे हैं।
41 और एक निशानी उनके लिए यह है कि 'हमने' उनकी नस्ल को भरी हुई नाव में सवार किया।
42 और उनके लिए उसी के समान वैसी ही चीज़ें पैदा कीं, जिन पर वे सवार होते हैं।
43 और अगर 'हम' चाहें तो उन्हें डुबो दें, फिर न तो कोई उनकी चीख़-पुकार सुनने वाला हो और न उन्हें बचाया जा सके।

44 मगर यह तो बस 'हमारा' रह़म है, और एक निश्चित समय तक के लिए सुख
का सामान है।
45 और जब उनसे कहा जाता है कि उस चीज़ का डर रखो, जो तुम्हारे आगे
है और जो तुम्हारे पीछे है, ताकि तुम पर रह़म किया जाए!
46 और उनके पास उनके 'रब' की आयतों (निशानियों) में से जो आयत (निशानी)
भी आती है, वे उससे कत्रा जाते हैं।
47 और जब उनसे कहा जाता है अल्लाह ने जो कुछ तुम्हें रोज़ी दी है, उसमें से
खर्च करो, तो जिन्होंने इन्कार किया है, वे उन लोगों से जो ईमान लाए, कहते
हैं, ''क्या हम उन लोगों को खाना खिलाएँ जिनको अगर अल्लाह चाहता तो
खुद ही खिला देता, तुम तो बस खुली हुई गुमराही में हो?''
48 और कहते हैं कि ''यह वादा कब तक (पूरा) होगा? अगर तुम सच्चे हो।''
49 यह तो बस एक चीख़ के इन्तिज़ार में हैं, जो उन्हें आ पकड़ेगी, जबकि आपस
में झगड़ रहे होंगे।
50 फिर न तो वसीयत कर पाएँगे और न अपने घर वालों के पास लौट ही सकेंगे।
51 और सूर (नरसिंघा) फूँका जाएगा, तो अपनी क़ब्रों से (निकल कर) अपने
'रब' की ओर दौड़ पड़ेंगे।
52 कहेंगे, ''अफ़सोस उन! पर किसने हमें सोते हुए जगा दिया, यह वही चीज़ है
जिसका रह़मान ने वादा किया था और रसूलों ने सच कहा था।''
53 बस एक ज़ोर की चिंघाड़ होगी, फिर क्या देखेंगे कि सबके सब 'हमारे' सामने
आ हाज़िर होंगे।
54 उस दिन किसी पर कोई ज़ुल्म न होगा और तुम्हें वही बदला मिलेगा, जो तुम
करते थे।
55 जन्नत वाले उस दिन अपने किसी न किसी काम में व्यस्त हो कर आनन्द ले
रहे होंगे।
56 वे और उनकी पत्नियाँ छाए में मसहरियों पर तकिया लगाए बैठे होंगे।
57 उसमें उनके लिए मेवे होंगे, और जो चाहेंगे, (वह उन्हें मिलेगा)
58 उनको सलाम कहलाया जाएगा, बड़े रह़म वाले 'रब' की ओर से।
59 ''और ऐ मुजरिमों! आज तुम अलग हो जाओ।
60 क्या 'मैंने' तुमको ताकीद नहीं की थी, ''ऐ आदम की औलाद! शैतान की
इबादत न करना वह तुम्हारा खुला दुश्मन है।''
61 और यह कि 'मेरी' ही इबादत करना यही सीधा रास्ता है।
62 और उसने तुममें से बड़ी आबादी को गुमराह कर दिया था, तो क्या तुम अक्ल
नहीं रखते थे?''
63 ''यह वही जहन्नम है जिसका तुम से वादा किया जाता रहा है।
64 जो इन्कार तुम किया करते थे, उसके बदले में आज इसमें दाख़िल हो जाओ।''

65 आज 'हम' उनके मुँहों पर मुहर लगा देंगे और जो कुछ ये करते रहे थे, उनके
हाथ हमसे बयान कर देंगे, और उनके पाँव गवाही देंगे,
66 और अगर 'हम' चाहें तो उनकी आँखें मिटा दें फिर वे रास्ते की ओर बढ़ें
तो उन्हें कहां सुझाई देगा?
67 और अगर 'हम'. चाहें तो उनकी जगह उनके रूप बिगाड़ कर रख दें, फिर
न यह आगे बढ़ सकें और न पीछे लौट सकें।
68 और जिसको 'हम' लम्बी उम्र देते हैं, उसको 'हम' उसकी ख़ल्क़त (संरचना)
में उल्टा फेर देते हैं, तो क्या ये अक़्ल से काम नहीं लेते?
69 और 'हमने' इन (रसूल) को शेअ़र (कविता) नहीं सिखाया और न यह उनकी
शान के मुनासिब (अनुकूल) है, यह तो एक याद दिहानी और स्पष्ट क़ुर्आन
है;
70 ताकि 'वह' उस व्यक्ति को ख़बरदार कर दे जो ज़िन्दा हो, और इन्कार करने
वालों पर हुज्जत (सत्यापित) हो जाए।
71 क्या यह लोग ग़ौर नहीं करते कि 'हमने' अपने हाथों की बनाई चीज़ों में से
चौपाए पैदा किये, तो यह उनके मालिक हैं।
72 और उनको, उनके क़ाबू में कर दिया है, तो उनमें से कुछ तो उनकी सवारी
के काम में आते हैं, और कुछ का ये (गोश्त) खाते हैं।
73 और उनके लिए उनमें कितने ही फ़ायदे हैं और पीने की चीज़ें भी फिर क्या
ये शुक्र नहीं करते?
74 और उन्होंने अल्लाह के सिवा कितनों को मअ़बूद बना लिया, कि शायद उनको
मदद पहुँचे;
75 (मगर) वे उनकी मदद नहीं कर सकते, हालाँकि वे उनके लश्कर की हैसियत
से हाज़िर कर दिये जाएँगे।
76 तो उनकी बातें तुम्हारे लिए ग़म का कारण न बनें, 'हम' इनकी उन बातों को
भी जानते हैं जो यह छिपाते हैं और उनको भी जो खुले तौर पर करते हैं।
77 क्या इन्सान ने देखा नहीं कि 'हमने' उसे नुत्फ़े (वीर्य) से पैदा किया? फिर
क्या देखते हैं कि वह खुला हुआ झगड़ालू बन गया;
78 और 'हमारे' लिए मिसालें बयान करता है, और अपनी पैदाइश को भूल जाता
है, कहता है, "हड्डियों को कौन ज़िन्दा कर सकता है, जब कि वह बोसीदा
(चूर-चूर) हो चुकी होंगी?"
79 कह दीजिए, "उनको 'वही' ज़िन्दा करेगा 'जिसने' उनको पहली बार पैदा किया
था, और 'वह' हर एक की पैदाइश को खूब जानता है;
80 (वही है) 'जिसने' तुम्हारे लिए हरे भरे वृक्ष से आग पैदा की, फिर तुम उससे
आग जलाते हो।"
81 क्या 'वह' जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया इस बात की क़ुदरत
(सामर्थ्य) नहीं रखता, कि इन जैसों को पैदा करे? क्यों नहीं, और 'वह' तो
बड़ा पैदा करने वाला, इल्म वाला है?

82 ‘उसकी’ शान यह है कि वह जब किसी चीज़ का इरादा करता है तो उसे हुक्म देता है, कि ‘हो जा’ तो ‘वह’ हो जाती है।
83 तो पाक (महिमावान) है ‘वह’ जिसके हाथ में हर चीज़ का पूरा अधिकार है, और ‘उसी’ की ओर तुम लौट कर जाओगे।

## सूर-ए-साफ़्फ़ात

यह सूरः मक्की है, इस में अ़रबी के 3951 अक्षर, 873 शब्द, 182 आयतें और 5 रूकूअ़ हैं।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महा दयालु) है।

1 क़तार बाँध कर (पंक्ति बद्ध) खड़े होने वाले (फरिश्तों) की क़सम;
2 फिर झिड़क कर डाँटने वालों की;
3 फिर ज़िक्र (क़ुर्आन की) तिलावत करने वालों की;
4 कि तुम्हारा मअ़बूद (उपास्य) एक ही है।
5 जो आसमानों और ज़मीन और इनके बीच की चीज़ों का रब है और सूरज के निकलने की जगहों का भी रब है।
6 बेशक ‘हमने’ ही दुनिया के आसमान को सितारों की ज़ीनत से सजाया,
7 और हर सरकश शैतान से उसकी हिफ़ाज़त की।
8 “वे मल-ए- अ़ाला” (सर्वोच्च दरबार) की ओर कान न लगा सकें और हर ओर से (उन पर अंगारे) फेंके जाते हैं।
9 वे धुत्कारे जाते हैं, और उनके लिए कभी न ख़त्म होने वाला अ़ज़ाब है।
10 मगर, (यह और बात है कि) जो कोई कुछ चोरी से उचक लेना चाहता है (फ़रिश्तों की कोई बात को) तो एक दहकता हुआ शोला उसका पीछा करता है।
11 तो उनसे पूछिए, क्या उनको पैदा करना मुश्किल है या जितनी खल्क़त (सृष्टि) हमने बनाई है उनका? ‘हमने’ उनको लेसदार मिट्टी से पैदा किया है।
12 बल्कि तुम तअ़ज्जुब (आश्चर्य) में हो और यह मज़ाक़ उड़ाते हैं।
13 और जब उनको नसीह़त की जाती है, तो नसीह़त क़ुबूल नहीं करते,
14 और जब कोई निशानी देखते हैं तो उसका मज़ाक़ उड़ाते हैं,
15 और कहते हैं, “यह तो खुला हुआ जादू है।”

16 क्या जब 'हम' मर जाएँगे मिट्टी और हड्डियाँ बन जाएँगे, तो क्या हम फिर उठाए जाएँगे?
17 और क्या हमारे पहले बाप-दादा को भी? (जो गुज़र चुके हैं)
18 कह दीजिए,"हाँ! और तुम ज़लील भी होगे।"
19 तो वह बस एक ही डाँट होगी, तो उस वक़्त ये देखने लगेंगे।
20 और कहेंगे, "हम पर अफ़सोस! यह तो बदले का दिन है।"
21 यह वही फ़ैसले का दिन है जिसे तुम झुठलाया करते थे,
22 इकट्ठा करो, उन लोगों को जो ज़ुल्म करते थे और उनके जोड़ीदारों को भी, और उनको भी जिनकी यह इबादत किया करते थे;
23 अल्लाह को छोड़ कर, फिर इन सबको जहन्नम की राह दिखाओ।
24 और उनको ठहराए रखो कि उनसे (कुछ) पूछना है;
25 "क्या बात है, "कि तुम एक-दूसरे की मदद नहीं करते हो?"
26 बल्कि वे तो आज बड़े फरमांबरदार बन गये हैं।
27 और एक-दूसरे की ओर रूख करते हुए पूछेंगे;
28 कहेंगे, "तुम तो हमारे पास दाएँ (और बाएँ) से आते थे।"
29 वे कहेंगे, "(नहीं,) बल्कि तुम तो खुद ही ईमान लाने वाले न थे।
30 और हमारा तो तुम पर कोई ज़ोर न था, बल्कि तुम सरकश लोग थे।
31 तो हम पर हमारे 'रब' का हुक्म पूरा हो कर रहा, अब हम मज़े चखेंगे।
32 तो 'हमने' तुम को भी बहकाया, (और) हम तो खुद ही बहके हुए थे।
33 इस तरह उस दिन वे सब अ़ज़ाब में एक-दूसरे के साझीदार होंगे।
34 'हम' मुजरिमों के साथ ऐसा ही किया करते हैं।
35 उनका ह़ाल यह था कि जब उनसे कहा जाता कि "अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद (उपास्य) नहीं तो ये घमंड में आ जाते थे।"
36 और कहते थे, "क्या हम एक दीवाने शायर के कहने पर अपने मअ़बूदों को छोड़ दें?"
37 बल्कि वह सत्य लेकर आए हैं और रसूलों की पुष्टि करते हैं।
38 बेशक अब तुमको दुःख देने वाले अ़ज़ाब का मज़ा चखना है।
39 और तुमको उसी का बदला दिया जाएगा जो कुछ तुम करते रहे हो।
40 मगर जो अल्लाह के ख़ास बन्दे हैं।
41 यही लोग हैं जिनके लिए निश्चित रोज़ी है।
42 स्वादिष्ट फल होंगे, और उन्हें सम्मानित किया जाएगा।
43 नेअ़मत के बाग़ों में,
44 तख़्तों पर आमने-सामने (बैठे होंगे;)
45 बहती हुई शराब की जाम उनके बीच गर्दिश करवाई जाएगी;

46 बिल्कुल सफेद पीने वालों के लिए स्वाद ही स्वाद।
47 न उससे सर दर्द होगा, और न उससे मदहोश होंगे।
48 और उनके पास औ़रतें होंगी जो निगाहें नीची रखती होंगी और आँखें बड़ी-बड़ी।
49 मानो वे सुरक्षित अंडे हैं।
50 फिर वे एक-दूसरे की ओर रूख कर के सवाल करेंगे।
51 उनमें से एक कहने वाला कहेगा ''मेरा एक साथी था;
52 (जो) कहा करता था, ''क्या तुम भी तस्दीक़ करने वालों में से हो?
53 क्या जब हम मर गये और मिट्टी और हड्डियाँ हो गये तो क्या हमें वास्तव में बदला दिया जाएगा?
54 वह कहेगा, ''क्या तुम झाँक कर देखना चाहते हो?''
55 फिर वह झाँकेगा तो उसे दोज़ख़ के बीच में देखेगा।
56 कहेगा, ''अल्लाह की क़सम! तुम तो मुझे तबाह ही कर देने वाले थे।
57 और अगर मेरे रब का फ़ज़्ल (अनुग्रह) न होता तो मैं भी उन लोगों में से होता जो हाज़िर किये गये हैं।
58 क्या (यह बात नहीं है कि) अब हम मरने वाले नहीं हैं।
59 अतः पहली मौत थी जो आ चुकी, और अब हमें कोई अ़ज़ाब नहीं दिया जाएगा।
60 बेशक यही बड़ी कमियाबी है।
61 ऐसी ही (नेअ़मतों के लिए) अ़मल करने वालों को अ़मल करना चाहिए।
62 क्या यह मेहमानी अच्छी है या ज़क्कूम (काँटेदार) का वृक्ष?
63 'हमने' उस (वृक्ष) को ज़ालिमों के लिए फ़ित्ना बना रखा है।
64 वह एक वृक्ष है (जो) जहन्नम के निचले हिस्से में ऊगेगा।
65 उसके गाभे ऐसे होंगे मानों शैतानों के सर,
66 तो वे उसी को खाएँगे और उसी से पेट भरेंगे।
67 फिर उनके पीने के लिए खौलता हुआ पानी दिया जाएगा
68 फिर उनको जहन्नम की ओर लौटाया जाएगा।
69 उन्होंने अपने बाप-दादा को गुमराह ही पाया।
70 तो वे उन्हीं के नक़्शे क़दम (पद चिन्हों) पर दौड़े चले जा रहे हैं।
71 और उनसे पहले गुज़रे हुए लोग भी अक्सर गुमराह ही हुए थे,
72 और 'हमने' उनमें सचेत करने वाले भेजे।
73 तो देख लो उनका क्या अंजाम हुआ, जिन्हें सचेत किया गया था।
74 मगर जो अल्लाह के ख़ास बन्दे हैं।
75 और नूह ने 'हमको' पुकारा था, तो हम कैसे अच्छे हैं पुकार को सुनने वाले।
76 और 'हमने' उन्हें और उनके घर वालों को बड़ी घुटन और बेचैनी से छुटकारा दिया।

77 और 'हमने' उनकी नस्ल को ऐसा किया कि वह बाक़ी रह गये।
78 और 'हमने' बाद में आने वाली नस्लों में उनका अच्छा ज़िक्र छोड़ा,
79 "सलाम हो नूह पर तमाम जहान वालों में।"
80 हम अच्छे काम करने वालों को ऐसा ही बदला दिया करते हैं।
81 बेशक वह हमारे ईमान वाले बन्दों में से थे।
82 फिर 'हमने' दूसरों को डुबो दिया।
83 और उन्हीं गिरोह में से इब्राहीम भी थे
84 (याद करो), जबकि वह अपने रब के समक्ष भला-चंगा दिल लेकर आए;
85 जब उन्होंने अपने बाप और अपनी क़ौम के लोगों से कहा, "तुम किस चीज़ की पूजा करते हो?"
86 क्या अल्लाह को छोड़ कर मनगढ़त मअ़बूदों (उपास्यों) को चाह रहे हो?
87 तो तुमने सारे संसार के रब के बारे में क्या गुमान (समझ) कर रखा है?
88 फिर उन्होंने एक नज़र तारों पर डाली,
89 और कहा, "मैं तो बीमार (निढ़ाल) हूँ।"
90 तो वे उनसे पीठ फेर कर लौट गये।
91 फिर (इब्राहीम) चुपके से उनके देवताओं के पास गये और कहा, "तुम खाते क्यों नहीं?"
92 तुम्हें क्या हुआ, तुम बोलते भी नहीं?"
93 फिर उन पर टूट पड़े और दाहिने हाथ से उन पर चोटें लगाईं।
94 तो वे लोग झपटते हुए उसकी ओर आए।
95 उन्होंने कहा, "क्या तुम लोग ऐसों को पूजते हो, जिन्हें खुद ही तराश्ते हो,
96 हालाँकि अल्लाह ने तुम्हें भी पैदा किया है और उन्हें भी, जिन्हें तुम बनाते हो?"
97 वे कहने लगे "इसके लिए एक इमारत (अग्नि कुण्ड) तैयार करो फिर उसे भड़कती हुई आग में डाल दो!"
98 तो उन लोगों ने उनके साथ एक चाल चलनी चाही, किन्तु हमने उन्हीं को नीचा दिखा दिया।
99 और (इब्राहीम ने) कहा, "मैं अपने रब की ओर जाता हूँ, वह मेरी रहनुमाई करेगा।
100 ऐ रब! मुझे (औलाद) अ़ता कर सआ़दतमंदों में (भाग्यशाली) से।"
101 तो 'हमने' उनको एक बड़े ह़लीम (सहनशील) लड़के की खुशख़बरी दी,
102 तो जब वह उसके साथ चलने -फिरने की उम्र को पहुंचा, तो उन्होंने कहा, "ऐ बेटे! मैं, सपने में देखता हूँ कि "मैं तुमको ज़ब्ह़ (बलि) कर रहा हूँ, तो तुम्हारी क्या राय है" उन्होंने कहा, "अब्बा जान! कर गुज़रिए जिसका हुक्म आप को दिया जा रहा है, आप इन्शाअल्लाह मुझे सब्र (धैर्य) करने वाला पाएँगे"

103 फिर जब दोनों ने अपने आप को (रब के सामने) झुका दिया और उन्होंने
उसे (इस्माईल को) कनपटी के बल लिटा दिया।
104 और 'हमने' उनको पुकारा,"ऐ इब्राहीम!
105 आपने सपने को सच कर दिखाया, 'हम' भले लोगों को इसी तरह बदला
दिया करते हैं।"
106 बेशक, यही खुली आज़माइश थी।
107 और 'हमने' फिद्‌या (मुक्तिप्रतिदान) दिया उनको, एक बड़ी क़ुर्बानी देकर।
108 और 'हमने' छोड़ दिया उनका ज़िक्र, पीछे आने वालों में।
109 "सलाम हो इब्राहीम पर।"
110 इसी तरह 'हम' भले काम करने वालों को बदला दिया करते हैं।
111 बेशक, वह हमारे ईमान वाले बन्दों में से थे।
112 और 'हमने' उनको इस्हाक़ की खुशख़बरी भी दी (कि वह) नबी और नेक
लोगों में से (होंगे);
113 और 'हमने' उन पर और इस्हाक़ पर बरकतें नाज़िल की थीं, और उन दोनों
की नस्लों में कुछ मुहसिन (भले) भी हैं, और कुछ अपने आप पर खुला ज़ुल्म
करने वाले भी है।
114 और 'हमने' मूसा और हारून पर फ़ज़्ल (उपकार) किया।
115 और 'हमने' उनको और उनकी क़ौम को बड़ी मुसीबत से निजात दिया,
116 और उनकी मदद की, तो वही ग़ालिब (विजयी) रहे।
117 और 'हमने' उन दोनों को स्पष्ट किताब दी,
118 और 'हमने' उन्हें सीधा रास्ता दिखाया।
119 और 'हमने' बाद में आने वाली नस्लों में उनका (अच्छा) ज़िक्र छोड़ा।
120 सलाम हो मूसा और हारून पर।
121 बेशक हम भले लोगों को ऐसा ही बदला दिया करते हैं,
122 वे दोनों हमारे ईमान वाले बन्दों में से थे।
123 और इल्यास भी रसूलों में से थे।
124 जब उन्होंने अपनी क़ौम से कहा, "क्या तुम डर नहीं रखते?"
125 क्या तुम 'बअ़ल' (देवता) को पुकारते हो, और सबसे बड़े पैदा करने वाले को
छोड़ देते हो?
126 अल्लाह को, जो तुम्हारा रब है, और तुम्हारे बाप-दादा का भी;
127 फिर भी उन्होंने उसे झुठला दिया, तो वे हाज़िर किये जाएँगे।
128 मगर अल्लाह के ख़ास बन्दे (कि अ़ज़ाब में नहीं डाले जाएँगे);
129 और 'हमने' बाद में आने वालों में उनका (अच्छा) ज़िक्र छोड़ दिया।

130 ‘सलाम’ हो इल्यास पर।
131 ‘हम’ भले लोगों को ऐसा ही बदला देते हैं।
132 वे ‘हमारे’ ईमान वाले बंदों में से थे।
133 और लूत भी रसूलों में से थे।
134 जब ‘हमने’ उनको और उनके सभी साथियों को (अ़ज़ाब से) नजात दी।
135 सिवाय एक बुढ़िया के, जो पीछे रह जाने वालों में से थी।
136 फिर बाक़ी सबको ‘हमने’ तहस-नहस करके रख दिया।
137 और तुम उन (की बस्तियों) पर से गुज़रते रहते हो सुबह को भी;
138 और रात को भी, तो क्या तुम अक़्ल से काम नहीं लेते?
139 और यूनुस भी रसूलों में से थे।
140 जब वह भाग कर एक भरी हुई नाव में जा पहुँचे।
141 उस समय उन लोगों ने कुरअ (पर्ची) डाला, तो वह उसमें परास्त हो गये।
142 फिर मछली ने उनको निगल लिया, (इस हाल में कि) और वह अपने आप को ही मलामत कर रहे थे।
143 तो अगर वह तस्बीह़ (गुणगान) करने वालों में से न होते,
144 तो लोगों के उठाए जाने के दिन तक वह उसके पेट में रहते।
145 फिर ‘हमने’ उनको एक चटियल ज़मीन में डाल दिया, इस ह़ाल में कि वह निढ़ाल थे।
146 और ‘हमने’ उन पर एक बेलदार वृक्ष उगाया।
147 और उनको भेजा एक लाख या उस से भी अधिक लोगों की ओर।
148 तो वे ईमान लाए सो ‘हम’ भी उनको एक समय तक फ़ायदे देते रहे।
149 अब उनसे पूछो, ‘‘क्या तुम्हारे रब के लिए तो बेटियां हों और उनके अपने लिए बेटे?
150 या ‘हमने’ फ़रिश्तों को औ़रतें बनाया, और वह (उस वक़्त) मौजूद थे?
151 सुनो, यह अपनी मनगढ़त बातें कहते हैं।
152 कि ‘‘अल्लाह के औलाद है! और निश्चय ही यह बिल्कुल झूठे हैं।
153 क्या उसने बेटों के मुक़ाबिले बेटियों को पसंद किया है।
154 तुम्हें क्या हो गया है? कैसा फ़ैसला करते हो?
155 तो क्या तुम ग़ौर नहीं करते?
156 या तुम्हारे पास कोई स्पष्ट प्रमाण है।
157 तो लाओ अपनी किताब, अगर तुम सच्चे हो?
158 और उन्होंने अल्लाह और जिन्नों के बीच नाता जोड़ रखा है, हालांकि जिन्नों को भली-भाँति मालूम था कि वे ज़रूर हाज़िर किये जाएँगे।
159 अल्लाह पाक (महान) है उन बातों से, जो ये बयान करते हैं।
160 मगर अल्लाह के ख़ास बन्दें (अज़ाब में नहीं डाले जाएँगे)।
161 तो तुम और वे, जिनकी तुम पूजा करते हो।
162 उससे किसी को बहका नहीं सकते,
163 मगर उसको जो जहन्नम में जाने वाला है।

164 और (फ़रिश्ते कहते हैं कि) हममें से हर एक का एक मक़ाम (ठिकाना) निश्चित है।
165 और हम ही सफ़बंदी (पंक्तिबद) करते हैं।
166 और तस्बीह़ (पाकी बयान) करने वाले हैं।
167 और ये लोग कहा करते थे;
168 कि "अगर हमारे पास पहले के लोगों की शिक्षा होती।
169 तो हम अल्लाह के खास बन्दे होते,"
170 मगर उन्होंने उसका इन्कार कर दिया तो वे जल्द ही उनको जान लेंगे।
171 और 'हमारे' अपने बन्दों (के हक़) में जो रसूल बना कर भेजे गये, हमारी बात पहले ही निश्चित हो चुकी है,
172 कि वही मदद किये हुए हैं।
173 और 'हमारी' फ़ौज ही ग़ालिब (विजई) हो कर रहेगी।
174 तो इनकी ओर से अपना ध्यान हटा लीजिए, एक समय तक के लिए।
175 और उन्हें देखते रहिए, वे भी बहुत जल्द देख लेंगे।
176 क्या यह 'हमारे' अ़ज़ाब के लिए जल्दी मचा रहे हैं?
177 तो जब वह उनके आँगन में उतरेगी तो बड़ी ही बुरी सुबह होगी जिन्हें सचेत किया जा चुका है।
178 और उनकी ओर से ध्यान हटा लीजिए एक समय तक के लिए।
179 और देखते रहिए, ये भी बहुत जल्द देख लेंगे।
180 पाक (महान) है तुम्हारा रब्बुल इ़ज़्ज़त (प्रताप का स्वामी) उन बातों से जो कुछ ये बयान करते हैं।
181 और सलाम हो रसूलों पर;
182 और सब तअ़रीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं (जो) सारे संसार का रब है।

## सूर-ए-साद

यह सूरः मक्की है, इस में अ़रबी के 3107 अक्षर, 738 शब्द, 88 आयतें और 5 रूकूअ़ हैं।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महा दयालु) है।

1 साद, क़सम है! क़ुर्आन की जो नसीह़त देने वाला है;
2 मगर जिन्होंने इन्कार किया, वे गर्व और विरोध में पड़े हुए हैं।
3 'हमने' उनसे पहले कितने ही गिरोहों (उम्मतों) को हलाक (विनष्ट) कर डाला, तो वे पुकार उठे! और वह समय बचने का न था।

4 और उन लोगों ने आश्चर्य किया कि उन ही में का एक डराने वाला आया, और काफ़िरों ने कहा, ''यह जादूगर है बड़ा झूठा;
5 क्या उसने इतने मअ़बूदों (उपास्यों) को हटा कर एक ही मअ़बूद बना दिया? यह तो बड़े अचम्भे की चीज़ है!''
6 और उनमें के कितने ही सरदार यह कहकर चल पड़े, ''चलते रहो और अपने उपास्यों पर जमे रहो (यह बात जो मुह़म्मद समझाता है), बेशक इसमें इसका कुछ इरादा है।''
7 यह बात तो 'हमने' पिछले धर्म में सुनी ही नहीं, यह तो बस मनगढ़त है।
8 क्या हममें से चुनकर इसी पर नसीह़त (की किताब) उतरी है? बल्कि ये 'मेरी' नसीह़त के बारे में सन्देह में हैं, बल्कि उन्होंने अभी तक 'मेरे' अ़ज़ाब का मज़ा चखा ही नहीं है।
9 क्या तुम्हारे, 'उस' ज़बर्दस्त और बख़्शने वाले रब की रह़मत (दयालुता) के ख़ज़ाने उनके पास हैं;
10 या आसमानों और ज़मीन में, और जो कुछ उनके बीच है, उन सब पर बादशाही उन्हीं की है? फिर तो चाहिए कि रस्सियों के ज़रिये (आसमानों पर) चढ़ जाएँ!
11 यहाँ हारे हुए लश्करों में से, यह भी एक लश्कर है;
12 इनसे पहले नूह़ की क़ौम, और आ़द, और मेंखों वाले, फ़िरऔ़न, ने भी झुठलाया था;
13 और समूद, और लूत की क़ौम, और ''ऐका'' वाले (बन वाले) भी- यही वे गिरोह हैं-
14 इनमें से हर एक ने रसूलों को झुठलाया, तो 'हमारा' अ़ज़ाब उन पर लागू हो गया;
15 और इन्हें तो बस एक चीख़ का इन्तिज़ार है, जिसके बाद ज़रा-सा भी मौक़ा न मिलेगा।
16 और कहते हैं, ''ऐ हमारे रब! हिसाब के दिन से पहले ही हमारा हिस्सा जल्द हमें दे दे।''
17 (ऐ नबी) यह जो कुछ कहते हैं सब्र से काम लीजिए और ज़ोर व शक्ति वाले दाऊद को याद कीजिए (फिर भी), बेशक वह (अल्लाह की ओर) रूजूअ़ करने वाले थे;
18 'हमने' पहाड़ों को उनके कब्ज़े में कर रखा था कि सुबह-शाम उनके साथ तस्बीह करते थे,
19 और परिन्दे को भी जमा रखते थे, सब उनके फ़रमाँबरदार थे;
20 और 'हमने' उनके राज्य को मज़बूत कर दिया था और उनको ह़िक्मत (तत्वदर्शिता) और फ़ैसला करने की योग्यता दी थी।

21 और क्या तुम्हें उन झगड़ने वालों की ख़बर पहुँची है? जब वे दीवार पर चढ़
कर मेहराब में आ पहुँचे;
22 जब वे दाऊद के पास पहुँचे तो वे उनसे सहम गये, उन्होंने कहा, ''डरिए
नहीं, हम दो विवादी हैं, हम में से एक ने दूसरे पर ज़्यादती की है; तो आप
हमारे बीच ठीक-ठीक फ़ैसला कर दीजिए, और बात को दूर न डालिए, और
हम को सीधी राह बता दीजिए;
23 यह मेरा भाई है, इसके पास निन्नानूवे भेड़ें हैं, और मेरे पास एक ही भेड़
है, अब इसका कहना है कि 'अपनी भेड़ भी मुझे सौंप दे' और बात-चीत में
इसने मुझे दबा लिया।
24 उन्होंने कहा, ''बेशक यह तुम पर ज़ुल्म करता है कि तुम्हारे भेड़ अपनी भेड़ों
से मिलाने के लिए तुम से मांग करता है, और बहुत से साथ मिल कर रहने
वाले एक-दूसरे पर ज़्यादती करते हैं, सिवाय उन (लोगों) के जो ईमान लाए
और भले काम किये, किन्तु ऐसे लोग थोड़े ही होते हैं।'' और दाऊद समझ
गये कि 'हमने' उन्हें इम्तिहान में डाला है, तो उन्होंने अपने रब से माफ़ी मांगी
और झुक कर (सज्दे में) गिर गये और रूजूअ़ हुए;
25 तो 'हमने' उनको माफ़ कर दिया, और बेशक 'हमारे' पास उनकी निकटता
और अच्छा ठिकाना है।
26 ''ऐ दाऊद! 'हमने' ज़मीन में आप को ख़लीफ़ा (उत्तराधिकारी) बनाया है, तो
लोगों के बीच ह़क़ के साथ फ़ैसला किया करिये और अपनी इच्छा पर न चलिए
कि वह आपको अल्लाह की राह से भट्का दे; जो लोग अल्लाह की राह से
भटकते हैं, उन के लिए कड़ी सज़ा है, क्योंकि उन्होंने ह़िसाब के दिन को भुला
दिया?
27 और 'हमने' आसमान और ज़मीन को और जो कुछ उनके बीच है, उनको
बेकार नहीं पैदा किया है, यह उन का गुमान है जिन्होंने इन्कार किया, तो ऐसे
इन्कार करने वालों के लिए आग (जहन्नम) की तबाही है।
28 या हम उन लोगों को जो ईमान लाए और नेक काम किये, क्या हम उनको
उनके समान कर देंगे जो ज़मीन में फ़साद बरपा करते हैं, या हम परहेज़गारों
को फ़ाजिरों (दुराचारियों) जैसा कर देंगे?
29 यह एक बरकत वाली किताब है, जिसे 'हमने' तुम्हारी ओर नाज़िल (अवतरित)
किया है, ताकि लोग इसकी आयतों में सोच-विचार करें, और ताकि अक़्ल
वाले नसीह़त ह़ासिल करें।
30 और 'हमने' दाऊद को सुलेमान प्रदान किया, वह कितने अच्छे बन्दे थे, बहुत
रूजूअ़ रहने वाले थे।
31 जब उनके सामने शाम के वक़्त सधे हुए तेज़ दौड़ने वाले घोड़े ह़ाज़िर किये
गये;
32 तो कहने लगे, ''मैंने अपने 'रब' की याद पर (इन घोड़ों की मुह़ब्बत अर्थात)
माल की मुह़ब्बत अख़्तियार की, यहाँ तक कि (सूरज) पर्दे में छिप गया,

33 (बोले) उनको मेरे पास वापस लाओ! फिर वह उनकी पिंडुलियों और गर्दनों
पर हाथ फेरने लगे।''
34 और 'हमने' सुलेमान को भी इम्तिहान में डाला, और 'हमने' उनके तख़्त पर
एक धड़ डाल दिया, फिर वह रूजूअ़ हुए;
35 कहा, ''ऐ रब! मुझे माफ़ कर दे और मुझे वह राज्य दे, जो मेरे बाद किसी
को मुनासिब (अर्थात उपयुक्त) न हो बेशक, 'तू ही' बड़ा दाता है।''
36 फिर 'हमने' हवा को उनके क़ाबू में कर दिया, जो उसके हुक्म से, धीरे-धीरे
चलती, जिधर का वह इरादा करते;
37 और शैतानों को भी (उसके क़ाबू में कर दिया) हर प्रकार के निर्माता और
गोता खोर को;
38 और दूसरे को भी जो ज़ंजीरों में जकड़े हुए थे;
39 यह 'हमारी' बेहिसाब देन है, अब एहसान करो या रोक लो;
40 और बेशक, उन (सुलेमान) के लिए 'हमारे' यहां मर्तबा और अच्छा ठिकाना
है।
41 और 'हमारे' बन्दे, अय्यूब, को याद करो, जब उन्होंने अपने 'रब' को पुकारा,
''शैतान ने मुझे तक्लीफ़ पहुँचा रखी है।''
42 (हमने कहा) ''अपना पैर ज़मीन पर मारो, यह ठंडा पानी है नहाने के लिए
भी और पीने के लिए भी।''
43 और 'हमने' उनको और उनकी पत्नी, और उनके साथ उतने ही और भी
अता किये, अपनी रहमत के तौर पर और (यह) समझ रखने वालों के लिए
नसीहत थी।
44 ''और ('हमने' अय्यूब से कहा) तिन्कों का एक गुच्छा अपने हाथ में लो और
(अपनी बीवी को) उससे मारो और क़सम न झूठी होने दो।'' बेशक 'हमने'
उनको (अय्यूब को) सब्र करने वाला पाया, बहुत अच्छे बन्दे थे, बेशक वह
रूजूअ़ (इबादत) करने वाले थे।
45 और 'हमारे' बन्दे! इब्राहीम, इस्हाक़ और याक़ूब को याद करो, जो ताक़त वाले
और गहरी निगाह वाले थे।
46 'हमने' उनको एक खास बात के लिए चुना था जो वास्तविक घर (आख़िरत)
की याद थी।
47 और वे 'हमारे' यहां चुने हुए नेक लोगों में से थे।
48 और इस्माईल, और अल्-यसअ़, और ज़ुल्किफ़्ल को भी याद करो, वे सब
भले लोगों में से थे।
49 यह यादगारें हैं, और परहेज़गारों के लिए अच्छा ठिकाना है-
50 हमेशा-हमेश की जन्नतें, जिनके दरवाज़े उनके लिए खुले होंगे।
51 उनमें तकिये लगाए बैठे होंगे, बहुत से मेवे और शराब (पीने की चीज़ें) मंगवा
रहे होंगे;
52 और उनके पास नीची निगाह वाली हमउम्र (औरतें) होंगी-

53 यह है वह चीज़, जिसका तुमसे हिसाब के दिन के लिए वादा किया जा रहा था।
54 यह 'हमारा' रिज़्क़ (रोज़ी) है, जो कभी ख़त्म होने वाला नहीं।
55 यह (बदला) है और सरकशों के लिए बुरा ठिकाना है-
56 जहन्नम- जिसमें वे दाख़िल होंगे, तो वह कितना बुरा ठिकाना है;
57 यह है उनके लिए, तो वे इसका मज़ा चखें, खौलते हुए पानी और पीप का;
58 और इसी तरह की दूसरी चीज़ों का (अ़ज़ाब होगा)।
59 " यह एक फ़ौज है जो तुम्हारे साथ दाख़िल होगी, इनको ख़ुशी न हो ये तो आग में पड़ने वाले हैं।"
60 कहेंगे, " बल्कि तुम ही को ख़ुशी न हो तुम्हीं तो इसे हमारे आगे लाए हो, तो (यह) बुरा ठिकाना है।"
61 वे कहेंगे, " ऐ रब! जिन लोगों ने हमें इस अंजाम तक पहँचाया है, उसको आग (जहन्नम) में दोहरा अ़ज़ाब दे!"
62 और कहेंगे, "क्या बात है कि हम उन व्यक्तियों को नहीं देख रहे हैं जिन्हें हम बुरों में गिनते थे?-"
63 क्या 'हमने' उनका मज़ाक़ बना लिया था, या निगाहें उनसे चूक गई हैं?-
64 बेशक दोज़ख़ियों की यह आपसी तकरार एक सच्ची बात है।
65 कह दीजिए, "मैं तो केवल सचेत करने वाला हूँ, और एक अल्लाह के सिवा कोई उपास्य (मअ़बूद) नहीं 'वही' ज़ोर वाला है;
66 आसमानों और ज़मीन और उनके बीच की सभी चीज़ों का मालिक, बड़ी ज़ोर वाला (प्रभुत्वशाली) और बख़्शने वाला है।"
67 कह दीजिए, "यह एक बहुत बड़ी ख़बर है;
68 जिससे तुम मुँह मोड़ रहे हो,
69 मुझे मल-ए-आ़ला (सर्वोच्च दरबार वालों) की कोई ख़बर न थी, जब वे झगड़ रहे थे;
70 मेरी ओर वह्य (प्रकाशना) केवल इसलिए की जाती है कि मैं खुला सचेत करने वाला हूं।"
71 जब तुम्हारे 'रब' ने फ़रिश्तों से कहा, 'मैं' मिट्टी से एक मनुष्य पैदा करने वाला हूँ;
72 तो जब उसको ठीक-ठीक बना लूं और उसमें 'अपनी' रूह फूंक दूं, तो तुम उसके आगे सज्दे में गिर जाना।"
73 तो सारे फ़रिश्तों ने सज्दः किया,
74 सिवाय, इब्लीस के, उसने घमंड किया और इन्कार करने वालों में से हो गया।
75 फ़रमाया, "ऐ इब्लीस! तुझे किस चीज़ ने इसको सज्दः करने से रोका जिस व्यक्ति को 'मैंने' अपने हाथों से बनाया? क्या तूने घमंड किया, या तू सरकश हो गया?"

76 कहा, "मैं इससे बेहतर हूँ 'तूने' मुझे आग से पैदा किया और इसे मिट्टी से।"
77 फ़रमाया, "यहां से निकल जा, 'तू' मरदूद (तिरस्कृत) है,
78 और तुझ पर 'मेरी' लानत है, बदले के दिन तक।"
79 कहा, "ऐ मरे रब! मुझे उस दिन तक के लिए मोहलत दे, जबकि लोग उठाए जाएँ।"
80 फ़रमाया, "तुझे मोहलत दी जाती है,
81 उस दिन तक के लिए जिसका समय निर्धारित है।"
82 (शैतान ने) कहा, "मुझे तेरे इज़्ज़त की क़सम! मैं उन सब को बहका कर रहूँगा,
83 सिवाय 'तेरे' उन बन्दों के, जिनको 'तू' ने चुन लिया हो।"
84 फ़रमाया, "तो हक़ (सत्य) यह (है) और 'मैं' ह़क़ ही कहता हूं,
85 कि 'मैं' जहन्नम को तुझ से और उन सबसे भर दूंगा, जो उनमें से तेरी पैरवी करेंगे।"
86 (मुह़म्मद) कह दीजिए, "मैं इस पर तुमसे कोई अज्र (मज़दूरी) नहीं माँगता और न मैं बनावट करने वालों में से हूँ।"
87 यह (क़ुर्आन) तो एक नसीह़त है, सारे संसार वालों के लिए।
88 और थोड़े ही समय (मुद्दत) के बाद इसकी ख़बर मालूम हो जाएगी।

## सूर-ए-ज़ुमर

यह सूरः मक्की है, इस में अ़रबी के 4965 अक्षर, 1184 शब्द,73 आयतें और 8 रूकूअ़ हैं।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

1 इस किताब का उतारा जाना अल्लाह की ओर से है जो ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) ह़िक्मत वाला है।
2 यह किताब 'हमने' आप की ओर सच्चाई के साथ उतारी है, अतः आप अल्लाह ही की इबादत कीजिए, दीन को 'उसके' लिए ख़ालिस करते हुए।
3 सुन लो! कि इबादत सारी अल्लाह ही के लिए है, और जिन लोगों ने अल्लाह के सिवा दूसरे हिमायती बना रखे हैं (और कहते हैं), "हम इनकी इबादत (पूजा) केवल इसलिए करते हैं कि हमें अल्लाह से निकट कर दें।" अल्लाह

उनमें फ़ैसला कर देगा जिस में ये मतभेद कर रहे हैं, बेशक अल्लाह उस व्यक्ति को राह नहीं दिखाता जो झूठा और नाशुक्रा हो।

4 अगर अल्लाह किसी को अपना बेटा बनाना चाहता, तो 'वह' अपनी मख़्लूक़ (सृष्टि) में से जिसको चाहता चुन लेता,(लेकिन) 'वह' तो नक़्स व ऐब से पाक (महान और उच्च) है, वह अल्लाह एक है सब पर मज़बूत पकड़ रखने वाला;

5 'उसी ने' आसमानों और ज़मीन को ह़क़ के साथ पैदा किया, 'वह' रात को दिन पर लपेटता है और दिन को रात पर लपेटता है, और 'उसी' ने सूरज और चाँद को काम में लगा रखा है, हर एक निर्धारित समय तक चलते रहेंगे; जान लो! 'वही' बड़ी ताक़त वाला (प्रभुत्वशाली), बख़्शने वाला है।''

6 'उसीने' तुमको एक जान (व्यक्ति) से पैदा किया, फिर उससे उसका जोड़ा बनाया और 'उसीने' तुम्हारे लिए मवेशियों की आठ किस्में (नर और मादा) पैदा कीं; 'वह' तुम्हें तुम्हारी माँओं के पेट में तीन अन्धकारों के बीच पैदा करता (और बनाता) चला जाता है- एक बनावट के बाद दूसरी बनावट में- 'वही' अल्लाह तुम्हारा 'रब' है, 'उसी' का राज्य है, 'उसके' सिवा कोई मअ़बूद (उपास्य) नहीं, फिर तुम कहाँ फिरे जाते हो?

7 अगर तुम इन्कार करोगे तो अल्लाह तुमसे बेपरवाह (निस्पृह) है, और 'वह' अपने बन्दों के लिए इन्कार को पसंद नहीं करता, और अगर तुम शुक्र करोगे, तो 'वह' इसे तुम्हारे लिए पसंद करेगा; और बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा, फिर तुम्हारी वापसी तुम्हारे रब ही की ओर होनी है, वह तुम को बताएगा कि तुम क्या करते थे वह तो दिलों के ह़ाल तक को जानता है?

8 और इन्सान को जब कोई तक्लीफ़ पहुँचती है तो वह अपने 'रब' की ओर रूजूअ़ हो कर 'उसे' पुकारने लगता है, फिर जब 'वह' उसे अपनी नेअ़मत (अनुकम्पा) अता करता है, तो 'वह' उस चीज़ को भूल जाता है जिसके लिए वह पहले पुकार रहा था और अल्लाह के बराबर (समकक्ष) ठहराने लगता है, ताकि (लोगों को) 'उसकी' राह से भटका दे, कह दीजिए, ''अपने इन्कार का थोड़ा मज़ा ले लो! फिर तो तुम आग वालों में से होगे।''

9 (क्या ऊपर वाला व्यक्ति अच्छा है) या वह जो रात की घड़ियों में सज्दः और क़ियाम की हालत में (इबादत में लगा) रहता है, और आख़िरत से डरता और अपने रब की रह़मत का उम्मीदवार है? कह दीजिए, ''क्या जो लोग जानते हैं? और जो नहीं जानते दोनों बराबर हो सकते हैं? नसीह़त (शिक्षा) तो समझ वाले ही ह़ासिल करते हैं।''

10 कह दीजिए ''ऐ 'मेरे' बन्दो! जो ईमान लाए हो अपने रब से डरो, जो लोग इस दुनिया में नेक बन कर रहे उनके लिए भलाई है, और अल्लाह की ज़मीन फैली हुई है, सब्र करने वालों को तो उनका बदला बेहिसाब दिया जाएगा।''

11 कह दीजिए, ''मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं अल्लाह ही की इबादत करूं, दीन को 'उसके' लिए ख़ालिस कर के;

12 और मुझे यह भी हुक्म दिया गया है कि मैं सबसे पहले मुस्लिम (आज्ञाकारी) बनूँ।''

13 कह दीजिए, ''अगर मैं अपने रब की नाफ़रमानी (अवज्ञा) करूँ तो मुझे एक सख़्त दिन के अ़ज़ाब का डर है।''

14 कह दीजिए, ''मैं तो अल्लाह ही की इबादत करता हूँ, दीन (श्रद्धा और दासता) को उसके लिए ख़ालिस कर के।

15 तो तुम 'उसके' सिवा जिसकी चाहो इबादत करो, कह दीजिए, ''वास्तव, में घाटे में पड़ने वाले तो वही लोग हैं जिन्होंने अपने आपको और अपने परिवार वालों को क़ियामत के दिन घाटे में डाल दिया। जान लो! यही खुला घाटा है;

16 उनके लिए उनके ऊपर से भी आग की छतरियां होंगी और उनके नीचे से भी छतरियां होंगी, यह वह चीज़ है जिससे अल्लाह अपने बन्दों को डराता है, ऐ 'मेरे' बन्दो! मेरा तक़्वा (डर) रखो।''

17 और जिन लोगों ने तागूत (शैतान) की इबादत से अपने आप को बचाया और अल्लाह की ओर रूजूअ़ (आकर्षित) हुआ उनके लिए ख़ुशख़बरी है, तो 'मेरे' बन्दों को ख़ुशख़बरी दे दीजिए;

18 जो बात को ध्यान से सुनते हैं, फिर अच्छी-अच्छी बातों पर चलते हैं,- यही वे लोग हैं- जिनको अल्लाह ने हिदायत दी है, और यही बुद्धिमान हैं।

19 भला जिस व्यक्ति पर अ़ज़ाब का हुक्म हो चुका हो! तो क्या तुम उसे बचा सकते हो जो दोज़ख में जाने वाला हो?

20 लेकिन जो लोग अपने रब से डरते हैं, उनके लिए (महल) मंज़िल पर मंज़िल बनी हुई हैं, उनके नीचे नहरें बह रही हैं, यह अल्लाह का वादा है, अल्लाह अपने वादे के ख़िलाफ़ नहीं करता है।

21 क्या तुम नहीं देखते, अल्लाह आसमान से पानी उतारता है ,फिर उसको ज़मीन के अन्दर स्रोतों के रूप में जारी कर देता है, फिर उससे खेतियां पैदा करता है- जिसके तरह-तरह के रंगे होते हैं- फिर वह सूख जाती है, और तुम देखते हो कि पीली पड़ गई हैं; फिर वह उनको चूर्ण विचूर्ण (चूर-चूर) कर देता है? बेशक, इसमें नसीह़त है बुद्धि रखने वालों के लिए।

22 क्या वह व्यक्ति जिसका सीना अल्लाह ने इस्लाम के लिए खोल दिया हो, फिर वह अपने रब की ओर से रोशनी पर हो? तो तबाही है उनके लिए जिनके दिल अल्लाह के ज़िक्र (याद) से सख़्त हो रहे हैं, यही लोग खुली गुमराही में हैं।

23 अल्लाह ने बेहतरीन कलाम (ईशवाणी) नाज़िल किया, एक ऐसी किताब जिसकी आयतें एक-दूसरे से मिलती-जुलती हैं, और (इस लायक हैं कि) बार-बार दोहराई जाएँ, इससे उन लोगों के रोंगटे खड़े हो जाते हैं, जो लोग अपने रब से डरते हैं, फिर उनके शरीर और उनके दिल नर्म (होकर) अल्लाह के याद की ओर झुक जाते हैं, यही अल्लाह की हिदायत (मार्गदर्शन) है, 'वह' इससे

जिसको चाहता है राह दिखाता है, और जिसे अल्लाह गुमराह करे (अर्थात
पथभ्रष्ट रहने दे) उसको कोई हिदायत देने वाला नहीं।
24 क्या वह व्यक्ति जो क़ियामत के दिन बुरे अ़ज़ाब से बचने के लिए अपने चेहरे
को ढाल बनाएगा (और वह जो अ़ज़ाब से बचा हुआ होगा दोनों बराबर हो
सकते हैं) और ज़ालिमों से कहा जाएगा, "चखो! मज़ा उस कमाई का, जो तुम
करते रहे हो।"
25 जो लोग इनसे पहले थे उन्होंने भी झुठलाया था, तो उन पर वहां से अ़ज़ाब
आ पहुँचा, जहां से उनको गुमान भी न था।
26 फिर अल्लाह ने उन्हें दुनिया की ज़िन्दगी में भी रूस्वाई का मज़ा चखाया और
आख़िरत का अ़ज़ाब तो इससे भी बड़ा है, काश! ये जानते।
27 और 'हमने' इस क़ुर्आन में लोगों के लिए हर तरह की मिसालें बयान कर दी
हैं, ताकि वे नसीह़त ह़ासिल करें;
28 एक अ़रबी क़ुर्आन के रूप में, जिसमें कोई टेढ़ नहीं, ताकि वे परहेज़गारी
अपनाएँ।
29 अल्लाह एक मिसाल पेश करता है कि 'एक व्यक्ति है, जिसमें कई शरीक हैं
आपस में खींचातानी करने वाले हैं; और एक व्यक्ति वह है, जो पूरा का पूरा
एक ही व्यक्ति का है, क्या, दोनों का ह़ाल एक जैसा होगा? सारी तअ़रीफ़
(प्रशंसा) अल्लाह ही के लिए है, मगर अक्सर लोग नहीं जानते।
30 (ऐ नबी) तुम्हें भी मरना है और इन्हें भी मरना है,
31 फिर तुम सब क़ियामत के दिन अपने रब के सामने झगड़ोगे।
32 फिर उससे बढ़कर ज़ालिम कौन होगा, जिसने अल्लाह पर झूठ बाँधा और
सच्चाई जब उसके पास आई तो उसे झुठला दिया, क्या ऐसे काफ़िरों का
ठिकाना जहन्नम में नहीं है!?
33 और जो व्यक्ति सच्चाई लेकर आया और जिसने उसको सच माना, ऐसे ही
लोग मुत्तक़ी (परहेज़गार) हैं;
34 उनके लिए उनके रब के पास वह सब कुछ होगा, जो वे चाहेंगे, भलाई करने
वालों का यही बदला है;
35 ताकि अल्लाह उनके बुरे काम जो उन्होंने किये उनसे दूर कर दे, और उन
के भले कामों के बदले में जो उन्होंने किये, उनका बदला दे।
36 क्या अल्लाह अपने बन्दों के लिए काफ़ी नहीं! और यह लोग तुमको अल्लाह
के सिवा दूसरे मअ़बूदों से डराते हैं? और अल्लाह जिसे गुमराही में डाल दे
तो उसको कोई राह दिखाने वाला नहीं;
37 और जिसे अल्लाह राह दिखाए उसे कोई गुमराह करने वाला नहीं, क्या अल्लाह
ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) बदला लेने वाला नहीं है?
38 और अगर आप उनसे पूछें, "आसमानों और ज़मीन को किसने पैदा किया?"
तो वे ज़रूर कहेंगे, "अल्लाह ने।" कहिए "तुम्हारा क्या विचार है? अगर
अल्लाह मुझे कोई तक्लीफ़ पहुँचानी चाहे तो अल्लाह से हटकर जिनको तुम
पुकारते हो, वे 'उसकी' पहुँचाई हुई तक्लीफ़ को दूर कर सकते हैं? या 'वह'

मुझ पर कोई मेहरबानी करना चाहे तो क्या ये 'उसकी' रह़मत को रोक सकते हैं?'' कहिए, ''मेरे लिए अल्लाह ही काफ़ी है, भरोसा करने वाले 'उसी' पर भरोसा करते हैं।''

39 कहिए, ''ऐ मेरी क़ौम! तुम अपनी जगह काम करो, मैं (अपनी जगह) काम करता रहूँगा, तो बहुत जल्द तुम्हें मालूम हो जाएगा;

40 कि किस पर अ़ज़ाब आता है जो उसे रूस्वा कर देगा और किस पर हमेशा का अ़ज़ाब नाज़िल होता है।''

41 'हमने' यह किताब ह़क़ के साथ लोगों के लिए तुम पर उतार दी है, तो जो व्यक्ति हिदायत हासिल करेगा वह अपने ही लिए करेगा, और जो गुमराह होगा तो उसकी गुमराही का वबाल उसी पर पड़ेगा, आप उनके ज़िम्मेदार नहीं हैं।

42 अल्लाह ही रूहों (प्राणों) को क़ब्ज़ करता है- लोगों की मौत के समय-और उन को भी जिनको मौत नहीं आई- नींद की हालत में- फिर जिनकी मौत का फ़ैसला 'वह' कर चुका होता है उनको रोक लेता है, और दूसरी रूहों (प्राणों) को एक निर्धारित समय के लिए वापस भेज देता है, इसमें निशनियां हैं उन लोगों के लिए जो सोच-विचार करते हैं।

43 क्या उन्होंने अल्लाह को छोड़ कर दूसरों को सिफ़ारिशी बना रखा है? कह दीजिए, ''चाहे वे किसी चीज़ का भी अख़्तियार न रखते हों और न समझते ही हों?''

44 कह दीजिए, ''सिफ़ारिश (शफ़ाअ़त) तो सारी की सारी अल्लाह ही के अख़्तियार में है, आसमानों और ज़मीन की बादशाही 'उसी' की है, फिर 'उसी' की ओर तुम लौटाए जाओगे।''

45 और जब केवल एक अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है तो जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, उनके दिल कुढ़ने लगते हैं, और जब इसके सिवा दूसरों का ज़िक्र होता है तो वे खुश हो जाते हैं।

46 कह दीजिए,''ऐ अल्लाह! आसमानों और ज़मीन के पैदा करने वाले, ग़ैब (परोक्ष) और हाज़िर (प्रत्यक्ष) के जानने वाले, 'तू' ही अपने बन्दों के बीच उन बातों का फ़ैसला करेगा, जिनके बारे में वे मतभेद कर रहे हैं।''

47 और अगर ज़ालिमों के पास वह सब कुछ हो, जो ज़मीन में है और उसी के बराबर और भी हो, तो यह क़ियामत के दिन बुरे अ़ज़ाब से बचने के लिए सब कुछ फ़िद्या (मुक्ति प्रतिदान) में देने के लिए तैयार हो जाएंगे, और अल्लाह की ओर से उनके साथ वह मामला होगा जिसका उनको गुमान भी न था।

48 और जो कुछ उन्होंने कमाया उस की बुराई उन पर ज़ाहिर हो जाएगी, और वह चीज़ उन्हें घेर लेगी जिसकी वे हंसी उड़ाया करते थे।

49 जब इन्सान को कोई तक्लीफ़ पहुँचती है तो वह 'हमें' पुकारने लगता है, फिर जब 'हम' उसे अपनी ओर से कोई नेअ़मत देते हैं तो कहता है, ''यह तो मुझे अपने इल्म की वजह से मिली है।'' (नहीं) बल्कि वह एक आज़माइश है, मगर उनमें अक्सर लोग नहीं जानते।

50 यही बात वे लोग भी कह चुके हैं, जो इनसे पहले थे, मगर जो कुछ वे किया
करते थे, वह उनके कुछ काम न आया।
51 फिर जो कुछ उन्होंने कमाया उसकी बुराइयां उन पर आ पड़ीं, और उनमें से
जिन लोगों ने ज़ुल्म किया उन पर भी जो कुछ उन्होंने कमाया उसकी बुराइयां
जल्द ही आ पड़ेंगी, और वे क़ाबू से बाहर निकलने वाले नहीं।
52 क्या उनको मालूम नहीं कि अल्लाह जिसके लिए चाहता है रोज़ी कुशादा
(ज़्यादती) कर देता है और (जिसके लिए चाहता है) नपी-तुली कर देता है?
उनके लिए बड़ी निशानियां हैं जो ईमान लाते हैं।
53 (ऐ नबी) कह दीजिए, "ऐ मेरे बन्दो! जिन्होंने अपने आप पर ज़्यादती की,
अल्लाह की रह़मत से मायूस (निराश) न हों, अल्लाह सभी गुनाहों को माफ़
कर देता है, 'वह' बड़ा बख़्शने वाला, मेहरबान है।"
54 और रूजूअ़ हो अपने रब की ओर, और 'उसी' के फ़रमाँबरदार (आज्ञाकारी)
बन जाओ, इससे पहले कि तुम पर अ़ज़ाब आ जाए, फिर तुम्हारी मदद न
की जाएगी।
55 और तुम्हारे रब की ओर से जो बेहतरीन चीज़ (किताब) तुम्हारी ओर नाज़िल
हुई है, उसकी पैरवी करो, इससे पहले कि तुम पर अचानक अ़ज़ाब आ जाए
और तुमको ख़बर भी न हो।
56 कहीं ऐसा न हो कि कोई नफ़्स (व्यक्ति) कहने लगे, "अफ़सोस मेरी उस
कोताही पर! जो मैंने अल्लाह के मामले में की, और मैं तो मज़ाक़ उड़ाने वालों
में से ही रहा;
57 या कहने लगे अगर अल्लाह ने मुझे हिदायत दी होती तो मैं भी परहेज़गारों
में से होता।"
58 या यह जब अ़ज़ाब देखे तो कहने लगे, "काश! मुझे एक बार फिर (दुनिया
में) लौट कर जाना हो, तो मैं भले लोगों में से बन जाऊँ।"
59 "क्यों नहीं, मेरी आयतें 'तेरे' पास पहुँच गयी थीं, लेकिन तूने उनको झुठलाया
और घमंड किया और इन्कार करने वालों में से हो गया;
60 और क़ियामत के दिन तुम उनको देखोगे जिन्होंने अल्लाह पर झूठ गढ़ कर
थोपा, कि उनके चेहरे स्याह होंगे, क्या घमंड करने वालों का ठिकाना जहन्नम
में नहीं है?"
61 और अल्लाह उन लोगों को नजात (मुक्ति) देगा, जो मुत्तक़ी (परहेज़गार) बने
रहे, उनके कामियाबी की वजह से न कोई उनको तक्लीफ़ पहुँचेगी, और न
वे ग़मगीन (शोकाकुल) होंगे।
62 अल्लाह ही हर चीज़ का पैदा करने वाला है और 'वही' हर चीज़ का निगेहबान
(संरक्षक) है;
63 'उसी' के पास आसमानों और ज़मीन की कुंजियां हैं; और जिन्होंने अल्लाह
की आयतों का इन्कार किया, वही घाटे में रहने वाले हैं।
64 कह दीजिए, "क्या तुम मुझे अल्लाह के सिवा किसी और की इबादत करने
का हुक्म देते हो, ऐ जाहिलो (ऐ अज्ञानियों)?"

65 और आप की ओर जो आप से पहले गुज़र चुके हैं उनकी ओर भी वह्य की
जा चुकी है, ''अगर तुमने शिर्क किया तो तुम्हारा किया धरा सब अकारथ हो
जाएगा और तुम घाटे में पड़ने वालों में से हो जाओगे।''
66 (नहीं,) बल्कि अल्लाह ही की इबादत करो और शुक्रगुज़ारों में से हो जाओ।
67 और उन्होंने अल्लाह की जैसी क़द्र करनी चाहिए थी वैसी नहीं की और
क़ियामत के दिन सारी ज़मीन उसकी मुट्ठी में होगी, और आसमान लिपटे
हुए 'उसके' दाहिने हाथ में होंगे, और 'वह' पाक और बहुत बुलन्द है उससे,
जो यह साझी ठहराते हैं।
68 और जब सूर (नरसिंघा) फूँका जाएगा, तो जो लोग भी आसमानों और ज़मीन
में हैं सब बेहोश हो कर गिर पड़ेंगे, सिवाय उसके जिसको अल्लाह चाहे; फिर
दूसरी बार सूर फूँका जाएगा, तो यकायक लोग उठ खड़े हो कर देखने लगेंगे।
69 और धरती अपने रब के नूर (प्रकाश) से जगमगा उठेगी, और किताब
(कर्मपत्र) रख दी जाएगी, और नबियों, और गवाहों को लाया जाएगा, और
उनमें हक़ के साथ फ़ैसला कर दिया जाएगा, और उन पर कोई ज़ुल्म न होगा;
70 और हर व्यक्ति को उसके किये हुए काम का पूरा-पूरा बदला दिया जाएगा,
और 'वह' खूब जानता है, जो कुछ ये करते रहे हैं।
71 और जिन लोगों ने इन्कार किया वे गिरोह के गिरोह जहन्नम की ओर ले जाए
जाएँगे, यहां तक कि जब वे वहाँ पहुँचेंगे तो उसके दरवाज़े खोल दिये जाएँगे
और उसके निगराँ (प्रहरी) उनसे कहेंगे, ''क्या तुम्हारे पास तुम्हीं में से रसूल
नहीं आए थे जो तुम्हें तुम्हारे रब की आयतें सुनाते और तुम्हें तुम्हारे इस
दिन की मुलाकात से सचेत करते रहे हों?'' कहेंगे, ''क्यों नहीं (वे तो आए
थे), किन्तु इन्कार करने वालों पर अ़ज़ाब का हुक्म पूरा हो कर रहा।''
72 कहा जाएगा,''जहन्नम के दरवाज़ों में दाख़िल (प्रवेश) हो, उसमें हमेशा रहोगे,
तो क्या ही बुरा ठिकाना है घमंड करने वालों का!''
73 और जो लोग अपने रब से डरते हैं वे गिरोह के गिरोह जन्नत की ओर ले
जाए जाएँगे, यहां तक कि जब वे वहाँ पहुँचेंगे (इस हाल में) कि उसके दरवाज़े
खुले होंगे, और उसके निगराँ (प्रहरी) उनसे कहेंगे, ''सलाम हो तुम पर! बहुत
अच्छे रहे, अब इसमें दाख़िल हो हमेशा रहने के लिए।''
74 और वे कहेंगे, ''तमाम तअ़रीफ़ अल्लाह के लिए हैं, 'जिसने' हमारे साथ
अपना वादा सच कर दिखाया, और हमें उस ज़मीन (जन्नत) का वारिस
बनाया कि हम जन्नत में जहाँ चाहें वहाँ रहें बसें।'' तो क्या ही अच्छा बदला
(इनआ़म) है अ़मल करने वालों का।
75 और तुम देखोगे कि फ़रिश्ते अ़र्श (सिहांसन) के चारों ओर घेरा बनाए हुए,
अपने रब की तस्बीह़ (गुणगान) कर रहे हैं, और उनमें हक़ के साथ फ़ैसला
कर दिया जाएगा कि (और) कहा जाएगा, ''हर तरह़ की तअ़रीफ़ (स्तुति) सारे
संसार के रब, अल्लाह, ही के लिए है।''

यह सूरः मक्की है, इस में अ़रबी के 5213 अक्षर, 1242 शब्द, 85 आयतें और 9 रूकूअ़ हैं।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु महादयालु) है।

1 ह़ामीम्,

2 इस किताब का उतारा जाना अल्लाह की ओर से है, जो बड़ा ताक़त वाला (प्रभुत्वशाली) इल्म वाला है;

3 जो गुनाह माफ़ करने वाला, तौबः क़ुबूल करने वाला, सख़्त सज़ा देने वाला और बड़े फ़ज़्ल (अनुग्रह) वाला है, 'उसके' सिवा कोई मअ़बूद (उपास्य) नहीं 'उसी' की ओर लौट कर जाना है।

4 अल्लाह की आयतों के बारे में केवल वही लोग झगड़ते हैं जो काफ़िर हैं, तो शहरों में उन लोगों का चलना-फिरना तुम्हें धोखे में न डाल दे।

5 उनसे पहले नूह़ की क़ौम झुठला चुकी है, और उनके बाद दूसरे गिरोहों ने भी, (झुठलाया) और हर उम्मत (गिरोह) ने अपने रसूलों के बारे में इरादा किया कि उसको पकड़ लें, और वे बातिल (असत्य) का सहारा लेकर झगड़ते रहे, ताकि उसके ज़रिये ह़क़ (सत्य) को उखाड़ दें, तो 'मैंने' उनको पकड़ लिया, सो कैसी रही मेरी सज़ा!

6 और इसी तरह आप के 'रब' की बात साबित हो चुकी है, जिन्होंने इन्कार किया, वे दोज़ख़ी हैं।

7 जो अर्श (सिंहासन) को उठाए हुए हैं और जो उसके चारों ओर अपने रब की तअ़रीफ़ के साथ तस्बीह़ (स्तुति) करते हैं, और 'उस' पर ईमान रखते हैं, और उन लोगों के लिए वे क्षमा याचना करते रहते हैं जो ईमान लाए, "ऐ 'हमारे' रब! तेरी रह़मत और तेरा इल्म हर चीज़ को अहाता (व्याप्त) किये हुए है, 'तू'! उन लोगों को माफ़ कर दे जिन्होंने तौबः की, 'तेरे' रास्ते पर चले, और उन्हें दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचाले;

8 ऐ हमारे रब! उन्हें हमेशा रहने की जन्नत में दाख़िल कर, जिनका 'तूने' उनसे वादा किया है, और उनके बाप-दादा, और उनकी पत्नियों, और उनकी औलाद में से, उनको भी, (जो योग्य हों) बेशक 'तू' बड़ी ताक़त वाला (प्रभुत्वशाली) ह़िक्मत वाला है;

9 और उन्हें बुरे अंजाम से बचा! और जिसको 'तूने' उस दिन बुरे अंजाम से बचा लिया, तो बेशक उन पर 'तूने' रह़म किया और यही बड़ी कामियाबी है।"

10 जिन लोगों ने इन्कार किया, उनको पुकार कर कहा जाएगा, अपने आप से जो

तुम बेज़ार (लानत-मलामत करते) हो उससे कहीं ज़्यादा बेज़ार तुम से अल्लाह
था, जब तुम्हें ईमान की ओर बुलाया जाता था, तो तुम इन्कार करते थे।"
11 वे कहेंगे, "ऐ हमारे रब! 'आप' ने हमें दो बार मौत दी, और दो बार ज़िन्दगी
दी, अब हमने अपने गुनाहों को स्वीकार किया, तो क्या निकलने का भी कोई
रास्ता है,
12 तुम इस अंजाम को इसलिए पहुंचे कि जब एक अल्लाह की ओर बुलाया जाता
था तो तुम इन्कार करते थे और अगर उसका साझी ठहराया जाता, तो मान
लेते थे, तो अब फ़ैसला तो अल्लाह ही के हाथ में है, जो बुलन्द (सर्वोच्च) व
महान है।
13 'वही' तो है जो तुम को अपनी निशानियाँ दिखाता है और तुम्हारे लिए
आसमान से रोज़ी उतारता है; और नसीहत तो वही हासिल करता है जो
अल्लाह की ओर रूजूअ़ करने वाला है।
14 तो अल्लाह ही को पुकारो, दीन को उसके लिए ख़ालिस करके, चाहे काफ़िरों
को कितना ही नागवार (अप्रिय) हो।
15 'वह' ऊँचे दर्जों वाला अर्श (सिंहासन) का मालिक है, अपने बन्दों में से जिस
पर चाहता है अपने हुक्म से रूह़ (वह्य) नाज़िल करता है, ताकि वह पेशी
के दिन से डराए।
16 जिस दिन वे निकल पड़ेंगे, उनकी कोई चीज़ अल्लाह से छिपी न रहेगी, "आज
किस की हुकूमत है? अल्लाह की, 'जो' अकेला सब पर क़ाबू रखने वाला है।"
17 आज हर व्यक्ति को उसकी कमाई का बदला दिया जाएगा, आज कोई ज़ुल्म
न होगा, बेशक अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है।
18 और उन लोगों को जल्द ही आने वाली मुसीबत के दिन से डराइए, कि जब
कलेजे मुँह को आ लगेंगे (और वे ग़म से घुट रहे होंगे) ज़ालिमों का न कोई
दोस्त होगा और न सिफ़ारिशी जिसकी बात मानी जाए।
19 'वह' निगाहों की ख़ियानत को भी जानता है, और जो सीनों में छिपा है।
20 और अल्लाह ठीक-ठीक फ़ैसला कर देगा, और जिनको ये अल्लाह को छोड़कर
पुकारते हैं, वे किसी चीज़ का हुक्म नहीं दे सकते, बेशक अल्लाह सुनने वाला,
देखने वाला है।
21 क्या उन्होंने धरती में चला-फिरा नहीं कि देखते, कि उन लोगों का क्या अंजाम
हुआ, जो लोग उनसे पहले गुज़र चुके हैं? वे शक्ति और धरती में अपने
चिन्हों की वजह से उनसे कहीं बढ़ चढ़कर थे, फिर उनके गुनाहों की वजह
से अल्लाह ने उन्हें पकड़ लिया, और अल्लाह से उन्हें बचाने वाला कोई न
हुआ।
22 यह तो अंजाम इसलिए सामने आया कि उनके पास उनके रसूल स्पष्ट प्रमाण
लेकर आते थे, तो ये इन्कार करते रहे, तो अल्लाह ने उनको पकड़ लिया,
बेशक 'वह' बड़ी ताक़त वाला, सख़्त सज़ा देने वाला है।
23 और 'हमने' मूसा को अपनी निशानियाँ और खुली दलीलें देकर भेजा;

24 फ़िरऔ़न, और हामान, और क़ारून की ओर, तो उन्होंने कहा, ''यह तो
जादूगर है बड़ा झूठा।''
25 फिर जब (मूसा) 'हमारी' ओर से ह़क़ लेकर उनके पास गये तो कहने लगे,
''जो लोग उनके साथ (अल्लाह पर) ईमान लाए हैं, उनके बेटों को क़त्ल कर
डालो और औ़रतों को ज़िन्दा रखो, और काफ़िरों की तद्बीरें तो अकारथ ही
होती हैं।''
26 और फ़िरऔन ने कहा, ''मुझे छोड़ो, मैं मूसा को मार डालूँ और उसे चाहिए
कि वह अपने रब को पुकारे, मुझे डर है कहीं ऐसा न हो कि वह तुम्हारे ध
र्म को बदल डाले या यह कि वह देश में बिगाड़ पैदा करे।''
27 और मूसा ने कहा, ''मैंने हर घमंडी के मुक़ाबले में, जो हिसाब के दिन पर
ईमान नहीं रखता, अपने और तुम्हारे (रब) की पनाह (शरण) ले चुका हूँ।''
28 और फिरऔ़न के लोगों में से एक ईमान वाले व्यक्ति ने, जो अपने ईमान को
छिपाए हुए था कहा, ''क्या तुम ऐसे व्यक्ति को, इसलिए मार डालोगे कि वह
कहता है, 'मेरा रब अल्लाह है, और वह तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर
से खुले प्रमाण भी लेकर आया है?' और अगर वह झूठा है तो उसके झूठ
का वबाल उसी पर पड़ेगा, और अगर वह सच्चा है, तो जिस चीज़ की वह
तुम्हें धमकी दे रहा है, उसमें से कुछ न कुछ तो तुम पर पड़कर रहेगा, बेशक
अल्लाह उसको राह नहीं दिखाता जो हद से गुज़रने वाला झूठा हो।
29 ऐ क़ौम! आज तुम्हारी ही बादशाही है और तुम ही धरती में ग़ालिब (प्रभावी)
हो, अगर अल्लाह की सज़ा हम पर आए तो कौन हमारी मदद करेगा?
फ़िरऔ़न ने कहा, ''मैं तुम को वही बात समझाता हूँ जो मैं समझता हूँ और
वही राह बताता हूँ, जिसमें भलाई है।''
30 और जो ईमान ला चुका था वह कहने लगा ''ऐ मेरी क़ौम! मुझे डर है कि
तुम पर ऐसा दिन आ पड़े, जैसा कि पिछले गिरोहों पर आ पड़ा था;
31 जैसे नूह की क़ौम, और आ़द, और समूद और उनके बाद के लोगों का हाल
हुआ, अल्लाह तो अपने बन्दों पर नहीं चाहता कि कोई ज़ुल्म करे।''
32 और ऐ मेरी क़ौम ! मुझे तुम्हारे बारे में चीख़-पुकार के दिन का डर है;
33 जिस दिन तुम पीठ फेर कर भागोगे, तुम को अल्लाह से बचाने वाला कोई
न होगा, और जिस व्यक्ति को अल्लाह ही भटका दे, उसे कोई राह दिखाने
वाला नहीं।
34 और पहले तुम्हारे पास यूसुफ भी खुले प्रमाण लेकर आ चुके हैं तो जो कुछ
वे लेकर तुम्हारे पास आए थे उसके बारे में तुम बराबर सन्देह में पड़े रहे,
यहाँ तक कि जब उनकी मौत हो गई तो तुम कहने लगे, ''अल्लाह उनके बाद
हरगिज़ कोई रसूल न भेजेगा।'' इस तरह अल्लाह उसको गुमराही में डाल
देता है जो हद से गुज़रने वाला और शक में पड़ने वाला हो
35 जो लोग बिना इसके कि उनके पास कोई दलील आयी है, अल्लाह की आयतों
में झगड़ते हैं यह बात अल्लाह और ईमान वालों के नज़दीक सख़्त नापसंद
है, इसी तरह अल्लाह हर घमंडी सरकशों के दिलों पर मोहर लगा देता है।

36 और फ़िरऔन ने कहा, "ऐ हामान! मेरे लिए एक महल बनवा, ताकि मैं उस
पर चढ़ कर रास्तों तक पहुँच जाऊँ;
37 आसमानों के रास्ते पर फिर मूसा के रब को झांक कर देख लूँ, और मैं
तो समझता हूँ कि यह बिल्कुल झूठा है, और इस तरह फ़िरऔन के बुरे
काम उसको भले करके दिखाए गये, और उसे राह से रोक दिया गया, और
फ़िरऔन की चाल तो बेकार हो गई;"
38 और कहा उस व्यक्ति ने जो ईमान लाया था, "ऐ मेरी क़ौम के लोगो मेरी
बात मानो, मैं तुम्हें भलाई का रास्ता बता रहा हूं।"
39 ऐ मेरी क़ौम! यह दुनिया की ज़िन्दगी तो बस थोड़े फायदे की चीज़ है, और
जो आख़िरत का घर है वही हमेशा रहने का घर है;
40 जो बुरे काम करेगा उसको वैसा ही बदला मिलेगा, और जो भलाई के काम
करेगा- मर्द हो या औरत, और वह ईमान वाला भी हो- तो ऐसे लोग जन्नत
में दाख़िल होंगे, वहाँ उनको बेहिसाब रोज़ी दी जाएगी।
41 और ऐ मेरी क़ौम! यह मेरे साथ क्या मामला है, कि मैं तो तुम को नजात
की ओर बुलाता हूं, और तुम मुझे आग की ओर बुलाते हो,
42 तुम मुझे इसलिए बुलाते हो कि मैं अल्लाह के साथ कुफ्र (इन्कार) करूँ और
उस चीज़ को उसका साझीदार ठहराऊँ जिनको मैं नहीं जानता, और मैं तुम्हें
उस ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) बख़्शने वाले की ओर बुला रहा हूँ;
43 सच तो यह है कि जिस चीज़ की ओर तुम मुझे बुलाते हो वह न दुनिया में
पुकारे जाने के क़ाबिल है, और न आख़िरत में, और हमें लौटना भी अल्लाह
ही की ओर है, और जो हद से गुज़रने वाले हैं वही जहन्नमी हैं;"
44 तो जल्द ही तुम याद करोगे उन बातों को, जो मैं तुमसे कह रहा हूं, और मैं
अपना मामला अल्लाह को सौंपता हूँ, बेशक अल्लाह अपने बन्दों को खूब देख
रहा है।
45 तो अल्लाह ने उन लोगों की चालों से (मूसा को) बचा लिया, और फ़िरऔन
वालों को बुरे अज़ाब ने आ घेरा;
46 (अर्थात) आग कि जिसके सामने वे सुबह और शाम पेश किये जाते हैं, और
जिस दिन क़ियामत आएगी, (हुक्म होगा कि) "फ़िरऔन वालों को सख़्त अज़ाब
में दाख़िल करो।"
47 और जब वे दोजख़ में एक-दूसरे से झगड़ रहे होंगे, तो कमज़ोर लोग उन
लोगों से,जो बड़े बनते थे, कहेंगे "हम तो तुम्हारे पीछे चलने वाले थे, तो क्या
तुम हम पर से आग का कुछ हिस्सा हटा सकते हो?"
48 बड़े बनने वाले कहेंगे, "हममें से तो हर एक इसी में पड़ा है, अल्लाह बन्दों
के बीच फ़ैसला कर चुका है।"
49 और जो लोग आग में होंगे वे जहन्नम के निगराँ (चौकीदार) से कहेंगे, "अपने
रब को पुकारो कि हमारे अज़ाब में से एक दिन ही अज़ाब कुछ हल्का कर
दे।"

50 वे कहेंगे, ‘‘क्या तुम्हारे पास तुम्हारे रसूल खुले प्रमाण लेकर नहीं आते रहे,’’
वे कहेंगे, ‘‘क्यों नहीं!!’’ (फिर) वे कहेंगे, ‘‘फिर तो तुम्हीं पुकारो, और काफ़िरों
(इन्कार करने वालों) की दुआ तो बस अकारथ ही हो जाएगी’’
51 हम अपने रसूलों की और जो लोग ईमान लाए उनकी, दुनिया की ज़िन्दगी में
भी मदद करते हैं, और उस दिन भी, जबकि गवाह खड़े होंगे (अर्थात क़ियामत
के दिन)।
52 जिस दिन ज़ालिमों को उनका उज़्र (सफाई) कुछ भी फ़ायदा न पहुँचाएगा, और
उन पर लानत होगी और बुरा ठिकाना होगा।
53 और ‘हमने’ मूसा को हिदायत दी और बनी इस्राईल को किताब का वारिस
बनाया,
54 रहनुमाई और नसीहत है बुद्धिमानों के लिए।
55 तो सब्र करो, बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है; और अपने गुनाहों की माफ़ी
चाहो, और सुबह और शाम अपने रब के ख़ूबियों की तस्बीह़ (गुणगान) करते
रहो।
56 जो लोग बिना किसी ऐसे प्रमाण के जो उनके पास आया हो, अल्लाह की
आयतों में झगड़ते हैं, उनके सीनों में केवल घमंड है, मगर वे उस बड़ाई को
पहुँचने वाले नहीं, तो तुम अल्लाह की पनाह माँगो, बेशक ‘वह’ देखने वाला,
सुनने वाला है।
57 आसमानों और ज़मीन का पैदा करना इन्सानों के पैदा करने से ज़्यादा बड़ा
(काम) है, मगर अक्सर लोग नहीं जानते।
58 अन्धा और आँख वाला बराबर नहीं होते, और न ईमान वाले, नेक अ़मल
करने वाले और बद्कार आपस में बराबर हो सकते हैं, मगर तुम बहुत कम
ध्यान देते हो।
59 क़ियामत की घड़ी आने वाली है, इसमें कोई सन्देह नहीं, मगर अक्सर लोग
ईमान नहीं लाते।
60 और तुम्हारे रब ने कहा है, ‘‘तुम मुझे पुकारो, मैं (तुम्हारी दुआएँ) कुबूल
करूँगा।’’ जो लोग मेरी इबादत के मामले में घमंड से काम लेते हैं वे बहुत
जल्द अपमानित होकर जहन्नम में दाख़िल होंगे।
61 अल्लाह ही तो है जिसने तुम्हारे लिए रात बनायी, ताकि तुम इसमें सुकून
हासिल करो और दिन को रोशन बनाया, बेशक अल्लाह लोगों पर बड़ा
मेहरबान है, लेकिन अक्सर लोग शुक्र नहीं करते।
62 ‘यही’ अल्लाह तुम्हारा रब है, जो हर चीज़ का पैदा करने वाला है, ‘उसके’
सिवा कोई मअ़बूद (उपास्य) नहीं, फिर तुम कहाँ उल्टे फिरे जा रहे हो?
63 इसी तरह वे लोग भटक रहे थे, जो अल्लाह की निशानियों का इन्कार करते
थे।
64 अल्लाह ही तो है ‘जिसने’ तुम्हारे लिए ज़मीन को ठहरने की जगह और
आसमान को छत बनाया, और तुम्हारी सूरत बनाईं! और क्या ही अच्छी

तुम्हारी सूरतें बनाई, और तुम्हें अच्छी पाक चीज़ों की रोज़ी दी, यही अल्लाह तो तुम्हारा रब है, तो अल्लाह, सारे संसार का 'रब' बड़ी बरकत वाला है;
65 'वह' ज़िन्दा है, 'उसके' सिवा कोई मअ़बूद (उपास्य) नहीं, तो 'उसी' को पुकारो इबादत को खास करते हुए, सारी तअ़रीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं जो सारे संसार का 'रब' है।
66 (ऐ मुह़म्मद) कह दीजिए, ''मुझे इस बात से रोक दिया गया है कि मैं उनकी इबादत करूँ जिन्हें तुम अल्लाह को छोड़ कर पुकारते हो, जबकि मेरे पास मेरे रब की ओर से खुले प्रमाण आ चुके हैं, और मुझे तो हुक्म हुआ है कि मैं अपने आप को सारे संसार के रब के हवाले कर दूँ।''
67 'वही' तो है जिसने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया फिर वीर्य से, फिर खून के लोथड़े से; फिर 'वह' तुम्हें एक बच्चे के रूप में निकालता है, फिर तुम अपनी जवानी को पहुँचते हो, फिर तुम बूढ़े हो जाते हो, और तुममें से कुछ को पहले मौत आ जाती है और तुम एक निश्चित समय तक पहुँच जाते हो, और ताकि तुम समझो।
68 'वही' ज़िन्दगी देता है, और 'वही' मौत देता है, जब 'वह' किसी काम का फ़ैसला कर लेता है तो बस हुक्म देता है, कि 'हो जा' तो वह हो जाता है।
69 क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा! जो अल्लाह की आयतों के बारे में झगड़ते हैं, यह कहाँ भटके जा रहे हैं!!
70 जिन लोगों ने किताब को झुठलाया और उसे भी जिसके साथ हमने अपने रसूलों को भेजा था, तो जल्द ही उन्हें मालूम हो जाएगा।
71 जबकि तौंक उनके गर्दनों में होंगी और ज़ंजीरों से उनको घसीटा जाएगा;
72 खौलते हुए पानी में, फिर आग में झोंक दिया जाएगा।
73 फिर उनसे कहा जाएगा, ''वे कहां हैं जिनको तुम साझीदार ठहराते थे;
74 अल्लाह को छोड़ कर,'' वे कहेंगे, ''गुम हो गये, वे हमसे, बल्कि हम तो पहले किसी चीज़ को नहीं पुकारते थे,'' इसी तरह अल्लाह काफ़िरों (इन्कार करने वालों) को भटकता छोड़ देता है।
75 यह इसका बदला है कि तुम ज़मीन में नाहक़ खुश हुआ करते थे और उसकी (सज़ा है) कि इतराया करते थे;
76 दाख़िल हो जाओ जहन्नम के दरवाज़े में, हमेशा उसी में रहोगे, ''तो कितना ही बुरा ठिकाना है! घमंड करने वालों का,''
77 तो सब्र करो, अल्लाह का वादा सच्चा है, या तो हम तुम्हें उसका कुछ हिस्सा जिसका वादा 'हम' उनसे कर रहे हैं, दिखा दें, या तुम्हें मौत दें, तो उनको लौट कर आना तो 'हमारी' ही ओर है।
78 और 'हमने' आप से पहले रसूल भेजे, जिनमें से कुछ के ह़ालात 'हम' आप को सुना चुके हैं, और कुछ के ह़ालात नहीं सुनाए; और किसी रसूल के बस की यह बात न थी, कि वह अल्लाह की इजाज़त के बिना कोई 'मोजिजा' (चमत्कार) ले आता; जब अल्लाह का हुक्म आ पहुँचा, तो ह़क़ के साथ फ़ैसला कर दिया गया और नाहक़ पर चलने वाले घाटे में पड़ गये।

79 अल्लाह ही ने तुम्हारे लिए चौपाए पैदा किये, ताकि उनमें से कुछ पर तुम
सवारी करो और उनमें से कुछ को तुम खाते भी हो,
80 और उनमें तुम्हारे लिए (और भी) फ़ायदे हैं, और ताकि तुम उनके ज़रिये उस
ज़रूरत को पूरा कर सको जो तुम्हारे सीनों में हो, और उन पर भी, और
नौकावों पर तुम सवार होते हो।
81 और 'वह' तुम्हें अपनी निशानियां दिखाता है, तो तुम अल्लाह की किन-किन
निशानियों का इन्कार करोगे।
82 फिर क्या ये लोग धरती में चले-फिरे नहीं कि देखते कि उनका क्या अंजाम
हुआ, जो इनसे पहले गुज़रे हैं, वे इनसे संख्या में ज़्यादा थे और शक्ति में
भी, और ज़मीन पर छोड़े हुए निशानों की दृष्टि से बढ़कर थे, तो जो कुछ वे
करते थे वह उनके कुछ काम न आया।
83 जब उनके रसूल उनके पास स्पष्ट प्रमाण लेकर आए, तो जो इल्म उनके पास
था वे उसी पर खुश होते रहे, और उनको उसी चीज़ ने आ घेरा जिनका वे
मज़ाक़ उड़ाते थे।
84 फिर जब उन्होंने 'हमारा' अ़ज़ाब देखा, तो कहने लगे, "हम ईमान लाए
अल्लाह पर, 'जो' अकेला है और उनका इन्कार करते हैं, जिनको हम साझी
ठहराते थे।"
85 मगर उनका ईमान लाना कुछ भी फ़ायदा पहुँचा नहीं सकता था, जबकि उन्होंने
'हमारे' अ़ज़ाब को देख लिया, यही अल्लाह की सुन्नत (नियम) है, जो उसके
बन्दों में पहले से चली आई और उस समय इन्कार करने वाले घाटे में पड़
कर रहे।

## सूर-ए-हामीम् सज्दः

यह सूरः मक्की है, इस में अ़रबी के 3406 अक्षर, 809 शब्द,54 आयतें और 6 रूकूअ़ हैं।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

1 ह़ामीम्,
2 यह (किताब) रह़मान और रह़ीम की ओर से नाज़िल हुई है;
3 एक ऐसी किताब, जिसकी आयतें खोल-खोल कर बयान की गई हैं- अ़रबी
क़ुर्आन- उन लागों के लिए है, जो जानना चाहते हों;
4 जो खुशख़बरी देने वाली, और सचेत करने वाली, मगर उनमें से अक्सर लोगों
ने मुँह फेरा, तो वे सुनते ही नहीं;
5 और कहते हैं, "जिसकी ओर तुम हमें बुलाते हो हमारे दिल उसकी ओर से

पर्दों में हैं, और हमारे कान बहरे हैं, और हमारे और तुम्हारे बीच एक ओट है; तो तुम (अपना) काम करो, हम (अपना) काम करते हैं''

6 कह दीजिए, मैं तो तुम्हारी ही तरह का एक बशर (मनुष्य) हूँ, मेरी ओर यह वह्य (प्रकाशना) की जाती है, कि तुम्हारा इलाह (उपास्य) एक ही इलाह है, तो तुम सीधे 'उसी' का रूख करो, और 'उसी' से माफ़ी चाहो।'' और तबाही हो साझी ठहराने वालों के लिए,

7 जो ज़कात नहीं देते, और आख़िरत का इन्कार करते हैं।

8 जो लोग ईमान लाए और भले काम किये उनके लिए ऐसा बदला है जो कभी ख़त्म होने वाला नहीं।

9 कह दीजिए, ''क्या तुम 'उसका' इन्कार करते हो, 'जिसने' ज़मीन को दो दिन में पैदा किया और (बुतों को) तुम 'उसके' बराबर ठहराते हो? 'वही' तो सारे संसार का रब है;

10 और 'उसीने' (ज़मीन में) उसके ऊपर पहाड़ बनाए और उसमें बरकत रखी, और उसमें उसकी गिज़ा के सामान रखे; यह चार दिनों में हुआ (और तमाम) तलब (इच्छा) रखने वालों के लिए बराबर''।

11 फिर 'उसने' आसमान की ओर रूख किया, और वह धुआँ के रूप में था तो, 'उसने' उससे और ज़मीन से कहा, ''आओ, (हुक्म मानो) रज़ामन्दी के साथ या बिना रज़ामन्दी के,'' उन्होंने कहा, ''हम रज़ामन्दी के साथ आते हैं।''

12 तो 'उसने' सात आसमान बना दिये- दो दिनों में- और हर आसमान में उससे सम्बन्धित हुक्म की वह्य (प्रकाशन) कर दी; और दुनिया के आसमान को 'हमने' दीपों से सजाया और उसको सुरक्षित कर दिया; यह उस ज़बर्दस्त (प्रभुत्वशाली), ख़बर रखने वाले का तय किया हुआ है।

13 फिर अगर ये मुँह फेरें, तो कह दीजिए, ''मैं तुम्हें उसी तरह कड़का देने वाले (अज़ाब) से डराता हूं जिस तरह का कड़ाका देने वाला (अ़ज़ाब आया) आ़द और समूद पर''

14 जब उनके पास रसूल उनके आगे और उनके पीछे से आए, ''अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो।'' तो उन्होंने कहा, ''अगर हमारा रब चाहता तो फ़रिश्तों को उतार देता, अतः जिस चीज़ के साथ तुम्हें भेजा गया है, हम इसे नहीं मानते।''

15 रहे आ़द, तो उन्होंने नाहक़ धरती में घमंड किया और कहा, ''कौन हमसे शक्ति में बढ़कर है?'' क्या उन्होंने नहीं देखा! कि अल्लाह, 'जिसने' उन्हें पैदा किया, 'वह' उनसे शक्ति में बढ़कर है? और वे हमारी आयतों का इन्कार ही करते रहे;

16 तो 'हमने' उन पर मन्हूस दिनों में तेज़ हवा भेजी, ताकि उन्हें दुनिया की ज़िन्दगी में ज़िल्लत के अ़ज़ाब का मज़ा चखा दें, और आख़िरत का अ़ज़ाब तो इससे कहीं बढ़कर रूसवा करने वाला है, और उनको कोई मदद भी न मिल सकेगी।

17 और रहे समूद तो, 'हमने' उनके सामने सीधी राह दिखाई, किन्तु उन्होंने सीध
ी राह छोड़कर अन्धा रहना पसंद किया, तो जो कुछ वे कमाई कर रहे थे,
उसके बदले में उनको कड़क के अ़ज़ाब ने आ पकड़ा।
18 और 'हमने' उनको बचा लिया जो ईमान लाए, और डर रखते रहे।
19 और जिस दिन अल्लाह के दुश्मनों को जहन्नम की ओर ले जाने के लिए
इकट्ठा किया जाएगा (और) उनकी दर्जा बन्दी (क्रमबद्ध) की जाएगी,
20 यहां तक कि जब वे वहाँ पहुंच जाएँगे तो उनके कान उनकी आंखें और उनकी
खालें (त्वचा) उनके ख़िलाफ़ गवाही देंगे कि वे क्या कुछ करते रहे हैं।
21 और वे अपनी खालों से कहेंगे कि "तुमने हमारे खिलाफ़ क्यों गवाही दी?"
वह कहेगी, "हमें 'उसी' अल्लाह ने बोलने की ताक़त दी, जिसने हर चीज़ को
बोलने की ताक़त दी और 'उसी' ने तुमको पहली बार पैदा किया और तुम
को 'उसी' की ओर लौट कर जाना है।
22 और तुम इससे तो पर्दा नहीं करते थे कि तुम्हारे कान, तुम्हारी आँखें, और
तुम्हारी खालें, तुम्हारे ख़िलाफ़ गवाही देंगे, बल्कि तुमने तो यह समझ रखा था
कि 'अल्लाह तुम्हारी बहुत सी बातों को नहीं जानता' जो तुम करते हो।
23 और तुम्हारे उस गुमान ने तुम्हें बरबाद किया जो अपने रब के बारे में रखते
थे, तो तुम घाटे में पड़कर रहे।
24 अब अगर ये सब्र करेंगे तो भी जहन्नम ही इनका ठिकाना है, और अगर वे
माफ़ी मांगे, तो इन्हें माफ़ नहीं किया जाएगा।
25 और 'हमने' उन पर कुछ साथी (शैतान) नियुक्त कर दिये थे, फिर उन्होंने
उनके आगे और उनके पीछे (के आ़माल को) जो कुछ था उसे सुहाना बनाकर,
उन्हें दिखाया तो उन पर भी जिन्नों और मनुष्यों के उन गिरोहों के साथ फ़ैसला
सच हो कर रहा, जो उनसे पहले गुज़र चुके हैं, बेशक वे घाटा उठाने वाले
थे।
26 और जिन लोगों ने इन्कार किया उन्होंने कहा,"इस क़ुर्आन को सुनो ही नहीं
और इसके बीच में शोर-गुल मचाओ, ताकि तुम ग़ालिब (प्रभावी) रहो।"
27 तो हम ज़रूर उन लोगों को- जिन्होंने इन्कार किया- सख्त अ़ज़ाब का मज़ा
चखाएंगे, और 'हम' ज़रूर उन्हें उस का बदला देंगे जो बद्तरीन काम वे करते
रहे हैं।
28 यह है, अल्लाह के दुशमनों का बदला आग, इसी में उनका हमेशा के रहने
वाला घर है, यह बदला है इस बात का कि वे 'हमारी' आयतों का इन्कार
करते थे।
29 और जिन लोगों ने इन्कार किया, वे कहेंगे, "ऐ हमारे रब! हमें दिखा दे उन
जिन्नों और इन्सानों को, जिन्होंने हमको गुमराह किया था कि हम उन्हें अपने
पैरों तले कुचल दें, ताकि वे सबसे नीचे जा पड़ें।"
30 जिन लोगों ने कहा, "हमारा रब अल्लाह है।" फिर उस पर मज़बूती से जमे
रहे, उन पर फ़रिश्ते उतरेंगे, "न डरो और न रंजीदा हो, और उस जन्नत
की खुशख़बरी सुनो जिसका तुमसे वादा किया जाता है।"

31 हम दुनिया की ज़िन्दगी में भी तुम्हारे दोस्त थे और आख़िरत में भी, और
वहाँ तुम्हारा जो दिल चाहेगा वह तुम्हें मिलेगा, और जो चीज़ भी तुम माँगोगे
वह सब तुम्हें मिलेगी।
32 यह मेहमानी (सत्कार) है, 'उसकी' ओर से जो बख़्शने वाला, रहम करने वाला
है।
33 और उस व्यक्ति से बेहतर बात, किस की हो सकती है? जो अल्लाह की ओर
बुलाए, और नेक अ़मल करे और कहे, "मैं मुसलमानों (फ़रमाबरदारों) में से
हूँ।"
34 और भलाई और बुराई बराबर नहीं हो सकती, तुम बुराई को उस तरह दूर
करो जो सब से बेहतर हो, उस सूरत में तुम देखोगे कि तुम्हारे और जिस
(व्यक्ति) के बीच दुश्मनी थी, गोया वह गहरा दोस्त बन गया है;
35 और इसकी तौफीक़ उन ही लोगों को मिलती है जो सब्र करते हैं, और यह
चीज़ उन्हीं को हासिल होती है जो बड़ी क़िस्मत वाले हैं।
36 और अगर शैतान की ओर से कोई वस्वसा मालूम हो, तो अल्लाह की पनाह
माँगो, बेशक 'वह' सब कुछ सुनने वाला, जानने वाला है।
37 और अल्लाह की निशानियों में से रात और दिन, और सूरज और चाँद हैं,
तो तुम लोग न सूरज को सज्दः करो और न चाँद को, और अल्लाह ही को
सज्दः करो 'जिसने' इन चीज़ों को पैदा किया है, अगर तुम अल्लाह की इबादत
करने वाले हो।
38 और अगर ये लोग सरकशी करें, तो जो (फ़रिश्ते) तुम्हारे 'रब' के पास हैं वे
तो रात और दिन 'उसकी' तस्बीह़ करते ही रहते हैं, और वे कभी थकते ही
नहीं।
39 और यह चीज़ भी 'उसकी' निशानियों में से है कि तुम देखते हो कि धरती
दबी पड़ी (अर्थात सूखी) है, फिर जब 'हम' उस पर पानी बरसाते हैं तो वह
लहलहाने लगती और फूल जाती है, तो 'जिसने' ज़मीन को ज़िन्दा किया, 'वही'
मुर्दों को भी ज़िन्दा करने वाला है, बेशक 'वह' हर चीज़ पर क़ादिर (सामर्थ्य)
है।
40 जो लोग 'हमारी' आयतों में टेढ़ापन पैदा करते हैं वे 'हमसे' छिपे हुए नहीं हैं,
तो क्या जो व्यक्ति दोज़ख़ में डाला जाए, वह अच्छा है या वह, जो क़ियामत
के दिन बेफ़िक्र (निश्चिन्त) होकर आए? जो चाहे कर लो, तुम जो कुछ करते
हो 'वह' तो उसे देख रहा है।
41 जिन लोगों के पास नसीह़त आई और उन्होंने उसको न माना और यह एक
ज़बर्दस्त किताब है।
42 असत्य 'उस' तक न उसके आगे से आ सकता है, और न उसके पीछे से,
यह 'उसकी' ओर से नाज़िल हुई है जो हिक्मत वाला, खूबियों वाला है।
43 तुम्हें बस वही कहा जा रहा है जो उन रसूलों को कहा जा चुका है जो तुमसे
पहले गुज़रे हैं, बेशक तुम्हारा रब माफ़ करने वाला भी है और दुखदाई सज़ा
देने वाला भी है।

44 और अगर 'हम' इसे अजमी (अ़रबी के सिवा किसी भाषा) में क़ुर्आन बनाते
तो यह लोग कहते, ''इसकी आयतें क्यों नहीं (हमारी भाषा में) खोलकर बयान
की गईं? यह क्या कि भाषा तो विदेशी हो और हम अरबी?'' कह दीजिए,
''जो ईमान रखते हैं उनके लिए तो यह हिदायत और शिफ़ा है, और जो लोग
ईमान नहीं लाते उनके कानों में बोझ है और यह (क़ुर्आन) उनके लिए अन्ध
ापन है, वे ऐसे हैं जिनको किसी दूर की जगह से पुकारा जा रहा हो।''
45 और 'हमने' मूसा को किताब दी, फिर उसमें भी मतभेद किया गया, और
अगर तुम्हारे रब की ओर से पहले ही से एक बात तय न हो चुकी होती तो
उनके बीच फ़ैसला कर दिया जाता, और यह इस (क़ुर्आन) से शंका में पड़े
हुए हैं।
46 जिसने भले काम किये तो उसने अपने ही लिए और जिसने बुराई की, उसका
वबाल भी उसी पर पड़ेगा, और तुम्हारा रब अपने बन्दों पर ज़रा भी ज़ुल्म
नहीं करता।
47 क़ियामत की घड़ी का इल्म 'उसी' की ओर लौटता है, जो फल भी अपने कोषों
से निकलते हैं और जो माँ भी गर्भवती होती, और बच्चा जनती है, मगर
'उसे' उन सब का इल्म होता है, और जिस दिन 'वह' उन्हें पुकारेगा ''कहाँ
हैं मेरे साझी दार?'' तो वे कहेंगे, '' हम तेरे सामने कह चुके हैं कि हममें से
कोई भी इसका गवाह नहीं;''
48 और जिन्हें वे पहले पुकारा करते थे उनसे गुम हो जाएँगे, और वे समझ लेंगे
कि उनके लिए कोई भी भागने की जगह नहीं।
49 इन्सान भलाई मांगने से नहीं उकताता, और अगर उसे कोई तक्लीफ़ पहुँच
जाती है तो निराश होकर मायूस हो जाता है;
50 और अगर तक्लीफ़ पहुँचने के बाद 'हम' उसे अपनी रह़मत का मज़ा चखाते
हैं, तो कहता है, ''मैं तो इसका हक़दार था, और मैं यह नहीं समझता था कि
क़ियामत क़ायम होगी, और अगर मैं अपने रब की ओर लौटाया गया तो मेरे
लिए वहाँ भी ख़ुशह़ाली ही होगी।'' तो 'हम' इन काफ़िरों को ज़रूर बताएँगे जो
कुछ उन्होंने किया होगा और हम उन्हें ज़रूर सख़्त अ़ज़ाब का मज़ा चखाएंगे;
51 और जब 'हम' इन्सान को नेअ़मत से नवाज़ते हैं तो वह मुँह फेर लेता है,
और अपना पहलू बदल लेता है, और जब उसे तक्लीफ़ पहुँचती है तो लम्बी
चौड़ी दुआ़एँ करने लगता है।
52 कह दीजिए, ''क्या तुमने देखा नहीं! कि अगर यह (क़ुर्आन) ''अल्लाह की
ओर से हुआ और तुमने इसका इन्कार कर दिया, तो उससे बढ़कर भट्का
हुआ कौन होगा, जो मुख़ालिफ़त में दूर जा पड़ा हो?''
53 जल्द ही 'हम' उनको अपनी निशानियाँ आफ़ाक़ (वह़्य क्षेत्र)में दिखाएँगे और
उनके अपने अन्दर भी, यहां तक कि उनपर स्पष्ट हो जाएगा कि यह (क़ुर्आन)
ह़क़ है, क्या तुम को यह बात काफ़ी नहीं कि तुम्हारा रब हर चीज़ पर गवाह
है?
54 देखो ये अपने रब से मिलने के बारे में सन्देह में पड़े हुए हैं, जान लो! कि
'वह' हर चीज़ को अपने घेरे में लिए हुए है।

# सूर-ए-शूरा

यह सूरः मक्की है, में अ़रबी के 3585 अक्षर, 869 शब्द, 56 आयतें और 5 रूकूअ़ हैं।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

1 ह़ामीम्,

2 अ़ैन्- सीन् क़ाफ़्,

3 इसी तरह अल्लाह जो बड़ा शक्तिशाली और ह़िक्मत वाला है, तुम्हारी ओर और उनकी ओर जो तुमसे पहले गुज़र चुके हैं वह़्य (प्रकाशना) भेजता रहा है।

4 आसमानों और ज़मीन में जो कुछ भी है 'उसी' का है, और 'वह' बुलन्द (और) महान है।

5 क़रीब है कि आसमान ऊपर से फट पड़ें फ़रिश्ते अपने रब की तस्बीह़ (गुणगान) कर रहे हैं और जो लोग ज़मीन में हैं उनके लिए माफ़ी मांगते रहते हैं, सुन लो! अल्लाह ही माफ़ करने वाला, रह़म वाला है।

6 और जिन लोगों ने 'उसको छोड़कर दूसरों को संरक्षक बना लिए हैं, अल्लाह उनकी निगरानी किये हुए है, और तुमको उन पर ज़िम्मेदार नियुक्त नहीं किया गया।

7 और इसी तरह 'हमने' आप की ओर एक अ़रबी क़ुर्आन की वह़्य (प्रकाशना) की है, ताकि आप केन्द्रीय बस्तियों (मक्का) के रहने वालों और जो लोग उसके चारों ओर हैं उनको सचेत कर दें, और सचेत करें इकट्ठा होने के दिन से, जिसमें कोई सन्देह नहीं, (उस दिन) एक गिरोह जन्नत में होगा और एक गिरोह भड़कती आग में।

8 और अगर अल्लाह चाहता तो उन्हें एक ही उम्मत (समुदाय) बना देता, लेकिन 'वह जिसे चाहता है अपनी रह़मत में दाख़िल कर लेता है, और ज़ालिमों का न कोई संरक्षक है और न मदद्गार।

9 क्या उन्होंने 'उसको' छोड़कर दूसरों को संरक्षक बना रखा है? संरक्षक तो अल्लाह ही है, और 'वही' मुर्दों को ज़िन्दा करेगा और 'वह' हर चीज़ पर क़ादिर (सामर्थ्यवान) है।

10 और जिस चीज़ में तुम इख़्तिलाफ़ करते हो उसका फ़ैसला अल्लाह के सुपुर्द है, 'वही' अल्लाह मेरा 'रब' है, 'उसी' पर मैंने भरोसा किया, और 'उसी' की ओर रूजूअ़ होता हूँ।

11 आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला 'जिसने' तुम्हीं में से तुम्हारे जोड़े, और मवेशियों के भी जोड़े- बनाए इसी तरह 'वह' तुम्हारी नस्लें और फैलाता है 'उसके' जैसी कोई चीज़ नहीं, और 'वह' सुनने वाला, देखने वाला है।

12 आसमानों और ज़मीन की कुंजियाँ 'उसी' के क़ब्ज़े में हैं, 'वह' जिसे चाहता
है कुशादा रोज़ी देता है, और (जिसे चाहता है) नपी-तुली कर देता है, बेशक
'वह' हर चीज़ का इल्म रखने वाला है।
13 'उसने' आप के लिए वही दीन निर्धारित किया है जिसकी हिदायत 'उसने' नूह
को की थी, और जिसकी वह्य 'हमने' आप की ओर की है, और जिसकी
हिदायत 'हमने' इब्राहीम और मूसा, और ईसा को की थी कि "दीन को
क़ायम रखो और इस मामले में विभेद न करो," आप जिसकी ओर मुश्रिकों
(बहुदेववादियों) को बुलाते हैं वह उन पर भारी पड़ता है, अल्लाह जिसे चाहता
है अपनी राह के लिए चुन लेता है, और अपनी ओर रहनुमाई उसी को करता
है जो 'उसकी' ओर रूजूअ़ होता है।
14 और ये लोग आपस में एक-दूसरे से (ज़िद की वजह से) अलग-अलग बट
गये, इसके बावजूद कि उनके पास इल्म आ चुका था, और अगर तुम्हारे 'रब'
की ओर से एक निश्चित अवधि तक के लिए बात तय न हो चुकी होती तो
उनके बीच फ़ैसला हो चुका होता, और जो लोग उनके बाद किताब के वारिस
हुए वे 'उसकी' ओर से शक की उलझन में हैं।
15 तो आप उसी दीन की दअ़वत दीजिए और उसी पर क़ायम रहिए जैसा कि
आप को हुक्म दिया गया है, और उनकी इच्छाओं के पीछे न चलिए, और
कह दीजिए, "अल्लाह ने जो किताब उतारी है उस पर मैं ईमान लाया, मुझे
हुक्म दिया गया है कि मैं तुम्हारे बीच न्याय करूँ, अल्लाह हमारा भी रब है
और तुम्हारा भी, हमारे आमाल हमारे लिए और तुम्हारे आमाल तुम्हारे लिए,
हमारे और तुम्हारे बीच कोई बहस नहीं, अल्लाह हम (सब) को इकट्ठा करेगा
और 'उसी' की ओर लौट कर जाना है।"
16 और जो लोग अल्लाह के बारे में झगड़ते हैं, इसके बाद कि उसकी पुकार
क़ुबूल कर ली गई, उनकी हुज्जत (तर्क) उनके रब के नज़दीक व्यर्थ हैं, और
उन पर ग़ज़ब है, और उनके लिए सख़्त अ़ज़ाब है।
17 अल्लाह ही तो है 'जिसने' हक़ के साथ किताब उतारी और मीज़ान (तराज़ू)
उतारी, और तुम्हें क्या ख़बर! शायद क़ियामत की घड़ी क़रीब आ गई हो?
18 उसके लिए जल्दी वही लोग मचाते हैं, जो लोग इस पर ईमान नहीं रखते, और
ईमान रखने वाले तो इससे डरते हैं और जानते हैं कि वह ह़क़ है; जान लो!
जो लोग उस घड़ी के बारे में सन्देह डालने वाली बह़सें करते हैं, वे गुमराही
में दूर जा पड़े हैं।
19 अल्लाह अपने बन्दों पर बड़ा मेहरबान है, 'वह' जिसे चाहता है रोज़ी देता
है, और 'वह' बड़ा शक्तिशाली, ग़ालिब (प्रभावी) है।
20 जो व्यक्ति आख़िरत की खेती का इच्छुक हो, हम उसकी खेती को बढ़ाते हैं
और जो दुनिया की खेती का इच्छुक हो, हम उसमें से उसे कुछ दे देते हैं,
और आख़िरत में उसका कोई हिस्सा नहीं।
21 क्या उनके वे साझीदार हैं, जिन्होंने उनके लिए कोई ऐसा दीन निर्धारित कर
दिया है जिसकी इजाज़त अल्लाह ने नहीं दी, अगर फ़ैसले की बात निश्चित न

हो गई होती तो उनके बीच फ़ैसला हो चुका होता, और जो ज़ालिम हैं उनके लिए दुःख देने वाला अ़ज़ाब है।

22 तुम ज़ालिमों को देखोगे कि उन्होंने जो कुछ कमाया है उससे डर रहे होंगे, और वह उन पर आ कर रहेगा, और जो लोग ईमान लाए और भले काम करते रहे, वे जन्नत के बाग़ों में होंगे, उन के लिए उनके रब के पास वह सब कुछ होगा जिसकी वे इच्छा करेंगे, यही है बहुत बड़ा फ़ज़्ल।

23 यही वह (इनआ़म है) जिसकी खुशख़बरी देता है, अल्लाह अपने उन बन्दों को, जो ईमान लाए और भले काम करते रहे, (ऐ नबी) कह दीजिए, ''उनसे, मैं उस पर कोई बदला नहीं माँगता, मगर कुर्बत (निकट्ता) की मुहब्बत चाहता हूँ, और जो कोई नेकी कमाएगा 'हम' उसके लिए उसकी नेकी में खूबी को बढ़ाएँगे।'' बेशक अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, क़द्रदान है।

24 क्या ये लोग कहते हैं, ''इस व्यक्ति ने अल्लाह पर झूठ बांधा है?'' अगर अल्लाह चाहे तो आपके दिल पर मुहर लगा दे, और अल्लाह बातिल (असत्य) को मिटाता है और ह़क़ को अपने कलाम (बोल) से सत्य कर दिखाता है, बेशक 'वह' दिलों तक के भेद को जानता है।

25 और 'वही' है जो अपने बन्दों की तौबः कुबूल करता है और बुराइयों को दरगुज़र करता है, और जानता है, जो कुछ तुम करते हो।

26 और 'वह' उन लोगों की दुआ़ कुबूल करता है जो ईमान लाए और भले काम किये, और 'अपने' फज़्ल से उन्हें और देता है; और जो इन्कार करने वाले (काफ़िर) हैं, तो उनके लिए सख़्त अ़ज़ाब है।

27 और अगर अल्लाह अपने बन्दों के लिए रोज़ी कुशादा कर देता तो ज़मीन में सरकशी करने लगते, लेकिन 'वह' एक खास मात्रा में जितना चाहता है उतारता है, बेशक 'वह' अपने बन्दों की ख़बर रखने वाला, खूब देखने वाला है।

28 और 'वही' तो है जो लोगों के मायूस हो जाने के बाद बारिश बरसाता है, और अपनी रह़मत को फैला देता है, और 'वही' है संरक्षक, सारी खूबियों वाला।

29 और उसकी निशानियों में से है आसमानों और ज़मीन की पैदाइश, और उन जानवरों का जो उसने उनमें फैला रखे हैं, और 'वह' उनको जब चाहे इकट्ठा करने पर क़ादिर (समर्थ्य) है।

30 और जो मुसीबत भी तुमको पहुँचती है तुम्हारे अपने करतूतों की वजह से पहुँचती है, और बहुत सी बुराइयां तो 'वह' माफ़ कर देता है।

31 और तुम धरती में उसके क़ाबू से (बाहर) नहीं निकल सकते, और न अल्लाह के मुक़ाबले में कोई संरक्षक है, और न मदद्गार,

32 और उसकी निशानियों में से समुद्र में पहाड़ों जैसे चलने वाले जहाज़ (भी हैं)।

33 अगर ‘वह’ चाहे तो हवा को ठहरा दे, तो वह (जहाज़) समुद्र की पीठ पर
ठहरे रह जाएँ, इसमें निशानियां हैं हर सब्र (और) शुक्र करने वाले के लिए;

34 या, उन (जहाज़ों) को उनके करतूतों की वजह से तबाह कर दे और बहुत से
कुसूर माफ़ भी कर दे।

35 और जो लोग हमारी आयतों में झगड़ते हैं वे जान लें! कि उनके लिए कोई
भागने की जगह नहीं।

36 तुम को जो कुछ भी दिया गया है वह दुनिया की ज़िन्दगी का सामान है, और
जो कुछ अल्लाह के यहाँ है वह कहीं बेहतर है और बाक़ी रहने वाला भी,
वह उन्हीं के लिए है जो ईमान लाए और अपने रब पर भरोसा रखते हैं;

37 और जो बड़े-बड़े गुनाहों और बेशर्मी की बातों से बचते रहते हैं और जब
उनको गुस्सा आता है तो माफ़ कर देते हैं;

38 और जो अपने ‘रब’ का हुक्म मानते और नमाज़ क़ायम करते, और अपना
मामला आपसी मश्वरे (परामर्श) से करते हैं, और जो कुछ ‘हमने’ उन्हें दिया
है उसमें से खर्च करते हैं;

39 और जो ऐसे हैं कि जब उन पर ज़ुल्म होता है तो अपना बदला लेते हैं।

40 और बुराई का बदला वैसी ही बुराई है, फिर जो कोई माफ़ कर दे और सुध
ाार करे तो उसका बदला अल्लाह के ज़िम्मे है, बेशक वह ज़ालिमों को पसंद
नहीं करता।

41 और जिन्होंने अपने ऊपर ज़ुल्म होने के बाद बदला लिया, तो ऐसे लोगों पर
कोई इल्ज़ाम नहीं।

42 इल्ज़ाम तो केवल उन लोगों पर है जो लोगों पर ज़ुल्म करते हैं, और धरती
में नाहक़ ज़्यादती करते हैं, ऐसे ही लोगों के लिए दुःख देने वाला अ़ज़ाब है।

43 और जिसने सब्र से काम लिया और माफ़ कर दिया तो यह बड़े ही अ़ज़्म
(साहस) का काम है।

44 और जिस व्यक्ति को अल्लाह गुमराही में डाल दे, तो इसके बाद उसका कोई
संरक्षक नहीं, और तुम ज़ालिमों को देखोगे कि जब वे अ़ज़ाब को देख लेंगे
तो कहेंगे, “क्या कोई वापसी की भी राह है?”

45 और तुम उन्हें देखोगे कि वे उस (जहन्नम) के सामने इस तरह पेश किये
जाएँगे कि अपमान से झुके हुए कन्खियों से देख रहे होंगे, और जो लोग ईमान
लाए, वे कहेंगे; “घाटे में पड़ने वाले वही हैं जिन्होंने क़ियामत के दिन अपने
आप को और अपने लोगों को घाटे में डाल दिया, ख़बरदार! बेशक ये ज़ालिम
(हमेशा के लिए) अ़ज़ाब में ही रहेंगे।

46 और अल्लाह के सिवा उनका कोई दोस्त न होगा, जो उनकी मदद करे; और
जिसे अल्लाह गुमराही में डाल दे तो उसके लिए कोई राह नहीं।”

47 अपने 'रब' की बात मान लो, इससे पहले कि अल्लाह की ओर से वह दिन
आ जाए जो वापस होने वाला नहीं, उस दिन तुम्हारे लिए न कोई ठिकाना
होगा और न तुम से गुनाहों का इन्कार ही बन पड़ेगा।
48 अब भी अगर यह ध्यान में न लाएँ तो 'हमने' तो आप को उन पर कोई
संरक्षक बनाकर नहीं भेजा, आप पर तो केवल पहुँचा देने की ज़िम्मेदारी है,
और जब 'हम' इन्सान को अपनी ओर से किसी रहमत का मज़ा चखाते हैं
तो वह उस पर इतराने लगता है, और अगर उसके करतूतों की वजह से कोई
मुसीबत उस पर आती है तो वह नाशुक्री करने लगता है।
49 आसमानों और ज़मीन की बादशाही अल्लाह ही के लिए है 'वह' जो चाहता है
पैदा करता है, जिसे चाहता है बेटियाँ देता है और जिसे चाहता है बेटे देता
है।
50 या उनको बेटे और बेटियाँ दोनों देता है, और जिसको चाहता है बेऔलाद
रखता है, 'वह' तो जानने वाला, कुदरत वाला है।
51 और किसी बशर (इन्सान) की यह शान नहीं कि अल्लाह उससे बात करे,
सिवाय इसके कि वह्य (प्रकाशना) के ज़रिये या पर्दे के पीछे से या यह कि
किसी रसूल (फ़रिश्ते) को भेज दे, फिर वह उसकी इजाज़त से जो चाहे वह्य
कर दे, बेशक 'वह' ऊँची शान वाला, बड़ी हिक्मत वाला है।
52 और इसी तरह 'हमने' अपने हुक्म से आप की ओर एक रूह (फ़रिश्ता) भेजा,
आप नहीं जानते थे कि किताब क्या चीज़ है और ईमान क्या चीज़ है, लेकिन
'हमने' उस (कुर्आन) को नूर (प्रकाश) बनाया, और अपने बन्दों में से जिसे
चाहते हैं उसे राह दिखाते हैं, और बेशक आप सीधे रास्ते की ओर रहनुमाई
कर रहे हैं;
53 अल्लाह के रास्ते की ओर जो आसमानों और ज़मीन की सारी चीज़ों का
मालिक है, "सुन लो! सारे मामले अल्लाह ही की ओर लौटते हैं।"

## सूर-ए-ज़ुख्रुफ़

यह सूरः मक्की है, इस में अ़रबी के 3656 अक्षर, 848 शब्द, 89 आयतें और 7 रूकूअ़ हैं।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

1 ह़ामीम्,

2 स्पष्ट किताब की क़सम;

3 कि 'हमने' इसे अ़रबी कुर्आन बनाया, ताकि तुम समझो।

4 और यह 'उम्मुल-किताब' (लौहे मह़फ़ूज़) में 'हमारे' पास (लिखी हुई) बड़े ऊँचे दर्जे की, ह़िकमत वाली है।

5 तो क्या 'हम' तुम्हारी याददिहानी से इसलिए नज़र फेर लें कि तुम सीमा को पार करने वाले लोग हो?

6 और 'हमने' पहले के लोगों में भी कितने नबी भेजे थे।

7 और जो नबी भी उनके पास आता था, वे उसका मज़ाक़ ही उड़ाते थे।

8 तो 'हमने' उनको तबाह कर दिया जो उनमें ज़्यादा शक्तिशाली थे, और अगले लोगों की मिसालें गुज़र चुकी हैं।

9 और अगर तुम उनसे पूछो, ''आसमानों और ज़मीन को किसने पैदा किया है,'' तो यही कहेंगे, 'उनको ज़बर्दस्त इल्म वाले ने पैदा किया है;

10 'जिसने' तुम्हारे लिए धरती को पालना बनाया और उसमें तुम्हारे लिए रास्ते बना दिये, ताकि तुम राह पा सको।

11 और 'जिसने' आसमान से एक खास मात्रा में पानी उतारा, फिर 'हमने' उससे मुर्दा ज़मीन को जिला दिया, इसी तरह तुम (ज़मीन से) निकाले जाओगे।

12 और 'जिसने' तमाम चीज़ों के जोड़े पैदा किये, और तुम्हारे लिए नौकाएँ और जानवर बनाए जिन पर तुम सवार होते हो;

13 ताकि तुम उनकी पीठों पर चढ़ कर बैठो, फिर याद करो अपने रब की नेअ़मत को, जब तुम उन पर बैठ जाओ और कहो, ''पाक है 'वह' हस्ती 'जिसने' इसको हमारे वश में किया, और हमारे बस में न था कि उनको क़ाबू में कर लेते;

14 और हम अपने रब ही की ओर लौटने वाले हैं।''

15 और उन्होंने उसके बन्दों में से कुछ को उसका अंश (औलाद) ठहरा लिया, बेशक इन्सान तो खुला हुआ नाशुक्रा है।

16 क्या 'उसने' खुद अपनी मख़्लूक़ (सृष्टि) में से अपने लिए बेटियां रख लीं, और तुम्हारे लिए बेटे खास कर दिये।

17 और जब उनमें से किसी को उसकी खुशख़बरी दी जाती है, जो वह रह़मान के लिए बयान करता है, तो उसके मुँह पर कलौंस छा जाती है और वह ग़म के मारे घुटा-घुटा रहने लगता है।

18 क्या वह जो ज़ेवर में परवरिश पाए और झगड़े के वक़्त बात तक न कह सके।

19 और उन्होंने फ़रिश्तों को- जो रह़मान के बन्दे हैं- औ़रतें ठहरा ली हैं, क्या ये उनकी पैदाइश (संरचना) के वक़्त मौजूद थे? तो बहुत जल्द उनकी गवाही लिख ली जाएगी और उनसे पूछा जाएगा।

20 और कहते हैं, ''अगर रह़मान चाहता तो हम उन्हें न पूजते, उन्हें इस का कुछ इल्म नहीं, वह तो बस अट्कल की बातें करते हैं।

21 या 'हमने' इससे पहले उनको कोई किताब (प्रमाण के रूप में) दी थी तो ये
उसे मज़बूती से पकड़े हुए हैं।
22 (नहीं,) बल्कि वे कहते हैं, ''हमने तो अपने बाप-दादा को एक तरीक़े पर
पाया है और हम उन्हीं के नक्शे क़दम (पद-चिन्ह) पर चलकर (सीधी) राह
पा रहे हैं।''
23 और इसी तरह तुमसे पहले जिस बस्ती में भी 'हमने' कोई सचेत करने वाला
भेजा उसके खुशहाल लोगों ने यही कहा, ''हमने अपने बाप-दादा को एक
तरीक़े पर पाया है और हम उनके नक्शे क़दम (पद-चिन्ह) पर चल रहे हैं।''
24 कहा, अगर मैं उस तरीक़े के मुक़ाबले में जिस पर तुमने अपने बाप-दादा
को पाया है, वह उस से कहीं सीधा रास्ता दिखाता हो, कहने लगे, ''तुम्हें जो
भी देकर भेजा गया है हम तो उसका इन्कार करते हैं।''
25 तो फिर 'हमने' उनसे बदला लिया, देखो कैसा अंजाम हुआ झुठलाने वालों
का!
26 और जब इब्राहीम ने अपने बाप और अपनी क़ौम के लोगों से कहा, ''जिनकी
तुम पूजा करते हो, मैं उनसे बेज़ार हूँ;
27 मगर जिसने मुझको पैदा किया है, 'वही' मुझको राह दिखाएगा;''
28 और यही बात अपनी औलाद में पीछे छोड़ गये ताकि वे उसकी ओर रूजूअ़
करें।
29 बल्कि 'हमने' उन (कुफ्फार) को और उनके बाप-दादा को ज़िन्दगी गुज़ारने
का सामान दिया, यहाँ तक कि उनके पास ह़क़ और खोल-खोल कर बताने
वाले रसूल आ गये।
30 और जब ह़क़ उनके पास आ गया तो उन्होंने कहा, ''यह तो जादू है, और
हम तो इसका इन्कार करते हैं।''
31 और वे कहते हैं, ''यह क़ुर्आन इन दो बस्तियों के किसी बड़े आदमी पर क्यों
नहीं उतारा गया;''
32 क्या यह लोग तुम्हारे रब की रह़मत को बाँटते हैं?'' दुनिया की ज़िन्दगी में
उनको ज़िन्दगी गुज़ारने के साधन (रोज़ी)'हमने' उनके बीच बांट दिये, और
'हमने' उनमें से कुछ लोगों को दूसरे कुछ लोगों पर दर्जे बुलन्द कर दिये हैं,
ताकि वे एक-दूसरे से काम लें, और तुम्हारे रब की रह़मत इससे कहीं ज़्यादा
बेहतर है, जिसे ये जमा कर रहे हैं।
33 और अगर यह बात न होती कि सब इन्सान एक ही तरीक़े पर चल पड़ेंगे,
तो जो लोग रह़मान के साथ कुफ्र करते हैं उनके लिए हम उनके घरों की छतें
चाँदी की कर देते, और सीढ़ियां भी जिन पर वे चढ़ते;
34 और उनके घरों के दरवाज़े भी और तख़्त भी जिन पर तकिया लगाते हैं;
35 और सोने से भी उन्हें माला-माल करते, यह सब दुनिया की ज़िन्दगी का ही
सामान है, और आख़िरत तुम्हारे रब के यहाँ केवल मुत्तक़ियों (परहेज़गारों)
के लिए है;

36 और जो रह़मान के ज़िक्र से बेपरवाह हो जाता है, ‘हम’ उस पर एक शैतान मुसल्लत कर देते हैं तो वह उसका साथी बन जाता है;

37 और ये (शैतान) उनको अल्लाह की राह से रोकते हैं, और वे समझते हैं कि सीधी राह पर हैं;

38 यहाँ तक कि जब हमारे पास आएगा तो (शैतान से) कहेगा, ‘‘काश, मेरे और तेरे बीच पूरब के दोनों किनारों की दूरी होती! तू तो बहुत ही बुरा साथी निकला।’’

39 और जब तुम ज़ुल्म कर चुके हो तो यह बात तुम्हारे लिए कुछ भी फ़ायदा न देगी कि तुम अ़ज़ाब में एक-दूसरे के साझी हो;

40 क्या तुम बहरों को सुना सकते हो, या अन्धों को, और जो खुली गुमराही में पड़ा हुआ हो उसको (राह दिखाओगे)?

41 अगर हम तुम्हें उठा भी लें तब भी ‘हम’ उन लोगों से बदला ले कर रहेंगे,

42 या ‘हम’ तुम्हें वह चीज़ दिखा देंगे जिसका ‘हमने’ उनसे वादा किया है, हमें उन पर पूरी क़ुदरत (सामर्थ्य) है।

43 तो तुम उस चीज़ को मज़बूती से थामे रहो, जिसकी तुम्हारी ओर वह़्य (प्रकाशना) की गई, बेशक तुम सीधी राह पर हो;

44 और यह (क़ुर्आन) तुम्हारे लिए और तुम्हारी क़ौम के लिए नसीह़त है, और बहुत जल्द तुम से पूछ-गछ होगी।

45 और आप से पहले जो ‘हमने’ रसूल भेजे थे, उनसे पूछ लें क्या ‘हमने’ रह़मान के सिवा भी कुछ मअ़बूद (उपास्य) ठहराए थे, कि उनकी इबादत की जाए?

46 और ‘हमने’ मूसा को अपनी निशानियों के साथ फिरऔ़न और उसके सरदारों के पास भेजा तो उन्होंने कहा, ‘‘मैं सारे संसार के रब का रसूल हूँ।’’

47 तो जब वह उनके पास हमारी निशानियां लेकर आये तो वे उनका मज़ाक़ उड़ाने लगे।

48 और ‘हम’ उनको एक से बढ़ कर एक निशानी दिखाते रहे और ‘हमने’ उन्हें अ़ज़ाब में पकड़ लिया, ताकि वे रूजूअ़ हो।

49 और कहते, ऐ जादूगर! अपने रब से हमारे लिए दुआ़ कर, जैसा उसने तुझसे वादा कर रखा है, बेशक ‘हम’ सीधी राह पर चलेंगे;

50 फिर जब भी ‘हम’ उन पर से अ़ज़ाब हटा लेते, तो वे अपना वादा तोड़ देते।

51 और फ़िरऔ़न ने अपनी क़ौम को पुकार कर कहा, ऐ मेरी क़ौम के लोगो! क्या मिस्र का राज्य मेरा नहीं और क्या यह नहरें मेरे नीचे नहीं बह रही हैं? क्या तुम देखते नहीं हो!

52 बेशक मैं बेहतर हूँ या यह व्यक्ति जो तुच्छ है, और साफ़ बोल भी नहीं पाता;

53 फिर ऐसा क्यों न हुआ कि उसके लिए ऊपर से सोने के कंगन डाले गये होते, या उसके साथ फ़रिश्तों के जत्थे उतरते जो साथ रहते;

54 तो उसने अपनी क़ौम के लोगों को मूर्ख बनाया और उन्होंने उसकी बात मान
ली, बेशक वे नाफ़रमान लोग थे;
55 जब उन्होंने 'हमें' गुस्सा दिलाया तो 'हमने' उनसे बदला लिया फिर उन सबको
डुबो दिया।
56 फिर 'हमने' उन्हें ऐसा बना दिया कि वह गये-गुज़रे हो गये, और बाद वालों
के लिए इबरत (मिसाल) बना दिया।
57 और जब मरयम के बेटे (ईसा) की मिसाल दी गई तो क्या देखते हैं कि उस
पर तुम्हारी क़ौम के लोग चिल्लाने लगे;
58 और कहने लगे, ''हमारे मअ़बूद (उपास्य) अच्छे हैं या वह (मसीह), उन्होंने
यह बात तुमसे केवल झगड़ने के लिए कही है, बल्कि वे तो हैं ही झगड़ालू
लोग;
59 वह (ईसा) तो बस एक बन्दे थे जिन पर 'हम' ने इन्आ़म किया और उन्हें
'हमने' बनी इस्राईल के लिए एक मिसाल बनाया।
60 और अगर हम चाहते तो तुममें से फ़रिश्ते पैदा कर देते, जो तुम्हारी जगह
ज़मीन पर (उत्तराधिकारी) होते।
61 और वह (ईसा) क़ियामत की बहुत बड़ी दलील है, तो तुम इसके बारे में सन्देह
न करो और मेरी पैरवी करो, यही सीधी राह है।
62 और शैतान तुम्हें इससे रोक न दे, वह तो तुम्हारा खुला दुश्मन है।
63 और जब ईसा स्पष्ट निशानियों के साथ आए, तो उन्होंने कहा, ''मैं तुम्हारे
पास हिकमत लेकर आया हूँ और इसलिए कि कुछ बातें,स्पष्ट कर दूँ, जिसके
बारे में तुम मतभेद कर रहे हो, तो तुम अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो।
64 बेशक अल्लाह मेरा 'रब' है और तुम्हारा भी 'रब' है, तो उसी की इबादत
करो, यही सीधी राह है।''
65 मगर उनमें के कितने ही गिरोहों ने आपस में विभेद किया, तो तबाही है उन
लोगों के लिए जिन्होंने ज़ुल्म किया, एक दुःख देने वाले अ़ज़ाब के दिन से।
66 क्या ये लोग इस बात के इन्तिज़ार में हैं कि उन पर वह घड़ी (क़ियामत) आ
जाए और उन्हें इसकी ख़बर भी न हो।
67 उस दिन सभी दोस्त आपस में एक दूसरे के दुश्मन होंगे, सिवाय मुत्तकियों
(परहेज़गारों) के।
68 ''ऐ मेरे बन्दो! आज न तुम्हें डर है और न तुम ग़मगीन होंगे।
69 जो लोग 'हमारी' आयतों पर ईमान लाए और मुस्लिम (आज्ञाकारी) हो गये;
70 ''दाख़िल हो जाओ जन्नत में, तुम और तुम्हारी पत्नियां, इज़्ज़त के साथ।''
71 उनके आगे सोने की तश्तरियाँ और प्याले गर्दिश करेगें और वहां वह सब कुछ
होगा, जो दिलों को भाए और आँखें जिससे लज़्ज़त पाएँ ''और तुम उसमें
हमेशा रहोगे।
72 और यह जन्नत, जिसके तुम मालिक बना दिये गये हो, तुम्हारे आ़माल का
बदला है।

73 तुम्हारे लिए उसमें बहुत से मेवे हैं जिसे तुम खाओगे।''
74 गुनहगार हमेशा जहन्नम के अ़ज़ाब में ही रहेंगे।
75 उनके अ़ज़ाब में कमी न होगी और वे उसमें निराश हो कर पड़े रहेंगे;
76 और 'हमने' उन पर जुल्म नहीं किया, बल्कि वे खुद (अपने ऊपर) जुल्म
करते रहे।
77 और पुकारेंगे, ''ऐ अधिकारी! तुम्हारा रब हमें मौत दे दे, वह कहेगाः तुमको
(इसी ह़ाल में) हमेंशा रहना है;''
78 ''हमने तुम्हारे सामने ह़क़ (सत्य) पेश किया था, मगर तुममें से अक्सर को
हक़ नागवार था।
79 क्या उन्होंने किसी बात को तय कर लिया है? अच्छा तो 'हमने' भी तय कर
लिया है।
80 क्या यह लोग समझते हैं कि 'हम' उनकी छिपी बातों और उनकी कानाफूसी
को सुनते नहीं हैं? क्यों नहीं! और 'हमारे' दूत (फ़रिश्ते) उनके पास सब
बातें लिखते रहते हैं;''
81 कह दीजिए, ''अगर रह़मान के कोई औलाद होती तो सबसे पहले मैं इबादत
करने वाला होता;
82 पाक है आसमानों और ज़मीन का रब, अर्श (सिंहासन) का मालिक उन बातों
का जो ये बयान करते हैं।
83 तो उनको छोड़ दो कि बहस में उलझे रहें और खेल में लगे रहें, यहां तक
कि उस दिन को देख लें जिससे उनको डराया जा रहा है।
84 और 'वही' आसमानों में भी इलाह (उपास्य) है, और (वही) ज़मीन में भी
और 'वही' ह़िकमत वाला, इल्म वाला है;
85 और बड़ी बरकत वाला है 'वह', जिसके क़ब्ज़े में आसमानों और ज़मीन और
उनके बीच की सभी चीज़ों की बादशाही है, 'उसी' को (क़ियामत की घड़ी का)
इल्म है और 'उसी' की ओर तुम लौटाए जाओगे।
86 और 'उसको' छोड़कर ये लोग जिन को पुकारते हैं, वे शफ़ाअ़त (सिफ़ारिश)
का अख़्तियार नहीं रखते, बस 'उसे' ही यह अधिकार ह़ासिल है जो ह़क़ की
गवाही दें, और वे लोग जानते हैं।
87 और अगर तुम उनसे पूछो, ''उन्हें किसने पैदा किया है?'' तो कहेंगे, ''अल्लाह
ने!'' फिर ये किस तरह फ़रेब में आ जाते हैं?
88 और उस (रसूल) ने फ़रियाद की ''ऐ मेरे रब! ये ऐसे लोग हैं, जो ईमान नहीं
लाते;
89 तो उनसे दरगुज़र कीजिए और कहिए, ''सलाम है तुम्हें!'' बहुत जल्द ही उन्हें
मालूम हो जाएगा।''

यह सूरः मक्की है, इस में अ़रबी के 1495 अक्षर, 349 शब्द, 59 आयतें और 3 रूकूअ़ हैं।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

1 ह़ामीम्,

2 स्पष्ट किताब की क़सम!

3 कि 'हमने' उसे एक मुबारक रात में उतारा, बेशक हम तो ख़बरदार करने वाले थे;

4 हर हि़क्मत वाले काम का फ़ैसला उसी रात में हुआ करता है;

5 हमारे खास हुक्म से, बेशक 'हम' ही रसूलों को भेजने वाले हैं।

6 आप के 'रब' की रह़मत की वजह से, वही सब कुछ सुनने वाला, जानने वाला है।

7 आसमानों और ज़मीन का 'रब' और जो कुछ इन दोनों के बीच है उसका भी, अगर तुम यक़ीन करते हो;

8 उसके सिवा कोई इलाह (उपास्य) नहीं; 'वही' ज़िन्दा करता और मौत देता है; तुम्हारा 'रब' और तुम्हारे गुज़रे हुए बाप-दादा का रब।

9 बल्कि यह लोग शक में पड़े खेल रहे हैं।

10 तो इन्तिज़ार करो उस दिन का जब आसमान से खुला हुआ धुआँ ज़ाहिर होगा!

11 जो लोगों पर छा जाएगा, यह है दुःख देने वाला अ़ज़ाब!

12 "ऐ 'हमारे' रब! हमसे इस अ़ज़ाब को दूर कर दे, हम ईमान लाते हैं।"

13 अब उनके लिए नसीह़त का मौक़ा कहाँ रहा, उनका ह़ाल तो यह है कि उनके पास साफ़ बताने वाला रसूल आ चुका है।

14 फिर भी उन्होंने उसकी ओर से मुँह मोड़ लिया और कहने लगे, "(यह तो एक) सिखाया पढ़ाया दीवाना है।"

15 हम कुछ देर के लिए अ़ज़ाब दूर भी कर दें तो तुम वही करोगे जो पहले कर रहे थे।

16 जिस दिन 'हम' बड़ी पकड़ में लेंगे, तो बेशक बदला लेकर रहेंगे।

17 और 'हमने' इससे पहले फ़िरऔ़न की क़ौम को आज़माइश में डाला था, और उनके पास एक बड़े दर्जे का रसूल आया।

18 कि "अल्लाह के बन्दों को मेरे हवाले करो, मैं तुम्हारे लिए एक अमानतदार रसूल हूँ।

19 और अल्लाह के मुक़ाबले में सरकशी न करो, मैं तुम्हारे लिए एक स्पष्ट प्रमाण लेकर आया हूँ!''

20 और मैं इससे अपने रब और तुम्हारे रब की पनाह (शरण) ले चुका हूँ कि तुम मुझे संगसार (पथराव) करके मार डालो।

21 और अगर तुम मेरी बात नहीं मानते तो तुम मुझसे अलग हो जाओ।''

22 तो उन्होंने अपने रब को पुकारा! कि यह गुनहगार लोग हैं।

23 अच्छा, आप रातों-रात मेरे बन्दों को लेकर चले जाइए, और आप का पीछा किया जाएगा।

24 और समुद्र को स्थिर छोड़ दीजिए, वह तो एक डूब जाने वाली सेना है।

25 उन्होंने कितने बाग़ और स्रोत छोड़े;

26 और खेतियाँ और उमदा ठिकाने;

27 और आराम के सामान जिनमें मज़े उड़ाया करते थे।

28 हम ऐसा ही मामला करते हैं और उन चीज़ों का वारिस 'हमने' दूसरे लोगों को बनाया।

29 फिर न तो उन पर आसमान और ज़मीन रोया और न उन्हें कोई मोहलत दी गई।

30 और 'हमने' बनी इस्राईल को ज़िल्लत की मार से छुटकारा दिलाया;

31 फ़िरऔ़न की ओर से, बेशक वह सरकश हद से गुज़र जाने वालों में से था।

32 और 'हमने' उनको जानते हुए दुनिया वालों के मुक़ाबले में चुन लिया।

33 और 'हमने' उन्हें निशानियों के ज़रिये वह चीज़ दी, जिनमें खुली हुई आज़माइश थी।

34 ये लोग बड़ी ज़ोरदारी से कहते हैं,

35 कि ''बस यह हमारी पहली मौत है, और इसके बाद हम उठाए जाने वाले नहीं।''

36 अगर तुम सच्चे हो, तो ले आओ हमारे बाप-दादा को।

37 क्या ये अच्छे हैं या 'तुब्बा' की क़ौम और वे जो तुम से पहले गुज़र चुके हैं? 'हमने' उन्हें तबाह कर दिया, बेशक वे गुनहगार थे।

38 और 'हमने' आसमानों और ज़मीन को और उनके बीच की चीज़ों को खेल के तौर पर नहीं बनाया।

39 'हमने' उन्हें हक़ (उद्देश्य) के साथ पैदा किया, मगर अक्सर लोग नहीं जानते।

40 निश्चय ही फ़ैसले का दिन उन सब का निश्चित समय है;

41 जिस दिन कोई अपना किसी अपने के कुछ काम न आएगा और न उन्हें कुछ मदद पहुँचेगी,

42 मगर जिस पर अल्लाह रह़म करे, वह तो बड़ा ज़बर्दस्त, रह़म करने वाला है।

43 बेशक ज़क्कूम (थूहड़) का वृक्ष,
44 गुनहगारों का खाना होगा,
45 गोया पिघली हुई धातु, वह पेट में खौलेगी;
46 जैसे गर्म पानी खौलता है;
47 "पकड़ो इसको और घसीटते हुए भड़कती आग के बीच तक ले जाओ;
48 फिर उसके सर पर खौलते हुए पानी का अ़ज़ाब उड़ेंल दो!"
49 मज़ा चख इसका, तू बड़ा ज़बर्दस्त (बलवान), इ़ज़्ज़त वाला है!
50 ये वही (दोज़ख) है, जिसके बारे में तुम लोग शक में पड़े हुए थे।"
51 बेशक डर रखने वाले लोग बेफ़िक्री की जगह में होंगे;
52 बाग़ों और स्रोतों में,
53 बारीक और मोटे रेशम के लिबास पहने आमने-सामने बैठे होंगे।
54 ऐसा ही (उनके साथ मामला होगा,) और हम साफ़ गोरी, बड़ी आँखों वाली औ़रतों से उनका निकाह (विवाह) कर देंगे।
55 वहाँ वे इत्मिनान से हर तरह के फल मँगवा रहे होंगे।
56 वहाँ वे मौत का मज़ा कभी न चखेंगे, सिवाय पहली मौत के, और (अल्लाह) उन्हें भड़कती हुई आग के अ़ज़ाब से बचा लेगा।
57 यह सब तुम्हारे 'रब' के फ़ज़्ल (अनुकम्पा) से हुआ, यही तो बड़ी कामियाबी है।
58 'हमने' तुम्हारी भाषा में इस (क़ुर्आन) को आसान बना दिया है ताकि ये लोग नसीह़त ह़ासिल करें।
59 अच्छा तुम भी इन्तिज़ार करो ये भी इन्तिज़ार कर रहे हैं।

## सूर-ए-जासिया

यह सूरः मक्की है, इस में अ़रबी के 2131 अक्षर, 492 शब्द, 37 आयतें और 4 रूकूअ़ हैं।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

1 ह़ामीम्,
2 इस किताब का उतारा जाना ज़बर्दस्त, ह़िक्मत वाले अल्लाह की ओर से है।
3 बेशक ईमान लाने वालों के लिए आसमान और ज़मीन में निशानियां हैं;
4 और तुम्हारी पैदाइश में, और उन जानवरों में भी जो उसने फैला रखे हैं, निशानियां हैं, यक़ीन करने वालों के लिए;

5 और रात और दिन के आने जाने में, और उस रिज़्क़ में जिसे अल्लाह
आसमान से उतारता है, फिर इस ज़मीन को उसके मुर्दा हो जाने के बाद
ज़िन्दा कर देता है और हवाओं की ग़र्दिश में भी, उनके लिए निशनियां हैं
जो अक़्ल से काम लें।
6 यह अल्लाह की आयतें हैं, जो हम ह़क़् के साथ तुमको सुना रहे हैं, तो
अब अल्लाह और उसकी आयतों के बाद वह कौन सी बात पर यह ईमान
लाएँगे?
7 तबाही है, हर झूठ गढ़ने वाले गुनहगार के लिए;
8 (कि) अल्लाह की उन आयतों को सुनता है जो उन्हें पढ़कर सुनायी जाती
हैं, (मगर) फिर घमंड के साथ अड़ा रहता है, जैसे कि उसने उनको सुना
ही नहीं, तो ऐसे व्यक्ति को दुःख देने वाले अ़ज़ाब की ख़ुशख़बरी दे दीजिए।
9 और जब हमारी आयतों में से कोई बात जान लेता है तो वह उनका मज़ाक़्
उड़ाने लगता है, ऐसे लोगों के लिए रूस्वा कर देने वाला अ़ज़ाब है।
10 इनके आगे जहन्नम है, और जो काम वे करते हैं वह उनके कुछ भी काम
आने वाला नहीं, और न वही उनके (काम आएँगे) जिनको उन्होंने अल्लाह
को छोड़ कर संरक्षक बना रखा है, और उनके लिए बहुत बड़ा अ़ज़ाब है।
11 यह (क़ुर्आन) हिदायत है, और जिन लोगों ने अपने 'रब' की आयतों का
इन्कार किया, उनके लिए हिला देने वाला दुःख- -दायी अ़ज़ाब होगा।
12 अल्लाह ही तो है जिसने समुद्र को तुम्हारे वश में कर दिया, ताकि उसके
हुक्म से नौकाएँ उसमें चलें, और ताकि तुम उसके फ़ज़्ल से (रोज़ी) ढूँढो;
और ताकि तुम शुक्रगुज़ार बनो,
13 और उसने आसमानों और ज़मीन की सारी चीज़ों को अपनी ओर से
तुम्हारी सेवा में लगा रखा है, इसमें निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो
सोच-विचार से काम लेते हैं।
14 जो लोग ईमान लाए उनसे कह दीजिए, जो लोग अल्लाह के दिनों की (जो
आ़माल के बदले के लिए तय है) उम्मीद नहीं रखते उनसे दरगुज़र करें, ताकि
'वह' उन लोगों को उनके आ़माल का बदला दे।
15 जो अच्छा अ़मल करता है तो अपने ही लिए करता है और जो बुरा अमल
करता है तो उसका वबाल उसी पर होगा, फिर तुम अपने 'रब' की ओर
लौटाए जाओगे।
16 और 'हमने' बनी इस्राईल को किताब और ह़िकमत और नबूवत दी थी, उनको
'हमने' पाक रोज़ी दी और दुनिया वालों पर फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) दी।
17 और 'हमने' उन्हें दीन के विषय में साफ़-साफ़ हुक्म दिया, फिर जो भी विभेद
उन्होंने किया इसके बाद कि उनके पास इल्म आ चुका था आपस की ज़िद

की वजह से, बेशक तुम्हारा ‘रब’ क़ियामत के दिन उनके बीच उन चीज़ों के बारे में फ़ैसला कर देगा, जिनमें वे आपस में इख़्तिलाफ़ करते रहे।
18 फिर ‘हमने’ तुमको एक स्पष्ट शरीअ़त पर (क़ायम) कर दिया, तो तुम उसी पर चलो और उन लोगों की इच्छाओं के पीछे न चलो, जो इल्म नहीं रखते।
19 ये अल्लाह के मुक़ाबले में तुम्हारे कुछ भी काम आने वाले नहीं, और ज़ालिम लोग एक-दूसरे के साथी हैं और अल्लाह मुत्तक़ियों (परहेज़गारों) का साथी है।
20 ये लोगों के लिए बसीरत (सूझ-बूझ) की बातें हैं, और हिदायत और रह़मत है उनके लिए जो यक़ीन करें।
21 क्या वे लोग, जिन्होंने बुराइयाँ की हैं, यह समझते हैं कि ‘हम’ उन्हें उन लोगों जैसा कर देंगे जो ईमान लाए और उन्होंने भले काम किये, उनका जीना और मरना एक जैसा हो जाए? बहुत बुरा फ़ैसला है जो ये कर रहे हैं।
22 और अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को हक़ (उद्देश्य) के साथ पैदा किया और ताकि हर नफ़्स (व्यक्ति) को उसकी कमाई का बदला दिया जाए, और उनके साथ ज़ुल्म न किया जाएगा।
23 क्या तुमने उस व्यक्ति को देखा जिसने अपनी इच्छा को अपना मअ़बूद (उपास्य) बना लिया है? जानने बूझने के बाद भी अल्लाह ने उसको गुमराह कर दिया और उसके कानों और दिल पर मुहर लगा दी और उसकी आँखों पर पर्दा डाल दिया, अब कौन है जो अल्लाह के बाद उसे राह पर ला सकता हो, फिर क्या तुम नसीह़त नहीं ह़ासिल करते?
24 और कहते हैं, “हमारी ज़िन्दगी तो बस दुनिया की ज़िन्दगी है, (यहीं) हमें मरना और जीना है, और हमें बस ज़माने की गर्दिश तबाह करती है, और उनके पास इसका कोई इल्म नहीं, केवल बस अट्कल की बातें करते हैं।
25 और जब उनके सामने ‘हमारी’ स्पष्ट आयतें पढ़ी जाती हैं, तो उनकी हुज्जत इसके सिवा और कुछ नहीं होती कि वे कहते हैं, “लाओ हमारे बाप-दादा को अगर तुम सच्चे हो।”
26 कह दीजिए, “अल्लाह ही तुम्हें ज़िन्दगी देता है, फिर ‘वही’ तुम्हें मौत देता है, फिर ‘वही’ तुमको क़ियामत के दिन जमा करेगा, और जिसके आने में कोई सन्देह नहीं, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते।
27 और आसमानों और ज़मीन की बादशाही अल्लाह ही की है, और जिस दिन वह घड़ी आएगी उस दिन झूठ वाले घाटे में होंगे।
28 और तुम हर गिरोह को घुटनों के बल झुका हुआ देखोगे, हर गिरोह अपनी किताब की ओर बुलाया जाएगा,आज तुम्हें उसी का बदला दिया जाएगा, जो तुम करते थे;
29 यह हमारी किताब है, जो तुम्हारे ह़क़ में ठीक-ठीक बोल रही है, हम लिखवाते रहे हैं जो कुछ तुम करते थे।”
30 तो जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किये, उन्हें उनका ‘रब’ अपनी रह़मत में दाख़िल करेगा, यही खुली हुई कामियाबी है।
31 और जिन लोगों ने इन्कार किया (उनसे कहा जाएगा), “क्या तुम्हें ‘हमारी’

आयतें पढ़कर नहीं सुनाई जाती थीं? मगर तुमने घमंड किया और तुम मुजरिम लोग थे।''

32 और जब कहा जाता था कि ''अल्लाह का वादा सच्चा है और उस घड़ी में कोई सन्देह नहीं,'' तो तुम कहते थे,'' 'हम नहीं जानते कि वह घड़ी क्या है? हम तो एक गुमान रखते थे, और हमें यक़ीन नहीं होता।''

33 और जो कुछ वे करते रहे उसकी बुराइयां उन पर ज़ाहिर हो गईं और जिस चीज़ का वे मज़ाक़ करते थे उनको उसी ने आ घेरा।

34 और कहा जाएगा, ''आज हम तुम्हें भुला देते हैं जिस तरह तुमने अपनी पेशी के इस दिन को भुला दिया था, तुम्हारा ठिकाना आग है और तुम्हारा कोई मदद्गार नहीं है।''

35 यह इस वजह से कि तुमने अल्लाह की आयतों की हंसी उड़ायी थी और दुनिया की ज़िन्दगी ने तुम्हें धोखे में डाल रखा था, तो आज वे न तो उससे निकाले जाएँगे, और न उनकी तौबः कुबूल की जाएगी।

36 तो सारी तअ़रीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं जो आसमानों का रब और ज़मीन का रब, (और) सारे संसार का रब है।

37 और आसमानों और ज़मीन में बड़ाई उसी के लिए है और वही ग़ालिब (प्रभुत्वशाली), हिक्मत वाला है।

## सूर-ए-अहक़ाफ़

यह सूरः मक्की है, इस में अ़रबी के 2709 अक्षर, 750 शब्द, 35 आयतें और 4 रूकूअ़ हैं।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

1 हामीम्,

2 (यह) किताब ज़बर्दस्त, हिक्मत वाले अल्लाह की ओर से उतारी गई है;

3 'हमने' आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ इन दोनों के बीच है उसे केवल हक़ के साथ और एक निश्चित मुद्दत (अवधि) तक के लिए पैदा किया है, और इन्कारियों को जिस चीज़ की नसीहत की जाती है उस से मुँह फेर लेते हैं।

4 कह दीजिए, ''क्या तुमने उनको देखा है, जिन्हें तुम अल्लाह को छोड़कर पुकारते हो? मुझे दिखाओ उन्होंने धरती की चीज़ों में से क्या पैदा किया है? या आसमानों में कोई उनकी साझेदारी है? मेरे पास इससे पहले की कोई किताब या कोई इल्मी प्रमाण ले आओ, अगर तुम सच्चे हो''

5 और उस व्यक्ति से बढ़कर गुमराह कौन हो सकता है, जो अल्लाह को छोड़कर
उन्हें पुकारता हो, जो क़ियामत तक उनको जवाब नहीं दे सकते, और वे
उनकी पुकार से बेख़बर हों;
6 और जब लोग इकट्ठा किये जाएँगे तो वे उनके दुश्मन होंगे और उनकी
इबादत का इन्कार करेंगे।
7 जब 'हमारी' स्पष्ट आयतें उन्हें पढ़ कर सुनायी जाती हैं, तो वे लोग जिन्होंने
इन्कार किया सत्य के विषय में, जबकि वह उनके पास आ चुका, कहते हैं,
''यह तो खुला जादू है।''
8 क्या यह कहते हैं, ''उसने इसे खुद ही गढ़ लिया है? कह दीजिए, ''अगर मैंने
इसे खुद गढ़ा है, तो अल्लाह के ख़िलाफ़ मेरे लिए तुम कुछ भी अधिकार नहीं
रखते, जिसके बारे में तुम बातें बनाने में लगे हो, वह उसे खूब जानता है,
और 'वही' मेरे और तुम्हारे बीच गवाही के लिए काफ़ी है, 'वह' बड़ा माफ़
करने वाला, रह़म वाला है।''
9 कह दीजिए, ''मैं कोई नया रसूल तो नहीं हूं, और मैं नहीं जानता कि मेरे
साथ क्या मामला किया जाएगा और (तुम्हारे साथ क्या मामला किया जाएगा,)
मैं तो केवल उस वह्य (प्रकाशना) की पैरवी करता हूँ, जो मेरी ओर वह्य
भेजी जाती है, और मैं तो बस स्पष्ट ख़बरदार करने वाला हूँ।
10 कह दीजिए, ''क्या तुमने यह भी सोचा कि अगर यह (क़ुर्आन) अल्लाह की
ओर से हुआ और तुमने उसका इन्कार किया, जबकि बनी इस्राईल में से एक
गवाह ने उसके एक भाग की गवाही भी दी, तो वह ईमान ले आया और तुम
घमंड में पड़े रहे, बेशक अल्लाह तो ज़ालिम लोगों को राह नहीं दिखाता।''
11 और जिन लोगों ने इन्कार किया, वे ईमान लाने वालों के बारे में कहते हैं,
''अगर यह (धर्म) अच्छा होता तो वे उसकी ओर हमसे आगे न बढ़ जाते,
और जब उन्होंने इससे राह नहीं पायी तो अब ज़रूर कहेंगे, ''यह तो पुराना
झूठ है!''
12 और इससे पहले मूसा की किताब रहनुमा और रह़मत बन कर आ चुकी है,
और यह किताब, अ़रबी भाषा में है, उसकी तस्दीक़ (पुष्टि) करती है, ताकि
उन लोगों को सचेत कर दे, जिन्होंने जुर्म किया और खुशख़बरी हो भले काम
करने वालों के लिए।
13 जिन लोगों ने कहा, ''हमारा 'रब' अल्लाह है, फिर वे उस पर जमे रहे, तो
उन्हें न तो कोई डर होगा और न वे ग़मगीन होंगे।
14 यही जन्नत वाले हैं, जहां वे हमेशा रहेंगे यह बदला होगा, उन कर्मों (आ़माल)
का जो वे करते रहे।
15 और 'हमने' इन्सान को अपने मां-बाप के साथ अच्छा व्यवहार करने की
ताकीद की है, उसकी माँ ने उसे तक्लीफ़ के साथ (पेट में) उठाए रखा और
उसे जना भी तक्लीफ़ के साथ, और उसके गर्भ की अवस्था में रहने और
दूध छुड़ाने की अवधि तीस माह (ढ़ाई वर्ष होती है); यहां तक कि जब वह
अपनी पूरी शक्ति (जवानी) को पहुंचा, और चालीस वर्ष का हुआ तो उसने

दुआ की, ''ऐ मेरे रब! मुझे तौफ़ीक़ दे कि मैं तेरे इस एहसान का शुक्र अदा करूँ, जो 'तूने' मुझ पर और मेरे माँ-बाप पर किये हैं, और नेक काम करूँ जो तुझे पसंद हैं और मेरी औलाद को भी मेरे लिए नेक बना दे, मैंने 'तेरी' ओर रूजूअ़ किया और मैं मुस्लिम (आज्ञाकारी) हूँ।''

16 ऐसे ही लोग हैं जिनके 'हम' अच्छे काम, जो उन्होंने किये होंगे, क़ुबूल करेंगे और उनकी बुराइयों को दरगुज़र कर देंगे, इस हाल में कि वे जन्नत वालों में से होंगे, सच्चा वादा जो उनसे किया जाता रहा है।

17 और जिस व्यक्ति ने अपने मां - बाप से कहा, ''तुम पर उफ़ है! क्या तुम मुझे इससे डराते हो कि मैं (क़ब्र से) निकाला जाऊँगा, हालांकि मुझसे पहले कितनी ही नस्लें गुज़र चुकी हैं? और वे दोनों अल्लाह से फ़रियाद करते (हुए उससे कहते) हैं कि, ''अफ़सोस है तुझ पर! मान जा, अल्लाह का वादा सच्चा है तो वह कहता है, ''यह तो बस पहले के लोगों की कहानियाँ हैं।''

18 'यही' वे लोग हैं जिन पर अल्लाह का हुक्म (अ़ज़ाब) लागू हुआ,? उन उम्मतों में जो जिन्नों और इन्सानों में से उनसे पहले गुज़र चुकीं, बेशक वे तबाह होने वाले थे।

19 और उनमें से हर एक के दर्जे उनके अपने किये हुए कर्मों के अनुसार होंगे, ताकि 'वह' उन्हें उनके कर्मों का पूरा-पूरा बदला चुका दे, और उन पर ज़ुल्म हरगिज़ न किया जाएगा।

20 और जिस दिन काफ़िर आग के सामने पेश किये जाएँगे, (उनसे कहा जाएगा कि), ''तुम अपने हिस्से की अच्छी चीज़ें दुनिया की ज़िन्दगी में ले चुके और उनसे फ़ायदा भी उठा चुके, तो आज तुम्हें अपमानित करने वाला अ़ज़ाब दिया जाएगा, क्योंकि तुम ज़मीन में बिना किसी ह़क़ के घमंड करते रहे और इसलिए कि तुम नाफ़रमानी करते रहे।''

21 और याद करो, आ़द के भाई (हूद) को, जब उन्होंने अहक़ाफ़ में अपनी क़ौम के लोगों को ख़बरदार किया! और उनके आगे और पीछे भी ख़बरदार करने वाले गुज़र चुके थे, ''अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो, मुझे तुम्हारे बारे में एक बड़े दिन के अ़ज़ाब का डर है;''

22 कहा, ''क्या तू हमारे पास इसलिए आया है कि हमको हमारे मअ़बूदों (उपास्यों) से फेर दे? अच्छा तो हम पर ले आ, जिसकी तू हमको धमकी देता है, अगर तू सच्चा है।''

23 उन्होंने कहा, ''इल्म तो अल्लाह ही के पास है और मैं तो तुम्हें वह (पैग़ाम) पहुँचा रहा हूँ जो मुझे देकर भेजा गया है लेकिन मैं देख रहा हूँ कि तुम लोग जिहालत (अज्ञानता) में पड़े हुए हो।''

24 फिर जब उन्होंने उसे बादल के रूप में अपनी वादियों (घाटियों) की ओर आते देखा, तो कहने लगे, ''ये तो बादल है जो हम पर बारिश बरसाएगा!'' बल्कि (यह) वह चीज़ है जिसके लिए तुमने जल्दी मचा रखी थी, अर्थात आँध ी जिसमें दुःख देने वाला अ़ज़ाब है;

25 हर चीज़ को अपने रब के हुक्म से तबाह कर देगी तो उनका ह़ाल यही हुआ

कि उनके घरों के सिवा कुछ नज़र न आता था, गुनहगार लोगों को ‘हम’ इसी
तरह बदला देते हैं।
26 और ‘हमने’ उनको वह सत्ता दी थी, जो तुम लोगों को नहीं दीं, और ‘हमने’
उनको कान, आँखें और दिल दिये थे, मगर न उनके कान काम आए, न
उनकी आंखें और न उनके दिल, इसलिए कि वह अल्लाह की आयतों का
इन्कार करते थे और उनको घेर लिया उस चीज़ ने, जिसका वह मज़ाक़ उड़ाते
थे।
27 और ‘हम’ तुम्हारे आस-पास की बस्तियों को तबाह कर चुके हैं, हालांकि
‘हमने’ तरह -तरह से आयतें पेश की थीं, ताकि वे रूजूअ़ करें।
28 उन्होंने क्यों मदद न की, जिनको उन्होंने अल्लाह को छोड़कर निकट्ता के लिए
मअ़बूद (उपास्य) बना रखा था, बल्कि वे सब उनसे खो गये, यह उनका झूठ
था और उनकी गढ़ी हुई बातें थीं।
29 और जब ‘हमने’ कुछ जिन्नों को आपकी ओर मुतवज्जह किया कि कुर्आन
सुनें, तो जब वे उसके पास पहुंचे तो कहने लगे, “चुप हो जाओ! फिर जब
वह (पढ़ना) पूरा हो गया तो वे अपनी क़ौम की ओर ख़बरदार करने वाले
बनकर लौटे”।
30 (उन्होंने) कहा, “ऐ क़ौम! ‘हमने’ एक किताब सुनी है, जो मूसा के बाद उतारी
गयी है, पुष्टि करती है, उस किताब की जो पहले आ चुकी हैं, यह सत्य और
सीधी राह की ओर रहनुमाई करती है;
31 ऐ क़ौम! अल्लाह की ओर बुलाने वाले की बात मानो और ‘उस’ पर ईमान
लाओ, ताकि ‘वह’ तुम्हारे गुनाह माफ़ कर दे, और दुःख देने वाले अ़ज़ाब से
बचाए;
32 और जो व्यक्ति अल्लाह की ओर बुलाने वाले को न मानेगा, तो उसके बस
में नहीं है, कि ज़मीन में अल्लाह के काबू से निकल जाए, और न अल्लाह के
मुक़ाबले में कोई उसका मदद्गार होगा, ऐसे ही लोग खुली गुमराही में हैं।”
33 क्या उन्होंने देखा नहीं!, “कि जिस अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को पैदा
किया और उनके पैदा करने से थका नहीं; क्या ऐसा नहीं कि ‘वह’ मुर्दों को
ज़िन्दा कर दे, क्यों नहीं!! वह हर चीज़ पर कुदरत (सामर्थ्य) रखता है।
34 और जिस दिन वे लोग, जिन्होंने इन्कार किया, आग के सामने पेश किये
जाएँगे; (तो कहा जाएगा) “क्या यह ह़क़ नहीं है?” तो कहेंगे, “क्यों नहीं,
हमारे रब की क़सम,” हुक्म होगा, “तो अब अ़ज़ाब का मज़ा चखो, उस
इन्कार के बदले में जो तुम करते रहते थे।”
35 तो सब्र से काम लीजिए जिस तरह हिम्मत वाले पिछले रसूलों ने सब्र किया
था, और उनके लिए जल्दी न मचाइए, जिस दिन ये उस चीज़ को देख लेंगे
जिसका उनसे वादा किया जाता है, तो (महसूस करेंगे कि) जैसे बस दिन
की एक घड़ी भर ही ठहरे थे, यह (कुर्आन) पैग़ाम है, तो कौन तबाह होगा,
सिवाय नाफ़रमान लोगों के?

यह सूरः मदनी है, इस में अ़रबी के 2475 अक्षर, 558 शब्द, 38 आयतें और 4 रूकूअ़ हैं।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

1 जिन लोगों ने इन्कार किया, और अल्लाह के रास्ते से रोका, तो 'उसने' उनके कर्म को अकारथ कर दिया;

2 और जो ईमान लाए, और भले काम किये, और उस चीज़ पर ईमान लाए जो मुह़म्मद पर उतारा गया-और वही ह़क़ (सत्य) है उनके 'रब' की ओर से, 'उसने' उनकी बुराइयां उनसे दूर कर दीं और उनका ह़ाल ठीक कर दिया;

3 यह इसलिए कि जिन लोगों ने इन्कार किया वे बातिल (असत्य) पर चले, और जो लोग ईमान लाए, वह अपने 'रब' के बताए हुए सही रास्ते पर चले, इस तरह अल्लाह लोगों के लिए उनके ह़ाल बयान करता है;

4 तो जब तुम्हारा मुक़ाबला काफ़िरों (इन्कारियों) से हो, तो उनकी गर्दनें उड़ा दो, यहां तक कि जब उन्हें अच्छी तरह कुचल दो, तो (जो बचें) मज़बूती से क़ैद कर लो, फिर इसके बाद या तो एह़सान करो (और छोड़ दो) या फ़िदिया (अर्थ-दण्ड) का मामला करो, यहां तक कि वे लड़ाई में अपने हथियार डाल दें, यह है तुम्हारी ज़िम्मेदारी, और अगर अल्लाह चाहे तो खुद ही उनसे निपट ले, लेकिन 'उसने' चाहा कि तुम्हें एक-दूसरे के ज़रिये (लड़वा कर) आज़माए, और जो लोग अल्लाह की राह में मारे गये, तो उनके कामों को अल्लाह हरगिज़ अकारथ नहीं करेगा;

5 'वह' उनको राह पर लगाएगा और उनका ह़ाल ठीक कर देगा;

6 और उन्हें जन्नत में दाख़िल करेगा, जिसका ह़ाल 'उसने' बता रखा है।

7 ऐ लोगो, जो ईमान लाए हो! अगर तुम अल्लाह की मदद करोगे तो वह भी तुम्हारी मदद करेगा, और तुम्हारे क़दम जमा देगा।

8 और जिन लोगों ने इन्कार किया, तो उनके लिए तबाही है, और उनके कामों को अल्लाह अकारथ कर देगा;

9 यह इसलिए कि उन्होंने उस चीज़ को नापसंद किया जिसे अल्लाह ने नाज़िल किया, तो 'उसने' उनके कामों को अकारथ कर दिया।

10 क्या यह लोग धरती में चले-फिरे नहीं, ताकि देखते कि उनका कैसा अंजाम हुआ जो लोग उनसे पहले गुज़र चुके हैं? अल्लाह ने उन्हें तबाह कर दिया, और काफ़िरों (इन्कारियों) के लिए ऐसी ही तबाही है;

11 यह इसलिए कि जो लोग ईमान लाए उनका संरक्षक अल्लाह है, और काफ़िरों का संरक्षक (मदद्गार) कोई नहीं।

12 जो लोग ईमान लाए और अच्छे काम किये, ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके

नीचे नहरें बह रही होंगी, और जिन लोगों ने इन्कार किया; वे फ़ायदे उठा रहे हैं, और इस तरह खा रहे हैं जिस तरह जानवर खाता है, और उनका ठिकाना आग है।

13 और कितनी ही बस्तियां थीं, जो ताक़त में तुम्हारी उस बस्ती से, जिसने तुम्हें निकाल दिया, शक्ति में बढ़-चढ़ कर थीं 'हमने' उनको तबाह कर दिया, तो कोई उनका मदद्गार न हुआ।

14 तो क्या जो व्यक्ति अपने 'रब' की ओर से एक स्पष्ट प्रमाण पर हो, वह उन जैसा (हो सकता) है, जिन्हें उन का बुरा कर्म ही सुहाना लगता हो, और वे अपनी इच्छाओं के पीछे ही चलने लग गये हों?

15 जन्नत (की विशेषता,) जिसका मुत्तक़ियों से वादा किया गया है, यह है कि उसमें पानी की नहरें बह रही होंगी, जिसमें कोई बदलाव (बदबू) न होगा, और दूध की नहरें जिसका स्वाद (मज़ा) न बदलेगा, और ऐसे पीने (शराब) की नहरें होंगी जो पीने वालों के लिए बड़ी स्वादिष्ट होंगी, और साफ़-सुथरे शहद की भी नहरें होंगी, और उनके लिए हर तरह के फल होंगे, और उनके रब की ओर से मग्फ़िरत (क्षमा) है, (क्या ऐसे लोग) उन लोगों की तरह (हो सकते) हैं? जो हमेशा जहन्नम में रहने वाले हैं, और जिन्हें खौलता हुआ पानी पिलाया जाएगा, जो उनकी आँतों को टुकड़े-टुकड़े कर के रख देगा।

16 और उनमें से कुछ ऐसे भी हैं, जो तुम्हारी ओर कान लगाते हैं, यहाँ तक कि जब वे तुम्हारे पास से निकलते हैं, तो जिन लोगों को इल्म मिला है, उनसे कहते हैं, कि "उन्होंने (रसूल से) अभी क्या कहा था?" यही वे लोग हैं जिनके दिलों पर अल्लाह ने मुहर लगा दी है और यह अपनी इच्छाओं के पीछे चल रहे हैं।

17 और जिन लोगों ने सीधी राह अपनाई, 'उसने' उनकी सूझ-बूझ और बढ़ा दी, और उन्हें परहेज़गारी अ़ता फ़रमायी।

18 तो क्या अब यह लोग उस घड़ी (क़ियामत) के इन्तिज़ार में हैं कि उन पर अचानक आ जाए? उसकी निशानियां (तो ज़ाहिर ही हो चुकी हैं) जब वह आ जाएगी तो उस समय उन्हें नसीहत कहाँ (फ़ायदा देगी)?

19 तो जान लो! कि 'अल्लाह' के सिवा कोई इलाह(पूज्य)नहीं; और अपनी ग़ल्तियों के लिए मांफी मांगो, और मोमिन मर्दों और औरतों के लिए भी, और अल्लाह तुम्हारे चलने-फिरने को जानता है और तुम्हारे ठिकानों को भी।

20 और जो लोग ईमान लाए वे कहते हैं, "कोई सूरः क्यों नहीं उतरी? लेकिन जब एक पक्की सूरः उतर जाती है, जिसमें क़िताल (युद्ध) का उल्लेख होता है, तो तुम उन लोगों को देखते हो-जिनके दिलों में रोग है-कि वे तुम्हारी ओर इस तरह देखते हैं, जैसे किसी पर मौत की बेहोशी छा गई हो, तो अफ़सोस है उन पर!

21 (उनके लिए बेहतर है) हुक्म मानना, और ठीक बात कहना, फिर जब बात
पक्की हो जाए, तो अगर ये अल्लाह के लिए सच्चे साबित होते, तो उनके
लिए बहुत अच्छा होता।
22 (ऐ मुनाफ़िक़ो!) तुम से अजब नहीं कि अगर तुम हाकिम हो जाओ तो धरती
में बिगाड़ पैदा करो और अपने रिश्तों-नातों को तोड़ने लगो-
23 यही लोग हैं जिन पर अल्लाह ने लानत की, और उन्हें बहरा और (उनकी)
आँखों का अन्धा कर दिया;
24 तो क्या ये क़ुर्आन में सोच-विचार नहीं करते, या उनके दिलों पर ताले लगे
हैं?
25 वे लोग जो पीठ फेर कर पलट गये, इसके बाद कि उन पर सीधी राह स्पष्ट
हो चुकी थी, उन्हें शैतान ने सजा कर दिखाया और उसने उन्हें लम्बी (उम्र
का वादा) दिया।
26 यह इसलिए कि उन्होंने उस चीज़ को नापसंद किया जो अल्लाह ने उतारा,
कहा, ''हम कुछ मामलों में तुम्हारी बात मान लेंगे,'' अल्लाह उनकी छिपी बातों
को जानता है।
27 तो उस वक़्त क्या (हाल) होगा जब फ़रिश्ते उनके चेहरों और उनकी पीठों
पर मारते हुए उनकी रूहें कब्ज़ करेंगे,-
28 यह इसलिए कि यह उस पर चले जो अल्लाह को नाराज़ करने वाला था, और
उन्होंने 'उसकी' खुशी को नापसंद किया, तो 'उसने' उनके सारे काम अकारथ
कर दिये।
29 क्या उन लोगों ने जिनके दिलों में रोग है यह समझ रखा है कि अल्लाह उनके
कीनों (कपट) को, ज़ाहिर नहीं करेगा-
30 और अगर 'हम' चाहते तो तुम्हें उन लोगों को दिखा भी देते, फिर तुम उन्हें
उनकी सूरत ही से पहचान लेते, और तुम उन्हें उनकी बात-चीत से पहचान
लोगे, और अल्लाह तुम्हारे कामों को जानता है।
31 और 'हम' ज़रूर तुम्हारी आज़माइश करेंगे, यहां तक कि 'हम' उनको जान लें
जो जिहाद करने वाले और सब्र करने वाले हैं, और तुम्हारे हालात की जांच
कर लेंगे।
32 जिन लोगों ने इन्कार किया, और अल्लाह की राह से रोका, और रसूलों का
विरोध किया, इसके बाद कि उन पर हिदायत स्पष्ट हो चुकी थी, वे अल्लाह का
कुछ भी नुक़सान पहुंचाने वाले नहीं, और 'वह' उनका किया कराया अकारथ
कर देगा।
33 ऐ ईमान वालो! अल्लाह के हुक्म पर चलो, और रसूल की फ़रमाँबरदारी करो,
और अपने कामों को अकारथ न करो।
34 जिन लोगों ने इन्कार किया, और अल्लाह के रास्ते से रोका, और इन्कार
करने वाले ही रह कर मर गये, तो अल्लाह उन्हें हरगिज़ माफ़ न करेगा।
35 तो तुम हिम्मत न हारो और सुलह के लिए न बुलाओ और तुम्हारी ही जीत

होगी, और अल्लाह तुम्हारे साथ है और 'वह' तुम्हारे कामों को हरगिज़ अकारथ न करेगा।
36 दुनिया की ज़िन्दगी तो बस खेल और तमाशा है, और अगर तुम ईमान लाओ, और परहेज़गारी करते रहो, तो 'वह' तुम्हें तुम्हारा बदला देगा, और तुम से तुम्हारा माल न माँगेगा।
37 अगर 'वह' तुमसे तुम्हारा माल मांगे और तुमको तंग करे, तो तुम कंजूसी करने लगोगे, और 'वह' तुम्हारे खोट को निकाल बाहर कर देगा।
38 ऐ लोगो! जब अल्लाह की राह में खर्च करने के लिए बुलाए जाते हो, तो तुममें से ऐसे व्यक्ति भी हैं जो कंजूसी करने लग जाते हैं, और जो कंजूसी करता है वह वास्तव में अपने आप से कंजूसी करता है और अल्लाह तो ग़नी (निस्पृह) है और तुम मोहताज हो, और अगर तुम मुँह मोड़ोगे तो अल्लाह तुम्हारी जगह दूसरी क़ौम को ले आएगा; फिर वह तुम जैसे न होंगे।

## सूर-ए-फ़त्ह़

यह सूरः मदनी है, इस में अ़रबी के 1555 अक्षर, 568 शब्द, 29 आयतें और 4 रूकूअ़ हैं।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

1 (ऐ मुह़म्मद) 'हमने' आप को फ़त्ह़ (विजय) दी, फ़त्ह़ भी साफ़ खुली हुई;
2 ताकि अल्लाह आप के अगले पिछले गुनाह माफ़ कर दे, और आप पर अपनी नेअ़मतें पूरी कर दे और आप को सीधी राह पर चलाए;
3 और अल्लाह आप की ज़बर्दस्त मदद फ़रमाए।
4 'वही' है जिसने ईमान वालों के दिलों में सकीना (संतोष) उतारी, ताकि उनके ईमान के साथ, उनका ईमान और ज्यादा हो जाए, और अल्लाह ही की हैं आसमानों और ज़मीन की सभी सेनाएँ और अल्लाह खूब जानने वाला, ह़िक्मत वाला है।
5 ताकि 'वह' मोमिन मर्दों और मोमिन औ़रतों को ऐसी जन्नतों में दाख़िल फ़रमाए, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, वह उसमें हमेशा रहेंगे, और उनसे उनकी बुराइयां दूर कर दे, और यह अल्लाह के यहां बड़ी कामियाबी है।
6 और मुनाफ़िक़ (कप्टाचारी) मर्दों, और मुनाफ़िक़ औ़रतों, और मुश्रिक (बहुदेववादी) मर्दों और मुश्रिक औ़रतों को अ़ज़ाब दे, जो अल्लाह के बारे में बुरा गुमान रखते हैं उन्हीं पर बुरे हादसे हों, और अल्लाह का उन पर ग़ज़ब (प्रकोप) हुआ और 'उसने' उन पर लानत की, और उनके लिए जहन्नम तैयार कर रखी है, और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है।

7 और आसमानों और ज़मीन की सब सेनाएँ अल्लाह ही की हैं, और अल्लाह
बड़ी ताक़त वाला, हिक्मत वाला है।
8 'हमने' आपको गवाही देने वाला, खुशख़बरी सुनाने वाला और ख़बरदार करने
वाला बना कर भेजा है;
9 ताकि तुम लोग अल्लाह और 'उनके' रसूल पर ईमान लाओ, और उनकी मदद
करो, और उनका आदर करो और सुबह व शाम उस (अल्लाह) की तस्बीह़
बयान करो।
10 जो लोग आप से बैअ़त (वचन) करते हैं वे अल्लाह से बैअ़त करते हैं, अल्लाह
का हाथ है उनके हाथों पर, फिर जिसने वचन तोड़ा वह अपने वचन तोड़ने
का वबाल अपने ही ऊपर लेगा, और जो उस अह़द (प्रतिज्ञा) को पूरा करेगा
जो उसने अल्लाह से किया है, तो उसे 'वह' बहुत ज़ल्द बड़ा बदला देगा।
11 जो बद्दू (देहाती) पीछे रह गये थे, वे आप से ज़रूर कहेंगे, ''हमको हमारे
माल और हमारे घर वालों ने रोक (व्यस्त) रखा था; तो आप हमारे लिए माफ़ी
की दुआ़ कीजिए! यह लोग अपनी ज़बान से वह बातें कहते हैं जो उनके दिलों
में नहीं हैं, कह दीजिए, ''कौन है! जो अल्लाह के मुक़ाबले में तुम्हारे लिए
कुछ अधिकार रखता हो, अगर तुम को कोई नुक़्सान पहुँचाना चाहे या वह
तुम्हें कोई नफ़ा पहुंचाना चाहे? बल्कि जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसकी
ख़बर रखता है;
12 बल्कि तुमने यह गुमान किया कि रसूल और ईमान वाले अब कभी अपने घर
वालों में पलट कर न आ सकेंगे, और यह बात तुम्हारे दिलों को अच्छी मालूम
हुई, और तुमने बुरे गुमान किये, और तबाह होने वालों में हो गये।''
13 और जो व्यक्ति अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान नहीं लाया, तो ऐसे
काफ़िरों (इन्कारियों) के लिए 'हमने' (भड़कती हुई) आग तैयार कर रखी है।
14 और अल्लाह ही की है आसमानों और ज़मीन की बादशाही, 'वह' जिसे चाहे
माफ़ करे और जिसे चाहे अ़ज़ाब दे, और अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला,
रह़म वाला है।
15 जब तुम ग़नीमतों (धर्म युद्ध में मिलने वाले माल) को ह़ासिल करने के लिए
उनकी ओर चलने लगोगे, तो पीछे रहने वाले लोग कहेंगे, ''हमें भी इजाज़त दी
जाए कि हम तुम्हारे साथ चलें,'' ये चाहते हैं कि अल्लाह के कलाम (कथन)
को बदल दें, कह दीजिए, ''तुम हमारे साथ हरगिज़ नहीं चल सकते, अल्लाह
पहले ही यह बात कह चुका है,'' इस पर कहेंगे, ''(नहीं,) बल्कि तुम लोग
हमसे ह़सद (ईर्ष्या) कर रहे हो, (नहीं) बल्कि ये लोग बहुत कम समझते हैं।''
16 कह दीजिए उन पीछे रह जाने वाले बद्दुओं से, ''जल्द ही तुम्हें ऐसी क़ौम
की ओर बुलाया जाएगा जो बड़े लड़ने वाले हैं, तुम उनसे लड़ो या वे मुस्लिम
(आज्ञाकारी) हो जाएँ, अगर तुमने इस हुक्म को मान लिया तो अल्लाह तुम्हें
अच्छा बदला देगा, और अगर तुमने मुँह मोड़ा जैसा कि तुम पहले मुँह मोड़
चुके हो, तो वह तुम्हें दुःख देने वाला अ़ज़ाब देगा।''
17 न अन्धे पर कोई हरज (पाबन्दी) है, न लंगड़े पर कोई हरज है और न बीमार
पर कोई हरज है, जो व्यक्ति अल्लाह और उसके रसूल की पैरवी करेगा, उसे

'वह' ऐसी जन्नत में दाख़िल करेगा, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, और
जो मुँह फेरेगा तो 'वह' उसे दुखदायी अ़ज़ाब देगा।
18 अल्लाह मोमिनों से राज़ी हुआ, जब वे वृक्ष (दरख्त) के नीचे आप से बैअ़त
कर रहे थे, 'उसने' जान लिया जो कुछ उनके दिलों में था इसलिए 'उसने'
उन पर सकीना उतारी और बदले में उन्हें जल्द मिलने वाली फ़त्ह़ (विजय)
तय कर दी;
19 और बहुत सी ग़नीमतें जो उन्होंने हासिल कीं, और अल्लाह ज़बर्दस्त, ह़िक्मत
वाला है।
20 अल्लाह ने तुमसे बहुत सी ग़नीमतों का वादा किया है, कि तुम उनको ह़ासिल
करोगे, यह फ़त्ह़ तो उसने तुम्हें जल्द ही तय कर दी, और लोगों के हाथ
तुमसे रोक दिये और (इसलिए ऐसा किया) ताकि ईमान वालों के लिए एक
निशानी हो, और वह तुम को सीधी राह पर चलाए।
21 और (इस के अ़लावा) दूसरी और (विजय का भी वादा) है, और जिसकी तुम
क़ुद्‌रत (सामर्थ्य) नहीं रखते, उन्हें अल्लाह ने घेर रखा है, और अल्लाह को
तो हर चीज़ पर क़ुद्‌रत ह़ासिल है।
22 और अगर (मक्का के) काफ़िर आप से लड़ते तो ज़रूर पीठ फेर जाते, फिर
न कोई हिमायती पाते, न कोई मदद्‌गार।
23 यह अल्लाह की सुन्नत (नियम) है जो पहले से चली आ रही है, और अल्लाह
की सुन्नत में तुम हरगिज़ कोई तब्दीली (परिवर्तन) न पाओगे।
24 और ''वही'' तो है जिसने मक्का की घाटी में उनके हाथ तुमसे और तुम्हारे
हाथ उनसे रोक दिये, बाद इस के कि उन पर तुम्हें फ़त्ह़ दे चुका था, अल्लाह
उसे देख रहा था जो कुछ तुम कर रहे थे।
25 यह वही हैं जिन्होंने इन्कार किया और तुम्हें मस्जिदे ह़राम (कअ़बः) से रोक
दिया और क़ुर्बानी के जानवरों को भी इससे रोके रखा कि वे अपने ठिकानों
पर पहुँचें, अगर यह ख़याल न होता कि बहुत से मोमिन मर्द और मोमिन
औ़रतें मौजूद हैं, जिन्हें तुम नहीं जानते, उन्हें कुचल दोगे, फिर उनके सिल्‌सिले
में अंजाने में तुम पर इल्ज़ाम आएगा तो अल्लाह जिसे चाहे अपनी रह़मत में
दाख़िल कर ले, अगर ईमान वाले अलग हो गये होते तो उनमें से जिन लोगों
ने इन्कार किया उनको 'हम' ज़रूर दुःख देने वाला अ़ज़ाब देते।
26 जब काफ़िरों ने अपने दिलों में ज़िद (हठ) की और ज़िद भी नादानी की, तो
अल्लाह ने अपने रसूल पर और ईमान वालों पर सकीना (संतोष) उतारी और
उन्हें परहेज़गारी की बात का पाबन्द रखा, और वे इसी के ह़क़दार थे, और
अल्लाह तो हर चीज़ का जानने वाला है।
27 बेशक, अल्लाह ने अपने रसूल को हक़ के साथ सच्चा ख्वाब (सपना) दिखाया
था, ''अगर अल्लाह ने चाहा तो तुम ज़रूर मस्जिदे ह़राम (कअ़बः) में अमन
के साथ दाख़िल होगे, अपने सर के बाल मुड़ाते और कतरवाते हुए, तुम्हें कोई

डर न होगा, तो उसने जान ली वह बात जो तुमने नहीं जानी, तो उसने जल्द
हासिल होने वाली फ़त्ह़ तुम्हारे लिए तय कर दी।
28 'वही' तो है जिसने अपने रसूल को हिदायत (मार्ग दर्शन) और सच्चा दीन
देकर भेजा, ताकि तमाम दीनों पर उसको ग़ालिब (प्रभावी) कर दे और (हक़
ज़ाहिर करने के लिए) अल्लाह का गवाह होना ही काफ़ी है।
29 मुह़म्मद अल्लाह के रसूल हैं और जो लोग उनके साथ हैं, वे इन्कार करने
वालों पर सख़्त और आपस में रह़म दिल हैं, तुम उन्हें रूकूअ़ और सज्दे की
ह़ालत में पाओगे, और अल्लाह के फ़ज़्ल (कृपा) और ख़ुशी चाह रहे हैं, उनकी
पहचान उनके पेशानी (मस्तक) पर सज्दों का निशान है, उनकी यह विशेषता
तौरात में बयान हुई है, और इंजील में उनकी मिसाल इस तरह बयान हुई
है जैसे खेती, जिसने अपनी कोपल निकाली; फिर उसे शक्ति पहुँचाई तो वह
मोटी हुई और अपने तने पर सीधी खड़ी हो गयी, वह खेती करने वालों को
ख़ुश करती है, ताकि काफ़िर (इन्कार करने वाले) उनसे जलें अल्लाह ने उन
लोगों से जो उनमें से ईमान लाए, और भले काम किये, उनसे अल्लाह ने
माफ़ी और बहुत बड़े बदले का वादा कर रखा है।

## सूर-ए-हुजरात

यह सूरः मदनी है, इस में अ़रबी के 1573 अक्षर, 350 शब्द, 18 आयतें और 2 रूकूअ़ हैं।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

1 ऐ ईमान वालो! अल्लाह और उसके रसूल से आगे न बढ़ो और अल्लाह से
डरो, बेशक अल्लाह सब कुछ सुनने वाला, जानने वाला है।
2 ऐ ईमान वालो! अपनी आवाज़ नबी की आवाज़ से ऊँची न करो और न
उससे इस तरह ऊँची आवाज़ से बोलो जिस तरह आपस में बोलते हो, कहीं
ऐसा न हो कि तुम्हारे आ़माल अकारथ हो जाएँ और तुम्हें ख़बर भी न हो।
3 जो लोग अल्लाह के रसूल के पास अपनी आवाज़ों को नीची करते हैं, वह
लोग हैं जिनके दिलों को अल्लाह ने परहेज़गारी के लिए जाँच लिया है, उनके
लिए माफ़ी और बड़ा बदला है।
4 जो लोग आप के हुजरों (कमरों) के बाहर से आप को पुकारते हैं, उनमें से
अक्सर अक़्ल नहीं रखते;
5 और अगर वे सब्र करते, यहां तक कि आप उनकी ओर निकल आते तो
उनके लिए बेहतर था, और अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, रह़म वाला है।
6 ऐ ईमान वालो! अगर कोई फ़ासिक़ (अवज्ञाकारी) तुम्हारे पास कोई ख़बर लाए

तो उसकी छानबीन कर लिया करो, कहीं ऐसा न हो कि तुम किसी गिरोह को अंजाने में तक्लीफ़ पहुँचा दो, फिर तुम को अपने किये पर पछताना पड़े।
7 और जान लो! कि तुम्हारे बीच अल्लाह के रसूल मौजूद हैं, अगर बहुत से मामलों में तुम्हारी बात मान लिया करें तो तुम तक्लीफ़ में पड़ जाओ, लेकिन अल्लाह ने तुम्हारे ईमान को मह़बूब (प्रिय) बनाया और उसकी तुम्हारे दिलों में सुन्दरता दे दी; और कुफ्र, और फ़िस्क़ (उल्लंघन और अवज्ञा) और नाफ़रमानी को तुम्हारे लिए नफ़रत की चीज़ बना दिया; यही लोग हैं जो नेक राह पर हैं।
8 अल्लाह का फ़ज़्ल (कृपा) और एह़सान है और अल्लाह खूब जानने वाला, ह़िक्मत वाला है।
9 और अगर ईमान वालों के दो गिरोह आपस में लड़ पड़ें तो उनके बीच सुलह़ कराओ, फिर अगर उनमें से एक गिरोह दूसरे पर ज़्यादती करे, तो जो गिरोह ज़्यादती करे उससे लड़ो, यहां तक कि वह अल्लाह के हुक्म की ओर पलट आएँ, फिर अगर वह पलट आएँ तो उनके बीच इन्साफ़ के साथ सुलह़ करा दो, और इन्साफ़ करो, कि अल्लाह इन्साफ़ करने वालों को पसंद करता है।
10 मोमिन तो आपस में भाई- भाई ही हैं, तो अपने भाइयों के बीच सुलह़ कराओ और अल्लाह से डरते रहो, ताकि तुम पर रह़म किया जाए।
11 ऐ ईमान वालो! कोई क़ौम किसी क़ौम का मज़ाक़ न उड़ाए, हो सकता है कि वे लोग उनसे बेहतर हों; और न औरतें दूसरी औरतों का (मज़ाक़ उड़ाएँ,) हो सकता है वे उनसे बेहतर हों; और न आपस में ताने दो, और न आपस में एक-दूसरे को बुरे लक़ब (उपाधियों) से पुकारो; ईमान लाने के बाद फ़िस्क़ (बुरा) नाम (रखना) बुरा है; और जो तौबः न करें, वे ज़ालिम हैं।
12 ऐ ईमान वालो! बहुत से गुमानों से बचो, क्योंकि कुछ गुमान ग़लत होते हैं, और न एक-दूसरे की टोह में पड़ो, और न तुममें से कोई किसी की पीठ पीछे बुराई करे- क्या तुममें से कोई इसको पसंद करेगा कि कोई अपने मरे हुए भाई का गोश्त खाए? तुम्हें तो इससे घिन ही आएगी। और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह तौबः क़ुबूल करने वाला, रह़म वाला है।
13 ऐ लोगो! 'हमने' तुमको एक ही मर्द और एक ही औरत से पैदा किया और तुम्हें बिरादरियों और क़बीलों का रूप दिया, ताकि तुम एक-दूसरे को पहचानो; अल्लाह के नज़दीक़ तुममें सबसे इ़ज़्ज़त वाला वह है, जो तुममें सबसे ज़्यादा मुत्तक़ी (परहेज़गार) हो, बेशक अल्लाह जानने वाला, ख़बर रखने वाला है।
14 बद्दुओं ने कहा, "हम ईमान ले आए," कह दीजिए, "तुम ईमान नहीं लाए, बल्कि यूँ कहो, 'हम इस्लाम लाए,' (आज्ञाकारी हुए') और ईमान तो अभी तुम्हारे दिलों के अन्दर दाख़िल नहीं हुआ, और अगर तुम अल्लाह और उसके रसूल की पैरवी (आज्ञापालन) करोगे तो वह तुम्हारे कर्मों में से कुछ कम न करेगा, बेशक अल्लाह माफ़ करने वाला, रह़म वाला है।"
15 मोमिन तो बस वही हैं जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाए, फिर शक में न पड़े, और अपने मालों और जानों से अल्लाह की राह में जिहाद किया, यही लोग सच्चे हैं।
16 कह दीजिए, "क्या तुम अल्लाह को अपना धर्म जतलाते हो, और अल्लाह

जानता है जो कुछ आसमानों में है, और जो कुछ ज़मीन में है और अल्लाह को हर चीज़ का इल्म है।
17 यह लोग तुम पर एहसान जताते हैं कि इस्लाम कुबूल कर लिया, कह दीजिए,
"मुझ पर अपने इस्लाम लाने का एहसान न रखो, बल्कि अगर तुम सच्चे हो
तो अल्लाह तुम पर एहसान रखता है कि 'उसने' तुम्हें ईमान की राह दिखाई;
18 बेशक अल्लाह आसमानों और ज़मीन के सभी छिपे हुए भेद को जानता है
और अल्लाह देख रहा है जो कुछ तुम करते हो।"

## सूर-ए-क़ाफ़

यह सूरः मक्की है, इस में अ़रबी के 1525 अक्षर, 376 शब्द, 45 आयतें और 3 रूकूअ़ हैं।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

1 क़ाफ़्; क़सम है कुर्आन मजीद की-
2 बल्कि इन्हें इस बात पर तअ़ज्जुब हुआ कि उनके पास उन्हीं में से एक सचेत करने वाला आया, फिर इन्कार करने वाले कहने लगे, "यह तो अ़जीब बात है;
3 क्या जब हम मर जाएँगे और मिट्टी हो जाएँगे (तो दोबारा ज़िन्दा किये जाएँगे)?- यह पलटना (ज़िन्दा होना) तो बहुत दूर की बात है।"
4 'हम' जानते हैं धरती उनमें जो कुछ (शरीर को खाकर) कम करती है, और 'हमारे' पास सुरक्षित रखने वाली एक किताब है।
5 बल्कि उन्होंने झुठला दिया जबकि ह़क़ उनके पास आ गया, इसलिए वे उलझन में पड़े हुए हैं।
6 क्या उन लोगों ने अपने ऊपर आसमान को नहीं देखा! 'हमने' उसको कैसे बनाया और सजाया, और इसमें कोई दराड़ नहीं;
7 और ज़मीन को 'हमने' फैलाया और इसमें पहाड़ डाल दिये और हर तरह की इसमें सुन्दर चीज़ें उगायीं;
8 (ताकि हर उस बन्दे की) आँख खोल दे और रूजूअ़ करने वाले के लिए नसीह़त हो।
9 और 'हमने' आसमान से बरकत वाला पानी उतारा, फिर उससे बाग़ और फसल के अनाज (भी जो काटी जाती हैं,)
10 और खजूर के वृक्ष उगाए जिनके गुच्छे तह पर तह होते हैं,
11 बन्दों की रोज़ी के लिए; और 'हमने' उस (पानी) से मुर्दा ज़मीन को ज़िन्दा कर दिया, इसी तरह (क़ियामत के दिन) निकलना होगा।

12 उनसे पहले नूह़ की क़ौम और अस्हाबुर्रस, और समूद झुठला चुके हैं;
13 और आ़द और फ़िरऔ़न और लूत के भाई भी;
14 और अल्-ऐका वाले और तुब्बा की क़ौम भी; इन सब ने रसूलों को झुठलाया,
तो 'हमारा' वादा उन पर पूरा हो कर रहा।
15 क्या 'हम' पहली बार पैदा कर के थक गये हैं?! (नहीं,) बल्कि यह एक नई
पैदाइश के बारे में शक में (पड़े हुए) हैं।
16 और 'हमने' इन्सान को पैदा किया है और 'हम' जानते हैं जो बातें उसके जी
में आती हैं, और 'हम' उससे, उसकी गर्दन की रग से भी ज़्यादा क़रीब हैं।
17 जब दो (फ़रिश्ते) लिखने वाले दाएँ और बाएँ बैठे रिकार्ड कर रहे होते हैं;
18 वह कोई भी शब्द नहीं निकालता मगर उसके पास एक निरीक्षक (निगरां)
मौजूद होता है।
19 और मौत की बेहोशी सत्य ले कर आ पहुँची, (ऐ इन्सान) यह है वह चीज़
जिससे तू भागता था।
20 और सूर (नरसिंघा) फूँका जाएगा, यही वह दिन है जिससे धमकाया गया था।
21 और हर व्यक्ति इस हाल में (हाज़िर होगा) कि इसके साथ एक हाँकने वाला
है और एक गवाही देने वाला।
22 इस चीज़ की ओर से तू ग़फ़लत में रहा, 'हमने' वह पर्दा हटा दिया जो तुझ
पर पड़ा था, इसलिए आज तेरी निगाह बहुत तेज़ है।
23 और उसके साथी (फ़रिश्ते) ने कहा, ''यह जो (आ़मालनामा) मेरे पास था,
हाज़िर है।''
24 ''डाल दो, जहन्नम में! हर काफ़िर दुश्मन को;
25 जो भलाई से रोकने वाला, सीमा का उल्लंघन करने वाला, शक में डालने वाला
था;
26 जिसने अल्लाह के साथ किसी दूसरे को मअ़बूद (उपास्य) ठहरा रखा था, तो
डाल दो इसको सख़्त अ़ज़ाब में।''
27 उसके साथी ने कहा, ''ऐ हमारे 'रब'! मैंने तो इसको सरकश नहीं बनाया था,
बल्कि यह खुद दूर की गुमराही में पड़ गया था।''
28 कहेगा, 'मेरे' पास झगड़ा न करो, 'मैं ने' तुम्हें पहले ही 'अपने' अ़ज़ाब से
ख़बरदार कर दिया था;
29 'मेरे' यहां बात बदली नहीं जाती और 'मैं' बन्दों पर हरगिज़ ज़ुल्म करने वाला
नहीं हूं।''
30 उस दिन 'हम' जहन्नम से पूछेंगे, ''क्या तू भर गयी?'' और वह कहेगी, ''क्या
कुछ और भी हैं?''
31 और जन्नत परहेज़गारों के क़रीब कर दी जाएगी, (जो) कुछ भी दूर न होगी;
32 'यही' है वह चीज़ जिसका तुमसे वादा किया जाता था हर रूजूअ़ करने वाले,
बड़ी निगरानी करने वाले के लिए;
33 जो 'रह़मान' से बिना देखे डरता रहा और रूजूअ़ होने वाले दिल के साथ
हाज़िर हुआ।''

34 “दाख़िल हो जाओ इस (जन्नत) में सलामती के साथ, यह हमेशा रहने का
दिन है;
35 वहां उनके लिए वह सब कुछ होगा जो  चाहेंगे, और ‘हमारे’ पास उससे
ज़्यादा (बहुत कुछ) है।
36 और उनसे पहले ‘हम’ कितनी ही नस्लों को तबाह कर चुके हैं, वह शक्ति में
इनसे कहीं बढ़-चढ़ कर थे; तो उन्होंने शहरों को छान मारा, तो उन्हें कहाँ
पनाह की जगह मिली?
37 बेशक इसमें नसीहत है, हर उस व्यक्ति के लिए जो ‘दिल’ रखता हो या
हाज़िर रह कर बात सुने।
38 और ‘हमने’ आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ उनके बीच है छः दिनों
में पैदा किया, और ‘हमें’ कोई थकान नहीं आई।
39 तो सब्र करो इनकी बातों पर, और पाकी बयान करो अपने ‘रब’ की प्रशंसा
के साथ; सूरज के निकलने और उसके डूबने से पहले,
40 और रात के कुछ हिस्से में भी उसकी पाकी बयान करो और सज्दों (नमाज़)
के बाद भी।
41 और कान लगा कर सुन लेना! जिस दिन पुकारने वाला बहुत क़रीब से
पुकारेगा,
42 उस दिन यह उस हौलनाक आवाज़ को सत्य के साथ सुनेंगे, वही निकल खड़े
होने का दिन है;
43 ‘हम’ ही ज़िन्दा करते हैं और ‘हम’ ही मौत देते हैं, और ‘हमारी’ ही ओर
लौटना है।
44 उस दिन धरती उनके ऊपर से फट जाएगी और वे तेज़ी से निकल रहे होंगे,
यह इकट्ठा करना ‘हमारे’ लिए बहुत आसान है।
45 ‘हम’ जानते हैं जो कुछ ये लोग कहते हैं, और आप उन पर ज़बर्दस्ती  करने
वाले तो नहीं हैं, तो इस क़ुर्आन के ज़रिये से नसीहत कीजिए जो हमारे वादे
से डरता हो।

## सूर-ए-ज़ारियात

यह सूरः मक्की है, इस में अ़रबी के 1551 अक्षर, 360 शब्द, 60 आयतें और 3 रूकूअ़ हैं।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

1 क़सम है, बिखेरने वालियों की, (हवाओं की जो गर्द उड़ाती हैं;)

2 फिर बोझ उठाती हैं;
3 फिर नर्मी के साथ चलती हैं;
4 फिर मामले को तक़्सीम करती हैं;
5 कि जिस चीज़ का तुमसे वादा किया जाता है, वह सच है;
6 और बदले का दिन निश्चित रूप से आकर रहेगा।
7 क़सम है! तह दर तह बादलों वाले आसमान की,
8 कि तुम भिन्न-भिन्न बातें करते हो,
9 इससे वही फिरते हैं जो (अल्लाह की ओर से) फेरा जाए।
10 मारे जाएँ अटकल से बातें करने वाले,
11 जो बेख़बरी में भूले हुए हैं,
12 पूछते हैं, ''बदले का दिन कब आएगा?''
13 उस दिन यह आग पर तपाए जाएँगे;
14 ''चखो मज़ा, अपने फ़ितने का! यही है जिसके लिए तुम जल्दी मचा रहे थे।''
15 बेशक अल्लाह से डरने वाले बाग़ों और स्रोतों में होंगे,
16 उनके 'रब' ने उनको जो कुछ प्रदान किया होगा, वे उससे ले रहे होंगे, बेशक वे इससे पहले नेक लोगों में से थे;
17 वे रातों में कम ही सोते थे,
18 और सुबह (भोर) के समय माफ़ी की दुआ करते थे,
19 और उनके मालों में माँगने वाले और महरूम (धनहीन) का हक़ होता है।
20 और ज़मीन में बड़ी निशानियां हैं यक़ीन करने वालों के लिए;
21 और खुद तुम्हारे अन्दर भी, क्या तुम देखते नही!
22 और आसमान में तुम्हारा रिज़्क़ भी है और वह चीज़ भी जिसका तुमसे वादा किया जा रहा है,
23 तो आसमानों और ज़मीन के 'रब' की क़सम! यह बात हक़ है, ऐसे ही जैसे तुम बोल रहे हो।
24 क्या इब्राहीम के इज़्ज़तदार मेहमानों की बात तुम तक पहुंची है;
25 जब वे उनके पास आए तो कहा, ''सलाम हो तुम पर,'' उन्होंने भी कहा, ''सलाम हो'' (आप लोगों पर भी) ''यह तो अजनबी लोग हैं,''
26 फिर वह (चुपके से) अपने घर वालों के पास गये, और एक मोटा ताज़ा बछड़ा (भून कर) ले आए।
27 तो उसको उनके सामने पेश किया, और कहा, ''क्या आप खाते नहीं?''
28 फिर उसने दिल में उनसे डर महसूस किया, उन्होंने कहा, ''डरिए नहीं'' और उनको इल्म वाले बेटे की खुशख़बरी सुनायी।
29 तो (यह सुन कर) उनकी पत्नी (चकित होकर) आगे बढ़ीं और अपने मुंह पर हाथ मारा, और कहने लगी, ''(मैं तो) एक बूढ़ी बाँझ हूँ (कैसे बच्चा पैदा होगा)!''

30 उन्होंने कहा, ‘‘ऐसा ही तेरे ‘रब’ ने कहा है, बेशक ‘वह’ बड़ी ह़िक्मत वाला, इल्म वाला है।’’
31 (इब्राहीम ने) कहा, ‘‘ऐ भेजे हुए रसूलो (दूतों) तुम्हारा क्या मतलब है।’’
32 उन्होंने कहा, ‘‘हम एक अपराधी क़ौम की ओर भेजे गये हैं,
33 ताकि उनके ऊपर पकी हुई मिट्टी के पत्थर बरसाएँ,
34 जो आप के ‘रब’ के यहां सीमा से गुज़रने वालों के लिए निशानज़द (नाम लिखे हुए पत्थर) हैं।’’
35 फिर ‘हमने’ ईमान वालों को वहां से निकाल दिया;
36 और वहाँ ‘हमने’ एक घर के सिवा मुसलमानों (आज्ञाकारियों) का कोई घर न पाया;
37 और ‘हमने’ वहां एक निशानी छोड़ दी, उन लोगों के लिए जो दुःख देने वाले अ़ज़ाब से डरते हों।
38 और मूसा के ह़ाल में भी (निशानी है) जबकि ‘हमने’ फ़िरऔ़न की ओर खुला हुआ मोजूज़ा (चमत्कार) देकर भेजा;
39 तो उसने (अपनी ताक़त के घमंड में) मुँह मोड़ा, और कहने लगा, ‘‘यह जादूगर है, या दीवाना।’’
40 तो ‘हमने’ उसको और उसकी सेनाओं को पकड़ लिया और उन्हें गहरे पानी में फेंक दिया, और वह था ही मलामत वाला।
41 और आ़द में भी (निशानी है), जबकि ‘हमने’ उन पर मन्हूस आँधी चलायी;
42 कि वह जिस चीज़ पर से गुज़री उसे चूर-चूर कर डाला।
43 और समूद में भी (निशानी) है, जबकि उनसे कहा गया, ‘‘एक समय तक मज़े उड़ा लो!’’
44 तो उन्होंने अपने रब के हुक्म को न माना, तो उनको (बिजली की) कड़क ने धर दबोचा और वे देखते ही रह गये,
45 फिर वे न खड़े हो सके और न अपना बचाव ही कर सके।
46 और नूह की क़ौम को भी इनसे पहले पकड़ा, बेशक वह नाफ़रमान लोग थे।
47 और आसमान को ‘हमने’ अपनी क़ुद्रत से बनाया और ‘हम’ इस से भी ज़्यादा उस्अ़त रखते हैं।
48 और धरती को ‘हमने’ ही बिछाया तो ‘हम’ क्या ही खूब बिछाने वाले हैं।
49 और ‘हमने’ हर चीज़ के जोड़े बनाए, ताकि तुम ध्यान दो।
50 तो तुम लोग अल्लाह की ओर दौड़ो मैं ‘उसकी’ ओर से एक खुला हुआ ख़बरदार करने वाला हूं,
51 और अल्लाह के साथ कोई मअ़बूद (उपास्य) न ठहराओ, मैं ‘उसकी’ ओर से एक खुला हुआ ख़बरदार करने वाला हूं।
52 इसी तरह उन लोगों के पास भी, जो इनसे पहले गुज़र चुके हैं; जो भी रसूल आए तो उन्होंने बस यही कहा, ‘‘जादूगर है या दीवाना!’’

53 क्या उन्होंने एक-दूसरे को इसकी वसीयत कर रखी है? (नहीं) बल्कि ये हैं ही
सरकश लोग।
54 तो आप इनसे रूख फेर ले, आप पर कोई मलामत नहीं है,
55 और याद दिलाते रहिए क्योंकि याद दिलाना ईमान वालों को फ़ायदा पहुँचाता
है?
56 और 'मैंने' तो जिन्नों और इन्सानों को केवल इसलिए पैदा किया है ताकि मेरी
इबादत करें।
57 मैं उनसे रोज़ी नहीं चाहता और न मैं यह चाहता हूँ कि वे मुझे (खाना)
खिलाएँ;
58 अल्लाह ही है रोज़ी देने वाला, बड़ा शक्तिशाली, मज़बूत।
59 तो जिन लोगों ने ज़ुल्म किया उनके लिए वैसा ही अ़ज़ाब का पैमाना है; जिस
तरह उनके साथियों का था (अ़ज़ाब का) तो यह जल्दी न मचाएँ!
60 तो इन काफ़िरों के लिए बड़ी तबाही है, जिस दिन का इनसे वादा किया जा
रहा है।

## सूर-ए-तूर

यह सूरः मक्की है, इस में अ़रबी के 1334 अक्षर, 319 शब्द, 49 आयतें और 2 रूकूअ़ हैं।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

1 क़सम है तूर की,
2 और ऐसी किताब की जो लिखी हुई है,
3 फैले हुए पन्नों में,
4 और बैतुल मामूर (फरिश्तों का आसमानी कअ़बः) की,
5 और ऊँची छत की,
6 और उमंड़ते हुए समुद्र की,
7 बेशक, तुम्हारे 'रब' का अ़ज़ाब आ कर रहेगा;
8 जिसे कोई टालने वाला नहीं,
9 जिस दिन आसमान थरथराने लगेगा,
10 और पहाड़ चलने लगेंगे (ऊन होकर),
11 तो तबाही है उस दिन झुठलाने वालों के लिए,
12 जो बहस में पड़े खेल रहे हैं।
13 जिस दिन वे धक्के देकर जहन्नम की ओर ले जाए जाएँगे।

14 ''यही है वह आग जिसको तुम झुठलाया करते थे,

15 तो क्या यह जादू तुम्हें सुझाई नहीं देता है-

16 जाओ, झुलसो इसमें, अब सब्र करो या न करो; तुम्हारे लिए बराबर है, तुम्हें बदले में वही दिया जा रहा है जो तुम करते रहे।''

17 बेशक, परहेज़गार, बाग़ों की नेअ़मतों में होंगे;

18 मज़े उड़ा रहे होंगे उन नेअ़मतों का जो उनके रब ने उनको दिया होगा, और उनके रब ने उन्हें जहन्नम के अ़ज़ाब से बचा लिया होगा।

19 ''खाओ और पिओ मज़े से अपने उन कामों के बदले में जो तुम करते रहे।''

20 क़तार से (पंक्तिबद्ध) तख्तों पर तकिया लगाए होंगे और 'हम' बड़ी आँखों वाली हूरों से उनका निकाह (विवाह) कर देंगे।

21 और जो लोग ईमान लाए और उनकी औलाद भी ईमान के साथ उनके पीछे चली, 'हम' उनकी औलाद को भी उनसे मिला देंगे, और उनके कर्मों में से कुछ भी कम न करेंगे, हर व्यक्ति अपने कमाई के बदले रहन (बन्धक, अर्थात फंसा हुआ) है।

22 और वे जिस तरह के मेवे और गोश्त की इच्छा करेंगे 'हम' उनको बराबर देते रहेंगे।

23 वहां वे आपस में एक-दूसरे से आगे बढ़ कर प्याले हाथों-हाथ ले रहे होंगे, जिसमें न कोई बेहूदगी होगी और न गुनाह (और न कोई उभारने) वाली बात;

24 और ऐसे खूबसूरत लड़के उनकी सेवा में लगे होंगे, जो गोया सुरक्षित मोती हों।

25 और उनमें से कुछ व्यक्ति कुछ व्यक्तियों की ओर ह़ाल पूछते हुए रूख करेंगे,

26 कहेंगे, ''इससे पहले हम अपने घर वालों में (अल्लाह से) डरते रहते थे;

27 तो अल्लाह ने हम पर एह़सान किया और हमें झुलूसा देने वाले अ़ज़ाब से बचा लिया;

28 इससे पहले हम 'उसको' पुकारते थे, बेशक 'वह' बड़ा ही एह़सान करने वाला और रह़म वाला है।''

29 तो आप याद दिलाते रहिए, अपने रब के फज़्ल (अनुग्रह) से, न आप काहिन (अभिचारक) हैं और न दीवाने।

30 क्या यह लोग कहते हैं, ''यह शायर है, जिसके लिए हम ज़माने की गर्दिश (कालचक्र) का इन्तिज़ार कर रहे हैं?''

31 कह दीजिए, ''तुम इन्तिज़ार करो! मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करता हूँ।''

32 क्या इनकी अक़्लें इनको ऐसी ही बातें सिखाती हैं, बल्कि यह हैं ही सरकश लोग?

33 क्या यह कहते हैं, "इसको इसने खुद ही गढ़ लिया है," हक़ीक़त यह है कि
यह ईमान ही नहीं लाना चाहते।
34 अगर यह सच्चे हैं तो इस जैसा कलाम (वाणी) ले आएँ।
35 क्या ये किसी के पैदा किये बिना पैदा हो गये हैं या खुद ही अपने को पैदा
करने वाले हैं?
36 क्या आसमानों और ज़मीन को इन्होंने पैदा किया है?- (नहीं,) बल्कि ये यक़ीन
ही नहीं रखते;
37 क्या इनके पास आप के 'रब' के ख़ज़ाने हैं? या इन पर उनका क़ब्ज़ा है?-
38 या इनके पास कोई सीढ़ी है जिस पर चढ़ कर वे सुन लेते हैं? फिर उनमें
से जिसने सुन लिया हो तो वह ले आए स्पष्ट प्रमाण;
39 क्या 'उसके' लिए बेटियां हैं, और तुम्हारे अपने लिए बेटे?-
40 क्या आप उनसे कोई उज्र (मज़दूरी) मांगते हैं कि वे इस तावान के बोझ से
दबे जा रहे हैं?-
41 या उनके पास ग़ैब (परोक्ष का इ़ल्म) है, जिसके आधार पर वे लिख लेते हैं?
42 क्या कोई चाल चलना चाहते हैं? तो जिन लोगों ने इन्कार किया वही चाल के
लपेट में आने वाले हैं।
43 क्या वे अल्लाह के सिवा उनका कोई और मअ़बूद (उपास्य) है, पाक है,
'अल्लाह' उन चीज़ों से जिनको ये उसका साझीदार ठहराते हैं।
44 और अगर ये लोग आसमान का कोई टुकड़ा गिरते हुए देख लेंगे तो कहेंगे,
"यह तो तह पर तह बादल हैं!"
45 तो उनको छोड़ दीजिए, यहां तक कि वे अपने उस दिन को पहुंच जाएं, जिस
दिन इनके होश उड़ जाएंगे;
46 जिस दिन न इनकी कोई चाल इनके काम आएगी और न इनको कोई मदद
मिल सकेगी;
47 और जिन लोगों ने ज़ुल्म किया उनके लिए एक अ़ज़ाब है (दुनिया में) और
उसके अ़लावा भी, लेकिन उनमें से अक्सर जानते नहीं।
48 और तुम अपने 'रब' का फ़ैसला आने तक सब्र से काम लो, तुम तो 'हमारी'
निगाह में हो, और अपने 'रब' की ह़म्द (प्रशंसा) के साथ पाकी बयान करो
जब भी तुम उठो;
49 और रात में भी 'उसकी' तस्बीह़ (गुणगान) करो, और सितारों के पीठ फेरने
(डूबने) के समय (सुबह) भी।

## सूर-ए-नज्म

यह सूरः मक्की है, इस में अ़रबी के 1450 अक्षर, 365 शब्द, 62 आयतें और 3

रूकूअ़ हैं।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु महादयालु) है।

1 क़सम है तारे की, जब वह नीचे आए (अर्थात डूबे),
2 तुम्हारे साथी (मुह़म्मद) न गुमराह हुए और न बहके हैं;
3 और न वह अपनी इच्छा से बोलते हैं;
4 यह तो बस एक वह़्य है, जो की जा रही है,
5 उनको ज़बर्दस्त शक्ति वाले ने सिखाया है।
6 ताक़तवर (अर्थात जिब्रईल) ने फिर वह (फ़रिश्ता असली सूरत में) नमूदार हुआ,
7 और वह ऊँचे किनारे (क्षितिज) पर थे;
8 फिर वह (फ़रिश्ता) क़रीब हुआ और आगे बढ़ा,
9 अब दो कमानों के बराबर या उससे भी ज़्यादा क़रीब हो गया।
10 तब 'उसने' अपने बन्दे की ओर वह़्य (प्रकाशना) की, जो कुछ भी वह़्य की,
11 उनके दिल ने देखी हुई चीज़ में कोई ग़लती नहीं की।
12 क्या तुम उस चीज़ पर उससे झगड़ते हो जिसको वह अपनी आँखों से देखता है?-
13 और उसने एक बार और भी इसको नाज़िल होते देखा है,
14 'सिद्‌रतुल मुन्तहा' (सातवें आसमान) के पास;
15 जिसके पास 'जन्नतुल्‌मावा' (ठिकाने वाली जन्नत) है-
16 जबकि छा रहा था उस सिद्‌रा पर, (अर्थात बेरी पर नूर) जो छा रहा था;
17 निगाह न बहकी और न ह़द से आगे बढ़ी।
18 उन्होंने अपने रब की बड़ी-बड़ी निशानियां देखीं।
19 क्या तुम लोगों ने 'लात' और 'उज़्ज़ा' को देखा?-
20 और वह जो तीसरी (देवी) मनात हैं?
21 क्या तुम्हारे लिए बेटे हैं और 'उसके' लिए बेटियाँ?
22 अगर ऐसा है तो यह बड़ी बेइन्साफ़ी है।
23 वे तो बस कुछ नाम हैं जो तुमने और तुम्हारे बाप-दादा ने रख लिए, अल्लाह ने उनके लिए कोई प्रमाण नहीं उतारा, ये लोग तो केवल गुमान के पीछे चल रहे हैं और उसके पीछे जो उनके मन की इच्छा होती है; हालाँकि उनके पास उनके 'रब' की ओर से हिदायत आ चुकी है।
24 क्या इन्सान वह कुछ पा लेगा जिसकी वह तमन्ना करता है?
25 और आख़िरत और दुनिया का मालिक तो अल्लाह ही है।

26 और आसमानों में कितने ही फ़रिश्ते हैं जिनकी सिफ़ारिश कुछ भी काम नहीं
आएगी, मगर उसके बाद कि अल्लाह इजाज़त दे, जिसे चाहे और पसंद करे।
27 जो लोग आख़िरत को नहीं मानते वे फ़रिश्तों को देवियों के नाम की मिसाल
(संज्ञा) देते हैं,
28 और उन्हें इसका कोई इल्म भी नहीं, वे केवल गुमान (अटकल) के पीछे चल
रहे हैं, और गुमान हक़ के बारे में ज़रा भी फ़ायदा नहीं देता।
29 तो आप उसकी ओर से ध्यान हटा लीजिए, जिसने 'हमारी' नसीहत से मुँह
फेरा और दुनिया की ज़िन्दगी के सिवा कुछ नहीं चाहा।
30 ऐसे लोगों के इल्म की सीमा यहीं तक है, आपका 'रब' उसे ख़ूब जानता है
जो 'उसकी' राह से भटका और 'वह' उसे भी खूब जानता है जिसने सीधी
राह अपनायी।
31 और अल्लाह ही का है, जो कुछ आसमानों में है; और जो कुछ ज़मीन में है,
ताकि जिन लोगों ने बुराई की 'वह' उन्हें उनके किये का बदला दे, और जिन
लोगों ने अच्छे काम किये उन्हें अच्छा बदला दे।
32 जो छोटे गुनाहों के सिवा बड़े-बड़े गुनाहों और खुली बेहयाई से बचते हैं-
बेशक तुम्हारे 'रब' के माफ़ी का दामन बहुत फैला हुआ है; 'वह' तुम्हें खूब
जानता है, जबकि 'उसने' तुम्हें धरती से पैदा किया और जबकि तुम अपनी
माओं के पेटों में भ्रूण अवस्था में (बच्चे) थे, तो अपने मन की पाकी और
निखार का दावा न करो, 'वह' ख़ूब जानता है कि कौन मुत्तक़ी (परहेज़गार)
है?
33 क्या तुमने उस व्यक्ति को देखा जिसने मुँह फेरा,
34 और थोड़ा देकर (फिर हाथ) रोक लिया;
35 क्या उसके पास ग़ैब (परोक्ष) का इल्म है कि वह उसे देख रहा है?
36 क्या उसे उन बातों की ख़बर नहीं पहुँची जो मूसा के सहीफ़ों (किताबों) में है?
37 और इब्राहीम की, जिन्होंने अपना कहना पूरा कर दिखाया,
38 यह कि 'कोई व्यक्ति दूसरे (के गुनाह) का बोझ न उठाएगा;'
39 और यह कि इन्सान को वही मिलता है जिसके लिए उसने कोशिश की;
40 और यह कि उसकी कोशिश (बहुत जल्द) देखी जाएगी,
41 फिर उसको पूरा-पूरा बदला दिया जाएगा;
42 और यह कि अन्त में पहुँचना तुम्हारे रब ही के पास है;
43 और यह कि 'वह' हँसाता और रूलाता है;
44 और 'वही' मारता और ज़िन्दा करता है।
45 और 'वही' है जिसने मर्द और औरत का जोड़ा पैदा किया,
46 एक नुत्फ़े (वीर्य) से, जब वह (रहम में) टपकाई जाती है;
47 और यह कि दूसरी बार भी पैदा करना 'उसी' के ज़िम्मे है;

48 और यह कि 'वही' धनी और पूंजीपति बनाता है;
49 और यह कि 'वही'शेअ़रा (नामक तारे) का 'रब' है।
50 और यह कि 'उसी' ने अगले आ़द को तबाह किया;
51 और समूद को भी, कि किसी को बाक़ी न छोड़ा,
52 और इनसे पहले नूह़ की क़ौम को भी, निश्चय ही वे बड़े ज़ालिम और सरकश थे।
53 और 'उसी ने' उल्टी हुई बस्तियों को भी गिरा दिया,
54 फिर उन पर (पथराव का मेह) जो छाया सो छाया;
55 तो अपने रब की किन-किन निशानियों पर झगड़ेगा?
56 यह ख़बरदार करने वाले हैं उन ख़बरदार करने वालों में से जो पहले आ चुके हैं।
57 क़रीब आने वाली (क़ियामत) क़रीब आ गई,
58 अल्लाह के सिवा कोई नहीं जो उसे (कष्ट को) दूर कर दे?
59 क्या इस बात पर तुम आश्चर्य करते हो?
60 और हँसते हो और रोते नहीं;
61 और तुम ग़फ़लत में पड़े हो।
62 तो अल्लाह के लिए सज्दः करो और ('उसी' की) इबादत करो।

## सूर-ए-क़मर

यह सूरः मक्की है, इस में अ़रबी के 1482 अक्षर, 348 शब्द, 55 आयतें और 3 रूकूअ़ हैं।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

1 वह घड़ी (क़ियामत) क़रीब आ गई और चांद फट गया;
2 और अगर (काफ़िर) कोई निशानी देखते हैं तो टाल जाते हैं, और कहते हैं, "यह तो जादू है पहले से चला आ रहा है।"
3 और उन्होंने झुठलाया और अपनी इच्छाओं के पीछे चले, और हर मामले के लिए एक निश्चित समय है।
4 और उनके पास उन (ऐतिहासिक घटनाओं) की ख़बरें पहुँच चुकी हैं जो झिंझोड़ने के लिए काफ़ी है।

5 इसमें पूरी ह़िक्मत भी है, मगर डराना उनके कुछ काम नहीं आता!-
6 तो उनसे रुख़ फेर लीजिए-जिस दिन पुकारने वाला उन्हें पुकारेगा एक सख़्त
नागवार चीज़ की ओर7 नीची आँखें किये हुए क़ब्रों से निकल पड़ेंगे, जैसे
बिखरी हुई टिड्डियां हैं;
8 उस पुकारने वाले की ओर दौड़ रहे होंगे, और काफ़िर कहेंगे, ''यह बड़ा सख़्त
दिन है!''
9 इनसे पहले नूह़ की क़ौम ने भी झुठलाया था, उन्होंने 'हमारे' बन्दे को झूठा
ठहराया और कहा, ''यह तो दीवाना है, और उन्हें बुरी तरह झिड़का भी।''
10 तो उन्होंने अपने 'रब' को पुकारा कि "मैं कमज़ोर हो गया हूँ, 'तू' ही मदद
फ़रमा"।
11 तब 'हमने' मूसलाधार पानी के दहाने आसमान से खोल दिये;
12 और ज़मीन से (पानी के) स्रोत बहा दिये, तो पानी उस काम के लिए मिल
गया जो मुक़द्दर हो चुका था।
13 और 'हमने' उसे एक तख़्तों और कीलों वाली (नौका) पर सवार किया;
14 वह 'हमारी' निगाहों के सामने चल रही थी- यह बदला था उस व्यक्ति के
लिए जिसकी क़द्र नहीं की गई।
15 और 'हमने' उस (नौका) को एक निशानी बनाकर छोड़ दिया; तो है कोई
नसीह़त ह़ासिल करने वाला?
16 तो कैसा रहा 'मेरा' अ़ज़ाब और कैसा रहा 'मेरा' डराना?
17 और 'हमने' क़ुर्आन को नसीह़त ह़ासिल करने के लिए आसान कर दिया, तो
है कोई नसीह़त ह़ासिल करने वाला?
18 आ़द ने भी झुठलाया था, फिर कैसा रहा मेरा अ़ज़ाब और 'मेरा' डराना?
19 'हमने' एक मन्हूस दिन जिसकी मन्हूसियत टलने वाली न थी, उन पर आँध
ी भेज दी,
20 वह लोगों को उखाड़ कर इस तरह फेंक रही थी कि जैसे उखड़े ख़जूर के
तने हों।
21 तो देखो! कैसा रहा 'मेरा' अ़ज़ाब और (कैसा रहा) 'मेरा' डराना?
22 और 'हमने' क़ुर्आन को नसीह़त लेने के लिए आसान बना दिया, तो है कोई
नसीह़त ह़ासिल करने वाला।
23 समूद ने भी चेतावनी करने वालों को झुठलाया;
24 फिर कहने लगे, ''एक अकेला आदमी, जो हम ही में से है, क्या हम उसके
पीछे चलेंगे? तब तो हम गुमराह और पागलों में होंगे;
25 क्या हममें से इसी पर नसीह़त उतरी है? (नहीं) बल्कि यह झूठा और घमंडी
है;''

26 ‘‘तो अब कल को मालूम हो जाएगा कि कौन झूठा और घमंडी है?
27 ‘हम’ ऊँटनी उनके लिए आज़्माइश बनाकर भेजने वाले हैं, तो उनको देखते रहो और सब्र करो;
28 और उनको बता दो कि पानी उनके बीच बांट दिया गया है, हर एक को अपनी बारी के दिन पानी पर आना है।’’
29 मगर उन्होंने अपने साथी को बुलाया, और उसने आगे बढ़कर उसकी कूँचे काट दीं।
30 तो देखो! कैसा रहा ‘मेरा’ अ़ज़ाब और (कैसा रहा) ‘मेरा’ डराना?
31 ‘हमने’ उन पर एक हौलनाक आवाज़ भेजी, तो वह बाड़ लगाने वाले की रौंदी हुई बाड़ की तरह चूरा होकर रह गये।
32 और ‘हमने’ क़ुर्आन को नसीह़त ह़ासिल करने के लिए आसान बनाया, तो क्या है कोई नसीह़त ह़ासिल करने वाला?
33 लूत की क़ौम ने भी चेतावनियों को झुठलाया था;
34 तो ‘हमने’ उन पर पत्थर बरसाने वाली हवा भेज दी, सिवाय लूत के घर वालों के; ‘हमने’ उनको प्रातः काल के समय बचा लिया;
35 अपनी ख़ास नेअ़मत (कृपा) से, इस तरह ‘हम’ बदला देते हैं, जो शुक्र करते हैं।
36 और उन्होंने ‘हमारी’ पकड़ से ख़बरदार कर दिया था, मगर वे चेतावनियों के बारे में संदेह में पड़े रहे।
37 और उनसे उनके मेहमानों को ले लेना चाहा, तो ‘हमने’ उनकी आँखें अन्धी कर दीं, ‘‘लो चखो, मेरे अ़ज़ाब और मेरी चेतावनियों का मज़ा!’’
38 और सुबह-सवेरे ही एक अटल अ़ज़ाब उन पर आ पहुँचा।
39 ‘‘तो चखो, मेरे अ़ज़ाब और मेरी चेतावनियों का मज़ा!’’
40 और ‘हमने’ क़ुर्आन को नसीह़त ह़ासिल करने के लिए आसान बनाया, तो है कोई नसीह़त हासिल करने वाला?
41 और आले फ़िरऔ़न के पास भी चेतावनी सुनाने वाले आए थे;
42 लेकिन उन लोगों ने ‘हमारी’ सारी निशानियों को झुठलाया, तो ‘हमने’ उनको पकड़ा जिस तरह एक ज़बर्दस्त; शक्ति-शाली पकड़ता है?-
43 क्या तुम्हारे काफ़िर उन लोगों से अच्छे हैं या किताबों में तुम्हारे लिए कोई छुट्कारा लिखा हुआ है?
44 क्या यह लोग कहते हैं, हमारा गिरोह बड़ा मज़बूत है?’’
45 जल्द ही यह जत्था हारे गा और ये लोग पीठ फेर कर भागेंगे।

46 बल्कि इनसे अस्ल वादा (तो क़ियामत का) है और (क़ियामत की) घड़ी बड़ी सख़्त और कड़वी होगी।
47 बेशक मुजरिम लोग गुमराही और अक़्ल की ख़राबी में (पड़े हुए) हैं,
48 उस दिन यह अपने मुँह के बल आग में घसीटे जाएँगे, "अब चखो मज़ा आग (की लपट) का!"
49 'हमने' हर चीज़ को अन्दाज़े (योजना) के साथ पैदा की है।
50 और 'हमारा' हुक्म तो बस एक बार में पलक झपकने की तरह लागू हो जाएगा।
51 और 'हम' तुम्हारे जैसे लोगों को तबाह कर चुके हैं, फिर है कोई नसीहत हासिल करने वाला?
52 और जो कुछ उन्होंने किया है, वह पन्नों में दर्ज हैं,
53 और हर छोटी और बड़ी बात लिख ली गयी है।
54 परहेज़गार बाग़ों और नहरों में होंगे।
55 सच्ची जगह में, एक बड़ी क़ुद्रत वाले मालिक के पास।

## सूर-ए-रहमान

यह सूरः मदनी है, इस में अ़रबी के 1683 अक्षर, 351 शब्द, 78 आयतें और 3 रूकूअ़ हैं।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

1 रह़मान (जो बहुत मेहरबान),
2 उसी ने क़ुर्आन सिखाया,
3 उसी ने इन्सान को पैदा किया,
4 उसी ने 'उसको' बोलना सिखाया,
5 सूरज और चांद एक हिसाब के पाबन्द हैं;
6 और सितारे और वृक्ष सज्दः करते हैं,।
7 और 'उसी ने' आसमान को ऊँचा किया और मीज़ान (सन्तुलन या तराज़ू) रख दिया,
8 ताकि तुम तौलने में कमी ज़्यादती न करो;
9 और इन्साफ़ के साथ वज़न को ठीक रखो और तौल में कमी न करो।
10 और 'उसी' ने ज़मीन को ख़ल्क़त (सृष्टि) के लिए बिछाई,
11 कि उसमें स्वादिष्ट फल हैं और खजूर के पेड़ हैं जिन पर ग़िलाफ़ होता है;

12 और अनाज है जिसमें भूसा होता है और खुशबूदार फूल होता है।
13 तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे?
14 'उसने' इन्सान को ऐसी मिट्टी से जो ठीकरे की तरह बजती थी पैदा किया;
15 और जिन्नों को 'उसने' आग के शोले से पैदा किया।
16 तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे?
17 'वही' दोनों पूरबों और दोनों पश्चिमों का 'रब' (है)।
18 तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे?
19 'उसने' दो समुद्रों को मिलाया, कि आपस में मिले हुए हैं;
20 उनके बीच एक पर्दा है कि दोनों आगे बढ़ नहीं सकते।
21 तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे?
22 इन दोनों (समुद्रों) से मोती और मूँगे निकलते हैं।
23 तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने रब की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे?
24 और 'उसीके' बस में हैं समुद्र में पहाड़ों  की तरह ऊँचे खड़े हुए जहाज़।
25 तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे?
26 ज़मीन पर जो भी है,फ़ना (नाशवान) होना है,
27 और तुम्हारे 'रब' की हस्ती बाक़ी रहने वाली है, (जो कि) अज़मत और इकराम (प्रतापवान, गरिमा) वाली है।
28 तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे?
29 आसमानों और ज़मीन में जो भी हैं सब 'उसी' से माँगते हैं, हर दिन वह एक नई शान में है (अर्थात हर समय किसी न किसी काम में रहता है)।
30 तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे?
31 ऐ दो भारी गिरोह! हम बहुत जल्द तुम्हारे लिए खाली हुए जाते हैं (अर्थात जल्द ध्यान देने वाले हैं)।
32 तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे?
33 ऐ जिन्न व इन्सान के गिरोह! अगर तुम आसमानों और ज़मीन की सरहदों

(सीमाओं) से निकल सकते हो, तो निकल जाओ; (मगर) तुम हरगिज़ नहीं निकल सकते बिना शक्ति के।
34 तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे?
35 तुम दोनों पर आग के शोले (अग्नि ज्वाला) और धुएं वाला अंगारा छोड़ दिया जाएगा, तो तुम अपना बचाओ न कर सकोगे।
36 तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे?
37 तो जब आसमान फट जाएगा और चमड़े की तरह़ लाल हो जाएगा।
38 तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे?
39 तो उस दिन न किसी इन्सान से उसके गुनाह के बारे में पूछा जाएगा और न किसी जिन्न से।
40 तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे?
41 मुजरिम अपने चेहरों से पहचान लिए जाएँगे और उन्हें माथे के बल और पैर पकड़ कर घसीटा जाएगा।
42 तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे?
43 यह वही जहन्नम है जिसे मुजरिम लोग झूठ ठहराते रहे।
44 वे उसके और खौलते हुए पानी के बीच चक्कर लगा रहे होंगे।
45 तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे?
46 और जो व्यक्ति अपने रब के सामने खड़ा होने से डरा, उसके लिए दो बाग़ हैं।
47 तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे?
48 दोनों बहुत घनी डालियों वाले होंगे;
49 तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे?
50 इन में दो स्रोत जारी होंगे।
51 तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे?
52 उनमें हर मेवे की दो क़िस्में होंगी।

53 तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे?
54 ऐसे बिछौनों पर तकिया लागाए बैठे होंगे जिनके स्तर गाढ़े रेशम के होंगे, और दोनों बाग़ों में फल क़रीब (झुके हुए) होंगे।
55 तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे?
56 इनमें निगाह बचाए रखने वाली औ़रतें (हूरें) होंगी, जिनको उनसे पहले न किसी इन्सान ने और न किसी जिन्न ने छुआ होगा।
57 तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे?
58 जैसे वे लाल (याक़ूत) और मरजान (मूँगा) हैं।
59 तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे?
60 भलाई का बदला भलाई के सिवा और क्या हो सकता है?
61 तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे?
62 और इन दोनों के अ़लावा दो बाग़ और भी हैं।
63 तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे?
64 दोनों ख़ूब गहरे हरे;
65 तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे?
66 इनमें दो स्रोत होंगे जोश मारते हुए।
67 तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे?
68 इनमें स्वादिष्ट फल और खजूर और अनार हैं;
69 तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे?
70 इनमें भली और सुन्दर औ़रतें होंगी।
71 तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे?
72 हूरें खेमों में रहने वाली।
73 तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे?

74 उनको उनसे पहले न किसी इन्सान ने छुआ होगा और न किसी जिन्न ने।
75 तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे?
76 वे हरे रेशमी गद्दों और नफ़ीस (असाधारण) कालीनों पर तकिया लगाए बैठे होंगे;
77 तो (ऐ जिन्नों व इन्सानों) तुम अपने 'रब' की कौन-कौन सी नेअ़मतों को झुठलाओगे?
78 बड़ा ही बरकत वाला नाम है आप के 'रब' का जो बड़ी रोअ़ब (प्रतापवान) और इ़ज़्ज़त वाला है।

## सूर-ए-वाक़िआ़

यह सूरः मक्की है, इस में अ़रबी के 1768 अक्षर, 384 शब्द, 96 आयतें और 3 रूकूअ़ हैं।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

1 जब घटित होने वाली (घड़ी) घटित हो जाएगी,
2 उसके घटित होने में कुछ भी झूठ नहीं,
3 किसी को पस्त करने वाली किसी को ऊँचा करने वाली;
4 जब धरती थरथरा कर काँप उठेगी,
5 और पहाड़ टूट-टूट कर रेज़ा-रेज़ा हो जाएँगे;
6 तो वे बिखरे हुए धूल (के ज़र्रे के रूप में) हो कर रह जाएँगे;
7 और तुम लोगों की तीन क़िस्में हो जाएँगी;
8 तो दाहिने (हाथ) वाले, तो दाहिने वालों का क्या कहना (अर्थात भाग्यशाली लोग)!
9 और बाएँ (हाथ) वाले तो बाएँ वाले, क्या (बुरे लोग) हैं! (अर्थात दुर्भाग्यशाली)।
10 और जो आगे बढ़ जाने वाले तो आगे बढ़ जाने वाले ही हैं;
11 वही (अल्लाह के) क़रीबी हैं,
12 नेअ़मत की जन्नतों में;
13 वे बहुत से अगले लोगों में से होंगे,
14 और पिछलों में से कम ही होंगे-
15 जड़ाऊ तख़्तों के ऊपर,
16 तकिया लगाए आमने-सामने होंगे,
17 उनके पास लड़के जो हमेशा नौजवान रहेंगे, उनके आस-पास फिरेंगे।

18 उनके पास आबख़ोरे (जग) और शुद्ध पीने (की चीज़) से भरे प्याले लिए फिर रहे होंगे-
19 इससे न तो उनके सर में दर्द होगा और न उनकी बुद्धि में ख़राबी आएगी;
20 और स्वादिष्ट फल जो उनको अच्छे लगेंगे,
21 और परिन्दों का गोश्त जो वे चाहें;
22 और बड़ी आंखों वाली हूरें;
23 जैसे छिपाए हुए मोती हों-
24 यह सब उसके बदले में उन्हें मिलेगा, जो कुछ वे करते रहे;
25 उसमें न कोई बकवास बात सुनेंगे और न गुनाह की बात,
26 सिवाय 'सलाम-सलाम' की पुकार के;
27 और दाहिनी ओर वाले, तो इन दाहिनी ओर वालों का क्या कहना?- (अर्थात सौभाग्य लोग)
28 वे (वहां होंगे जहां) बिना काँटो के बेर,
29 और गुच्छेदार केले;
30 और दूर तक फैले हुए साए (छाँव),
31 और बहता हुआ पानी,
32 और ज़्यादा से ज़्यादा फल (के बाग़ों) में,
33 (जो) न कभी टूटने (ख़त्म होने) वाला होगा, और न उस पर कोई रोक टोक होगी।
34 और ऊँचे बिछौने होंगे;
35 बेशक, 'हमने' इन (हूरों) की एक खास सृष्टि बनाई;
36 तो 'हमने' उन्हें कुंवारियाँ बनाया,
37 प्यारी और समान अवस्था (हम उम्र) वाली,
38 दाहिने ओर वालों (अर्थात भाग्यशाली लोगों) के लिए,
39 (यह) अगले लोगों में से भी बहुत से होंगे,
40 और पिछलों में से भी बहुत से।
41 और बाईं ओर वाले, क्या ही बुरे बाईं ओर वाले होंगे?-
42 गर्म हवा और खौलते हुए पानी में होंगे,
43 और काले धुएँ के साए में होंगे,
44 (जो) न ठंडा होगा और न फ़ायदेमन्द,
45 यह लोग इससे पहले खुशहाल थे,
46 और बड़े गुनाह पर अड़े रहते थे,
47 और कहते थे, "क्या जब हम मर जाएँगे, और मिट्टी, और हड्डियां हो कर रह जाएँगे, तो क्या हम वास्तव में उठाए जाएँगे?-
48 और क्या हमारे पहले बाप-दादा को भी?"
49 कह दीजिए, "बेशक अगले और पिछले भी;

50 (सब) एक निश्चित दिन के समय पर जमा किये जाएँगे;
51 फिर ऐ पथभ्रष्टो, और झुठलाने वालो!
52 तुम ज़क्कूम (थूहर नामक) वृक्ष से खाओगे,
53 इसी से पेट भरोगे,
54 तो इस पर खौलता हुआ पानी पियोगे,
55 पियोगे भी तो प्यासे ऊँट की तरह;"
56 यह बदला दिये जाने के दिन उनकी पहली मेहमानी होगी!
57 'हमने' तुमको पैदा किया, तो तुम सच क्यों नहीं मानते?
58 तो क्या तुमने विचार किया जो चीज़ (नुत्फ़े) तुम टपकाते हो?-
59 क्या तुम इसे आकार (पैदा कर) देते हो या 'हम' हैं आकार देने वाले?-
60 'हमने' तुम्हारे बीच मौत मुक़र्रर की है और 'हम' आ़जिज़ (असमर्थ्य) नहीं हैं,
61 कि तुम्हारी तरह के और लोग तुम्हारी जगह ले आएँ और तुम्हें ऐसी ह़ालत में उठा खड़ा करें, जिसे तुम जानते भी नहीं;
62 और तुम तो पहली पैदाइश को जानते हो, तो फिर तुम ध्यान क्यों नहीं देते?
63 क्या तुमने देखा! जो कुछ तुम खेती करते हो?-
64 तो क्या तुम उसे उगाते हो या 'हम' उसे उगाते हैं?
65 अगर 'हम' चाहें तो उसे चूर-चूर कर दें, और तुम बातें बनाते रह जाओ,
66 कि "हम तो तावान में पड़ गये,
67 बल्कि हम हैं ही मह़रूम (वंचित)।"
68 क्या तुमने उस पानी को देखा! जिसे तुम पीते हो?-
69 क्या तुमने उसको बादल से उतारा है, या उतारने वाले हम हैं?-
70 अगर 'हम' चाहें तो खारा कर दें, फिर तुम शुक्र क्यों नहीं करते?!
71 क्या तुमने उस आग को देखा जिसे तुम सुलगाते हो?
72 क्या तुमने उस वृक्ष को पैदा किया है, या उसके पैदा करने वाले 'हम' हैं?-
73 'हमने' ही तो इसको याद दिलाने और मुसाफ़िरों के फ़ायदे के लिए बनाया है;
74 तो आप अपने महान 'रब' के नाम की तस्बीह़ (गुणगान) कीजिए।
75 तो नहीं, 'मै' क़सम खाता हूँ सितारों के डूबने की जगहों की,
76 और यह बहुत बड़ी क़सम है, अगर तुम जानो;
77 कि यह इ़ज़्ज़त वाला क़ुर्आन है,
78 एक सुरक्षित किताब में दर्ज (अंकित) है,
79 इसको नहीं छूते मगर पाक-साफ़ लोग,
80 यह सारे संसार के 'रब' की ओर से उतारा गया है;
81 तो क्या तुम इससे सुस्ती करते हो?-

82 और अपना हिस्सा यही रखते हो कि (इसे) झुठलाते हो।
83 भला जब जान हलक़ तक पहुंचती है?-
84 और तुम उस समय देख रहे होते हो,
85 और 'हम' तुमसे ज़्यादा उससे क़रीब होते हैं, लेकिन तुम देख नहीं पाते हो;
86 तो अगर तुम किसी के अधीन नहीं हो (तो क्यों नहीं);
87 उस जान को लौटा लेते, अगर तुम सच्चे हो।
88 तो अगर वह (अल्लाह के) क़रीबियों में से हैं;
89 तो उसके लिए राहत, ख़ुशबू और नेअ़मत के बाग़ हैं।
90 और अगर वह दाहिने (हाथ) वालों में से है;
91 तो "सलामती है तेरे लिए कि तू दाहिने (हाथ) वालों में से है।"
92 और अगर वह झुठलाने वाले, गुमराह लोगों में से हुए;
93 तो मेहमानी गर्म पानी से होगी,
94 और उसका दाख़िला जहन्नम में होगा,
95 यह हक़ बात यक़ीन के लायक़ है।
96 आप अपने महान 'रब' के नाम की तस्बीह़ (गुणगान) करते रहिए।

## सूर-ए-ह़दीद

यह सूरः मदनी है, इस में अ़रबी के 2599 अक्षर, 586 शब्द, 29 आयतें और 4 रूकूअ़ हैं।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

1 अल्लाह की तस्बीह़ करती हैं सारी चीज़ें जो आसमानों, और ज़मीन में हैं,
और 'वही' ज़बर्दस्त, ह़िक्मत वाला है।
2 आसमानों और ज़मीन की बादशाही 'उसी' की है, 'वही' ज़िन्दा करता है और
मारता है, और 'वह' हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है।
3 'वही' अव्वल (पहला) भी है और आख़िर भी, ज़ाहिर भी और पोशीदा भी, और
'वह' हर चीज़ का इल्म रखने वाला है।
4 'वही' है जिसने आसमानों और ज़मीन को छः दिनों में पैदा किया, फिर अर्श
(सिंहासन) पर जा ठहरा (विराजमान हुआ), 'वह' जानता है जो चीज़ भी
ज़मीन में दाख़िल होती है और उससे निकलती है, और जो कुछ आसमान से
उतरती है, और जो कुछ उसमें चढ़ती है; 'वह' तुम्हारे साथ है, जहां कहीं भी
हो, और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे देखता है।

5 आसमानों और ज़मीन की बादशाही 'उसी' की है और सारे मामले 'उसी' की
ओर लौटते हैं;
6 ('वही') रात को दिन में दाख़िल करता है और दिन को रात में, दाख़िल करता
है और 'वह' सीनों में छिपी बात तक को जानता है।
7 ईमान लाओ अल्लाह और उसके रसूल पर और उसमें से खर्च करो जिसका
'उसने' तुम्हें नायब (अधिकारी) बनाया है; तो तुममें से जो लोग ईमान लाए
और खर्च करते रहे, उनके लिए बड़ा बदला है।
8 और तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह पर ईमान नहीं लाते, ह़ालांकि रसूल
तुम्हें अपने 'रब' पर ईमान लाने की दअ़वत दे रहे हैं और 'वह' तुमसे अ़हद
(प्रतिज्ञा) ले चुके है, अगर तुम मोमिन हो।
9 'वही' है जो अपने बन्दे पर स्पष्ट आयतें उतार रहा है, ताकि तुम्हें अन्धेरों से
निकाल कर रोशनी की ओर ले आए, बेशक अल्लाह तुम पर बड़ा मेहरबान,
रह़म करने वाला है।
10 और तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह की राह में खर्च न करो, हालांकि
आसमानों और ज़मीन की विरासत अल्लाह ही के लिए है? तुम में से जिन
लोगों ने (मक्का की) फ़त्ह़ (विजय) से पहले ख़र्च किया और लड़े वे (आपस
में एक-दूसरे के) बराबर नहीं हैं, वे तो दर्जे में उनसे बढ़ कर हैं, जिन्होंने
बाद में खर्च किया और बाद में लड़े; और अल्लाह ने हर एक से अच्छा वादा
किया है, और तुम जो कुछ करते हो, अल्लाह उसकी ख़बर रखता है।
11 कौन है, जो अल्लाह को क़र्ज़ दे? अच्छा क़र्ज़, कि 'वह' उसके लिए उसको
दो गुना कर दे; और उसके लिए इ़ज़्ज़त वाला बदला है।
12 उस दिन तुम मोमिन मर्दों और मोमिन औ़रतों को देखोगे कि उनका नूर
उनके आगे-आगे और उनके दाहिने ओर दौड़ रहा होगा; "आज तुम्हारे लिए
खुशख़बरी है जन्नतों की जिनके नीचे नहरें बह रही हैं, उनमें हमेशा रहना
है, यही बड़ी कामियाबी है।"
13 उस दिन मुनाफ़िक़ (कप्टाचारी) मर्द और मुनाफिक़ औरतें ईमान वालों से कहेंगे,
"थोड़ा रूको, हमारा इन्तिज़ार करो, कि हम भी तुम्हारे नूर से कुछ फ़ायदा
उठा लें!" कहा जाएगा, "अपने पीछे लौट जाओ, और रोशनी तलाश करो,"
इतने में उनके बीच एक दीवार खड़ी कर दी जाएगी, जिसमें एक दरवाज़ा होगा,
उसके अन्दर का ह़ाल यह होगा कि उसमें रह़मत होगी और उसके बाहर की
ओर अ़ज़ाब होगा।
14 वे उन्हें पुकार कर कहेंगे, "क्या हम तुम्हारे साथ नहीं थे।" वे कहेंगे, "क्यों
नहीं? मगर तुमने तो अपने आप को फित्ने में डाला, और इन्तिज़ार करते रहे,
और शक में पड़े रहे, और झूठी तमन्नाओं ने तुम्हें धोखे में रखा, यहां तक
कि अल्लाह का हुक्म आ गया और उस धोखेबाज़ (शैतान) ने तुम्हें अल्लाह
के मामले में धोखे में डाल रखा था,
15 तो आज न तुमसे कोई फ़िदिया (मुक्ति-प्रतिदान) क़ुबूल किया जाएगा और न

उन लोगों से जिन्होंने इन्कार किया, तुम्हारा ठिकाना दोज़ख़ है, वही तुम्हारा दोस्त है, और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है।"

16 क्या उन लोगों के लिए जो ईमान लाए अभी वह समय नहीं आया कि उनके दिल अल्लाह की याद के लिए, और 'उसके' उतारे हुए हक़ के आगे झुक जाएँ; और वे उन लोगों की तरह न हो जाएँ जिनको (उनसे) पहले किताबें दी गयी थीं, फिर उन पर लम्बी मुद्दत गुज़र गयी, तो उनके दिल सख़्त हो गये और उनमें से अक्सर नाफ़रमान ही हैं।

17 जान लो! कि अल्लाह ज़मीन को उसके मुर्दा होने के बाद ज़िन्दा करता है; 'हमने' अपनी निशानियां तुम्हारे लिए स्पष्ट कर दी हैं, ताकि तुम अ़क़्ल से काम लो।

18 सद्क़ा देने वाले मर्द और सदक़ा देने वाली औ़रतें, और वे जिन्होंने अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ दिया, उसको उन्हें कई गुना कर के दिया जाएगा, और उनके लिए इज़्ज़त वाला बदला है।

19 और जो लोग अल्लाह और 'उसके' रसूल पर ईमान लाए, वही अपने रब के यहां सिद्दीक़ (सच्चे) और शहीद हैं, उनके लिए उनका बदला भी होगा और नूर भी; और जिन लोगों ने इन्कार किया, और 'हमारी' आयतों को झुठलाया, वही जहन्नम वाले हैं।

20 जान लो! कि दुनिया की ज़िन्दगी बस खेल और तमाशा है, और ज़ीनत और तुम्हारा आपस में एक-दूसरे पर बड़ाई जताना, और माल और औलाद में एक- दूसरे से बढ़ जाने की चाह है; इसकी मिसाल बारिश की है जिससे खेती (वनस्पति) ने किसान का दिल मोह लिया, फिर वह लहलहाने लगती है, और तुम देखते हो कि वह पीली हो गयी है, फिर वह चूर-चूर हो जाती है, (अर्थात मड़ाई में); और आख़िरत में सख़्त अ़ज़ाब भी है और अल्लाह से माफ़ी भी, और रज़ामन्दी भी; और दुनिया की ज़िन्दगी तो बस धोखे का सामान है।

21 एक-दूसरे से आगे बढ़ो, अपने रब की माफ़ी और उस जन्नत की ओर जिसका फैलाव आसमान और ज़मीन के फैलाव जैसा है, वह उन लोगों के लिए तैयार की गयी है, जो अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान रखते हैं, यह अल्लाह का फज़्ल है, जिसे चाहता है अ़ता करता है, और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है।

22 कोई मुसीबत भी ज़मीन (मुल्क) पर नाज़िल नहीं होती और न तुम्हारे अपने ऊपर, मगर यह कि वह एक किताब में (लिखी हुई) है, इससे पहले कि 'हम' उसको पैदा करें, यह अल्लाह के लिए आसान है;

23 ताकि तुम उस चीज़ का अफ़्सोस न करो जो तुमसे जाती रही, और उस चीज़ पर न इतराओ जो उसने तुम को दिया हो और अल्लाह इतराने वालों और बड़ाई जताने वालों को पसंद नहीं करता।

24 जो खुद भी कंजूसी करते हैं और लोगों को कंजूसी करने पर उभारते हैं, और जो व्यक्ति मुँह फेरेगा तो अल्लाह बेनियाज़ (निस्पृह) और खूबियों वाला है।

25 'हमने' अपने रसूलों को स्पष्ट निशानियों के साथ भेजा, और उनके साथ

किताब और मीज़ान (तराज़ू) उतारा, ताकि लोग इन्साफ़ पर क़ायम हों; और लोहा भी उतारा, जिसमें बड़ी दहशत है, और लोगों के लिए बड़े फ़ायदे भी हैं, यह सब इसलिए किया गया है, ताकि अल्लाह जान ले कि कौन 'उसको' बिना देखे 'उसकी' और उसके रसूलों की मदद करता है, बेशक अल्लाह बड़ा ही शक्तिशाली, ज़बर्दस्त है।

26 और 'हमने' नूह़ और इब्राहीम को भेजा, और उन दोनों की नस्ल में नुबूवत और किताब को जारी रखा, तो उनमें से कुछ लोगों ने सीधी राह अपना ली, और बहुत से नाफ़रमान हो गये।

27 फिर 'हमने' उनके नक़्शेक़दम (पद्चिन्हों) पर और भी रसूल भेजे, और फिर मरयम के बेटे ईसा को भेजा और उनको इंजील दी, और जिन लोगों ने उनकी पैरवी की, उनके दिलों में 'हमने' ममता और दया डाल दी, और (लज़्ज़तों से) संन्यास (ले लिया), तो उन्होंने खुद एक नई बात निकाल ली 'हमने' उसे उनके लिए फर्ज़ (अनिवार्य) नहीं किया था, मगर अल्लाह को राज़ी करने की चाह में,(अपने आप ही ऐसा कर लिया था) फिर वे उसकी रिआ़यत न कर सके, जैसा कि रिआ़यत करने का ह़क़ था, तो उनमें से जो लोग ईमान लाए थे, उनका बदला 'हमने' उन्हें अ़ता किया, और उनमें से बहुत से नाफ़रमान ही हैं।

28 ऐ लोगो! जो ईमान लाए हो, अल्लाह से डरो और 'उसके' रसूल पर ईमान लाओ, 'वह' तुम्हें अपनी रह़मत का दोहरा ह़िस्सा अ़ता करेगा और तुम्हारे लिए एक नूर देगा, जिसमें चलोगे और तुम्हें माफ़ कर देगा, और अल्लाह माफ़ करने वाला, रह़म वाला है।

29 ताकि अह्ले किताब यह न समझें कि अल्लाह के फ़ज़्ल में से वे किसी चीज़ पर अधिकार न हासिल कर सकेंगे, और यह कि फ़ज़्ल तो अल्लाह ही के हाथ में है, जिसे चाहता है अ़ता करता है, और अल्लाह बड़ा फ़ज़्ल वाला है।

## सूर-ए-मुजादला

यह सूरः मदनी है, इस सूरः में अ़रबी के 2103 अक्षर, 479 शब्द, 22 आयतें और 3 रूकूअ़ हैं।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

1 अल्लाह ने सुन ली, उस औ़रत की बात, जो तुमसे अपने पति के बारे में झगड़ती थी, और अल्लाह से शिकायत कर रही थी और अल्लाह तुम दोनों की बात सुन रहा था, निश्चय ही अल्लाह सुनने वाला, देखने वाला है।

2 तुममें से जो लोग अपनी पत्नियों से ज़िहार कर बैठते हैं (अर्थात माँ के समान कह देते हैं), उनकी माएं वे नहीं हैं, उनकी माएं तो वही हैं जिन्होंने उनको

जन्म दिया, और बेशक वे एक बेहूदी और झूठी बात कहते हैं, और अल्लाह
माफ़ करने वाला, बख़्शने वाला है।
3 और जो लोग अपने पत्नियों से ज़िहार (अर्थात माँ कह) कर बैठें, फिर जो
बात उन्होंने कही थी उससे रूजूअ़ करें, तो इससे पहले कि दोनों एक-दूसरे
को हाथ लगाएं, एक गर्दन (अर्थात गुलाम) आज़ाद करनी होगी, (यह वह
बात है) जिसकी तुम को नसीहत की जाती है, और तुम जो कुछ करते हो,
अल्लाह उसकी ख़बर रखता है;
4 तो जिसको गुलाम हासिल न हो, तो वह लगातार दो माह के रोज़े रखे, इससे
पहले कि वे दोनों एक-दूसरे को हाथ लगाएं, फिर जिससे यह भी न हो सके
तो साठ मोहताजों को खाना खिलाए, यह इसलिए कि तुम अल्लाह और उसके
रसूल पर ईमान ले आओ, और यह अल्लाह की सीमाएं हैं, और इन्कार करने
वालों के लिए दुःख देने वाला अ़ज़ाब है।
5 जो लोग अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालिफ़त करते हैं, वे ऐसे ज़लील
होंगे, जैसे उनसे पहले लोग ज़लील हुए, और हमने स्पष्ट आयतें उतारीं, और
इन्कार करने वालों के लिए ज़िल्लत का अ़ज़ाब होगा;
6 जिस दिन उन सब को अल्लाह दोबारा ज़िन्दा करेगा, फिर उनका सब किया
हुआ उनको बतला देगा, अल्लाह ने उसको सुरक्षित कर रखा है, और यह
लोग उसको भूल गये हैं, और अल्लाह तो हर चीज़ पर गवाह है।
7 क्या आप ने नहीं देखा! कि अल्लाह जानता है जो कुछ आसमानों में है, और
जो कुछ ज़मीन में है, कभी ऐसा नहीं होता, कि तीन आदमियों की छिपी बात
हो, और उनके बीच चौथा 'वह' (अल्लाह) न हो, और न पांच (आदमियों)
की होती है जिसमें छटा 'वह' न होता हो, और न उससे कम की कोई होती
है और न उससे ज़्यादा की, मगर 'वह' उनके साथ होता है जहां कहीं भी हों,
फिर जो कुछ भी उन्होंने किया होगा क़ियामत के दिन 'वह' उन्हें बता देगा,
बेशक अल्लाह को हर चीज़ का इल्म है।
8 क्या तुमने उन्हें नहीं देखा!! जिन्हें काना फूसी से रोका गया था, फिर वे वही
करते रहे जिससे उन्हें रोका गया था, और यह तों गुनाह और ज़्यादती और
रसूल की नाफ़रमानी की कानाफूसी करते हैं, और जब तुम्हारे पास आते हैं
तो ऐसे दुआ़ देते हैं जैसे अल्लाह ने आप को दुआ़ नहीं दी, और अपने जी
में कहते हैं जो कुछ हम कहते हैं उस पर अल्लाह हमें अ़ज़ाब क्यों नहीं देता?
उनके लिए जहन्नम ही काफ़ी है, उसी में ये दाख़िल होंगे, वह तो बुरा ठिकाना
है।
9 ऐ ईमान वालो! जब तुम आपस में कानाफूसी करो तो गुनाह और ज़्यादती
और रसूल की नाफ़रमानी की बातें न करो, बल्कि भलाई और परहेज़गारी
की बातें करो, और अल्लाह से डरो 'जिसके' सामने तुम सब इकट्ठा किये
जाओगे,
10 यह कानाफूसियां शैतान की ओर से हैं ताकि ईमान वाले (उनसे) दुःखी हों,
हालांकि अल्लाह की इजाज़त के बिना वे उन्हें नुक़्सान नहीं पहुंचा सकते, और
मोमिनों को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए।

11 ऐ ईमान वालो! जब तुम से कहा जाए, "मज्लिसों में जगह कुशादा कर दो,
तो कुशादा कर दिया करो, अल्लाह तुम्हारे लिए कुशादगी पैदा कर देगा," और
जब कहा जाए, "उठ जाओ तो उठ जाया करो," तुममें से जो लोग ईमान
लाए, और जिनको इल्म दिया गया, अल्लाह उनके दर्जे को बढ़ा देगा, जो कुछ
तुम करते हो अल्लाह उसकी पूरी ख़बर रखता है।
12 ऐ ईमान वालो! जब तुम को रसूल से अकेले में बात करना हो, तो अपनी बात
से पहले सद्क़ा दे दिया करो, यह तुम्हारे लिए अच्छा और ज़्यादा पाकीज़ा
है, फिर अगर खैरात में तुम अपने को असमर्थ पाओ, तो अल्लाह बड़ा माफ़
करने वाला, रहम वाला है।
13 क्या तुम इससे डर गये कि अपनी सरगोशियों (गुप्त बातों) से पहले सदक़े
दो? तो जब तुमने ऐसा न किया और अल्लाह ने तुम्हें माफ़ कर दिया, तो
नमाज़ क़ायम करो ज़कात देते रहो, और अल्लाह और उसके रसूल की पैरवी
(अनुपालन) करो, और तुम जो कुछ भी करते हो, अल्लाह उसकी पूरी ख़बर
रखता है।
14 क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा! जिन्होंने ऐसे लोगों को दोस्त बनाया जिन
पर अल्लाह का ग़ज़ब हुआ, वे न तुममें से हैं, और न उनमें से हैं और वे
जानते-बूझते झूठी बात पर क़सम खाते हैं।
15 अल्लाह ने उनके लिए सख़्त अज़ाब तैयार कर रखा है, यह बुरे काम किया
करते थे।
16 उन्होंने अपनी क़समों को ढ़ाल बना रखा है, (और) अल्लाह की राह से रोकते
हैं, तो उनके लिए रूस्वा कर देने वाला अज़ाब है।
17 अल्लाह से बचाने के लिए न उनके माल उनके काम आएँगे, और न उनकी
औलाद ही, ये लोग आग वाले हैं, उसी में वे हमेशा रहेंगे।
18 जिस दिन अल्लाह उन सब को जिला उठाएगा, तो वे उसके सामने उसी तरह
क़समें खाएँगे जिस तरह तुम्हारे सामने क़समें खाते हैं, और समझते हैं कि वे
किसी बुनियाद पर हैं, बेशक यही झूठे हैं।
19 शैतान उन पर मुसल्लत हो गया, तो उसने अल्लाह की याद को भुला दिया,
यही लोग शैतान की पार्टी के हैं, सुन लो! शैतान की पार्टी ज़रूर घाटे में पड़ने
वाली है।
20 जो लोग अल्लाह और उसके रसूल का विरोध करते हैं वही ज़लील लोगों में
से हैं।
21 अल्लाह ने लिख दिया है, 'मै' और 'मेरे' रसूल ही विजयी रहेंगे, अल्लाह
ताक़त वाला, ग़ल्बा वाला (प्रभुत्वशाली) है।
22 तुम उन लागों को ऐसा कभी नहीं पाओगे, जो अल्लाह और अन्तिम दिन
(क़ियामत) पर ईमान रखते हैं, कि वे उन लोगों से मुहब्बत करते हों जिन्होंने
अल्लाह और उसके रसूल का विरोध किया हो, चाहे वे उनके बाप या बेटे, या
भाई, या उनके खानदान के लोग हों; ये वही लोग हैं जिनके दिलों में अल्लाह
ने ईमान को बिठा दिया है, और 'अपनी' ओर से रूह़ (आत्मा) के ज़रिये
उनकी मदद की है; 'वह' उनको ऐसी जन्नतों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे

नहरें बह रही होंगी, उनमें वे हमेशा रहेंगे, अल्लाह उनसे राज़ी हुआ, और वे अल्लाह से राज़ी हुए, यह लोग अल्लाह की पार्टी के हैं सुन लो! कि अल्लाह की पार्टी वाले ही कामियाब होने वाले हैं।

## सूर-ए-ह़श्र

यह सूरः मदनी है, इस में अ़रबी के 2016अक्षर, 455 शब्द, 24 आयतें और 3 रूकूअ़ हैं।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

1 अल्लाह की तस्बीह़ (गुणगान) की है, हर उस चीज़ ने, जो आसमानों और ज़मीन में है, और 'वह' ज़बर्दस्त, ह़िक्मत वाला है।

2 'वही' है जिसने उन लोगों को जो अह्ले किताब में से काफ़िर हुए, उनके घरों से पहली ही बार इकट्ठा करके निकाल दिया, तुम्हारा गुमान भी न था कि वे निकलेंगे और उन्होंने यह गुमान कर रखा था कि उनके क़िले उनको अल्लाह से बचा लेंगे, तो अल्लाह उन पर ऐसी जगह से पहुंचा जिसका उनको गुमान भी न था, और उनके दिलों में रोअ़ब डाल दिया, कि अपने घरों को खुद अपने हाथों और ईमान वालों के हाथों से भी उजाड़ने लगे, तो इबरत (नसीह़त) हासिल करो, ऐ आँखें रखने वालो!

3 और अगर अल्लाह ने उनके लिए जिला- वतन (देश से निकालना) न लिख दिया होता, तो दुनिया में ही 'वह' उन्हें ज़रूर अ़ज़ाब दे देता, और आख़िरत में तो उनके लिए है ही आग का अ़ज़ाब।

4 यह इसलिए कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल का मुक़ाबला करने की कोशिश की, और जो व्यक्ति अल्लाह का मुक़ाबला करता है, तो अल्लाह का अज़ाब बहुत सख़्त है।

5 तुम ने खजूर के जो वृक्ष काटे, या उनको उनकी जड़ों पर छोड़ दिया, तो यह अल्लाह ही की इजाज़त से हुआ, और ताकि 'वह' फ़ासिक़ों (नाफ़रमानों) को रूस्वा करे।

6 और जो (माल) अल्लाह ने उन लोगों से (बिना लड़ाई के) निकाल कर अपने रसूल को दिलवाया, तो उस पर तुमने न अपने घोड़े दौड़ाए, और न ऊँट, बल्कि अल्लाह अपने रसूलों को जिस पर चाहता है ग़लबा (प्रभुत्व) देता है, और अल्लाह को हर चीज़ पर कुद्रत (सामर्थ्य) ह़ासिल है।

7 जो माल अल्लाह ने अपने रसूल की ओर बस्तियों वालों से दिलवाया है, वह अल्लाह और रसूल, और रिश्तेदारों, और यतीमों, और मिस्कीनों, और मुसाफ़िरों के लिए है, ताकि यह माल तुम्हारे मालदारों ही के बीच न घूमता

रहे, और रसूल जो तुम्हें दें, वह ले लो और जिससे रोक दें, उससे रूक जाओ
और अल्लाह से डरते रहो, बेशक अल्लाह सख़्त सज़ा देने वाला है।
8 (यह) माल उन मोहताज मुहाजिरों के लिए है, जो अपने घरों और अपने मालों
से इस हालत में निकाल बाहर किये गये है, कि वह अल्लाह का फ़ज़्ल और
उसकी रज़ामन्दी चाहते हैं, और अल्लाह और उसके रसूल की मदद करते हैं,
यही लोग सच्चे हैं।
9 और जो लोग उनसे पहले (मदीना को) ठिकाना बनाए हुए थे, और ईमान पर
(जमे) थे, वे उन लोगों से मुहब्बत करते हैं, जो हिजरत कर के उनके पास
आए और जो कुछ भी उन्हें दिया गया, उससे वे अपने सीनों में कोई खटक
नहीं करते, और उनको अपने मुक़ाबले में तर्जीह़ (प्राथ्मिकता) देते हैं, चाहे
वह खुद ही ज़रूरतमन्द हों, और जो लोग अपने दिल की तंगी से बचा लिए
गये, तो ऐसे ही लोग कामियाब होने वाले हैं।
10 और जो उनके बाद आए, वे दुआ़ करते हैं, ''ऐ हमारे रब! हमें भी माफ़ कर
दे, और उन भाइयों को भी, जो हमसे पहले ईमान ले आए, और हमारे दिलों
में ईमान वालों के लिए कीना न रख, ऐ रब! तू बड़ा मेहरबान, रह़म करने
वाला है।''
11 क्या तुमने उन मुनाफिक़ों को नहीं देखा! जो अपने उन भाइयों को जो अह्ले
किताब में से काफ़िर हुए, कहते हैं, ''अगर तुम्हें देश से निकाला गया तो
हम भी तुम्हारे साथ निकलेंगे और तुम्हारे मामले में हरगिज़ किसी की बात
न मानेंगे, और अगर तुम लोगों से जंग की गयी तो हम ज़रूर तुम्हारी मदद
करेंगे, मगर अल्लाह गवाही देता है कि यह झूठे हैं;
12 अगर वे निकाले गये तो यह उनके साथ नहीं निकलेंगे, और अगर उनसे जंग
की गयी तो यह उनकी मदद नहीं करेंगे, और अगर मदद करेंगे भी तो पीठ
फेर कर भाग जाएँगे, फिर उनकी मदद नहीं की जाएगी।''
13 उनके दिलों में तुम्हारा डर अल्लाह से ज़्यादा है, यह इसलिए कि यह समझ
नहीं रखते।
14 यह इकट्ठा हो कर (आमने-सामने) नहीं, बल्कि क़िला बन्द बस्तियों में या
दीवारों के पीछे से लड़ेंगे, उनकी आपस में लड़ाई बड़ी सख़्त है, तुम समझते
हो! कि उनमें बड़ा एका है; हालाँकि उनके दिल फटे हुए हैं, यह इसलिए कि
ये बेअक़्ल लोग हैं।
15 उनका हाल उन लोगों का सा है जो उनसे कुछ ही पहले अपने किये का मज़ा
चख चुके हैं, और उनके लिए दुःख देने वाला अ़ज़ाब है;
16 इनकी मिसाल शैतान जैसी है, कि जब उसने इन्सान से कहा, ''कुफ़्र (इन्कार)
करो!'' फिर जब वह इन्कार कर बैठा; तो कहने लगा, ''मैं तुम्हारी ज़िम्मेदारी
से बरी हूं, मैं तो सारे संसार के रब, अल्लाह, से डरता हूँ।''
17 तो उन दोनों का अंजाम यह होना है कि दोनों आग में जाएँगे, उसी में वे
हमेशा रहेंगे, और ज़ालिमों का यही बदला है।
18 ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो, और हर व्यक्ति को यह देखना चाहिए कि

उसने कल के लिए क्या भेजा है, और अल्लाह से डरते रहो, जो कुछ भी तुम
करते हो, बेशक अल्लाह तुम्हारे आमाल की पूरी ख़बर रखता है।

19 और उन लोगों की तरह न हो जाना! जिन्होंने अल्लाह को भुला दिया, तो उन्हें
ऐसा कर दिया कि, वे अपने आप को भूल बैठे, यही लोग फ़ासिक़ (नाफ़रमान)
हैं।

20 दोज़ख़ वाले और जन्नत वाले बराबर नहीं हो सकते, जन्नत (में जाने) वाले
ही कामियाब होने वाले हैं।

21 अगर 'हम' इस क़ुर्आन को किसी पहाड़ पर उतारते, तो तुम उसको देखते
कि अल्लाह के डर से दबा हुआ, और फटा जा रहा है, और ये मिसालें 'हम'
लोगों के लिए इसलिए बयान करते हैं, ताकि वे सोच-विचार करें।

22 'वही' अल्लाह है जिसके सिवा कोई मअ़बूद (उपास्य) नहीं ग़ायब और हाज़िर
का जानने वाला, 'वह' बड़ा मेहरबान निहायत रह़म करने वाला है।

23 'वही' अल्लाह है जिसके सिवा कोई मअ़बूद (उपास्य) नहीं, वह बादशाह है
बड़ा पवित्र, पूरी तरह सलामती, और अम्न देने वाला, रक्षा करने वाला, ग़ालिब
(प्रभुत्वशाली), ज़बर्दस्त बड़ाई वाला, अल्लाह महान (पाक) है उस शिर्क से जो
वे करते हैं।

24 'वही' अल्लाह पैदा करने वाला (अविष्कारक), सूरतें बनाने वाला, उसके सब
अच्छे नाम हैं, जो चीज़ें भी आसमानों और ज़मीन में हैं, 'उसी' की तस्बीह़
कर रही हैं, और 'वह' बड़ा ज़ोर वाला, ह़िक्मत वाला है।

## सूर-ए-मुम्तह़िना

यह सूरः मक्की है, इस में अ़रबी के 1593 अक्षर, 370 शब्द, 13 आयतें, और 2 रूकूअ़ हैं।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

1 ऐ ईमान वालो! मेरे दुश्मनों को दोस्त न बनाओ, तुम उनसे दोस्ती का सम्बन्ध
बढ़ाते हो, हालांकि वे उस ह़क़ का इन्कार कर चुके हैं जो तुम्हारे पास आया
है; उन्होंने रसूल को, और उनको इस वजह से निकाल दिया, कि तुम अल्लाह
और अपने 'रब' पर ईमान लाए हो, अगर तुम 'मेरी' राह में जिहाद और
'मेरी' रज़ामन्दी ह़ासिल करने के लिए निकले हो (और), तुम छिपा कर उनकी
ओर दोस्ती का सन्देश भेजते हो, और जो कुछ तुम छिपा कर करते हो, और
जो कुछ ज़ाहिर कर के करते हो 'मैं' खूब जानता हूं, और जो कोई तुम में
से ऐसा करे, तो वह सीधी राह से भटक गया।

2 अगर ये तुम को पा लें, तो तुम्हारे दुश्मन हो जाएँ और तक्लीफ़ पहुंचाने के

लिए तुम पर अपने हाथ चला दें, और बुराई के साथ ज़बान भी, और चाहते हैं कि तुम भी काफ़िर (इन्कारी) हो जाओ।

3 तुम्हारी रिश्तेदारियाँ और तुम्हारी औलादें क़ियामत के दिन कुछ भी काम न आएँगी 'वह' तुम्हारे बीच फ़ैसला फ़रमाएगा, और तुम जो कुछ करते हो उसे अल्लाह देख रहा है।

4 तुम लोगों के लिए 'इब्राहीम' और उनके साथियों में बेहतरीन नमूना है, जबकि उन्होंने अपनी क़ौम के लोगों से कह दिया, ''हम तुम से और तुम्हारे उन मअ़बूदों (उपास्यों) से जिनको तुम अल्लाह को छोड़ कर पूजते हो, बिल्कुल बरी हैं, हमने तुमसे इन्कार किया और हमारे और तुम्हारे बीच हमेशा के लिए दुश्मनी और बेज़ारी ज़ाहिर हो गयी, जब तक कि तुम एक अल्लाह पर ईमान न लाओ;'' इब्राहीम ने अपने बाप से कहा कि मैं आप के लिए माफ़ी की दुआ़ करूंगा, और मैं आप के लिए अल्लाह की ओर से कोई अधिकार नहीं रखता, ऐ हमारे रब! हमने 'तेरे' ही ऊपर भरोसा किया और तेरी ही ओर रूजूअ़ हुए और तेरी ही ओर लौटना है;

5 ऐ हमारे रब! हमें काफ़िरों (इन्कार करने वालों) के लिए फ़ित्ना न बना, और ऐ हमारे रब! हमें माफ़ कर, बेशक 'तू' ज़ोर वाला, हिक्मत वाला है।

6 बेशक तुम्हारे लिए इन में अच्छा नमूना है, हर उस व्यक्ति के लिए, जो अल्लाह और आख़िरत के दिन की उम्मीद रखता हो, और जो कोई मुंह फेरे तो अल्लाह बे परवाह (निस्पृह) ह़म्द के लायक़ (प्रशंसित) है।

7 उम्मीद है कि अल्लाह तुम्हारे और उनके बीच, जिससे तुमने दुश्मनी मोल ली है, मुह़ब्बत पैदा कर दे, अल्लाह बड़ी क़ुद्रत रखता है, और अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला, रह़म वाला है।

8 अल्लाह तुम को अच्छा व्यवहार और इन्साफ़ करने से नहीं रोकता, जिन्होंने दीन के मामले में तुम से जंग नहीं की, और न तुम्हें तुम्हारे घरों से निकाला, अल्लाह इन्साफ़ करने वालों को पसंद करता है।

9 अल्लाह तो तुम्हें केवल उन्हीं लोगों से दोस्ती करने से रोकता है, जिन्होंने दीन के मामले में तुमसे जंग की, और तुम को तुम्हारे अपने घरों से निकाला और तुम्हारे निकालने में औरों की मदद की, और जो लोग उनसे दोस्ती करेंगे, वही ज़ालिम हैं।

10 ऐ ईमान वालो! जब तुम्हारे पास मोमिन औ़रतें हिजरत कर के आएं तो तुम उन्हें जांच लिया करो, अल्लाह उनके ईमान को बेहतर जानता है, फिर अगर तुम्हें मालूम हो जाए, कि मोमिन हैं, तो उन्हें काफ़िरों की ओर वापस न करो, न वे उन (काफ़िरों) के लिए ह़लाल हैं, और न वे उनके लिए ह़लाल हैं; और उन्होंने जो कुछ भी खर्च किया है, तो वह उन्हें अदा कर दो; और उन औ़रतों से निकाह़ करने में तुम पर कोई गुनाह नहीं, जबकि तुम उनके महर उनको अदा कर दो; और काफ़िर औ़रत को अपने निकाह में रोके न रखो, और जो कुछ तुमने उनके ऊपर खर्च किया हो, उसका तुम (काफ़िरों से) मुतालूबा (माँग) करो, और जो कुछ उन्होंने खर्च किया हो वह तुमसे मुतालूबा करें, यह

अल्लाह का हुक्म है, जो तुम्हारे बीच फ़ैसला कर रहा है, और अल्लाह इल्म वाला, हिक्मत वाला है।

11 और अगर तुम्हारी पत्नियों में से कोई पत्नी काफ़िरों की ओर रह जाए, और फिर तुम्हारी बारी आए तो जिनकी पत्नियां चली गयी हैं उनको उतना ही अदा कर दो, जितना उन्होंने खर्च किया था, और अल्लाह से डरते रहो, 'जिस' पर तुम ईमान लाए हो।

12 ऐ नबी! जब आप के पास ईमान वाली औरतें इस बात की बैअ़त (प्रतिज्ञा) करने आएँ, कि 'किसी चीज़ को अल्लाह का साझी नहीं ठहराएंगी, और न चोरी करेंगी, और न बदकारी (व्यभिचार) करेंगी, और न अपनी औलाद को मार डालेंगी, और न अपने हाथों पैरों से कोई आरोप (गढ़ कर) लाएंगी, और न किसी भले कामों में आप की नाफ़रमानी करेंगी', तो आप उनसे बैअ़त कर लिया करें, और उनके लिए माफ़ी की दुआ़ करें, बेशक अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला, रह़म वाला है।

13 ऐ ईमान वालो! उन लोगों को दोस्त न बनाओ, जिन पर अल्लाह का ग़ज़ब हुआ, वे आख़िरत से मायूस हो चुके हैं, जिस तरह काफ़िर क़ब्र वालों से मायूस हो चुके हैं।

## सूर-ए-सफ़्फ़

यह सूरः मदनी है, इस में अ़रबी के 991 अक्षर, 223 शब्द, 14 आयतें और 2 रूकूअ़ हैं।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

1 अल्लाह की तस्बीह़ की हर उस चीज़ ने, जो आसमानों में है, और ज़मीन में है, 'वही' ज़बर्दस्त, हिक्मत वाला है।

2 ऐ ईमान वालो! तुम वह बात क्यों कहते हो जो करते नहीं,

3 अल्लाह को यह बात सख़्त नापसंद है, कि ऐसी बात कहो जो करो नहीं।

4 बेशक अल्लाह उन से मुह़ब्बत करता है जो लोग अल्लाह की राह में क़तार बांध कर लड़ते हैं, मानो वे शीशा पिलाई हुई दीवार हैं।

5 और जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा, "ऐ मेरी क़ौम! तुम मुझे क्यों सताते हो, हालांकि तुम जानते हो, कि मैं तुम्हारी ओर भेजा हुआ अल्लाह का रसूल हूँ।" फिर जब उन्होंने टेढ़ अपनाई, तो अल्लाह ने भी उनके दिल टेढ़े कर दिये, और अल्लाह नाफ़रमानों को सीधी राह नहीं दिखाता।

6 और जब मरयम के बेटे ईसा ने कहा, "ऐ बनी इस्राईल! मैं तुम्हारी ओर अल्लाह का रसूल हूँ, जो मुझसे पहले आ चुकी है (अर्थात) तौरात, उसकी

तस्दीक़ करने वाला हूँ और खुशख़बरी देने वाला हूँ एक रसूल की, जो मेरे
बाद आएँगे, उनका नाम 'अह्‌मद' होगा।" जब वह उन लोगों के पास स्पष्ट
निशानियां लेकर आए तो उन्होंने कहा, "यह तो खुला हुआ जादू है।"
7 और उससे बड़ा ज़ालिम कौन होगा? जो अल्लाह पर झूठा आरोप लगाए,
हालांकि उसको इस्लाम (अल्लाह के आगे समर्पण करने) की ओर बुलाया जा
रहा हो, और अल्लाह ज़ालिम लोगों को सीधी राह नहीं दिखाता।
8 यह चाहते हैं कि अल्लाह के नूर को अपने मुँह की फूंक से बुझा दें, मगर
अल्लाह अपने नूर को पूरा करके रहेगा, और चाहे काफ़िरों को (कितना ही)
नागवार (अप्रिय) हो।
9 'वही' तो है जिसने अपने रसूल को सीधी राह, और दीने ह़क़ देकर भेजा,
ताकि उसे और सब दीने ह़क़ पर ग़ालिब करे, चाहे मुश्रिकों को (कितना ही)
नागवार हो।
10 ऐ ईमान वालो! क्या मैं तुम्हें एक ऐसी तिजारत बताऊँ, जो तुम्हें दुःख देने
वाले अ़ज़ाब से बचा ले;
11 ईमान लाओ अल्लाह और उसके रसूल पर, जिहाद करो अल्लाह की राह में,
अपने माल और अपनी जान से, यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानो।
12 'वह' तुम्हारे गुनाह माफ़ कर देगा, और तुम को ऐसे बाग़ों में- जिनके नीचे
नहरें बहती हैं- और उन अच्छे घरों में भी जो सदा बहार बागों में हैं, दाख़िल
करेगा, यही बड़ी कामियाबी है;
13 और दूसरी चीज़ भी जो तुम बहुत चाहते हो, अल्लाह की ओर से मदद और
जल्द ह़ासिल होने वाली विजय, और मोमिनों को खुशख़बरी दे दो।
14 ऐ ईमान वालो! अल्लाह के मददगार बनो, जैसा कि मरयम के बेटे ईसा ने
ह़वारियों (साथियों) से कहा था, "कौन हैं जो अल्लाह की राह में मेरे मददगार
हों?" ह़वारियों ने जवाब दिया, "हम हैं, अल्लाह के मददगार," तो बनी
इस्राईल का एक गिरोह तो ईमान ले आया और दूसरे गिरोह ने इन्कार किया,
तो 'हमने' ईमान लाने वालों की, उनके दुश्मनों के मुक़ाबले में मदद की, और
वे ग़ालिब (प्रभावी) हो गये।

## सूर-ए-जुमुअ़

यह सूरः मदनी है, इस में अ़रबी के 787 अक्षर, 176 शब्द, 11 आयतें और 2 रूकूअ़ हैं।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

1 अल्लाह की तस्बीह़ करती हैं, सारी चीज़ें जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन

में हैं, 'वही' ह़क़ीक़ी बादशाह है बड़ा पाक (पवित्र) ज़ोर वाला, ह़िकमत वाला है।
2 'वही' है जिसने उम्मियों (अनूपढ़ों) में एक रसूल, उन्हीं में से भेजा, जो उनको
'उसकी' आयतें पढ़ कर सुनाते हैं, और उनको पाक करते और उन्हें किताब
और ह़िकमत सिखाते हैं, और इससे पहले तो ये लोग खुली गुमराही में थे।
3 और उनमें से और लोगों की ओर भी जो अभी उनसे मिले नहीं हैं, और
वह ज़बर्दस्त, ह़िक्मत वाला है।
4 यह अल्लाह का फ़ज़्ल है, जिसे चाहता है अ़ता करता है, और अल्लाह बड़े
फ़ज़्ल (अनुग्रह) वाला है।
5 उन लोगों की मिसाल जिन पर तौरात का बोझ डाला गया- फिर उन्होंने उसे
न उठाया- उस गधे की सी है, जो किताब लादे हुए हो, बहुत बुरी मिसाल है
उन लोगों की जिन्होंने अल्लाह की आयतों को झुठलाया, और अल्लाह ज़ालिमों
को सीधी राह नहीं दिखाया करता।
6 कह दीजिए, ऐ यहूदियो! अगर तुम यह समझते हो कि दूसरों को छोड़ कर
तुम ही अल्लाह के चहीते हो, (तो) अगर तुम सच्चे हो तो मौत की तमन्ना
करो;"
7 और ये कभी भी उसकी तमन्ना नहीं करेंगे, उन (करतूतों) की वजह से जो
कर चुके हैं, और अल्लाह ज़ालिमों को खूब जानता है।
8 कह दीजिए, "जिस मौत से तुम भागते हो, वह तो तुम्हें आ कर रहेगी, फिर
तुम उसकी ओर लौटाए जाओगे, 'जो' छिपे और खुले का जानने वाला है, तो
'वह' तुम्हें बता देगा जो कुछ तुम करते रहे होगे।"
9 'ऐ' ईमान वालो! जब जुमुअ़ः के दिन नमाज़ के लिए पुकारा (अज़ान दी) जाए,
तो अल्लाह की याद की ओर दौड़ पड़ो, और (ख़रीदना) बेचना छोड़ दो, यह
तुम्हारे लिए बेहतर है, अगर तुम जानो;
10 फिर जब नमाज़ पूरी हो जाए, तो ज़मीन में फैल जाओ, और अल्लाह का
फ़ज़्ल (रोज़ी) तलाश करो; और अल्लाह का ज़िक्र ज़्यादा से ज़्यादा करो, ताकि
तुम कामियाब हो।
11 और यह लोग जब तिजारत या खेल तमाशा देखते हैं तो उसकी ओर टूट
पड़ते हैं और तुम्हें खड़ा छोड़ देते हैं, कह दीजिए, "जो कुछ अल्लाह के पास
है, वह तमाशे और तिजारत से कहीं बेहतर है, और अल्लाह सबसे बेहतर
रिज़्क़ देने वाला है।"

## सूर-ए-मुनाफ़िक़ून

यह सूरः मदनी है, इस में अ़रबी के 821 अक्षर, 183 शब्द, 11 आयतें और 2

रूकूअ़ हैं।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

1 जब मुनाफ़िक़ (कप्टाचारी) लोग आप के पास आते हैं तो कहते हैं, ''हम गवाही देते हैं कि बेशक आप अल्लाह के रसूल हैं। और अल्लाह जानता है कि ह़क़ीक़त में आप 'उसके' रसूल हैं,'' मगर अल्लाह गवाही देता है कि यह मुनाफ़िक़ बिल्कुल झूठे हैं।

2 उन्होंने अपनी क़समों को ढ़ाल बना रखा है, तो इस तरह़ यह अल्लाह की राह से रोकते हैं, निश्चय ही यह बहुत बुरा है, जो ये कर रहे हैं।

3 यह इसलिए कि वे ईमान लाए, फिर इन्कार किया, तो उनके दिलों पर मुहर लगा दी गयी, वे अब कुछ नहीं समझते।

4 और जब तुम उनको देखते हो, तो उनके शरीर तुम्हें अच्छे लगते हैं, और अगर वे बात करें तो उनकी बातों को सुनते रह जाओ, यह ऐसा ही है- जैसे लकड़ी के कुन्दे हों, (जिन्हें खड़ा कर दिया गया हो,) वे हर चौका देने वाली आवाज़ को अपने ही ऊपर लेते हैं- यही असली दुश्मन हैं, तो इनसे बचते रहो, अल्लाह की मार हो उन पर, यह कहाँ बहके जा रहे हैं।

5 और जब उनसे कहा जाता है, ''आओ, अल्लाह का रसूल तुम्हारे लिए माफ़ी की दुआ़ करे,'' तो अपने सर मटकाते हैं, और तुम देखते हो कि वे घमंड के साथ कत्ारा कर निकल जाते हैं।

6 उनके लिए बराबर है चाहे आप उनके लिए माफ़ी की दुआ़ करें या उनके लिए माफ़ी की दुआ़ न करें, अल्लाह उन्हें हरगिज़ माफ़ न करेगा, बेशक अल्लाह नाफ़रमानी करने वालों को सीधी राह नहीं दिखाया करता।

7 वही हैं जो कहते हैं, ''तुम उन लोगों पर खर्च न करो जो अल्लाह के रसूल के पास (रहने) वाले हैं, ताकि ये तितर-बितर हो जाएँ।'' हालांकि आसमानों और ज़मीन के खज़ाने अल्लाह ही के हैं, लेकिन मुनाफ़िक़ समझते नहीं।

8 कहते हैं, ''अगर हम मदीना वापस पहुंच गये तो जो इ़ज़्ज़त वाला है वह ज़िल्लत वाले को वहां से निकाल बाहर करेगा,'' हालांकि इ़ज़्ज़त अल्लाह और उसके रसूल और ईमान वालों के लिए है लेकिन यह मुनाफ़िक़ जानते नहीं।

9 ऐ ईमान वालो! तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद तुम्हें अल्लाह के ज़िक्र से ग़ाफिल न कर दें, और जो ऐसा करेंगे वही घाटे में रहने वाले हैं।

10 और खर्च करो उसमें से जो रिज़्क़ 'हमने' तुम्हें दिया है, इससे पहले कि तुम में से किसी की मौत आ जाए, और कहे, ''ऐ मेरे रब! 'तूने' मुझे थोड़ी मोहलत और क्यों न दी कि मैं सद्क़ा करता और अच्छे लोगों में शामिल हो जाता।''

11 और अल्लाह हरगिज़ किसी नफ़्स (प्राणी) को मोहलत देने वाला नहीं, जब कि

उसका निर्धारित समय आ जाए, और जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह उसकी पूरी ख़बर रखता है।

## सूर-ए-तग़ाबुन

यह सूरः मक्की है इस में अ़रबी के 1122 अक्षर, 247 शब्द, 18 आयतें और 2 रूकूअ़ हैं।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

1 अल्लाह की तस्बीह़ करती हैं वे सारी चीज़ें, जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं, 'उसी' की बादशाही है, और 'उसी' के लिए ह़म्द (प्रशंसा) है, और 'वह' हर चीज़ पर क़ादिर (सामर्थ्यवान) है।

2 'वही' तो है जिसने तुम्हें पैदा किया, फिर तुममें से कुछ तो इन्कार करने वाले हैं और तुममें से कुछ ईमान वाले हैं, और तुम जो कुछ भी करते हो अल्लाह उसे देख रहा है।

3 'उसी' ने आसमानों और ज़मीन को हक़ के साथ पैदा किया, और 'उसी' ने तुम्हारी सूरतें बनायीं, तो कितनी अच्छी सूरतें बनायीं, और 'उसी' की ओर लौट कर जाना है।

4 'वह' जानता है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है, और तुम जो कुछ छिपाते हो और जो कुछ ज़ाहिर करते हो उसे 'वह' जानता है, और अल्लाह सीनों में छिपी बातों को जानता है।

5 क्या तुम्हें उन लोगों की बातें नहीं पहुँचीं! जिन्होंने इससे पहले इन्कार किया था, तो उन्होंने अपने करतूतों के वबाल का मज़ा चखा, और उनके लिए दुःख देने वाला अ़ज़ाब है?

6 यह इस वजह से कि उनके पास उनके रसूल स्पष्ट निशानियों के साथ आते रहे, मगर उन्होंने कहा, "क्या इन्सान हमारी रहनुमाई करेंगे?" इस तरह उन्होंने इन्कार किया, और मुँह मोड़ लिया; और अल्लाह भी उनसे बेपरवाह हो गया, अल्लाह तो है ही बेपरवाह तअ़रीफ़ के लायक़।

7 जिन लोगों ने इन्कार किया, (उनका दावा है) कि वे हरगिज़ (मरने के बाद) न उठाए जाएँगे, कह दीजिए, "क्यों नहीं, मेरे रब की क़सम! तुम ज़रूर उठाए जाओगे, फिर जो कुछ तुमने किया है उसे तुम्हें बता दिया जाएगा, और यह काम अल्लाह के लिए आसान है।"

8 तो ईमान लाओ अल्लाह पर और 'उसके' रसूल पर और उस नूर (क़ुर्आन) पर, जो 'हमने' नाज़िल किया है, जो कुछ भी तुम करते हो, अल्लाह उसकी ख़बर रखता है।

9 जिस दिन अल्लाह तुम्हें इकट्ठा करेगा- इकट्ठा होने के दिन- वह
नफ़ा-नुक़सान का दिन होगा; और जो व्यक्ति अल्लाह पर ईमान लाए और
भले काम करे उसकी बुराइयां अल्लाह उससे दूर कर देगा, और ऐसे बाग़ों
में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, उनमें वे हमेशा रहेंगे, यही
बड़ी कामियाबी है।
10 और जिन्होंने इन्कार किया, और 'हमारी' आयतों को झुठलाया वही दोज़ख़
वाले हैं; जिसमें वे हमेशा रहेंगे, और वह बुरा ठिकाना है;
11 नहीं आती कोई भी मुसीबत मगर अल्लाह की इजाज़त से, और जो व्यक्ति
अल्लाह पर ईमान रखता है, तो 'वह' उसके दिल की रहनुमाई करता है, और
अल्लाह हर चीज़ को जानता है।
12 और अल्लाह का हुक्म मानो और रसूल की पैरवी करो, अगर तुम मुँह मोड़ते
हो, तो 'हमारे' रसूल पर केवल साफ़-साफ़ पहुंचा देने की ज़िम्मेदारी है।
13 अल्लाह 'वह' है जिसके सिवा कोई इलाह (उपास्य) नहीं, और अल्लाह ही पर
मोमिनों को भरोसा करना चाहिए।
14 ऐ ईमान वालो! तुम्हारी पत्नियों और तुम्हारी औलादों में से कुछ तुम्हारे दुश्मन
भी हैं, तो तुम उनसे होशियार रहो; और अगर तुम माफ़ कर दो, और टाल
जाओ, और माफ़ी दे दो तो अल्लाह माफ़ करने वाला, रह़म वाला है।
15 तुम्हारे माल और तुम्हारी औलादें तुम्हारे लिए आज़माइश हैं, और अल्लाह के
पास बड़ा बदला है।
16 तो जहां तक तुमसे हो सके अल्लाह से डरते रहो, और सुनो, और हुक्म
मानो, और खर्च करो अपनी ही भलाई के लिए; और जो व्यक्ति अपने दिल
की तंगी से बचा लिया गया, तो ऐसे ही लोग कामियाब होने वाले हैं।
17 अगर तुम अल्लाह को अच्छा कर्ज़ दो तो वह तुम्हारे लिए उसे बढ़ा कर देगा,
और तुम्हारे गुनाह को माफ़ कर देगा, और अल्लाह बड़ा क़द्र करने वाला,
ह़लीम (सहनशील) है;
18 ग़ायब और हाज़िर का जानने वाला, ग़ालिब, ह़िक्मत वाला है।

## सूर-ए-तलाक

यह सूरः मदनी है, इस में अ़रबी के 1237 अक्षर, 298 शब्द, 12 आयतें और 2 रूकूअ़ हैं।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

1 ऐ नबी! जब आप औ़रतों को तलाक़ दें तो उन्हें तलाक़ उनकी इद्दत के
ह़िसाब से दें और इद्दत का शुमार (गणना) रखें और अल्लाह का डर रखें,

जो आप का रब है, उन्हें उनके घरों से न निकालें और न वे खुद निकलें- सिवाय इसके कि वे कोई खुली बद्कारी के काम कर बैठें- और यह अल्लाह की तय की हुई सीमाएं हैं, और जो अल्लाह की सीमाओं से आगे बढ़ेगा, वह अपने आप पर ज़ुल्म करेगा; आप नहीं जानते! शायद अल्लाह इस (तलाक़) के बाद कोई (अच्छी) सूरत पैदा कर दे;

2 जब निर्धारित समय को पहुंच जाएँ, तो उन्हें भले तरीक़े पर रोक लें या भले तरीक़े पर अलग कर दें, और अपने में से दो इन्साफ़ करने वाले मर्दों को गवाह बना लें, और गवाह अल्लाह के लिए क़ायम रखें, यह नसीह़त उनको की जाती है जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हों, और जो अल्लाह से डरेगा, 'वह' उसके लिए राह निकाल देगा;

3 और उसको ऐसी जगह से रिज़्क़ देगा, जहां से उसको गुमान भी न होगा, और जो अल्लाह पर भरोसा करेगा, तो 'वह' उसके लिए काफ़ी होगा, अल्लाह अपना काम पूरा कर के रहता है, अल्लाह ने हर चीज़ का एक अन्दाज़ा (योजना) तय कर रखा है।

4 और तुम्हारी औ़रतों में से जो मासिक धर्म (हैज़) से मायूस हो चुकी हों, उनके बारे में अगर तुम को शक हो, तो उनकी इद्दत तीन महीने हैं, और उनकी भी जिनको मासिक धर्म न आया हो, और गर्भवती (ह़ामला) औ़रतों की इद्दत बच्चा हो जाने तक है; और जो अल्लाह से डरेगा, तो 'वह' उसके मामले में आसानी पैदा कर देगा।

5 यह अल्लाह का हुक्म है, जो 'उसने' तुम्हारी ओर उतारा है, और जो कोई अल्लाह का डर रखेगा उसकी बुराइयों को 'वह' दूर कर देगा और उसके अज्र (बदले) को बढ़ा देगा।

6 अपनी हैसियत के अनुसार जहां तुम खुद रहते हो उन्हें भी उसी जगह रखो, और उन्हें तंग करने के लिए न सताओ, और अगर वे गर्भवती (हामला) हों तो उन पर खर्च करते रहो, यहां तक कि बच्चा पैदा हो जाए, फिर अगर वह तुम्हारे लिए बच्चे को दूध पिलाएं तो तुम उनकी उज्रत (मजदूरी) दो, और भले तरीक़े पर आपसी बात-चीत के ज़रिये मामला तय कर लो, और अगर तुम कोई तंगी महसूस करो, तो फिर कोई दूसरी औ़रत उसे दूध पिलाए।

7 हैसियत वाला अपनी हैसियत के अनुसार खर्च करे, और जिसको कम रोज़ी दी गयी है वह उसी में से खर्च करे जो अल्लाह ने उसे दिया है, अल्लाह किसी पर उससे ज़्यादा बोझ नहीं डालता जिसको जितना दिया है, जल्द ही अल्लाह तंगी के बाद आसानी पैदा कर देगा।

8 और कितनी ही बस्तियां हैं जिन्होंने अपने 'रब' और 'उसके' रसूलों के हुक्म के मुक़ाबले में सरकशी कीं, तो 'हमने' उनकी सख़्त पकड़ की और उन्हें बुरा अ़ज़ाब दिया;

9 तो उन्होंने अपने किये का वबाल चख लिया, और उनका अंजाम घाटा ही रहा;

10 अल्लाह ने उनके लिए सख्त अ़ज़ाब तैयार कर रखा है, तो अल्लाह से डरो

“ऐ बुद्धि वालो! जो ईमान लाए हो, अल्लाह ने तुम्हारी ओर ज़िक्र (क़ुर्आन) उतारा।”

11 एक ऐसा रसूल, जो अल्लाह की स्पष्ट आयतें तुम को पढ़ कर सुनाता है, ताकि वह उन लोगों को जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किये, उनको अन्धेरों से निकाल कर रोशनी की ओर ले आए, और जो व्यक्ति अल्लाह पर ईमान लाए; और भले काम करे, उसे 'वह' ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, ऐसे लोग उनमें हमेशा रहेंगे, अल्लाह ने उनके लिए बेहतरीन रिज़्क (रोज़ी) तैयार कर रखा है।

12 अल्लाह ही ने सात आसमान बनाए, और वैसी ही ज़मीनें, उनमें (अल्लाह के) हुक्म उतरते रहते हैं, ताकि तुम जान लो कि अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है, और यह कि अल्लाह का इल्म हर चीज़ को घेरे में लिए हुए है।

## सूर-ए-तहरीम

यह सूरः मक्की है, इस में अ़रबी के 1124 अक्षर, 253 शब्द, 12 आयतें और 2 रूकूअ़ हैं।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

1 ऐ नबी! जिस चीज़ को अल्लाह ने हलाल कर रखा है, उसे आप अपनी पत्नियों को राज़ी करने के लिए क्यों हराम करते हैं? और अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, रहम वाला है।

2 अल्लाह ने तुम लोगों के लिए तुम्हारी अपनी क़समों की पाबन्दी से निकलने का उपाय निश्चित कर दिया है, और अल्लाह तुम्हारा मौला (संरक्षक) है, और 'वह' बड़ा इल्म वाला, हिक्मत वाला है।

3 और जब नबी ने अपनी पत्नियों में से किसी एक से राज़ की एक बात कही, तो जब उसने उसकी ख़बर कर दी; और अल्लाह ने इसे उस (नबी) पर ज़ाहिर कर दिया; तो उन्होंने उसे किसी हद तक बता दिया, और किसी हद तक उसे दरगुज़र कर दिया; फिर जब उनको उसकी ख़बर की, तो वह बोलीं, “आपको इसकी ख़बर किसने दी?” उन्होंने कहा, “उसी' ने मुझको ख़बर दी है जो जानने वाला, ख़बर रखने वाला है।”

4 अगर तुम दोनों अल्लाह के सामने तौबः करो तो तुम्हारे दिल तो उसकी ओर झुक ही चुके हैं, और अगर तुम दोनों मिल कर उसको नाराज़ करोगी तो अल्लाह उसका मौला (संरक्षक) है, और उसके बाद जिब्रईल, और नेक ईमान वाले, और फ़रिश्ते उसके मददगार हैं।

5 उम्मीद है कि अगर वह (रसूल) तुम्हें तलाक़ दे दें, तो उसका रब तुम्हारे बदले में तुमसे अच्छी पत्नियां उनको देगा– मुस्लिम, ईमान वाली, फ़रमाँबरदार, तौबः

करने वाली, इबादत करने वाली, रोज़ः रखने वाली (या अल्लाह की राह में सफ़र करने वाली) शादी शुदा और कुँवारी भी।
6 ऐ ईमान वालो! अपने आपको और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ और जिसका ईंधन इन्सान और पत्थर हैं, जिस पर कठोर स्वभाव के फ़रिश्ते नियुक्त हैं, जो अल्लाह के हुक्म की नाफ़रमानी नहीं करते, और जो हुक्म उन्हें दिया जाता है उस पर अ़मल करते हैं।
7 ऐ काफ़िरो (इन्कार करने वालो)! आज उज़्र न पेश करो, तुम्हें बदले में वही दिया जा रहा है, जो कुछ करते आ रहे हो।
8 ऐ ईमान वालो! अल्लाह के आगे तौबः करो, ख़ालिस (दिल) तौबः, उम्मीद है कि तुम्हारा रब तुम्हारी बुराइयां तुमसे दूर कर दे, और तुम्हें जन्नत (बाग़ों) में दाख़िल कर दे जिनके नीचे नहरें बह रही हैं, उस दिन अल्लाह नबी को और उन लोगों को, जो उनके साथ ईमान लाए रूस्वा नहीं करेगा, और उनका नूर उनके आगे, और उनके दाईं ओर दौड़ रहा होगा, और वे दुआ़ कर रहे होंगे, ''ऐ रब! हमारा नूर हमारे लिए पूरा कर दे और हमें बख़्श दे, बेशक 'तू' हर चीज़ पर क़ादिर है।''
9 ऐ नबी! इन्कार करने वालों (काफ़िरों) और मुनाफ़िक़ों (कप्टाचारियों) से जिहाद कीजिए, और उनके साथ सख़्ती से पेश आइए, उनका ठिकाना जहन्नम है, और वह बहुत बुरा ठिकाना है।
10 अल्लाह इन्कार करने वालों के लिए नूह़ की बीवी और लूत की बीवी की मिसाल बयान करता है, वे 'हमारे' बन्दों में से, दो नेक बन्दों के अधीन (निकाह में) थीं, मगर दोनों ने उनके साथ बेवफाई की, तो वे अल्लाह के मुक़ाबले में उन औ़रतों के कुछ भी काम न आ सके और 'उनसे' कह दिया गया, ''तुम भी दोज़ख़ में दाख़िल होने वालों के साथ दाख़िल हो जाओ।''
11 और ईमान वालों के लिए अल्लाह ने फ़िरऔ़न की बीवी की मिसाल पेश की है, जबकि उसने कहा, ''ऐ मेरे रब! 'तू' मेरे लिए अपने पास जन्नत में एक घर बना और मुझे फ़िरऔ़न और उसके अ़मल से छुट्कारा दे, और छुट्कारा दे मुझे ज़ालिम लोगों से।''
12 और इमरान की बेटी मरयम की, जिन्होंने अपनी शर्मगाह (सतीत्व) की रक्षा की थी, फिर 'हमने' उसमें अपनी रूह फूँक दी, और उसने अपने 'रब' के कलिमों (बोलों), और 'उसकी' किताबों की पुष्टि की और वह फ़रमाँबरदारों में से थी।

## सूर-ए-मुल्क

यह सूरः मक्की है इस में, अ़रबी के 1359 अक्षर, 335 शब्द, 30 आयतें और 2

रूकूअ़ हैं।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

1 बड़ी बरकत वाला है, जिसके हाथ में सारी बादशाही है, और 'वह' हर चीज़ पर क़ादिर है;

2 'जिसने' पैदा किया मौत और ज़िन्दगी को, ताकि तुम्हें आज़माए, कि तुम में से कौन अच्छा अ़मल करने वाला है? और 'वह' बड़ी ताक़त वाला, माफ़ करने वाला है।

3 'जिसने' सात आसमान तह दर तह बनाए, फिर देखो! तुम को रह़मान की पैदाइश में कुछ कमी या कोई दराड़ दिखाई देती है?

4 फिर दोबारा नज़र डालो, तुम्हारी नज़र थकी हारी, तुम्हारे ही ओर उल्टी लौट आएगी।

5 और 'हमने' दुनिया के आसमान को दीपों (तारों) से सजाया और उनको शैतान पर मार भगाने का साधन बनाया, और उनके लिए भड़कती हुई आग का अ़ज़ाब भी तैयार कर रखा है।

6 और जिन लोगों ने अपने रब का इन्कार किया, उनके लिए जहन्नम का अ़ज़ाब है और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है;

7 जब वे उसमें डाले जाएँगे तो उसके दहाड़ने की आवाज़ सुनेंगे, और वह भड़क रही होगी;

8 ऐसा लगेगा कि मारे जोश के फट पड़ेगी, जब भी कोई समूह उसमें डाला जाएगा तो उसके चौकीदार (कर्मचारी) उनसे पूछेंगे, "क्या तुम्हारे पास कोई सचेत करने वाला नहीं आया था?"

9 वे कहेंगे, "क्यों नहीं!! ज़रूर हमारे पास सचेत करने वाला आया था, मगर हमने उसको झुठला दिया, और कहा, कि अल्लाह ने कुछ भी नहीं उतारा, तुम तो बड़ी गुमराही में पड़े हुए हो।"

10 और कहेंगे, "अगर हम सुनते या समझते, तो हम दोज़ख़ वालों में शामिल न होते।"

11 इस तरह वे अपने गुनाह को कुबूल करेंगे, सो दोज़ख़ियों के लिए (अल्लाह की रह़मत से) दूरी है।

12 जो लोग बिना देखे अपने रब से डरते हैं, उनके लिए माफ़ी और बड़ा अज्र है।

13 और तुम अपनी बात को छिपाओ या ज़ाहिर करो, 'वह' तो सीनों के भेद तक को जानता है।

14 क्या 'वह' नहीं जानेगा जिसने पैदा किया, और 'वह' बारीक से बारीक चीज़ को देखने वाला ख़बर रखने वाला है।

15 ‘वही’ तो है जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन को नर्म कर दिया, तुम उसकी राहों पर चलो फिरो और खाओ, अल्लाह के रिज़्क़ में से, ‘उसी’ की ओर दोबारा उठ कर जाना है।

16 क्या तुम उससे ‘जो’ आसमान में है निडर हो गये हो? कि ‘वह’ तुम्हें ज़मीन में धंसा दे, और ‘वह’ यकायक हिलने लगे।

17 क्या तुम उससे ‘जो’ आसमान में है निडर हो गये हो? कि तुम पर पथराव करने वाली हवा भेज दे, फिर तुम्हें मालूम हो जाएगा कि मेरा डराना कैसा होता है?

18 और इनसे पहले गुज़रे हुए लोग भी झुठला चुके हैं, तो देख लो! कैसा रहा मेरा अज़ाब?

19 क्या उन्होंने अपने ऊपर परिन्दों को लाइन से पर फैलाते और समेटते हुए नहीं देखा? रह़मान के सिवा कोई नहीं, जो उनको थाम लेता, बेशक ‘वही’ हर चीज़ को ख़ूब देखता है।

20 या ‘वह’ कौन है जो तुम्हारी सेना बनकर अल्लाह के मुक़ाबले में तुम्हारी मदद करे, इन्कार करने वाले तो धोखे में पड़े हुए हैं।

21 या वह कौन है? जो तुम्हें रोज़ी दे, अगर ‘वह’ अपना रिज़्क़ रोक ले, (नहीं,) बल्कि यह तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए हैं।

22 तो क्या वह व्यक्ति जो अपने मुंह के बल औंधा चलता हो, वह ज़्यादा सीधी राह पर है, या वह जो सीधा हो कर सीधी राह पर चल रहा है?

23 कह दीजिए, “वही है ‘जिसने’ तुमको पैदा किया, और तुम्हारे कान, और आंखें और दिल बनाए, तुम कम ही शुक्र अदा करते हो।”

24 कह दीजिए, “वही है ‘जिसने’ तुमको ज़मीन में फैलाया और ‘उसी’ की ओर तुम इकट्ठे किये जाओगे।”

25 और कहते हैं, “अगर तुम सच्चे हो तो यह वादा कब पूरा होगा?”

26 कह दीजिए, “इसका इल्म तो अल्लाह ही के पास है, और मैं तो बस खुला हुआ सचेत करने वाला हूँ”

27 तो जब वे उसको क़रीब से देख लेंगे तो उनके चेहरे बिगड़ जाएँगे, जिन्होंने इन्कार किया, और कहा जाएगा, “यही है वह चीज़ जिसकी तुम मांग कर रहे थे।”

28 कह दीजिए, “तुमने यह भी सोचा! कि अगर अल्लाह मुझे और मेरे साथियों को तबाह कर दे या हम पर रह़म करे, तो काफ़िरों को दुःख देने वाले अज़ाब से कौन पनाह देगा?”

29 कह दीजिए, “वह रह़मान है, ‘उसी’ पर हम ईमान लाए हैं और ‘उसी’ पर हमने भरोसा किया है, तुम्हें बहुत जल्द मालूम हो जाएगा कि खुली हुई गुमराही में कौन है।”?

30 कह दीजिए, "क्या तुमने यह भी सोचा! कि अगर तुम्हारा पानी नीचे (धरती में) उतर जाए, तो फिर कौन है जो तुम्हारे लिए बहता हुआ पानी ले आए?"

## सूर-ए-क़लम

यह सूरः मक्की है इस में अ़रबी के 1295 अक्षर, 306 शब्द, 52 आयतें और 2 रूकूअ़ हैं।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

1 नून, क़सम है क़लम की, और जो लिखते हैं;
2 कि आप अपने रब की नेअ़मतों के कोई दीवाने नहीं हैं,
3 और आपके लिए ऐसा अज्र (बदला) है जो कभी ख़त्म न होगा,
4 और आप बड़े अख़्लाक़ (अच्छे स्वभाव) के मर्तबे पर हैं,
5 तो बहुत जल्द तुम भी देख लोगे और यह भी देख लेंगे,
6 कि तुममें से कौन गुमराह है?
7 आप का 'रब' उसे भी अच्छी तरह जानता है, जो 'उसकी' राह से भटक गया हो, और उनको भी खूब जानता है जो सीधी राह पर हैं;
8 तो आप इन झुठलाने वालों की बात न मानिए।
9 और ये लोग चाहते हैं कि किसी तरह आप नर्म पड़ जाएँ, तो ये भी नर्म हो जाएँ।
10 और आप किसी ऐसे व्यक्ति की बात न मानिएगा जो बहुत क़समें खाने वाला और ज़लील हो,
11 कचोके लगाने वाला, चुगलियां खाने वाला;
12 ख़ैर (भलाई) से रोकने वाला (माल में बुख़्ल करने वाला) ज़्यादती करने वाला, भारी गुनहगार है;
13 क्रूर (सख़्त मिज़ाज) इसके अ़लावा बदनाम भी;
14 इस वजह से कि वह माल और सन्तान वाला है।
15 जब उसको 'हमारी' आयतें पढ़कर सुनाई जाती हैं तो कहता है, "यह तो पहले लोगों के क़िस्से हैं।"
16 जल्द ही 'हम' उसके सूँड (नाक) पर दाग़ लगाएँगे।
17 'हमने' उन लोगों को उसी तरह आज़माइश में डाला है, जिस तरह बाग़ वालों को आज़माइश में डाला था, जब उन्होंने क़सम खाई कि सुबह़ सवेरे ज़रूर हम इसका फल तोड़ेंगे;

18 और वे इसमें छूट की कोई गुन्जाइश नहीं रख रहे थे (अर्थात इन्शाअल्लाह न कहा),
19 अभी वे सो ही रहे थे कि आप के रब की ओर से गर्दिश का एक झोंका आया,
20 तो वह ऐसा हो गया जैसे कटी हुई खेती,
21 तो सुबह होते ही उन्होंने एक-दूसरे को पुकारा,
22 "अगर तुमको काटना, तोड़ना है तो सुबह ही अपनी खेती पर पहुंच जाओ;"
23 तो वे चुपके-चुपके बातें करते हुए चल पड़े,
24 कि आज कोई मिस्कीन (मुहताज) तुम्हारे पास दाख़िल न होने पाए,
25 और वे सुबह सवेरे पक्के इरादे के साथ निकले, मानो (मुहताजों को)! रोक देने की उन्हें क़ुदरत (सामर्थ्य) है;
26 तो जब उसको देखा! तो कहने लगे, "हम रास्ते से भटक गये।"
27 (नहीं) "बल्कि हम मह़रूम (वंचित) होकर रह गये।"
28 उनमें जो बेहतर था कहने लगा, "क्या मैंने तुमसे कहा नहीं था कि तुम तस्बीह़ क्यों नहीं करते?"
29 वे पुकार उठे, "पाक है हमारा रब! बेशक हम ही ज़ालिम थे।"
30 तो वे आपस में एक-दूसरे की ओर रूख करके मलामत करने लगे;
31 उन्होंने कहा, "अफ़सोस है हम पर! हम ही सरकश थे;
32 उम्मीद है कि हमारा 'रब' इसके बदले में हमें इससे बेहतर (बाग़) अता करेगा, हम अपने 'रब' की ओर रूजूअ़ होते हैं।"
33 इसी तरह होता है अ़ज़ाब, और आख़िरत का अ़ज़ाब तो इससे कहीं बड़ा है, काश! ये लोग जानते।
34 परहेज़गारों के लिए उनके 'रब' के यहां नेअ़मत के बाग़ हैं।
35 तो क्या 'हम' मुस्लिमों (आज्ञाकारियों) को मुज़रिमों जैसा कर देंगे?
36 तुम लोगों को क्या हो गया है! कैसा फ़ैसला करते हो?-
37 क्या तुम्हारे पास कोई किताब है जिसमें तुम पढ़ते हो;
38 कि उसमें तुम्हारे लिए वह कुछ है जो तुम पसंद करते हो;
39 या तुमने 'हमसे' क़समें ले ली हैं जो क़ियामत के दिन तक बाक़ी रहने वाली हैं, कि तुम्हारे लिए वही कुछ है जो तुम फ़ैसला करो?
40 उनसे पूछो, "तुममें से कौन इसकी ज़मानत लेने वाला है?"
41 क्या उन्होंने शरीक ठहरा रखे हैं,? तो लाएँ अपने शरीकों को, अगर वे सच्चे हैं।
42 जिस दिन पिंडुली खुल जाएगी (अर्थात मुसीबत आ पड़ेगी) और (काफिर) सज्दे के लिए बुलाए जाएँगे, तो वे सज्दः न कर सकेंगे।

43 उनकी निगाहें झुकी हुई होंगी, ज़िल्लत उन पर छा रही होगी, और यह सज्दः
की ओर उस ह़ालत में भी बुलाए जाते थे, कि भले चंगे थे।
44 तो आप मुझे और उन लोगों को छोड़ दीजिए, जो इस बात को झुठलाते हैं,
‘हम’ उनको धीरे-धीरे ले जाएँगे ऐसे तरीक़े पर, कि उन्हें ख़बर भी न होगी।
45 और ‘मैं’ उन्हें मोहलत दिये जाता हूं, बेशक ‘मेरा’ उपाय बहुत मज़बूत है।
46 क्या आप उनसे कुछ बदला मांग रहे हैं कि वह इसके जुर्माने के बोझ से दबे
जा रहे हैं;
47 या उनके पास ग़ैब की ख़बर है कि (जिसे) वे लिखा करते हैं?
48 तो आप अपने ‘रब’ के हुक्म पर सब्र कीजिए, और मछली वाले (यूनुस) की
तरह न हो जाइए जबकि उन्होंने (उस ह़ालत में) पुकारा और वह (ग़म व)
ग़ुस्से से घुट रहे थे।
49 अगर उनके रब की नेअ़मत उनके साथ न होती तो वह बुरी ह़ालत के साथ
मैदान में डाल दिये जाते;
50 तो उनके ‘रब’ ने उनको चुन लिया और उन्हें अच्छे लोगों में शामिल कर
दिया।
51 और जब काफ़िर ज़िक्र (क़ुर्आन) को सुनते हैं तो ऐसा लगता है कि वे अपनी
निगाहों की ज़ोर से तुम्हें फिसला देंगे और कहते हैं, “यह तो मजनून है।”
52 और यह (क़ुर्आन) सारे संसार के लिए नसीह़त है।

## सूर-ए-ह़ाक़्क़ा

यह सूरः मक्की है, इस में अ़रबी के 1134 अक्षर, 260 शब्द, 52 आयतें और 2 रूकूअ़ हैं।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

1 सचमुच होने वाली,
2 वह सचमुच होने वाली क्या है?
3 और आप को क्या ख़बर है कि वह सचमुच होने वाली क्या है?
4 समूद ने और आ़द ने उस खड़खड़ाने वाली को झुठला दिया,
5 तो समूद तो ज़ोरदार आवाज़ से हलाक कर दिये गये,
6 और आ़द ठंडी तेज़ हवा के ज़रिये हलाक किये गये।
7 ‘उस’ ने उस हवा को सात रात और आठ दिन तक उन पर मुसल्लत कर
दिया था, तो तुम उन लोगों को देखते कि (इस तरह) ढेर हो गये जैसे खुजूर
के खोखले वृक्षों के तने हों?
8 तो क्या तुम्हें उनमें से कोई बचा हुआ नज़र आता है?

9 और फ़िरऔन और इससे पहले के लोगों ने, और उल्टी हुई बस्ती वालों ने गुनाह के काम किये थे।
10 तो उन्होंने अपने 'रब' के रसूल की नाफ़रमानी की, फिर 'उसने' उनको सख़्ती के साथ पकड़ लिया।
11 जब पानी ह़द से ज़्यादा हो गया तो 'हमने' तुम्हें नौका में सवार कर दिया;
12 ताकि 'हम' तुम्हारे लिए इस घटना को नसीह़त बना दें, और ताकि उसे याद रखने वाले कान याद रखें;
13 तो जब सूर में एक फूँक मारी जाएगी;
14 और उठा ली जायेगी ज़मीन और पहाड़, फिर (दोनों को) एक ही बार में चूरा-चूरा कर दिया जाएगा;
15 तो उस दिन घटित होने वाली घटना घटित हो जाएगी;
16 और आसमान फट जाएगा, तो वह उस दिन कमज़ोर हो जाएगा;
17 और फ़रिश्ते उसके किनारों पर (आ जाएँगे), और उस रोज़ आप के रब के अर्श (सिंहासन) को आठ फ़रिश्ते उठाए हुए होंगे।
18 जिस दिन तुम पेश किये जाओगे, तुम्हारी कोई बात छिपी न रहेगी।
19 तो जिसके दाहिने हाथ में आ़माल नामा (कर्म पत्र) दिया जाएगा, तो वह कहेगा, ''लो मेरा आ़माल नामा पढ़ लो;
20 मैं पहले ही यक़ीन रखता था कि मेरा हिसाब मेरे सामने पेश होने वाला है।''
21 तो वह (व्यक्ति) अपनी पसंदीदा ज़िन्दगी में होगा,
22 बुलन्द जन्नत के बाग़ों में,
23 जिनके फल झुके हुए होंगे,
24 खाओ और पियो मज़े से उन आ़माल के बदले में जो तुमने पिछले दिनों में आगे भेजे थे।
25 और जिसके बाएं हाथ में आ़माल नामा दिया जाएगा, तो वह कहेगा, ''काश, मेरा आ़माल नामा मुझे न दिया जाता;
26 और मैं न जानता कि मेरा हिसाब क्या है!
27 'काश' मौत ही मेरा फ़ैसला कर देती!
28 मेरे माल ने मुझे कुछ भी फ़ायदा न पहुंचाया,
29 मेरी जो हुकूमत (सत्ता) थी वह बरबाद हो गयी।''
30 ''इसे पकड़ो और इसको तौंक पहना दो;
31 फिर भड़कती हुई आग में झोंक दो,
32 फिर ऐसी ज़ंजीर में इसको जकड़ दो जिसकी माप सत्तर गज़ है,
33 यह अज़ीम (महिमावान) अल्लाह पर ईमान नहीं रखता था,
34 और न मिस्कीन को खाना खिलाने पर उभारता था,
35 तो आज इसका कोई दोस्त नहीं,
36 और न ग़िस्लीन (पीप) के अ़लावा कोई खाना है,
37 उसे केवल गुनहगार ही खाएंगे।''

38 तो मैं उन चीज़ों की क़सम खाता हूँ जिनको तुम देखते हो,
39 और उन (चीज़ों) की भी जिन को तुम नहीं देखते;
40 कि यह क़ुर्आन कलाम है एक इज़्ज़तदार फ़रिश्ते का लाया हुआ,
41 और यह किसी शायर का कलाम (वाणी) नहीं, मगर तुम लोग बहुत ही कम ईमान लाते हो;
42 और यह किसी काहिन (ज्योतिष) का कलाम (वाणी) नहीं तुम लोग बहुत ही कम समझते हो;
43 यह उतारा हुआ है रब्बुल आ़लमीन की ओर से।
44 और अगर यह (रसूल) 'हमारे' ज़िम्मे कुछ बातें गढ़ लेते,
45 तो 'हम' उनका दाहिना हाथ पकड़ लेते;
46 फिर उनकी रगे दिल (अर्थात गर्दने रग) काट देते,
47 तो तुम में से कोई इस से बचाने वाला न होता,
48 और यह (किताब) परहेज़गारों के लिए नसीह़त है।
49 और 'हम' जानते हैं कि तुममें से कुछ इसको झुठलाने वाले हैं,
50 और यह काफ़िरों के लिए बड़ा पछतावा है,
51 और निश्चय ही यह बिल्कुल यक़ीनी सत्य है,
52 तो आप रब्बे अज़ीम (महिमावान ) के नाम की तस्बीह़ बयान करते रहिए।

## सूर-ए-मआ़रिज

यह सूरः मक्की है, इस में अ़रबी के 677 अक्षर, 260 शब्द, 44 आयतें और 2 रूकूअ़ हैं।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

1 सवाल किया, एक सवाल करने वाले ने अ़ज़ाब के विषय में, जो होने वाला है;
2 काफ़िरों पर, (जिसे) कोई उसको टालने वाला नहीं;
3 यह (अज़ाब) अल्लाह की ओर से होगा, जो बुलन्दियों वाला है;
4 फ़रिश्ते और रूहें 'उसकी' ओर चढ़ कर जाती हैं, यह अ़ज़ाब उस दिन होगा, जिसकी मुद्दत (अवधि) पचास हज़ार साल की होगी।
5 तो आप ऐसा सब्र कीजिए जो 'सब्र जमील' हो (उत्तम धैर्य)।
6 वह उन लोगों की नज़र में दूर हैं,

7 और ‘हमारी’ नज़र में क़रीब,
8 जिस दिन आसमान ऐसा हो जाएगा जैसे पिघला हुआ ताँबा,
9 और पहाड़ रंगीन ऊन की तरह होंगे,
10 और कोई दोस्त किसी दोस्त को न पूछेगा,
11 (हालांकि) एक-दूसरे को सामने देख रहे होंगे, मुजरिम चाहेगा कि उस दिन के अ़ज़ाब से छुटकारा पाने के लिए फ़िदिया (मुक्ति प्रतिदान) में अपने बेटों को दे दे,
12 और अपनी पत्नी, और अपने भाई को;
13 और अपने ख़ानदान को, जो उसे पनाह देता था,
14 और धरती पर जितने आदमी हैं सब को दे दे, और अपने को बचा ले;
15 हरगिज़ नहीं!! वह भड़कती हुई आग होगी;
16 खाल को उधेड़ देने वाली है,
17 वह अपनी ओर बुलाएगी हर उस व्यक्ति को जिसने (हक़ से) पीठ फेरी और मुंह मोड़ा।
18 और (माल) जमा किया, फिर उसको सैंत कर रखा,
19 बेशक इन्सान बेसब्रा पैदा किया गया है,
20 जब उसको तक्लीफ़ पहुंचती है तो घबरा उठता है,
21 और जब उसे अच्छी ह़ालत मिल जाती है, तो कंजूसी करने लगता है;
22 सिवाय नमाज़ियों के,
23 जो नमाज़ों की पाबन्दी करते हैं,
24 और जिनके मालों में एक निर्धारित ह़क़ है,
25 सवाल करने वालों और महरूमों का;
26 और जो बदला पाने के दिन को सच मानते हैं,
27 और जो अपने रब के अ़ज़ाब से डरते हैं,
28 बेशक उनके ‘रब’ का अ़ज़ाब है ही ऐसा, कि उससे बेख़ौफ़ न रहा जाए;
29 और जो अपनी शर्मगाहों (गुप्तांगों) की रक्षा करने वाले हैं।
30 सिवाय अपनी पत्नियों या लौंडियों के, उन्हें कुछ मलामत नहीं-,
31 तो जो लोग इनके सिवा कुछ और चाहते हों, वे सीमा से बढ़ जाने वाले हैं,
32 और जो अपनी अमानतों और अपने अ़हद (प्रतिज्ञा) की रिआ़यत करने वाले हैं;
33 और जो अपनी गवाहियों को अदा करते हैं,
34 और जो अपनी नमाज़ों की हिफ़ाज़त करते हैं,
35 यही लोग जन्नतों (बाग़ों) में इ़ज़्ज़त के साथ रहेंगे,
36 तो क्या हो गया है उन काफ़िरों को कि आप की ओर दौड़े चले आ रहे हैं;
37 दाएं और बाएं से, गिरोह के गिरोह हो कर?

38 क्या उनमें से हर व्यक्ति यह उम्मीद रखता है कि वह नेअ़मत के बाग़ में दाख़िल कर दिया जाएगा?–
39 हरगिज़ नहीं!! ‘हमने’ उन्हें उस चीज़ से पैदा किया, जिसे वे जानते हैं।
40 तो कुछ नहीं, मैं क़सम खाता हूं पूरबों और पश्चिमों के ‘रब’ की, कि बेशक ‘हम’ इस पर क़ुदरत (सामर्थ्यवान) रखने वाले हैं;
41 कि उनकी जगह उनसे बेहतर लोग ले आएँ और हम पीछे रह जाने वाले नहीं।
42 तो आप उनको उनके व्यर्थ बातों में पड़े रहने दीजिए, कि यह उसी में खेलते रहें, यहां तक कि यह उस दिन से मुलाक़ात कर लें जिसका इनसे वादा किया जा रहा है;
43 उस दिन यह अपनी क़ब्रों से तेज़ी के साथ निकलेंगे, जैसे वह आस्तानों (बुतों) की ओर दौड़ रहे हों।
44 उनकी निगाहें झुकी हुई होंगी, उन पर ज़िल्लत छाई हुई होगी, ‘यही’ वह दिन होगा जिसका उनसे वादा किया जाता था।

## सूर-ए-नूह

यह सूरः मक्की है, इस में अ़रबी के 947 अक्षर, 231 शब्द, 28 आयतें और 2 रूकूअ़ हैं।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

1 ‘हमने’ नूह को उनकी क़ौम की ओर भेजा, “अपनी क़ौम को ख़बरदार कीजिए! इससे पहले कि उन पर दुःख देने वाला अ़ज़ाब आ जाए।”
2 उन्होंने कहा, “ऐ क़ौम! मैं तुम्हें स्पष्ट ख़बर देने वाला हूँ,
3 कि ‘अल्लाह’ की इबादत करो और ‘उसी’ से डरो और मेरी पैरवी करो।”
4 ‘वह’ तुम्हारे गुनाहों को माफ़ कर देगा और तुम को एक निश्चित समय तक मोहलत देगा, जब अल्लाह का निश्चित किया हुआ समय आ जाएगा तो उसको टाला न जा सकेगा, काश तुम जान लेते,
5 (जब लोगों ने न माना तो नूह ने) कहा, “ऐ रब! मैंने अपनी क़ौम को रात और दिन बुलाया,
6 तो मेरे बुलावे ने उनका भागना और ही ज़्यादा कर दिया;
7 और मैंने जब कभी उन्हें बुलाया, ताकि ‘आप’ उनको माफ़ कर दें, तो उन्होंने अपनी उंगलियां अपने कानों में ठूंस लीं, और कपड़े ओढ़ लिए, और ज़िद पर अड़े रहे और बड़ा ही घमंड किया।”
8 फिर मैंने उन्हें बुलन्द आवाज़ से बुलाया।

9 फिर मैंने उनको खुले तौर पर भी समझाया, और चुपके-चुपके भी।
10 तो मैंने कहा, ''अपने रब से माफ़ी की दुआ़ करो, 'वह' बहुत माफ़ करने
वाला है;
11 वह तुम पर ख़ूब बरसने वाली बारिश भेजेगा,
12 और मालों से और बेटों से तुम्हारी मदद फ़रमाएगा, और तुम्हारे लिए बाग़
और तुम्हारे लिए नहरें बना देगा।''
13 तुम्हें क्या हो गया है कि अल्लाह की बड़ाई से डरते नहीं?-
14 हालांकि तुम्हें 'उसने' विभिन्न दशाओं में पैदा किया है।
15 क्या तुम देखते नहीं! कि किस तरह अल्लाह ने आसमान को तह दर तह
बनाया,
16 और उनमें चांद को नूर और सूरज को चिराग़ बनाया।
17 और अल्लाह ने तुम्हें ज़मीन से खास तरीक़े से पैदा किया।
18 फिर 'वह' तुम्हें उसी में ले जाएगा और तुम्हें (उसी से) निकालेगा।
19 और अल्लाह ही ने तुम्हारे लिए ज़मीन को बिछौना बनाया,
20 ताकि तुम उसके खुले हुए रास्तों में चलो।
21 नूह़ ने कहा, ''ऐ मेरे रब! उन्होंने मेरी नाफ़रमानी की, और उनकी बात मानी
जिनके माल और औलाद ने उनको नुक़्सान ही (ज़्यादा) पहुंचाया है-
22 और उन्होंने बहुत बड़ी चाल चली,
23 और कहने लगे, 'हरगिज़ न छोड़ो अपने मअ़बूदों (उपास्यों) को, और कभी
न छोड़ना 'वद्य' (देव) को, और न 'सुवाअ़' (देव) को, और न 'यग़ूस,' (देव)
को और न 'यअ़ूक़' (देव), और 'नस्र' (देव) को;
24 और उन्होंने बहुत लोगों को गुमराह किया है, और 'तू' इन ज़ालिमों की
गुमराही को और बढ़ा दे।''
25 वे अपने गुनाहों की वजह से ग़र्क़ कर (डुबा) दिये गये, फिर आग में दाख़िल
कर दिये गये, तो अल्लाह के सिवा उन्होंने अपना कोई मददगार नहीं पाया।
26 और नूह ने कहा, ''ऐ मेरे रब! 'तू' धरती पर काफ़िरों (इन्कार करने वालों)
में से किसी बसने वाले को न छोड़,
27 अगर 'तू' ने इनको छोड़ दिया तो वे 'तेरे' बन्दों को गुमराह करेंगे, और उनसे
जो औलाद होगी वह भी दुराचार, काफ़िर ही होगी।
28 ऐ मेरे रब! मुझे माफ़ कर दे और मेरे मां-बाप को, और उनको जो मेरे घर
में ईमान वाला बन कर दाख़िल हो, और ईमान वाले मर्दों, और ईमान वाली
औ़रतों को भी; और ज़ालिम लोगों की हलाकत (विनाश) को और बढ़ा दे।''

## सूर-ए-जिन्न

यह सूरः मक्की है, इस में अ़रबी के 1126 अक्षर, 287 शब्द, 28 आयतें और 2 रूकूअ़ हैं।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

1 कह दीजिए, ''मेरे पास वह़्य आयी है कि जिन्नात के एक गिरोह ने मेरी ओर बात (क़ुर्आन) सुनने के लिए ध्यान दिया, तो उन्होंने कहा कि 'हमने अ़जीब क़ुर्आन सुना है;

2 जो भलाई और सूझ-बूझ की राह दिखाता है, तो हम उस पर ईमान ले आए, और हम अपने रब के साथ हरगिज़ किसी को साझीदार न ठहराएंगे;

3 और बहुत बुलन्द है हमारे 'रब' की इ़ज़्ज़त, वह न पत्नी रखता है और न औलाद;

4 और यह कि 'हममें' जो मूर्ख हैं, वह अल्लाह के विषय में झूठ गढ़ते हैं;

5 और हम यह समझते थे कि इन्सान और जिन्न अल्लाह के विषय में झूठ नहीं बोलते,

6 और यह कि कुछ मर्द इन्सानों में से ऐसे थे जो जिन्नात के मर्दों की पनाह लिया करते थे,(इससे) उनकी सरकशी और बढ़ गई थी;

7 और यह कि उनका भी यही गुमान था, जैसा कि तुमने गुमान किया था, कि अल्लाह दोबारा किसी को ज़िन्दा न करेगा;

8 और यह कि 'हमने' आसमान को टटोला, तो 'हमने' उसे इस ह़ाल में पाया कि वह सख़्त चौकीदारों और शहाबों (शोलों) से भरा हुआ है;

9 और यह कि 'हम' उसमें बैठने की जगहों पर बातें सुनने के लिए बैठा करते थे, तो जो सुनना चाहे, तो वह अपने लिए घात में लगा एक अंगारा (उल्क़ा) पाएगा;

10 और यह हम नहीं जानते कि उन के साथ जो धरती में हैं, बुराई का इरादा किया गया है, या उनके रब ने उनके लिए भलाई का इरादा किया है;

11 और यह कि हममें से कुछ नेक हैं और कुछ उसके अतिरिक्त, हम विभिन्न तरीक़ों पर थे;

12 और हम ने यह समझ लिया है कि हम न धरती में अल्लाह को हरा (पराजित कर) सकते हैं, और न (आसमान में कहीं) भाग कर उसको थका सकते हैं;

13 और जब हमने हिदायत को सुन लिया, तो हम उस पर ईमान ले आए, तो जो व्यक्ति अपने रब पर ईमान लाएगा, तो उसे न किसी कमी का डर होगा और न किसी ज़ुल्म का;

14 और यह कि 'हममे' से कुछ मुस्लिम (आज्ञाकारी) हैं और हममें से कुछ हक़ से हटे हुए, तो जिस ने इस्लाम क़ुबूल कर लिया तो उसने भलाई की राह ढूंढ़ ली;

15 और जो हक़ से हटे हुए हैं, वे जहन्नम का ईंधन होंगे।"

16 और यह कि अगर ये लोग सीधी राह पर क़ायम हो जाते तो हम उन्हें पीने को बहुत सा पानी देते;

17 ताकि 'हम' इसमें उनका इम्तिहान लें, और जो व्यक्ति अपने रब के ज़िक्र से मुंह मोड़ेगा, तो 'वह' उसे चढ़ते हुए अ़ज़ाब में डाल देगा।

18 और यह कि मस्जिदें (सब सज्दे) अल्लाह ही के लिए हैं, तो तुम अल्लाह के साथ किसी को मत पुकारो।

19 और जब अल्लाह का बन्दा 'उसको' पुकारने के लिए खड़ा होता है, तो यह लोग उस पर जत्थे बन कर टूट पड़ते हैं।

20 कह दीजिए, "मैं तो केवल अपने 'रब' को ही पुकारता हूँ, और 'उसके' साथ किसी को साझी नहीं ठहराता।"

21 कह दीजिए, "मैं तुम्हारे लिए न किसी नुक़्सान का अधिकार रखता हूँ और न किसी भलाई का।"

22 कह दीजिए, "अल्लाह के मुक़ाबले में मुझे कोई पनाह नहीं दे सकता और न मैं 'उसके' सिवा कोई पनाह की जगह पा सकता हूं।"

23 हाँ, अल्लाह की बात और 'उसका' पैग़ाम पहुंचा देना (ही मेरे ज़िम्मे है), और जो व्यक्ति अल्लाह और 'उसके' रसूल की नाफ़रमानी करेगा, उनके लिए जहन्नम की आग है वे हमेशा उसी में रहेंगे।

24 यहां तक कि जब ये लोग वह (दिन) देख लेंगे, जिसका इनसे वादा किया जाता है तब जान लेंगे कि किसके मददगार कमज़ोर हैं और किसका जत्था संख्या में कम है।

25 कह दीजिए, "मैं नहीं जानता कि जिस चीज़ का वादा तुमसे किया जा रहा है वह क़रीब है या मेरे 'रब' ने उसकी मुद्दत (अवधि) लम्बी कर दी है;

26 ग़ैब (परोक्ष) का जानने वाला है, और 'वह' अपने ग़ैब को किसी पर ज़ाहिर नहीं करता;

27 सिवाय उसके जिसे उसने रसूल की हैसियत से पसंद कर लिया हो, तो उसके आगे और पीछे से उसके लिए निगहबान (रक्षक) लगा देता है,

28 ताकि वह जान लें कि उन्होंने अपने 'रब' के पैग़ाम पहुंचा दिये, और 'वह' उनके पूरे हालात को घेरे हुए है, और हर चीज़ को 'उसने' गिन रखा है।

## सूर-ए-मुज़्ज़म्मिल

यह सूरः मक्की है, इस में अ़रबी के 864 अक्षर, 200 शब्द, 20 आयतें और 2

रूकूअ़ हैं।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

1 ऐ कपड़े में लिपटने वाले,
2 रात को (नमाज़ में) खड़े रहा करो, मगर थोड़ी सी रात;
3 आधी रात या उससे थोड़ा कम,
4 या उससे कुछ ज़्यादा कर लो, और क़ुर्आन को तर्तील (ठहर-ठहर कर) के साथ पढ़ो।
5 'हम' आप पर बहुत जल्द एक भारी कलाम डालने वाले हैं।
6 कुछ शक नहीं कि रात का उठना जी को दबाने के लिए ज़्यादा प्रभावी और बात को ज़्यादा दुरूस्त रखने वाला है;
7 आप दिन को काम में व्यस्त रहते हैं,
8 और अपने रब के नाम का ज़िक्र करते रहें और सबसे हट कर 'उसी' की ओर ध्यान करें।
9 ('वही') पूरब और पश्चिम का रब है, 'उसके' सिवा कोई मअ़बूद (उपास्य) नहीं; तो 'उसी' को अपना करता-धरता बना लो।
10 और सब्र कीजिए, यह लोग जो कुछ कहते हैं, और भले तरीक़े से उनसे अलग हो जाइए;
11 और मुझे और उन झुठलाने वाले खुशह़ाल लोगों का मामला छोड़ दीजिए और उनको थोड़ी सी मोहलत दीजिए,
12 कुछ शक नहीं कि 'हमारे' पास बेड़ियां हैं और भड़कती हुई आग है,
13 और गले में अटकने वाला खाना है, और दुःख देने वाला अ़ज़ाब है।
14 जिस दिन धरती और पहाड़ कांप उठेंगे और पहाड़ बिखरी हुई रेत बन जाएँगे।
15 'हमने' तुम्हारी ओर एक रसूल भेजा, जो तुम्हारे ऊपर गवाह है, जैसा कि 'हमने' फ़िरऔ़न की ओर रसूल भेजा था;
16 तो फ़िरऔ़न ने रसूल की नाफ़रमानी की, तो 'हमने' उसे सख़्त वबाल में पकड़ लिया;
17 अगर तुमने भी इन्कार किया तो उस दिन से कैसे बचोगे जो बच्चों को बूढ़ा कर देगा;
18 आसमान उसकी वजह से फट जाएगा, 'उसका' वादा तो हो कर रहेगा?
19 यह (क़ुर्आन) तो एक नसीह़त है, तो जिसका जी चाहे अपने 'रब' का रास्ता अपना ले।
20 आप का रब खूब जानता है कि आप और आप के साथ के लोग दो तिहाई रात के क़रीब और आधी रात, और तिहाई रात तक (नमाज़ में) खड़े रहते हैं, और अल्लाह रात और दिन के समय को निर्धारित करता है, 'वह' जानता है कि उसकी ठीक-ठीक गिनती नहीं कर सकते, तो उसने तुम पर मेहरबानी

की, तो तुम क़ुर्आन से उतना हिस्सा पढ़ लिया करो जो आसान हो, 'वह' जानता है कि तुम में मरीज़ भी होंगे, और कुछ वह लोग भी होंगे जो ज़मीन में सफ़र करते हैं और अल्लाह का फ़ज़्ल (रोज़ी) तलाश करते हैं, और कुछ अल्लाह की राह में क़िताल (युद्ध) करेंगे, तो तुम क़ुर्आन में से उतना हिस्सा पढ़ लिया करो जितना कि आसानी से पढ़ा जा सके; और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात देते रहो, और अल्लाह को नेक क़र्ज़ दो, और अच्छा क़र्ज़; तुम जो भलाई अपने लिए भेजोगे उसे अल्लाह के पास पाओगे, वह बेहतर और बदले में बहुत बढ़ कर होगा, और अल्लाह से माफ़ी मांगते रहो, बेशक अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला, रहम वाला है।

## सूर-ए-मुद्दस्सिर

यह सूरः मक्की है, इस में अ़रबी के 1145 अक्षर, 256 शब्द, 56 आयतें और 2 रूकूअ़ हैं।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

1 ऐ कपड़े में लिपटने वाले,
2 उठिए और ख़बरदार कीजिए;
3 और अपने 'रब' की बड़ाई बयान कीजिए,
4 और अपने कपड़ों को पाक रखिए,
5 और (बुतों की) गन्दगी से अलग रहिए;
6 और किसी पर एहसान इसलिए न कीजिए कि ज़्यादा (बदला) हासिल हो जाए,
7 और अपने 'रब' के लिए सब्र कीजिए।
8 तो जब सूर फूँका जाएगा,
9 तो वह दिन बड़ा ही सख़्त दिन होगा,
10 इन्कार करने वालों पर आसान न होगा,
11 छोड़ दो 'मुझे' और उस व्यक्ति को जिसे 'मैंने' अकेला पैदा किया है,
12 और उसको बहुत सा माल दिया;
13 और हाज़िर रहने वाले बेटे (दिये),
14 और 'मैंने' उसके लिए हर तरह की उ़स्अ़त दी
15 फिर वह उम्मीद रखता है कि 'मैं' उसे और ज़्यादा दूंगा,
16 ऐसा हरगिज़ नहीं, यह हमारी आयतों का विरोधी है,
17 जल्द ही 'मैं' उसे 'सऊद' (अर्थात दोज़ख के पहाड़) पर चढ़ा दूंगा।
18 उसने सोचा और एक बात बनाई,

19 तो उस पर अल्लाह की मार हो कैसी बात बनाई?-
20 फिर यह मारा जाए उसने कैसी बात बनाई?
21 फिर उसने देखा,
22 फिर मुंह बनाया और ज़्यादा मुंह बनाया,
23 फिर मुंह मोड़ा, और फिर घमंड किया;
24 तो बोला, ''यह एक जादू है जो पहले से चला आ रहा है,
25 यह इन्सान का कलाम (वाणी) है।''
26 'मैं' जल्द ही उसे 'सक़र' (दोज़ख़) में झोंक दूँगा;
27 और तुम्हें क्या मालूम कि सक़र क्या है?-
28 न वह बाक़ी रखेगी, और न छोड़ेगी;
29 वह शरीर को बिगाड़ देने वाली है,
30 उस पर उन्नीस (फ़रिश्ते) नियुक्त हैं;
31 और 'हमने' उस आग के निगरां फ़रिश्ते बनाए हैं, और 'हमने' उनकी संख्या
को इन्कार करने वालों के लिए मुसीबत और आज़ूमाइश बना कर रखा है,
ताकि अह्ले किताब को यक़ीन हो जाए, और ईमान वालों का ईमान और बढ़
जाए, अह्ले किताब और ईमान वाले किसी शक में न पड़ें; और जिन लोगों
के दिलों में रोग है, और काफ़िर कहेंगे, ''इस मिसाल से अल्लाह का क्या
मक़सद है?'' इसी तरह अल्लाह जिसे चाहता है गुमराह करता है, और जिसे
चाहता है सीधी राह दिखाता है, और तुम्हारे रब की सेनाओं को खुद 'उसके'
सिवा कोई नहीं जानता, और यह (क़ुर्आन) इन्सान के लिए नसीहत है;
32 हाँ, चाँद की क़सम!
33 और रात की जब वह पीठ फेरे,
34 और सुबह की जब वह रोशन हो जाए,
35 कि वह (आग) एक बहुत बड़ी (आफ़त) है,
36 बशर (इन्सानों) को ख़बरदार करने वाली;
37 जो तुममें से आगे बढ़ना चाहे या पीछे रहना चाहे;
38 हर व्यक्ति जो कुछ उसने कमाया है उसके बदले रेहन (गिरवी) है,
39 सिवाय दाएं वालों के;
40 वे जन्नत के बागों में होंगे, वहाँ वे पूछ रहे होंगे;
41 मुजरिमों से,
42 ''तुम्हें क्या चीज़ 'सक़र' (दोज़ख) में ले आयी?''
43 वे कहेंगे, ''हम नमाज़ पढ़ने वालों में से न थे,
44 और न मिस्कीनों (मोहताजों) को खाना खिलाते थे,
45 और बहस करने वालों के साथ हम भी बहस करते थे,
46 और बदला के दिन को झुठलाते थे,
47 यहां तक कि यक़ीनी चीज़ (मौत) हमारे सामने आ गयी।''

48 तो सिफ़ारिश करने वालों की सिफ़ारिश कुछ भी फ़ायदा न पहुंचा सकेगी।
49 उन्हें क्या हो गया है कि वे नसीह़त से मुंह फेर रहे हैं,
50 जैसेः- बिद्‌के हुए जंगली गधे हैं,
51 जो शेर से (डर कर) भाग जाते हैं।
52 बल्कि उनमें से हर व्यक्ति चाहता है कि उसे खुला सहीफ़ा (किताबें)दिया जाए;
53 ऐसा हरगिज़ नहीं, बल्कि यह आख़िरत से डरते नहीं।
54 कुछ शक नहीं कि यह (क़ुर्आन) तो एक नसीह़त है,
55 तो जिसका जी चाहे नसीह़त हासिल कर ले।
56 और याद भी तभी रखेंगे जब अल्लाह चाहे, 'वह' डरने के लायक़ और बख़्शिश का मालिक है।

## सूर-ए-क़ियामः

यह सूरः मक्की है, इस में अ़रबी के 682 अक्षर, 164 शब्द, 40 आयतें और 2 रूकूअ़ हैं।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

1 मैं क़सम खाता हूँ क़ियामत के दिन की,
2 और क़सम खाता हूं ऐसे नफ़्स (आत्मा) की, जो अपने ऊपर मलामत करे;
3 क्या इन्सान यह समझता है कि 'हम' हरगिज़ उसकी हड्डियों को इकट्ठा न करेंगे?
4 क्यों नहीं! 'हम' तो इस पर क़ादिर हैं कि उसकी पोरों तक को ठीक कर दें?
5 बल्कि इन्सान चाहता है कि अपने आगे की ज़िन्दगी में भी बुरे कर्म करता रहे,
6 पूछता है, "क़ियामत का दिन कब आएगा?"
7 तो जब निगाह चौंधिया जाए;
8 और चांद बेनूर हो जाए;
9 और सूरज और चांद इकट्ठे कर दिये जाएँ;
10 उस दिन इन्सान कहेगा, "कहां भाग जाऊँ?"
11 बेशक कहीं पनाह नहीं;
12 उस दिन केवल तेरे रब ही के पास ठिकाना होगा;
13 उस दिन इन्सान को उसका सब अगला पिछला किया हुआ बता दिया जाएगा;

14 बल्कि इन्सान अपनी ह़ालत पर ख़ुद ही निगाह रखता है;
15 और चाहे वह कितने ही हीले बहाने तलाश करे।
16 (ऐ मुह़म्मद) आप अपनी ज़बान को हरकत न दें इस (क़ुर्आन) को जल्दी याद करने के लिए;
17 'हमारे' ज़िम्मे है उसका जमा करना और पढ़वा देना;
18 तो जब 'हम' उसको पढ़ें, तो फिर आप भी वैसे ही पढ़ें,
19 फिर उसे स्पष्ट करना 'हमारे' ज़िम्मे है।
20 बल्कि (लोगों!) तुम दुनिया से मुह़ब्बत करते हो;
21 और आख़िरत को छोड़ देते हो।
22 उस दिन बहुत से चेहरे-तरो ताज़ा होंगे,
23 अपने 'रब' की ओर देख रहे होंगे।
24 और बहुत से चेहरे उस दिन उदास होंगे;
25 वे समझ रहे होंगे कि उनके साथ कमरतोड़ मामला होने वाला है।
26 देखो! जब जान हंसली (कण्ठ) तक पहुंच जाएगी;
27 और लोग कहने लगेंगे "है कोई झाड़- -फूंक करने वाला?"
28 और वह समझेगा कि यह सबसे जुदाई का समय है;
29 और पिंडुली से पिंडली लिपट जाएगी;
30 उस दिन तुझ को अपने रब की ओर जाना होगा।
31 तो उसने न तस्दीक़ की और न नमाज़ पढ़ी,
32 और झुठलाया और मुंह मोड़ा,
33 फिर अपने घर वालों की ओर अकड़ता हुआ चल दिया,
34 अफ़सोस है! तुझ पर? फिर अफ़सोस है!!
35 फिर अफ़सोस है!!! तुझ पर, फिर अफ़सोस है;
36 क्या इन्सान यह समझता है कि उसे यूँ ही छोड़ दिया जाएगा?
37 क्या वह वीर्य की एक बूंद न था? जो (रह़म में) टपकाया जाता है?
38 फिर वह ख़ून का लोथड़ा था, तो अल्लाह ने उसको (शरीर) बनाया और उस (के अंगों) को दुरूस्त किया;
39 फिर उससे जोड़ा बनाया, मर्द और औ़रत;
40 क्या वह इस पर क़ादिर नहीं कि मुर्दों को ज़िन्दा कर दे?

## सूर-ए-दहर

यह सूरः मदनी है, इस में अ़रबी के 1099 अक्षर, 246 शब्द, 31 आयतें और 2

रूकूअ़ हैं।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

1 बेशक इन्सान पर एक ऐसा वक्त भी आ चुका है, जिसमें कि वह कोई ऐसी चीज़ न था, ''जिसका ज़िक्र किया जाता।''
2 'हमने' इन्सान को एक मिले-जुले नुत्फ़ा (वीर्य) से पैदा किया, ताकि उसे आज़माएं, तो 'हमने' उसे सुनने, देखने वाला बनाया।
3 'हमने' उसे राह दिखाया, तो वह (चाहे) शुक्रगुज़ार हो या नाशुक्रा हो।
4 'हमने' इन्कार करने वालों के लिए ज़ंजीरें और तौंक़ और दहकती हुई आग तैयार कर रखी है।
5 भले लोग ऐसे जाम से पिएँगे जिसमें काफ़ूर मिला हुआ होगा;
6 एक ऐसा स्रोत होगा! जिससे अल्लाह के बन्दे पिएँगे, इस तरह कि उसे बहाकर (नहरें जहां चाहेगे) ले जाएँगे;
7 यह लोग नज़र (मन्नत) पूरी करते हैं और उस दिन से डरते हैं, जिसकी मुसीबत हर ओर से फैली हुई होगी;
8 और इसके बावजूद कि उनको खुद खाने की ख्वाहिश है, मिस्कीनों को, और यतीमों को, और कैदियों को खिलाते हैं।
9 'हम' तुम्हें केवल अल्लाह को राज़ी करने के लिए खिलाते हैं, 'हम' तुमसे कोई बदला या शुक्रिया नहीं चाहते।
10 'हम' अपने 'रब' से उस दिन से डरते हैं जिस दिन कि सख़्त परेशानी छायी होगी।
11 तो अल्लाह उनको उस दिन की मुसीबत से बचा लेगा और ताज़गी और खुशी देगा;
12 और उन्होंने जो सब्र किया, उसके बदले में उन्हें जन्नत और रेशम (का लिबास) अ़ता किया जाएगा;
13 वहां वे तख्तों पर तकिया लगाए बैठे होंगे, न उन्हें धूप की सख्ती महसूस होगी और न सख़्त सर्दी की तेज़ी;
14 और उन पर उस (बाग़) के साये क़रीब होंगे, और उसके फल झुके हुए होंगे,
15 उनके आगे चांदी के बरतन और शीशे के गिलास गर्दिश में होंगे-
16 शीशे भी चांदी के- जो ठीक अन्दाज़ा करके बनाए गये होंगे;
17 और वहां वे एक और जाम पिएँगे जिसमें ज़न्जबील (सोंठ) मिली हुई होगी।
18 यह एक स्रोत होगा, जिसका नाम सल-सबील है।
19 और उनकी सेवा में ऐसे लड़के भाग दौड़ कर रहे होंगे जो हमेशा उसी आयु के रहेंगे, जब तुम उन्हें देखोगे तो समझोगे कि बिखरे हुए मोती हैं;
20 और जब तुम देखोगे तो बहुत सी नेअ़मतें और विशाल राज्य दिखाई देगा;

21 उनके ऊपर हरे बारीक रेशमी कपड़े होंगे, और उन्हें चांदी के कंगन पहनाए
जाएँगे और उनका रब उन्हें शराबे- तहूर (पवित्र पेय) पिलाएगा।
22 "यह है तुम्हारा बदला और तुम्हारी कोशिश का शुक्रिया।"
23 'हमने' आप पर कुर्आन उतारा थोड़ा-थोड़ा कर के;
24 तो आप अपने 'रब' के हुक्म और फ़ैसले के लिए सब्र से काम लीजिए, और
उन लोगों में से किसी गुनहगार, या नाशुक्रे की बात न मानिए;
25 और अपने रब का ज़िक्र कीजिए सुबह और शाम,
26 और रात के कुछ हिस्से में भी 'उसे' सज्दः कीजिए, और रात को देर तक
उसकी तस्बीह़ कीजिए।
27 यह लोग जल्द ह़ासिल होने वाली चीज़ (दुनिया) से मुह़ब्बत करते हैं, और
एक भारी दिन को अपने पीछे छोड़ देते हैं।
28 'हमने' ही उनको पैदा किया है, और उनके जोड़ मज़बूत बनाए, और 'हम'
जब चाहें उनके जैसे लोग बदल दें।
29 यह एक नसीह़त है, तो जो चाहे अपने रब की ओर जाने की राह अपना ले;
30 और तुम कुछ भी नहीं चाह सकते जब तक कि अल्लाह ही न चाहे, बेशक
अल्लाह इ़ल्म वाला, ह़िकमत वाला है।
31 'वह' जिसे चाहता है अपनी रह़मत में दाख़िल करता है, और ज़ालिमों के लिए
उसने दुःख देने वाला अ़ज़ाब तैयार कर रखा है।

## सूर-ए-मुरसिलात

यह सूरः मक्की है, इस में अ़रबी के 846 अक्षर, 181 शब्द, 50 आयतें और 2 रूकूअ़ हैं।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

1 उन हवाओं की क़सम! जो लगातार भेजी जाती हैं,
2 तो खूब तेज़ हो जाती हैं,
3 और (बादलों को) उठाकर फैलाती हैं,
4 फिर उनको फाड़ कर अलग करती हैं,
5 फिर याददिहानी डालती हैं, (अर्थात फ़रिश्तों की क़सम! जो वह़्य लाते हैं),
6 हुज्जत क़ायम करने या ख़बरदार करने के लिए (ताकि उज्र दूर कर दिया
जाए),
7 जिसका वादा तुमसे किया जा रहा है वह होकर रहेगा।
8 तो जब सितारे बेनूर कर दिये जाएँगे,

9 और जब आसमान फट जाएगा,
10 और पहाड़ उड़ा दिये जाएँगे,
11 और जब रसूलों को इकट्ठा किया जाएगा।
12 किस दिन के लिए (उनका मामला) टाला गया है?–
13 फ़ैसले के दिन के लिए,
14 और तुम्हें क्या मालूम कि फ़ैसले का दिन क्या है?–
15 तबाही है, उस दिन झुठलाने वालों के लिए।
16 क्या 'हमने' अगले लोगों को तबाह नहीं किया?
17 फिर बाद वालों को उनके पीछे तबाह करते रहे?–
18 मुजरिमों के साथ 'हम' ऐसा ही मामला करते हैं।
19 तबाही है, उस दिन झुठलाने वालों के लिए,
20 क्या 'हमने' तुमको मामूली पानी से पैदा नहीं किया,
21 फिर 'हमने' उसे एक सुरक्षित जगह में रखा,
22 एक निश्चित अवधि तक?
23 तो 'हमने' एक योजना बनायी (और) 'हम' क्या ही खूब योजना बनाने वाले हैं?
24 तबाही है, उस दिन झुठलाने वालों के लिए;
25 क्या 'हमने' धरती को समेटने वाली नहीं बनायी–
26 ज़िन्दों को और मुर्दों को–
27 और उसमें ऊँचे-ऊँचे पहाड़ जमाए और तुम लोगों को मीठा पानी पिलाया?
28 तबाही है, उस दिन झुठलाने वालों के लिए,
29 चलो! उस चीज़ की ओर जिसे तुम झुठलाते थे,
30 चलो तीन शाखाओं वाली छाया की ओर–
31 जिसमें न छांव है और न शोलों की लपट से बचाव–
32 वह आग महल की तरह ऊँची चिंगारियां फेंकती होगी–
33 मानो वे ज़र्द (पीले) ऊँट हैं।
34 तबाही है, उस दिन झुठलाने वालों के लिए,
35 यह वह दिन होगा कि होंट तक न हिला सकेंगे,
36 और न उन्हें इजाज़त दी जाएगी कि उज़्र (कारण) पेश कर सकें;
37 तबाही है, उस दिन झुठलाने वालों के लिए,
38 "यही फ़ैसले का दिन है, 'हमने' तुम को इकट्ठा कर दिया है और तुम से पहले के लोगों को भी,
39 अगर तुम कोई चाल चल सकते हो तो मेरे मुक़ाबले में चल कर देखो।
40 तबाही है, उस दिन झुठलाने वालों के लिए,
41 बेशक, परहेज़गार सायों और स्रोतों में होंगे;

42 और उन फलों के बीच जो वे चाहें।
43 "खाओ- पियो मज़े से, उन कामों के बदले में जो तुम करते रहे हो;"
44 'हम' अच्छे काम करने वालों को ऐसा ही बदला देते हैं;
45 तबाही है, उस दिन झुठलाने वालों के लिए;
46 "खाओ और मज़े उड़ा लो, थोड़ा सा, तुम बेशक मुज्रिम हो!"
47 तबाही है, उस दिन झुठलाने वालों के लिए;
48 और जब उनसे कहा जाता है, "झुको, तो नहीं झुकते।"
49 तबाही है, उस दिन झुठलाने वालों के लिए;
50 अब इसके बाद यह किस कलाम (वाणी) पर ईमान लाएँगे?

## सूर-ए-नबा

यह सूरः मक्का में उतरी, इसमें अ़रबी के 801 अक्षर,174 शब्द,40आयतें और 2 रूकूअ़ हैं।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु महादयालु) है।

1 लोग किस चीज़ के बारे में पूछ-गच्छ कर रहे हैं?
2 उस बड़ी ख़बर के बारे में;
3 जिसमें यह लोग मतभेद कर रहे हैं।
4 हरगिज़ ऐसा नहीं, जल्द ही मालूम हो जाएगा;
5 फिर जल्द ही इन्हें मालूम हो जाएगा।
6 क्या 'हमने' ज़मीन को बिछौना नहीं बनाया;
7 और पहाड़ों को मेखें?
8 और 'हमने' तुमको जोड़ा-जोड़ा भी (नर-मादा) पैदा किया;
9 और 'हमने' तुम्हारी नींद को तुम्हारे आराम का ज़रिया बनाया।
10 और 'हमने' रात को पर्दा बनाया;
11 और 'हमने' दिन को रोज़ी कमाने का ज़रिया बनाया;
12 और 'हमने' ही तुम्हारे ऊपर सात मज़बूत आसमान बनाए;
13 और 'हमने' ही चिराग़(सूर्य) बनाया;
14 और 'हमने' भरे बादलों से मूसलाधार पानी बरसाया;
15 ताकि उससे अनाज और हरियाली;

16 और घने-घने बाग़ उगाए।

17 बेशक फ़ैसले का वक़्त निश्चित है;

18 जिस दिन 'सूर' में फूंक मारी जाएगी तो तुम लोग झुंड के झुंड चले आओगे।

19 और आसमान खोल दिया जाएगा, तो (उसमें) दरवाज़े ही दरवाज़े हो जाएँगे;

20 और पहाड़ चलाए जाएँगे, तो वह चमकती हुई रेत के समान हो कर रह जाएँगे।

21 बेशक दोज़ख घात में है;

22 सरकशों का वही ठिकाना है;

23 उसमें बेमुद्दत पड़े रहेंगे;

24 उसमें न वे ठंडी चीज़ का ज़ायक़ा चखेंगे न किसी पीने की चीज़ का;

25 सिवाय खौलता हुआ पानी और बहती हुई पीप के।

26 बदला है पूरा-पूरा।

27 बेशक यह लोग हिसाब की उम्मीद ही न रखते थे;

28 और 'हमारी' आयतों को खूब झुठलाया करते थे;

29 और 'हमने' हर चीज़ की गिनती करके किताब में दर्ज कर दिया है;

30 बस अब मज़ा चखते रहो (अज़ाब, को) और अधिक बढ़ाते ही रहेंगे।

31 बेशक परहेज़गारों के लिए कामियाबी है;

32 (जहाँ) बाग़ और अंगूर,

33 और नौजवान, हम उम्र औरतें;

34 और (शराब के) छलकते प्याले;

35 न वहाँ वे बकवास सुनेंगे, और न झूठ;

36 यह आपके रब की ओर से बदला है तय (किया हुआ) इनआ़म,

37 वह आसमानों और ज़मीन का और इन दोनों के बीच जो कुछ है सब का रब बड़ी रहमत वाला है, उस से बात करना, उनके बस में न होगा।

38 जिस दिन रूह़ (जिब्रईल अ़लै0) और तमाम फ़रिश्ते क़तार बाँधे खड़े होंगे। तो कोई बोल न सकेगा, मगर जिसको रह़मान ही इजाज़त दे और वह बात भी ठीक कहे।

39 वह दिन सच है, अब जो कोई चाहे अपने रब के पास अपना ठिकाना बना ले।

40 'हमने' तुमको उस क़रीब आने वाले अ़ज़ाब से ख़बरदार कर दिया है, जिस दिन आदमी देख लेगा, जो कुछ उसके हाथों ने आगे भेजा था,और काफ़िर(इन्कारी) कहेगा, ''काश मैं मिट्टी ही (अर्थात मिट्टी से आदमी बनाया ही न गया) होता।''

# सूर-ए-नाज़िआ़त

यह सूरः मक्का में उतरी इसमें अ़रबी के 731 अक्षर, 81 शब्द, 46 आयतें और 2 रूकूअ़ हैं।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

1 उन (फ़रिश्तों) की क़सम, जो (इन्कारियों की जान) डूब कर खींचते हैं;
2 और उन (फ़रिश्तों) की क़सम जो आसानी से निकालते हैं;
3 और उन (फ़रिश्तों) की जो तैरते फिरते हैं,
4 फिर एक-दूसरे से आगे बढ़ते हैं;
5 फिर (दुनिया के) कामों का इन्तिज़ाम करते हैं।
6 जिस दिन हिला डालने वाली घट्ना हिला डालेगी;
7 (फिर) उसके पीछे आने वाला (भौंचाल) आएगा।
8 उस दिन (लोगों के) दिल काँप रहे होंगे;
9 उनकी आँखें (ख़ौफ़ से) झुकी हुई  होंगी,
10 यह लोग कहते हैं क्या पहली हालत में फिर लौटाए जाएँगे,?
11 क्या जब हम सड़ी गली खोखली हड्डियाँ हो जाएँगे?
12 कहते हैं यह वापसी तो बड़े घाटे की होगी?
13 (अल्लाह कहता है) वह तो केवल एक ज़ोर की डांट होगी;
14 फिर वे एक समतल मैदान में जमा होंगे,
15 क्या आपको मूसा के क़िस्से की ख़बर पहुँची है,?
16 जब उनके रब ने उन्हें पाक मैदान 'तुवा' में पुकारा।
17 फ़िरऔ़न की ओर जाओ वह बहुत शरारत पर उतर आया है;
18 फिर कहो,"क्या तू चाहता है कि (अपने आप को) पाक-साफ़ कर ले?"
19 और मैं तुझे तेरे रब की ओर राह बताऊँ ताकि तू डरे।
20 तो (मूसा ने) उस (फ़िरऔ़न) को बड़ी निशानी दिखाई;
21 फिर उसे भी झुठला दिया और न माना।
22 फिर पलूटा और (विरोध में) कोशिश करने लगा;
23 फिर (लोगों को) इकट्ठा किया फिर पुकारा;
24 फिर कहा, मैं हूँ तुम्हारा सबसे बड़ा रब।
25 तो अल्लाह ने उसे दुनिया व आख़िरत के अ़ज़ाब में पकड़ लिया।
26 बेशक इसमें बड़ी नसीह़त है हर उस व्यक्ति के लिए जो डरे।

27 (इनसे पूछो) क्या तुम लोगों का पैदा करना कठिन काम है, या आसमान का? उसी ने उसको बनाया;
28 उसकी छत को ऊँचा किया, फिर उसे बराबर कर दिया।
29 और उसी ने रात को अंधेरी बनाया और (दिन को) धूप निकाली;
30 और उसके बाद ज़मीन को फैला दिया।
31 उसी ने इसमें से उसका पानी और चारा निकाला;
32 और पहाड़ों को उसमें जमा दिया।
33 यह सब कुछ तुम्हारे लिए और तुम्हारे चौपायों के फ़ायदे के लिए।
34 तो जब वह बड़ी आफ़त आएगी।
35 तो उस दिन इन्सान अपने किये को याद करेगा।
36 और जहन्नम सामने लाई जाएगी जो देखना चाहे,
37 तो जिसने शरारत की,
38 और दुनिया की ही ज़िन्दगी को अहमियत (प्रमुखता) दी होगी;
39 (बेशक) उसका ठिकाना जहन्नम होगा।
40 और जो अपने रब के सामने खड़े होने से डरता रहा, और अपने जी को मनमानी से रोकता रहा;
41 तो बेशक उसका ठिकाना जन्नत होगा।
42 (ऐ मुह़म्मद ) आप से पूछते हैं कि वह घड़ी कब आएगी?
43 तो क्या तअ़ल्लुक़ आप को उसके ज़िक्र (बताने) से,
44 उसकी जानकारी आप के रब ही को (मालूम) है
45 बेशक आप तो केवल सचेत करने वाले हैं हर उस व्यक्ति को, जो उसका डर रखे।
46 जिस दिन यह लोग उसे देख लेंगे, तो उन्हें ऐसा महसूस होगा कि, यह (दुनिया में केवल) एक दिन के पिछले पहर या अगले पहर से ज़्यादा नहीं ठहरे।

## सूर-ए-अ़-ब-स

यह सूरः मक्का में उतरी, इस में अ़रबी के 553 अक्षर, 113 शब्द, 42 आयतें और 1 रूकूअ़ है।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु महादयालु) है।

1 (उसने) त्योरी चढ़ाई और मुँह फेर लिया;

2 (इस बात पर) कि उनके पास एक अन्धा आया।
3 और आप को क्या मालूम, शायद वह सुधार पैदा करता,?
4 या नसीह़त पर ध्यान देता और नसीह़त करना उसके लिए लाभदायक होता।
5 जो आदमी लापरवाही करता है;
6 उसकी ओर तो आप ध्यान देते हैं।
7 और (वह न सुधरे तो) आप पर उसकी कुछ (ज़िम्मेदारी) नहीं;
8 और जो (आदमी) आप के पास दौड़ता हुआ आया,
9 और वह(अल्लाह से) डर रहा होता है;
10 तो आप उससे ग़फ़लत बरतते हैं,
11 हरग़िज़ ऐसा न कीजिए, बेशक यह (क़ुर्आन) तो एक नसीह़त नामा है;
12 जिसका जी चाहे याद रखे।
13 यह (क़ुर्आन) अदब के क़ाबिल पन्नों पर है।
14 जो बुलन्द मक़ाम पर (और) पाक है;
15 (ऐसे) लिखने वालों के हाथों में;
16 जो मुह़तरम(सम्मानीय) और नेक हैं।
17 (अल्लाह की) मार हो ऐसे इन्सानों पर, यह कैसा नाशुक्रा है।
18 उसे (अल्लाह ने) किस चीज़ से पैदा किया?
19 नुत्फ़े (sperm) से पैदा किया, फिर उसे एक ख़ास अन्दाज़ से बनाया;
20 फिर उसका (दुनिया में आने का) रास्ता आसान कर दिया;
21 फिर उसे मौत दी,फिर क़ब्र में पहुँचाया।
22 फिर जब चाहेगा, उसे (दोबारा) उठा कर खड़ा करेगा।
23 कुछ सन्देह नहीं कि अल्लाह ने उसे जो हुक्म दिया था, उसने उस पर अ़मल न किया।
24 तो इन्सान को चाहिए कि अपने खाने पर नज़र डाले;
25 बेशक 'हमने' ही तो (मूसलाधार) पानी बरसाया;
26 फिर 'हमने' ही ज़मीन को चीरा फ़ाड़ा;
27 फिर 'हमने' ही उसमें से अनाज उगाया;
28 और अंगूर और तरकारियाँ;
29 और ज़ैतून और खजूरें;
30 और घने-घने बाग़;
31 और फल और चारा;
32 तुम्हारे और तुम्हारे मवेशियों के लिए बसर का सामान (बनाया)।

33 तो जब (कान फाड़ देने वाली) आवाज़ आएगी;
34 उस दिन आदमी अपने भाई से दूर भागेगा;
35 और अपनी माँ, और अपने बाप से;
36 और अपनी पत्नी और अपने बेटों से,
37 हर आदमी को, उस दिन अपनी ही ऐसी चिन्ता होगी, कि उसको अपने सिवा किसी का होश न होगा।
38 और कितने चेहरे उस दिन चमक रहे होंगे;
39 हँसते और खिले हुए चेहरे;
40 और कितने चेहरों पर उस दिन धूल पड़ी होगी;
41 और (उनके चेहरों पर) कालस छा रही होगी;
42 यही काफ़िर (इन्कार करने वाले,) और फ़ाजिर (दुराचारी) लोग होंगे।

## सूर-ए-तक्वीर

यह सूरः मक्का में उतरी, इसमें अ़रबी के 436 अक्षर,104 शब्द, 29 आयतें और 1 रूकूअ़ है।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला(असीम कृपालु महादयालु) है।

1 जब सूरज लपेट दिया जाएगा;
2 और जब तारे धुँधले हो जाएँगे;
3 और जब पहाड़ चलाए जाएँगे;
4 और जब दस महीने की गाभिन ऊँटनियाँ (व्यर्थ) छूटी फिरेंगी;
5 और जब जंगली जानवर इकट्ठे हो जाएँगे;
6 और जब समुद्र भड़का दिये जाएँगे;
7 और जब रूहें (बदनों से) मिला दी जाएँगी
8 और जब ज़िन्दा गाड़ी हुई लड़की से पूछा जाएगा;
9 वह किस कुसूर में मारी गई?
10 और जब नाम-ए-आमाल (कर्म-पत्र के दफ़्तर) खोल दिये जाएँगे;
11 और जब आसमान का पर्दा खींच लिया जाएगा;
12 और जब जहन्नम दहकाई जाएगी;
13 और जब जन्नत क़रीब लाई जाएगी;
14 तब हर नफ़्स (जीव) को मालूम हो जाएगा कि वह क्या लेकर आया है।
15 तो मैं उन (सितारों) की क़सम खाता हूँ, जो पीछे हटने लगते हैं।

16 और चलते-चलते दुबक (छिप) जाते हैं।
17 और रात की, वह चली जाती है;
18 और सुबह की जब वह साँस ले; (अर्थात नमूदार हो)।
19 बेशक यह (कुर्आन) एक बाइज़्ज़त फ़रिश्ते का लाया हुआ पैग़ाम (वाणी) है;
20 जो बड़ा बलूवान (और) अ़र्श (सिंहासन) के मालिक के नज़दीक़ उसका बड़ा मर्तबा है;
21 (वहाँ) उसका हुक्म माना जाता है और अमानतदार है।
22 और तुम्हारे साथी (मुहम्मद) कोई दीवाने नहीं हैं;
23 और उन्होंने तो उस (फ़रिशते) को आसमान के खुले किनारे (क्षितिज) पर देखा है;
24 और वह ग़ैब (परोक्ष) की बातों के बताने में कंजूस नहीं,
25 और न यह (कुर्आन) किसी धिक्कारे हुए शैतान की बात है।
26 तो तुम लोग किधर चले जा रहे हो?
27 यह (कुर्आन) तो सारे संसार वालों के लिए एक नसीहत है;
28 तुममें से हर उस व्यक्ति के लिए जो सीधा रास्ता अपनाना चाहे;
29 और तुम (कुछ) नहीं चाह सकते जब तक कि वह अल्लाह रब्बुलू-आ़लमीन (सारे संसार का रब) न चाहे।

## सूर-ए-इन्फ़ितार

यह सूरः मक्का में उतरी, इसमें अ़रबी के 334 अक्षर, 80 शब्द, 19 आयतें, और एक रूकूअ़ है।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालू महा दयालु) है।

1 जब आसमान फट जाएगा;
2 और जब सितारे टूट-कर बिखर जाएँगे;
3 और जब समुद्र बह (कर मिल) जाएँगे;
4 और जब क़ब्रें उखाड़ दी जाएँगी;
5 तब हर जानदार (आदमी) को मालूम हो जाएगा कि आगे उसने क्या भेजा था, और क्या उसने पीछे छोड़ा था
6 ऐ इन्सान! किस चीज़ ने तुझ को अपने उस करम वाले रब की ओर से धोखे में डाल रखा है,
7 जिसने तुम को बनाया, फिर (तुम्हारे अंगों को) ठीक किया, और फिर तुमको सन्तुलित किया;

8 जिस रूप में चाहा तुम को बना दिया।
9 मगर अफ़सोस है कि तुम लोग बदला दिये जाने को झुठलाते हो।
10 हालाँकि तुम पर निगरानी करने वाले (फ़रिश्ते) तैनात हैं;
11 बाइज़्ज़त (प्रतिष्ठावान) लिखने वाले;
12 जो कुछ तुम करते हो उनको उसकी ख़बर है।
13 बेशक नेक लोग मज़े (जन्नत) में होंगे;
14 और बुरे (लोग) जहन्नम में;
15 इन्साफ़ के दिन उसमें दाख़िल होंगे;
16 और वह 'उससे' कहीं ग़ायब न हो सकेंगे,
17 और तुम क्या जानों कि बदले का दिन क्या है,
18 फिर तुम्हें क्या मालूम कि बदले का दिन कैसा है,
19 (वह दिन ऐसा है) जिसमें कोई आदमी किसी का कुछ भी भला न कर सकेगा और हुक्म (शासन) उस दिन अल्लाह ही का होगा।

## सूरः अल्-मुतफ़्फ़िफ़ीन

यह सूरः मक्का में उतरी, इस में अ़रबी के 758 अक्षर,172 शब्द,36 आयतें और 1 रूकूअ़ है।

अल्लाह का नाम लेकर (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान, निहायम रह़म करने वाला (असीम कृपालु, महादयालु) है।

1 नाप तौल में कमी करने वालों के लिए ख़राबी है;
2 जो लोगों से नाप कर लें तो पूरा लें;
3 और जब उनको नाप कर या तौल कर दें तो कम दें।
4 क्या इन्हें इसका ख़याल नहीं है कि उठाए भी जाएँगे,?
5 एक बड़े दिन में;
6 उस दिन, जबकि सारे इन्सान 'रब्बुल आ़लमीन' (सारी दुनिया के रब) के सामने खड़े होंगे।
7 सुन लो बद्कारों के आ़माल नामे 'सिज्जीन' में हैं,
8 और आप को क्या मालूम कि सिज्जीन क्या है?-
9 एक लिखा लिखाया दफ़्तर है।
10 उस दिन बड़ी दुर्दशा होगी, झुठलाने वालों की;
11 जो इन्साफ़ के दिन को झुठलाते हैं;

12 और उसे नहीं झुठलाता,मगर वह जो सीमा से बढ़ने वाला गुनाहगार है।
13 जब भी उसके सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं, तो कहता है, "यह तो पहले
लोगों के क़िस्से, हैं।
14 सुन लो ऐसा नहीं, बल्कि उनके दिलों पर उनके बुरे कामों का ज़ंग बैठ गया
है।
15 सुन लो बेशक उस दिन यह लोग अपने 'रब' के दीदार(दर्शन) से रोक दिये
जाएँगे।
16 फिर बेशक, इन्हें जहन्नम में डाल दिया जाएगा।
17 फिर उनसे कहा जाएगा, "यह उसी का नतीजा है जिसे तुम झुठलाते थे।"
18 सुन लो, कि नेक लोगों के आमाल (कर्मपत्र) अिल्लीयीन में (विद्यमान) है?
19 और तुम को कुछ मालूम भी है कि अिल्लीयीन क्या है?-
20 एक लिखा लिखाया दफ़्तर है;
21 जिस की निगरानी अल्लाह के मुक़र्रब (समीपवर्ती) फ़रिश्ते करते हैं।
22 बेशक नेक लोग बड़ी नेअ़मतों में होंगे;
23 मस्नदों (सिंहासन) पर बैठे नज़ारे कर रहे होंगे;
24 उनके चेहरों पर तुम सुख आनन्द की ताज़गी महसूस करोगे;
25 उनको सील बंद उम्दा ख़ालिस शराब पिलाई जाएगी,
26 जिस पर मुश्क(कस्तूरी के सुगन्ध) की मुहर लगी होगी, जो लोग दूसरों पर
बाज़ी ले जाना चाहते हों,वह इस चीज़ को पाने में बाज़ी ले जाने की कोशिश
करें-
27 और उस शराब में 'तस्नीम' (जन्नत का स्रोत) के पानी की मिलावट होगी;
28 वह एक झरना है जिससे मुक़र्रब (समीपवर्ती बन्दे) पिएँगे।
29 जो मुजरिम थे वे (दुनिया में) ईमान वालों की हँसी उड़ाया करते थे,
30 और जब उनके पास से गुज़रते थे, तो वह हिक़ारत से इशारा करते थे;
31 और जब अपने घरों को लौटते थे तो इतराते हुए लौटते थे;
32 और जब उनको देखते तो कहा करते थे, "यह (लोग) तो गुमराह हैं।"
33 और (हालाँकि) वे उन पर निगराँ (संरक्षक) बना कर नहीं भेजे गये थे।
34 तो आज के दिन ईमान वाले, काफ़िरों (इन्कार करने वालों) पर हसेंगे,
35 और मस्नदों (सिंहासन) पर (बैठकर) देख रहे होंगे।
36 क्या खूब इन काफ़िरों को बदला मिला, जो यह किया करते थे।

# सूर-ए-इन्शिक़ाक़

यह सूरः मक्का में उतरी, इसमें अ़रबी के 448 अक्षर, 108 शब्द, 25 आयतें और 1 रूकूअ़ है।

अल्लाह का नाम लेकर (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान, निहा़यम रह़म करने वाला (असीम कृपालु महादयालु) है

1 जब आसमान फट जाएगा,
2 और वह कान लगाए हुए है अपने रब (के हुक्म) के लिए और ह़क़ भी यही है।
3 और जब धरती फैला दी जाएगी;
4 और जो कुछ इसके अन्दर है उसे बाहर फेंक देगी, और ख़ाली हो जाएगी,
5 और अपने रब के फ़रमान को बजा लाएगी, और उसे चाहिए भी यही।
6 ऐ इन्सान! बेशक तू मेह़नत करता ही है अपने रब की ओर पहुँचने में, खूब मेह़नत किये जा, तो उससे जा मिलेगा।
7 तो जिसका आ़माल-नामा उसके दाहिने हाथ में दिया जाएगा,
8 उससे आसान ह़िसाब लिया जाएगा।
9 और वह अपने घरवालों के पास खु़श- खु़श लौटेगा।
10 और जिसका आ़माल नामा उसकी पीठ के पीछे से दिया जाएगा,
11 वह मौत को पुकारेगा,
12 और भड़कती आग में दाख़िल होगा।
13 वह अपने घर वालों में मस्त रहता था,
14 उसने समझ रखा था कि उसको कभी लौटना नहीं है।
15 क्यों नहीं उसका रब तो उसको देख रहा था।
16 नहीं, मैं क़सम खाता हूँ,शफ़क़ (संध्या लालिमा) की,
17 और रात की और जो कुछ वह अपने अन्दर समेट लेती हैं, उसकी;
18 और चाँद की जब वह पूरा हो जाता है;
19 कि तुम को निश्चय ही एक मन्ज़िल से दूसरे मन्ज़िल में पहुँचना है।
20 फिर इन लोगों को क्या हो गया है कि ईमान नहीं लाते?
21 और जब उनके सामने कुर्आन पढ़ा जाता है तो सज्दः नहीं करते।
22 बल्कि काफ़िर (इन्कार करने वाले) झुठला रहे हैं,
23 और यह लोग जो कुछ जमा कर रहे (अर्थात छिपा रहे) हैं, उसे अल्लाह खूब जानता है।
24 तो आप उनको एक दर्दनाक अ़ज़ाब की खु़शख़बरी सुना दीजिए।
25 हाँ, जो लोग ईमान लाए और नेक अ़मल किये, उनके लिए अच्छा बदला है जो कभी ख़त्म न होगा।

# सूर-ए-बुरूज

यह सूरः मक्का में उतरी, इसमें अ़रबी के 475 अक्षर, 109 शब्द, 22 आयतें और 1 रूकूअ़ है।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु महादयालु) है।

1 बुर्जो (किलेबन्द) वाले आसमान की क़सम,
2 और उस दिन की, (क़सम) जिसका वादा है,
3 और हाज़िर होने वाले की और जिसमें हाज़िरी होती है उसकी (अर्थात ह़ज के दिन की,)
4 कि मारे गये ख़न्दक़ों (गढ़े) वाले,
5 आग जिसमें ईंधन (झोंक रखा) था,
6 जबकि वे उन (के किनारे) पर बैठे हुए थे,
7 और जो (दुर्व्यवहार) ईमान वालों के साथ कर रहे थे, उनको सामने देख रहे थे;
8 उनको मोमिनों (ईमानवालों) की यही बात बुरी लगती थी कि वे अल्लाह पर ईमान ले आए थे, जो हर तरह ज़बरदस्त प्रशंसा के लायक़ है,
9 जिसके लिए आसमानों और ज़मीन की बादशाही है और अल्लाह हर चीज़ का साक्षी (जानने वाला) है।
10 बेशक जिन लोगों ने ईमान वाले और ईमानवालियों को सताने के बाद तौबः न की, तो उनके लिए जहन्नम का अ़ज़ाब होगा और उनके लिए जलने का भी अ़ज़ाब होगा।
11 बेशक जो लोग ईमान लाए और नेक काम करते रहे, उनके लिए ऐसे बाग़ हैं, जिनके नीचे नहरें बहती हुई होंगी, यही है बड़ी कामियाबी।
12 बेशक तुम्हारे रब की पकड़ बहुत सख़्त है।
13 बेशक 'उसी ने' पहली बार पैदा किया है और 'वही' दुबारा (ज़िन्दा) करेगा।
14 और 'वही' बख़्शने वाला (क्षमाशील), मुह़ब्बत करने वाला है।
15 अर्शवाला(अर्श का स्वामी) बड़ा बुज़ुर्ग (गौरव शाली) शान वाला,
16 तो जो चाहता है कर देता है,
17 क्या आप तक उन सेनाओं की ख़बर पहुँची है?
18 फ़िरऔ़न और समूद की;
19 बल्कि यह काफ़िर (इन्कारी) झुठलाने में लगे हुए हैं।
20 और अल्लाह (भी) उन्हें चारों ओर से घेरे हुए है (अर्थात इनकी एक-एक बात उसे मालूम है,)

21 बल्कि यह तो वह क़ुर्आन है जो बड़ी शान वाला (गौरवशाली ग्रन्थ) है,
22 (उस) लौहे़ महफ़ूज़ (सुरक्षित पाट्टिका) में,

## सूर-ए-तारिक़

यह सूरः मक्का में उतरी, इस में अ़रबी के 254 अक्षर, 61 शब्द, 17 आयतें और 1 रूकुअ़ है।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु महादयालु) है।

1 आसमान की क़सम, और (उस तारे की) जो रात में नमूदार (उदय) होता है,
2 और तुम्हें क्या मालूम कि रात में उदय होने वाला क्या है?
3 वह चमकता हुआ तारा है (जो प्रातः काल होने के निकट उदय होता है),
4 बेशक हर जानदार पर (एक) संरक्षक नियुक्त है।
5 फिर इन्सान को देखना चाहिए कि वह किस चीज़ से पैदा किया गया है।
6 वह (उस) उछलने वाले पानी से पैदा किया गया है,
7 जो (पुरूष की) पीठ और (स्त्री की) छाती की हड्डियों के बीच से निकलता है।
8 बेशक 'वह' उसको (दुबारा पैदा करके) लौटाने पर क़ुद्रत (सामर्थ्य) है।
9 जिस दिन छिपे भेद जाँचे जाएँगे,
10 तो (उस समय) उसके पास न कोई ताक़त होगी और न कोई मददगार,
11 क़सम है पानी बरसाने वाले आसमान की,
12 और ज़मीन की, जो (बीज का अंकुर फूटते समय) फट जाती है;
13 बेशक यह कलाम (वाणी) फ़ैसला कर देने वाला है।
14 और यह कोई हंसी मज़ाक़ में टालने की बात नहीं।
15 यह लोग चालें चल रहें हैं;
16 और 'हम' भी (उनकी चालों का फ़ल चखाने का) उपाय कर रहे हैं।
17 तो आप इन काफ़िरों (इन्कारियों) को यूँ ही रहने दीजिए, इनको इनके ह़ाल पर छोड़ दीजिए।

## सूर-ए-अअ़ला

यह सूरः मक्का में उतरी, इस में अ़रबी के 299 अक्षर 72 शब्द 19 आयतें और 1 रूकूअ़ है।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु महादयालु) है।

1 (ऐ रसूल!) अपने आलीशान रब के नाम की तस्बीह़ (गुण गान) कीजिए,
2 'जिसने' पैदा किया और (शरीर को) दुरूस्त किया,
3 और 'जिसने' (हर जीवधारी की दशा के अनुकूल) योजना बनाई फिर (उसे उसकी) राह दिखाई,
4 और 'जिसने' चारा उगाया,
5 फिर उसको सूखा काला कूड़ा करकट बना दिया।
6 'हम' जल्द ही आप को पढ़ाएँगे कि आप (उसमें से कुछ) नहीं भूलेंगे।
7 मगर जो अल्लाह चाहै। बेशक 'वह' खुली और छिपी बात को जानता है।
8 और 'हम' आपको आसान तरीक़े की राह हमवार (प्रशस्त) कर देंगे।
9 तो नसीह़त करते रहिए,जहाँ तक नसीह़त के फ़ायदा पहुँचने की उम्मीद हो,
10 जो (अल्लाह का) खौफ़ रखता होगा, वही नसीह़त क़ुबूल करेगा,
11 इस (नसीह़त नामे) से अलग वही रहेगा, जो बड़ा बद़नसीब होगा,
12 जो बड़ी आग में दाख़िल होगा;
13 फिर न उसमें मरेगा, न जिएगा।
14 बेशक वह कामियाब हो गया जिसने अपना तज़किया (निखारने का काम) किया,
15 और अपने रब का नाम लिया और नमाज़ पढ़ता रहा।
16 बल्कि तुम लोग तो दुनिया की ज़िन्दगी को प्रमुखता देते हो,
17 और आख़िरत (परलोक) बेहतर और बाक़ी रहने वाली है।
18 यह शिक्षा पहले सह़ीफ़ों (ईश ग्रन्थों) में भी है
19 इब्राहीम और मूसा के सहीफ़ों में।

## सूर-ए-ग़ाशिया

यह सूरः मक्का में उतरी, इस में अ़रबी के 384 अक्षर 93 शब्द 26 आयतें और 1 रूकूअ़ है।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने

वाला(असीम कृपालु महादयालु) है।
1 क्या आप को उस छा जाने वाली घटना (क़ियामत) की ख़बर पहुँची है?
2 कितने चेहरे उस दिन ख़ौफ़ से सहमे हुए होंगे,
3 मेहनत करने वाले थके माँदे,
4 दहकती हुई आग में दाख़िल होंगे,
5 खौलते हुए गर्म पानी के स्रोत से उन्हें पानी पिलाया जाएगा।
6 उनको 'ज़रीअ़' (काँटेदार झाड़ियों) के सिवा और कोई खाना न मिलेगा।
7 जो न मोटा करेगा न भूख मिटाएगा।
8 और बहुत से चेहरे उस दिन खिले हुए होंगे।
9 अपने आ़माल से खुश होंगे।
10 आ़ला (उच्च) दर्जे के बाग़ (जन्नत) में होंगे।
11 कोई बेहूदा या बकवास बात वहाँ न सुनेंगे।
12 उसमें बहता हुआ चश्मा (स्रोत) होगा,
13 उसमें ऊँचे बिछे हुए तख़्त (सिंहासन) होंगे।
14 और मीना (जग, गिलास) रखे हुए होंगे।
15 और गाव तकिये बराबर से (पंक्तिबद्ध) लगे हुए होंगे।
16 और उम्दा फ़र्श (कालीन) बिछी हुई होंगी।
17 क्या वह ऊँटों को नहीं देखते कि कैसे (अजीब) पैदा किये गये हैं?
18 और आसमान की ओर (नहीं देखते!) कि कितना ऊँचा बनाया गया है।
19 और पहाड़ों की ओर कि कैसे जमाए गये हैं?
20 और ज़मीन को, कि कैसे बिछाई गयी है।
21 सो आप नसीहत करते रहिए, आप तो केवल नसीहत ही करने वाले हैं।
22 आप उन पर दारोग़ा (निरीक्षक) नहीं हैं।
23 मगर जो मुँह मोड़ेगा और इन्कार करेगा।
24 तो अल्लाह उसको बड़ा अ़ज़ाब देगा।
25 बेशक इनको तो हमारी ओर ही लौट कर आना है।
26 फिर इनका हिसाब लेना हमारे ही ज़िम्मे है।

## सूर-ए-फ़ज्र

यह सूरः मक्का में उतरी, इसमें अ़रबी के 585 अक्षर, 137 शब्द, 30 आयतें और

1 रूकूअ़ है।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु महादयालु) है।

1 फज्र(भोर) की क़सम;

2 और दस रातों की,

3 और सम और विषम (जुफ्त-ताक़) की;

4 और रात की जबकि वह विदा हो रही हो;

5 यह चीज़ें अक़लमन्दों के नज़दीक क़सम खाने योग्य हैं।

6 क्या तुमने देखा नहीं कि तुम्हारे रब ने आद (जाति) वालों के साथ क्या किया?

7 जो इरम वाले ऊँचे खम्बों (लम्बेक़द) वाले;

8 वे ऐसे थे जिनके समान, बस्तियों में पैदा नहीं हुए,

9 और समूद के साथ जो घाटी में पत्थरों को तराशा करते (घर बनाते) थे।

10 और फ़िरऔ़न के साथ (क्या किया) जो मेखें (खेमें) रखता था?

11 जो मुल्कों में सरकश हो रहे थे;

12 तो उनमें बड़ा फ़साद मचा रखा था;

13 तो आप के रब ने उन पर अ़ज़ाब का कोड़ा बरसाया।

14 बेशक आपका रब (अवज्ञाकारियों की) घात में है।

15 मगर इन्सान का ह़ाल यह है कि जब इ़ज़्ज़त और नेअ़मत देकर उसका 'रब' उसे आज़माता है तो वह खुश होकर कहता है कि मेरे रब ने मुझे इ़ज़्ज़त दी।

16 और जब वह उसे आज़माता है (कि) उसकी रोज़ी उस पर तंग कर देता है तो कहता है, ''मेरे रब ने मुझे ज़लील किया।''

17 ऐसा नहीं, बल्कि तुम लोग यतीम की इ़ज़्ज़त नहीं करते;

18 और न मिस्कीन (मोहताजों) को खाना खिलाने पर (एक-दूसर को) उभारते हो।

19 और मय्यित का सारा माल समेट कर खा जाते हो।

20 और धन के मोह में मस्त रहते हो।

21 कुछ नहीं जब धरती तोड़-फ़ोड़ कर चूरा कर दी जाएगी।

22 और आपका 'रब' (विराजमान होगा) और फ़रिश्ते पंक्तिबद्ध खड़े होंगे;

23 और उस दिन जहन्नम सामने लाई जाएगी तब इन्सान की समझ में आ जाएगा, और उस समय उसके समझने से क्या लाभ?

24 वह कहेगा कि काश! मैं अपने इस जीवन के लिए कुछ नेक काम कर लिया होता,
25 फिर उस दिन ऐसा अ़ज़ाब देगा, जैसा अ़ज़ाब देने वाला कोई नहीं;
26 और जैसा (मुजरिमों को) जकड़ेगा वैसा किसी ने भी जकड़ा न होगा;
27 ऐ इत्मिनान पाने वाली रूह़ (शान्ति आत्मा!);
28 वापस चल अपने रब की ओर (कि) तू उससे राज़ी वह तुझसे राज़ी,
29 तू शामिल हो जा, मेरे (नेक) बन्दों में;
30 और मेरी जन्नत में दाख़िल हो जा।

## सूर-ए-बलद

यह सूरः मक्का में उतरी, इसमें अ़रबी के 347 अक्षर, 82 शब्द, 20 आयतें और 1 रूकूअ़ है।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु महादयालु) है।

1 मैं क़सम खाता हूँ इस शहर (मक्का) की-
2 और (ऐ रसूल) आपके लिए इस शहर को ह़लाल कर दिया गया।
3 और क़सम खाता हूँ,बाप (अर्थात आदम) और उसके औलाद की;
4 वास्तव में ‘हमने’ इन्सान को तक्लीफ़ (की ह़ालत) में (रहने वाला) बनाया।
5 क्या उसने यह समझ रखा है कि उस पर कोई क़ाबू न पा सकेगा,?
6 वह कहता है ‘‘मैंने’’ बहुत सा माल बर्बाद कर दिया;
7 उसने क्या समझ रखा है कि कोई उसे देख नहीं रहा है?
8 क्या ‘हमने’ उसे दो आँखें नहीं दीं?
9 और एक ज़बान और दो होंठ, (नहीं दिए)
10 और उसको (अच्छे बुरे) दोनों रास्ते भी दिखा दिये।
11 फ़िर भी वह घाटी से (सुरक्षित) पार नहीं हुआ।
12 और तुम्हें क्या मालूम कि वह घाटी क्या है?
13 किसी गर्दन को (दास्ता से) छुड़ाना;
14 या भूख के दिन खाना खिला देना;
15 या किसी रिश्ते नाते वाले यतीम को;
16 या किसी फ़क़ीर को जो मिट्टी में (लोट रहा) हो,

17 फिर यह उन लोगों में से हो जो ईमान लाए और सब्र करने की नसीह़त करते हैं और एक दूसरे पर रह़म करने की वसीयत करते हैं।
18 यही लोग दाहिने वाले (अर्थात भाग्यशाली) हैं।
19 और जिन्होंने 'हमारी' आयतों को मानने से इन्कार किया वे बाएँ वाले (अर्थात दुर्भागी) हैं।
20 उन पर आग होगी (जिसे) बन्द कर दिया गया होगा।

## सूर-ए-शम्स

यह सूरः मक्का में उतरी, इसमें अ़रबी के 254 अक्षर 56 शब्द, 15 आयतें और 1 रूकूअ़ है।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु महादयालु) है।

1 सूरज और उसके धूप चढ़ने की क़सम,
2 और चांद की, जबकि उसके पीछे आए,
3 और दिन की, जब उसे चमका दे,
4 और रात की, जबकि वह (सूरज पर) छा जाए,
5 और आसमान की और उस ज़ात की 'जिसने' उसे क़ायम किया;
6 और ज़मीन की और उस ज़ात की जिसने 'उसे' बिछाया।
7 और नफ़्स (मानव-आत्मा) की और उस ज़ात की 'जिसने' उसे ठीक-ठाक किया।
8 फिर 'उसने' बुराई और परहेज़गारी में तमीज़ करने की समझ उसके जी में डाल दिया।
9 बेशक वह कामियाब हो गया जिसने अपने नफ़्स को (गुनाहों से) पाक रखा।
10 और वह नाकाम हुआ जिसने अपने मन को (पापों में) दबा दिया।
11 समूद (जाति) ने अपनी शरारत से झुठलाया,
12 जब उनमें का एक बड़ा बद्नसीब उठा,
13 तो अल्लाह के रसूल (स़ालेह़) ने उन से कहा खबरदार! अल्लाह की ऊँटनी और उसके पिलाने से, (बाधा न डालना),
14 मगर उन्होंने उसकी बात झुठलाई और नसें काट दीं, तो उन पर उनके रब ने ऐसी आफ़त डाली कि एक साथ सब को (मिट्टी में) बराबर कर दिया।
15 और उसे किसी दुष्फ़ल (अंजाम) का कोई डर नहीं।

यह सूरः मक्का में उतरी, इसमें अ़रबी के 314 अक्षर, 71 शब्द, 21 आयतें और 1 रूकूअ़ है

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ जो बड़ा मेहरबान निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु महादयालु) है।

1 रात की क़सम, जबकि ढाक ले,
2 और दिन की क़सम, जबकि वह रौशन हो,
3 और क़सम है उस ज़ात की जिसने नर और मादा को पैदा किया,
4 बेशक तुम सबकी कोशिश तरह-तरह की है।
5 तो जिसने (अल्लाह के रास्ते में माल) दिया और (बुराई से) बच कर चला,
6 और भली बात को सच माना,
7 तो उसको 'हम' आसान रास्ते की तौफ़ीक़ (सुविधा) देंगे,
8 और जिसने कंजूसी की और (अल्लाह से) बेपरवाह बना रहा,
9 और भली बात को झुठलाया,
10 तो 'हम' उसे तंगी वाले रास्ते में पहुँचा देंगे,
11 और उस का माल उसके कुछ काम न आएगा, जबकि वह (दोज़ख़ में) गिरेगा।
12 बेशक हिदायत देना 'हमारे' ज़िम्मे है।
13 और बेशक आख़िरत और दुनिया दोनों के 'हम' ही मालिक हैं।
14 तो मैंने तुमको डरा दिया है भड़कती हुई आग से।
15 उसमें नहीं झुलसेगा, मगर वह (जो) बद्नसीब (होगा);
16 जिसने झुठलाया और मुहँ फेरा।
17 और उससे बचा लिया जाएगा जो बहुत परहेज़गार है,
18 जो अपना माल (गुनाहों से) पाकीज़गी ह़ासिल करने के लिए देता है।
19 और उसके ऊपर किसी का कोई एह़सान नहीं था जिसका बदला चुकाने के लिए (माल) देता हो,
20 बल्कि वह अपने सर्वश्रेष्ठ रब की रज़ामंदी हासिल करने के लिए देता है।
21 और वह बहुत जल्द खुश हो जाएगा।

## सूर-ए-जुहा

यह सूरः मक्का में उतरी, इसमें अ़रबी के 166 अ़क्षर, 40 शब्द, 11 आयतें और 1 रूकूअ़ है।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु महादयालु) है।

1 सूरज की रोशनी की क़सम,
2 और रात की (अंधेरी) जब वह छा जाए।
3 (ऐ मुह़म्मद!) आप के रब ने न तो आप को छोड़ा और न नाराज़ हुआ।
4 और आख़िरत (बाद का युग) आप के लिए पहले (के युग अर्थात दुनिया) से कहीं बेहतर है।
5 और जल्द ही आप का रब आप को इतना देगा कि आप राज़ी हो जाएँगे।
6 क्या (यह सत्य) नहीं है कि उसने आप को यतीम पाया तो ठिकाना दिया?
7 और रास्ते से अन्जान देखा तो सीधा रास्ता दिखा दिया?
8 और नादार(निर्धन) पाया तो ग़नी (धनवान) कर दिया।
9 तो आप भी यतीम पर सितम (अत्याचार) न कीजिएगा,
10 और माँगने वाले को मत झिड़किएगा,
11 और अपने रब के एह़सान को बयान करते रहा कीजिए।

## सूर-ए-इन्शिराह

यह सूरः मक्का में उतरी, इसमें अ़रबी के 103 अक्षर, 27 शब्द, 8 आयतें और 1 रूकूअ़ है।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु महादयालु) है।

1 (ऐ मुह़म्मद!) क्या ‘हमने’ आपके लिए आप का सीना खोल नहीं दिया?
2 और आप से वह भारी बोझ उतार दिया,
3 जो आप की कमर तोड़े डाल रहा था?
4 और आप का ज़िक्र (चर्चा) बुलंद किया,
5 तो बेशक हर मुश्किल के साथ आसानी भी है।
6 बेशक हर मुश्किल के साथ आसानी है।
7 बस जब भी आप फ़ारिग़ (निश्चिंत) हों, तो इबादत में लीन हो जाया करें,
8 और अपने रब की ओर लौ लगाया करें।

## सूर-ए-तीन

यह सूरः मक्का में उतरी,इसमें अ़रबी के 165 अक्षर, 34 शब्द, 8 आयतें और 1 रूकूअ़ है।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला(असीम कृपालु, महादयालु) है।

1 इन्जीर और ज़ैतून की क़सम,
2 और तूरे सीनीन की,
3 और इस अमन वाले शहर (मक्का) की,
4 बेशक 'हमने' इन्सान को बहुत ही ख़ूबसूरत (साँचे में ढ़ाल कर) बनाया।
5 फिर उसे (दोज़ख़ में) नीचों से भी नीचे कर दिया;
6 मगर जो लोग ईमान लाए और नेक अ़मल करते रहे, उनके लिए कभी न ख़त्म होने वाला बदला है।
7 फिर तुझको क्या हो गया है, (ऐ आदम की औलाद!) जो तू बदले के दिन को झुठलाता है?
8 क्या अल्लाह सब ह़ाकिमों से बड़ा ह़ाकिम नहीं?

## सूर-ए-अ़लक

यह सूरः मक्का में उतरी, इसमें अ़रबी के 290 अक्षर, 72 शब्द, 19 आयतें और 1 रूकूअ़ है।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु महादयालु) है।

1 अपने रब का नाम लेकर पढ़िए, 'जिसने' पैदा किया।
2 'उसने' इन्सान को ख़ून के लोथड़े से पैदा किया।
3 पढ़िए और (याद रखिए कि) आपका रब बड़ा करीम है,
4 'जिसने' क़लम के ज़रिये इल्म सिखाया,
5 और इन्सान को वह इल्म सिखाया, जिसे वह न जानता था।
6 मगर इन्सान शरारत पर उतर आता है।
7 (इस आधार पर) कि वह अपने आप को बेनियाज़ समझता है,
8 बेशक (सबको) आपके रब ही की ओर लौट कर जाना है।

9 आपने उस व्यक्ति को देखा, जो रोकता है,
10 एक बन्दे को जबकि वह नमाज़ पढ़ता है?
11 भला देखो तो अगर वह हिदायत (सीधी राह) पर हों,
12 या परहेज़गारी का हुक्म देता हो।
13 भला देखो तो अगर उसने (दीन को) झुठलाया और उससे मुँह मोड़ा,
14 क्या वह नहीं जानता कि अल्लाह देख रहा है?
15 खबरदार, अगर वह बाज़ न आएगा तो हम उसकी पेशानी (माथे) के बाल पकड़ कर घसीटेंगे,
16 (उस) पेशानी को जो झूठा और खताकार है।
17 तो वह बुला ले अपने हिमायतियों की टोली को!
18 हम भी बुलाएँगे, अज़ाब के अपने फ़रिश्तों को।
19 खबरदार, आप उसका कहना न मानिए और सज्दे करते रहिए और कुर्ब (निकट्ता) ह़ासिल करते रहिए। (सज्दः)

## सूर-ए-क़द्र

यह सूरः मक्का में उतरी, इसमें अ़रबी के 115 अक्षर,30 शब्द, 5 आयतें और 1 रूकूअ़ है।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु महादयालु) है।

1 ‘हमने’ इस (क़ुर्आन) को शबे क़द्र में नाज़िल किया।
2 और आप को क्या मालूम कि क़द्र की रात क्या है?
3 क़द्र की रात हज़ार महीनों से बेहतर है;
4 इसमें फ़रिश्ते और रूहुल अमीन (जिब्रईल अलै0) अपने रब की इजाज़त से हर हुक्म लेकर उतरते हैं।
5 यह (रात अम्न व) सलामती है, फ़ज्र (भोर) के तुलूअ़ (उदय) होने तक।

## सूर-ए-बैय्यिनः

यह सूरः मदीना में उतरी, इसमें अ़रबी के 413 अक्षर 95 शब्द 8 आयतें और 1

रूकूअ़ है।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु महादयालु) है।

1 किताब वालों और मुश्रिकों में से जो लोग काफ़िर थे वे बाज़ आने वाले नहीं, जब तक कि उनके पास स्पष्ट प्रमाण न आ जाए;

2 (अर्थात) अल्लाह की ओर से एक रसूल, जो पाक सह़ीफ़ों (ग्रन्थों) को पढ़ कर सुनाए;

3 जिनमें सह़ी ठोस अह़काम (आदेश) लिखे हुए हों,

4 और जिन लोगों को किताब (ग्रन्थ) दी गयी थी, वे इसके बाद भी फूट में पड़ गये कि उनके पास स्पष्ट प्रमाण आ चुका था।

5 और उनको इसके अलावा कोई हुक्म नहीं दिया गया था, कि केवल अल्लाह ही की इबादत करें, अपने धर्म को उसके लिए ख़ालिस करके, (एकाग्र होकर) और नमाज़ क़ायम करें और ज़कात दें, और यही सह़ी दीन (धर्म) है।

6 बेशक जो लोग काफ़िर हैं अह्ले किताब और मुश्रिकों में से वे जहन्नम की आग में पड़ेंगे, (और) हमेशा उसी में रहेंगे,यही तमाम मख़्लूक़ (प्राणियों) में सबसे बुरे हैं

7 बेशक जो लोग ईमान लाए और नेक काम करते रहे वे तमाम मखलूक़ में सबसे बेहतर हैं,

8 उनका बदला (पुरस्कार) उनके रब के पास हमेशा रहने के लिए जन्नतें (बाग़) हैं, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, वे उनमें हमेशा-हमेश रहेंगे। अल्लाह उनसे राज़ी होगा और वे 'उससे' राज़ी होंगे, यह (इन्आ़म) उसके लिए है जो अपने रब से डरे।

## सूर-ए-ज़िल्ज़ाल

यह सूरः मदीना में नाज़िल हुई, इस में अ़रबी के158 अक्षर, 37 शब्द, 8 आयतें और 1 रूकूअ़ है।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु महादयालु) है।

1 जब धरती भोंचाल से हिला दी जाएगी;

2 और धरती अपने (अन्दर के) सारे बोझ बाहर निकाल फेंकेगी;

3 और इन्सान कहेगा, "इस को क्या हो गया है?"

4 उस दिन वह अपने (ऊपर गुज़रे हुए) ह़ालात की ख़बर बयान कर देगी,

5 क्योंकि आप के रब ने उसे हुक्म दे दिया होगा।

6 उस दिन लोग अलग-अलग टोलियों में आएँगे, ताकि उन्हें उनके आ़माल
(कर्मपत्र) दिखा दिए जाएँ।
7 तो जिसने ज़र्रा बराबर (कण भर) भी भलाई की होगी,वह उसको देख लेगा;
8 और जिसने ज़र्रा बराबर (कण भर) भी बुराई की होगी वह उस को देख लेगा।

## सूर-ए-आ़दियात

यह सूरः मक्का में उतरी, इसमें अ़रबी के 170 अक्षर, 40 शब्द, 11 आयतें और 1 रूकूअ़ है।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु महादयालु) है।

1 उन सरपट दौड़ने वालों (घोड़ों) की क़सम, जो हाँफ़ उठते हैं,
2 फिर पत्थरों पर (नाल) मार कर आग निकालते हैं,
3 फिर प्रातः काल (दुश्मनों पर) धावा बोलते हैं,
4 फिर उस समय धूल उड़ाते हैं।
5 फिर उस समय भीड़ (दुश्मन की फौज) में जा घुसते हैं।
6 बेशक इन्सान अपने रब का नाशुक्रा है,
7 और बेशक वह इस पर खुद गवाह है।
8 और बेशक वह तो माल से सख़्त मुह़ब्बत करने वाला है।
9 क्या वह नहीं जानता कि (एक दिन) क़ब्रों में जो कुछ है उसे बाहर निकाल
लिया जाएगा।
10 और जो दिलों में हैं, वे ज़ाहिर कर दिये जाएँगे।
11 बेशक उनका रब, उस दिन उनसे खूब अच्छी तरह बाख़बर (भिज्ञ) होगा।

## सूर-ए-क़ारिअ़ः

यह सूरः मक्का में उतरी, इसमें अ़रबी के 160 अक्षर, 35 शब्द,11 आयतें और 1 रूकूअ़ है।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु महादयालु)है।

1 (वह) खड़खड़ाने वाली (आफ़त);

2 क्या है? (वह) खड़खड़ाने वाली!
3 और आपको क्या मालूम कि वह खड़खड़ाने वाली (आफ़त) क्या है?
4 उस दिन, जब लोग पतिंगों की तरह बिखरे हुए होंगे,
5 और पहाड़ रंग बिरंगे धुने हुए ऊन की तरह हो जाएंगे।
6 फिर जिस (के आमाल) का पलड़ा भारी होगा,
7 वह (मनपसंद) ऐश में राज़ी होंगे।
8 और जिस का पलड़ा हल्का होगा,
9 तो उसका ठिकाना "हाविया" (अर्थात आग का गढ़ा) होगा।
10 और आप को क्या मालूम कि वह क्या चीज़ है?
11 (वह) दहकती हुई आग है।

## सूर-ए-तकासुर

यह सूरः मक्का में उतरी, इस में अ़रबी के 123 अक्षर, 28 शब्द, 8 आयतें और 1 रूकूअ़ है।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु महादयालु) है।

1 (लोगो!) एक-दूसरे से (धन में) बढ़ने की इच्छा ने तुमको गफ़लत में डाल रखा है,
2 यहाँ तक कि तुम क़ब्रों तक पहुँच जाते हो।
3 देखो, तुमको बहुत जल्द मालूम हो जाएगा।
4 फिर सुन लो, तुम्हें बहुत जल्द मालूम हो जाएगा।
5 सत्य यह है कि अगर तुम्हें सच्चा इल्म हो जाता, (तो दुनिया के पीछे न पड़ते)-
6 तुम ज़रूर दोज़ख देखोगे।
7 फिर तुम अपनी आँखों से ऐसा साफ़-साफ़ देखोगे कि तुमको यक़ीन आ जाएगा।
8 फिर उस दिन तुमसे नेअ़मतों के बारे में ज़रूर पूछा जाएगा।

## सूर-ए-अ़स्र

यह सूरः मक्का में उतरी, इसमें अ़रबी के 74 अक्षर 14 शब्द, 3 आयतें और 1 रूकूअ़ है।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु महादयालु) है।

1 अ़स्र (ज़माने) की क़सम,

2 बेशक इन्सान बड़े घाटे में है,

3 मगर उन लोगों के सिवा जो ईमान लाए और भले काम करते रहे और एक दूसरे को ह़क़ (सत्य) की नसीह़त करते रहे, और सब्र की ताक़ीद करते रहे।

## सूर-ए-हु-म-ज़ह

यह सूरः मक्का में उतरी, इसमें अ़रबी के 135 अक्षर, 33 शब्द, 9 आयतें और 1 रूकूअ़ है।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु महादयालु) है।

1 तबाही है हर उस व्यक्ति के लिए जो ताने देता है, (और) बुराइयाँ करने का आदी है।

2 जिसने माल जमा किया और उसे गिन-गिन कर रखा।

3 वह समझता है कि उसका माल हमेशा उसके पास रहेगा।

4 हरगिज़ नहीं, वह व्यक्ति 'हुतमा' (कुचल देने वाली) में फेंक दिया जाएगा,

5 और आप को क्या मालूम कि 'हुतमा' क्या है?

6 वह अल्लाह की भड़काई हुई आग,

7 जो दिलों पर जा चढ़ेगी।

8 बेशक वह उनमें (चारों तरफ से) बंद कर दिए जाएँगे

9 (वे) ऊँचे-ऊँचे सुतूनों (आग के स्तम्भों) में होंगे।

## सूर-ए-फ़ील

यह सूरः मक्का में उतरी, इसमें अ़रबी के 94 अक्षर, 24 शब्द, 5 आयतें और 1 रूकूअ़ है।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु) महादयालु है।

1 क्या आप ने नहीं देखा कि आपके रब ने हाथी वालों के साथ क्या किया?

2 क्या उन की तद्‌बीर (उपाय) को बेकार नहीं कर दिया?

3 और उन पर परिंदों के झुँड के झुँड भेजे,

4 उन पर पकी हुई मिट्टी के पत्थर फेंक रहे थे।

5 तो उनको ऐसा कर दिया, जैसे खाया हुआ भूसा।

## सूर-ए-कुरैश

यह सूरः मक्का में उतरी, इसमें अ़रबी के 79 अक्षर, 17 शब्द,4 आयतें और 1 रूकूअ़ है।

शुरू करता हूँ, अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु महादयालु) है

1 कुरैश के अभ्यस्त (मानूस) करने की वजह से,

2 (अर्थात) उनको जाड़े गर्मी में सफर करने की वजह से, (आदत पड़ गयी है,)

3 तो उनको चाहिए कि इस घर (कअ़बे) के रब की इबादत करें;

4 जिसने उनको भूख की हालत में खाना दिया और खौफ़ से अमन दिया।

## सूर-ए-माऊन

यह सूरः मक्का में उतरी इसमें अ़रबी के 115 अक्षर, 25 शब्द, 7 आयतें और 1 रूकूअ़ है।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ,जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने

वाला (असीम कृपालु महादयालु) है।
1 क्या आप ने उस व्यक्ति को देखा जो बदले के दिन को झुठलाता है?
2 सो यह वही है जो यतीम को धक्के देता है,
3 और मिस्कीन (मुहताज) को खिलाने की तर्ग़ीब (प्रोत्साहन) नहीं देता।
4 तो ऐसे नमाज़ियों के लिए तबाही है,
5 जो अपनी नमाज़ से ग़ाफ़िल (बेखबर) रहते हैं,
6 जो दिखावा करते हैं,
7 और मामूली चीज़ें भी (थोड़ी देर के लिए) नहीं देते।

## सूर-ए-कौसर

यह सूरः मक्का में उतरी इसमें अ़रबी के 37 अक्षर, 10 शब्द, 3 आयतें और 1 रूकूअ़ है।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु महादयालु) है।
1 बेशक 'हमने' आपको कौसर (अर्थात जन्नत की एक नहर) प्रदान की,
2 तो आप अपने रब के लिए नमाज़ पढ़िए और क़ुर्बानी किया कीजिए।
3 बेशक आपका दुश्मन ही जड़ कटा (अर्थात बेनाम व निशान) है।

## सूर-ए-काफ़िरून

यह सूरः मक्का में उतरी, इसमें अ़रबी के 99 अक्षर, 26 शब्द, 6 आयतें और 1 रूकूअ़ है।

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु महादयालु) है।
1 कह दीजिए, ऐ काफ़िरों (दीन का इन्कार करने वालो),
2 न मैं उनकी इबादत (उपासना) करता हूँ, जिन (देवी, देवताओं) की तुम इबादत करते हो,
3 और न तुम 'उस' (अल्लाह) की इबादत करने वाले हो, जिसकी इबादत मैं करता हूँ।

4 और न मैं उनकी इबादत करने वाला हूँ, जिनकी इबादत तुम करते हो।
5 और न तुम 'उसकी' इबादत करने वाले हो जिसकी इबादत मैं करता हूँ।
6 तुम अपने दीन पर, मैं अपने दीन पर!" (अर्थात तुमको तुम्हारे कर्मों का बदला
मिलेगा और मुझ को मेरे कर्मों का बदला मिलेगा)।

## सूर-ए-नस्र

यह सूरः मदीना में उतरी, इसमें अ़रबी के 81 अक्षर, 19 शब्द, 3 आयतें और 1 रूकूअ़ है।

शुरू करता हूँ, अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु महादयालु) है।

1 जब अल्लाह की मदद और फ़तह़ (विजय) आ पहुँची,
2 और आप ने देख लिया कि लोग अल्लाह के दीन (इस्लाम) में झुंड के झुंड
दाख़िल हो रहे हैं,
3 तो अपने रब की ह़म्द (प्रशन्सा) के साथ तस्बीह़ कीजिए और उसी से
मग्फ़िरत (क्षमा) माँगिए, बेशक 'वह' बड़ा तौबः क़ुबूल करने वाला है।

## सूर-ए-लहब

यह सूरः मक्का में उतरी, इसमें अ़रबी के 81 अक्षर, 24 शब्द, 5 आयतें और 1 रूकूअ़ है।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु महादयालु) है।

1 टूट गये अबू लहब के हाथ और वह तबाह (बर्बाद) हो गया!
2 न तो उसका माल ही उसके कुछ काम आया और न वह जो उसने कमाया।
3 वह बहुत जल्द भड़कती हुई आग में डाला जाएगा,
4 और उस की पत्नी भी जो सिर पर ईंधन लाद कर लाती है।
5 उसकी गर्दन में मूँझ की रस्सी होगी।

## सूर-ए-इख़्लास

यह सूरः मक्का में उतरी, इसमें अ़रबी के 49 अक्षर, 17 शब्द, 4 आयतें और 1 रूकूअ़ है।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु महादयालु) है।

1 कह दीजिए, "वह अल्लाह एक है"

2 अल्लाह सबसे बेनियाज़ (अर्थात वह किसी का मुह़ताज नहीं सब उसी के मुह़ताज) है,

3 न वह जनित है और न जन्य, (अर्थात न वह किसी का बाप है और न वह किसी का बेटा)

4 और न कोई उसके बराबर (समान)।

## सूर-ए-फ़लक़

यह सूरः मक्का में उतरी, इसमें अ़रबी के 73 अक्षर, 23 शब्द, 5 आयतें, और 1 रूकूअ़ है।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने वाला (असीम कृपालु महादयालु) है।

1 कह दीजिए, मैं प्रातःकाल (सुबह़) के रब की पनाह (शरण) लेता हूँ;

2 हर चीज़ की बुराई से, जो 'उसने' पैदा की,

3 और रात के अँधेरे की बुराई से, जबकि वह छा जाए,

4 और गिरहों (गंडो) पर (पढ़-पढ़ कर) फूँकने वालियों (औ़रतों) की बुराई से,

5 और ह़सद (ईर्ष्या) करने वाले की बुराई से, जबकि वह ह़सद करे।

## सूर-ए-नास

यह सूरः मक्का में उतरी, इसमें अ़रबी के 81 अक्षर, 20 शब्द, 6 आयतें और 1 रूकूअ़ है।

शुरू करता हूँ अल्लाह का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह़म करने

वाला (असीम कृपालु महादयालु) है।
1 (आप) कह दीजिए मैं पनाह मांगता हूँ इन्सानों के रब की,
2 इन्सानों के ह़क़ीक़ी बादशाह की,
3 इन्सानों के मअ़बूद (उपास्य) की,
4 वस्वसा डालने वाले खन्नास (छिपनेवाले) के शर (बुराई) से,
5 जो लोगों के सीनों में वस्वसे डालता है,
6 (चाहे वह) जिन्नों में से हो और (चाहे) इन्सानों में से हो।

धार्मिक मामलों का सभापतित्वः यह एकमात्र सरकारी संस्था है जो तुर्की में सभी धार्मिक मामलों के लिये ज़िम्मेदार है।

तुर्की गणराज्य एक ऐसा देश है जिसकी स्थापना वर्ष 1923 में एक प्र.
ाचीन सभ्यता की निरंतरता के रूप में की गयी थी। तुर्की की अधिक.
ांश जनसँख्या मुसलमानों की है, जो सभ्यताओं का प्रतिच्छेदन बिन्दु है।

# थ्वझय-स्ॅचभ


| सूरः न0 | सूरतों के नाम | आयत न0 | पृष्ठ न0 | सूरः न0 | सूरतों के नाम | आयत न0 | पृष्ठ न0 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | सूर-ए-फ़ातिहा | 7 | 4 | 58 | सूर-ए-मुजादला | 22 | 392 |
| 2 | सूर-ए-बक़रः | 286 | 4 | 59 | सूर-ए-हश्र | 24 | 395 |
| 3 | सूर-ए-आलि इमरान | 200 | 35 | 60 | सूर-ए-मुम्तहिना | 13 | 397 |
| 4 | सूर-ए-निसा | 176 | 54 | 61 | सूर-ए-सफ़्फ़ | 14 | 399 |
| 5 | सूर-ए-माइदः | 120 | 72 | 62 | सूर-ए-जुमअ़ | 11 | 400 |
| 6 | सूर-ए-अन्आ़म | 165 | 86 | 63 | सूर-ए-मुनाफ़िक़ून | 11 | 401 |
| 7 | सूर-ए-अअ़राफ | 206 | 102 | 64 | सूर-ए-तग़ाबुन | 18 | 403 |
| 8 | सूर-ए-अन्फ़ाल | 75 | 119 | 65 | सूर-ए-तलाक़ | 12 | 404 |
| 9 | सूर-ए-तौबः | 129 | 126 | 66 | सूर-ए-तह़रीम | 12 | 406 |
| 10 | सूर-ए-यूनुस | 109 | 139 | 67 | सूर-ए-मुल्क | 30 | 407 |
| 11 | सूर-ए-हूद | 123 | 148 | 68 | सूर-ए-क़लम | 52 | 410 |
| 12 | सूर-ए-यूसुफ | 111 | 158 | 69 | सूर-ए-हाक़्क़ा | 52 | 412 |
| 13 | सूर-ए-रअ़द | 43 | 167 | 70 | सूर-ए-मआ़रिज | 44 | 414 |
| 14 | सूर-ए-इब्राहीम | 52 | 172 | 71 | सूर-ए-नूह़ | 28 | 416 |
| 15 | सूर-ए-हिज्र | 99 | 177 | 72 | सूर-ए-जिन्न | 28 | 418 |
| 16 | सूर-ए-नह़्ल | 128 | 181 | 73 | सूर-ए-मुज़्ज़म्मिल | 20 | 419 |
| 17 | सूर-ए-बनी इस्राईल | 111 | 191 | 74 | सूर-ए-मुद्दस्सिर | 56 | 421 |
| 18 | सूर-ए-कहफ़ | 110 | 200 | 75 | सूर-ए-क़ियामः | 40 | 423 |
| 19 | सूर-ए-मरयम | 98 | 208 | 76 | सूर-ए-दहर | 31 | 424 |
| 20 | सूर-ए-ता-हा | 135 | 214 | 77 | सूर-ए-मुरसिलात | 50 | 426 |
| 21 | सूर-ए-अंबिया | 112 | 222 | 78 | सूर-ए-नबा | 40 | 428 |
| 22 | सूर-ए-ह़ज | 78 | 230 | 79 | सूर-ए-नाज़िआ़त | 46 | 430 |
| 23 | सूर-ए-मुमिनून | 118 | 236 | 80 | सूर-ए-अ़-ब-स | 42 | 431 |
| 24 | सूर-ए-नूर | 64 | 243 | 81 | सूर-ए-तक्वीर | 29 | 433 |
| 25 | सूर-ए-फ़ुर्क़ान | 77 | 249 | 82 | सूर-ए-इन्फ़ितार | 19 | 434 |
| 26 | सूर-ए-शुअ़रा | 227 | 254 | 83 | सूरः अल्-मुतफ़्फ़िफ़ीन | 36 | 435 |
| 27 | सूर-ए-नम्ल | 93 | 263 | 84 | सूर-ए-इन्शिक़ाक़ | 25 | 437 |
| 28 | सूर-ए-क़सस | 88 | 270 | 85 | सूर-ए-बुरूज | 22 | 438 |
| 29 | सूर-ए-अ़नकबूत | 69 | 277 | 86 | सूर-ए-तारिक़ | 17 | 439 |
| 30 | सूर-ए-रूम | 60 | 283 | 87 | सूर-ए-अअ़ला | 19 | 440 |
| 31 | सूर-ए-लुक़मान | 34 | 288 | 88 | सूर-ए-ग़ाशिया | 26 | 440 |
| 32 | सूर-ए-सज्दः | 30 | 291 | 89 | सूर-ए-फ़ज्र | 30 | 441 |
| 33 | सूर-ए-अह़ज़ाब | 73 | 293 | 90 | सूर-ए-बलद | 20 | 443 |
| 34 | सूर-ए-सबा | 54 | 300 | 91 | सूर-ए-शम्स | 15 | 444 |
| 35 | सूर-ए-फ़ातिर | 45 | 304 | 92 | सूर-ए-लैल | 21 | 445 |
| 36 | सूर-ए-यासीन | 83 | 308 | 93 | सूर-ए-जुह़ा | 11 | 446 |
| 37 | सूर-ए-साफ़्फ़ात | 182 | 313 | 94 | सूर-ए-इन्शिराह़ | 8 | 446 |
| 38 | सूर-ए-साद | 88 | 319 | 95 | सूर-ए-तीन | 8 | 447 |
| 39 | सूर-ए-ज़ुमर | 75 | 324 | 96 | सूर-ए-अ़लक | 19 | 447 |
| 40 | सूर-ए-मोमिन | 85 | 331 | 97 | सूर-ए-क़द्र | 5 | 448 |
| 41 | सूर-ए-हामीम् सज्दः | 54 | 337 | 98 | सूर-ए-बैय्यिनः | 8 | 448 |
| 42 | सूर-ए-शूरा | 53 | 342 | 99 | सूर-ए-ज़िल्ज़ाल | 8 | 449 |
| 43 | सूर-ए-ज़ुख्रुफ़ | 89 | 346 | 100 | सूर-ए-आ़दियात | 11 | 450 |
| 44 | सूर-ए-दुख़ान | 59 | 352 | 101 | सूर-ए-क़ारिअ़ः | 11 | 450 |
| 45 | सूर-ए-जासिया | 37 | 354 | 102 | सूर-ए-तकासुर | 8 | 451 |
| 46 | सूर-ए-अह़क़ाफ़ | 35 | 357 | 103 | सूर-ए-अ़स्र | 3 | 452 |
| 47 | सूर-ए-मुहम्मद | 38 | 361 | 104 | सूर-ए-हु-म-ज़ह | 9 | 452 |
| 48 | सूर-ए-फ़त्ह़ | 29 | 364 | 105 | सूर-ए-फ़ील | 5 | 453 |
| 49 | सूर-ए-हुजुरात | 18 | 367 | 106 | सूर-ए-क़ुरैश | 4 | 453 |
| 50 | सूर-ए-क़ाफ़ | 45 | 369 | 107 | सूर-ए-माऊ़न | 7 | 453 |
| 51 | सूर-ए-ज़ारियात | 60 | 371 | 108 | सूर-ए-कौसर | 3 | 454 |
| 52 | सूर-ए-तूर | 49 | 374 | 109 | सूर-ए-काफ़िरून | 6 | 454 |
| 53 | सूर-ए-नज्म | 62 | 376 | 110 | सूर-ए-नस्र | 3 | 455 |
| 54 | सूर-ए-क़मर | 55 | 379 | 111 | सूर-ए-लहब | 5 | 455 |
| 55 | सूर-ए-रह़मान | 78 | 382 | 112 | सूर-ए-इख़्लास | 4 | 456 |
| 56 | सूर-ए-वाक़िआ़ | 96 | 386 | 113 | सूर-ए-फ़लक़ | 5 | 456 |
| 57 | सूर-ए-ह़दीद | 29 | 389 | 114 | सूर-ए-नास | 6 | 456 |